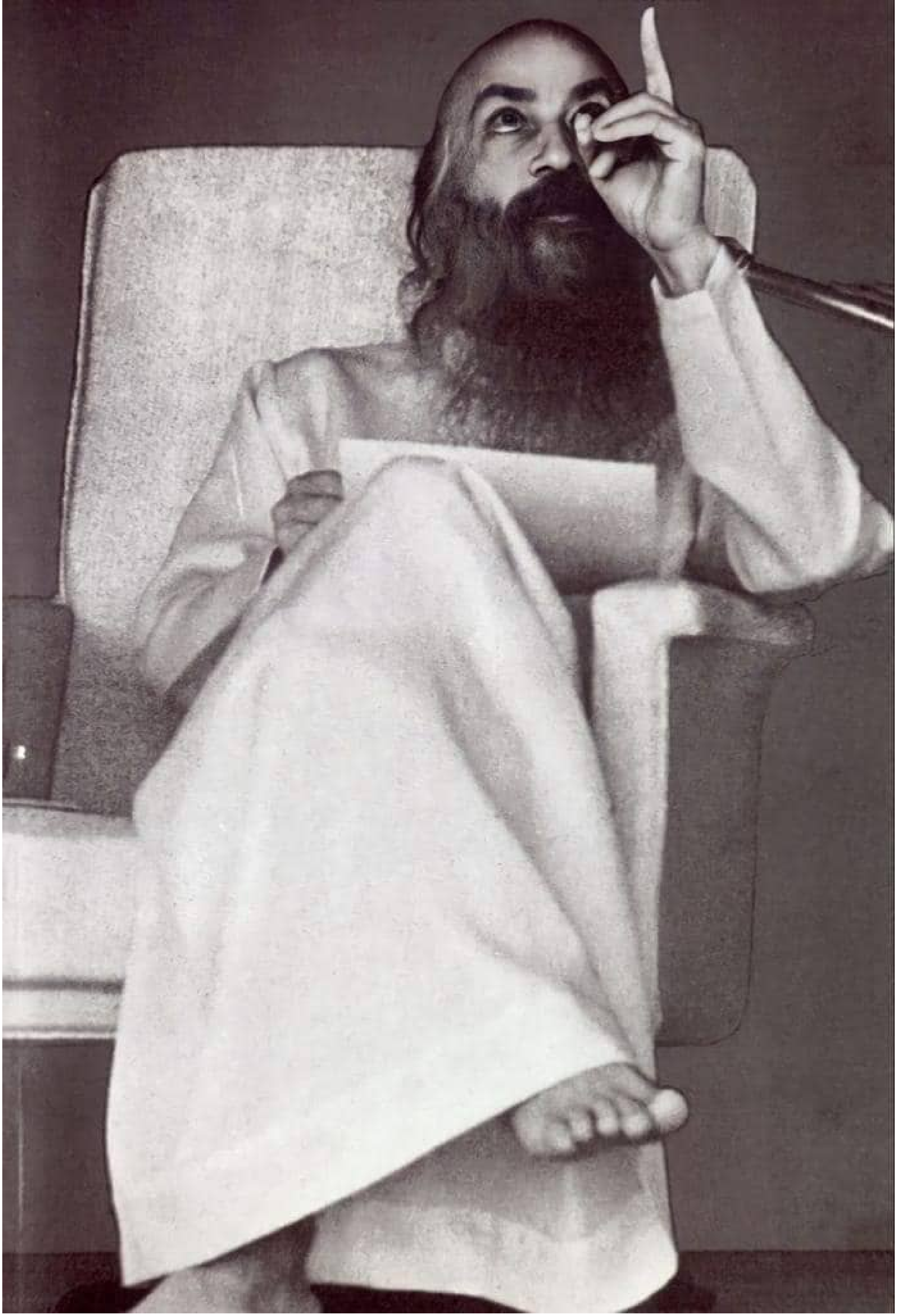

CamScanner

CamScanner

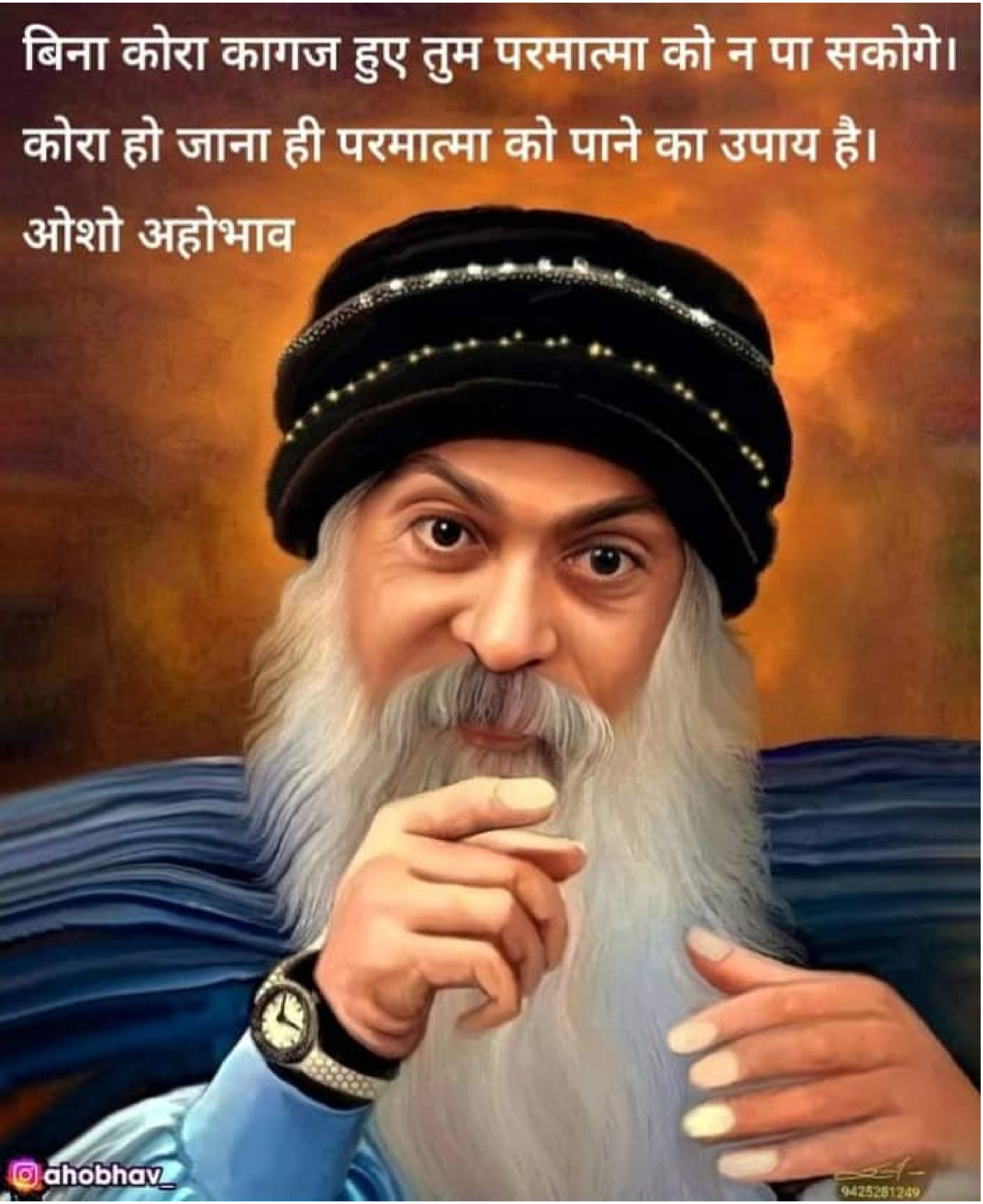

बिना कोरा कागज हुए तुम परमात्मा को न पा सकोगे।
कोरा हो जाना ही परमात्मा को पाने का उपाय है।
ओशो अहोभाव
ahobhav_
9425281249

CamScanner

होगी तुम्हारे पास
जमाने भर की डिग्रियां..
पर अंधविश्वास और पाखंडवाद से
मुक्त न हो सको तो
अनपढ के समान ही हो तुम...!

CamScanner

तुम मुझे धर्मगुरु न समझो। अच्छा हो
कि तुम मुझे एक शराबी समझो।
मैं एक पियक्कड़ हूं, जिसने परमात्मा
की शराब पी ली है और जो अपनी
मस्ती में कुछ गुनगुना रहा है।
गुनगुनाहट शायद तुम्हें पकड़ जाए,
शायद पास बैठे-बैठे तुम्हें भी मेरी
शराब का स्वाद लग जाए, तो खोज
पर निकल पड़ना। जिनको वैसा स्वाद
लग गया है वे ही मेरे संन्यासी हैं।

Osho, सहज योग--(प्रवचन--19)

CS CamScanner

Orayu divine knowledge
ईश्वर की बनाई यह सृष्टी...
बेशकीमती ख़ज़ानों से भरी हुई है...
और एक भी चौकीदार नहीं है...!
व्यवस्था ऐसी की गई है कि...
दुनिया में अरबों व्यक्तियों का
आवागमन प्रतिवर्ष होता है,
किन्तु...
यहां से कोई भी एक तीली
तक ले जा नहीं सकता...!!

CamScanner

राजी रहा करो खुदा की रजा
में,, तुमसे भी बहुत मजबूर इंसान है
इस जहां में !!
- ओशो

CamScanner

“

इस देश में यदि आप तर्क की बात करेंगे, तो लोग आपको गाली देंगे। लेकिन यदि आप पाखंड और अंधविश्वास की बात करेंगे, तो लोग उसे सच मान लेंगे।

”

CS CamScanner

very soon you'll smile and say
"God, this is more than i prayed for"

CamScanner

।।ओशो।।
।।भक्तिसूत्र (नारद)।।
—प्रवचन-20
(अहोभाव, आनंद, उत्सव है भक्ति)
"संसार"
में जब तक कोई चीज मिलती नहीं है तब तक तो तुम बहुत उसके लिए तड़फते हो--पाने के लिए तड़फते हो, किसी तरह अभाव मिट जाए! धन नहीं है तो तुम धन के लिए तड़फते हो, क्योंकि निर्धन्नता को मिटाना है।
निर्धनता से तुम राजी नहीं होते, निर्धनता से तुम लड़ते हो, ताकि धन पैदा कर सको।
पर देखा तुमने, जब धन हाथ में आ जाता है तो पता लगता है: राख लगी, कोई हीरे-जवाहरात न लगे, धूल लगी।
जब नहीं था धन तब निर्धनता से लड़ते रहे। जब धन मिलता है तो धन व्यर्थ हो जाता है।
यह तुम्हारा सामान्य जीवन का अनुभव है।
ओशो.
Osho,
Narmada

CamScanner

इसे धीरे-धीरे पढ़ें

ब्रह्मांड आपकी आवृत्ति पर प्रतिक्रिया करता है। यह आपकी व्यक्तिगत इच्छाओं, चाहतों या जरूरतों को नहीं पहचानता। यह केवल उस आवृत्ति को समझता है जिस पर आप कंपन कर रहे हैं। उदाहरण के लिए; यदि आप भय, अपराधबोध या शर्म की आवृत्ति में कंपन कर रहे हैं तो आप समान कंपन वाली चीजों को आकर्षित करने जा रहे हैं। यदि आप प्रेम, आनंद और प्रचुरता की आवृत्ति में कंपन कर रहे हैं, तो आप उन चीज़ों को आकर्षित करने जा रहे हैं जो उस आवृत्ति का समर्थन करती हैं। यह एक रेडियो स्टेशन में ट्यूनिंग जैसा है। आपको उस संगीत के साथ तालमेल बिठाना होगा जिसे आप सुनना चाहते हैं, ठीक उसी तरह जैसे आपको उस ऊर्जा के साथ तालमेल बिठाना है जिसे आप अपने जीवन में प्रकट करना चाहते हैं। अपनी मानसिकता बदलें, यह आपका जीवन बदल देगी।

CamScanner

3:21 pm 56%
facebook

9m ·

ध्यान को बस एक साक्षीभाव बन चाहिए; तभी इसे पूरे चौबीसों घंटे जारी रखना संभव है। यहां तक कि जब तुम सोने जाओ, होशपूर्ण बने रहो। अंतिम क्षण तक, जब तुम पाते हो कि नींद तुम्हें आगोश में ले रही है– अंधकार बढ़ता जा रहा है, शरीर शिथिल हो रहा है और वह बिंदु आने वाला है जहां तुम अचानक जागरण से नींद में सरक जाओगे–उस क्षण तक देखो। और पहली बात, सुबह जब तुम्हें पता चलता है कि नींद खत्म हो गई है, तुरंत देखना शुरू करो; जल्दी ही तुम नींद में भी देखने में सक्षम हो जाओगे।'

'देखना एक दीया बन जाएगा जो तुम्हारे भीतर दिन-रात जलता रहेगा।'

'यही एक मात्र प्रामाणिक ध्यान है। अन्य सभी जो कुछ तुम्हें ध्यान के नाम पर सिखाया गया है वह बस एक खिलौना भर है, तुम्हें धोखा देने के लिए कि तुम कुछ अध्यात्मिक कार्य कर रहे हो। इस ध्यान के साथ तुम परम स्रोत पर पहुंच जाओगे। वह सब-कुछ जो भ्रांतिपूर्ण है मिट जाएगा।'

'लेकिन अस्तित्व में सब-कुछ भ्रांति नहीं है। जो भ्रांति नहीं है वह अपरिहार्य है, और जो अपरिहार्य है उसके साथ तुम क्या करोगे? शायद तुमने इसके बारे में कभी सोचा नहीं है।'

'यही अपरिहार्यता ही ध्यान है।'

अगर तुम सिर्फ अपरिहार्य को ही देखते रहो, तुम साफ देख पाओगे कि वह जो देखते हुए गायब हो जाता है, वह भ्रामक है; वह जो और भी स्पष्ट हो जाता है, और ज्यादा पूर्णतया स्वच्छ रूप से, जो पहले तुम्हारे भ्रामक सपनों, इच्छाओं के पीछे छिपा था, अब बिलकुल स्पष्ट होकर खड़ा है।'

(ओशो: दि ग्रेट झेन मास्टर ताहुई)

CamScanner

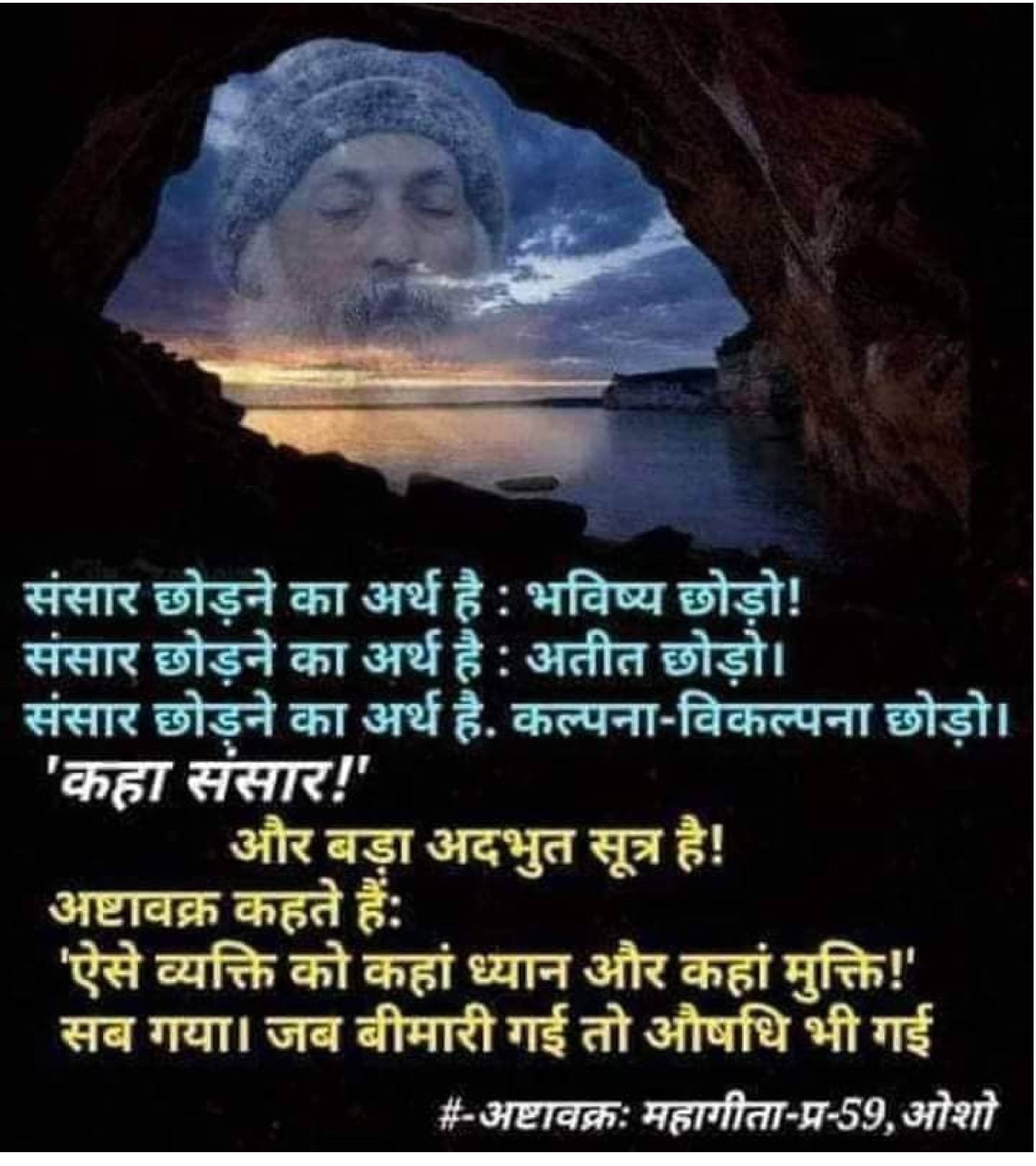

CS CamScanner

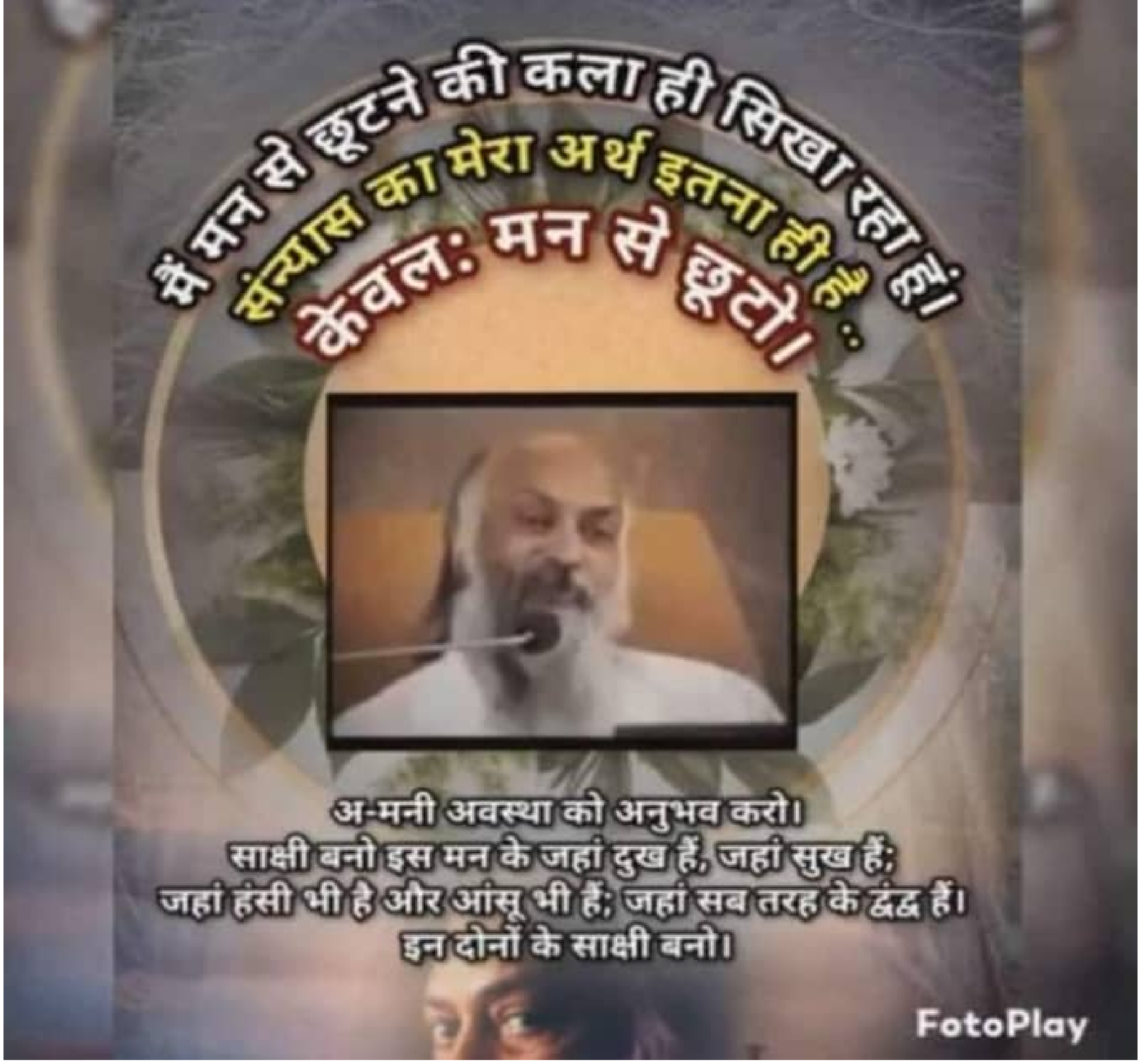
मैं मन से छूटने की कला ही सिखा रहा हूं।
संन्यास का मेरा अर्थ इतना ही है :
केवल: मन से छूटो।
अ-मनी अवस्था को अनुभव करो।
साक्षी बनो इस मन के जहां दुख हैं, जहां सुख हैं;
जहां हंसी भी है और आंसू भी हैं; जहां सब तरह के द्वंद्व हैं।
इन दोनों के साक्षी बनो।
FotoPlay

CamScanner

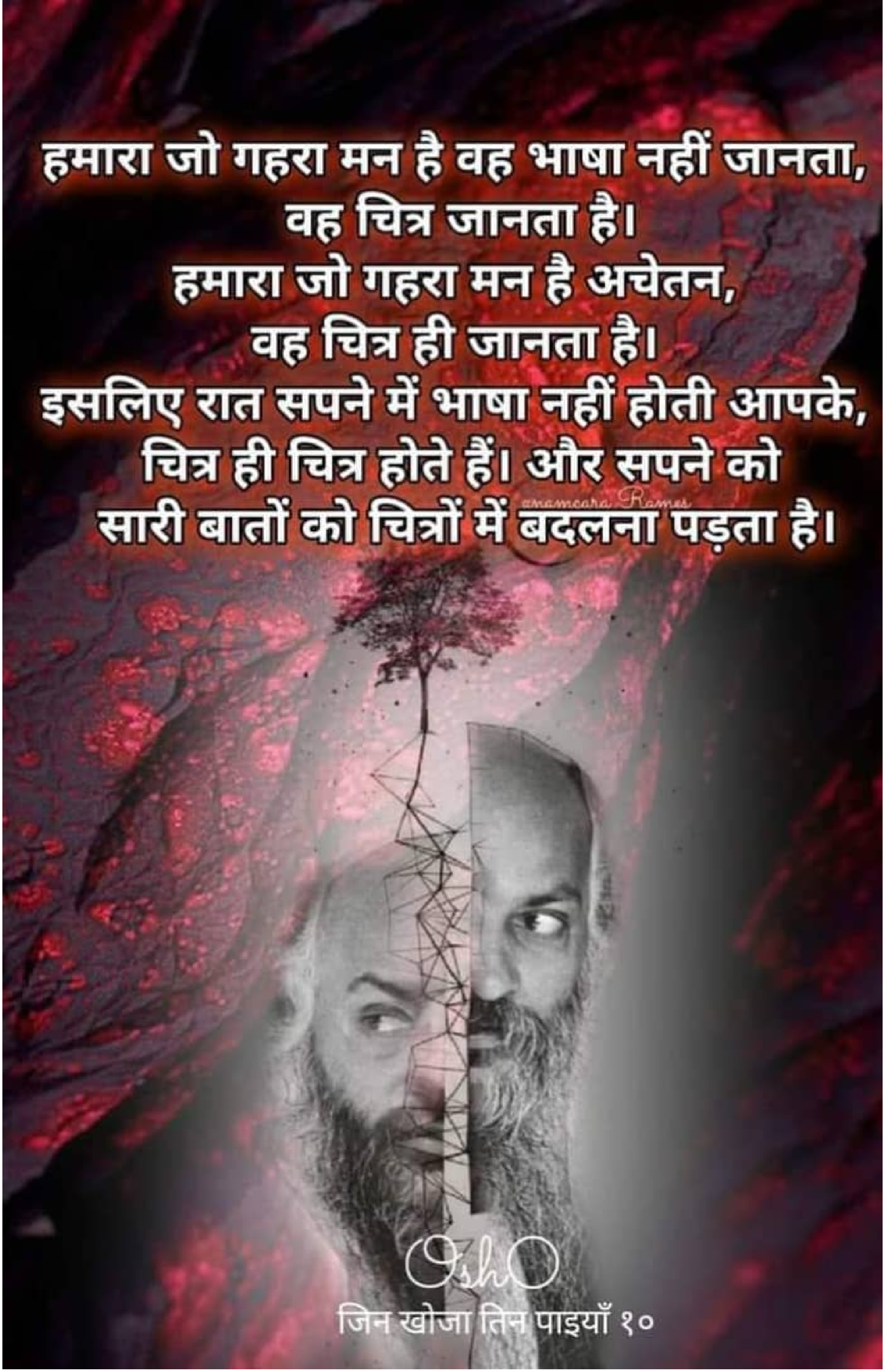
हमारा जो गहरा मन है वह भाषा नहीं जानता,
वह चित्र जानता है।
हमारा जो गहरा मन है अचेतन,
वह चित्र ही जानता है।
इसलिए रात सपने में भाषा नहीं होती आपके,
चित्र ही चित्र होते हैं। और सपने को
सारी बातों को चित्रों में बदलना पड़ता है।
OshO
जिन खोजा तिन पाइयाँ १०

CamScanner

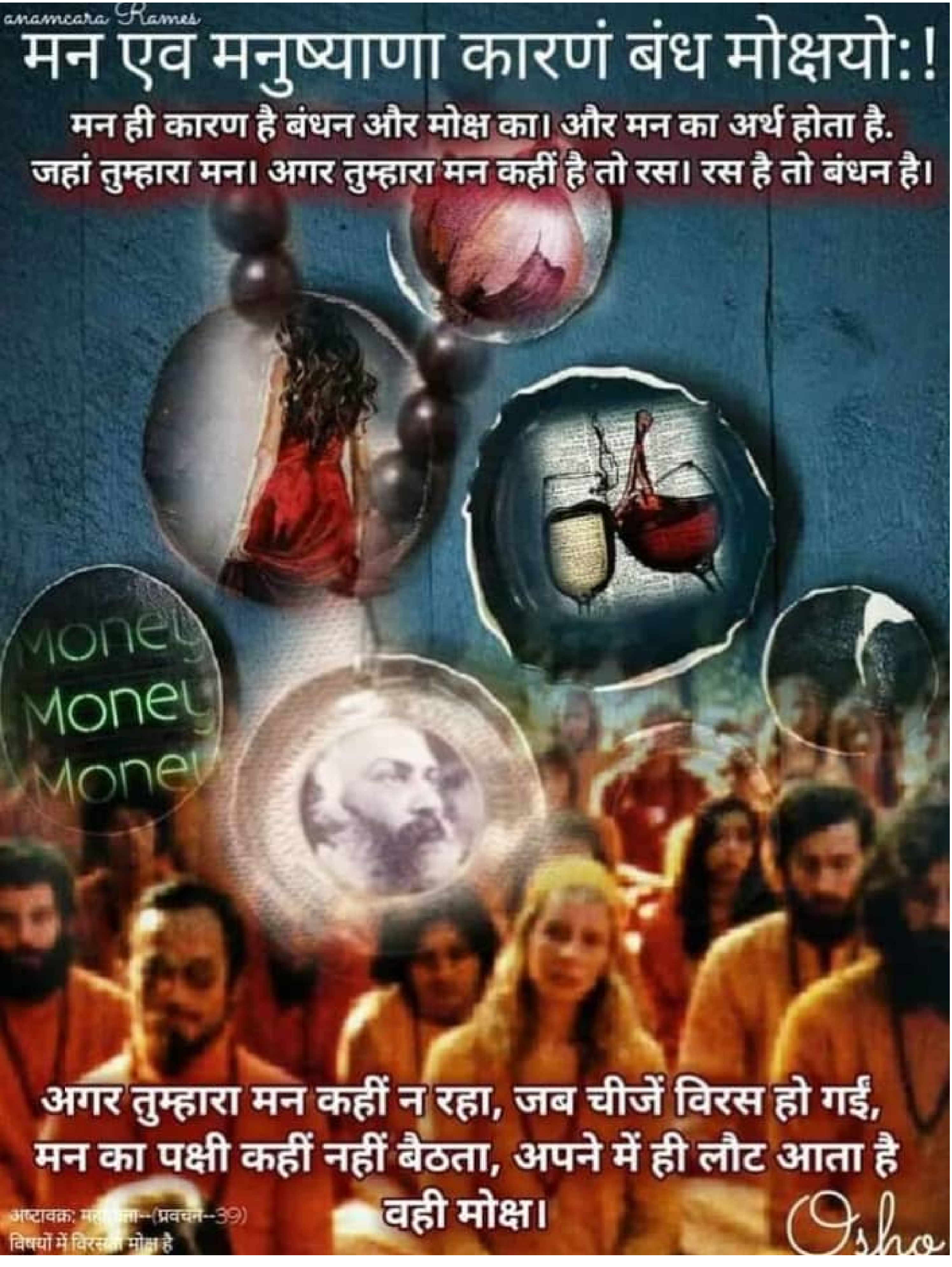
anamcara Ramesh
मन एव मनुष्याणा कारणं बंध मोक्षयो:!
मन ही कारण है बंधन और मोक्ष का। और मन का अर्थ होता है.
जहां तुम्हारा मन। अगर तुम्हारा मन कहीं है तो रस। रस है तो बंधन है।
Money
Money
Money
अगर तुम्हारा मन कहीं न रहा, जब चीजें विरस हो गईं,
मन का पक्षी कहीं नहीं बैठता, अपने में ही लौट आता है
वही मोक्ष।
अष्टावक्र: (प्रवचन--39)
विषयों में विरस मोक्ष है
Osho

CamScanner

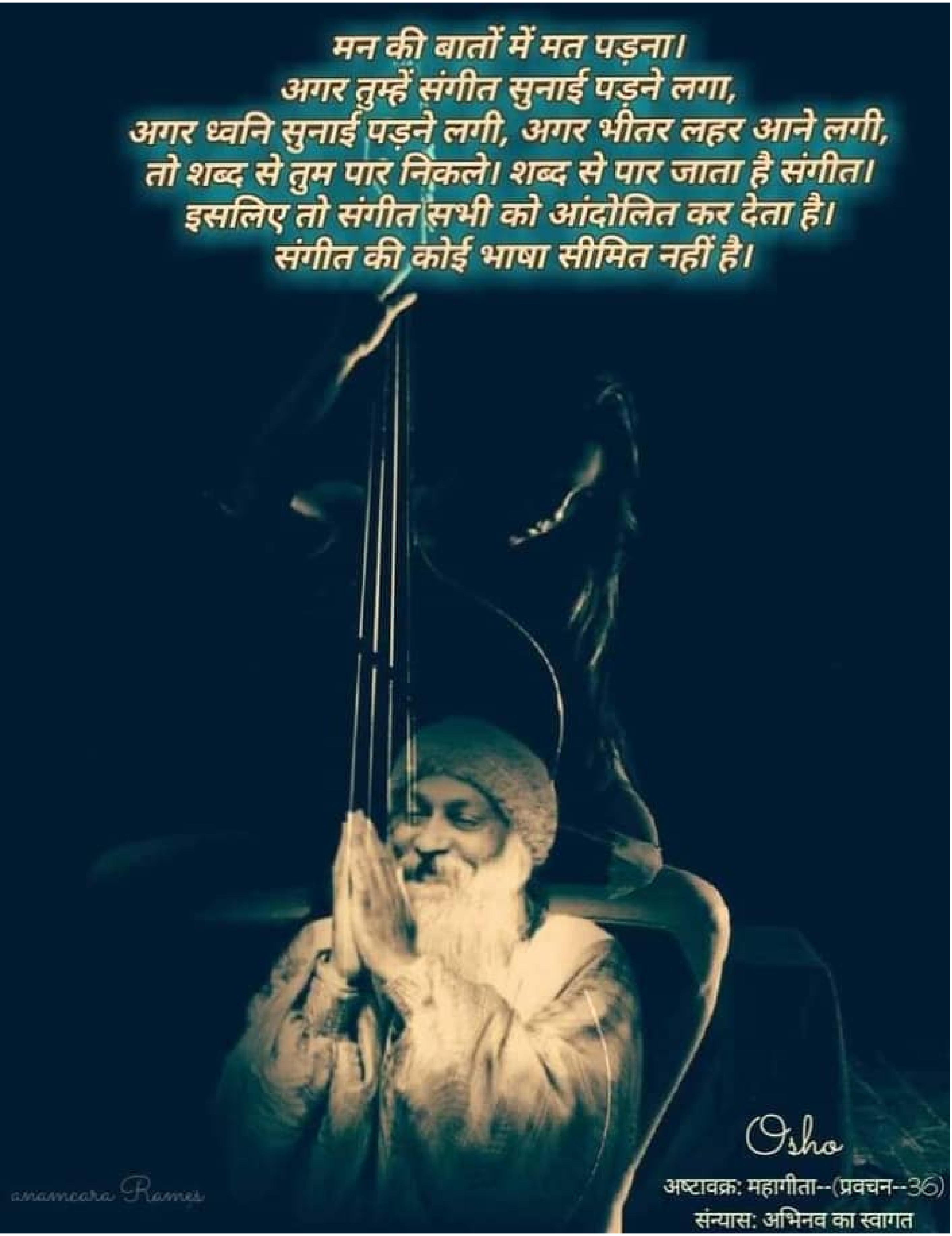
मन की बातों में मत पड़ना।
अगर तुम्हें संगीत सुनाई पड़ने लगा,
अगर ध्वनि सुनाई पड़ने लगी, अगर भीतर लहर आने लगी,
तो शब्द से तुम पार निकले। शब्द से पार जाता है संगीत।
इसलिए तो संगीत सभी को आंदोलित कर देता है।
संगीत की कोई भाषा सीमित नहीं है।
Osho
अष्टावक्र: महागीता--(प्रवचन--36)
संन्यास: अभिनव का स्वागत
anamcara Rames

CamScanner

CamScanner

CamScanner

CamScanner

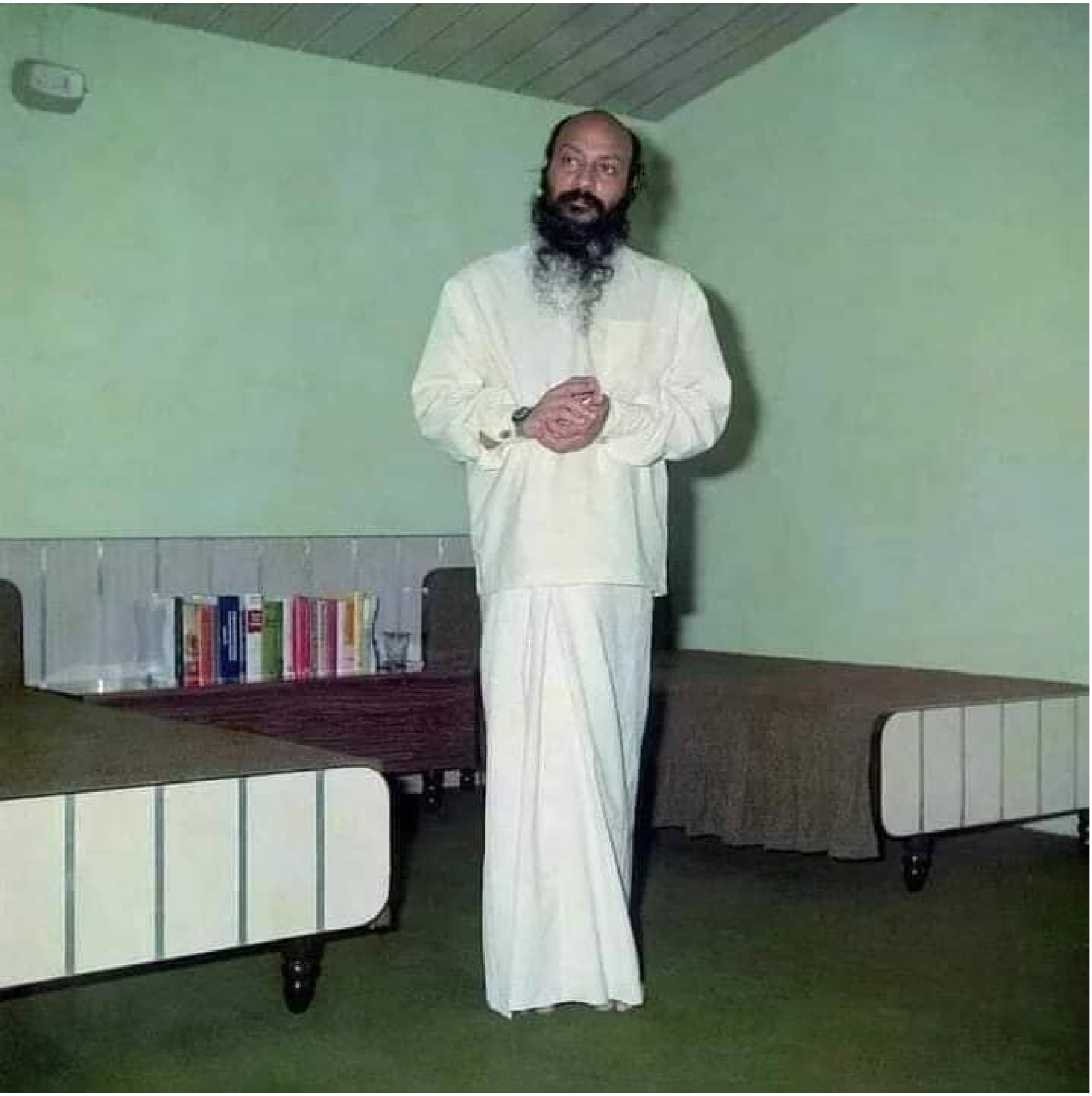

CamScanner

BSB Swatantra Singh Chaube...
Today, 9:45 am

Reply

CamScanner

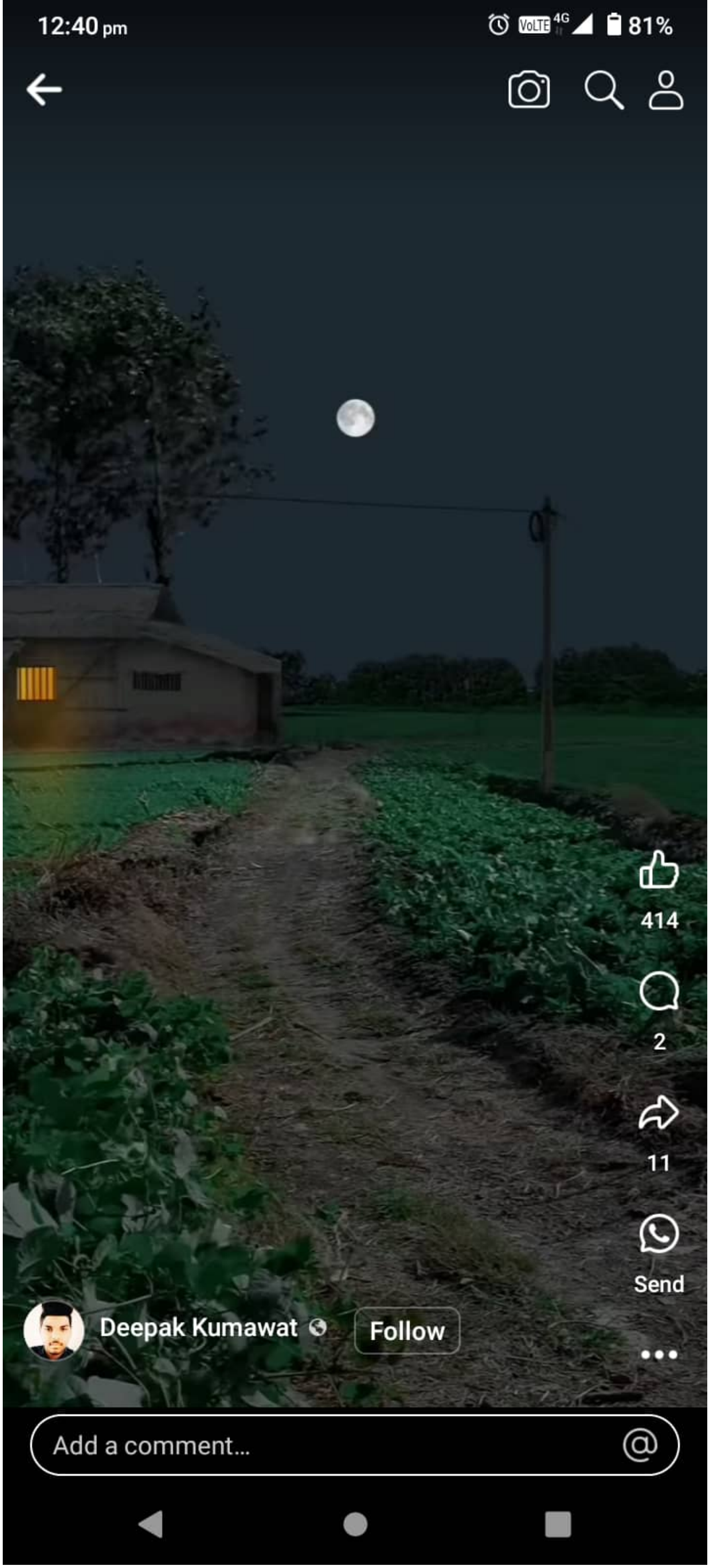

CamScanner

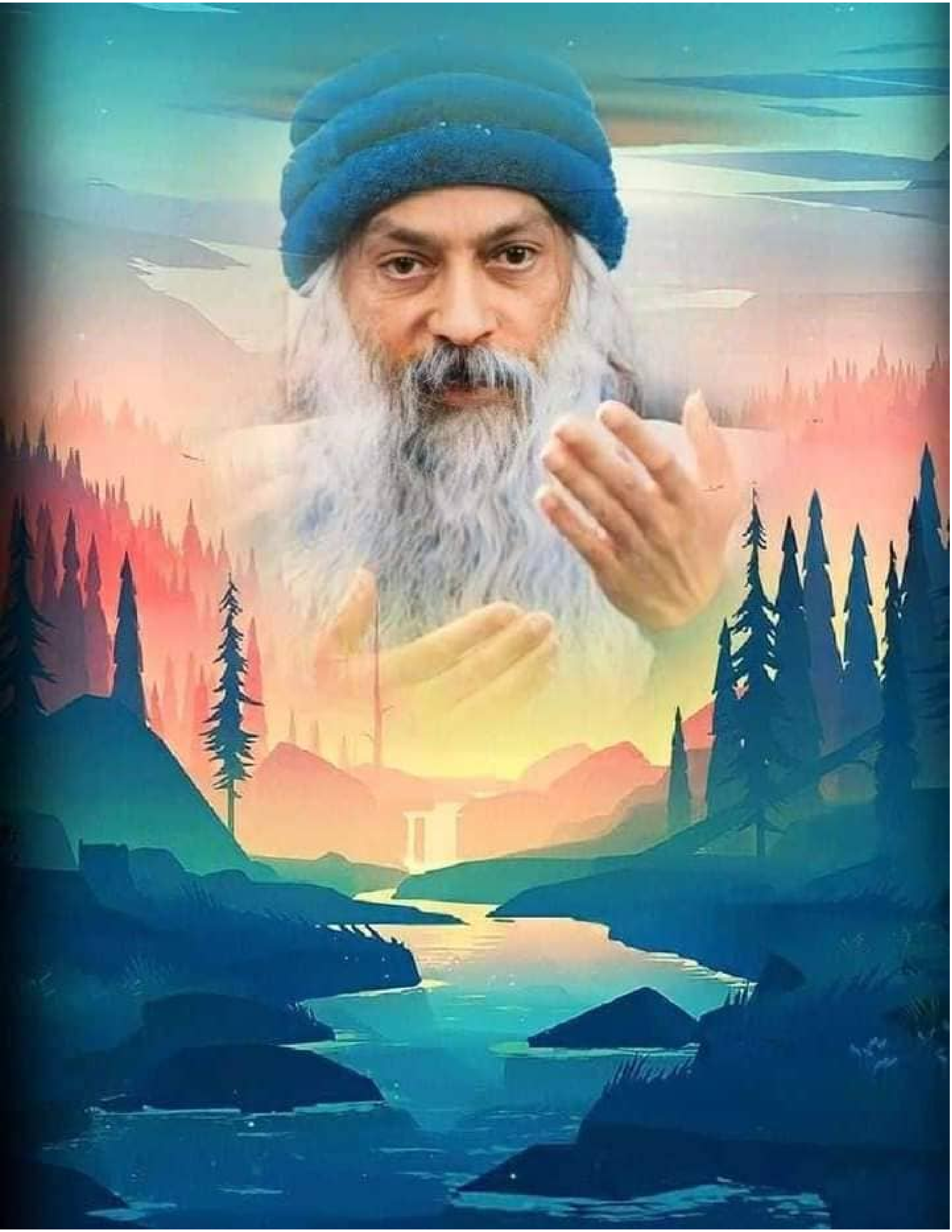

CamScanner

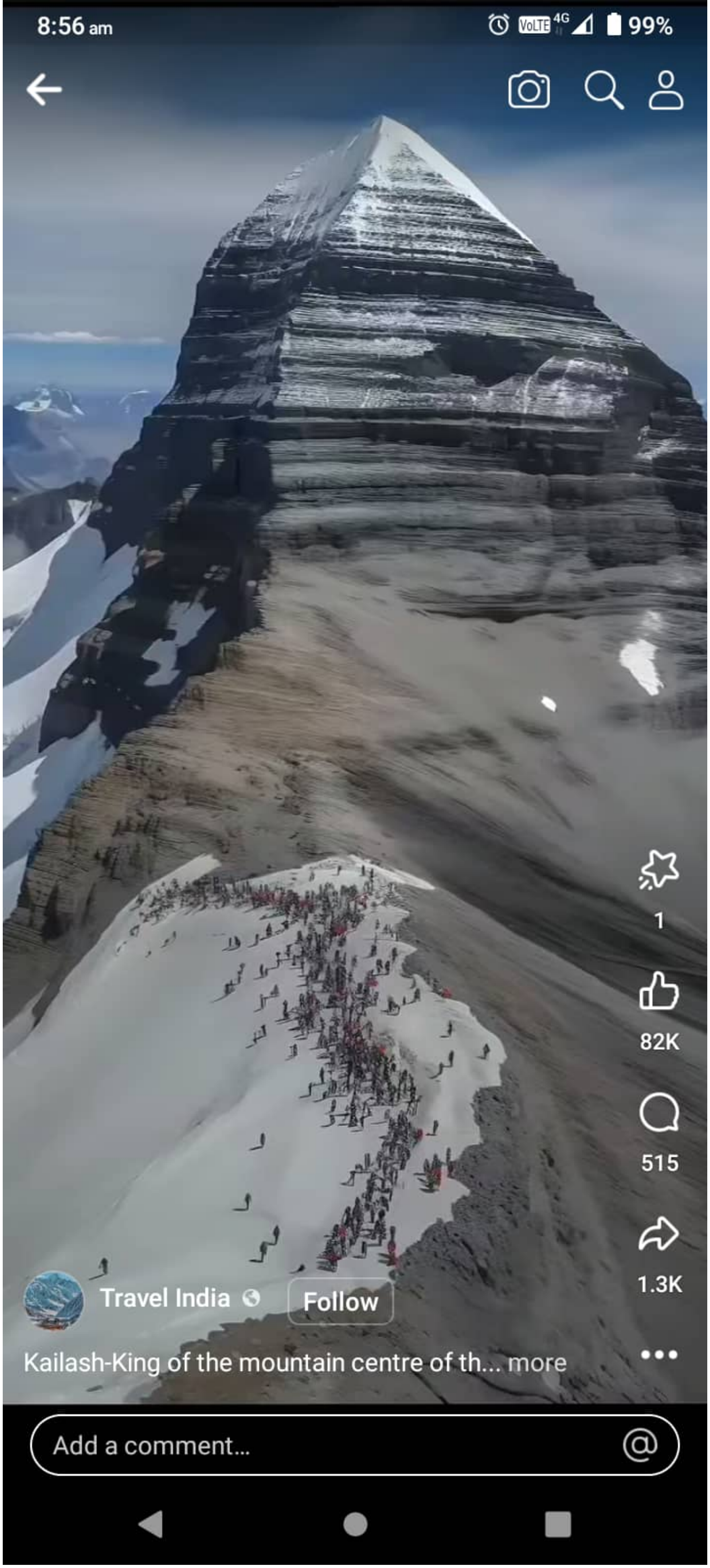
8:56 am
99%
1
82K
515
1.3K
Travel India
Follow
Kailash-King of the mountain centre of th... more
Add a comment...

CamScanner

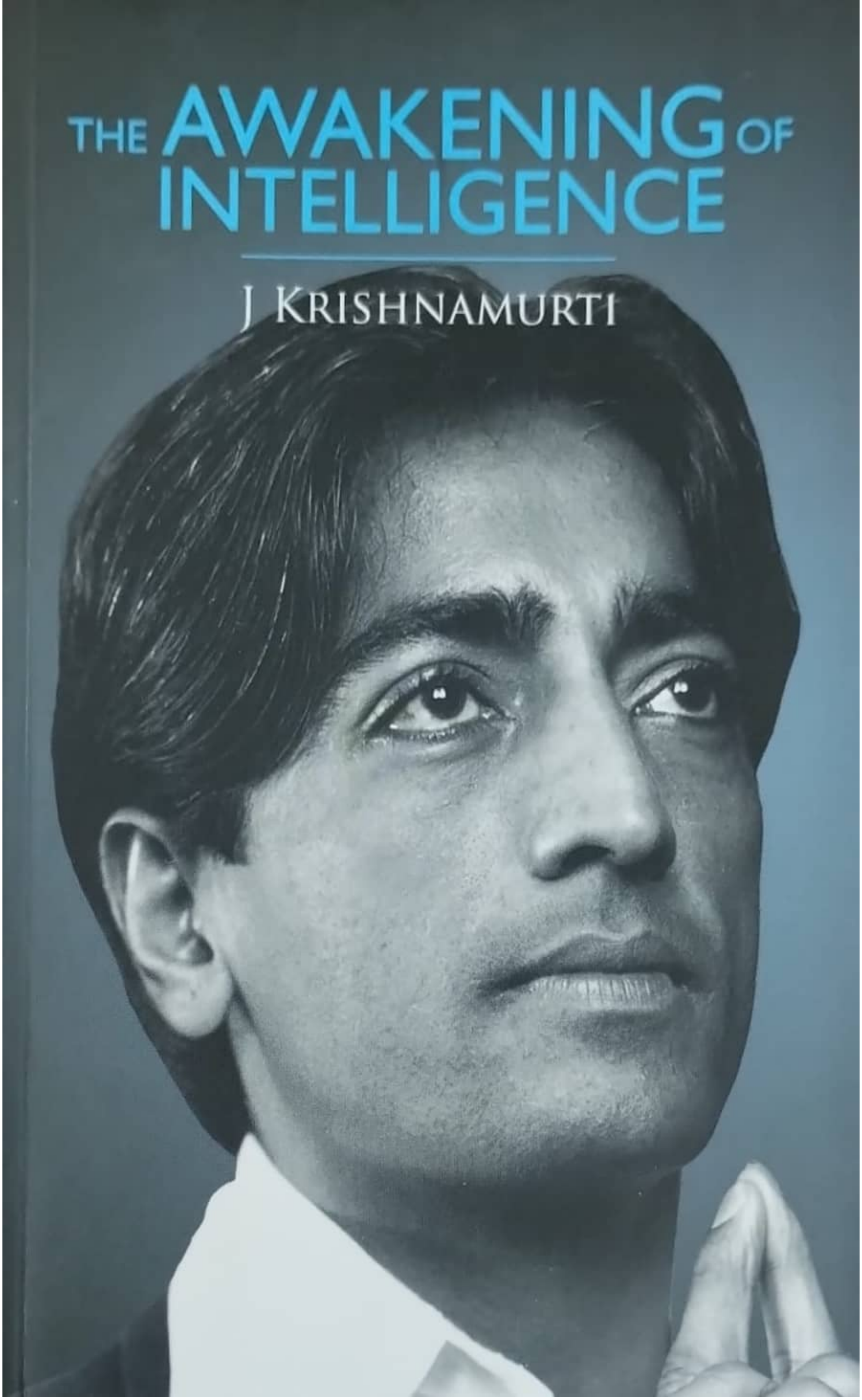

CamScanner

रात्रि सबसे अच्छी ध्यान के लिए

CamScanner

रात्रि सबसे अच्छी ध्यान के लिए
Join Osho Life-education Program.
WhatsApp : 82-82-82-34-60 @swami yogesh nishabad

CamScanner

सत्य और अहंकार का कोई संबंध नहीं, जहां अहंकार गिर जाता है,वहां सत्य है. तुम्हारी राख पर खिलता है फूल सत्य का.जब तक तुम हो,तब तक सत्य के संबंध में विचार कर सकते हो,लेकिन सत्य को न जाने पाओगे.और सत्य के संबंध में कितना ही जानो,वह सत्य को जानना नहीं हैकोई लाख जान ले प्रेम के संबंध में अगर प्रेम का नाद उसके प्राणों में न छिड़ा हो,तो सारे शास्त्र पढ़ डाले प्रेम के संबंध में,फिर भी प्रेम से वंचित ही रह जाएगा कोई प्रकाश के संबंध में सब पढ़ा ले,सब गुन ले,मगर अगर आंखें न हों उसके पास या आंखें भी हों और बंद हों,तो प्रकाश को न जान सकेगा.इस भेद को ख्याल में रखना,प्रकाश को जानना और प्रकाश के संबंध में जानना दो अलग बातें हैं.प्रकाश के संबंध में जानना दर्शनशास्त्र है और प्रकाश को जानना धर्म-ओशो,दीपक बारा

नाम का-9

CS CamScanner

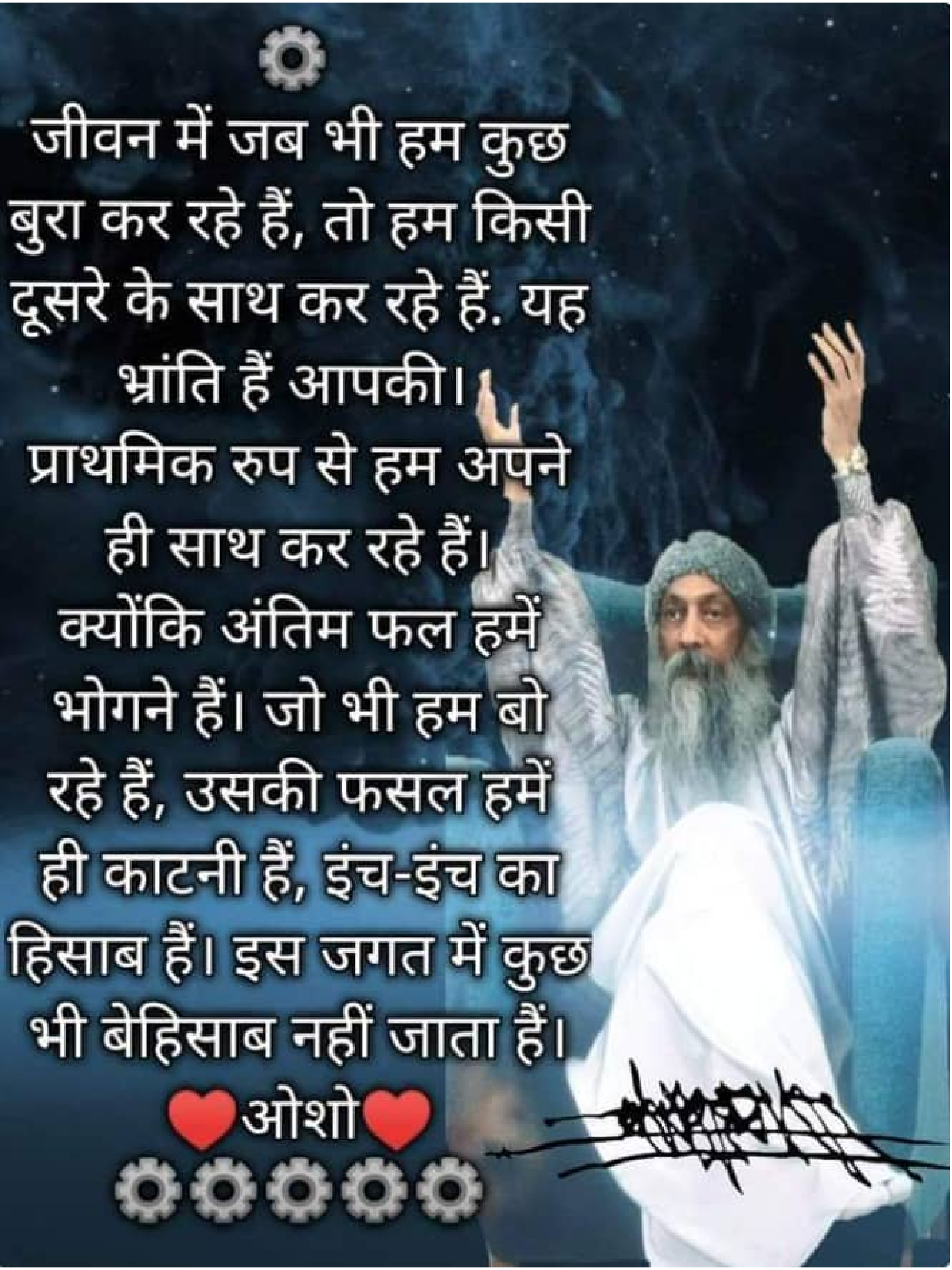
जीवन में जब भी हम कुछ
बुरा कर रहे हैं, तो हम किसी
दूसरे के साथ कर रहे हैं. यह
भ्रांति हैं आपकी।
प्राथमिक रुप से हम अपने
ही साथ कर रहे हैं।
क्योंकि अंतिम फल हमें
भोगने हैं। जो भी हम बो
रहे हैं, उसकी फसल हमें
ही काटनी हैं, इंच-इंच का
हिसाब हैं। इस जगत में कुछ
भी बेहिसाब नहीं जाता हैं।
❤ओशो❤

CamScanner

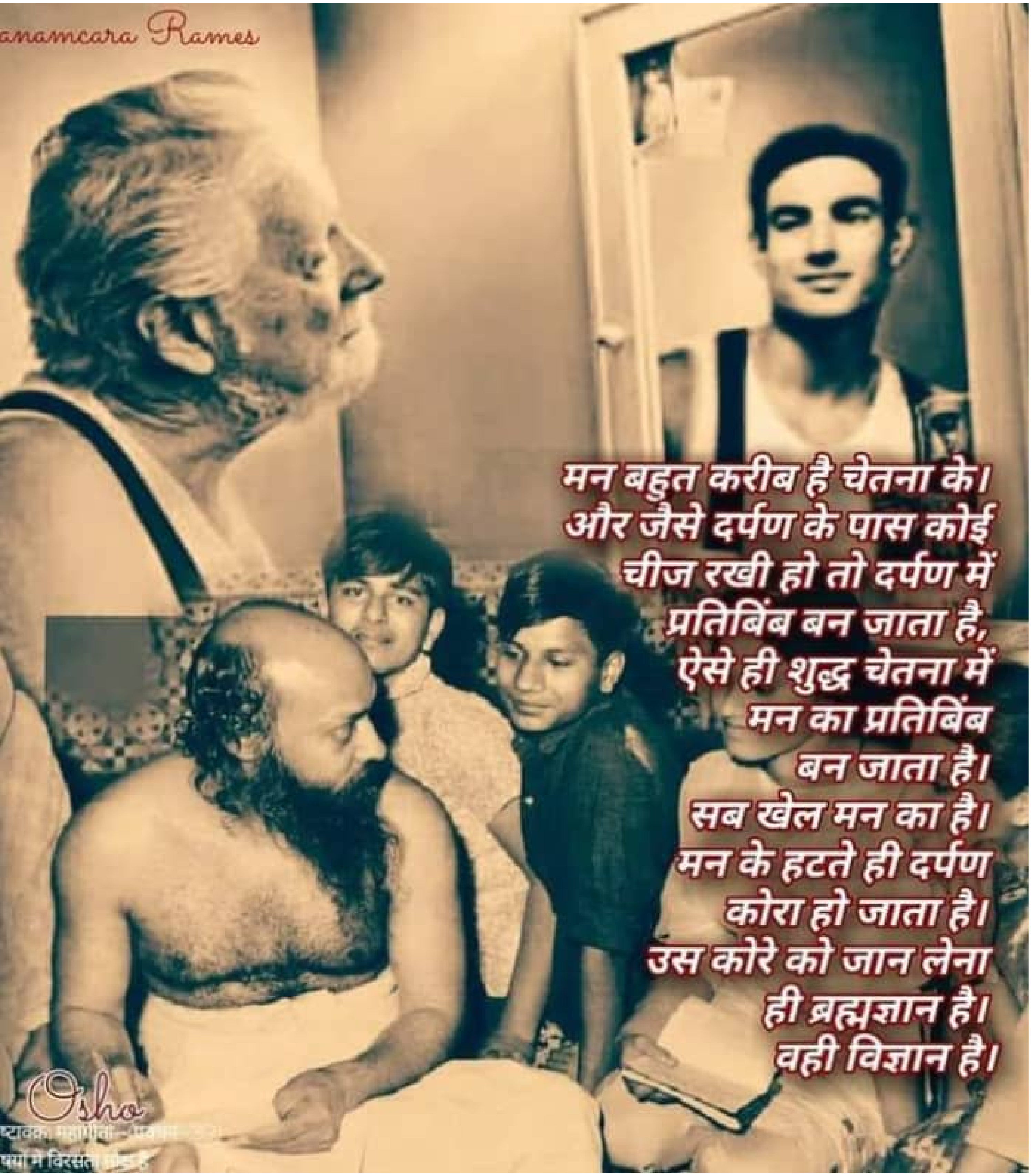

CS CamScanner

anamcara Rames
मन सदा तुम्हारे ऊपर रंग डाल रहा है।
और मन के कारण
तुम जो अर्थ लेते हो जीवन के,
वे सच्चे नहीं हैं;
वे तुम्हारे मन के हैं।
Osho
अष्टावक्र: महागीता--(प्रवचन--39)
विषयों में विरसता मोक्ष है

CamScanner

इकहार्ट एक बार अकेले में था। किसी वृक्ष--कुंज के एकांत कोने में बैठा था। उसका कोई परिचित वहां से निकला। वह इकहार्ट को अकेला देख उसके पास गया और बोला आपको अकेला देख मैंने सोचा कि चलूं आपको साथ दूं। ज्ञात है आपको कि इकहार्ट ने क्या उत्तर दिया? उसने कहा मैं अपने साथ था, आपने आकर मुझे अकेला कर दिया है।

क्या इस भांति कभी आप अपने साथ होते हैं? वही सत्संग है, वही प्रार्थना है, वही ध्यान है। साधना--पथ--(प्रवचन--7)

CamScanner

8:57 am 97%

तुम्हें यह स्मरण दिला दूं, कि अगर तुम्हारा मन बोलता रहता है, तब यहां एक भीड़ मौजूद रहती है; और अगर तुम सभी मौन हो, तब यहां केवल एक मौन, एक शांति होती है--क्योंकि एक कमरे में सौ मौन नहीं हो सकते। सौ अस्वस्थ मन तो हो सकते हैं, लेकिन सौ स्वस्थ मन नहीं हो सकते। स्वस्थता तुम्हें औरों से जोड़ती है, अस्वस्थता तोड़ती है--तुम्हें औरों से अलग रखती है। इसलिए अब मैं भीड़ से नहीं बोल रहा हूं, प्रत्येक व्यक्ति से सीधे बात कर रहा हूं। लेकिन यह सब तुम्हारे खुलेपन पर निर्भर करता है।

इसलिए ये दोनों बातें जो तुम महसूस करते हो, सही हैं; तुम्हारा खुला होना और रहस्य विद्यालय दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं..✍❤️
💻🌏

❤️ओशो❤️

-अनंत से अनंत की ओर

31

8 comments • 4 shares

CamScanner

8:57 am 97%

साढ़े तीन वर्ष तक मैं मौन रहा, क्योंकि मैं उन लोगों में जरा भी उत्सुक न था जो केवल बौद्धिक रूप से मुझमें रुचि रखते थे, मैं चाहता था कि वे छोड़ कर चले ही जाएं। उन साढ़े तीन वर्षों में वे चले गए। तब केवल वही लोग बचे जिन्हें हेराक्लाइट्स, या पाइथागोरस, या गौतम बुद्ध, या महावीर, या कृष्ण से कुछ लेना-देना नहीं है-- अगर ये सब नरक में जाएं, तो भी उन्हें चिंता नहीं, उनको किसी से कुछ मतलब नहीं है। मैं सिर्फ तुमसे सीधे बात कर सकता हूं, क्योंकि अब तुम बौद्धिक रूप से ही यहाँ पर नहीं हो।

उन मौन के वर्षों ने मुझे बौद्धिक प्रवृत्ति वाले लोगों से विलग कर दिया, क्योंकि मौन केवल उन्हीं व्यक्तियों को मेरे आस-पास बनाए रख सकता है; जिनके हृदय उसी लय में धड़क रहे हैं जिसमें कि मेरा हृदय धड़क रहा है। इसलिए यह एक बिलकुल ही नया आयाम है।

अब यह एक रहस्य विद्यालय है। और अब मैं बिना किसी अवरोध के बिना इस बात की चिंता किए कि तुम्हें चोट पहुंचेगी, तुम घायल होगे अथवा तुम्हारा ब्रेन वॉश हो जाएगा। इस सबकी परवाह किए बगैर बोल सकता हूं। अब तुम मेरे अपने लोग हो, और तुम लोग भी बिना कुछ पीछे बचाए मेरे प्रति पूरी तरह से खुल गए हो।

इसलिए तुम ठीक कहते हो, यह एक रहस्य विद्यालय है। इसे बनाने के लिए प्रामाणिक, वास्तविक, सच में ही जीवंत लोगों को ढूंढने के लिए मुझे पच्चीस वर्षों तक श्रम करना पड़ा।

और यह भी सच है कि तुम पहले से ज्यादा खुले हुए हो। इसी कारण अब तुम अधिक गहरा, ज्यादा निजी और आत्मीय संबंध अनुभव करते हो। जैसे कि मैं एक-एक व्यक्ति से, न कि समूह से, सीधे बात कर रहा हूं। यहां कोई भीड़-भाड़ नहीं है।

तुम्हें यह स्मरण दिला दूं, कि अगर तुम्हारा मन बोलता रहता है, तब यहां एक भीड़ मौजूद रहती है; और अगर तुम सभी मौन हो, तब यहां केवल एक मौन, एक शांति होती है--क्योंकि एक कमरे में सौ मौन नहीं हो सकते। सौ अस्वस्थ मन तो हो सकते हैं, लेकिन सौ स्वस्थ मन नहीं हो सकते। स्वस्थता तुम्हें औरों से जोड़ती है, अस्वस्थता तोड़ती है--तुम्हें

CamScanner

8:56 am 4G 97%

मैं अब प्रवचनों में पहले की अपेक्षा कहीं अधिक आत्मीयता का अनुभव करता हूं और ऐसा लगता है कि अब आप ऐसे व्यक्तियों से बोल रहे हैं जो उस क्षण में समग्रतः आपके साथ हैं। पूना में या रजनीशपुरम में ऐसी प्रगाढ़ अनुभूति मुझे कभी नहीं हुई। क्या यह रहस्य विद्यालय की प्रक्रिया का ही एक अंग है, अथवा मैं आपके प्रति अधिक खुला हो गया हूँ ?

पहली बात, में भिन्न-भिन्न समयों में भिन्न भिन्न तलों पर बोलता रहा हूँ, यह नितांत अनिवार्य था। शुरुआत में तो मुझे अप्रत्यक्ष रूप से ही बोलना पड़ा, क्योंकि तुम भयभीत हो सकते थे। मरने और फिर पुनर्जीवित होने के लिए तुम्हें फुसलाना पड़ा, क्योंकि नया जीवन तुम्हारे लिए अनभिज्ञ था। पुराना जीवन ही एकमात्र जीवन था जिसे तुम जानते थे। इसलिए शुरू-शुरू में मैं बहुत परोक्ष रूप से बोलता था। उदाहरण

के लिए प्रारंभ में मैं कबीर पर, मीरा पर, थॉमस पर, हेराक्लाइट्स पर, पाइथागोरस पर बोल रहा था। और बीच-बीच में जब कभी तुम पर चोट करने का अवसर मुझे मिलता, तो चोट भी करता था, पर मूल रूप से मैं तुम्हें पाइथागोरस, हेराक्लाइट्स के साथ उलझाए रखता था। मैं खोद-खोद कर गड़े मुर्दों को जीवन देता और उनमें तुम्हें व्यस्त रखता था। ताकि जब तुम गौतम बुद्ध, महावीर, शंकर आदि के बारे में सुनने में व्यस्त हो जाओ तो कभी-कभार बीच-बीच में मैं तुम पर चोट करता यह देखने के लिए कि तुम भाग खड़े होते हो या अभी भी बने रहते हो; वर्ना और किया भी क्या जा सकता है? मेरा हेराक्लाइट्स से कुछ लेना-देना नहीं है; न ही हेराक्लाइट्स को मुझसे कोई सरोकार है। वह कभी एक शब्द मेरे बारे में नहीं बोला, और मैंने कई वर्ष बर्बाद किए। लेकिन वह एक विधि थी, उसकी आवश्यकता थी। फिर मैंने उस विधि को छोड़ दिया, क्योंकि मैंने देखा कि अब ऐसे लोग तैयार हैं जिनसे कि सीधे ही बात की जा सकती है।

साढ़े तीन वर्ष तक मैं मौन रहा, क्योंकि मैं उन लोगों में जरा भी उत्सुक न था जो केवल बौद्धिक रूप से मुझमें रुचि रखते थे, मैं चाहता था कि वे छोड़ कर चले ही जाएं। उन साढ़े तीन वर्षों में वे चले गए। तब केवल वही लोग बचे जिन्हें हेराक्लाइट्स, या पाइथागोरस, या गौतम बुद्ध, या महावीर, या कृष्ण से कुछ लेना-देना नहीं है-- अगर ये सब नरक में

CamScanner

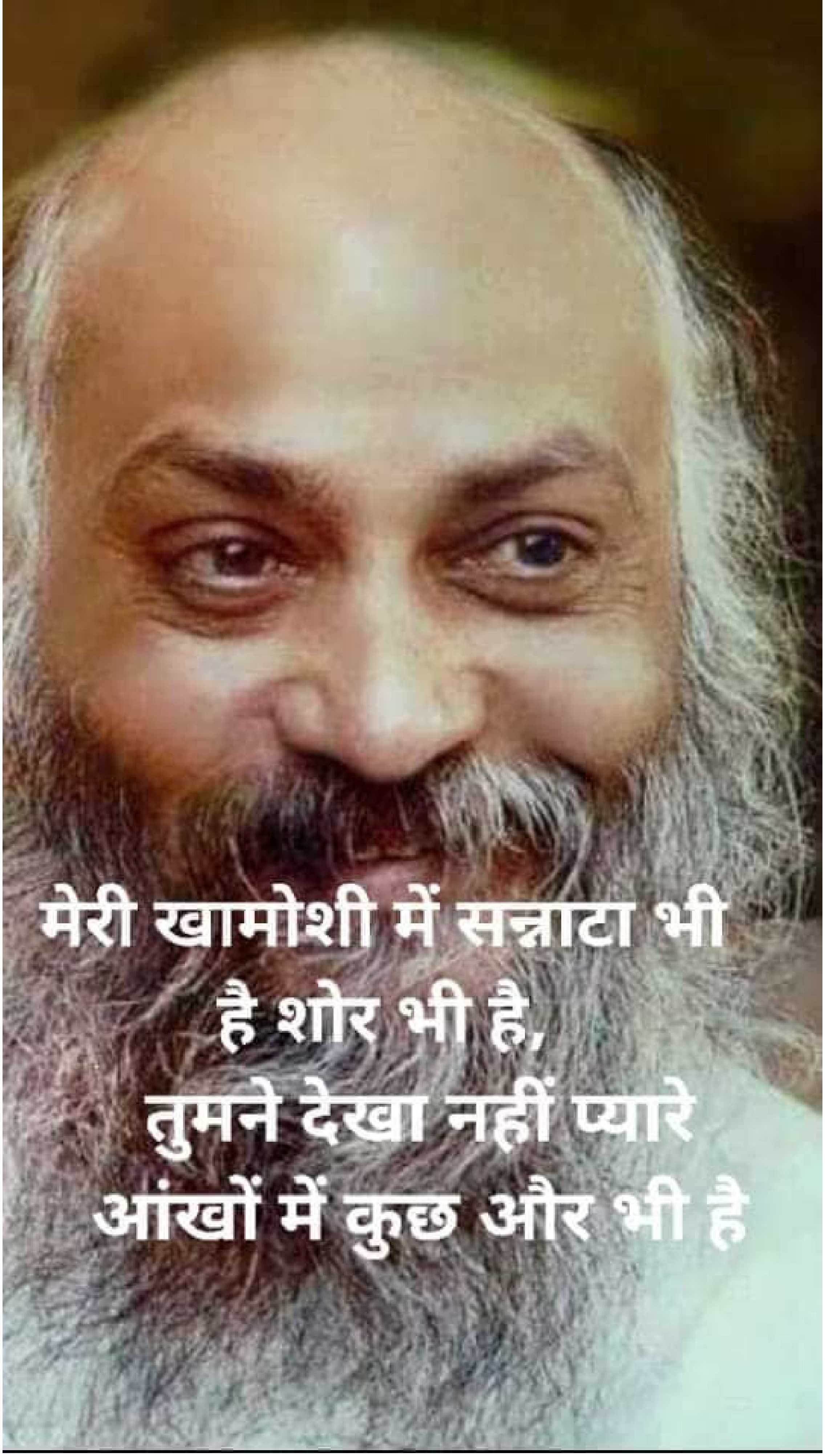

CS CamScanner

भक्ति कोई शास्त्र नहीं है--यात्रा है।
भक्ति कोई सिद्धांत नहीं है--जीवन-रस है।

भक्त का अर्थ है: जो रोना जानता है। भक्त का अर्थ है: जो असहाय होना जानता है। भक्त का अर्थ है: जो अपने ना-कुछ होने को अनुभव करता है।

अहंकार से भक्ति बिलकुल विपरीत है। इसलिए जो अहंकार की खोज पर चले हैं, वे कभी भक्ति को उपलब्ध न हो सकेंगे। परमात्मा को पाना हो तो स्वयं को खोना ही पड़ेगा।

यह खोने की यात्रा थी। यह राह बड़ी मधुभरी थी, बड़े फूल खिले थे! क्योंकि भक्ति के मार्ग पर कोई मरुस्थल नहीं है। तुम पैर भर रखो, पहला कदम ही आखिरी कदम बन जाता है। तुम पैर भर बढ़ाओ कि सौंदर्य अपने अनंत रूपों को खोलने लगता है।

परमात्मा को खोजना नहीं, अपने को खोलना है, ताकि परमात्मा तुम्हें खोज सके। इस भ्रांति में तो तुम रहना ही मत कि तुम परमात्मा को खोज लोगे। भक्ति का मूल आधारा यही है कि परमात्मा तुम्हें खोज रहा है, तुम छुप क्यों रहे हो, तुम बचाए क्यों फिरते हो अपने को? तुम उसे न खोज सकोगे, क्योंकि तुम्हें न उसका पता मालूम, न ठिकाना मालूम। और हाथ कितने छोटे हैं और आकाश कितना बड़ा है! तुम मुट्ठियों में आकाश को बांध पाओगे..??

ओशो

CamScanner

मन की शांति

एक गरीब आदमी था. वो हर रोज नजदीक के मंदिर में जाकर वहां साफसफाई करता और फिर अपने काम पर चला जाता था. अक्सर वो अपने प्रभु से कहता कि मुझे आशीर्वाद दीजिए तो मेरे पास ढेर सारा धन-दौलत आ जाए. एक दिन ठाकुरजी ने बाल रूप में प्रकट हो उस आदमी से पूछ ही लिया कि क्या तुम मंदिर में केवल इसीलिए काम करने आते हो? उस आदमी ने पूरी ईमानदारी से कहा कि हां, मेरा उद्देश्य तो यही है कि मेरे पास ढेर सारा धन आ जाए, इसीलिए तो आपके दर्शन करने आता हूं. पटरी पर सामान लगाकर बेचता हूं. पता नहीं, मेरे सुख के दिन कब आएंगे? बाल रूप ठाकुरजी ने कहा कि तुम चिंता मत करो. जब तुम्हारे सामने अवसर आएगा तब ऊपर वाला तुम्हें आवाज थोड़ी लगाएगा. बस, चुपचाप तुम्हारे सामने अवसर खोलता जाएगा. युवक चला गया. समय ने पलटा खाया, वो अधिक धन कमाने लगा. इतना व्यस्त हो गया कि मंदिर में जाना ही छूट गया. कई वर्षों बाद वह एक दिन सुबह ही मंदिर पहुंचा और साफसफाई करने लगा. ठाकुरजी फिर प्रकट हुए और उस व्यक्ति से बड़े ही आश्चर्य से पूछा- क्या बात है, इतने बरसों बाद आए हो, सुना है बहुत बड़े सेठ बन गए हो! वो व्यक्ति बोला- मैंने बहुत धन कमाया. अच्छे घरों में बच्चों की शादियां की, पैसे की कोई कमी नहीं है, पर दिल में चैन नहीं है. ऐसा लगता था कि रोज सेवा करने आता रहूं, पर आ न सका. हे प्रभु, आपने मुझे सब कुछ दिया पर जिंदगी में चैन नहीं दिया. प्रभु ने कहा कि तुमने वह मांगा ही कब था? जो तुमने मांगा, वो तो तुम्हें मिल गया ना, फिर आज यहां क्या करने आए हो? उसकी आंखों में आंसू भर आए. ठाकुरजी के चरणों में गिर पड़ा और बोला- अब कुछ मांगने के लिए सेवा नहीं करूंगा. बस दिल को शांति मिल जाए. ठाकुरजी ने कहा- पहले तय कर लो कि अब कुछ मांगने के लिए मंदिर की सेवा नहीं करोगे, बस मन की शांति के लिए ही आओगे. ठाकुरजी ने समझाया कि चाहे मांगने से कुछ भी मिल जाए, पर दिल का चैन कभी नहीं मिलता, इसलिए सेवा के बदले कुछ मांगना नहीं है. वो व्यक्ति बड़ा ही उदास होकर ठाकुरजी को देखता रहा और बोला- मुझे कुछ नहीं चाहिए. आप बस, मुझे सेवा करने दीजिए. सच में, मन की शांति सबसे अनमोल है.

©THEYOGESHKUMARR

CS CamScanner

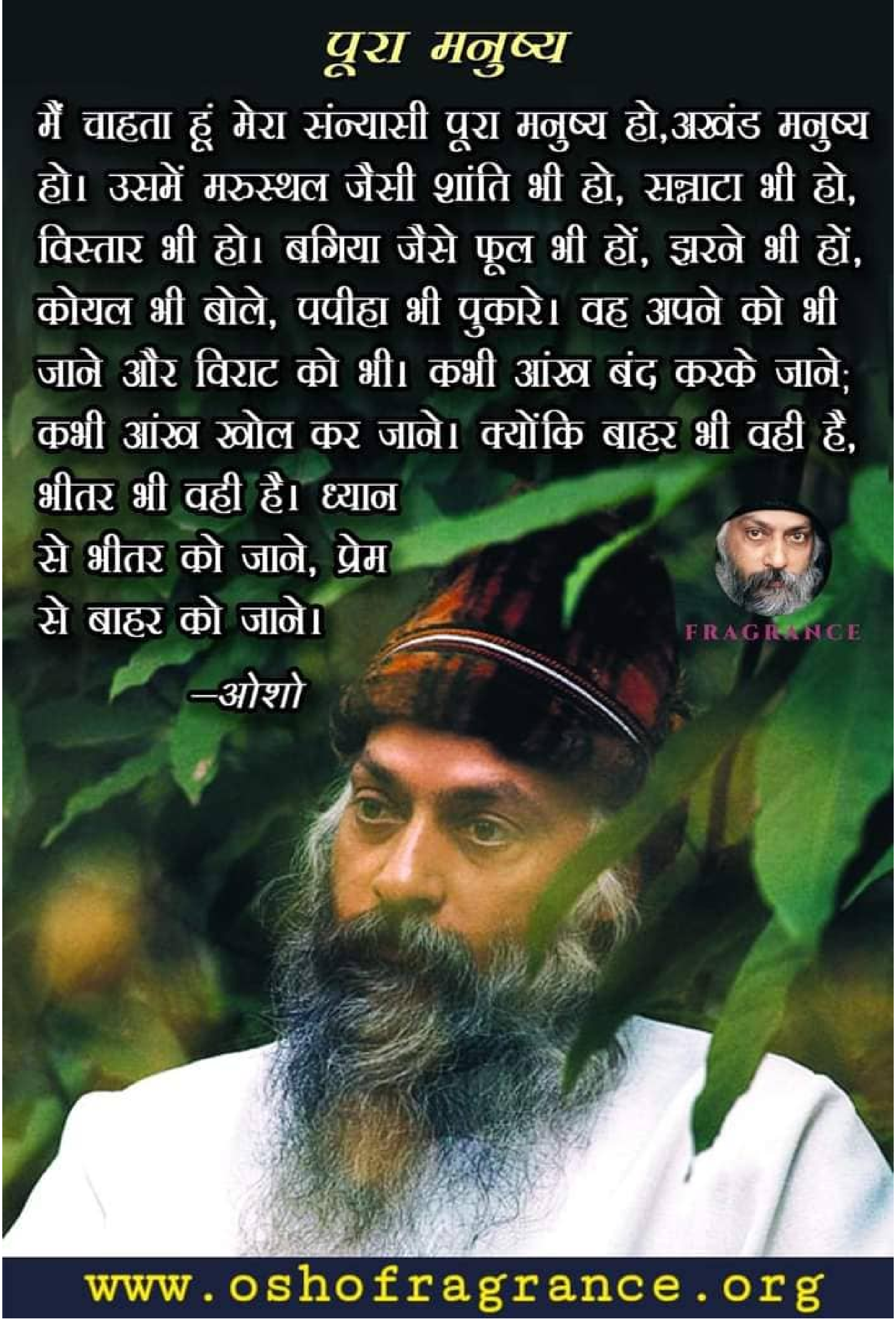
पूरा मनुष्य
मैं चाहता हूं मेरा संन्यासी पूरा मनुष्य हो,अखंड मनुष्य हो। उसमें मरुस्थल जैसी शांति भी हो, सन्नाटा भी हो, विस्तार भी हो। बगिया जैसे फूल भी हों, झरने भी हों, कोयल भी बोले, पपीहा भी पुकारे। वह अपने को भी जाने और विराट को भी। कभी आंख बंद करके जाने; कभी आंख खोल कर जाने। क्योंकि बाहर भी वही है, भीतर भी वही है। ध्यान से भीतर को जाने, प्रेम से बाहर को जाने।
—ओशो
FRAGRANCE
www.oshofragrance.org

CamScanner

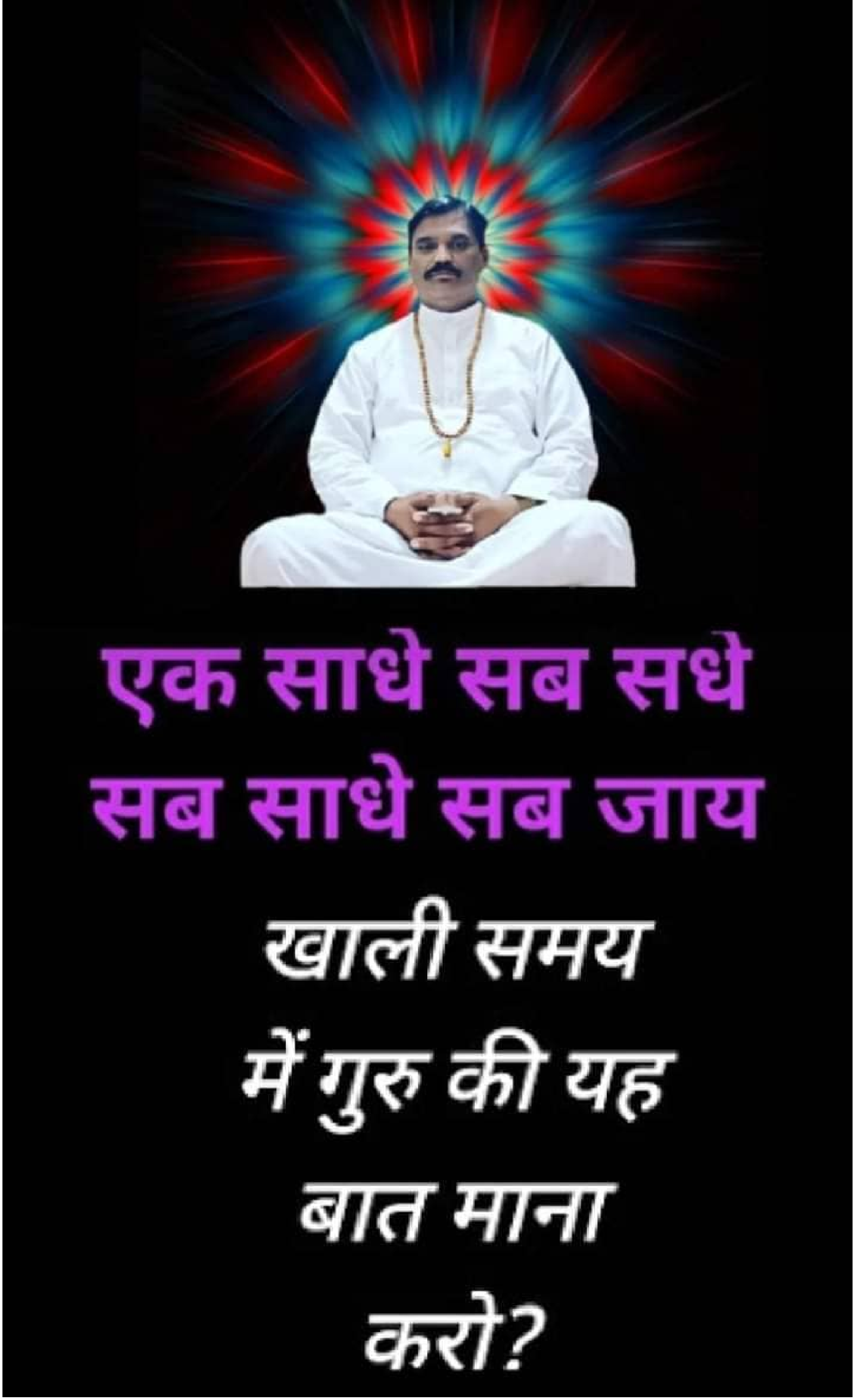

CamScanner

8:46 am 98%

facebook

Like Comment Send Share

Gan Jing World

Sponsored ·

"Success is a series of small steps taken o... See more

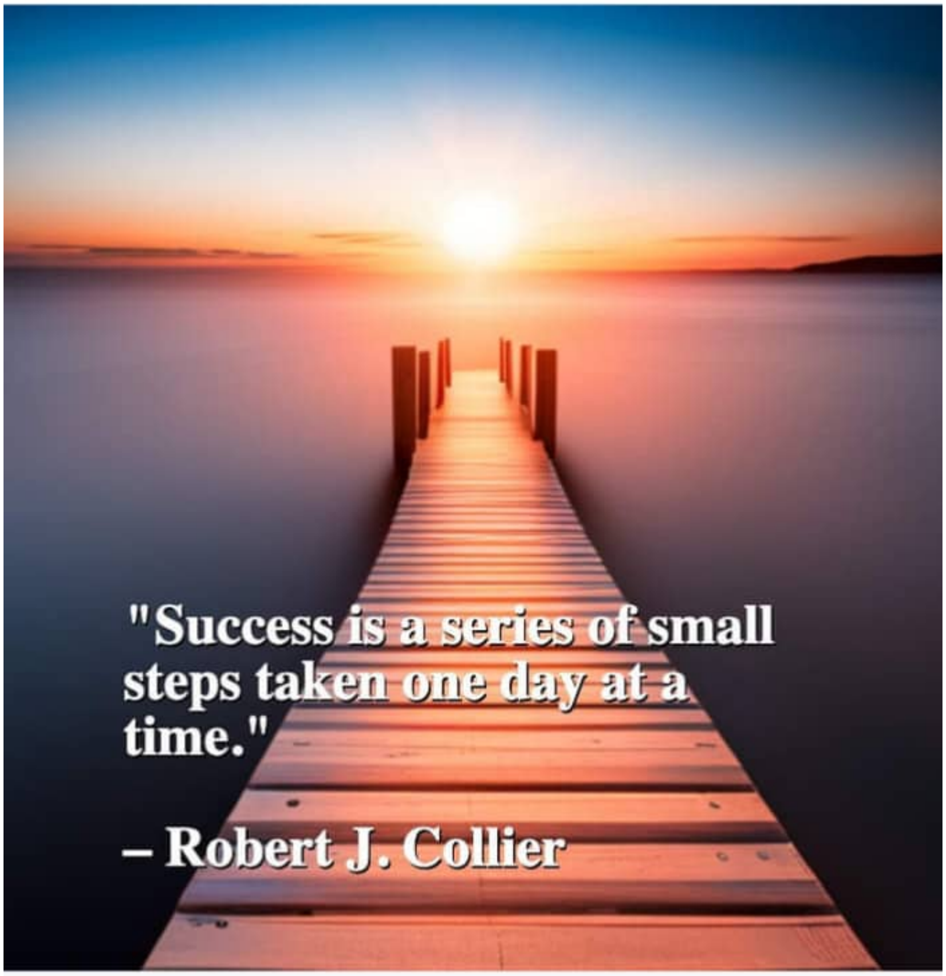

Gan Jing World

Do you want more of your ads to be like this one?

Yes No

165K 916 comments • 15 shares

Like Comment Share

CamScanner

लाओत्से बड़ी अनूठी बात
बोलता है! लाओत्से
कहता है;- सूचनाओं को
छोड़ो! ज्ञान को छोड़ो,
और फिर.. बुद्धीमता को
भी छोड़ दो..
असल में जिसको हम
पकड़ और छोड़ सकते हैं!
वो ज्ञान नहीं है,
उसके बाद जो बचेगा, वो
तुम्हारा स्वभाव है!
जिसको लाओत्से ने
"ताओ कहा है,
महावीर ने! आत्मा कहा.,
और बुद्ध ने शून्य कहा है!

ओशो

CS CamScanner

8:40 am 99%

165K 4.9K comments • 19K shares • 5.5M views

Like Comment Send Share

DEMIC · Follow

30 Nov ·

Such an important lesson!
... See more

94K 1.3K comments • 25K shares • 4.1M views

Like Comment Give Share

TumHi - Video Chat In India shared a link.
Sponsored ·

CamScanner

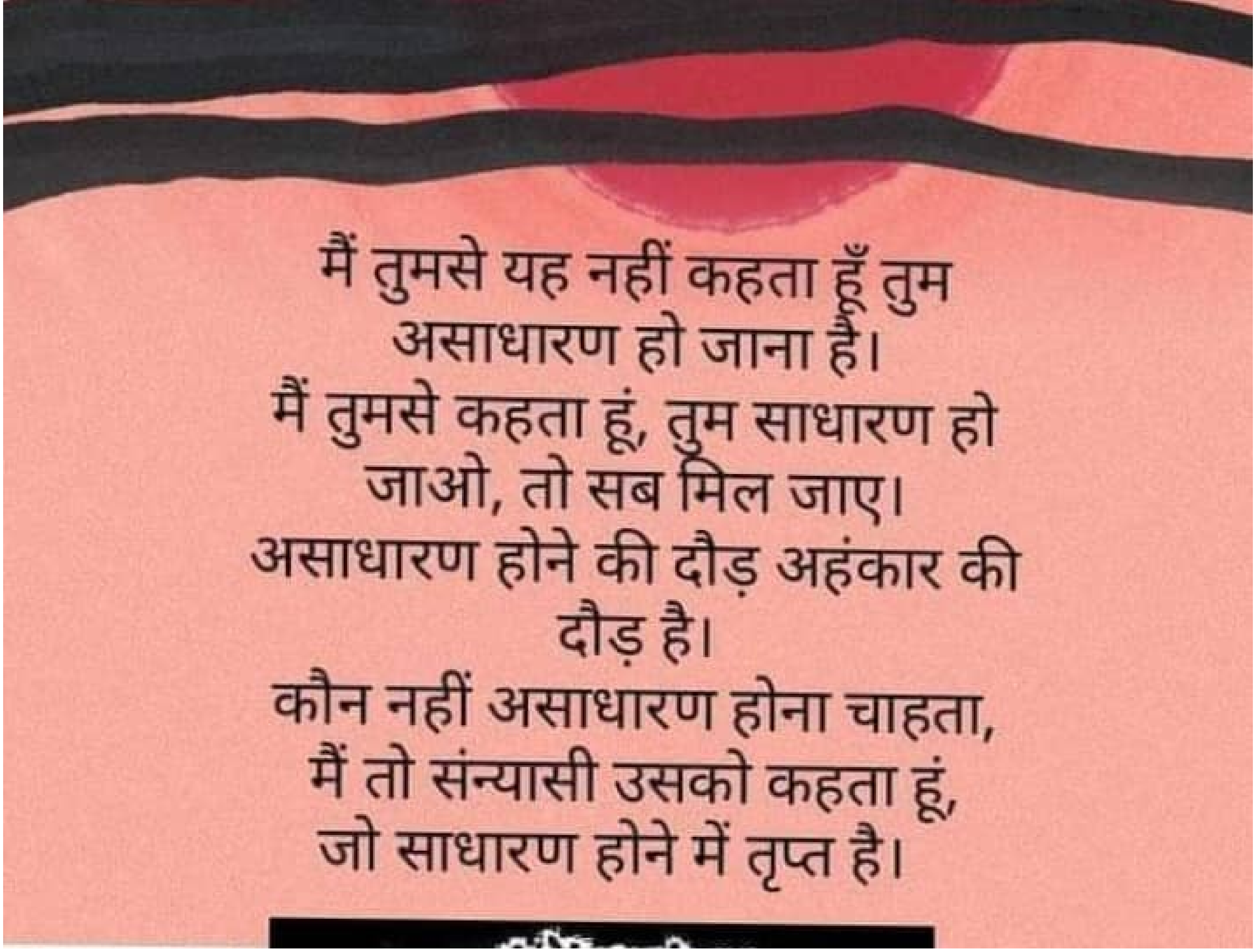
मैं तुमसे यह नहीं कहता हूँ तुम
असाधारण हो जाना है।
मैं तुमसे कहता हूं, तुम साधारण हो
जाओ, तो सब मिल जाए।
असाधारण होने की दौड़ अहंकार की
दौड़ है।
कौन नहीं असाधारण होना चाहता,
मैं तो संन्यासी उसको कहता हूं,
जो साधारण होने में तृप्त है।

CamScanner

9:50 am 91%

दरवाजे पर बैठा था। संत ने कुत्ते से कहा- अब तो आप कुत्ता हो गए, अब तो भगवान से मिलने चलो।
कुत्ता बोला- महाराज! आप देखते नहीं कि मेरी बहू कितना सोना पहनती है, अगर कोई चोर आया तो मैं भौंक कर भगा दूँगा। मेरे बिना कौन इनकी रक्षा करेगा?
संत चले गए। अगली बार कुत्ता भी मर गया था और गंदे नाले पर मेंढक बने टर्र टर्र कर रहा था।
संत को बड़ी दया आई, बोले- सेठ जी अब तो आप की दुर्गति हो गई। और कितना गिरोगे? अब भी चल पड़ो।
मेंढक क्रोध से बोला- अरे महाराज! मैं यहाँ बैठकर, अपने नाती पोतों को देखकर प्रसन्न हो जाता हूँ। और भी तो लोग हैं दुनिया में, आपको मैं ही मिला हूँ भगवान से मिलवाने के लिए? जाओ महाराज, किसी और को ले जाओ। मुझे माफ करो।
लोकेशानन्द कहता है कि संत तो कृपालु हैं, बार बार प्रयास करते हैं। पर उस सेठ की ही तरह, दुनियावाले भगवान से मिलने की बात तो बहुत करते हैं, पर मिलना नहीं चाहते।

CamScanner

एक संत, एक सेठ के पास आए। सेठ ने उनकी बड़ी सेवा की। उनकी सेवा से प्रसन्न होकर, संत ने कहा- अगर आप चाहें तो आपको भगवान से मिलवा दूँ?

सेठ ने कहा- महाराज! मैं भगवान से मिलना तो चाहता हूँ, पर अभी मेरा बेटा छोटा है। वह कुछ बड़ा हो जाए तब मैं चलूँगा।

बहुत समय के बाद संत फिर आए, बोले- अब तो आपका बेटा बड़ा हो गया है। अब चलें?

सेठ- महाराज! उसकी सगाई हो गई है। उसका विवाह हो जाता, घर में बहू आ जाती, तब मैं चल पड़ता।

संत तीन साल बाद फिर आए। बहू आँगन में घूम रही थी। संत बोले- सेठ जी! अब चलें?

सेठ- महाराज! मेरी बहू को बालक होने वाला है। मेरे मन में कामना रह जाएगी कि मैंने पोते का मुँह नहीं देखा। एक बार पोता हो जाए, तब चलेंगे।

संत पुनः आए तब तक सेठ की मृत्यु हो चुकी थी। ध्यान लगाकर देखा तो वह सेठ बैल बना वहीं सामान ढ़ो रहा था।

संत बैल के कान में बोले- अब तो आप बैल हो गए, अब भी भगवान से मिल लें।

बैल- मैं इस दुकान का बहुत काम कर देता हूँ। मैं न रहूँगा तो मेरा लड़का कोई और बैल रखेगा। वह खाएगा ज्यादा और काम कम करेगा। इसका नुकसान हो जाएगा।

संत फिर आए तब तक बैल भी मर गया था। देखा कि वह कुत्ता बनकर दरवाजे पर बैठा था। संत ने कुत्ते से कहा- अब तो आप कुत्ता हो गए, अब तो भगवान से मिलने चलो।

कुत्ता बोला- महाराज! आप देखते नहीं कि मेरी बहू कितना सोना पहनती है, अगर कोई चोर आया तो मैं भौंक कर भगा दूँगा। मेरे बिना कौन इनकी रक्षा करेगा?

संत चले गए। अगली बार कुत्ता भी मर गया था और गंदे नाले पर मेंढक बने टर्र टर्र कर रहा था।

संत को बड़ी दया आई, बोले- सेठ जी अब तो आप की दुर्गति हो गई। और कितना गिरोगे? अब भी चल पड़ो।

मेंढक क्रोध से बोला- अरे महाराज! मैं यहाँ बैठकर, अपने नाती पोतों को देखकर प्रसन्न हो जाता हूँ। और भी तो लोग हैं दुनिया में, आपको मैं ही मिला हूँ भगवान से मिलवाने के लिए? जाओ महाराज, किसी और

CamScanner

दुनियावाले भगवान से मिलने की
बात तो बहुत करते हैं,
पर मिलना नहीं चाहते।

024 नाली का मेंढक

CamScanner

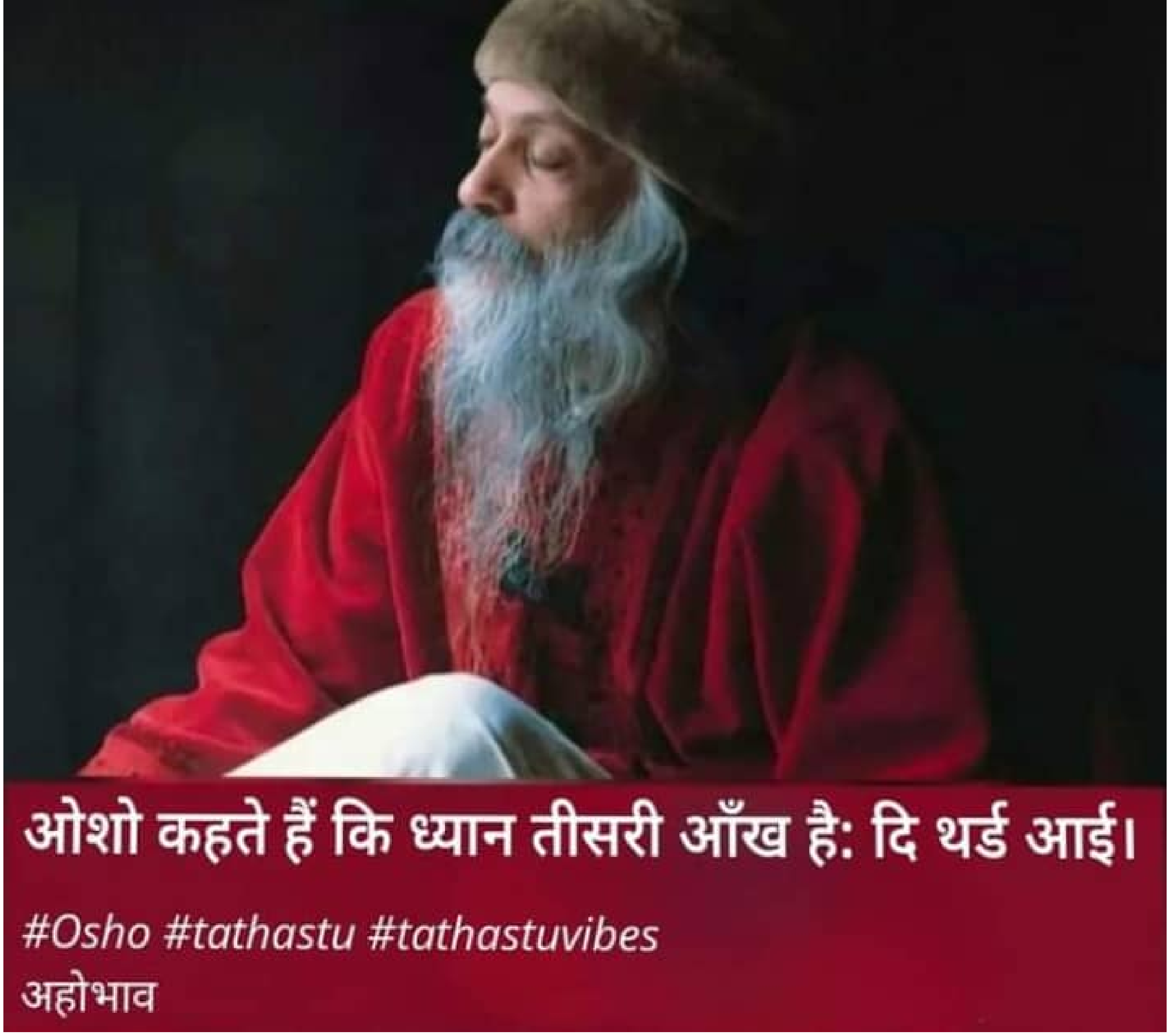
ओशो कहते हैं कि ध्यान तीसरी आँख है: दि थर्ड आई।
#Osho #tathastu #tathastuvibes
अहोभाव

CamScanner

जब कोई आदमी मर जाता
है, तो उसके ठीक
3-4 मिनट तक! उसकी
"चेतना शरीर के पास
ही रहती है..
और अपने आस-पास रोने
वालों को देखकर सोचता
है कि; "मैं तो मौजूद हूं, फिर
ये सब क्यूँ रो रहे हैं.!
ओशो

CamScanner

Bsb Mahesh Singh plot Rohan...
Yesterday, 10:08 pm

रिश्ता

रिश्ता उसी से रखो जो इज्जत
और सम्मान दे,
मतलब की भीड़ बढ़ाने का कोई
फ़ायदा नहीं।

Reply

CamScanner

4:36 pm 70%

मैं एक मुसलमान फकीर का जीवन पढ रहा था। एक आदमी मेहमान हुआ। सुबह दोनों नमाज पढ़ने बैठे। वह आदमी नया—नया था, परदेशी था उस गांव में। वह गलत दिशा में मुंह करके बैठ गया। काबा की तरफ मुंह होना चाहिए, मक्का की तरफ मुंह होना चाहिए, वह गलत दिशा में मुंह करके बैठ गया। और जब उस आदमी ने आंखें खोलीं तो फकीर को दूसरी दिशा में मुंह किये नमाज पढ़ते देखा तो वह बहुत घबड़ाया कि बड़ी भूल हो गई। वह फकीर से पहले नमाज करने बैठ गया था तो देख नहीं पाया कि ठीक दिशा कहां है।

जब फकीर नमाज से उठा तो उसने कहा महानुभाव, आप तो मेरे बाद ध्यान करने बैठे, आपने तो देख लिया होगा कि मैं गलत दिशा में ध्यान कर रहा हूं। मुझे कहा क्यों नहीं? मुझसे यह गलती क्यों हो जाने दी? वह फकीर हंसने लगा उसने कहा, हमने गलती देखना ही छोड़ दी। अब जो होता है ठीक होता है। हम अपनी गलती नहीं देखते तो तेरी गलती हम क्या देखें! गलती देखना छोड़ दी। जब से गलती देखना छोड़ी तबसे हम बड़े सुखी हैं।

जो न तो किस्मत से नाराज है

न भाग्य से रुष्ट है

जो जीवन में देखता ही नहीं कोई भूल। जो है वैसा ही होना चाहिए। जैसा हुआ वैसा ही होना चाहिए था। जैसा होगा वैसा ही होगा। ऐसा जिसने जान लिया, ऐसा परम स्वीकार जिसके भीतर पैदा हुआ—फिर सुख ही सुख है। फिर रस बहता। फिर तो मगन ही मगन। फिर तो मस्ती ही मस्ती है।

फिर तो सब उपद्रव गये। फिर काटे कहां बचे? फिर तो फूल ही फूल हैं, कमल ही कमल हैं।

जिसकी जरूरतें थोड़ी और ईमान बड़ा है

हमारी जरूरतें बड़ी और ईमान छोटा है। हम ईमान को बेचकर जरूरतें पूरी कर रहे हैं। ईमान को बेचते हैं, वस्तुएं खरीद लाते हैं। हम सोचते हैं, हम बड़े समझदार हैं।

क्षमा करो, मगर दो —चार बातें प्राचीनों को भी मालूम थीं। उन्हें मालूम था कि चाहे जरूरतें कितनी ही कट जायें, कोई चिंता नहीं, ईमान मत बेच देना। ईमान बेचना यानी आत्मा को बेचना है। ईमान बेचना यानी जीवन की मूल भित्ति को बेच देना है। तब तुम कूड़ा—करकट खरीद लोगे, एक दिन पाओगे हाथ तो भरे हैं, प्राण सूने हैं। जाते वक्त हाथ चाहे

CamScanner

5:22 pm 57%

facebook

Like Comment Send Share

Swami Antar Rajat Rajat
3h ·

अनुकरण

कितना आसान है--बुद्ध-पुरुषों जैसे वस्त्र पहन लेना। कितना आसान है--उनके जैसे उठना, बैठना, चलना,
और कितना कठिन है, उनके जैसा हो जाना!
वह जो भीतर है, वह जो जीवंत ज्योति भीतर है, उसके जैसा हो जाना अति कठिन है। इसलिए हम सुगम मार्ग खोजते हैं। मन सदा ही लीस्ट रेसिस्टेन्स--जहां कम से कम असुविधा हो, उसको चुनता है।
असुविधा इसमें कुछ भी नहीं है कि तुम बुद्ध-जैसा वस्त्र पहन लो, कि तुम बुद्ध जैसे उठो-बैठो; बुद्ध जो भोजन करें, तुम भी करो; बुद्ध जब सोएं, तब तुम भी सो जाओ। तुम बाहर से बिलकुल अभिनय करो।
अभिनेता हो जाना सबसे सरल है। लेकिन अभिनेता प्रामाणिक नहीं है। अभिनेता एक झूठ है। और तुम भली-भांति जानते रहोगे कि अभिनय बाहर-बाहर है। भीतर तुम्हें अपना अंधकार, अपनी नग्नता, अपनी सड़ी-गली स्थिति दिखाई पड़ती रहेगी।
तुम उसे कैसे छिपाओगे? वस्त्र कितने ही सुंदर हों, और आभूषण कितने ही मूल्यवान, लेकिन तुम्हारे भीतर के नासूर उनसे मिटेंगे नहीं, छिपेंगे भी नहीं। तो बुद्ध-पुरुषों से यह सीखना कि तुम अपने मार्ग पर कैसे चलो। बुद्ध-पुरुषों से अनुकरण मत सीखना।
उनसे तुम यह सीखना कि तुम्हारा बुद्धत्व कैसे जगे। आंख बंद करके अंधे की भांति उनके पीछे मत चलना। क्योंकि उनका मार्ग, तुम्हारा मार्ग कभी भी होनेवाला नहीं है। इसलिए जो अनुकरण करेगा, वह भटक जाएगा। यह पहली बात समझ लें।

🌹🌹 *ओशो* 🌹🌹
सहज समाधि भली, प्रवचन 6

CamScanner

5:21 pm 58%

लो और तुम भी उन्हें गुनगुनाओ।
बल्कि इसलिए ताकि तुम्हें भरोसा आए तुम्हारे पैर में बल आए तुम खोज पर निकल सको।

लंबी यात्रा है।
जंगल-पहाड़ों से गुजरना होगा।
हजार तरह के पत्थर-पहाड़ पार करना होगा।
और हजार तरह की बाधाएं तुम्हारे भीतर हैं जो तुम्हें तोड़नी होंगी।
यात्रा दुर्गम है।
मगर अगर भरोसा हो कि सरोवर है तो तुम यात्रा पूरी कर लोगे। अगर भरोसा न हो कि सरोवर है तो तुम चलोगे कैसे ???
पहला ही कदम कैसे उठाओगे ???
गीतों का अर्थ इतना ही है कि तुम्हें भरोसा आ जाए कि सरोवर हैं।

और भरोसा काफी नहीं है।
भरोसा सरोवर नहीं बन सकता।
सरोवर खोजना होगा।

ओशो
नहीं सांझ नहीं भोर-(प्रवचन-04)

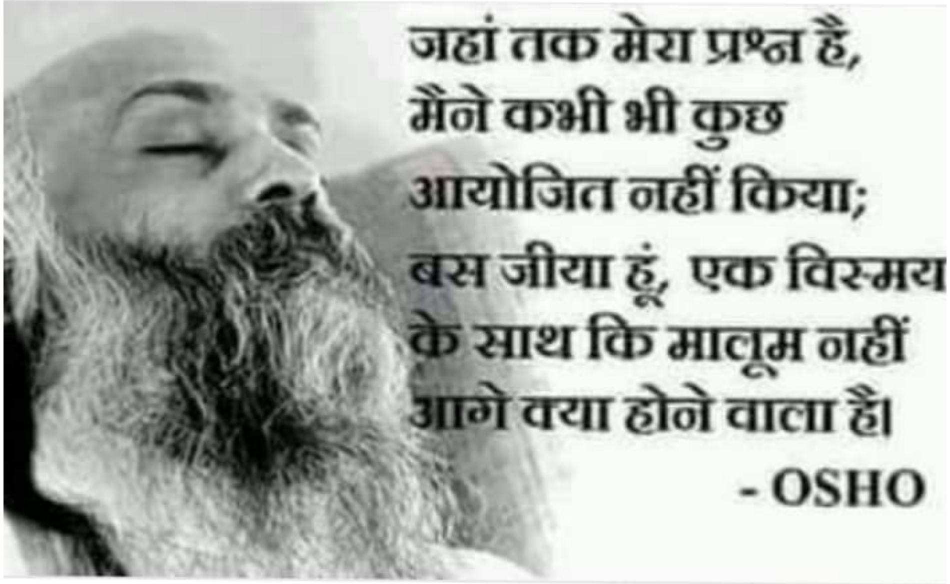

8

CamScanner

5:21 pm 58%

आठ पहर सिमिटे रहैं, अपने ही माहीं
(भाग -16)

मैं गीत गाता हूं सरिताओं के, सरोवरों के।
तुम सुन लेते हो।
तुम गीत भी कंठस्थ कर लेते हो।
तुम कहते हो गीत बड़े प्यारे हैं।
तुम भी गीत गुनगुनाने लगते हो
सरिताओं के सरोवरों के।
लेकिन इससे प्यास तो न बुझेगी।

गीतों के सरिता-सरोवर प्यास को बुझा नहीं सकते। और ऐसा भी नहीं कि गीतों के सरिता-सरोवर बिल्कुल व्यर्थ हैं।
उनकी सार्थकता यहीं है कि वे तुम्हारी प्यास को और भड़काएं ताकि तुम असली सरोवरों की खोज में निकलो।

मैं यह जो गीत गाता हूं--सरिता-सरोवरों के
वह इसीलिए ताकि तुम्हारे हृदय में श्रद्धा उमगे कि हां, सरिता-सरोवर हैं पाए जा सकते हैं।
ताकि तुम मेरी आंख में आंख डाल कर देख सको कि हां सरिता-सरोवर हैं ।
ताकि तुम मेरा हाथ हाथ में लेकर देख सको कि हां कोई संभावना है कि हम भी तृप्त हो जाएं कि तृप्ति घटती है कि ऐसी भी दशा है परितोष की जहां कुछ पाने को नहीं रहता कहीं जाने को नहीं रहता।
ऐसा भी होता है ऐसा चमत्कार भी होता है जगत में--कि आदमी निर्वासना होता है।
और उसी निर्वासना में मोक्ष की वर्षा होती है।

मैं गीत गाता हूं सरिता-सरोवर के इसलिए नहीं कि तुम गीत कंठस्थ कर लो और तुम भी उन्हें गुनगुनाओ।
बल्कि इसलिए ताकि तुम्हें भरोसा आए तुम्हारे पैर में बल आए तुम खोज पर निकल सको।

लंबी गाथा है।

CamScanner

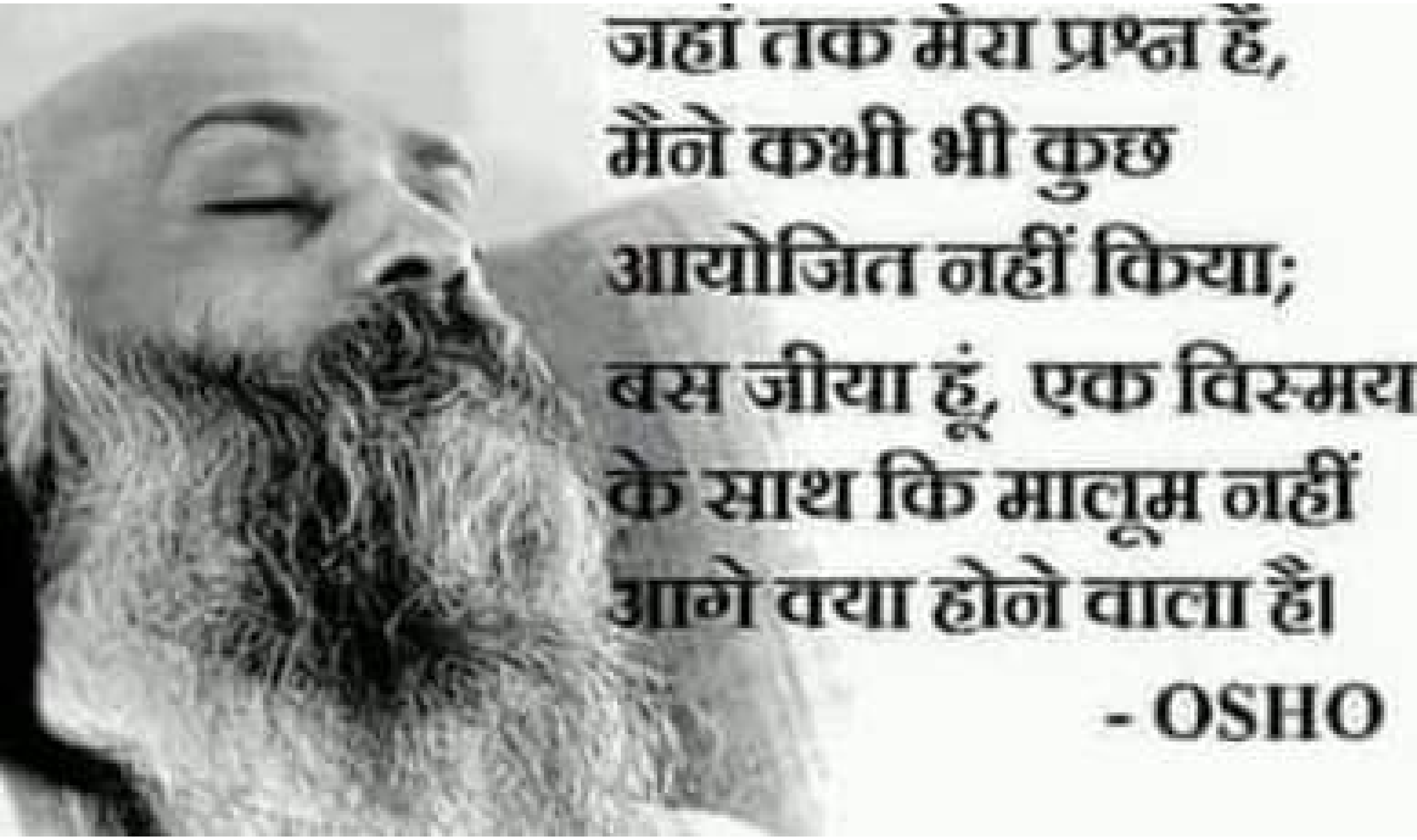
जहां तक मेरा प्रश्न है,
मैंने कभी भी कुछ
आयोजित नहीं किया;
बस जीया हूं, एक विस्मय
के साथ कि मालूम नहीं
आगे क्या होने वाला है।
- OSHO

CamScanner

6:11 pm 52%

सकारात्मकता · Following ·
5d ·

राजहंस चिड़िया अपने बच्चों को खाना खिलाने के लिए अजीब तरीका अपनाती है

Description
"""प्रकृति बहुत क्रूर है!""
यह डरावना लग रहा है.
ऐसा लग रहा था कि माँ को अब और बर्दाश्त नहीं होगा।
लेकिन उसने अपने बच्चे के लिए सब कुछ किया।
-
एक परेशान करने वाला दृश्य लोकप्रिय हो गया जब एक राजहंस माँ ने अपने बच्चों को दूध पिलाने की कोशिश की।वीडियो की वास्तविकता हमें दिखाती है कि हम प्रकृति के बारे में कितना कम जानते हैं।"""

1.5K 21 comments • 367 shares • 5.6M views

Like Comment Send Share

CamScanner

9:24 am 99%

अड़ूचन नहीं है। आप दोनों ही ऊपर बैठ जाएं। झंझट खतम हुई।

अहंकार बड़ी कठिनाइयां खड़ी करता है; बड़ी अड़चनें खड़ी करता है।

उस दिन से तुलसीजी भी नाराज हैं, मोरारजी भी नाराज हैं! उस दिन के बाद दोनों का रुख सख्त हो गया। स्वाभाविक!

बुद्ध भेजना चाहते हैं अपने बोधिसत्वों को, जो करीब—करीब बुद्धत्व के आ गए हैं। लेकिन करीब—करीब जानना—अभी बुद्ध हो नहीं गए। सिर्फ एक बुद्ध हुआ है—मंजुश्री। जब उससे कहा, तो वह खड़ा हो गया।

और मंजुश्री को भी विमलकीर्ति ने बहुत झंझेड़ा है। लेकिन वह सदा आनंदित होता था। विमलकीर्ति को देखकर सभा में अकेला वही था, जो आनंदित होता था। और सोचता था आज कुछ महत्वपूर्ण बात विमलकीर्ति जरूर कहेंगे। वही गया। और विमलकीर्ति ने सब तरह से चांटे मारे, और सब तरफ से धक्के दिए। मगर वह अकंप रहा। पूरा शास्त्र है, अदभुत शास्त्र है विमलकीर्ति—निदेंश—सूत्र। उसमें लंबी चर्चा है। विमलकीर्ति चोट पर चोट करते हैं और मंजुश्री अकंप हैं। वह प्रश्न पूछे चला जाता है। वह विनम्र भाव से वे जो कहते हैं, उसे समझने की कोशिश करता है। अंततः विमलकीर्ति स्वीकार कर लेते हैं कि यही एक व्यक्ति है, जो शन्यभाव में जी रहा है।

यह परीक्षण था।

विमलकीर्ति—निदेंश—सूत्र पढना; खूब ध्यान से पढ़ना; क्योंकि विमलकीर्ति का एक—एक वक्तव्य कोहिनूर हीरे जैसा है। उसने जो भी कहा है वह परम सत्य है। जैसे : ध्यान किया नहीं जा सकता। जब सब करना छूट जाता है, तब ध्यान। मोक्ष पाया नहीं जा सकता। जब सब पाना छूट जाता है, तब जो शेष रहता है, वही मोक्ष है। त्याग किया नहीं जा सकता। जो किया जाए, वह भोग ही होगा। जब बोध परिपूर्ण हो जाता है, तब असार असार दिखायी पड़ जाता है, सार सार। न कुछ छोड़ना पड़ता है, न कुछ पकड़ना पड़ता है। सब चुपचाप घट जाता है।

विमलकीर्ति परम संन्यासी हैं।

CamScanner

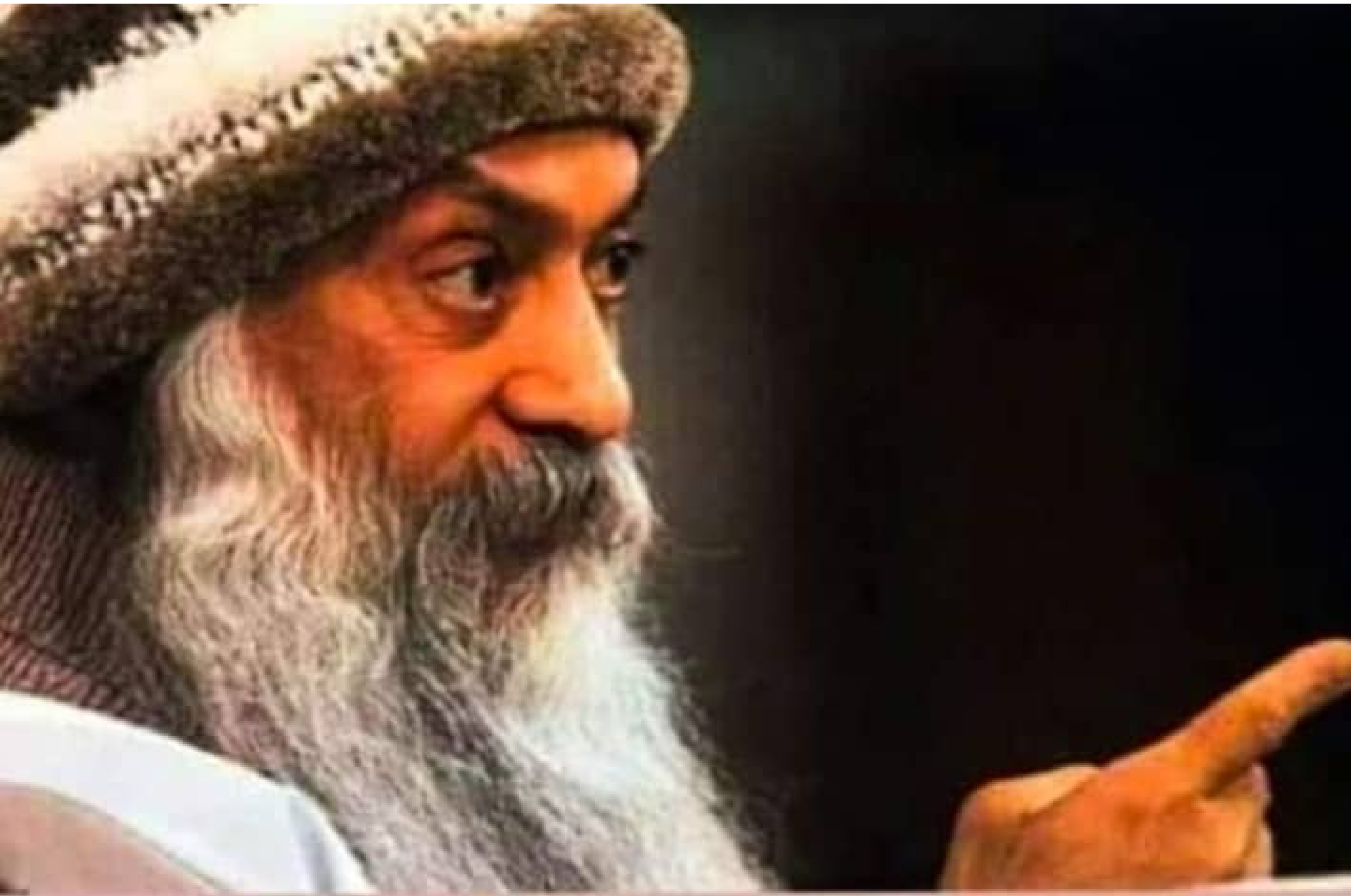

व्रत सिर्फ अंधे लेते है

आँख वाले लोग व्रत नही लेते

आँख वाले लोग जिस ढंग से जीते है

वह व्रत है.

ओशो

{Oshoravi}

CS CamScanner

9:13 am 100%

Create story
गीत & ग़ज़ल
OSHO is here and now. Therefore e...

Swami Lokeshanand
3h ·

एक नए सितारवादक को एक कार्यक्रम में भाग लेने का अवसर मिला था। देश के राजा सहित, बड़े बड़े लोग उस कार्यक्रम में आए हुए थे। "आज मैं अच्छा सितार बजाऊँगा, ऐसा बजाऊँगा कि सभी मंत्रमुग्ध हो जाएँगे और राजा मुझे अपने दरबार में जगह दे देंगे।" ऐसा विचार करता हुआ वह मंच पर आया। सभी ने उसके स्वागत में तालियाँ भी बजाईं। सितारवादक मंच पर लगे आलीशान कालीन पर बैठा और खूंटियाँ मरोड़ कर अपने सितार के सुर मिलाने लगा। सभी प्रतीक्षारत थे कि कब वह संगीत बजाना शुरू करेगा।

सितारवादक ने आधा घण्टा खूटियाँ मरोड़ने में ही लगा दिया। और इतने में ही उसे मिला समय समाप्त हो गया। पर्दा गिरा दिया गया, बेचारे सितारवादक को मायूस होकर वापिस लौटना पड़ा।

लोकेशानन्द कहता है कि हम भी इस जगत रूपी मंच पर, यह देह रूपी सितार लेकर, इससे भगवान का भजन करके, भगवान के दरबार में जगह पाने के लिए आए हैं। पर हम भी, इस देह की सार संभाल करने में ही, अपना सारा समय खो रहे हैं। हमें भगवान का भजन करने का समय ही नहीं मिलता।

ओ जीवन का सितार बजाने वालों! कब तक देह ही संवारते रहोगे? गीत तो गा लो। उसे तो जान लो जिससे ये देह चल रहा है। ये जीवन, ये देह रुपी सितार, बजाने के लिए मिला है, न कि खूटियाँ मरोड़ने के लिए। देर मत करो! समय समाप्ति की घोषणा से पहले, पर्दा गिरने से पहले, अभी भगवान में लग जाओ!

CamScanner

CS CamScanner

UPC Politics Alka Rani Gupta2
Today, 8:09 am

कोई राखे धीर है
कोई राखे क्रोध...
मन के ही सब रास्ते
मन के सब अवरोध...
वाणी मधुर ही वाचिए
चाहे जितना हो विद्रोह...
सबको माफी दीजिए
ना रखिए प्रतिशोध....
अच्छी यादें पालकर
बुरे से करें विछोह...
जो राखे मन संत सा
वो काहे करे वियोग......
"आशाएं"

शुभ दिन 🌹❤️🌹☕

Reply

CamScanner

4:46 am
Reels
Ab jaago 😌
Bahut
Ho chuka
Intezaar
100K
266
256
Send
osho.in.my.mind
Awakening by osho ... more

CamScanner

और अक्सर ऐसा होगा की ध्यान ठीक लगने लगेगा तो काम वासन जोर पकड़ेगी

CamScanner

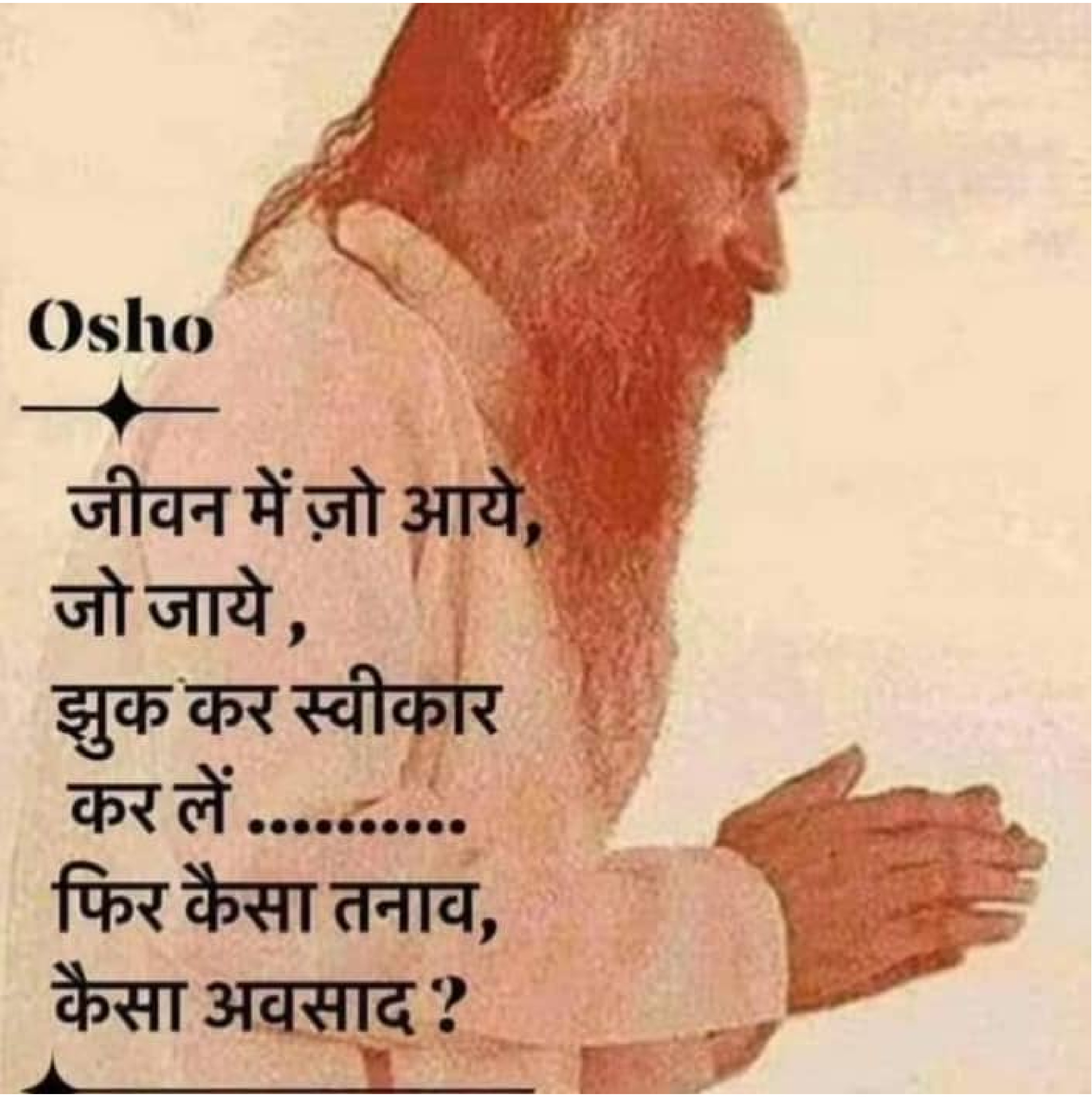

CS CamScanner

@ahobhav_
जिन सूत्र
ओशो अहोभाव
झुको! तुम अगर झुके तो तुम्हारे भीतर कोई जगेगा।
तुम अगर अकड़े रहे तो तुम्हारे भीतर कोई झुका रहेगा।
तुम झुको तो तुम्हारे भीतर कोई खड़ा हो जाएगा।

CamScanner

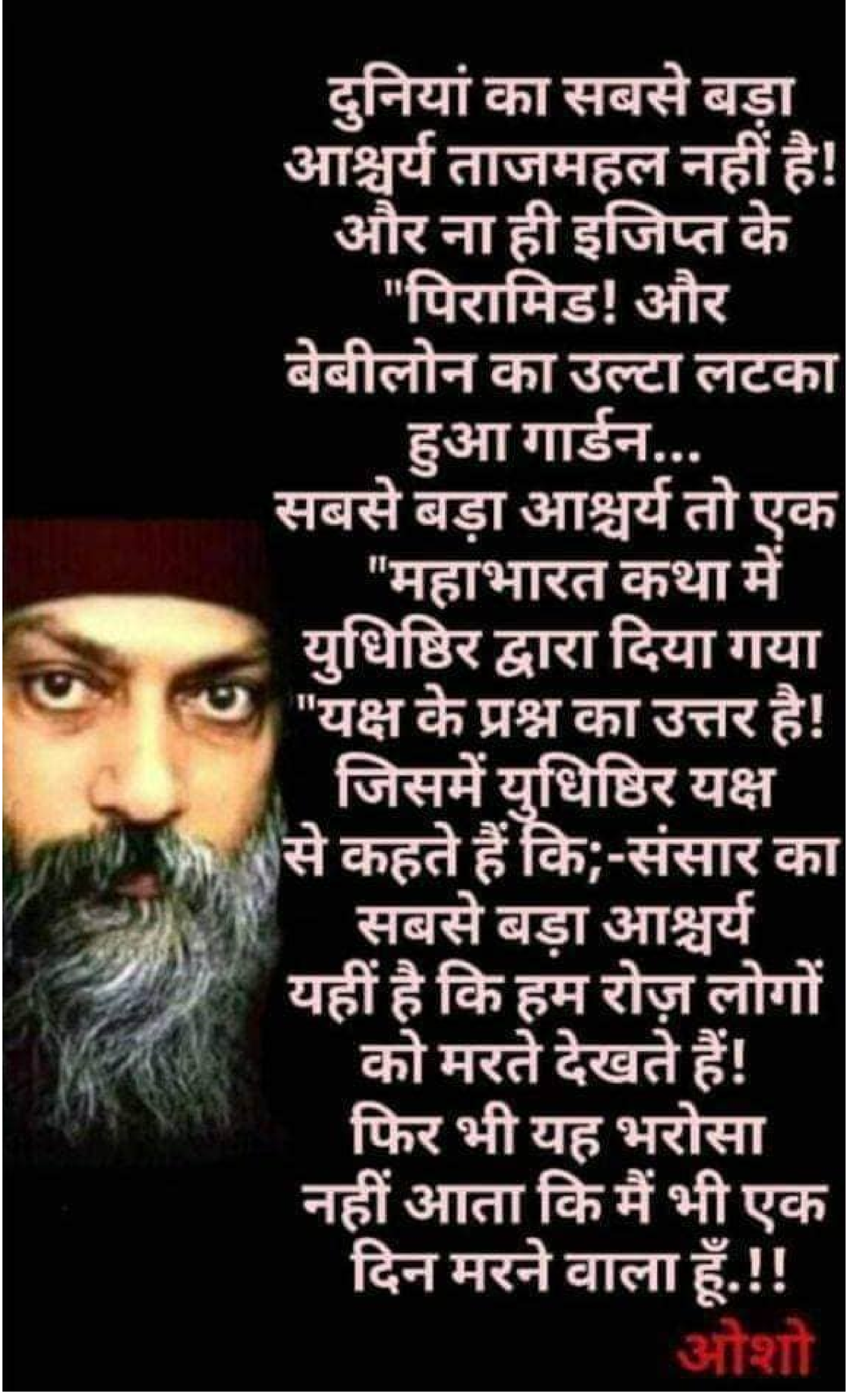
दुनियां का सबसे बड़ा
आश्चर्य ताजमहल नहीं है!
और ना ही इजिप्त के
"पिरामिड! और
बेबीलोन का उल्टा लटका
हुआ गार्डन...
सबसे बड़ा आश्चर्य तो एक
"महाभारत कथा में
युधिष्ठिर द्वारा दिया गया
"यक्ष के प्रश्न का उत्तर है!
जिसमें युधिष्ठिर यक्ष
से कहते हैं कि;-संसार का
सबसे बड़ा आश्चर्य
यहीं है कि हम रोज़ लोगों
को मरते देखते हैं!
फिर भी यह भरोसा
नहीं आता कि मैं भी एक
दिन मरने वाला हूँ.!!
ओशो

CamScanner

कहीं का किया....

कहीं तो अवश्य मिलता है,

Believe in equation of कर्मा...!!

CamScanner

6:35 pm 50%

ओशो का हिन्दी साहित्य
Rahul Kumar Ojha · 1h ·

बोध कथा

खैराबादी नाम का एक सूफी फकीर था।

वह जीविका के लिए सब्जियां बेचता था।

एक साधु व्यक्ति. सब्जी बेचना भी भक्ति के साधन के रूप में किया जाता था। अगर कोई खोटा सिक्का दे दे तो वह उसे कभी वापस नहीं करता था । बस आसमान की ओर देख, प्रार्थना करता और सिक्का लें लेता, उसे एक तरफ रख देंता और ग्राहक को सब्जी दे देंता।

लोग इतने हुशार हो गए थे कि वे अन्यत्र पाए जाने वाले नकली सिक्के भी उसके पास ले जाते थे; और झूठ बोलते थे कि उसे कल आपकी ही दुकान से यह खोटा सिक्का मिला था।

जैसे ही वह मरने के करीब पहुंच रहा था, पूरा गाँव उसके चारों ओर इकट्ठा हो गया...
...इतने सालों तक वह आसमान की ओर हाथ उठाकर जो प्रार्थना करता था, वही प्रार्थना आज वह ऊंचे स्वर में की...

उसने कहा, भगवन्, मैंने आज तक एक भी खोटा सिक्का नहीं दिया ... मुझ पर एक कृपा कर दो... यदि मेरा सिक्का खोटा भी निकले तो भी मुझे वापस मत भेजना... मुझे स्वीकार कर लो।

ओशो

CamScanner

4:07 pm
58%
This is proof that a life with ups and downs
akes you further and faster than a
nonotonous and linear life.
C4D4U
54
118K
5.1K
Fearless Soul
Follow
this. Feel this. Believe this is true. What ... m...
52K
Savella · everything i w

CamScanner

1:08 pm
74%
“I was famous”
5
Send
Prithviraj Chhanda
Follow
Add a comment...

CamScanner

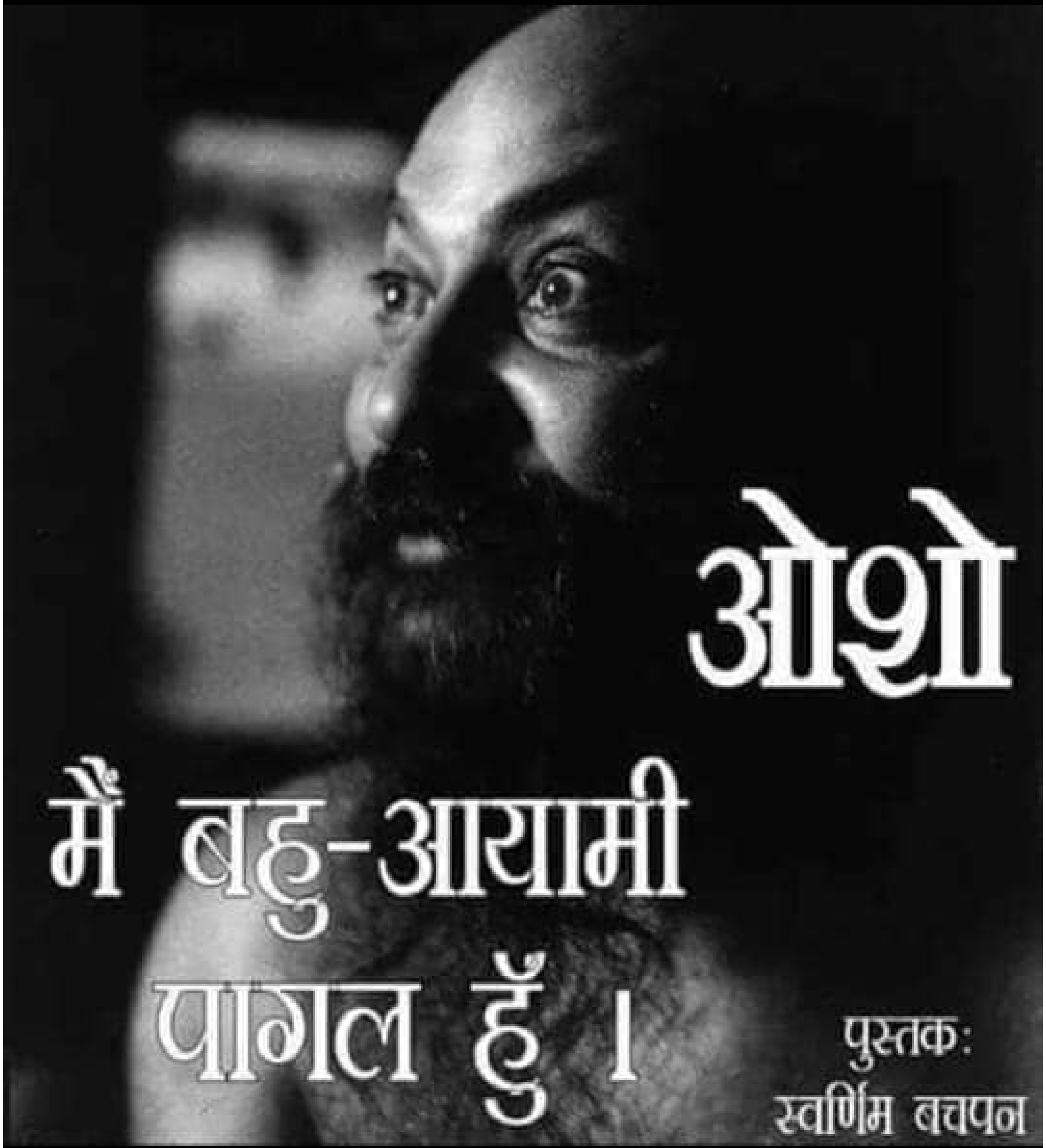

CamScanner

सूली पर चढ़ाने का यहूदियों का तरीका इतना आदिम और जंगली था कि आदमी को मरने में छत्तीस घंटे लगते थे। जीसस के एक अमीर शिष्य ने किसी प्रकार यह व्यवस्था कर दी थी उनको शुक्रवार को सूली पर चढ़ाया जाए। यह सब व्यवस्था था। क्योंकि शनिवार को यहूदी कोई काम नहीं करते, न किसी काम को लंबित रखते हैं।..क्योंकि शनिवार उनका पवित्र दिन है। इसलिए जीसस को अस्थायी तौर पर सूली से उतार कर एक गुफा में कुछ समय के लिए अर्थात सोमवार तक के लिए रख दिया गया। लेकिन इस बीच गुफा में से वे चुरा लिए गए।

ईसाई यही कहानी कहते है। सच बात तो यह है कि सूली पर से उतारे जाने के बाद रात को वे गुफा में थे तो उनको इजराइल से बाहर ले जाया गया। उनका बहुत खून बह गया था फिर भी वह जीवित थे। उनको ठीक होने में कुछ दिन लगे, लेकिन वे बिल्कुल अच्छे हो गए और कश्मीर के एक छोटे से गांव पहल गाम में एक सौ बारह वर्ष तक जीवित रहे। उन्होंने पहल गाम को इसलिए चुना, क्योंकि उन्हें मोज़ेज की कब्र यहां पर मिली। उनसे पहले मोज़ेज वहां गए थे अपने खोए हुए कबीले को खोजने।

कबीला तो मिल गया और कश्मीर को देखने के बाद उनको मालूम हुआ कि कश्मीर की तुलना में इजराइल कुछ भी नहीं है। कोई दूसरी जगह नहीं है जिसकी कश्मीर से तुलना की जा सके। वे वहीं पर बस गए और वहीं पर मरे, मेरा मतलब है मोज़ेज। और जब जीसस अपने प्रिय शिष्य थॉमस के साथ कश्मीर गए तो उन्होंने थॉमस को भारत में अपने मार्ग का प्रचार करने के लिए भेज दिया। वे स्वयं कश्मीर में मोज़ेज की कब्र के पास रूक गए और आजीवन वहीं पर रहे।

इसी पहल गाम नामक छोटे से गांव में मग्गा बाबा को दफन किया गया है। जब मैं पहल गाम में था, मुझे उस विचित्र संबंध-सूत्र का पता चला जो मोज़ेज से आरंभ होकर जीसस और मग्गा बाबा के माध्यम से मुझ तक पहुंचा। मेरे गांव को छोड़ने से पहले मग्गा बाबा ने मुझे अपना कंबल देते हुए कहा: मेरे पास बस यही एकमात्र चीज है और तुम अकेले हो जिसे मैं यह देना चाहता हुं।'

ओशो; स्वर्णिम बचपन

CamScanner

12:55 pm 78%

#मग्गा बाबा और मोज़ेज

जब मग्गा बाबा मुझे बता रहे थे कि वे हिमालय जा रहे हैं, तो वे बहुत खुश और आनंदित थे। हिमालय सदा से ऐसे लोगों का घर रहा है। जिन्होंने खोजा और पाया। मुझे नहीं मालूम था कि वे कहां गए, क्योंकि हिमालय दुनिया की सबसे बड़ी पर्वत श्रृंखला है। लेकिन एक बार हिमालय में यात्रा करते समय मैं उस जगह पहुंच गया जहां उनकी कब्र थी। बड़ी अजीब बात है कि वह मोज़ेज और जीसस की कब्र के पास ही थी। ये दोनों व्यक्ति भी हिमालय में ही दफन हुए हैं। मैं वहां पर जीसस की कब्र देखने गया था। और संयोगवश मुझे मोज़ेज और मग्गा बाबा की कब्र भी मिल गई। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि मैं सोच भी नहीं सकता था कि मग्गा बाबा का मोज़ेज और जीसस से कोई संबंध है। लेकिन वहां उनकी कब्र को देख कर तुरंत समझ गया कि उनका चेहरा इतना सुंदर क्यों था और वे क्यों मोज़ेज जैसे ज्यादा दिखाई देते थे। हिंदू जैसे नहीं। शायद वे उस खोए हुए कबीले के थे जिसे मोज़ेज ने इजराइल जाते हुए खो दिया था। उस खोए हुए कबीले के लोग हिमालय में, कश्मीर में बस गए।

और मैं अधिकारपूर्वक कह सकता हूं कि सही इजराइल खोजने में यह कबीला मोज़ेज से अधिक सफल रहा।
मोज़ेज ने जो इजराइल खोजा वह तो बिल्कुल रेगिस्तान था। बिल्कुल बेकार था। इन्होंने जो कश्मीर में खोजा वह वास्तव में प्रभू का बाग़ीचा था।

मोज़ेज वहां पर अपने खोए हुए कबीले को खोजते हुए पहुंच गए थे।
जीसस वहां पर अपनी तथाकथित सूली लगने के बाद गए थे। मैं इसको तथाकथित कह रहा हूं।
क्योंकि वस्तुत: ऐसा हुआ नहीं, वे जीवित रहे।

क्रास पर छह घंटे लटकने के बाद जीसस मरे नहीं थे।
सूली पर चढ़ाने का यहूदियों का तरीका इतना आदिम और जंगली था कि आदमी को मरने में छत्तीस घंटे लगते थे। जीसस के एक अमीर शिष्य ने किसी प्रकार यह व्यवस्था कर दी थी उनको शुक्रवार को सूली पर चढ़ाया जाए। यह सब व्यवस्था था। क्योंकि शनिवार को यहूदी

CamScanner

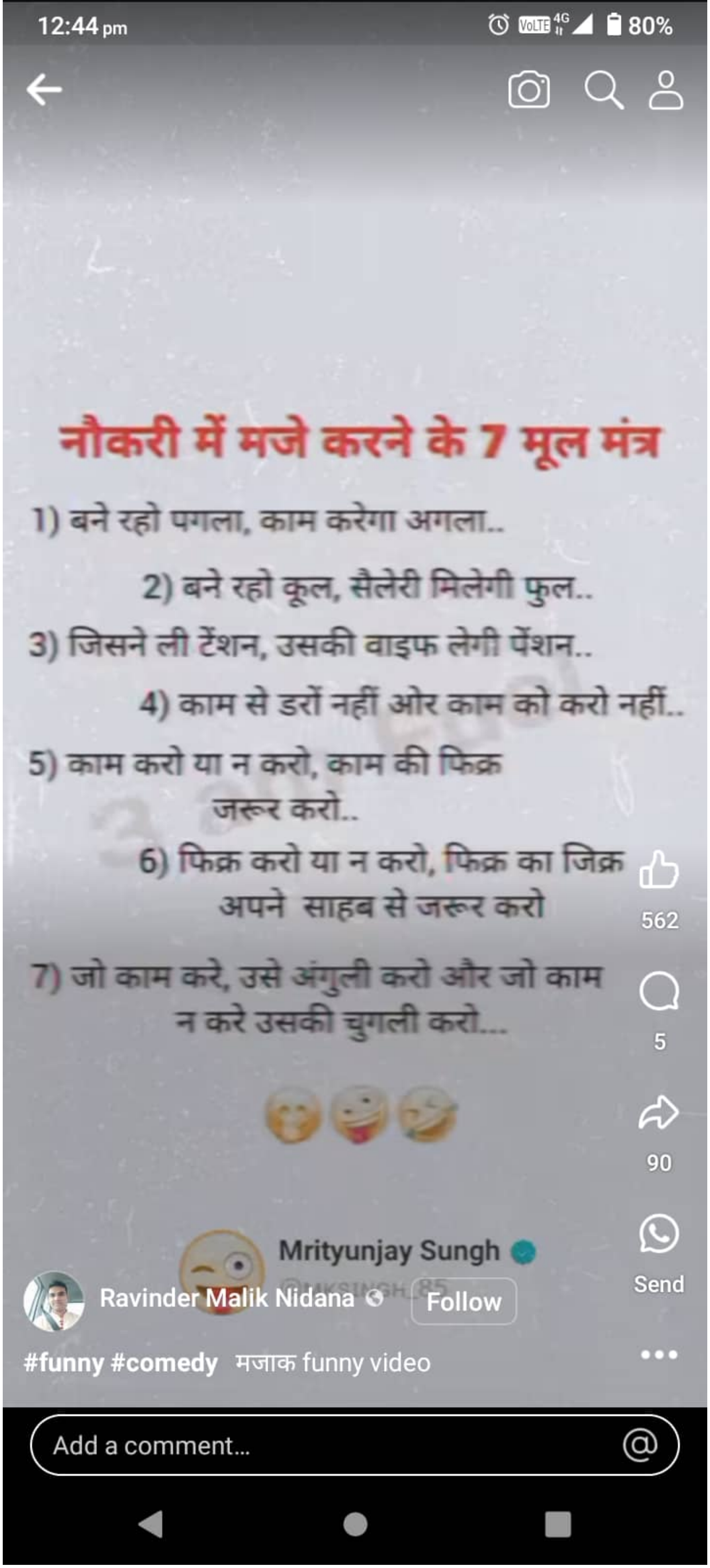

CS CamScanner

6:43 pm 4G 49%

हंसने लगी और बोली, और सब तो ठीक है एक छोटी सी भूल रह गई इतना सुनना था कि वह मूर्तिकार बोला, कौन सी भूल?और उस मृत्यु ने कहा यही कि तुम अपने को नहीं भूल सकते हो! बाहर आ जाओ!

यही कि तुम यह नहीं भूल सकते हो कि तुमने इन मूर्तियों को बनाया है, यही कि तुम्हारा अहंकार विस्मरण नहीं हो सकता। तुम्हारी ईगो, तुम्हारा यह खयाल कि मैं हूं। और परमात्मा ने मुझसे कहा कि जिसे यह खयाल है कि मैं हूं, वह आदमी मृत्यु से नहीं बच सकता है। लेकिन जिसका यह खयाल मिट जाता है कि मैं हूं, उसे मृत्यु ले जाने में असमर्थ हो जाती है वह अमृत को उपलब्ध हो जाता है।

यह बात, यह घटना तो सच नहीं हो सकती, लेकिन आदमी की जिंदगी में निरंतर यही होता है। वे लोग जो मैं से भरे हुए हैं, वे जो अहंकार से भरे हुए हैं, वे एक बार मरते हों ऐसा भी नहीं, वे रोज मरते हैं और प्रतिपल मरते हैं। अहंकार बड़ी कमजोर चीज है, जरा सी हवा का झोंका और टूट जाता है, जरा सा फर्क और मिट जाता है। सम्हाले रहो, सम्हाले रखो, जरा सी चूक और छितर-बितर हो जाता है। और जिंदगी भर सम्हालने की कोशिश करो और आखिर में मौत तो उसे बिलकुल तोड़ ही देती है।

अहंकार के साथ जो जीता है वह मौत के साथ जीता है। और मौत के साथ जो जीता है अगर वह भयभीत रहे, घबड़ाया रहे, चिंतित रहे, अशांत रहे, परेशान रहे, बेचैन रहे तो आश्चर्य क्या है! मौत के साथ जो भी जीएगा भयभीत रहेगा, चिंतित रहेगा, अशांत रहेगा। स्वाभाविक है। चौबीस घंटे मौत के साथ जीना कैसे? लेकिन मौत के साथ जीने की कोई जरूरत नहीं है, मौत के साथ इसलिए जीना पड़ता है कि हम अहंकार के साथ जीते हैं। अहंकार मरणधर्मा है। अहंकार मृत्यु का सूत्र है। जहां अहंकार है वहां मृत्यु है और जहां अहंकार नहीं है वहां अमृत है, वहां कोई मृत्यु नहीं।
🪷आचार्य रजनीश "ओशो"🪷

🙏💞🙏

माटी कहे कुम्हार सूं

CamScanner

6:43 pm 49%

एक छोटी सी घटना से मैं आज की चर्चा शुरू करना चाहूंगा। एक काल्पनिक घटना ही मालूम होती है, एक सपने जैसी झूठी, एक किसी कवि ने सपना देखा हो ऐसा ही।

लेकिन जिंदगी भी बहुत सपना है और जिंदगी भी बहुत कल्पना है और जिंदगी भी बहुत झूठ है।

एक बहुत बड़ा मूर्तिकार था। उसकी मूर्तियों की इतनी प्रशंसा थी सारी पृथ्वी पर कि लोग कहते थे कि वह जिस व्यक्ति की मूर्ति बनाता है, अगर उस व्यक्ति को मूर्ति के पास ही श्वास बंद करके खड़ा कर दिया जाए, तो पहचानना मुश्किल है कि कौन मूल है कौन मूर्ति है, कौन असली है कौन नकल है।

उस मूर्तिकार की मृत्यु निकट आई। वह मूर्तिकार बहुत चिंतित हो उठा। मौत करीब थी वह बहुत भयभीत हो उठा। लेकिन फिर उसे खयाल आया, क्यों न मैं अपनी ही मूर्तियां बना कर मौत को धोखा दे दूं। उसने अपनी ही बारह मूर्तियां बनाईं।

और जिस दिन मौत उसके घर में प्रविष्ट हुई वह अपनी ही बनाई हुई मूर्तियों में छिप कर खड़ा हो गया। वहां तेरह एक जैसी मूर्तियां दिखाई पड़ने लगीं। मौत तो चकित रह गई, एक व्यक्ति को लेने आई थी वहां तेरह एक जैसे लोग थे। एक को ले जाने की आज्ञा थी किसको ले जाए किसको छोड़ दे। वे बिलकुल एक जैसे थे,पहचानना मुश्किल था। मौत वापस लौट गई और उसने परमात्मा से जाकर कहा कि मैं किसको लाऊं वहां तेरह एक जैसे लोग मौजूद हैं। परमात्मा ने मौत के कान में एक सूत्र कहा और कहा,इस सूत्र का उपयोग करना, असली आदमी अपने आप बाहर आ जाएगा। वह मौत वापस आई, वह फिर उस कमरे में गई जहां मूर्तिकार छिपा था अपनी मूर्तियों में। उसने एक नजर डाली और फिर हंसने लगी और बोली, और सब तो ठीक है एक छोटी सी भूल रह गई इतना सुनना था कि वह मूर्तिकार बोला, कौन सी भूल?और उस मृत्यु ने कहा यही कि तुम अपने को नहीं भूल सकते हो! बाहर आ जाओ!

यही कि तुम यह नहीं भूल सकते हो कि तुमने इन मूर्तियों को बनाया है, यही कि तुम्हारा अहंकार विस्मरण नहीं हो सकता। तुम्हारी ईगो, तुम्हारा

CamScanner

U Deepak Arora
Yesterday, 10:02 am

Reply

CamScanner

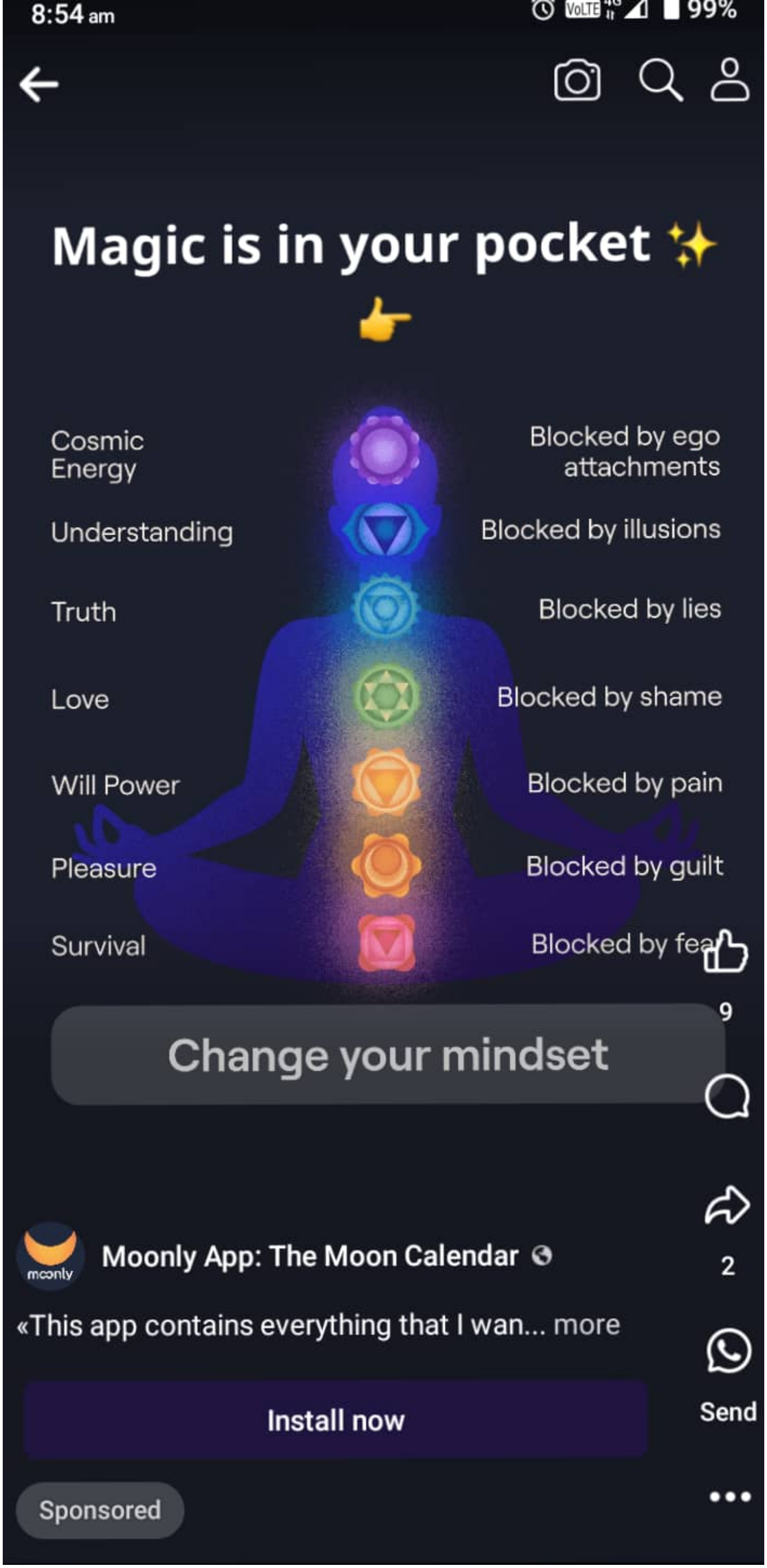
8:54 am
99%
Magic is in your pocket ✨
Cosmic Energy
Blocked by ego attachments
Understanding
Blocked by illusions
Truth
Blocked by lies
Love
Blocked by shame
Will Power
Blocked by pain
Pleasure
Blocked by guilt
Survival
Blocked by fea
9
Change your mindset
2
Moonly App: The Moon Calendar
«This app contains everything that I wan... more
Install now
Send
Sponsored

CamScanner

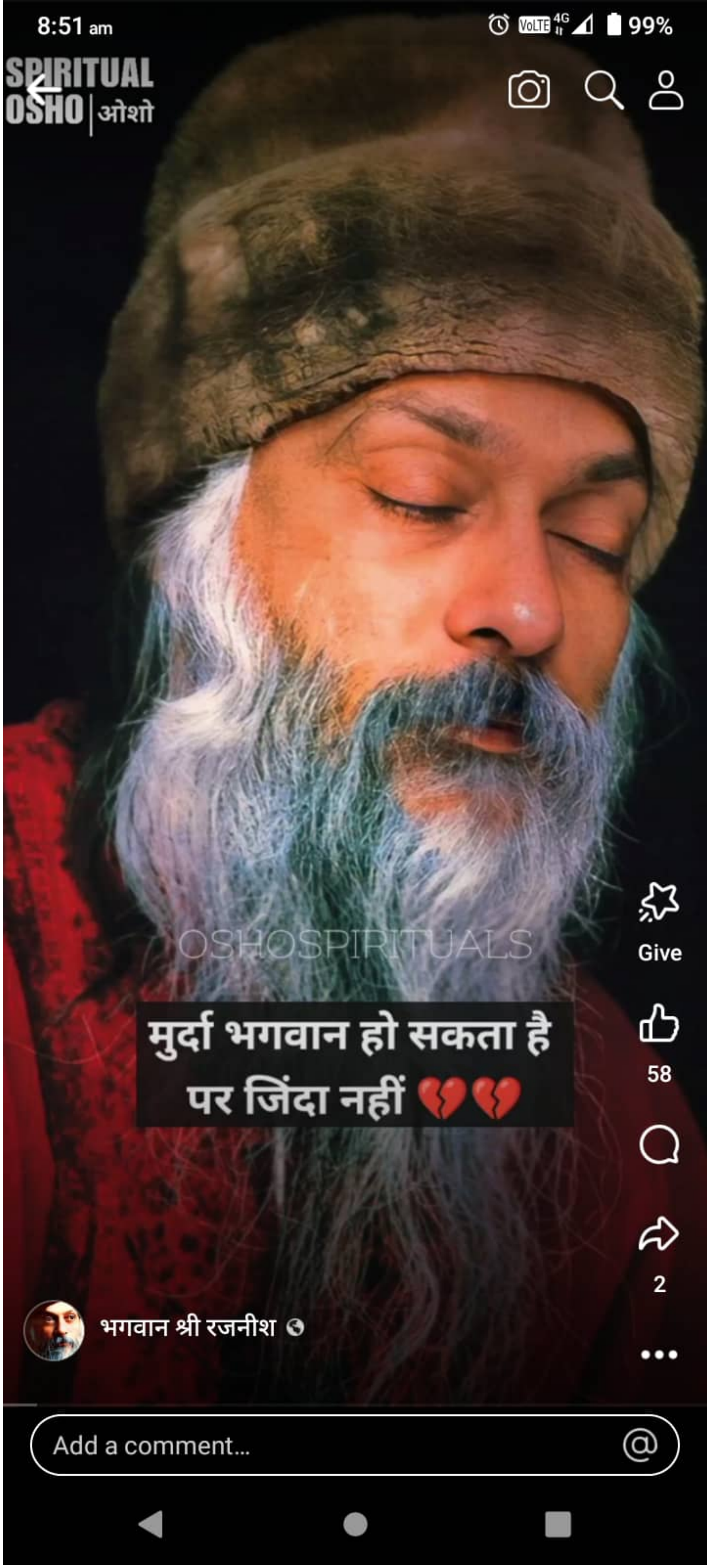
8:51 am
99%
SPIRITUAL
OSHO | ओशो
OSHOSPIRITUALS
मुर्दा भगवान हो सकता है
पर जिंदा नहीं 💔💔
Give
58
2
भगवान श्री रजनीश
Add a comment...

CamScanner

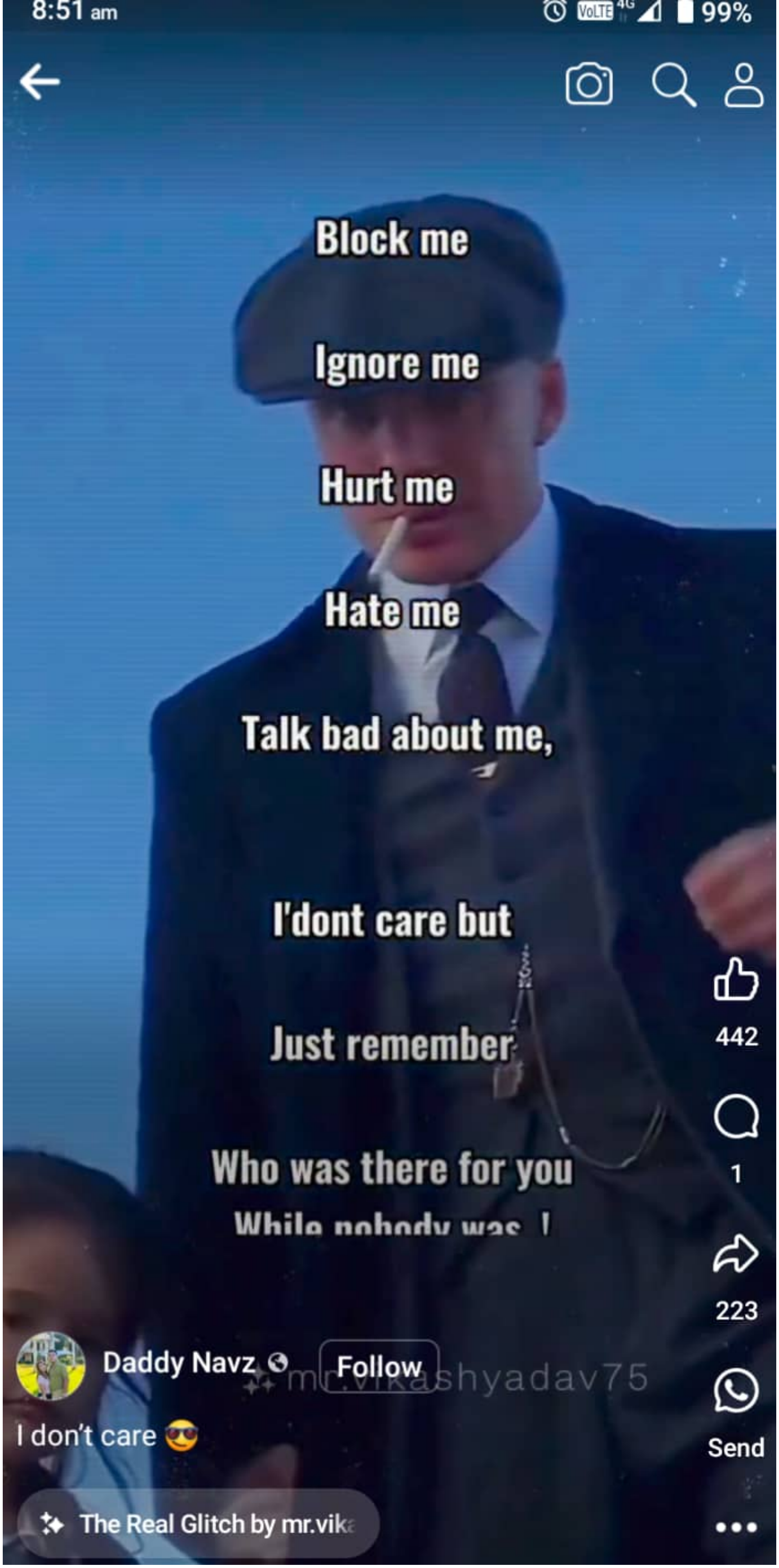
8:51 am
99%
Block me
Ignore me
Hurt me
Hate me
Talk bad about me,
I'dont care but
Just remember
Who was there for you
442
1
223
Send
Daddy Navz
Follow
I don't care 😎
The Real Glitch by mr.vik

CamScanner

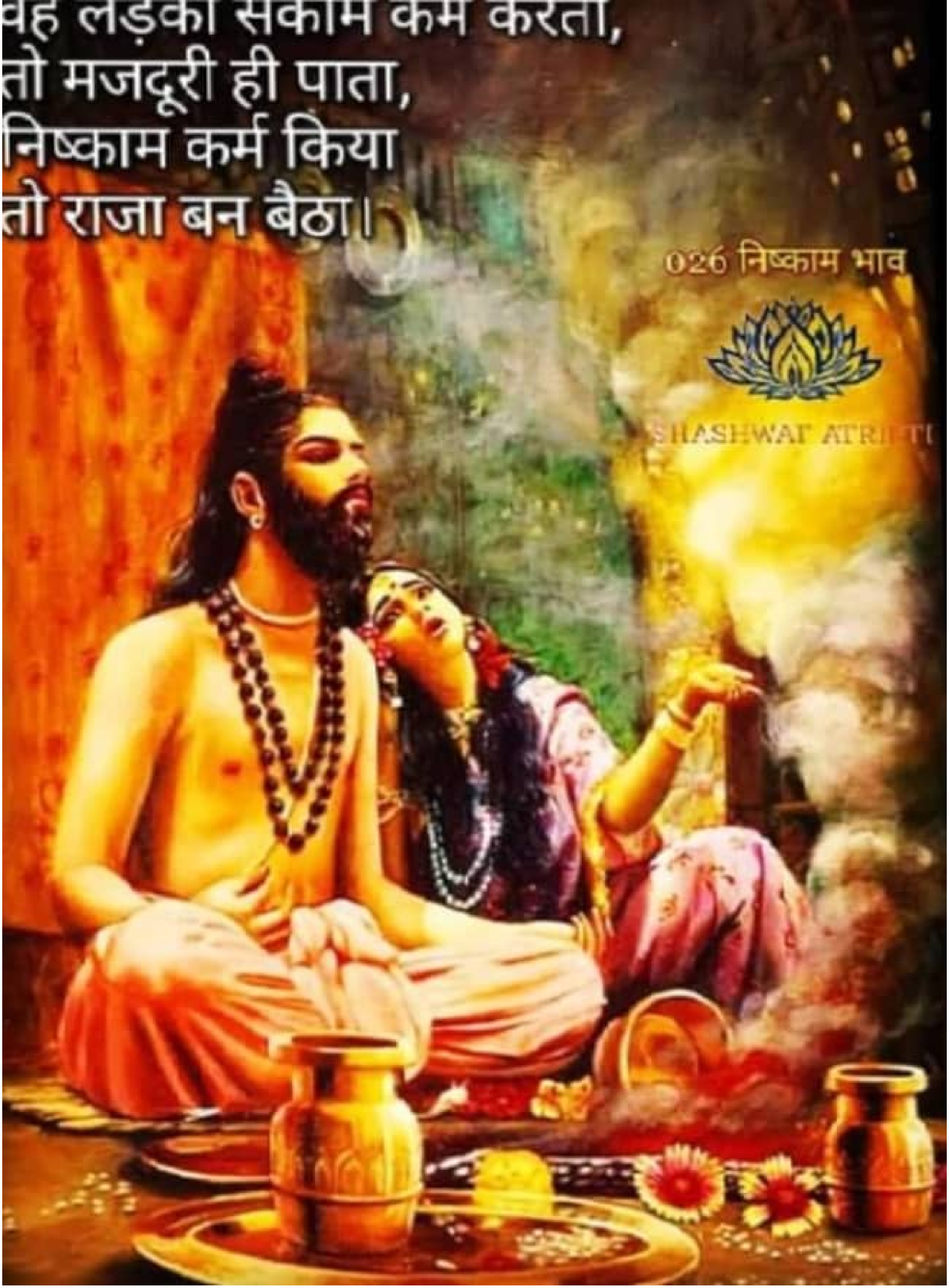

CamScanner

8:47 am 100%

एक गरीब विधवा के पुत्र ने एक बार अपने राजा को देखा। राजा को देख कर उसने अपनी माँ से पूछा- माँ! क्या कभी मैं राजा से बात कर पाऊँगा?

माँ हंसी और चुप रह गई।

पर वह लड़का तो निश्चय कर चुका था। उन्हीं दिनों गाँव में एक संत आए हुए थे। तो युवक ने उनके चरणों में अपनी इच्छा रखी।

संत ने कहा- अमुक स्थान पर राजा का महल बन रहा है, तुम वहाँ चले जाओ और मजदूरी करो। पर ध्यान रखना, वेतन न लेना। अर्थात् बदले में कुछ माँगना मत। निष्काम रहना।

वह लड़का गया। वह मेहनत दोगुनी करता पर वेतन न लेता।

एक दिन राजा निरीक्षण करने आया। उसने लड़के की लगन देखी। प्रबंधक से पूछा- यह लड़का कौन है, जो इतनी तन्मयता से काम में लगा है? इसे आज अधिक मजदूरी देना।

प्रबंधक ने विनय की- महराज! इसका अजीब हाल है, दो महीने से इसी उत्साह से काम कर रहा है। पर हैरानी यह है कि यह मजदूरी नहीं लेता। कहता है मेरे घर का काम है। घर के काम की क्या मजदूरी लेनी?

राजा ने उसे बुला कर कहा- बेटा! तूं मजदूरी क्यों नहीं लेता? बता तूं क्या चाहता है?

लड़का राजा के पैरों में गिर पड़ा और बोला- महाराज! आपके दर्शन हो गए, आपकी कृपा दृष्टि मिल गई, मुझे मेरी मजदूरी मिल गई। अब मुझे और कुछ नहीं चाहिए।

राजा उसे मंत्री बना कर अपने साथ ले गया। और कुछ समय बाद अपनी इकलौती पुत्री का विवाह भी उसके साथ कर दिया। राजा का कोई पुत्र था नहीं, तो कालांतर में उसे ही राज्य भी सौंप दिया।

लोकेशानन्द कहता है कि भगवान ही राजा हैं। हम सभी भगवान के मजदूर हैं। भगवान का भजन करना ही मजदूरी करना है। संत ही मंत्री है। भक्ति ही राजपुत्री है। मोक्ष ही वह राज्य है।

हम भगवान के भजन के बदले में कुछ भी न माँगें तो वे भगवान स्वयं दर्शन देकर, पहले संत बना देते हैं और अपनी भक्ति प्रदान कर, कालांतर में मोक्ष ही दे देते हैं।

वह लड़का सकाम कर्म करता, तो मजदूरी ही पाता, निष्काम कर्म किया तो राजा बन बैठा। यही सकाम और निष्काम कर्म के फल में भेद है।

"तुलसी विलम्ब न कीजिए, निश्चित भजिए राम।
जगत मजूरी देत है, क्यों राखे भगवान॥"

CS CamScanner

6:43 pm 49%

हंसने लगी और बोली, और सब तो ठीक है एक छोटी सी भूल रह गई इतना सुनना था कि वह मूर्तिकार बोला, कौन सी भूल?और उस मृत्यु ने कहा यही कि तुम अपने को नहीं भूल सकते हो! बाहर आ जाओ!

यही कि तुम यह नहीं भूल सकते हो कि तुमने इन मूर्तियों को बनाया है, यही कि तुम्हारा अहंकार विस्मरण नहीं हो सकता। तुम्हारी ईगो, तुम्हारा यह खयाल कि मैं हूं। और परमात्मा ने मुझसे कहा कि जिसे यह खयाल है कि मैं हूं, वह आदमी मृत्यु से नहीं बच सकता है। लेकिन जिसका यह खयाल मिट जाता है कि मैं हूं, उसे मृत्यु ले जाने में असमर्थ हो जाती है वह अमृत को उपलब्ध हो जाता है।

यह बात, यह घटना तो सच नहीं हो सकती, लेकिन आदमी की जिंदगी में निरंतर यही होता है। वे लोग जो मैं से भरे हुए हैं, वे जो अहंकार से भरे हुए हैं, वे एक बार मरते हों ऐसा भी नहीं, वे रोज मरते हैं और प्रतिपल मरते हैं। अहंकार बड़ी कमजोर चीज है, जरा सी हवा का झोंका और टूट जाता है, जरा सा फर्क और मिट जाता है। सम्हाले रहो, सम्हाले रखो, जरा सी चूक और छितर-बितर हो जाता है। और जिंदगी भर सम्हालने की कोशिश करो और आखिर में मौत तो उसे बिलकुल तोड़ ही देती है।

अहंकार के साथ जो जीता है वह मौत के साथ जीता है। और मौत के साथ जो जीता है अगर वह भयभीत रहे, घबड़ाया रहे, चिंतित रहे, अशांत रहे, परेशान रहे, बेचैन रहे तो आश्चर्य क्या है! मौत के साथ जो भी जीएगा भयभीत रहेगा, चिंतित रहेगा, अशांत रहेगा। स्वाभाविक है। चौबीस घंटे मौत के साथ जीना कैसे? लेकिन मौत के साथ जीने की कोई जरूरत नहीं है, मौत के साथ इसलिए जीना पड़ता है कि हम अहंकार के साथ जीते हैं। अहंकार मरणधर्मा है। अहंकार मृत्यु का सूत्र है। जहां अहंकार है वहां मृत्यु है और जहां अहंकार नहीं है वहां अमृत है, वहां कोई मृत्यु नहीं।

🪷आचार्य रजनीश "ओशो"🪷

🙏💞🙏

माटी कहे कुम्हार सूं

CamScanner

6:43 pm 49%
5

एक छोटी सी घटना से मैं आज की चर्चा शुरू करना चाहूंगा। एक काल्पनिक घटना ही मालूम होती है, एक सपने जैसी झूठी, एक किसी कवि ने सपना देखा हो ऐसा ही।

लेकिन जिंदगी भी बहुत सपना है और जिंदगी भी बहुत कल्पना है और जिंदगी भी बहुत झूठ है।

एक बहुत बड़ा मूर्तिकार था। उसकी मूर्तियों की इतनी प्रशंसा थी सारी पृथ्वी पर कि लोग कहते थे कि वह जिस व्यक्ति की मूर्ति बनाता है, अगर उस व्यक्ति को मूर्ति के पास ही श्वास बंद करके खड़ा कर दिया जाए, तो पहचानना मुश्किल है कि कौन मूल है कौन मूर्ति है, कौन असली है कौन नकल है।

उस मूर्तिकार की मृत्यु निकट आई। वह मूर्तिकार बहुत चिंतित हो उठा। मौत करीब थी वह बहुत भयभीत हो उठा। लेकिन फिर उसे खयाल आया, क्यों न मैं अपनी ही मूर्तियां बना कर मौत को धोखा दे दूं। उसने अपनी ही बारह मूर्तियां बनाईं।

और जिस दिन मौत उसके घर में प्रविष्ट हुई वह अपनी ही बनाई हुई मूर्तियों में छिप कर खड़ा हो गया। वहां तेरह एक जैसी मूर्तियां दिखाई पड़ने लगीं। मौत तो चकित रह गई, एक व्यक्ति को लेने आई थी वहां तेरह एक जैसे लोग थे। एक को ले जाने की आज्ञा थी किसको ले जाए किसको छोड़ दे। वे बिलकुल एक जैसे थे,पहचानना मुश्किल था। मौत वापस लौट गई और उसने परमात्मा से जाकर कहा कि मैं किसको लाऊं वहां तेरह एक जैसे लोग मौजूद हैं। परमात्मा ने मौत के कान में एक सूत्र कहा और कहा,इस सूत्र का उपयोग करना, असली आदमी अपने आप बाहर आ जाएगा। वह मौत वापस आई, वह फिर उस कमरे में गई जहां मूर्तिकार छिपा था अपनी मूर्तियों में। उसने एक नजर डाली और फिर हंसने लगी और बोली, और सब तो ठीक है एक छोटी सी भूल रह गई इतना सुनना था कि वह मूर्तिकार बोला, कौन सी भूल?और उस मृत्यु ने कहा यही कि तुम अपने को नहीं भूल सकते हो! बाहर आ जाओ!

यही कि तुम यह नहीं भूल सकते हो कि तुमने इन मूर्तियों को बनाया है, यही कि तुम्हारा अहंकार विस्मरण नहीं हो सकता। तुम्हारी ईगो, तुम्हारा

CS CamScanner

10:02 am 87%

जो भी आपने चाहा है अपने अतीत में, अगर न मिला तो आपने दुख पाया है, अगर मिल गया तो कौन सा सुख पाया है? बस जब तक नहीं मिलता, तभी तक सुख का आभास होता है। इस जगत में दुख वास्तविक है, सुख सिर्फ आभास है। जो चीज नहीं मिलती, बस उसमें सुख है। और जो मिल जाती है, उसमें सब सुख खो जाता है। इसलिए कोई भी आदमी कहीं भी सुखी नहीं है।

मेरे एक मित्र हैं। वे पहले एम. एल. ए. थे, तो वे मुझसे कहते थे, आशीर्वाद दें बस और कुछ चाहिए नहीं कि कम से कम डिप्टी मिनिस्टर तो मुझे बनवा ही दें। मैं उनको कहता कि बन ही जाएंगे, क्योंकि जैसा पागलपन आपमें है, आप बिना बने बच नहीं सकते। लेकिन आप अगर सोचते हों कि बड़ा आनंद घटित हो जाएगा, तो आप गलती में हैं।

फिर वे डिप्टी मिनिस्टर भी हो गए। तो वे आए मेरे पास और कहने लगे कि बस, अब एक आकांक्षा है कि मिनिस्टर हो जाऊं। मैंने उनको कहा कि आपको सुख डिप्टी मिनिस्टर होने से मिल गया, जिसको आप वर्षों से सोचते थे? उन्होंने कहा, डिप्टी मिनिस्टर में कुछ भी नहीं रखा है, मिनिस्टर होने से ही कुछ हो सकता है। फिर अब वे मिनिस्टर भी हो गए। तो अब वे कहते हैं कि चीफ मिनिस्टर हो जाएं। मैंने उनको पूछा कि तुम कहां रुकोगे? पिछले अनुभव से कुछ सीखो।

आदमी जहां है, वहीं दुखी है। सुखी आदमी खोजना कठिन है। आपने कभी कोई सुखी आदमी देखा? सुखी आदमी वही हो सकता है, जो जहा है वहीं सुखी है। लेकिन जो आदमी भी कहीं और सोचता है कि सुख होगा, वह दुखी होगा। जो जहां है वहीं सुखी है, ऐसे आदमी का नाम ही संन्यासी है।

और जो जहा है वहीं दुखी है, ऐसे आदमी का नाम ही गृहस्थ है। वह हमेशा भविष्य में ही जी रहा है। कल उसका सुख है। स्वर्ग कल है, आज कुछ भी नहीं। आज को समर्पित करेगा कल के लिए। आज को लगाएगा कल के लिए। आज को जलाएगा कल के लिए, ताकि कल का स्वर्ग मिल जाए। कल कभी आता नहीं। कल जब आएगा, वह आज ही होगा। वह उस आज को फिर कल के लिए लगाएगा। ऐसे वह लगाता जाता है। और एक दिन सिवाय मृत्यु के हाथ में कुछ भी नहीं आता।

CamScanner

10:02 am VoLTE 4G 88%

जहां है वहीं सुखी है, ऐसे आदमी का नाम ही संन्यासी है

मेरे सारे ध्यान के प्रयोग मौलिक रूप से थकाने के प्रयोग हैं, ताकि इंद्रियां थककर बैठ जाएं। एक रास्ता है जबरदस्ती बिठाने का। मैं उसके पक्ष में नहीं हूं क्योंकि जबरदस्ती कोई भी इंद्रियों को बैठा नहीं सकता। हालत वैसी हो जाती है, जैसे छोटे बच्चे को कह दो कि बैठो शाति से। तो वह बैठ जाता है, लेकिन उसकी सारी ताकत शांति से बैठने में लग रही है। एक एक चीज को खींचे हुए है। तना हुआ है। शिथिल भी नहीं हो पाता। विश्राम भी नहीं कर पाता। तनावग्रस्त है।

बच्चे को कहो कि दौड़ो, एक पच्चीस चक्कर लगाओ। फिर कहने की जरूरत नहीं कि शांत बैठ जाओ। पच्चीस चक्कर के बाद वह खुद ही शांत बैठ जाएगा। वह शांति बड़ी अलग होगी। उस शाति में कोई तनाव नहीं होगा, कोई बेचैनी नहीं होगी। बल्कि शांति में एक सुख होगा, एक राहत होगी, एक झलक होगी विश्राम की।

इंद्रियों को थका डालें, इतना थका डालें कि क्षणभर को भी अगर वे विश्राम में पहुंच जाएं, तो उतने क्षणभर को आपका प्रवेश भीतर हो जाए।

जो बाल बुद्धि वाले बाह्य भोगों का अनुसरण करते हैं वे सर्वत्र फैले हुए मृत्यु के बंधन में पड़ते हैं। किंतु बुद्धिमान मनुष्य नित्य अमरपद को विवेक द्वारा जानकर इस जगत में अनित्य भोगों में से किसी को भी नहीं चाहते

विवेक का अर्थ इतना ही है कि जो निरर्थक है, वह हमें निरर्थक दिखाई पड़ जाए; जो सार्थक है, वह सार्थक दिखाई पड़ जाए। जगत में हम कुछ भी चाहें, पहली तो बात, अगर न मिले तो दुख, और मिल जाए तो भी सुख नहीं। एक आदमी धन चाहता है। जब तक नहीं मिलता, तब तक दुखी है। और जब मिल जाता है, तब वह पाता है कि क्या मिला? धन के ढेर लग गए, अब क्या?

जो भी आपने चाहा है अपने अतीत में, अगर न मिला तो आपने दुख पाया है, अगर मिल गया तो कौन सा सुख पाया है? बस जब तक नहीं

CamScanner

CamScanner

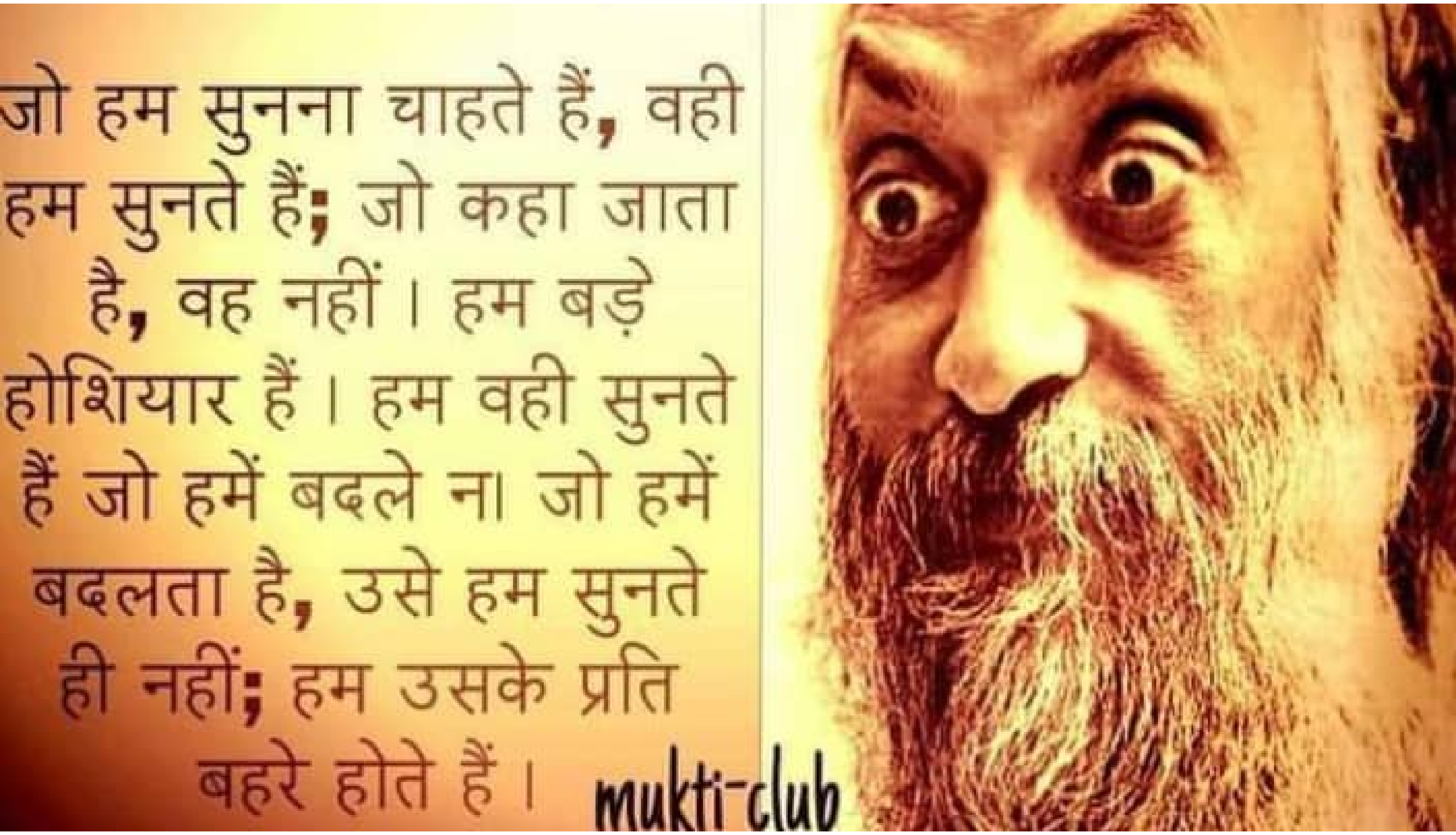
जो हम सुनना चाहते हैं, वही
हम सुनते हैं; जो कहा जाता
है, वह नहीं। हम बड़े
होशियार हैं। हम वही सुनते
हैं जो हमें बदले न। जो हमें
बदलता है, उसे हम सुनते
ही नहीं; हम उसके प्रति
बहरे होते हैं।
mukti-club

CamScanner

*स्त्री परेशान हो जाती है।
क्योंकि जहां उसे प्रेम का आकर्षण होता है, वहां पुरुष को सिर्फ काम का आकर्षण होता है। और पुरुष की जैसे ही काम की तृप्ति हुई, पुरुष* *स्त्री को भूल जाता है। और स्त्री को निरंतर यह अनुभव होता है कि उसका उपयोग किया गया है–शी हैज बीन यूज्ड। प्रेम नहीं किया गया, उसका उपयोग किया गया है। पुरुष को कुछ उत्तेजना अपनी फेंक देनी है। उसके लिए स्त्री का एक बर्तन की तरह उपयोग किया गया है। और उपयोग के बाद ही स्त्री व्यर्थ मालूम होती है। लेकिन स्त्री का प्रेम गहन है, वह पूरे शरीर से है, रोएं-रोएं से है *वह जेनिटल नहीं है, वह टोटल है।*
~ *ओशो* *प्रेम को पार्थना बनाओ*

CamScanner

12:02 pm 76%

chat.openai.com/c/c550

ChatGPT 3.5

ChatGPT

Several books explore the concept of catharsis and emotional well-being. Some recommendations include:

1. "The Power of Now" by Eckhart Tolle - Focuses on living in the present moment for emotional healing.
2. "The Gifts of Imperfection" by Brené Brown - Explores vulnerability, courage, and wholehearted living.
3. "Emotional Intelligence" by Daniel Goleman - Discusses the importance of understanding and managing emotions.
4. "The Art of Happiness" by Dalai Lama and Howard Cutler - Offers insights on achieving lasting happiness.
5. "Mindsight" by Daniel J. Siegel - Explores the mind's ability to heal itself through understanding and awareness.

Remember to choose books that resonate with your personal pre[illegible]nces and needs.

Message ChatGPT...

ChatGPT can make mistakes. Consider checking important information.

CamScanner

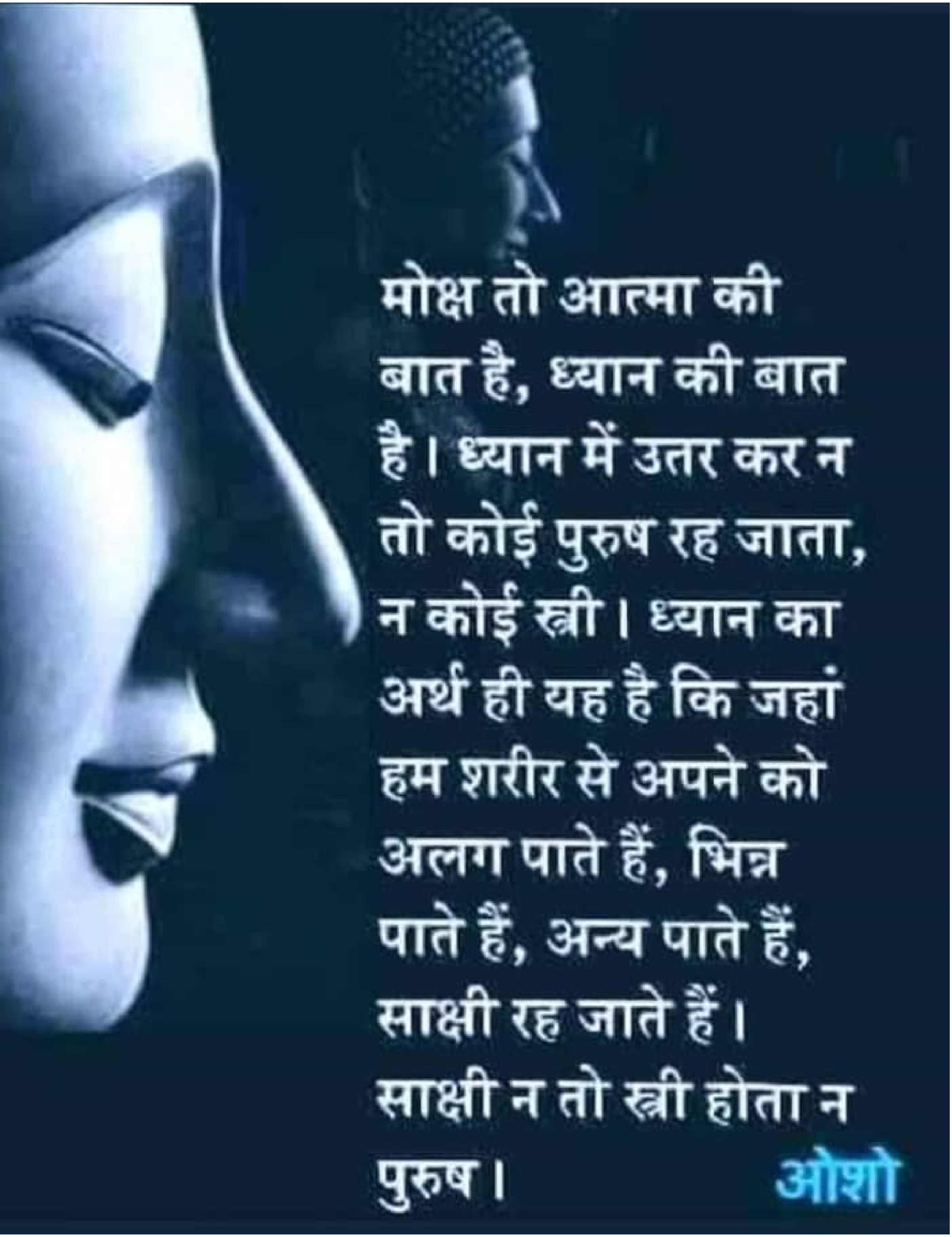
मोक्ष तो आत्मा की
बात है, ध्यान की बात
है। ध्यान में उतर कर न
तो कोई पुरुष रह जाता,
न कोई स्त्री। ध्यान का
अर्थ ही यह है कि जहां
हम शरीर से अपने को
अलग पाते हैं, भिन्न
पाते हैं, अन्य पाते हैं,
साक्षी रह जाते हैं।
साक्षी न तो स्त्री होता न
पुरुष।
ओशो

CamScanner

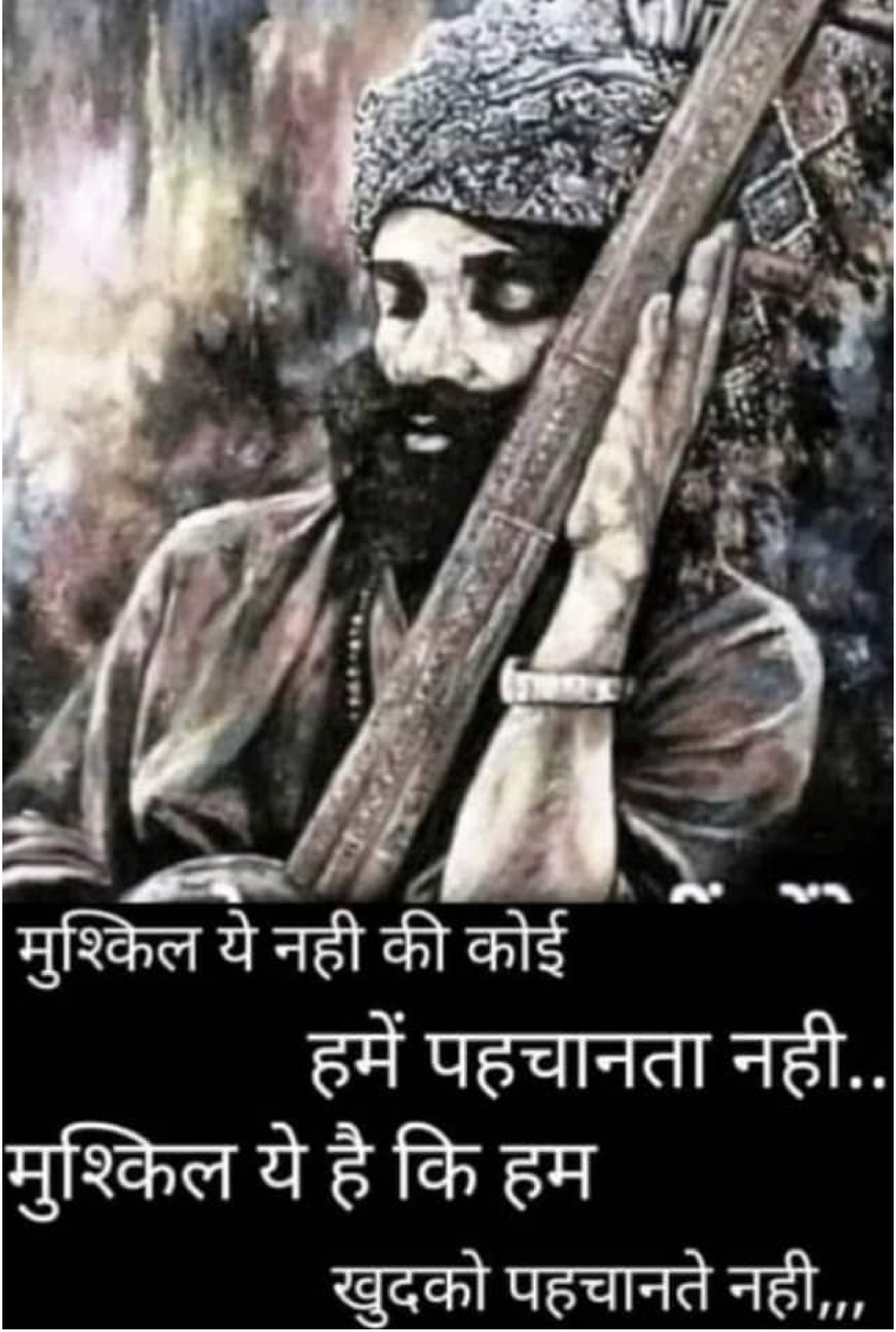

CamScanner

*स्त्री परेशान हो जाती है।
क्योंकि जहां उसे प्रेम का आकर्षण होता है, वहां पुरुष को सिर्फ काम का आकर्षण होता है। और पुरुष की जैसे ही काम की तृप्ति हुई, पुरुष* *स्त्री को भूल जाता है।
और स्त्री को निरंतर यह अनुभव होता है कि उसका उपयोग किया गया है–शी हैज बीन यूज्ड। प्रेम नहीं किया गया, उसका उपयोग किया गया है। पुरुष को कुछ उत्तेजना अपनी फेंक देनी है। उसके लिए स्त्री का एक बर्तन की तरह उपयोग किया गया है। और उपयोग के बाद ही स्त्री व्यर्थ मालूम होती है। लेकिन स्त्री का प्रेम गहन है, वह पूरे शरीर से है, रोएं-रोएं से है
वह जेनिटल नहीं है, वह टोटल है।
~ *ओशो* *प्रेम को पार्थना बनाओ*

CamScanner

8:58 pm 19%
facebook

उस संन्यासी ने कहा : फिर उम्र भी तुम्हारा परिचय न रहा , शरीर भी तुम्हारा परिचय न रहा |

फिर तुम कौन हो ? उसे लिख दो तो पहुंचा दूं भगवान के पास , नहीं तो मैं भी झूठा बनूंगा तुम्हारे साथ |
यह कोई भी परिचय तुम्हारा नहीं है|
राजा बोला : तब तो बड़ी कठिनाई हो गई | उसे तो मैं भी नहीं जनता फिर ! जो मैं हूं , उसे तो मैं नहीं जनता ! इन्हीं को मैं जनता हूं मेरा होना |
उस संन्यासी ने कहा : फिर बड़ी कठिनाई हो गई , क्योंकि जिसका मैं परिचय भी न दे सकूं , बता भी न सकूं कि कौन मिलना चाहता है , तो भगवान भी क्या कहेंगे कि किसको मिलना चाहता है ?

तो जाओ पहले इसको खोज लो कि तुम कौन हो | और मैं तुमसे कहे देता हूं कि जिस दिन तुम यह जान लोगे कि तुम कौन हो ,
उस दिन तुम आओगे नहीं भगवान को खोजने |
क्योंकि खुद को जानने में वह भी जान लिया जाता है जो परमात्मा है |
🙏🙏
ओशो

CamScanner

8:58 pm 19%

उस संन्यासी ने कहा : मित्र , अगर तुम्हारा नाम बदल दें तो क्या तुम बदल जाओगे ?
तुम्हारी चेतना , तुम्हारी सत्ता , तुम्हारा व्यक्तित्व दूसरा हो जाएगा ?
उस राजा ने कहा : नहीं, नाम के बदलने से मैं क्यों बदलूंगा ? नाम नाम है , मैं मैं हूं |
तो संन्यासी ने कहा : एक बात तय हो गई कि नाम तुम्हारा परिचय नहीं है , क्योंकि तुम उसके बदलने से बदलते नहीं | आज तुम राजा हो , कल गांव के भिखारी हो जाओ तो बदल जाओगे ?
उस राजा ने कहा : नहीं , राज्य चला जाएगा , भिखारी हो जाऊंगा , लेकिन मैं क्यों बदल जाऊंगा ?
मैं तो जो हूं हूं | राजा होकर जो हूं , भिखारी होकर भी वही होऊंगा |
न होगा मकान , न होगा राज्य , न होगी धन- संपति , लेकिन मैं ? मैं तो वही रहूंगा जो मैं हूं |

तो संन्यासी ने कहा : तय हो गई दूसरी बात कि राज्य तुम्हारा परिचय नहीं है , क्योंकि राज्य छिन जाए तो भी तुम बदलते नहीं | तुम्हारी उम्र कितनी है ?
उसने कहा : चालीस वर्ष |
संन्यासी ने कहा : तो पचास वर्ष के होकर तुम दुसरे हो जाओगे ? बीस वर्ष या जब बच्चे थे तब दुसरे थे ?
उस राजा ने कहा : नही | उम्र बदलती है , शरीर बदलता है लेकिन मैं ?
मैं तो जो बचपन में था , जो मेरे भीतर था , वह आज भी है |
उस संन्यासी ने कहा : फिर उम्र भी तुम्हारा परिचय न रहा , शरीर भी तुम्हारा परिचय न रहा |

फिर तुम कौन हो ? उसे लिख दो तो पहुंचा दूं भगवान के पास , नहीं तो मैं भी झूठा बनूंगा तुम्हारे साथ |
यह कोई भी परिचय तुम्हारा नहीं है|
राजा बोला : तब तो बड़ी कठिनाई हो गई | उसे तो मैं भी नहीं जनता फिर ! जो मैं हूं , उसे तो मैं नहीं जनता ! इन्हीं को मैं जनता हूं मेरा होना |
उस संन्यासी ने कहा : फिर बड़ी कठिनाई हो गई , क्योंकि जिसका मैं परिचय भी न दे सकूं , बता भी न सकूं कि कौन मिलना चाहता है , तो भगवान भी क्या कहेंगे कि किसको मिलना चाहता है ?

CamScanner

💥कौन है आप??

एक संन्यासी सारी दुनिया की यात्रा करके भारत वापस लौटा था। एक छोटी सी रियासत में मेहमान हुआ।

उस रियासत के राजा ने जाकर संन्यासी को कहा :
स्वामी, एक प्रश्न बीस वर्षो से निरंतर पूछ रहा हूं। कोई उत्तर नहीं मिलता।
क्या आप मुझे उत्तर देंगे ?
स्वामी ने कहा : निश्चित दूंगा।
उस संन्यासी ने उस राजा से कहा : नहीं, आज तुम खाली नहीं लौटोगे। पूछो।
उस राजा ने कहा : मैं ईश्वर से मिलना चाहता हूं। ईश्वर को समझाने की कोशिश मत करना। मैं सीधा मिलना चाहता हूं।
उस संन्यासी ने कहा : अभी मिलना चाहते हैं कि थोड़ी देर ठहर कर ?
राजा ने कहा : माफ़ करिए, शायद आप समझे नहीं। मैं परम पिता परमात्मा की बात कर रहा हूं, आप यह तो नहीं समझे कि किसी ईश्वर नाम वाले आदमी की बात कर रहा हूं; जो आप कहते हैं कि अभी मिलना है कि थोड़ी देर रुक सकते हो ?

उस संन्यासी ने कहा : महानुभाव, भूलने की कोई गुंजाइश नहीं है। मैं तो चौबीस घंटे परमात्मा से मिलाने का धंधा ही करता हूं। अभी मिलना है कि थोड़ी देर रुक सकते हैं, सीधा जवाब दें।
बीस साल से मिलने को उत्सुक हो और आज वक्त आ गया तो मिल लो।
राजा ने हिम्मत की, उसने कहा : अच्छा मैं अभी मिलना चाहता हूं मिला दीजिए।
संन्यासी ने कहा : कृपा करो, इस छोटे से कागज पर अपना नाम पता लिख दो ताकि मैं भगवान के पास पहुंचा दूं कि आप कौन हैं।
राजा ने लिखा ---- अपना नाम, अपना महल, अपना परिचय, अपनी उपाधियां और उसे दीं।
वह संन्यासी बोला कि महाशय, ये सब बाते मुझे झूठ और असत्य मालूम होती हैं जो आपने कागज पर लिखीं।
उस संन्यासी ने कहा : मित्र, अगर तुम्हारा नाम बदल दें तो क्या तुम

CamScanner

9:43 am 100%
hi.quora.com/बौद्धों-के-विश्व
Quora ऐप में खोलें

बौद्धों के विश्वास के अनुसार गौतम बुद्ध का अगला अवतार किसे माना जाता हैं?

जवाब फॉलो 3 अनुरोध करें ज़्यादा जानकारी और देखें
इससे जुड़ी सभी (35+) सुझाया गया

Shivkumar Singh · फॉलो करें
कृषक (1985–मौजूदा) · 4 नव॰

संबंधित **क्या गौतम बुद्ध विष्णु के अवतार है?**

जब वो खुद ईश्वर के अस्तित्व को नकारते थे तो उनको अवतार कैसे माना जाए जो दिव्य संत अभी चालीस वर्ष पूर्व धरती पर मौजूद थे और जिनकी आयु सैकड़ों वर्ष थी और वो भगवान श्री कृष्ण के भक्त थे उन श्री कृष्ण को बौद्ध लोग काल्पनिक मानते हैं उनके बारे में क्या कहा जाए श्री देवरहा बाबा की जय हो

अपवोट करें

Satyam Mishra · फॉलो करें
Itihas, Dr APJ Abdul Kalam Technical University, Lucknow में Ingirineerig (2020 में स्नातक) · 3वर्ष

बौद्ध धर्म के अनुसार महात्मा बुद्ध के अगले अवतार मैत्रेय है।इस दुनिया मे एक नही बल्कि 28 से ज्यादा बुद्ध पुरुष हो चुके है। महात्मा बुद्ध जो सबसे निकट समय के बुद्ध पुरुष है, उनका जन्म आज से लगभग 563 ईशा पूर्व हुआ था। महात्मा बुद्ध ने अपने महापरिनिर्वाण से पूर्व ही भविष्य मे आने वाले बोधिसत्व की घोषणा कर दी थी। गौतम बुद्ध ने भविष्य के बोधिसत्व के अवतरित होने की भविष्यवाणी करते हुए बताया था, कि उनका जन्म आज से लगभग 2500 वर्ष बाद होगा, उनके अनगिनत शिष्य होंगे। जब मानव जाति धर्म को छोड़ घृणा , ईर्ष्या, [illegible] (डूबने) लगेंगी ऐसे मे वे इस धरती पर आकर लोगों को [illegible]

पढ़ना ज़ारी रखें
अपवोट करें · 2

The Yaksha began to ask his questions and the wise Yudhishthira answered.

"What causes the sun to shine every day?"

"It is the work of the Brahman."

"What can rescue a person in danger?"

"Courage can rescue one from every danger."

"What science may one study to become wise?"

"There is no science or *sastra* that can make a person wise. It is through association with great and wise people, that one can gain wisdom by learning from their example. "

"What is faster than the wind?"

"The mind."

> How according to Yudhishthira makes a person wise? Do you agree? CR

"Who accompanies a person in death?"

"Dharma alone accompanies a soul on its final journey after death."

"What is the greatest wonder on this Earth?"

"Every day we witness creatures depart from this world to the abode of Yama yet those who are alive seek to live forever. This is indeed the greatest wonder of all."

CamScanner

5:31 pm ✓ 51%
हिंदी में देखें
BRAHMALOK®
SPREADING SPIRITUALITY

यक्ष प्रश्न: जीवन जीने का सही तरीका कौन सा है?

युधिष्ठिर उत्तर: जीवन के वास्तविक मार्ग को निर्धारित करने के लिए कोई सुस्थापित तर्क नहीं है, श्रुतियाँ (शास्त्र एवं अन्य स्रोत) भी विभिन्न प्रकार की बातें करती हैं, ऐसा कोई ऋषि/ चिंतक/विचारक नहीं है जिसकी बातों को प्रमाण कहा जा सके। वस्तुतः धर्म का सार गुफ़ा में छिपा है अर्थात् अत्यंत गूढ़ है। ऐसी स्थिति में समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति द्वारा अपनाया गया मार्ग अनुकरणीय है। अक्सर 'बड़े' लोगों के बताए रास्ते पर चलने की बातें की जाती हैं. यहां, प्रतिष्ठित या महान व्यक्ति का मतलब वह नहीं है जिसने धन अर्जित किया है, या जिसने व्यावसायिक रूप से बहुत प्रगति की है, या जो प्रशासनिक या अन्य अधिकार आदि से संपन्न है। प्रतिष्ठित वह है जो चरित्रवान है, कर्तव्यों की उपेक्षा नहीं करता है। दूसरों के प्रति संवेदनशील, समाज के हितों के प्रति समर्पित आदि।

यक्ष प्रश्न: रोचक वार्ता क्या है?

युधिष्ठिर उत्तर: काल (अर्थात निरंतर प्रवाह में समय) जीवों को पका रहा है, महीनों और ऋतुओं को बदल रहा है, समुद्र के रूप में एक राजसी कड़ाही में, जो सूर्य की अग्नि और रात और दिन के ईंधन से गर्म होता है . यही मुख्य बात (खबर) है. इस कथन में एक गम्भीर जीवन दर्शन का उल्लेख है। रात-दिन और माह-ऋतु के साथ-साथ प्राणी जगत के जीवन में भी उथल-पुथल का दौर निरंतर चलता रहता है। जीव-जंतु काल के हाथ से बने भोजन के समान हैं, जिन्हें एक न एक दिन काल के गाल में समाना ही पड़ता है। यह हर दिन की ताजा खबर है.

CamScanner

5:31 pm ✓ VoLTE 4G 52%

यक्ष प्रश्न: आनंदित या सुखी कौन है?

युधिष्ठिर उत्तर: हे जलचर (जलाशय में रहने वाले यक्ष), जो व्यक्ति पांचवें-छठे दिन अपने घर में पकी हुई सब्जियां (सब्जियां) खाता है, जिस पर कोई कर्ज नहीं होता है और जिसे परदेश में नहीं रहना पड़ता है। वह वही है. मुदित खुश है. यदि हम युधिष्ठिर के शाब्दिक उत्तर को महत्व न देकर उसके अर्थ पर ध्यान दें तो इस कथन का अर्थ यह है कि जो व्यक्ति अपने परिवार के बीच रहकर सीमित संसाधनों में भी संतुष्ट रह पाता है, वही वास्तव में सुखी है।

यक्ष प्रश्न: इस सृष्टि का आश्चर्य क्या है?

युधिष्ठिर उत्तर: यहां जीव प्रतिदिन इस लोक से यमलोक की ओर प्रस्थान करते हैं अर्थात एक-एक करके सभी की मृत्यु देखी जाती है। फिर भी जो लोग यहां रहते हैं वे हमेशा यहीं रहने की आशा करते हैं। इससे बड़ा आश्चर्य क्या हो सकता है? तात्पर्य यह है कि जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु अवश्यंभावी है और उस मृत्यु के बोध के लिए सभी को उपस्थित रहना चाहिए। लेकिन हर शख्स जिंदगी की कशमकश में इस तरह खोया हुआ है कि मौत उसे अपनी गिरफ्त में नहीं ले पाती.

यक्ष प्रश्न: जीवन जीने का सही तरीका कौन सा है?

युधिष्ठिर उत्तर: जीवन के वास्तविक मार्ग को निर्धारित करने के लिए कोई सुस्थापित तर्क नहीं है, श्रुतियाँ (शास्त्र एवं अन्य स्रोत) भी विभिन्न प्रकार की बातें करती हैं, ऐसा कोई ऋषि/

CamScanner

5:30 pm 52%

यक्ष प्रश्न: आनंदित या सुखी कौन है?

युधिष्ठिर उत्तर: हे जलचर (जलाशय में रहने वाले यक्ष), जो व्यक्ति पांचवें-छठे दिन अपने घर में पकी हुई सब्जियां (सब्जियां) खाता है, जिस पर कोई कर्ज नहीं होता है और जिसे परदेश में नहीं रहना पड़ता है। वह वही है. मुदित खुश है. यदि हम युधिष्ठिर के शाब्दिक उत्तर को महत्व न देकर उसके अर्थ पर ध्यान दें तो इस कथन का अर्थ यह है कि जो व्यक्ति अपने परिवार के बीच रहकर सीमित संसाधनों में भी संतुष्ट रह पाता है, वही वास्तव में सुखी है।

यक्ष प्रश्न: इस सृष्टि का आश्चर्य क्या है?

युधिष्ठिर उत्तर: यहां जीव प्रतिदिन इस लोक से यमलोक की ओर प्रस्थान करते हैं अर्थात एक-एक करके सभी की मृत्यु देखी जाती है। फिर भी जो लोग यहां रहते हैं वे हमेशा यहीं रहने की आशा करते हैं। इससे बड़ा आश्चर्य क्या हो सकता है? तात्पर्य यह है कि जिसका जन्म हुआ है उसकी मृत्यु अवश्यंभावी है और उस मृत्यु के बोध के लिए सभी को उपस्थित रहना चाहिए। लेकिन हर शख्स जिंदगी की कशमकश में इस तरह खोया हुआ है कि मौत उसे अपनी गिरफ्त में नहीं ले पाती.

यक्ष प्रश्न: जीवन जीने का सही तरीका कौन सा है?

युधिष्ठिर उत्तर: जीवन के वास्तविक मार्ग को निर्धारित करने के लिए कोई सुस्थापित तर्क नहीं है, श्रुतियाँ (शास्त्र एवं अन्य स्रोत) भी विभिन्न प्रकार की बातें करती हैं, ऐसा कोई ऋषि/

5:30 pm ✓ 52%

BRAHMALOK®
SPREADING SPIRITUALITY

यक्ष प्रश्न: सुख क्या है?

युधिष्ठिर उत्तर: सुख वह है जो शील और ईमानदारी पर आधारित है।

यक्ष प्रश्न: मनुष्य को सबका प्रिय बनने के लिए कब त्याग करना चाहिए?

युधिष्ठिर उत्तर: जब अहंकार छूट जाता है तो व्यक्ति सर्वप्रिय बन जाता है।

यक्ष प्रश्न: जब कोई वस्तु खो जाती है तो दु:ख होता है?

युधिष्ठिर उत्तर: क्रोध।

यक्ष प्रश्न: क्या खोकर मनुष्य धनवान बनता है?

युधिष्ठिर उत्तर: लोभ खोकर।

यक्ष प्रश्न: संसार का सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है?

युधिष्ठिर उत्तर : प्रतिदिन अपनी आँखों के सामने कितने प्राणियों को मरते हुए देखकर भी मनुष्य अमरता का स्वप्न देखता है। यह बहुत बड़ा आश्चर्य है.

यक्ष प्रश्न: आनंदित या सुखी कौन है?

CamScanner

5:30 pm 52%
हिंदी में देखें
BRAHMALOK®
SPREADING SPIRITUALITY

यक्ष प्रश्न: हवा से भी तेज़ कौन है?

युधिष्ठिर उत्तर: मन।

यक्ष प्रश्न : घास से भी छोटा क्या है?

युधिष्ठिर उत्तर: चिंता.

यक्ष प्रश्न: विदेश यात्रा करने वाले व्यक्ति का साथी कौन होता है?

युधिष्ठिर उत्तर: विद्या।

यक्ष प्रश्न: घर में रहने वाले का साथी कौन होता है?

युधिष्ठिर उत्तर: पत्नी।

यक्ष प्रश्न: मरते हुए बूढ़े का मित्र कौन होता है?

युधिष्ठिर उत्तर: दान, क्योंकि यह मृत्यु के बाद अकेले ही जीव के साथ चलता है।

यक्ष प्रश्न: बर्तनों में सबसे बड़ा कौन सा है?

युधिष्ठिर उत्तर: भूमि सबसे बड़ा बर्तन है जिसमें सब कुछ समा सकता है।

यक्ष प्रश्न: सुख क्या है?

CamScanner

5:30 pm 52%
हिंदी में देखें
BRAHMALOK®
SPREADING SPIRITUALITY

यक्ष प्रश्न: मनुष्य का समर्थन कौन करता है?

युधिष्ठिर उत्तर: धैर्य ही मनुष्य का साथी है।

यक्ष प्रश्न: यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा स्थिरता किसे कहते हैं? धैर्य क्या है? स्नान क्या है? और दान का वास्तविक अर्थ क्या है?

युधिष्ठिर उत्तर: 'अपने धर्म में स्थिरता ही स्थिरता है। अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण रखना ही धैर्य है। मनोमालिन्य का त्याग करना ही स्नान है और प्राणी मात्र की रक्षा की भावना ही वास्तव में दान है।

यक्ष प्रश्न: किस शास्त्र का अध्ययन करने से मनुष्य बुद्धिमान बनता है?

युधिष्ठिर उत्तर: ऐसा कोई धर्मग्रंथ नहीं है। महान लोगों की संगति से ही मनुष्य बुद्धिमान बनता है।

यक्ष प्रश्न: पृथ्वी से भी भारी क्या है?

युधिष्ठिर उत्तर: बालक को कोख में धारण करने वाली माता भूमि से भी भारी होती है।

यक्ष प्रश्न: आकाश से भी ऊंचा कौन है?

युधिष्ठिर उत्तर: पिताजी।

यक्ष प्रश्न: हवा से भी तेज कौन है?

CamScanner

5:30 pm 52%

हिंदी में देखें

BRAHMALOK®
SPREADING SPIRITUALITY

यक्ष प्रश्न: दु:खों से मुक्त कौन है?

युधिष्ठिर उत्तर: जो कभी क्रोध नहीं करता।

यक्ष प्रश्न: वह क्या है जिसका अस्तित्व है या नहीं भी हो सकता है?

युधिष्ठिर उत्तर: माया।

यक्ष प्रश्न: माया क्या है?

युधिष्ठिर उत्तर: नाम और रूप सहित नश्वर संसार।

यक्ष प्रश्न: अंतिम सत्य क्या है?

युधिष्ठिर उत्तर: ब्रह्मा....!

यक्ष प्रश्न: सूर्य किसकी आज्ञा से उगता है?

युधिष्ठिर उत्तर: परमात्मा अर्थात् ब्रह्म की आज्ञा से।

यक्ष प्रश्न: किसी का ब्राह्मण होना किस पर निर्भर करता है? उनके जन्म पर या उनकी शील पर?

युधिष्ठिर उत्तर: कुल या शिक्षा से ब्राह्मणत्व प्राप्त नहीं होता। ब्राह्मणत्व शील और स्वभाव पर निर्भर है। जिसमें शील नहीं वह ब्राह्मण नहीं हो सकता। जिसमें बुरी लत है, वह कितना भी पढ़ा लिखा क्यों न हो ब्राह्मण नहीं है।

CamScanner

5:30 pm 52%

हिंदी में देखें

BRAHMALOK®
SPREADING SPIRITUALITY

यक्ष प्रश्न: सभी दुखों का नाश कौन कर सकता है?

युधिष्ठिर उत्तर: जो सब कुछ त्यागने को तैयार हो।

यक्ष प्रश्न: मृत्यु तक यातना कौन देता है?

युधिष्ठिर उत्तर : गुप्त रूप से किया गया अपराध।

यक्ष प्रश्न: दिन और रात क्या मानना चाहिए?

युधिष्ठिर उत्तर: सांसारिक सुखों की क्षणभंगुरता का।

यक्ष प्रश्न: संसार को कौन जीतता है?

युधिष्ठिर उत्तर: जिसमें सत्य और विश्वास हो।

यक्ष प्रश्न: भय से मुक्ति कैसे संभव है?

युधिष्ठिर उत्तर: वैराग्य से।

यक्ष प्रश्न: स्वतंत्र कौन है?

युधिष्ठिर उत्तर: जो अज्ञान से परे है।

यक्ष प्रश्न: अज्ञान क्या है?

युधिष्ठिर उत्तर: अज्ञान आत्म-ज्ञान का अभाव है।

CamScanner

5:30 pm 52%
हिंदी में देखें
BRAHMALOK®
SPREADING SPIRITUALITY

यक्ष प्रश्न: चोर कौन है?

युधिष्ठिर उत्तर: जो इन्द्रियों के आकर्षण से इन्द्रियों को हर लेते हैं, वे चोर हैं।

यक्ष प्रश्न: नरक क्या है?

युधिष्ठिर उत्तर: इन्द्रियों की दासता नरक है।

यक्ष प्रश्न: जागते हुए भी सोया हुआ कौन है?

युधिष्ठिर उत्तर: जो आत्मा को नहीं जानता वह जागते हुए भी सोया हुआ है।

यक्ष प्रश्न: कमल के पत्ते में पड़े जल के समान अनित्य क्या है?

युधिष्ठिर उत्तर: यौवन, धन और जीवन।

यक्ष प्रश्न: दुर्भाग्य का कारण क्या है?

युधिष्ठिर उत्तर: अभिमान और अहंकार।

यक्ष प्रश्न: सौभाग्य का कारण क्या है?

युधिष्ठिर उत्तर: सत्संग और सबके प्रति मैत्री।

यक्ष प्रश्न: सभी दुखों का नाश कौन कर सकता है?

CamScanner

5:30 pm 52%

यक्ष प्रश्न: सच्चा प्यार क्या है?

युधिष्ठिर उत्तर: सबमें स्वयं को देखना ही सच्चा प्रेम है। स्वयं को सर्वव्यापी देखना ही सच्चा प्रेम है। स्वयं को सबके साथ एक देखना ही सच्चा प्रेम है।

यक्ष प्रश्न: तो फिर मनुष्य सबसे प्रेम क्यों नहीं करता?

युधिष्ठिर उत्तर: जो स्वयं को सभी में नहीं देख सकता, वह सभी से प्रेम नहीं कर सकता।

यक्ष प्रश्न: मोह क्या है?

युधिष्ठिर उत्तर: प्रेम में मांग, अपेक्षा, अधिकार और लगाव होता है।

यक्ष प्रश्न: नशा क्या है?

युधिष्ठिर उत्तर: आसक्ति।

यक्ष प्रश्न: मुक्ति क्या है?

युधिष्ठिर: मुक्ति केवल अनासक्ति (आसक्ति के विपरीत) है।

यक्ष प्रश्न: बुद्धिमान कौन है?

युधिष्ठिर उत्तर: जिसके पास विवेक हो।

CamScanner

5:30 pm 52%

हिंदी में देखें

BRAHMALOK®
SPREADING SPIRITUALITY

यक्ष प्रश्न: वह अनाकार (निराकार) स्वयं क्या करता है?

युधिष्ठिर: वह ईश्वर संसार की रचना, पालन और संहार करता है।

यक्ष प्रश्न: यदि ईश्वर ने संसार को बनाया तो ईश्वर को किसने बनाया?

युधिष्ठिर उत्तर: वह अजन्मा अमृत और कारण रहित है।

यक्ष प्रश्न: भाग्य क्या है?

युधिष्ठिर उत्तर: हर क्रिया, हर कार्य का एक परिणाम होता है। परिणाम अच्छा भी हो सकता है, बुरा भी हो सकता है. यह परिणाम भाग्य है. आज का प्रयास कल का भाग्य है.

यक्ष प्रश्न: सुख-शांति का रहस्य क्या है?

युधिष्ठिर उत्तर: सत्य, सदाचार, प्रेम और क्षमा सुख के कारण हैं। असत्य, अनाचार, घृणा और क्रोध का त्याग ही शांति का मार्ग है।

यक्ष प्रश्न: मन पर नियंत्रण कैसे संभव है?

युधिष्ठिर उत्तर: इच्छाएँ मन में हलचल पैदा करती हैं। इच्छाओं पर विजय मन पर विजय है।

CamScanner

5:29 pm ✓ VoLTE 4G 52%

हिंदी में देखें

BRAHMALOK®
SPREADING SPIRITUALITY

यक्ष प्रश्न: वासना और जन्म का क्या संबंध है?

युधिष्ठिर उत्तर: जैसी इच्छाएं, वैसा ही जन्म होता है। यदि इच्छाएं पशु जैसी हैं तो पशु ही जन्म लें। इच्छाएं इंसान जैसी हो तो इंसान बनकर जन्म लें।

यक्ष प्रश्न: संसार में दु:ख का कारण क्यों है?

युधिष्ठिर उत्तर: लोभ, स्वार्थ और भय संसार के दु:ख का कारण हैं।

यक्ष प्रश्न: फिर ईश्वर ने दु:ख क्यों उत्पन्न किया?

युधिष्ठिर उत्तर: ईश्वर ने संसार की रचना की और मनुष्य ने अपने विचारों और कर्मों से दु:ख और सुख की रचना की।

यक्ष प्रश्न: क्या ईश्वर है? कोण है वोह? क्या वह महिला है या पुरुष?

युधिष्ठिर उत्तर: कोई भी कार्य कारण के बिना नहीं होता। यह संसार उस कारण के अस्तित्व का प्रमाण है। इसीलिए तुम हो, उस महान कारण को अध्यात्म में ईश्वर कहा गया है। यह न तो महिला है और न ही पुरुष.

यक्ष प्रश्न: ईश्वर का स्वरूप क्या है?

युधिष्ठिर उत्तर: भगवान सत्-चित-आनंद हैं, और निराकार हैं

CamScanner

5:29 pm ✓ VoLTE 4G 52%

हिंदी में देखें

BRAHMALOK®
SPREADING SPIRITUALITY

यक्ष ने फिर पूछा- "यज्ञ सामग्री कौन सी है? कौन सी चीज़ क़ुर्बानी यजुह है? कौन सी चीज़ बलि का वरण करती है, और कौन सी चीज़ बलि का उल्लंघन नहीं करती?"

युधिष्ठिर ने कहा – "जीवन एक यज्ञ सामग्री है। मन बलिदान की वस्तु है. केवल एक ऋक् ही यज्ञ करना चुनता है और केवल एक ऋक् ही यज्ञ का अतिक्रमण नहीं करता।

यक्ष प्रश्न: मैं कौन हूं?

युधिष्ठिर उत्तर: आप न तो यह शरीर हैं, न इन्द्रियाँ, न मन, न बुद्धि। आप शुद्ध चेतना हैं, वह चेतना जो सर्वज्ञ है।

यक्ष प्रश्न: जीवन का उद्देश्य क्या है?

युधिष्ठिर उत्तर: जीवन का उद्देश्य उस चेतना को जानना है जो जन्म और मृत्यु के बंधन से मुक्त है। इसे जानना ही मोक्ष है।

यक्ष प्रश्न: जन्म का कारण क्या है?

युधिष्ठिर उत्तर: अतृप्त इच्छाएं, अभिलाषाएं और कर्मफल ही जन्म का कारण हैं।

यक्ष प्रश्न: जन्म और मृत्यु के बंधन से कौन मुक्त है?

युधिष्ठिर उत्तर: जिसने स्वयं को और आत्मा को जान लिया है, वह जन्म और मृत्यु के बंधन से मुक्त हो गया है।

CamScanner

5:29 pm 52%

BRAHMALOK®
SPREADING SPIRITUALITY

यक्ष ने पूछा- "सूरज को कौन उगता है?" इसके चारों ओर कौन घूमता है? उसे कौन स्थापित करता है और सूर्य किसमें स्थापित होता है?"

युधिष्ठिर ने उत्तर दिया- "हे यक्ष! ब्रह्मा सूर्य को उदय करते हैं। देवता इसके चारों ओर विचरण करते हैं। धर्म उसे स्थापित करता है और वह सत्य में स्थापित होता है।

यक्ष ने फिर पूछा- "मनुष्य श्रोता कैसे बनता है?" महत का पद किसे प्राप्त होता है? वह किससे ब्रह्मरूप बनता है और किससे बुद्धिमान बनता है?

युधिष्ठिर का उत्तर था- "सुनने से मनुष्य श्रोता बनता है। वह स्मृति से महानता प्राप्त करता है। तपस्या से वह द्वितीय हो जाता है और गुरुओं की सेवा से वह बुद्धिमान हो जाता है।

यक्ष का अगला प्रश्न था- "ब्राह्मणों में देवत्व क्या है? उनमें संत जैसा धर्म कौन सा है? मनुष्य की आत्मा क्या है और बेईमान मनुष्यों का व्यवहार क्या है?

इन प्रश्नों के उत्तर में युधिष्ठिर ने कहा- "वेदों का स्वाध्याय ब्राह्मणों में देवत्व है। उनकी तपस्या सत्पुरुषों के समान ही धर्म है। मृत्यु एक मानवीय भावना है और निंदा बेईमान लोगों का व्यवहार है।

यक्ष ने फिर पूछा- "यज्ञ सामग्री कौन सी है? कौन सी चीज़ क़ुर्बानी यजुह है? कौन सी चीज़ बलि का वरण करती है, और

CamScanner

5:21 pm VoLTE 4G 53%

यक्ष प्रश्न: घास से भी तुच्छ चीज क्या है?
युधिष्ठिर उत्तर: चिंता।

यक्ष प्रश्न : विदेश जाने वाले का साथी कौन होता है?
युधिष्ठिर उत्तरः विद्या।
यक्ष प्रश्न : घर में रहने वाले का साथी कौन होता है?
युधिष्ठिर उत्तरः पत्नी।
यक्ष प्रश्न : मरणासन्न वृद्ध का मित्र कौन होता है?
युधिष्ठिर उत्तरः दान, क्योंकि वही मृत्यु के बाद अकेले चलने वाले जीव के साथ-साथ चलता है।
यक्ष प्रश्न : बर्तनों में सबसे बड़ा कौन-सा है?
युधिष्ठिर उत्तरः भूमि ही सबसे बड़ा बर्तन है जिसमें सब कुछ समा सकता है।
यक्ष प्रश्न : सुख क्या है?
युधिष्ठिर उत्तरः सुख वह चीज है जो शील और सच्चरित्रता पर आधारित है।
यक्ष प्रश्न : किसके छूट जाने पर मनुष्य सर्वप्रिय बनता है ?
युधिष्ठिर युधिष्ठिर उत्तरः अहंभाव के छूट जाने पर मनुष्य सर्वप्रिय बनता है।
यक्ष प्रश्न : किस चीज के खो जाने पर दु:ख होता है ?
युधिष्ठिर उत्तरः क्रोध।
यक्ष प्रश्न : किस चीज को गंवाकर मनुष्य धनी बनता है?
युधिष्ठिर उत्तरः लालच को खोकर।

यक्ष प्रश्न : संसार में सबसे बड़े आश्चर्य की बात क्या है?
युधिष्ठिर उत्तरः हर रोज आंखों के सामने कितने ही प्राणियों की मृत्यु हो जाती है यह देखते हुए भी इंसान

Fuel your ambitions with an Instant Personal Loan Apply Now

CamScanner

5:21 pm 53%

यक्ष प्रश्नः आकाश से भी ऊंचा कौन है?
युधिष्ठिर उत्तरः पिता।

टिप्पणी : आकाश से भी ऊंचा पिता इसलिए होता है क्योंकि वह आपके लिए एक छत्र की भूमिका निभाता है। उसकी देखरेख और उसके होने के अहसास से ही आप खिलते हैं। आपके आकाश में खिलने में पिता की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

पिता क्या होता है और पिता क्या सोचता है यह पिता बनकर ही ज्ञात होता है। जो व्यक्ति अपने पिता की भावना को नहीं समझता है उसका पुत्र भी इसका अनुसरण करता है। पिता के वचनों की सत्यता और उनके प्रेम को व्यक्ति पिता बनने के बाद ही जान पाता है। वह पिता महान है जो अपने पुत्र-पुत्री के समक्ष आदर्श प्रस्तुत करता हो और उनके भीतर अपना संपूर्ण अनुभव डालता हो। पिता की सीख जिंदगी में हमेशा काम आती है लेकिन पिता सीख देने वाला भी होना चाहिए। आपकी जिंदगी में यदि पिता का कोई महत्व नहीं है तो आप ऊंचाइयों के सपने देखना छोड़ दें।

यक्ष प्रश्नः हवा से भी तेज चलने वाला कौन है?
युधिष्ठिर उत्तरः मन।
टिप्पणी : मन की गति निरंतर जारी है। इसकी गति को समझ पाना मुश्किल है। मन की गति से कहीं भी पहुंचे वाले देवी और देवताओं के बारे में हमने पढ़ा है। सिर्फ किसी स्थान के बारे में सोचकर ही वहां पहुंच जाते थे। हमारा मन भी यहां बैठे बैठे संपूर्ण धरती का एक क्षम में

Fuel your ambitions with an Instant Personal Loan Apply Now

CamScanner

5:21 pm 53%

यक्ष प्रश्न: यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा कि स्थायित्व किसे कहते हैं? धैर्य क्या है? स्नान किसे कहते हैं? और दान का वास्तविक अर्थ क्या है?
युधिष्ठिर उत्तर: 'अपने धर्म में स्थिर रहना ही स्थायित्व है। अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण रखना ही धैर्य है। मनोमालिन्य का त्याग करना ही स्नान है और प्राणीमात्र की रक्षा का भाव ही वास्तव में दान है।'

यक्ष प्रश्न: कौन सा शास्त्र है, जिसका अध्ययन करके मनुष्य बुद्धिमान बनता है?
युधिष्ठिर उत्तर: कोई भी ऐसा शास्त्र नहीं है। महान लोगों की संगति से ही मनुष्य बुद्धिमान बनता है।
टिप्पणी : ज्ञान शास्त्रों में नहीं होता- योगी, ध्यानी और गुरु के सानिध्य में होता है। शास्त्र पढ़ने वाले बहुत है, लेकिन समझने वाले बहुत कम। शास्त्रों को अनुभव से या अनुभवी से ही समझा जा सकता है। इसीलिए हमेशा आचार्यों, शिक्षकों, संतों की संगत या सत्संग में रहना चाहिए।

यक्ष प्रश्न: भूमि से भारी चीज क्या है?
युधिष्ठिर उत्तर: संतान को कोख़ में धरने वाली मां, भूमि से भी भारी होती है।
टिप्पणी : मां का कर्ज कभी चुकाया नहीं जा सकता। हमें इस संसार में लाने वाली माता ही होती है। माता के प्रति किसी भी प्रकार से कटु वचन बोलने वाला कभी सुखी नहीं रहता। माता को हिन्दू धर्म में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है।

Fuel your ambitions with an Instant Personal Loan Apply Now

CamScanner

5:20 pm 53%

यक्ष प्रश्न: वह क्या है जो अस्तित्व में है और नहीं भी?
युधिष्ठिर उत्तर: माया।
यक्ष प्रश्न: माया क्या है?
युधिष्ठिर उत्तर: नाम और रूपधारी नाशवान जगत।
यक्ष प्रश्न: परम सत्य क्या है?
युधिष्ठिर उत्तर: ब्रह्म।...!

यक्ष प्रश्नः सूर्य किसकी आज्ञा से उदय होता है?
युधिष्ठिर उत्तरः परमात्मा यानी ब्रह्म की आज्ञा से।
टिप्पणी : हिन्दू धर्म में ईश्वर को 'ब्रह्म' (ब्रह्मा नहीं) कहा गया है। ब्रह्म ही सत्य है ऐसा वेद, उपनिषद और गीता में लिखा है। सूर्य को वेदों में जगत की आत्मा माना गया है। अरबों सूर्य है। ब्रह्मांड में जितने भी तारे हैं वे सभी सूर्य ही हैं। सूर्य के बगैर जगत में जीवन नहीं हो सकता।

यक्ष प्रश्नः किसी का ब्राह्मण होना किस बात पर निर्भर करता है? उसके जन्म पर या शील स्वभाव पर?
युधिष्ठिर उत्तरः कुल या विद्या के कारण ब्राह्मणत्व प्राप्त नहीं हो जाता। ब्राह्मणत्व शील और स्वभाव पर ही निर्भर है। जिसमें शील न हो ब्राह्मण नहीं हो सकता। जिसमें बुरे व्यसन हों वह चाहे कितना ही पढ़ा लिखा क्यों न हो, ब्राह्मण नहीं होता।

यक्ष प्रश्नः मनुष्य का साथ कौन देता है?
युधिष्ठिर उत्तरः धैर्य ही मनुष्य का साथी होता है।
टिप्पणी : अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण रखना ही धैर्य है। कुछ लोग बगैर विचार किए हुए बोलते, सोचते, कार्य करते, भोजन करते या व्यवहार करते हैं। उतावलापन यह दर्शाता है कि आप बुद्धि नहीं भावना और भावुकता

Fuel your ambitions
with an Instant Personal Loan
Apply Now

CamScanner

5:19 pm VoLTE 4G 53%

यक्ष प्रश्न: कमल के पत्ते में पड़े जल की तरह अस्थायी क्या है?
युधिष्ठिर उत्तर: यौवन, धन और जीवन।

यक्ष प्रश्न: दुर्भाग्य का कारण क्या है?
युधिष्ठिर उत्तर: मद और अहंकार।
यक्ष प्रश्न: सौभाग्य का कारण क्या है?
युधिष्ठिर उत्तर: सत्संग और सबके प्रति मैत्री भाव।
यक्ष प्रश्न: सारे दु:खों का नाश कौन कर सकता है?
युधिष्ठिर उत्तर: जो सब छोड़ने को तैयार हो।

यक्ष प्रश्न: मृत्यु पर्यंत यातना कौन देता है?
युधिष्ठिर उत्तर: गुप्त रूप से किया गया अपराध।
यक्ष प्रश्न: दिन-रात किस बात का विचार करना चाहिए?
युधिष्ठिर उत्तर: सांसारिक सुखों की क्षण-भंगुरता का।
यक्ष प्रश्न: संसार को कौन जीतता है?
युधिष्ठिर उत्तर: जिसमें सत्य और श्रद्धा है।

यक्ष प्रश्न: भय से मुक्ति कैसे संभव है?
युधिष्ठिर उत्तर: वैराग्य से।
यक्ष प्रश्न: मुक्त कौन है?
युधिष्ठिर उत्तर: जो अज्ञान से परे है।
यक्ष प्रश्न: अज्ञान क्या है?
युधिष्ठिर उत्तर: आत्मज्ञान का अभाव अज्ञान है।
यक्ष प्रश्न: दु:खों से मुक्त कौन है?
युधिष्ठिर उत्तर: जो कभी क्रोध नहीं करता।

यक्ष प्रश्न: वह क्या है जो अस्तित्व में है और नहीं भी?

Fuel your ambitions with an Instant Personal Loan Apply Now

CamScanner

5:19 pm 53%

यक्ष प्रश्न: तो फिर मनुष्य सभी से प्रेम क्यों नहीं करता?
युधिष्ठिर उत्तर:. जो स्वयं को सभी में नहीं देख सकता वह सभी से प्रेम नहीं कर सकता।
यक्ष प्रश्न: आसक्ति क्या है?
युधिष्ठिर उत्तर: प्रेम में मांग, अपेक्षा, अधिकार आसक्ति है।
यक्ष प्रश्न: नशा क्या है?
युधिष्ठिर उत्तर: आसक्ति।
यक्ष प्रश्न: मुक्ति क्या है?
युधिष्ठिर – अनासक्ति (आसक्ति के विपरित) ही मुक्ति है।

यक्ष प्रश्न: बुद्धिमान कौन है?
युधिष्ठिर उत्तर: जिसके पास विवेक है।
यक्ष प्रश्न: चोर कौन है?
युधिष्ठिर उत्तर: इन्द्रियों के आकर्षण, जो इन्द्रियों को हर लेते हैं चोर हैं।
यक्ष प्रश्न: नरक क्या है?
युधिष्ठिर उत्तर: इन्द्रियों की दासता नरक है।

यक्ष प्रश्न: जागते हुए भी कौन सोया हुआ है?
युधिष्ठिर उत्तर: जो आत्मा को नहीं जानता वह जागते हुए भी सोया है।

:HECK THIS OUT

recommended by mgid

CamScanner

5:19 pm 53%

यक्ष प्रश्न: चित्त पर नियंत्रण कैसे संभव है?
युधिष्ठिर उत्तर: इच्छाएं, कामनाएं चित्त में उद्वेग उत्पन्न करती हैं। इच्छाओं पर विजय चित्त पर विजय है।
टिप्पणी : इच्छाएं अनंत होती है। जिस तरह भोजन करने के बाद पुन: भूख लगती है उसी तरह एक इच्छा के पूरी होने के बाद दूसरी जाग्रत हो जाती है। वे इच्छाएं दुखदायी होती है जो उद्वेग उत्पन्न करती है। न भोग, न दमन, वरण जागरण। इच्छाओं के प्रति सजग रहकर ही उन पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

यक्ष प्रश्न: सच्चा प्रेम क्या है?
युधिष्ठिर उत्तर: स्वयं को सभी में देखना सच्चा प्रेम है। स्वयं को सर्वव्याप्त देखना सच्चा प्रेम है। स्वयं को सभी के साथ एक देखना सच्चा प्रेम है।
टिप्पणी : किसी के प्रति संवेदना और करुणा का भाव रखना सच्चा प्रेम है। यदि आप अपने साथी की जगह खुद को रखकर सोचेंगे तो इसका अहसास होगा कि वह क्या सोच और समझ रहा है। वह भी आप ही की तरह एक निर्दोष आत्मा ही है। उसकी भी इच्छाएं, भावनाएं और जीवन है। वह भी अच्छा जीवन जीना चाहता है लेकिन लोग उसे जीने नहीं दे रहे हैं। कभी किसी के लिए त्याग करें। सभी को खुद के जैसा समझना या सभी को खुद ही समझने से ही प्रेम की भावना विकसित होगी। खुद से प्रेम करना सीखें।

यक्ष प्रश्न: तो फिर मनुष्य सभी से प्रेम क्यों नहीं करता?
युधिष्ठिर उत्तर:. जो स्वयं को सभी में नहीं देख सकता

Fuel your ambitions with an Instant Personal Loan Apply Now

CamScanner

5:18 pm 53%

यक्ष प्रश्न: वह अनाकार (निराकार) स्वयं करता क्या है?
युधिष्ठिर: वह ईश्वर संसार की रचना, पालन और संहार करता है।
यक्ष प्रश्न: यदि ईश्वर ने संसार की रचना की तो फिर ईश्वर की रचना किसने की?
युधिष्ठिर उत्तर: वह अजन्मा अमृत और अकारण है।

यक्ष प्रश्न: भाग्य क्या है?
युधिष्ठिर उत्तर: हर क्रिया, हर कार्य का एक परिणाम है। परिणाम अच्छा भी हो सकता है, बुरा भी हो सकता है। यह परिणाम ही भाग्य है। आज का प्रयत्न कल का भाग्य है।
टिप्पणी: बहुत से लोग भाग्यवादी होते हैं उनके लिए यह अच्छा जवाब है। भाग्य के भरोसे रहने वालों के मन में नकारात्मकता का जन्म भी होता है। बहुत से लोग जिंदगी भर इसी का दुख मनाते हैं कि हमारे भाग्य में नहीं था इसलिए यह हमें नहीं मिला। ऐसे लोग कभी सुखी नहीं रहते हैं। भाग्य के होने के बहुत सबूत इसलिए दिए जाते हैं क्योंकि वे लोग कर्म के सिद्धांत को अच्छे से समझते नहीं है।

यक्ष प्रश्न: सुख और शान्ति का रहस्य क्या है?
युधिष्ठिर उत्तर: सत्य, सदाचार, प्रेम और क्षमा सुख का कारण हैं। असत्य, अनाचार, घृणा और क्रोध का त्याग शान्ति का मार्ग है।

टिप्पणी : असत्य बोलकर व्यक्ति दुख, चिंता या तनाव

Fuel your ambitions with an Instant Personal Loan Apply Now

CamScanner

5:18 pm 53%

यक्ष प्रश्न: क्या ईश्वर है? कौन है वह? क्या वह स्त्री है या पुरुष?
युधिष्ठिर उत्तर: कारण के बिना कार्य नहीं। यह संसार उस कारण के अस्तित्व का प्रमाण है। तुम हो इसलिए वह भी है उस महान कारण को ही आध्यात्म में ईश्वर कहा गया है।
वह न स्त्री है न पुरुष।

टिप्पणी : यह जगत या संसार ही इस बात का सबूत है कि ईश्वर है। उसके होने के बगैर यह हो नहीं सकता। जैसे शरीर के होने का सबूत ही ये है कि आत्मा है या तुम हो। तुम्हें (पढ़ने और लिखने वाले को) ही तो आत्मा कहा गया है। ईश्वर न तो पुरुष है और न स्त्री उसी तरह जैसे कि आत्मा न तो स्त्री है और न पुरुष। स्त्री और पुरुष तो शरीर की भावना है। यदि आत्मा स्त्री जैसे शरीर में होगी तो वैसी भावना करेगी। जिस तरह जल, हवा और आत्मा का कोई आकार प्रकार नहीं होता लेकिन उन्हें जिस भी पात्र में समाहित किया जाता है वह वैसे ही हो जाते हैं।

यक्ष प्रश्न: उसका (ईश्वर) स्वरूप क्या है?
युधिष्ठिर उत्तर: वह सत्-चित्-आनन्द है, वह निराकार ही सभी रूपों में अपने आप को स्वयं को व्यक्त करता है।

यक्ष प्रश्न: वह अनाकार (निराकार) स्वयं करता क्या है?
युधिष्ठिर: वह ईश्वर संसार की रचना, पालन और संहार

Fuel your ambitions with an instant Personal Loan Apply Now

CamScanner

5:18 pm 4G 53%

यक्ष प्रश्न: संसार में दु:ख क्यों है?
युधिष्ठिर उत्तर: संसार के दु:ख का कारण लालच, स्वार्थ और भय हैं।
टिप्पणी : लालच का कोई अंत नहीं, स्वार्थी का कोई मित्र नहीं और भयभीत व्यक्ति का कोई जीवन नहीं। भय से ही सभी तरह के मानसिक विकारों का जन्म होता है। कई दफे लालच मौत का कारण भी बन जाता है। लालच को बुरी बला कहा गया है। लालची व्यक्ति का लालच बढ़ता ही जाता है और वह अपन लालच के कारण ही दुखी रहता है।

स्वार्थी व्यक्ति तो सर्वत्र पाए जाते हैं। स्वार्थी आदमी स्वयं का उल्लू सीधा करने के लिए किसी की भी जान को भी दांव पर लगा सकते हैं। स्वार्थी के मन में ईर्ष्या प्रधान गुण होता है।

यक्ष प्रश्न: तो फिर ईश्वर ने दु:ख की रचना क्यों की?
युधिष्ठिर उत्तर: ईश्वर ने संसार की रचना की और मनुष्य ने अपने विचार और कर्मों से दु:ख और सुख की रचना की।

टिप्पण : मनुष्य जैसा सोचता है वैसा ही बन जाता है। नकारात्मकता स्वत: ही आती है लेकिन सकारात्मक विचारों को लाना पड़ता है। लाने की मेहनत कोई नहीं करता है इसीलिए वह बुरे विचार सोचकर बुरे कर्मों में फंसता रहता है। बुरे कर्मों का परिणाम भी बुरा ही होता है।

Fuel your ambitions with an instant Personal Loan Apply Now

CamScanner

5:17 pm 53%

यक्ष प्रश्न: जन्म का कारण क्या है?
युधिष्ठिर उत्तर: अतृप्त वासनाएं, कामनाएं और कर्मफल ये ही जन्म का कारण हैं।

टिप्पणी : जन्म लेना और मरना एक आदत है। इस आदत से छुटकारा पाने का उपाय उपनिषद, योग और गीता में पाया जाता है। वासनाएं और कामनाएं अनंत होती है। जब तक यह रहेगी तब तक कर्मबंधन होता रहेगा और उसका फल भी मिलता रहेगा। इस चक्र को तोड़ने वाला ही जितेंद्रिय कहलाता है।

यक्ष प्रश्न: जन्म और मरण के बन्धन से मुक्त कौन है?
युधिष्ठिर उत्तर: जिसने स्वयं को, उस आत्मा को जान लिया वह जन्म और मरण के बन्धन से मुक्त है।

टिप्पण : मैं कौन हूं और मेरा असली स्वरूप क्या है। इस सत्य को जानने वाला ही जन्म और मरण के चक्र से मुक्त हो जाता है। यह जानने के लिए अष्टांग योग का पालन करना चाहिए।

यक्ष प्रश्न:- वासना और जन्म का सम्बन्ध क्या है?
युधिष्ठिर उत्तर:- जैसी वासनाएं वैसा जन्म। यदि वासनाएं पशु जैसी तो पशु योनि में जन्म। यदि वासनाएं मनुष्य जैसी तो मनुष्य योनि में जन्म।

टिप्पणी : वासना का अर्थ व्यापक है। यह चित्त की एक दशा है। हम जैसा सोचते हैं वैसे बन जाते हैं। उसी तरह

Fuel your ambitions with an Instant Personal Loan Apply Now

CamScanner

5:17 pm 53%

यक्ष प्रश्न : कौन हूं मैं?
युधिष्ठिर उत्तर : तुम न यह शरीर हो, न इन्द्रियां, न मन, न बुद्धि। तुम शुद्ध चेतना हो, वह चेतना जो सर्वसाक्षी है।
टिप्पणी : व्यक्ति को खुद से यह सवाल पूछना चाहिए कि मैं कौन हूं। क्या शरीर हूं जो मृत्यु के समय नष्ट हो जाएगा? क्या आंख, नाक, कान आदि पांचों इंद्रियां हूं जो शरीर के साथ ही नष्ट हो जाएंगे? तब क्या में मन या बुद्धि हूं। अर्थात मैं जो सोचता हूं या सोच रहा हूं- क्या वह हूं? जब गहरी सुषुप्ति आती है तब यह भी बंद होने जैसा हो जाता है। तब मैं क्या हूं? व्यक्ति खुद आंख बंद करके इस पर बोध करे तो उसे समझ में आएगा कि मैं शुद्ध आत्मा, चेतना और सर्वसाक्षी हूं। ऐसा एक बार के आंख बंद करने से नहीं होगा।

यक्ष प्रश्न: जीवन का उद्देश्य क्या है?
युधिष्ठिर उत्तर: जीवन का उद्देश्य उसी चेतना को जानना है जो जन्म और मरण के बन्धन से मुक्त है। उसे जानना ही मोक्ष है।

टिप्पणी : बहुत से लोगों का उद्देश्य धन कमाना हो सकता है। धन से बाहर की समृद्धि प्राप्त हो सकती है, लेकिन ध्यान से भीतर की समृद्धि प्राप्त होती है। मरने के बाद बाहर की समृद्धि यहीं रखी रह जाएगी लेकिन भीतर की समृद्धि आपके साथ जाएगी। महर्षि पतंजलि ने मोक्ष तक पहुंचने के लिए सात सीढ़ियां बता रखी है:- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा और ध्यान। ध्यान के बाद समाधी या मोक्ष स्वत: ही प्राप्त

Fuel your ambitions with an Instant Personal Loan Apply Now

CamScanner

Description

गर्भ गीता से भी महत्वपूर्ण महाभारत के 21 सवाल I हर गर्भवती जाने I यक्ष युधिष्ठिर संवाद

10K	6,56,064	22 Apr
Likes	Views	2023

#garbhguru #garbhsanskarmusic #garbhsanskarmusicforpreg

गर्भावस्था में हमे अपनी संतान को हमारे पुराणों से जुड़े ज्ञान अवश्य देना चाहिए आज पहली बार महाभारत के वन पर्व में आये ब्रह्म ज्ञान के 21 सवाल जो गर्भ गीता से अधिक सरल और महत्वपूर्ण है, वही आज संतान को सुनाने का मन है
सरल अर्थ में समझने के लिए इसे पूरा सुने और अपने शिशु को भी सुनाएं।

Topic : yaksh yudhisthir samvad
यक्ष युधिष्ठिर संवाद ब्रह्म ज्ञान के 21 सवाल
महाभारत पर्व यक्ष - युधिष्ठिर संवाद | क्या थे यक्ष के प्रश्न और युधिष्ठिर के जवाब? | Yaksha Yudhishthira Samvad
the divine tales, divine tales, hindu mythology, यक्ष - युधिष्ठिर संवाद, क्या थे यक्ष के प्रश्न और युधिष्ठिर के जवाब?, Yaksha Yudhishthira Samvad, yaksha yudhishthira questions and answers, yaksha in hindi, yaksha questions yudhishthira, यक्ष के सवाल और धर्मराज युधिष्ठिर के जवाब, महाभारत, Mahabharat

other videos:

CamScanner

5:14 pm 54%

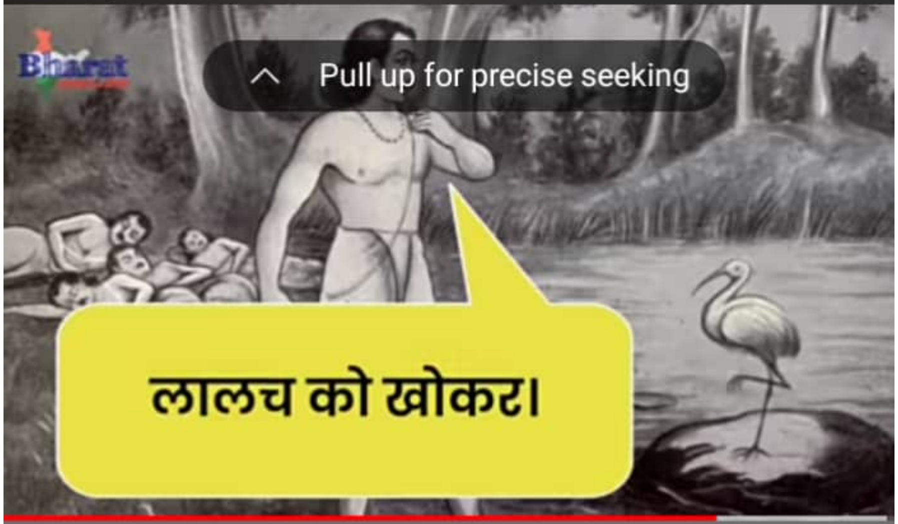

गर्भ गीता से भी महत्वपूर्ण महाभारत के 21 सवाल I हर गर्भवती जाने I यक्ष युधिष्ठिर संवाद

6.5 lakh views 8 mo ago #garbhguru ...more

Bharat - Sanskaron ki Janani 2.5 lakh Subscribe

10K Share Remix Downloaded

Comments 231

K भगवान मेरे बच्चे की रक्षा करना

Description

गर्भ गीता से भी महत्वपूर्ण महाभारत के 21 सवाल । हर गर्भवती जाने । यक्ष युधिष्ठिर संवाद

10K	6,56,064	22 Apr
Likes	Views	2023

#garbhguru #garbhsanskarmusic #garbhsanskarmusicforpregı

गर्भावस्था में हमे अपनी संतान को हमारे पुराणों से जुड़े ज्ञान अवश्य देना चाहिए आज पहली बार महाभारत के वन पर्व में आये ब्रह्म ज्ञान के 21 सवाल जो गर्भ गीता से अधिक सरल और महत्वपूर्ण है, वही आज संतान को सुनाने का मन है
सरल अर्थ में समझने के लिए इसे पूरा सुने और अपने शिशु को भी सुनाएं।

CamScanner

Description

गर्भ गीता से भी महत्वपूर्ण महाभारत के 21 सवाल । हर गर्भवती जाने । यक्ष युधिष्ठिर संवाद

10K	6,56,064	22 Apr
Likes	Views	2023

#garbhguru #garbhsanskarmusic #garbhsanskarmusicforpreg

गर्भावस्था में हमे अपनी संतान को हमारे पुराणों से जुड़े ज्ञान अवश्य देना चाहिए आज पहली बार महाभारत के वन पर्व में आये ब्रह्म ज्ञान के 21 सवाल जो गर्भ गीता से अधिक सरल और महत्वपूर्ण है, वही आज संतान को सुनाने का मन है
सरल अर्थ में समझने के लिए इसे पूरा सुने और अपने शिशु को भी सुनाएं।

Topic : yaksh yudhisthir samvad
यक्ष युधिष्ठिर संवाद ब्रह्म ज्ञान के 21 सवाल
महाभारत पर्व यक्ष - युधिष्ठिर संवाद | क्या थे यक्ष के प्रश्न और युधिष्ठिर के जवाब? | Yaksha Yudhishthira Samvad
the divine tales, divine tales, hindu mythology, यक्ष - युधिष्ठिर संवाद, क्या थे यक्ष के प्रश्न और युधिष्ठिर के जवाब?, Yaksha Yudhishthira Samvad, yaksha yudhishthira questions and answers, yaksha in hindi, yaksha questions yudhishthira, यक्ष के सवाल और धर्मराज युधिष्ठिर के जवाब, महाभारत, Mahabharat

other videos:

CamScanner

Description

गर्भ गीता से भी महत्वपूर्ण महाभारत के 21 सवाल । हर गर्भवती जाने । यक्ष युधिष्ठिर संवाद

10K	6,56,064	22 Apr
Likes	Views	2023

#garbhguru #garbhsanskarmusic #garbhsanskarmusicforpreg

गर्भावस्था में हमे अपनी संतान को हमारे पुराणों से जुड़े ज्ञान अवश्य देना चाहिए आज पहली बार महाभारत के वन पर्व में आये ब्रह्म ज्ञान के 21 सवाल जो गर्भ गीता से अधिक सरल और महत्वपूर्ण है, वही आज संतान को सुनाने का मन है
सरल अर्थ में समझने के लिए इसे पूरा सुने और अपने शिशु को भी सुनाएं।

Topic : yaksh yudhisthir samvad
यक्ष युधिष्ठिर संवाद ब्रह्म ज्ञान के 21 सवाल
महाभारत पर्व यक्ष - युधिष्ठिर संवाद | क्या थे यक्ष के प्रश्न और युधिष्ठिर के जवाब? | Yaksha Yudhishthira Samvad
the divine tales, divine tales, hindu mythology, यक्ष - युधिष्ठिर संवाद, क्या थे यक्ष के प्रश्न और युधिष्ठिर के जवाब?, Yaksha Yudhishthira Samvad, yaksha yudhishthira questions and answers, yaksha in hindi, yaksha questions yudhishthira, यक्ष के सवाल और धर्मराज युधिष्ठिर के जवाब, महाभारत, Mahabharat

other videos:

CamScanner

5:14 pm 54%

गर्भ गीता से भी महत्वपूर्ण महाभारत के 21 सवाल I हर गर्भवती जाने I यक्ष युधिष्ठिर संवाद

6.5 lakh views 8 mo ago #garbhguru ...more

Bharat - Sanskaron ki Janani 2.5 lakh Subscribe

10K Share Remix Downloaded

Comments 231

K भगवान मेरे बच्चे की रक्षा करना

Description

गर्भ गीता से भी महत्वपूर्ण महाभारत के 21 सवाल I हर गर्भवती जाने I यक्ष युधिष्ठिर संवाद

10K	6,56,064	22 Apr
Likes	Views	2023

#garbhguru #garbhsanskarmusic #garbhsanskarmusicforpregı

गर्भावस्था में हमे अपनी संतान को हमारे पुराणों से जुड़े ज्ञान अवश्य देना चाहिए आज पहली बार महाभारत के वन पर्व में आये ब्रह्म ज्ञान के 21 सवाल जो गर्भ गीता से अधिक सरल और महत्वपूर्ण है, वही आज संतान को सुनाने का मन है

CamScanner

Description

ार्भ गीता से भी महत्वपूर्ण महाभारत के 21 सवाल । हर ार्भवती जाने । यक्ष युधिष्ठिर संवाद

10K	6,56,064	22 Apr
Likes	Views	2023

#garbhguru #garbhsanskarmusic #garbhsanskarmusicforpreg

गर्भावस्था में हमे अपनी संतान को हमारे पुराणों से जुड़े ज्ञान अवश्य देना चाहिए आज पहली बार महाभारत के वन पर्व में आये ब्रह्म ज्ञान के 21 सवाल जो गर्भ गीता से अधिक सरल और महत्वपूर्ण है, वही आज संतान को सुनाने का मन है
सरल अर्थ में समझने के लिए इसे पूरा सुने और अपने शिशु को भी सुनाएं।

Topic : yaksh yudhisthir samvad
यक्ष युधिष्ठिर संवाद ब्रह्म ज्ञान के 21 सवाल
महाभारत पर्व यक्ष - युधिष्ठिर संवाद | क्या थे यक्ष के प्रश्न और युधिष्ठिर के जवाब? | Yaksha Yudhishthira Samvad
the divine tales, divine tales, hindu mythology, यक्ष - युधिष्ठिर संवाद, क्या थे यक्ष के प्रश्न और युधिष्ठिर के जवाब?, Yaksha Yudhishthira Samvad, yaksha yudhishthira questions and answers, yaksha in hindi, yaksha questions yudhishthira, यक्ष के सवाल और धर्मराज युधिष्ठिर के जवाब, महाभारत, Mahabharat

other videos:

CamScanner

Description

गर्भ गीता से भी महत्वपूर्ण महाभारत के 21 सवाल l हर गर्भवती जाने l यक्ष युधिष्ठिर संवाद

10K	6,56,064	22 Apr
Likes	Views	2023

#garbhguru #garbhsanskarmusic #garbhsanskarmusicforpreg

गर्भावस्था में हमे अपनी संतान को हमारे पुराणों से जुड़े ज्ञान अवश्य देना चाहिए आज पहली बार महाभारत के वन पर्व में आये ब्रह्म ज्ञान के 21 सवाल जो गर्भ गीता से अधिक सरल और महत्वपूर्ण है, वही आज संतान को सुनाने का मन है
सरल अर्थ में समझने के लिए इसे पूरा सुने और अपने शिशु को भी सुनाएं।

Topic : yaksh yudhisthir samvad
यक्ष युधिष्ठिर संवाद ब्रह्म ज्ञान के 21 सवाल
महाभारत पर्व यक्ष - युधिष्ठिर संवाद | क्या थे यक्ष के प्रश्न और युधिष्ठिर के जवाब? | Yaksha Yudhishthira Samvad
the divine tales, divine tales, hindu mythology, यक्ष - युधिष्ठिर संवाद, क्या थे यक्ष के प्रश्न और युधिष्ठिर के जवाब?, Yaksha Yudhishthira Samvad, yaksha yudhishthira questions and answers, yaksha in hindi, yaksha questions yudhishthira, यक्ष के सवाल और धर्मराज युधिष्ठिर के जवाब, महाभारत, Mahabharat

other videos:

CamScanner

Description

गर्भ गीता से भी महत्वपूर्ण महाभारत के 21 सवाल । हर गर्भवती जाने । यक्ष युधिष्ठिर संवाद

10K	6,56,064	22 Apr
Likes	Views	2023

#garbhguru #garbhsanskarmusic #garbhsanskarmusicforpreg

गर्भावस्था में हमे अपनी संतान को हमारे पुराणों से जुड़े ज्ञान अवश्य देना चाहिए आज पहली बार महाभारत के वन पर्व में आये ब्रह्म ज्ञान के 21 सवाल जो गर्भ गीता से अधिक सरल और महत्वपूर्ण है, वही आज संतान को सुनाने का मन है
सरल अर्थ में समझने के लिए इसे पूरा सुने और अपने शिशु को भी सुनाएं।

Topic : yaksh yudhisthir samvad
यक्ष युधिष्ठिर संवाद ब्रह्म ज्ञान के 21 सवाल
महाभारत पर्व यक्ष - युधिष्ठिर संवाद | क्या थे यक्ष के प्रश्न और युधिष्ठिर के जवाब? | Yaksha Yudhishthira Samvad
the divine tales, divine tales, hindu mythology, यक्ष - युधिष्ठिर संवाद, क्या थे यक्ष के प्रश्न और युधिष्ठिर के जवाब?, Yaksha Yudhishthira Samvad, yaksha yudhishthira questions and answers, yaksha in hindi, yaksha questions yudhishthira, यक्ष के सवाल और धर्मराज युधिष्ठिर के जवाब, महाभारत, Mahabharat

other videos:

CamScanner

Description

गर्भ गीता से भी महत्वपूर्ण महाभारत के 21 सवाल । हर गर्भवती जाने । यक्ष युधिष्ठिर संवाद

10K	6,56,064	22 Apr
Likes	Views	2023

#garbhguru #garbhsanskarmusic #garbhsanskarmusicforpreg

गर्भावस्था में हमे अपनी संतान को हमारे पुराणों से जुड़े ज्ञान अवश्य देना चाहिए आज पहली बार महाभारत के वन पर्व में आये ब्रह्म ज्ञान के 21 सवाल जो गर्भ गीता से अधिक सरल और महत्वपूर्ण है, वही आज संतान को सुनाने का मन है
सरल अर्थ में समझने के लिए इसे पूरा सुने और अपने शिशु को भी सुनाएं।

Topic : yaksh yudhisthir samvad
यक्ष युधिष्ठिर संवाद ब्रह्म ज्ञान के 21 सवाल
महाभारत पर्व यक्ष - युधिष्ठिर संवाद | क्या थे यक्ष के प्रश्न और युधिष्ठिर के जवाब? | Yaksha Yudhishthira Samvad
the divine tales, divine tales, hindu mythology, यक्ष - युधिष्ठिर संवाद, क्या थे यक्ष के प्रश्न और युधिष्ठिर के जवाब?, Yaksha Yudhishthira Samvad, yaksha yudhishthira questions and answers, yaksha in hindi, yaksha questions yudhishthira, यक्ष के सवाल और धर्मराज युधिष्ठिर के जवाब, महाभारत, Mahabharat

other videos:

CamScanner

गर्भ गीता से भी महत्वपूर्ण महाभारत के 21 सवाल । हर गर्भवती जाने । यक्ष युधिष्ठिर संवाद

10K
Likes

6,56,064
Views

22 Apr
2023

#garbhguru #garbhsanskarmusic #garbhsanskarmusicforpreg

गर्भावस्था में हमे अपनी संतान को हमारे पुराणों से जुड़े ज्ञान अवश्य देना चाहिए आज पहली बार महाभारत के वन पर्व में आये ब्रह्म ज्ञान के 21 सवाल जो गर्भ गीता से अधिक सरल और महत्वपूर्ण है, वही आज संतान को सुनाने का मन है
सरल अर्थ में समझने के लिए इसे पूरा सुने और अपने शिशु को भी सुनाएं।

Topic : yaksh yudhisthir samvad
यक्ष युधिष्ठिर संवाद ब्रह्म ज्ञान के 21 सवाल
महाभारत पर्व यक्ष - युधिष्ठिर संवाद | क्या थे यक्ष के प्रश्न और युधिष्ठिर के जवाब? | Yaksha Yudhishthira Samvad
the divine tales, divine tales, hindu mythology, यक्ष - युधिष्ठिर संवाद, क्या थे यक्ष के प्रश्न और युधिष्ठिर के जवाब?, Yaksha Yudhishthira Samvad, yaksha yudhishthira questions and answers, yaksha in hindi, yaksha questions yudhishthira, यक्ष के सवाल और धर्मराज युधिष्ठिर के जवाब, महाभारत, Mahabharat

other videos:

CamScanner

Description

गर्भ गीता से भी महत्वपूर्ण महाभारत के 21 सवाल । हर गर्भवती जाने । यक्ष युधिष्ठिर संवाद

10K	6,56,064	22 Apr
Likes	Views	2023

#garbhguru #garbhsanskarmusic #garbhsanskarmusicforpreg

गर्भावस्था में हमे अपनी संतान को हमारे पुराणों से जुड़े ज्ञान अवश्य देना चाहिए आज पहली बार महाभारत के वन पर्व में आये ब्रह्म ज्ञान के 21 सवाल जो गर्भ गीता से अधिक सरल और महत्वपूर्ण है, वही आज संतान को सुनाने का मन है
सरल अर्थ में समझने के लिए इसे पूरा सुने और अपने शिशु को भी सुनाएं।

Topic : yaksh yudhisthir samvad
यक्ष युधिष्ठिर संवाद ब्रह्म ज्ञान के 21 सवाल
महाभारत पर्व यक्ष - युधिष्ठिर संवाद | क्या थे यक्ष के प्रश्न और युधिष्ठिर के जवाब? | Yaksha Yudhishthira Samvad
the divine tales, divine tales, hindu mythology, यक्ष - युधिष्ठिर संवाद, क्या थे यक्ष के प्रश्न और युधिष्ठिर के जवाब?, Yaksha Yudhishthira Samvad, yaksha yudhishthira questions and answers, yaksha in hindi, yaksha questions yudhishthira, यक्ष के सवाल और धर्मराज युधिष्ठिर के जवाब, महाभारत, Mahabharat

other videos:

CamScanner

5:13 pm 54%

Description

गर्भ गीता से भी महत्वपूर्ण महाभारत के 21 सवाल I हर गर्भवती जाने I यक्ष युधिष्ठिर संवाद

10K	6,56,064	22 Apr
Likes	Views	2023

#garbhguru #garbhsanskarmusic #garbhsanskarmusicforpreg

गर्भावस्था में हमे अपनी संतान को हमारे पुराणों से जुड़े ज्ञान अवश्य देना चाहिए आज पहली बार महाभारत के वन पर्व में आये ब्रह्म ज्ञान के 21 सवाल जो गर्भ गीता से अधिक सरल और महत्वपूर्ण है, वही आज संतान को सुनाने का मन है
सरल अर्थ में समझने के लिए इसे पूरा सुने और अपने शिशु को भी सुनाएं।

Topic : yaksh yudhisthir samvad
यक्ष युधिष्ठिर संवाद ब्रह्म ज्ञान के 21 सवाल
महाभारत पर्व यक्ष - युधिष्ठिर संवाद | क्या थे यक्ष के प्रश्न और युधिष्ठिर के जवाब? | Yaksha Yudhishthira Samvad
the divine tales, divine tales, hindu mythology, यक्ष - युधिष्ठिर संवाद, क्या थे यक्ष के प्रश्न और युधिष्ठिर के जवाब?, Yaksha Yudhishthira Samvad, yaksha yudhishthira questions and answers, yaksha in hindi, yaksha questions yudhishthira, यक्ष के सवाल और धर्मराज युधिष्ठिर के जवाब, महाभारत, Mahabharat

other videos:

CamScanner

गर्भ गीता से भी महत्वपूर्ण महाभारत के 21 सवाल I हर गर्भवती जाने I यक्ष युधिष्ठिर संवाद
6.5 lakh views 8 mo ago #garbhguru ...more
Bharat - Sanskaron ki Janani 2.5 lakh
Subscribe
10K
Share
Remix
Downloaded
Comments 231
K
भगवान मेरे बच्चे की रक्षा करना

CamScanner

गर्भ गीता से भी महत्वपूर्ण महाभारत के 21 सवाल I हर गर्भवती जाने I यक्ष युधिष्ठिर संवाद

6.5 lakh views 8 mo ago #garbhguru ...more

Bharat - Sanskaron ki Janani 2.5 lakh Subscribe

10K | Share | Remix | Downloaded

Comments 231

K भगवान मेरे बच्चे की रक्षा करना

CamScanner

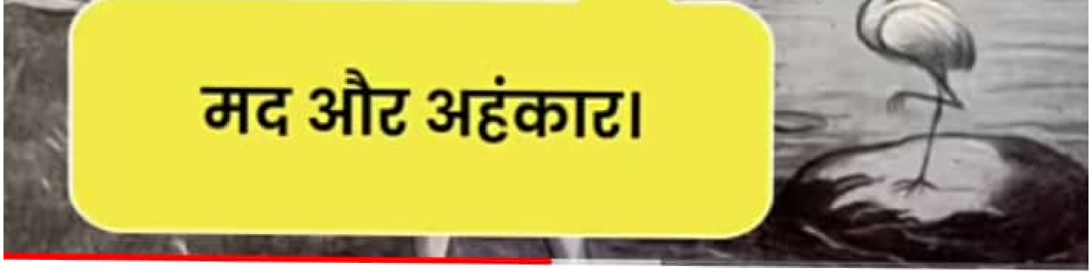

गर्भ गीता से भी महत्वपूर्ण महाभारत के 21 सवाल I हर गर्भवती जाने I यक्ष युधिष्ठिर संवाद

6.5 lakh views 8 mo ago #garbhguru ...more

Bharat - Sanskaron ki Janani 2.5 lakh Subscribe

10K Share Remix Downloaded

Comments 231

K भगवान मेरे बच्चे की रक्षा करना

CamScanner

गर्भ गीता से भी महत्वपूर्ण महाभारत के 21 सवाल। हर गर्भवती जाने। यक्ष युधिष्ठिर संवाद

6.5 lakh views 8 mo ago #garbhguru ...more

Bharat - Sanskaron ki Janani 2.5 lakh Subscribe

10K Share Remix Downloaded

Comments 231

K भगवान मेरे बच्चे की रक्षा करना

CamScanner

गर्भ गीता से भी महत्वपूर्ण महाभारत के 21 सवाल I हर गर्भवती जाने I यक्ष युधिष्ठिर संवाद

6.5 lakh views 8 mo ago #garbhguru ...more

Bharat - Sanskaron ki Janani 2.5 lakh Subscribe

10K Share Remix Downloaded

Comments 231

K भगवान मेरे बच्चे की रक्षा करना

CamScanner

गर्भ गीता से भी महत्वपूर्ण महाभारत के 21 सवाल l हर गर्भवती जाने l यक्ष युधिष्ठिर संवाद

6.5 lakh views 8 mo ago #garbhguru ...more

Bharat - Sanskaron ki Janani 2.5 lakh Subscribe

10K Share Remix Downloaded

Comments 231

K भगवान मेरे बच्चे की रक्षा करना

CamScanner

गर्भ गीता से भी महत्वपूर्ण महाभारत के 21 सवाल l हर गर्भवती जाने l यक्ष युधिष्ठिर संवाद

6.5 lakh views 8 mo ago #garbhguru ...more

Bharat - Sanskaron ki Janani 2.5 lakh Subscribe

10K Share Remix Downloaded

Comments 231

K भगवान मेरे बच्चे की रक्षा करना

CamScanner

गर्भ गीता से भी महत्वपूर्ण महाभारत के 21 सवाल I हर गर्भवती जाने I यक्ष युधिष्ठिर संवाद

6.5 lakh views 8 mo ago #garbhguru ...more

Bharat - Sanskaron ki Janani 2.5 lakh Subscribe

10K Share Remix Downloaded

Comments 231

K भगवान मेरे बच्चे की रक्षा करना

CamScanner

गर्भ गीता से भी महत्वपूर्ण महाभारत के 21 सवाल I हर गर्भवती जाने I यक्ष युधिष्ठिर संवाद

6.5 lakh views 8 mo ago #garbhguru ...more

Bharat - Sanskaron ki Janani 2.5 lakh

Subscribe

10K Share Remix Download

Comments 231

K भगवान मेरे बच्चे की रक्षा करना

CamScanner

Jamal Kudu

Song Title: Jamal Kudu (Abrar's Entry)
Movie: Animal
Sung By: Sounik & Harshita

Aaye Siyah Ey Zangi, Delamo Nakon Khun
Vaaye To Rafti Konja, Manam Chhu Majnoon

Jamal Jamale, Jamaloo, Jamal Kudu

Del Tumakhteki Sineh, Oye Aarum Nami Shineh
Hel Yosa Halel Yosa, Esraar Nami Khosa

Ey Mar Mar Seene, Belazoon Belazoon Bela
Ey Kertok Manaye, Bechatun Bechatun Becha

Jamal Jamale, Jamaloo, Jamal Kudu

CamScanner

Ahay Siyah Zangi, Delamo Nakon Khun (Oh, my cutie, don't play with my heart)

Voy To Rafti Koja, Manam Cho Majnun (You are leaving and embarking on a journey, and I'm getting crazy like Majnu)

Jamal Jamalek Jamaloo Jamal Kudu (Oh my love, my beloved, my sweet love!)

'Animal', a movie depicting the tumultuous relationship between a father and a son, has been getting mixed reviews. While some have appreciated the directorial work of Vanga, others have criticized the violence depicted in the Bollywood film. The movie stars Rashmika Mandanna, Tripti Dimri, Ranbir Kapoor, Anil Kapoor, and Bobby Deol, among others.

OPEN IN APP

READ ALSO:

CamScanner

The hook line ‘Jamal Jamalek Jamaloo Jamal Kudu’ means 'Oh my love, my beloved, my sweet love!’

READ ALSO:

NASA astronaut loses a tomato on the ISS; here's what happened next

Ahay Siyah Zangi, Delamo Nakon Khun (Oh, my cutie, don’t play with my heart)

Voy To Rafti Koja, Manam Cho Majnun (You are leaving and embarking on a journey, and I’m getting crazy like Majnu)

CamScanner

10:06 am 100%

झोपड़ी में, उसी हाल में पाया।
उसे राजा के दरबार में पेश किया गया। राजा ने उसकी अवस्था देखकर, बड़ी हैरानी से उससे पूछा- भले आदमी! तुझे सौ एकड़ का चंदन का बाग दिया गया था। चंदन की तो एक ही लकड़ी की भी बहुत कीमत होती है। तब भी तूं वैसे के वैसा ही रहा? आखिर तूने उस बाग का किया क्या?
लकड़हारा बोला- महाराज! मैंने उसकी लकड़ी का भी कोयला बना बनाकर बेच दिया।
राजा ने अपना सिर पीट लिया और कहा- मूर्ख! चंदन की लकड़ी का भी कोई कोयला बनाता है?
लोकेशानन्द कहता है कि हम भी उस लकड़हारे जैसे ही मूर्ख हैं। हम वैसा वैसा ही करते हैं, जैसी जैसा हम अभी तक करते आए हैं।
संत लाख कृपा करते हैं, कीमती से कीमती ज्ञान की बात बताते हैं, पर हम उन बातों की वास्तविक कीमत न जानने के कारण, उनका लाभ नहीं उठा पाते। हम भी उनका कोयला ही बनाते हैं।

82 39 comments • 16 shares

CamScanner

10:06 am 100%

एक राजा शिकार करने जंगल में गया था। शिकार के पीछे दौड़ते हुए, वह बहुत दूर निकल गया, सैनिक तो पीछे छूट ही गए, अंधेरा भी हो गया।
'अब इस जंगल में यह रात कैसे बीतेगी?' यह विचार उसे मारे दे रहा था। कि तभी उसे दूर एक रोशनी दिखाई दी। रोशनी है, तो जरूर कोई मनुष्य वहाँ होगा ही। तो वह रोशनी की ओर बढ़ चला।
वहाँ एक टूटी फूटी झोपड़ी में एक गरीब फटेहाल आदमी मिला। मजबूरी थी, दूसरा कोई चारा न था, राजा वहीं रुक गया।
बातचीत हुई, मालूम पड़ा कि वह एक लकड़हारा है, जंगल से लकड़ी काट कर, उसका कोयला बनाकर बेचता है।
भूख और थकान से बेहाल राजा, भूमि पर ही सो गया। सुबह सैनिक आए, और राजा को लिवा ले गए।
दरबार में पहुँचते ही राजा ने उस लकड़हारे को बुलवा कर, अपनी जान बचने की खुशी में, एक सौ एकड़ का चंदन का बाग उसे ईनाम में दे दिया।
इस घटना के कई वर्षों बाद, राजा को उस लकड़हारे की याद आई। मंत्रियों से कहा कि उसे ढूंढो, पता करो कि वो कहाँ है और क्या मौज ले रहा है?
मंत्रियों ने उसे बहुत जगह खोजा। और उनकी हैरानी की कोई सीमा न रही जब उन्होंने उस लकड़हारे को उसी जंगल की, उसी टूटी फूटी झोपड़ी में, उसी हाल में पाया।
उसे राजा के दरबार में पेश किया गया। राजा ने उसकी अवस्था देखकर, बड़ी हैरानी से उससे पूछा- भले आदमी! तुझे सौ एकड़ का चंदन का बाग दिया गया था। चंदन की तो एक ही लकड़ी की भी बहुत कीमत होती है। तब भी तूं वैसे के वैसा ही रहा? आखिर तूने उस बाग का किया क्या?
लकड़हारा बोला- महाराज! मैंने उसकी लकड़ी का भी कोयला बना बनाकर बेच दिया।
राजा ने अपना सिर पीट लिया और कहा- मूर्ख! चंदन की लकड़ी का भी कोई कोयला बनाता है?
लोकेशानन्द कहता है कि हम भी उस लकड़हारे जैसे ही मूर्ख हैं। हम वैसा वैसा ही करते हैं, जैसी जैसा हम अभी तक करते आए हैं।
संत लाख कृपा करते हैं, कीमती से कीमती ज्ञान की बात बताते हैं, पर

CamScanner

10:05 am VoLTE 4G 100%
6 9

हुआ हो, तुम्हारा नाम पता, ठिकाना मुझे मालूम नहीं है, तुम कौन हो, क्या नहीं हो, कुछ लेना देना भी नहीं, लेकिन एक बात पक्की है कि तुम कोई भी हो, राम तो हो ही, स्त्री हो कि पुरुष हो कि हिंदू हो कि मुसलमान हो कि काले हो कि गोरे हो की अच्छे हो कि बुरे हो, चोर हो, सज्जन हो, साधु हो, कौन हो, इससे कुछ मतलब नहीं, यह सब गोण बात है, यह सब तो नाटक के हिस्से है मगर एक बात पक्की है कि तुम राम हो, अभी चाहे तुम चोर बन गए हो और चाहे साधु बन गए हो और चाहे तुमने बड़ा दान किया हो और चाहे बड़े नुकसान किए हो लोगों के, अभी तुमने कोई भी पाठ अदा किया हो, हमें तुम्हारे पाठ से कुछ लेना देना नहीं, पर्दे के पीछे तुम राम हो, हम उसकी याद करते हैं. और तुम्हें भी उसकी याद दिलाते हैं और यह याद काफी है, स्वांता सुखा है.

#trending #osho #india #peace #meditation #mindfulness #healing #spirituality #wisdom #zen #awareness #consciousness #reiki #spiritualawakening #buddha #enlightenment #angel #humanity #mooji #sadhguru #rumi #sufi #naturalremedies #knowthyself #oshovaani #oshoessentials

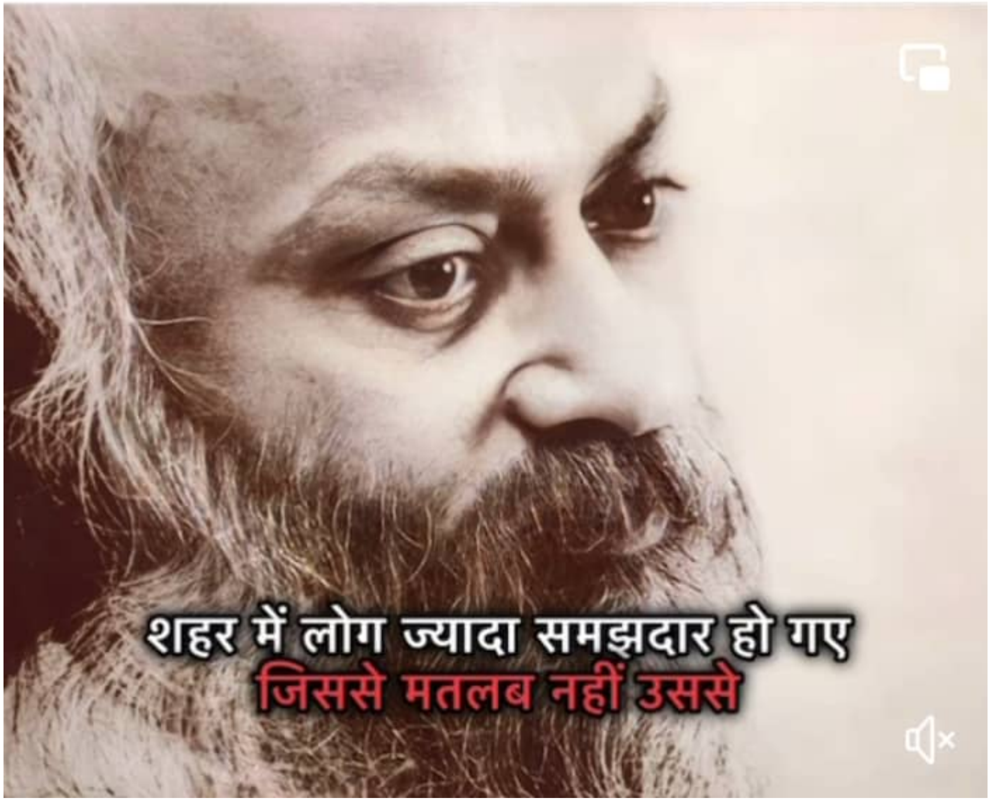

CS CamScanner

लोग जय राम जी क्यों करते है? जानिए ओशो का क्या कहना है।

तुमने देखा छोटे-मोटे गांव में अगर जाओ तो अभी भी देहात में लोग जय राम जी कर लेते हैं बिना कारण तुम्हें जानते भी नहीं तुमसे कोई पहचान भी नहीं तुमसे कुछ लेना देना भी नहीं एक अजनबी आदमी गांव से निकल रहा है और देखोगे कई लोग उससे जय राम जी कर लेते शहर में यह नहीं होता शहर में लोग ज्यादा समझदार हो गए जिससे मतलब नहीं उससे जयराम जी क्या करना अपना कुछ लेना देना नहीं है, यह आदमी अपनी रास्ता जा रहा है, हम अपनी रास्ता जा रहे हैं, जयराम जी क्यों करना? सिर भी क्यों हिलाना? हाथ भी क्यों उठाना? शहर में लोग ज्यादा समझदार हो गए है गांव में लोग अभी भी ना समझ है ना समझ यानी अभी भी भोले भाले है मगर गांव की बात में कुछ खूबी है, जब गांव में लोग बिना कारण जयराम जी कर लेते तो वो यह कह रहे हैं कि कम से कम जय राम जी तो बिना कारण करो. और सब कर लेना कारण से कि जिसकी जेब गर्म हो उसको नमस्कार करेंगे तो फिर तुमने जय राम जी नहीं की जय राम जी शब्द को सुनते हो दुनिया में बहुत तरह के नमस्कार के ढंग हैं लेकिन जैसा ढंग भारत के पास है वैसा किसी के पास नहीं कोई कहता है गुड मॉर्निंग सुबह अच्छी मगर ये भी कोई बहुत बड़ी बात नहीं हुई यह कोई बहुत बड़ी बात नहीं हुई लेकिन यह अनूठा है भारत का हिसाब राम की जय, यह राम को याद करने का एक उपाय हो गया, एक अजनबी आदमी गुजरता तुम उससे कहते हो जय राम जी, तुम उससे कहते हो भाई राम की जय, तुम्हारे कारण मुझे राम का याद आ गया, तुम्हारा भी धन्यवाद, तुम क्या निकल आए, राम की याद का एक मौका मिल गया, एक अकारण बात को राम की स्मृति का आधार बना लिया, जब तुम जयराम जी कहते हो किसी को... तुम ये कहते हो कि तुम्हारे भीतर बैठे राम को नमस्कार करता हूं, तुम अजनबी हो, लेकिन तुम्हारा राम थोड़ी अजनबी है, उससे तो मैं उतना ही जुड़ा हूं जितने तुम जुड़े हो, ये तुम्हारा चेहरा मोहरा ना पहचाना हुआ हो, तुम्हारा नाम पता, ठिकाना मुझे मालूम नहीं है, तुम कौन हो, क्या नहीं हो, कुछ लेना देना भी नहीं, लेकिन एक बात पक्की है कि तुम कोई भी हो, राम तो हो ही, स्त्री हो कि पुरुष हो कि हिंदू हो कि मुसलमान हो कि काले हो कि गोरे हो की अच्छे हो कि बुरे हो, चोर हो, सज्जन हो, साधु हो, कौन हो, इससे कुछ मतलब नहीं, यह सब गोण

CS CamScanner

CamScanner

10:01 am 100%

लेकिन बुद्ध के बारे में तो वे पूरी तरह झूठे होते हैं, क्योंकि वे अपना समूचा अतीत अलग फेंकते हुए अज्ञात में प्रवेश कर जाते हैं और तुम उनके भविष्य के बारे में कोई भी ठीक भविष्यवाणी नहीं कर सकते।

बुद्ध ने कहा 'तुम मेरे जैसे असुविधाजनक व्यक्ति के पास फिर नहीं आओगे। परेशान मत हो। ऐसा फिर से नहीं घटेगा। इसे अपवाद के रूप में लो। '

लेकिन ज्योतिषी ने कहा, 'बस थोड़े से प्रश्न और।
मैं यह जानना चाहता हूं कि आप कौन हैं?
क्या मैं वास्तव में एक स्वप्न देख रहा हूं?
एक चक्रवर्ती सम्राट भिखारी की तरह बैठा है।
आप हैं कौन? क्या एक सम्राट भेष बदल कर बैठा है? '

बुद्ध ने कहा, 'नहीं।'
तब ज्योतिषी ने कहा, 'लेकिन आपका चेहरा इतना सुंदर और शांत है, आंतरिक मौन से इतना समृद्ध है।
आप हैं कौन? क्या आप स्वर्ग के कोई देवदूत हैं?

बुद्ध ने कहा, 'नहीं ।'
ज्योतिषी ने कहा, 'बस एक प्रश्न और। यह पूछते हुए अशोभनीय तो लगता है लेकिन आपने मेरी कामना को उकसा दिया है। क्या आप एक मनुष्य हैं? यदि आप न चक्रवर्ती सम्राट हैं, न स्वर्ग के देवदूत तो क्या आप एक मनुष्य ही हैं? '

और बुद्ध ने कहा, 'नहीं। मैं कोई नहीं हूं।
मैं किसी नाम रूप से कोई संबंध नहीं रखता।'
ज्योतिषी ने कहा, 'आपने मुझे पहले से भी अधिक परेशान कर दिया।
आखिर आपके कहने का अर्थ क्या है? '

यही है बुद्ध का अर्थ : और सबसे महान व्यक्ति वही है, जो 'कोई नहीं है। तुम 'कुछ भी हो सकते हो, पर तुम सबसे अधिक महान नहीं हो सकते। विश्व में कहीं सदा ही कोई तुमसे भी अधिक महान होगा ही।

CamScanner

10:01 am 4G 100%

और यह चक्रवर्ती सम्राट यहां कर क्या रहा है? इसलिए वह पदचिन्हों का अनुसरण करता हुआ उस स्त्रोत की ओर बढ़ा, और उसने बुद्ध को वृक्ष तले बैठे हुए देखा। वह आंखें बंद किए हुए विश्राम कर रहे थे। और यह ज्योतिषी उन्हें देखकर तो और भी अधिक आश्चर्यचकित हुआ, क्योंकि उनका चेहरा भी एक चक्रवर्ती सम्राट का चेहरा था, लेकिन यह व्यक्ति तो एक भिखारी दिखाई दे रहा था। उनके बगल में भिक्षापात्र रखा था और कपड़े फटे हुए थे, लेकिन करे क्या करे?

उसने बुद्ध से कहा, 'मैं बहुत अधिक परेशान हूं, कृपया मुझे स्पष्ट करें। मेरे पास पूछने को एक ही प्रश्न है, मैंने आपके पदचिन्हों को देखकर उनका अध्ययन किया है और वे चक्रवर्ती सम्राट के होने चाहिए जो पूरे विश्व पर राज्य करता है। पूरी पृथ्वी उसका राज्य होनी चाहिए और आप एक भिखारी हैं, इसलिए मुझे क्या करना चाहिए? क्या मुझे अपने ज्योतिष के सभी ग्रंथों को फेंक देना चाहिए। काशी में मेरे बारह वर्ष अध्ययन करने का क्या मेरा पूरा प्रयास व्यर्थ हुआ? क्या वे सभी बेवकूफ हैं? क्या मैंने जीवन का सबसे महत्वपूर्ण भाग यूं ही व्यर्थ गंवा दिया?

कृपया मुझे बतायें, मुझे क्या करना चाहिए? कृपया मेरी मुश्किल आसान करें। 'बुद्ध ने कहा,' तुम्हें चिंतित होने की कोई जरूरत नहीं। यह फिर से नहीं होगा। तुम अपने ग्रंथ अपने साथ लेकर शहर जाओ और अपना व्यवसाय प्रारंभ करो और मेरे बारे में चिंतित मत हो। एक चक्रवर्ती बन कर ही मेरा जन्म हुआ। यह मेरे चरणचिन्ह मेरे अतीत लिए चल रहे हैं।'

सभी पदचिन्ह तुम्हारा अतीत साथ लिए आगे बढ़ रहे हैं।
तुम्हारे हाथों और हथेली की रेखाएं तुम्हारा अतीत लिए हुए हैं। यही कारण है कि ज्योतिषी और हस्तरेख विशेषज्ञ तुम्हारा भूतकाल तो हमेशा सच-सच बतला देते हैं लेकिन भविष्य के संबंध में अधिक प्रमाणिक नहीं होते।

लेकिन बुद्ध के बारे में तो वे पूरी तरह झूठे होते हैं, क्योंकि वे अपना समूचा अतीत अलग फेंकते हुए अज्ञात में प्रवेश कर जाते हैं और तुम उनके भविष्य के बारे में कोई भी ठीक भविष्यवाणी नहीं कर सकते।

CamScanner

10:00 am 4G 100%

ऐसा हुआ कि जब बुद्ध ने राज पाट का त्याग किया तो वह एक वन से दूसरे वन में गये, एक आश्रम से दूसरे आश्रम में गये। पैदल चलते हुए ही वह एक सद्गुरु से दूसरे के पास गये। इससे पहले वह बिना जूतों के एक कदम न चले थे, लेकिन अब वह ठीक एक भिखारी थे।

वह एक नदी के किनारे चले जा रहे थे, रेत पर टहलते हुए और उनके पदचिन्ह पीछे छूटते जा रहे थे। जब वह वृक्ष की छाया तले विश्राम कर रहे थे तो एक ज्योतिषी ने उन्हें देखा। वह ज्योतिषी काशी से लौट रहा था, जो ज्ञान की पीठ थी। वह ज्योतिष में दक्षता प्राप्त पूर्ण कुशल हो गया था। अब वह ज्योतिष शास्त्र का महान आचार्य बन गया था। वह अपने गृह जिले से लौट रहा था और उसका व्यवसाय जमाने का इरादा था। उसने रेत पर पड़े बुद्ध के पदचिन्हों को देखा और वह व्याकुल हो उठा। ये पदचिन्ह एक साधारण व्यक्ति के नहीं हो सकते, जो बिना जूते पहने रेत पर चलने से बने थे। वह भी गर्मियों की चिलचिलाती धूप में..। ये पदचिन्ह तो किसी चक्रवर्ती सम्राट के होने चाहिए। चक्रवर्ती सम्राट वह होता है जो पूरे विश्व पर शासन करता है। इसके सभी चिन्ह वहां थे जो दिखला रहे थे कि यह व्यक्ति चक्रवर्ती सम्राट है।

पूरे विश्व में छः महाद्वीपों का सम्राट..। पर एक चक्रवर्ती सम्राट को गर्मियों की इस जलती दोपहरी में रेत पर नंगे पैरों क्यों चलना चाहिए? यह असम्भव है। वह ज्योतिषी अपने साथ ज्योतिष के मूल्यवान ग्रंथ भी लिए हुए था।

उसने सोचा, यदि यह सम्भव है तो मुझे इन ग्रंथों को नदी में फेंक देना चाहिए और हमेशा के लिए ऐसे ज्योतिष को भूल जाना चाहिए, क्योंकि यह असंगत है। लेकिन ऐसे व्यक्ति को खोज पाना भी बहुत कठिन है, जिसके पदचिन्ह चक्रवर्ती सम्राट के हैं। कभी करोड़ वर्षों में कोई चक्रवर्ती सम्राट बनता है।

और यह चक्रवर्ती सम्राट यहां कर क्या रहा है? इसलिए वह पदचिन्हों का अनुसरण करता हुआ उस स्त्रोत की ओर बढ़ा, और उसने बुद्ध को वृक्ष तले बैठे हुए देखा। वह आंखें बंद किए हुए विश्राम कर रहे थे। और यह ज्योतिषी उन्हें देखकर तो और भी अधिक आश्चर्यचकित हुआ, क्योंकि उनका चेहरा भी एक चक्रवर्ती सम्राट का चेहरा था, लेकिन यह

CS CamScanner

9:55 am 100%

वह गुरु के पास गया तो गुरु से उसने यही कहा कि यह क्या मामला है? यह कहां जगह चुनी आपने? तो गुरु ने कहा : रुको, तीन सप्ताह बाद अगर तुम फिर यही प्रश्न पूछोगे तो उत्तर दूंगा। तीन सप्ताह रुक गया। पहले तो तीन दिन के लिए रुका, लेकिन तीन दिन में लगा कि बात में कुछ है। एक सप्ताह रुका। एक सप्ताह रुका तो पता चला कि धीरे-धीरे यह बात कुछ अर्थ नहीं रखती कि बाजार में शोरगुल हो रहा है, ट्रक जा रहे हैं, कारें दौड़ रहीं, कौए कांव-कांव कर रहे, कुत्ते भौंक रहे, मक्खियां भिनभिना रहीं, ये सब बातें कुछ अर्थ नहीं रखतीं। तुम कहीं दूर लोक में जाने लगे। तुम कहीं भीतर उतरने लगे, कोई चीज अटकांव नहीं बनती।

दूसरे सप्ताह होते-होते तो उसे याद ही नहीं रहा। तीसरे सप्ताह तो उसे ऐसे लगा कि अगर ये कौए यहां न होते, ये कुत्ते यहां न होते, यह बाजार न होता, तो शायद ध्यान हो ही नहीं सकता था। क्योंकि इसके कारण एक पृष्ठभूमि बन गयी। तब उसने गुरु को कहा कि मुझे क्षमा करें। मैंने जो शिकायत की थी वह ठीक न थी। वह मेरी जल्दबाजी थी।

गुरु ने कहा--बहुत सोच कर ही यह आश्रम यहां बनाया है। जान कर ही यहां बनाया है। क्योंकि विपस्सना का प्रयोग ही यही है कि जहां बाधा पड़ रही हो वहा बाधा के प्रति प्रतिक्रिया न करनी। प्रतिक्रिया--शून्य हो जाये चित्त, तो शांत हो जाता है।

ओशो, अष्टावक्र महागीता--भाग-4--(प्रवचन-12)

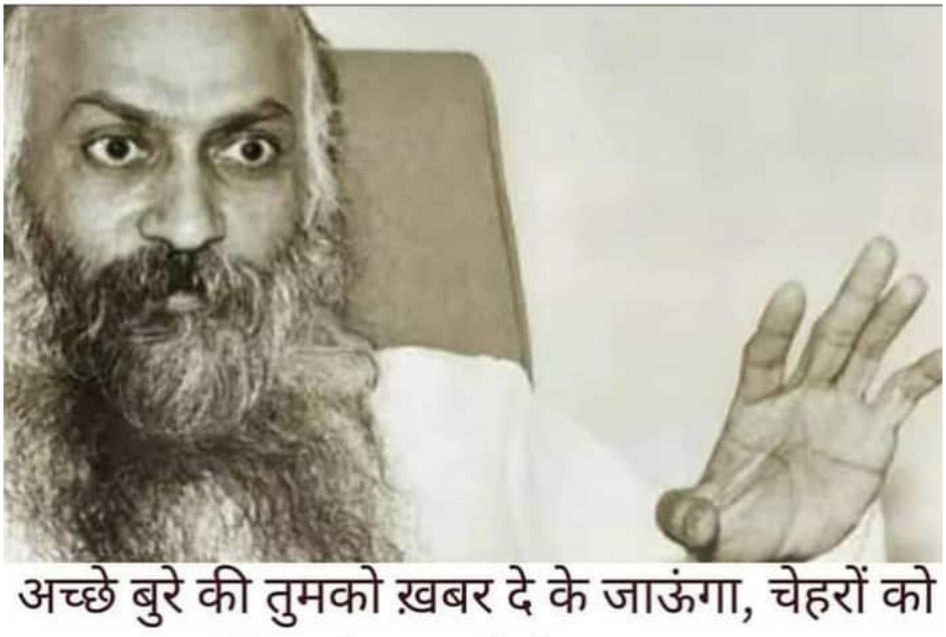

CamScanner

9:54 am 100%

मैं एक अमरीकी मनोवैज्ञानिक का जीवन पढ़ रहा था। वह पूरब आना चाहता था विपस्सना ध्यान सीखने। तो बर्मा में सबसे बड़ा विपस्सना का स्कूल है--बौद्धों के ध्यान का। तो उसने तीन सप्ताह की छुट्टी निकाली। बड़ी तैयारियां करके रंगून पहुंचा। बड़ी कल्पनाएं ले कर पहुंचा था कि किसी पहाड़ की तलहटी में, कि घने वृक्षों की छाया में, कि झरने बहते होंगे, कि पक्षी कलरव करते होंगे, कि फूल खिले होंगे--स्वात में तीन सप्ताह आनंद से गुजारूंगा। यह न्यूयार्क का पागलपन.,! तीन सप्ताह के लिए बड़ा प्रसन्न था।

लेकिन जब उसकी टैक्सी जा कर आश्रम के सामने रुकी तो उसने सिर पीट लिया। वह रंगून के बीच बाजार में था, मछली बाजार में। बास ही बास और उपद्रव ही उपद्रव, सब तरफ शोरगुल और मक्खियां भिनभिना रही हैं और कुत्ते भौंक रहे और आदमी सौदा कर रहे हैं और स्त्रियां भागी जा रही हैं, और बच्चे चीख रहे हैं। यह आश्रम की जगह है? उसके मन में तो हुआ कि इसी वक्त सीधा वापिस लौट जाऊं। लेकिन तीन दिन तक कोई लौटने के लिए हवाई जहांज भी न था। तो उसने सोचा अब आ ही गया हूं तो कम से कम इन सदगुरु के दर्शन तो कर ही लूं! यह किन सदगुरु ने यह आश्रम खोल रखा है यहां? यह कोई जगह है आश्रम खोलने की?

भीतर गया तो बड़ा हैरान हुआ। सांझ का वक्त था और कोई दो सौ कौए आश्रम पर लौट रहे, क्योंकि सांझ को बौद्ध भिक्षु भोजन करके उनको कुछ फेंक देते होंगे चावल इत्यादि। तो वे सब वहां...बड़ा शोरगुल। कौए, महाराजनीतिज्ञ, बड़े विवाद में लगे। शास्त्रार्थ चल रहा है। और कौए तो शिकायत ही करते रहते हैं। उनको कभी किसी चीज से शांति तो मिलती नहीं। भ्रष्ट योगी हैं। शिकायत उनका धंधा है। वे एक-दूसरे से शिकायत में लगे हुए, चीख-चीत्कार मच रहा है। उसने कहा...। और वहीं भिक्षु ध्यान करते हैं। कोई टहल रहा, जैसा बौद्ध टहल कर ध्यान करते हैं। कोई वृक्ष के नीचे शांत बैठा ध्यान कर रहा है। खड़ा हो कर एक क्षण देखता रहा, बात कुछ समझ में नहीं आयी, बड़ी विरोधाभासी लगी। लेकिन भिक्षुओं के चेहरों पर बड़ी शांति भी है। जैसे यह सब कुछ हो ही नहीं रहा है, या जैसे ये कहीं और हैं, किसी और लोक में हैं जहां ये सब खबरें नहीं पहुचतीं या पहुंचती हैं तो कोई विक्षेप नहीं है। इन भिक्षुओं के चेहरों को देख कर उसने सोचा तीन दिन तो रुक ही जाऊं।

CamScanner

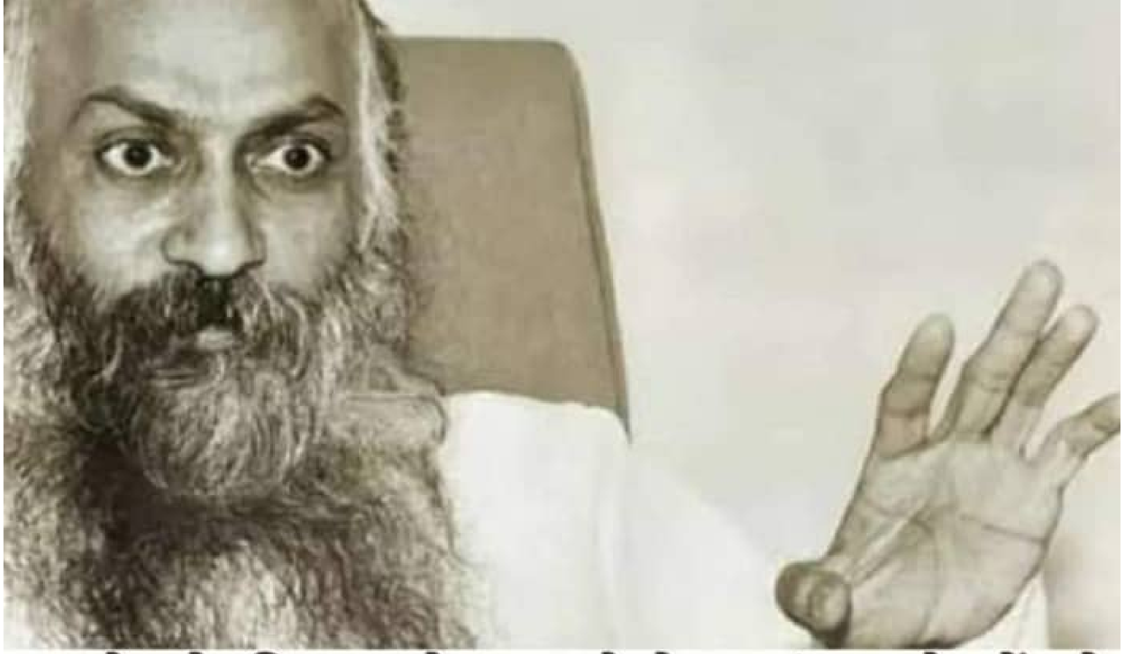

अच्छे बुरे की तुमको ख़बर दे के जाऊंगा, चेहरों को पढने वाली नज़र दे के जाऊंगा..!!

यारो मैं इस ज़माने का वो संगतराश हूँ, पत्थर को बोलने का हुनर दे के जाऊंगा..!!

ओशो

CamScanner

9:43 am 100%
hi.quora.com/बौद्धों-के-विश्व
Quora ऐप में खोलें

बौद्धों के विश्वास के अनुसार गौतम बुद्ध का अगला अवतार किसे माना जाता हैं?

जवाब फॉलो 3 अनुरोध करें ज़्यादा जानकारी और देखें
इससे जुड़ी सभी (35+) सुझाया गया

Shivkumar Singh · फॉलो करें
कृषक (1985–मौजूदा) · 4 नव॰

संबंधित **क्या गौतम बुद्ध विष्णु के अवतार है?**

जब वो खुद ईश्वर के अस्तित्व को नकारते थे तो उनको अवतार कैसे माना जाए जो दिव्य संत अभी चालीस वर्ष पूर्व धरती पर मौजूद थे और जिनकी आयु सैकड़ों वर्ष थी और वो भगवान श्री कृष्ण के भक्त थे उन श्री कृष्ण को बौद्ध लोग काल्पनिक मानते हैं उनके बारे में क्या कहा जाए श्री देवरहा बाबा की जय हो

अपवोट करें

Satyam Mishra · फॉलो करें
Itihas, Dr APJ Abdul Kalam Technical University, Lucknow में Ingirineerig (2020 में स्नातक) · 3वर्ष

बौद्ध धर्म के अनुसार महात्मा बुद्ध के अगले अवतार मैत्रेय है।इस दुनिया मे एक नही बल्कि 28 से ज्यादा बुद्ध पुरुष हो चुके है। महात्मा बुद्ध जो सबसे निकट समय के बुद्ध पुरुष है, उनका जन्म आज से लगभग 563 ईशा पूर्व हुआ था। महात्मा बुद्ध ने अपने महापरिनिर्वाण से पूर्व ही भविष्य मे आने वाले बोधिसत्व की घोषणा कर दी थी। गौतम बुद्ध ने भविष्य के बोधिसत्व के अवतरित होने की भविष्यवाणी करते हुए बताया था, कि उनका जन्म आज से लगभग 2500 वर्ष बाद होगा, उनके अनगिनत शिष्य होंगे। जब मानव जाति धर्म को छोड़ घृणा , ईर्ष्या, ... (डूबने) लगेंगी ऐसे मे वे इस धरती पर आकर लोगो को ... देंगे,

पढ़ना ज़ारी रखें
अपवोट करें · 2

CamScanner

गर्भ गीता से भी महत्वपूर्ण महाभारत के 21 सवाल I हर गर्भवती जाने I यक्ष युधिष्ठिर संवाद

6.5 lakh views 8 mo ago #garbhguru ...more

Bharat - Sanskaron ki Janani 2.5 lakh

Subscribe

10K | Share | Remix | Downloaded

Comments 231

K भगवान मेरे बच्चे की रक्षा करना

गर्भ गीता Garbh Geeta with Lyrics | Garbh Sanskar | कृष्णा अर्जुन संवाद | Garbh Geeta In Pre...

Nova Spiritual India · 17 lakh views · 5 months ago

CamScanner

6:56 pm 47%
Ad

Collectible India Metal Gold...
INR 429.00
Shop now

इसी कारण इस पाठ का नाम गर्भ गीता ज्ञान (Garbh Gita) है। श्री कृष्ण भगवान् जी के मुख से अर्जुन ने श्रवण किया है। गुरु दीक्षा लेना उत्तम कर्म है। उसका फल यह है कि नरक की चौरासी योनियों से जीव बचा रहता है, भगवान् बहुत प्रसन्न होते हैं।

यह भी पढ़ें – संतान गोपाल स्तोत्र

← बगलामुखी कवच – Baglamukhi Kavach

जितना पाया, उससे ज्यादा स्वदेश को लौटाया जाए : पूनम गुप्ता →

hindipath.com

Ad

हो और उस गुरु की पूजा सब तरह से करे। हे अर्जुन! जो गुरु का भक्त होता है और जो प्राणी गुरु के सम्मुख होकर भजन करते हैं, उनका भजन करना सफल है। जो गुरु से विमुख हैं उनको सप्त ग्रास मारे का पाप है। गुरु से विमुख प्राणी दर्शन करने योग्य नहीं होते। जो गृहस्थी संसार में गुरु के बिना है वो चांडाल के समान है, जिस तरह मदिरा के भंडार में जो गंगाजल है वह अपवित्र है। इसी तरह गुरु से विमुख व्यक्ति का भजन सदा अपवित्र होता है। उसके हाथ का भोजन देवता भी नहीं लेते। उसके सब कर्म निष्फल हैं। कूकर, सूकर, गदर्भ, काक ये सबकी सब योनियाँ बड़ी खोटी योनियाँ हैं। इन सबसे वह मनुष्य खोटा है, जो गुरु नहीं करता।गुरु बिना गति नहीं होती। वह अवश्य नरक को जायेगा। गुरु दीक्षा बिना प्राणी के सब कर्म निष्फल होते हैं। हे अर्जुन! जैसे चारों वर्णों को मेरी भक्ति करना योग्य है, वैसे गुरु धार के गुरु की भक्ति करना योग्य है। जैसे गंगा नदियों में उत्तम है, सब व्रतों में एकादशी का व्रत श्रेष्ठ है। वैसे ही हे अर्जुन! शुभ कर्मों में गुरु सेवा उत्तम है, गुरु दीक्षा बिना प्राणी पशु योनि पाता है। जो धर्म भी करता है सो पशु योनि में फल भोगता है। वह चौरासी योनियों में भ्रमण करता रहता है।

अर्जुनोवाच – हे श्री कृष्ण जी भगवान्! गुरु दीक्षा क्या होती है?

श्रीभगवानोवाच – हे अर्जुन! धन्य जन्म है उसका जिसने यह प्रश्न किया है। तू धन्य है। गुरु दीक्षा के दो अक्षर हैं! हरि ॐ। इन अक्षरों को गुरु कहता है। यह चारों वर्णों को अपनाना श्रेष्ठ है। हे अर्जुन! जो गुरु की सेवा करता है, उस पर मेरी प्रसन्नता है। वह चौरासी योनियों से छूट जायेगा। जन्म मरण से रहित हो नरक नहीं भोगता। जो प्राणी गुरु की सेवा नहीं करता वह साढ़े तीन करोड़ वर्ष तक नरक भोगता है। जो गुरु की सेवा करता है, उसको कई अश्वमेघ यज्ञ के पुण्य का फल मिलता है। गुरु की सेवा मेरी सेवा है। हे अर्जुन! हमारे तुम्हारे संवाद को जो प्राणी पढ़ेंगे और सुनेंगे वो गर्भ के दुःख से बचेंगे उनकी चौरासी योनियाँ कट जायेगी।

CamScanner

6:56 pm 47%

Ad

श्रीभगवानोवाच – हेअर्जुन! जो सदाक्रोधवान रहते हैं, उन्हें रक्त विकार होता है।जोमलीन रहते हैं, वे सदा दरिद्री होते हैं।जो कुकर्मी ब्राह्मण को दान देते हैं, उनको खण्ड वायु होती है। जो पराई स्त्री को नंगी देखते हैं, गुरु की पत्नी को कुदृष्टि से देखते हैं, सो अन्धे होते हैं। जिसने गुरु और ब्राह्मण को लात मारी है, वो लंगड़ा व पंगु होता है। जो औरत अपने पति को छोड़कर पराये पुरुषों से संग करती है, सो वह बाल विधवा होती है।

अर्जुनोवाच – हे भगवन्! तुम पर ब्रह्म हो, तुमको नमस्कार है। पहले मैं आपको सम्बन्धी जानता था परन्तु अब मैं ईश्वर रूप जानता हूँ।हे परब्रह्म! गुरु दीक्षा कैसी होती है, सो कृपा कर मुझको कहो।

श्री भगवानोवाच – हे अर्जुन! तुम धन्य हो, तुम्हारे माता-पिता भी धन्य हैं। जिनके तुम जैसा पुत्र है। हे अर्जुन! सारे संसार के गुरु जगन्नाथ है। विद्या का गुरु काशी, चारों वर्गों का गुरु संन्यासी है। संन्यासी उसको कहते हैं, जिसने सबका त्याग करके मेरे विषय में मन लगाया है सो ब्राह्मण जगत् गुरु है। हे अर्जुन! यह बात ध्यान देकर सुनने की है। गुरु कैसा करें, जिसने सब इंद्रियाँ जीती हों, जिसको सब संसार ईश्वर मय नजर आता हो और सब जगत से उदास हो। ऐसा गुरु करे जो परमेश्वर को जानने वाला हो और उस गुरु की पूजा सब तरह से करे। हे अर्जुन! जो गुरु का भक्त होता है और जो प्राणी गुरु के सम्मुख होकर भजन करते हैं, उनका भजन करना सफल है। जो गुरु से विमुख हैं उनको सप्त ग्रास मारे का पाप है। गुरु से विमुख प्राणी दर्शन करने योग्य नहीं होते। जो गृहस्थी संसार में गुरु के बिना है वो चांडाल के समान है, जिस तरह मदिरा के भंडार में जो गंगाजल है वह अपवित्र है। इसी तरह गुरु से विमुख व्यक्ति का भजन सदा अपवित्र होता है। उसके हाथ का भोजन देवता भी नहीं लेते। उसके सब कर्म निष्फल हैं। कूकर, सूकर, गदर्भ, काक ये सबकी सब योनियाँ बड़ी खोटी योनियाँ हैं। इन सबसे वह मनुष्य खोटा है, जो गुरु नहीं करता।गुरु बिना गति नहीं होती। वह अवश्य नरक को जायेगा। गुरु दीक्षा बिना प्राणी के सब कर्म निष्फल होते हैं। हे अर्जुन! जैसे चारों वर्णों को मेरी भक्ति

CamScanner

अर्जुनोवाच – हे भगवान्! यह राजपाट किस धर्म के करने से मिलता है? विद्या कौन सा धर्म करने से मिलती है?

श्री भगवानोवाच – हे अर्जुन! जो प्राणी काशी में निष्काम भक्ति से तप करते हुए देह त्यागते हैं, वे राजा होते हैं और जो गुरु की सेवा करते हैं, वे विद्यावान होते हैं।

अर्जुनोवाच – हे भगवान किसी को धन अचानक बिना किसी परिश्रम से मिलता है सो उन्होंने कौन-सा पुण्य कार्य किया है?

श्री भगवानोवाच – हे अर्जुन! जिन्होंने गुप्तदान किया है, उनको धन अचानक मिलता है। जिसने परमेश्वर का कार्य और पराया कार्य संवारा है वे मनुष्य रोग से रहित होते हैं।

अर्जुनोवाच – हे भगवान्! कौन पाप से अमली होते हैं और कौन पाप से गूंगे होते हैं और कौन पाप से कुष्ठी होते हैं?

श्रीभगवानोवाच – हे अर्जन! जो आदमी नीच कुल की स्त्री से गमन करते हैं वो अमली होते हैं। जो गुरु से विद्या पढ़कर मुकर जाते हैं सो गूंगे होते हैं। जिन्होंने गौ घात किया है वे कुष्ठी होते हैं।

अर्जुनोवाच – हे भगवान्! जिस किसी पुरुष की देह में रक्त का विकार होता है वह किस पाप से होता है और दरिद्र होते हैं। किसी को खण्ड वायु होती है। और कोई अन्धे होते हैं तो कोई पंगु होते हैं, सो कौन से पाप से रहित होते हैं और कई स्त्रियाँ बाल विधवा होती हैं तो यह किसी पाप से होती हैं।

श्रीभगवानोवाच – हेअर्जुन! जो सदाक्रोधवान रहते हैं, उन्हें रक्त विकार होता है।जोमलीन रहते हैं, वे सदा दरिद्री होते हैं।जो कुकर्मी ब्राह्मण को दान देते हैं, उनको खण्ड वायु होती है। जो पराई स्त्री को नंगी देखते हैं

6:56 pm 47%

Ad

श्रीभगवानोवाच – हे अर्जुन! जो भी मनुष्य कन्यादान करते हैं, और इस दान में मूल्य लेते हैं, वे दोषी हैं, वे मनुष्य सदा रोगी रहते हैं। जो विषय विकार के वास्ते मदिरा पान करते हैं वे टट्टू का जन्म पाते हैं। | और जो झूठी गवाही भरते हैं वे औरत का जन्म पाते हैं। जो औरतें रसोई बना के पहले आप भोजन कर लेती हैं और पीछे परमेश्वर को अर्घ्यदान करती हैं तो वे बिल्ली का जन्म पाती हैं और जो मनुष्य अपनी झूठी वस्तु दान करते हैं वे औरत का जन्म पाते हैं। वह गुलाम औरतें होती हैं।

अर्जुनोवाच – हे भगवान! कई मनुष्यों को आपने सुवर्ण दिया है सो उन्होंने कौन-सा पुण्य किया है और कई मनुष्यों को आपने हाथी, घोड़ा, रथ दिये हैं, उन्होंने कौन-सा पुण्य किया है?

श्रीभगवानोवाच – हे अर्जुन! जिन्होंने स्वर्ण दान किया है उनको घोड़े वाहन मिलते हैं। जो परमेश्वर के निमित्त कन्यादान करते हैं सो पुरुष का जन्म पाते हैं।

अर्जुनोवाच – हे भगवान्! जिन पुरुषों के अन्दर विचित्र देह है उन्होंने कौन-सा पुण्य कार्य किया है? किसी-किसी के घर सम्पत्ति है, कोई विद्यावान है, उन्होंने कौन-सा पुण्य कार्य किया है?

श्रीभगवानोवाच – हे अर्जुन! जिन्होंने अन्नदान किया है उनका सुन्दर स्वरूप है। जिन्होंने विद्या दान किया है वे विद्यावान होते हैं। जिन्होंने सन्तों की सेवा की है वे पुत्रवान होते हैं।

अर्जुनोवाच – हे भगवान् ! किसी को धन से प्रीति है, कोई स्त्रियों से प्रीति करते हैं, इसका क्या कारण है समझाकर कहिये।

श्री भगवानोवाच – हे अर्जुन! धन और स्त्री सब नाश रूप हैं। मेरी भक्ति का नाश नहीं है।

CamScanner

6:55 pm 47%

Ad

श्रीभगवानोवाच – हे अर्जुन! यह मन निश्चय ही हाथी की भाँति है। तृष्णा इसकी शक्ति है। मन पाँच इन्द्रियों के वश में है।अहंकार इनमें श्रेष्ठ है।हे अर्जुन! जैसे हाथी अंकुश (कुण्डा) के वश में होता है। वैसे ही मनरूपी हाथी को वश में करने के लिए ज्ञानरूपी अंकुश है। अहंकार करने से यह जीव नरक में पड़ता है।

अर्जुनोवाच – हे भगवान्! जो एक तुम्हारे नाम के लिये वन खंडों में फिरते हैं। एक वैरागी हुए हैं। एक धर्म
करते हैं। इनको कैसे जानें! जो वैष्णव हैं, वे कौन हैं?

श्रीभगवानोवाच – हे अर्जुन! एक वे हैं जो मेरे ही नाम के लिए वनों में फिरते हैं। वे संन्यासी कहलाते हैं। एक वे हैं जो सिर पर जटा बाँधते हैं और अंग पर भस्म लगाते हैं। उनमें मैं नहीं हूँ क्योंकि इनमें अहंकार है इनको मेरा दर्शन दुर्लभ है।

अर्जुनोवाच – हे भगवान्! वह कौन-सा पाप है जिससे स्त्री की मृत्यु हो जाती है? वह कौन सा-पाप है कि जिससे पुत्र मर जाता है? और नपुंसक कौन पाप से होता है?

श्रीभगवानोवाच – हे अर्जुन! जो किसी से कर्ज लेता है और देता नहीं, इस पाप से उसकी औरत मरती है और जो किसी की अमानत रखी हुई वस्तु पचा लेता है उसके पुत्र मर जाते हैं। जो किसी का कार्य किसी के गोचर आये पड़े और वह जबानी कहे कि मैं तेरा कार्य सबसे पहले कर दूंगा.पर समय आने पर उसका कार्य न करे। इस पाप से नपुंसक होता है। ये बड़े पाप हैं।

अर्जुनोवाच – हे भगवान्! कौन पाप से मनुष्य सदैव रोगी रहता है? किस पाप से गधे का जन्म पाता है? स्त्री का जन्म तथा टट्टू का जन्म क्यों कर पाता है और बिल्ली का जन्म किस पाप से होता है?

CamScanner

गर्भ गीता बहुत ही अनोखा ग्रंथ है। इसमें संपूर्ण ज्ञान समाहित है। श्री कृष्ण भगवान जी का वचन है कि जो प्राणी इस गर्भ गीता (Garbh Geeta) का सद्भावना से विचार मनन करता है, वह फिर गर्भवास में नहीं आता है। उसे जीवन-मरण के चक्र से छुटकारा मिल जाता है।

सभी को गर्भ गीता का अनुशीलन अवश्य करना चाहिए। साथ ही यह मान्यता भी है कि जो गर्भवती महिला गर्भ गीता का श्रवण करती है, उसका गर्भस्थ शिशु अच्छे संस्कार ग्रहण करता है। जन्म लेने के बाद वह आदर्श जीवन व्यतीत करता है। हिंदी में गर्भ गीता (Garbh Gita in Hindi) का पाठ करें–

अर्जुनोवाच – हे कृष्ण भगवान्! यह प्राणी जो गर्भ-वास में आता है। वह किस दोष के कारण आता है? हे प्रभु जी! जब यह जन्मता है, तब इसको जरा आदि रोग लगते हैं। फिर मृत्य होती है। हे स्वामी! वह कौन-सा कर्म है जिसके करने से प्राणी जन्म मरण से रहित हो जाता है?

श्रीभगवानोवाच – हे अर्जुन! यह मनुष्य जो है सो अन्धा व मूर्ख है जो संसार के साथ प्रीति करता है। यह पदार्थ मैंने पाया है और वह मैं पाऊँगा, ऐसी चिन्ता इस प्राणी के मन से उतरती नहीं। आठ पहर माया को ही मांगता है। इन बातों को करके बार-बार जन्मता और मरता है। वह गर्भ विषे दु:ख पाता रहता है।

अर्जुनोवाच – हे श्री कृष्ण भगवान्! यह मन मद मस्त हाथी की भाँति है, तृष्णा इसकी शक्ति है। यह मन तो पाँच इन्द्रियों के वश में है। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार इन पाँचों में अहंकार बहुत बली है। सो कौन यत्न है जिससे मन वश में हो जाए?

श्रीभगवानोवाच – हे अर्जुन! यह मन निश्चय ही हाथी की भाँति है। तृष्णा

6:54 pm 47%
onlybookpdf.com/2023/

कौरव पाण्डव का युद्ध रचायो कौरव मार हटायो। दुर्योधन का मान घटायो मोहि भरोसा आयो ॥ नाथ" सब सखियाँ मिल बन्धन बाँधियो रेशम गाँठ बन्धायो। छूटे नाहिं राजा जी का कंगन कैसे गोवर्धन उठायो ॥ नाथ योगी जाको ध्यान धरत है ध्यान धरत नहिं आयो। सूरश्याम प्रभु तुम्हारे मिलन को यशुदा की धेनु चरायो।

जय गीता माता श्री जय गीता माता। सुख करनी दुःख हरनी तुमको जग गाता। टेक - जय गीता माता, मैया जय गीता माता। सुख करनी दुःख हरनी तुमको जग गाता ॥ अज्ञान मोह ममता को छिन में नाश करे, सत्य ज्ञान का मन में तू प्रकाश करे। शरण मेरी जो आवे तेरी मति ग्रहण करे, पाप ताप मिट जावें निर्भय भव सिंधु तरे। रणक्षेत्र में अर्जुन जब शोकाधीर हुआ, कर्तव्य कर्म तज बैठा बहुत मलीन हुआ। तब कृष्णचन्द्र के मुख से तुमने अवतार लिया, तत्त्व बात समझाकर उसका उद्धार किया। शरीर जन्मते मरते आत्मा अविनाशी, शरीर को दुःख व्यापे आत्मा सुख राशी।

CamScanner

गर्भ गीता पुस्तक | Garbh Geeta Hindi Book PDF Download

नाथ कैसे गज को फन्द छुड़ायो यह अचरज मोहि आयो। टेक गज और ग्राह लड़त जल भीतर लड़त लड़त गज हारयो। जौं भर सूंड रही जल ऊपर तब हरि पुकारयो ॥ नाथ" शबरी के बेर, सुदामा के तन्दुल रुचि-रुचि भोग लगायो। दुर्योधन की मेवा त्यागी साग विदुर घर खायो। नाथ" पैठ पाताल काली नाग नाथ्यो फण पर नृत्य करायो। गिरि गोवर्धन कर पर धारयो नन्द का लाल कहायो। नाथ असुर बकासुर मारयो दावानल पान करायो।

खम्ब फाड़ हरिणाकुश मारयो नरसिंह नाम धरायो ॥ नाथ अजामिल गज गणिका तारी द्रोपदी को चीर बढ़ायो। स्तन पान करत पूतना मारी कुब्जा का रूप बनायो ॥ नाथ कौरव पाण्डव का युद्ध रचायो कौरव मार हटायो। दुर्योधन का मान घटायो मोहि भरोसा आयो ॥ नाथ" सब सखियाँ मिल बन्धन बाँधियो रेशम गाँठ बन्धायो। छूटे नाहिं राजा जी का कंगन कैसे गोवर्धन उठायो ॥ नाथ योगी जाको ध्यान धरत है

CamScanner

उदय प्रताप स्वायत्तशासी महाविद्यालय, वाराणसी
शिक्षा संकाय

सेवा में,

प्रो0 / डॉ0 / श्री राजेश कुमार राय
एन० एस० एस० प्रभारी

महोदय,

शिक्षा संकाय के छात्राध्यापकों के स्काउट / गाइड प्रशिक्षण शिविर का कैम्प फायर दिनांक 21.12.2023 को दोपहर एक बजे से खेल के मैदान पर आयोजित किया जाएगा।

अतः आपसे निवेदन है कि कैम्प फायर के अवसर पर पधार कर स्काउट / गाइड द्वारा बनाये गये भोज्य पदार्थों का रसास्वादन करके प्रशिक्षणार्थियों का उत्साहवर्धन करने की कृपा करें।

अध्यक्ष | संयोजक | दलनायक

CamScanner

CamScanner

Bui M Singh Sbi Police Sikand...

Today, 1:11 pm

Reply

CamScanner

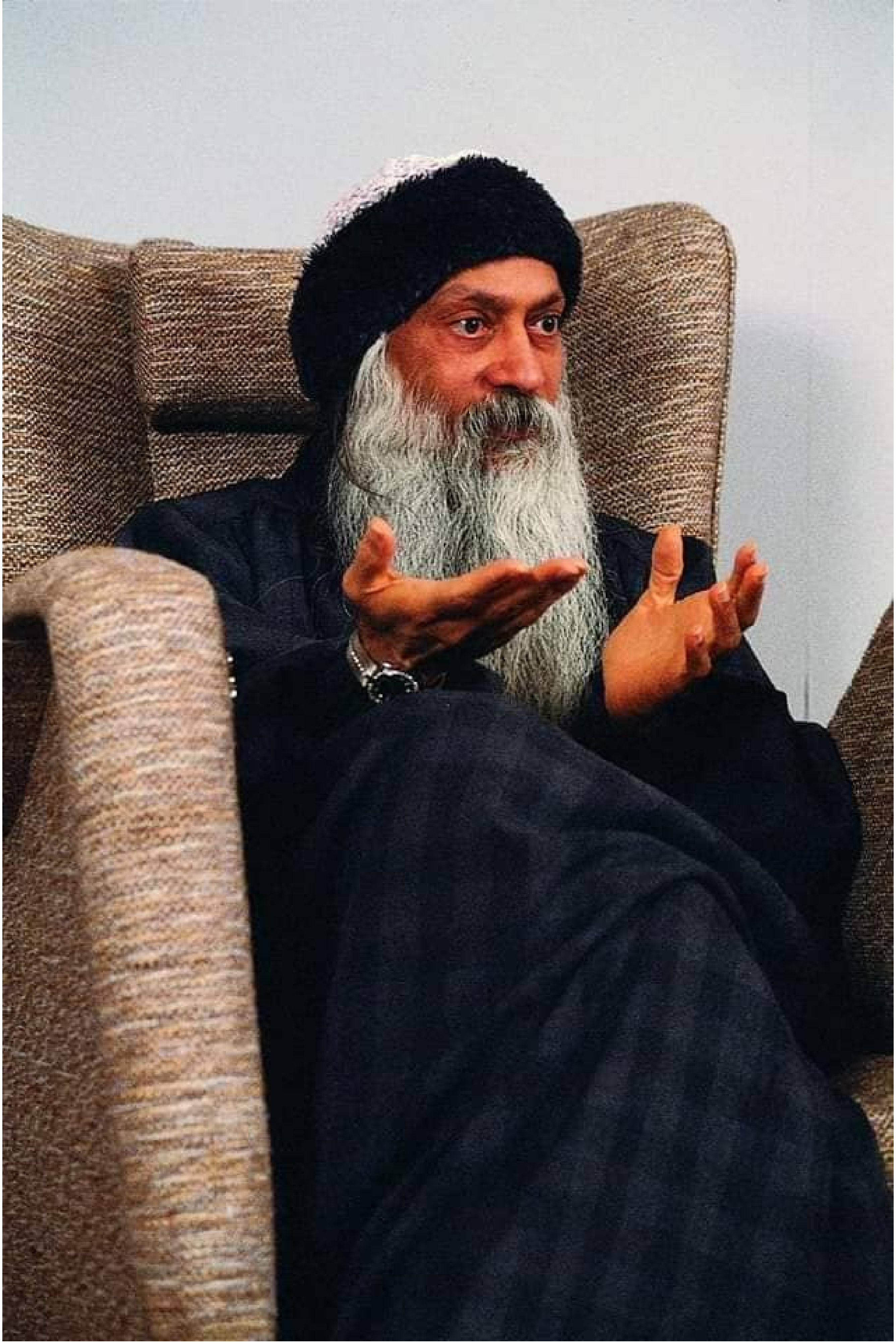

CamScanner

9:37 pm 31%
33 1 share • 98 views
Like Comment Share

ओशो का हिन्दी साहित्य

Rahul Kumar Ojha · 13h ·

जिस दिन मैंने विश्विद्यालय की नौकरी छोड़ी उस दिन मैंने सबसे पहला काम काम यह किया कि सहेज कर और संजो कर रखे गये अपने सारे सर्टिफिकेटों और डिप्लोमाओं को आग लगा दी | उनको जलता देख कर मैं इतना खुश हो रहा था कि मेरा सारा परिवार वहां इक्ट्ठा हो गया, उन्होंने सोचा कि अब मैं पूरा पागल हो गया हूं | वे हमेशा ही सोचते थे कि मैं थोड़ा पागल हूं|उनके चेहरे देख कर मैं और अधिक जोर से हंसने लगा |उन्होंने कहा ; ' आखिर हो ही गया |' मैंने कहा : ' हां , आखिर हो ही गया |' उन्होंने पूछा ; हो ही गया से तुम्हारा क्या मतलब है ?
मैंने कहा : ' जिंदगी भर से मैं इन सर्टिफिकेटों को जलाना चाहता था लेकिन जला नहीं सका, क्योंकि हमेशा उनकी जरूरत पड़ती थी |लेकिन अब इनकी कोई जरूरत नहीं है | अब मैं फिर से उतना ही अशिक्षित हो सकता हूं जितना कि मैं जन्म के समय था |`
उन्होंने कहा , तुम बिल्कुल बुद्धू हो ! बिल्कुल पागल हो | तुमने इतने मूल्यवान सर्टिफिकेटों को जला दिया ! तुमने सोने के मेडल को भी कुएं में फेंक दिया |अब विश्वविद्यालय में प्रथम आने के प्रमाणपत्र को भी तुमने जला दिया ! ' मैंने कहा : अब कोई भी उस सारी बकवास के बारे में मुझसे बात नहीं कर सकता |` आज भी मुझमें कोई विशेष गुण या योग्यता नहीं है |मैं हरिप्रसाद जैसा संगीततज्ञ नहीं हूं, न मैं नोबल पुरस्कार विजेताओं जैसा हूं | मैं तो बस कुछ भी नहीं हूं |फिर भी हजारों लोग बिना किसी अपेक्षा के मुझसे प्रेम करते हैं |
🙏🙏🌹🌹🔥🔥
ओशो✍️
स्वर्णिम बचपन
सत्र 32

CamScanner

9:28 pm 33%
Favorite Share Flag

SHIVA GITA PDF (Hindi Text)

by Rajanikant Chandwadkar (rasucha@gmail.com)

Publication date 2013-12-06
Usage CC0 1.0 Universal
Topics Shiva Gita text, Shiva Gita ebook, Shiva Geeta, Siva Gita, Siva Geeta, Siva Githa, Siva Geetha, Siva Geetha,
Collection opensource
Language English

Android phone users can now listen to this audiobook on the go without having to download audio files. An app has been developed and is available on Google Play Store for free. Just search for 'Shiva Gita audiobook'. DOWNLOAD TODAY!!
Get it on Google Play

-

Listen or Download Shiva Gita audiobook here - Shiva Gita Audiobook

The Śhiva-Gītā is a text of Vedantic Śaivism that comes to us from the latter portion (uttara kānda) of the Padma Purāna. In the Śiva-Gītā, the teacher is Lord Śiva and the disciple is Śrī Rāma, and the narrator is Suta Rishi. Lord Shiva tell Shri Rama the secrets of Bhakti and Jnana Yoga.
The Śiva-Gītā begins with episode from the Rāmāyana epic, where Rāma is despondent over the loss of Sītā. At this time, Rāma is visited by Sage Agastya, and the sage prescribes to Rāma that he should observe a special vow called the Pāśupata vrata. By observing this vow

CamScanner

9:28 pm 33%

Community Texts

Community Collections

Uploaded by
Rajanikant Chandwadkar
on December 6, 2013

SIMILAR ITEMS (based on metadata)

Shri Shiva Gita Audio Book (Hindi)
by rajanikant chandwadkar (rasucha@gmail.com)
78,534 17 0

Ashtavakra Gita Hindi Audio Book
by rajanikant chandwadkar (rasucha@gmail.com)
67,988 46 2

CamScanner

9:28 pm 4G 33%

27. Shri Bhagavan Nama Kaumudi PDF (Sanskrit)

28. Tripura Rahasya PDF (English)

29. Tripura Rahasya PDF (Marathi)

30. Upadesh Sahastri By Adi Shankaracharya PDF (Marathi)

31. Vedant Vichar PDF (Marathi)

32. Vedant Shastrachi Mulatatve PDF (Marathi)

33. Vichar Sagar Of Sadhu Nischaldas PDF (Hindi)

34. Yoga Vasishtha PDF Part 01 (Marathi)

35. Yoga Vasishtha PDF Part 02 (Marathi)

36. Yoga Vasishtha PDF Part 01 (Hindi)

37. Yoga Vasishtha PDF Part 02 (Hindi)

38. Yoga Vasishtha PDF Part 03 (Hindi)

39. Yoga Vasishtha PDF Part 04 (Hindi)

VIDEOS -

(To download a video, scroll down its page and find 'MPEG4' under the section 'Individual Files', right click on it and select 'Save link as', select folder and hit 'Save')

Rare Footage of Shrimat Paramahansa Parivrajakacharya Bhagwan Shri Shridhar Swami Maharaj

Rare Footage of Shrimat Paramahansa Parivrajakacharya Shri Udiya Baba Ji Maharaj

CamScanner

07. Brahma Sutra PDF (Hindi)

08. Brahmacharya Hi Jeevan Hain PDF (Hindi)

09. Brahmacharya Ki Mahima PDF (Hindi)

10. Brahmacharya Ki Shakti By Swami Rama Tirtha PDF (Hindi)

11. Dattatreya The Way And The Goal PDF (English)

12. Geetai by Acharya Vinoba Bhave PDF (Marathi)

13. Gita Tatva Alok by Shri Udiya Baba Ji (Hindi)

14. Jivanmukti Vivekasar PDF (Marathi)

15. Life And Teachings Of Udiya Baba PDF (English)

16. Namamruta Rasayanam PDF (Sanskrit)

17. Raidasji Ki Bani PDF (Hindi)

18. Sant Ravidas PDF (Hindi)

19. Shri Narayan Guru Jeevan Charitra PDF (Hindi)

20. Shri Shiva Lilambrut Pothi PDF (Marathi)

21. Shri Guru Charitra Pothi PDF (Marathi)

22. Shri Shiva Gita PDF (Hindi)

23. Shri Udiya Baba Ji Ke Upadesh PDF (Hindi)

24. Shri Udiya Baba Ji Ke Sansmaran 01 PDF (Hindi)

25. Shri Udiya Baba Ji Ke Sansmaran 02 PDF (Hindi)

26. Shri Udiya Baba Ji Jeevan Charitra (Hindi)

27. Shri Bhagavan Nama Kaumudi PDF (Sanskrit)

CamScanner

21. Shri Guru Charitra Parayan (Marathi)

22. Shri Guru Charitra (English)

23. Shri Gondavalekar Maharaj Pravachans (English)

24. Sadhanas from Ribhu Gita by Shri Swami Shantanand Puri (English)

25. Vivekachudamani by Adi Shankaracharya (Hindi)

26. Vishnu Gita (Hindi)

27. 'Who Am I?' by Bhagwan Ramana Maharshi (English)

28. 'Who Am I?' by Bhagwan Ramana Maharshi (Hindi)

29. 'Who Am I?' by Bhagwan Ramana Maharshi (Marathi)

30. Yoga Vasistha (Hindi)

TEXTS -

(To download any text PDF files, find 'PDF' under 'Read Online' towards the left side of its page. Right click on 'PDF' and select 'Save link as', select folder and hit 'Save')

01. Atma Vichar PDF (Marathi)

02. Atma Vidya PDF (Marathi)

03. Atma Bodha by Adi Shankaracharya PDF (Hindi)

04. Adi Shankaracharya Jivan Charitra PDF (Hindi)

05. Adi Shankaracharya Jivan Charitra PDF (Marathi)

06. Brahma Sutra PDF (Marathi)

CamScanner

9:27 pm 33%

folder and hit 'Save')

01. Ashtavakra Gita (Marathi)

02. Ashtavakra Gita (Hindi)

03. Ashtavakra Gita (English)

04. Avadhuta Gita (English)

05. Avadhuta Gita (Hindi)

06. Avadhuta Gita (Marathi)

07. Brahmana Gita (Hindi)

08. Datta Mahaatmya Gadya (Marathi)

09. Gitaai by Acharya Vinoba Bhave (Marathi)

10. Garbh Gita (Hindi)

11. Hansa Gita (Hindi)

12. In Woods of God Realization by Swami Rama Tirtha (English)

13. Panchadashi (Marathi)

14. Pandava Gita (Hindi)

15. Pandava Gita (English)

16. Ram Gita (Hindi)

17. Shri Shiva Gita (Hindi)

18. Shri Shiva Lilambrut Parayan (Marathi)

19. Shri Guru Gita (Sanskrit Chanting)

20. Shri Guru Gita (Marathi)

CamScanner

11:26 am 75%

आध्यात्मिक मार्ग Aadhyaatmik Marg
Parshotam Rai · 2h

दर्द न होता तो खुशी की कीमत न होती। अगर मिल जाता सब-कुछ केवल चाहने से, तो दुनिया में "ऊपर वाले" की जरूरत ही न होती!!

एक बार की बात है। युनान में एक बहुत बडा मूर्तिकार हुआ। उस मूर्तिकार की बडी बहूत प्रशंसा थी सारे दूर दूर के देशों तक। और लोग कहते थे कि अगर उसकी मूर्ति रखी हो बनी हुई और जिस आदमी की उसने मूर्ति बनाई है वह आदमी भी असके पड़ोस में खडा हो जाए श्वास बंद करके, तो बताना मुश्किल है कि मूल कौन है और मूर्ति कौन है। दोनों एक से मालूम होने लगते हैं। उस मूर्तिकार की मौत करीब आई। तो उसने सोचा कि मौत को धोखा क्यों न दे दूँ ? उसने अपनी ही ग्यारह मूर्तिया बना कर तैयार कर लीं और उन ग्यारह मूर्तिया के साथ छिप कर खड़ा हो गया। मौत भीतर घुसी उसने देखा वहां बारह एक जैसे लोग हैं। वह बहुत मुश्किल में पड़ गई होगी ? एक को लेने आई थी, बारह लोग थे, किसको ले जाए ? और फिर कौन असली है ? वह वापस लौटी और उसने परमात्मा से कहा कि मैं बहुत मुश्किल में पड़ गई, वहां बारह एक जैसे लोग है। असली को कैसे खोजूं ? परमात्मा ने उसके कान में एक सुत्र कहा। और कहा, इसे सदा याद रखना। जब भी असली को खोजना हो, इससे खोज लेना। यह तरकीब है असली को खोजने की। मौत वापस लौटी, उस कमरे के भीतर गई, उसने मूर्तियां को देखा और कहा मूर्तिया बहुत सुंदर बनी है, सिर्फ एक भूल हो गई। वह जो चित्रकार था वह बोला कौन सी भूल ? उस मृत्यु ने कहा, यही कि तुम अपने को नहीं भूल सकते। बाहर आ जाओं और परमात्मा ने मुझे कहा कि जो अपने को नहीं भूल सकता उसे तो मरना पड़ेगा और जो अपने को भूल जाए उसे मारने का कोई उपाय नहीं, वह अम्रत को उपलब्ध हो जाता है।

9 · 2 comments • 1 share

Like · Comment · Send · Share

Ask Ashwanijee: Psycho-Spiritual Expert
Sponsored ·

CamScanner

CamScanner

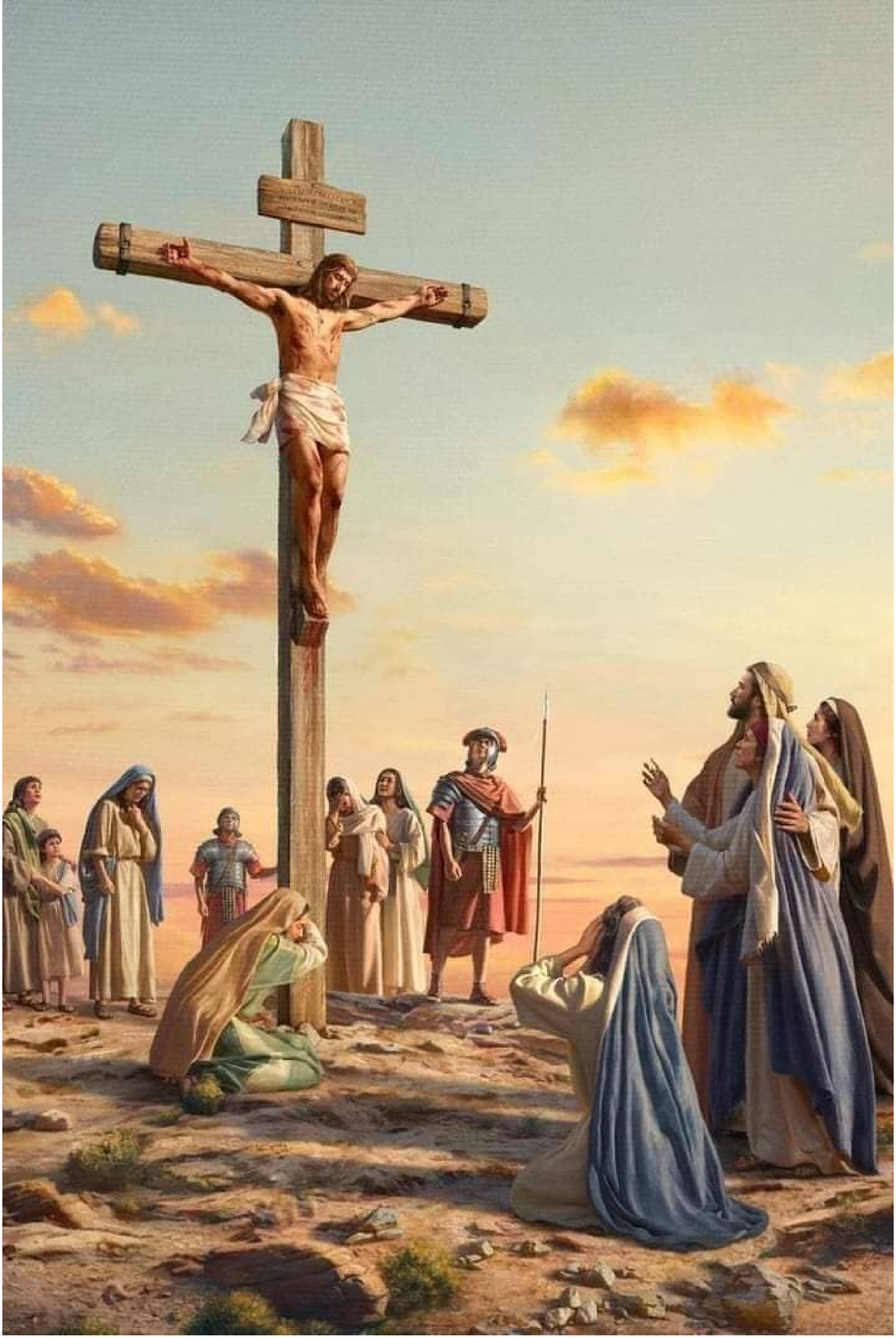

CamScanner

Raj Gupt · 1h ·

भारत में कभी कोई बुद्ध पुरूष मारा नहीं गया क्योंकि वह चाहे कितना ही विद्रोही क्यों न हो, वह भारतीय परंपरा की श्रंखला की कड़ी बना रहता है। परंतु जेरूसलेम में जीसस बिलकुल विदेशी जैसे थे—वे ऐसे प्रतीकों और भाषा का प्रयोग करते है जिससे यहूदी जाति बिलकुल अंजान है। उनको तो सूली पर चढ़ाया ही जाता। उन्हें सूली लगती ही।

ओशो कहते है कि, "मैं जब जीसस को देखता हूं तो मुझे वे गहरे ध्यान में डूबे दिखाई देते है। गहन संबोधि में है वे परंतु उनको ऐसी जाति के लोगों में रहना पडा जो धार्मिक या दार्शनिक नहीं थे; वे बिलकुल राजनीतिक थे। इन यहूदियों का मस्तिष्क और ही ढंग से काम करता है। इसलिए इनमें कोई दार्शनिक नहीं हुआ। इनके लिए जीसस अजनबी थे। और वे बहुत गड़बड़ कर रहे थे। यहूदियों की जमी-जमायी व्यवस्था को बिगाड़ रहे थे जीसस। अंत: उन्हें चुप कराने के लिए यहूदियों ने उनको सूली लगा दी। सूली पर वे मरे नहीं। उनके शरीर को सूली से उतार कर जब तीन दिन के लिए गुफा में रखा गया तो मलहम आदि लगाकर उसे ठीक किया गया। और वहीं से जीसस पलायन कर गए। इसके बाद वे मौन हो गए और अपने ग्रुप के साथ अर्थात अपनी शिष्य मंडली के साथ वे चुपचाप गुह्म रहस्यों की साधना करते रहे।

ओशो कहते है कि "मुझे ऐसा प्रतीत होता है। कि उनकी गुप्त परंपरा आज भी चल रही है।"

जीसस को समझने के लिए जरूरी है कि ईसाइयत द्वारा की गई उनकी व्याख्या को बीच में से हटाकर सीधे उनको देखा जाए—तब उनकी आंतरिक संपदा से हम समृद्ध हो सकते है - ओशो🌹🙏🌹

CamScanner

किसी को अपना न मानें,
सब कुछ भगवान का ही मानें,
तो दुख का काम तमाम हो जाए।
028 दूसरे की वस्तु
SHASHWAT ATRIPTI

CamScanner

11:24 am 4G 76%

एक तीन बच्चों का पिता एक रात थका हुआ घर आया। आज घर में बड़ी चुप्पी है। न बच्चे दिखाई दे रहे हैं, न उनकी आवाज ही आ रही है। रोज तो दौड़े आते थे, चिपके जाते थे। पत्नी भी महकती हुई आगे पीछे घूमती थी, आज वह भी मालूम नहीं पड़ती।

"बाबू!" उसने अपने बड़े पुत्र को आवाज लगाई। कोई उत्तर नहीं मिला, पर सामने के कमरे का दरवाजा खोल, पत्नी बाहर आई। एक दम शांत, गंभीर। नकली मुस्कान दिखा कर बोली- "आ गए आप?" और पानी का गिलास लाई।

"आज बच्चे दिखाई नहीं दे रहे? कहाँ हैं?" पिता ने पूछा।

पत्नी ने कहा- "वे जल्दी सो गए हैं। आप पानी पी लें। कपड़े बदल लें। आपसे कुछ बात पूछनी है।"

पिता- "पूछो! ऐसी क्या बात है? आज बड़ा विचित्र लग रहा है। क्या हो रहा है?"

"मैं पूछना चाहती हूँ कि अगर बहुत समय पहले कोई, हमें अपनी कोई वस्तु दे गया हो, और इतने समय बाद आज वह, अपनी वह वस्तु वापिस ले जाए, तो क्या करना चाहिए?" पत्नी ने पूछा।

पिता- "हाँ तो वापिस दे दो, इसमें पूछना क्या है?"

पत्नी- "दुख नहीं होगा?"

पिता- "तूं मूर्ख है क्या? इसमें दुख की क्या बात है? जिसकी वस्तु है, वह कभी तो ले ही जाएगा। आज नहीं तो कल ले जाता। कौन क्या ले गया?"

पत्नी ने एक कमरे का दरवाजा खोला, धीरे से बोली- "आज शाम।"

बाबू, बब्बू और बेबी, तीनों फर्श पर पड़े थे। निष्प्राण।

पिता- "तूं तो कह रही थी, ये सो गए हैं?"

पत्नी- "हाँ! हमेशा हमेशा के लिए।"

शाम को बेबी को करंट लग गया था, बब्बू और बाबू भी उसे बचाते हुए चिपक गए थे।

लोकेशानन्द कहता है कि इस जगत के सभी व्यक्ति और वस्तु, अपने को मिले हुए हैं, अपने हैं नहीं। या तो इनके होते हुए ही हम इन्हें छोड़ चलेंगे, या हमारे देखते हुए ये हमें छोड़ जाएँगे।

किसी को अपना न मानें, सब कुछ भगवान का ही मानें, तो दुख का काम तमाम हो जाए।

CamScanner

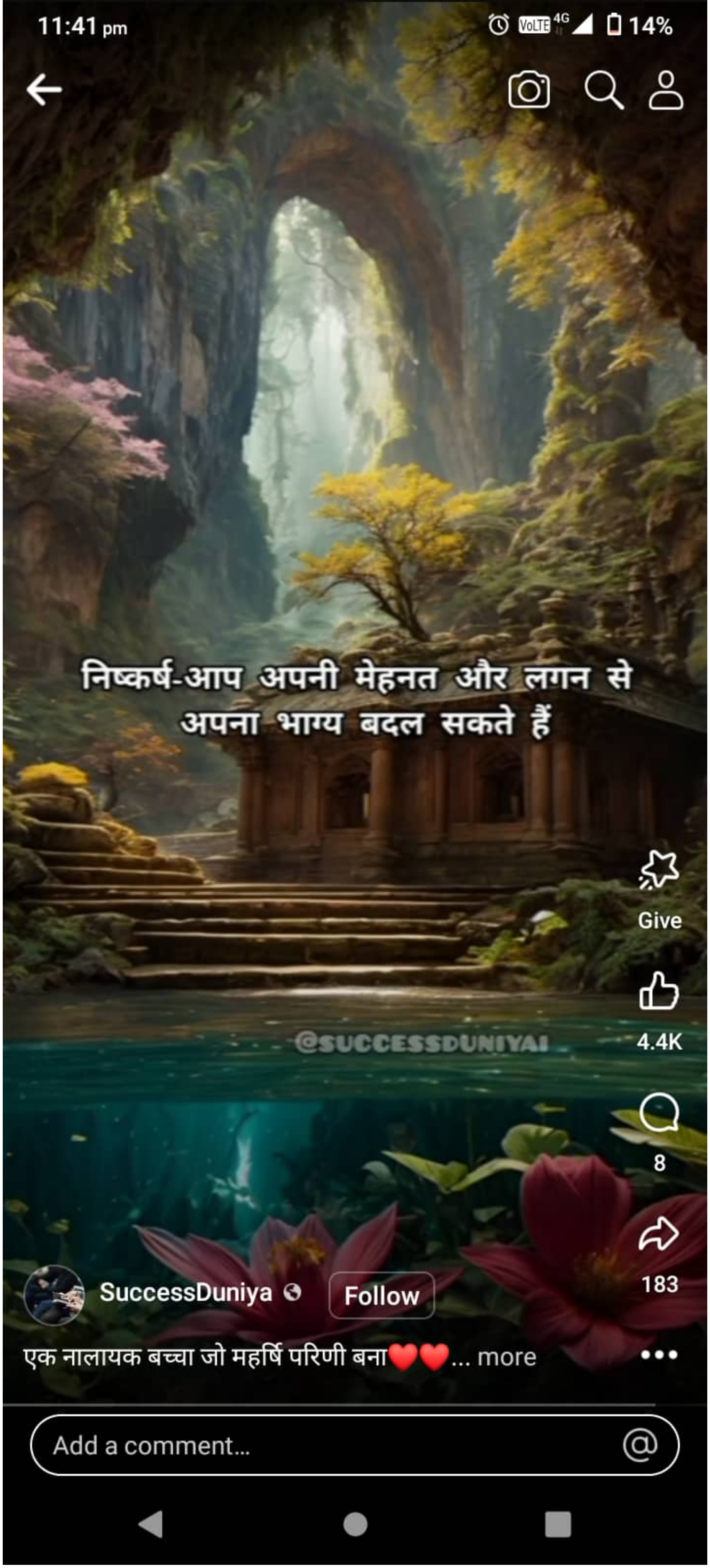

11:41 pm
14%
निष्कर्ष-आप अपनी मेहनत और लगन से
अपना भाग्य बदल सकते हैं
@SUCCESSDUNIYAI
Give
4.4K
8
183
SuccessDuniya
Follow
एक नालायक बच्चा जो महर्षि परिणी बना❤️❤️... more
Add a comment...

CamScanner

Jamal Kudu

Song Title: Jamal Kudu (Abrar's Entry)
Movie: Animal
Sung By: Sounik & Harshita

Aaye Siyah Ey Zangi, Delamo Nakon Khun
Vaaye To Rafti Konja, Manam Chhu Majnoon

Jamal Jamale, Jamaloo, Jamal Kudu

Del Tumakhteki Sineh, Oye Aarum Nami Shineh
Hel Yosa Halel Yosa, Esraar Nami Khosa

Ey Mar Mar Seene, Belazoon Belazoon Bela
Ey Kertok Manaye, Bechatun Bechatun Becha

Jamal Jamale, Jamaloo, Jamal Kudu

CS Scanned with CamScanner

CS CamScanner

12:32 pm 69%

Osho meditaion Ca...

Modern Era Masters

6d ·

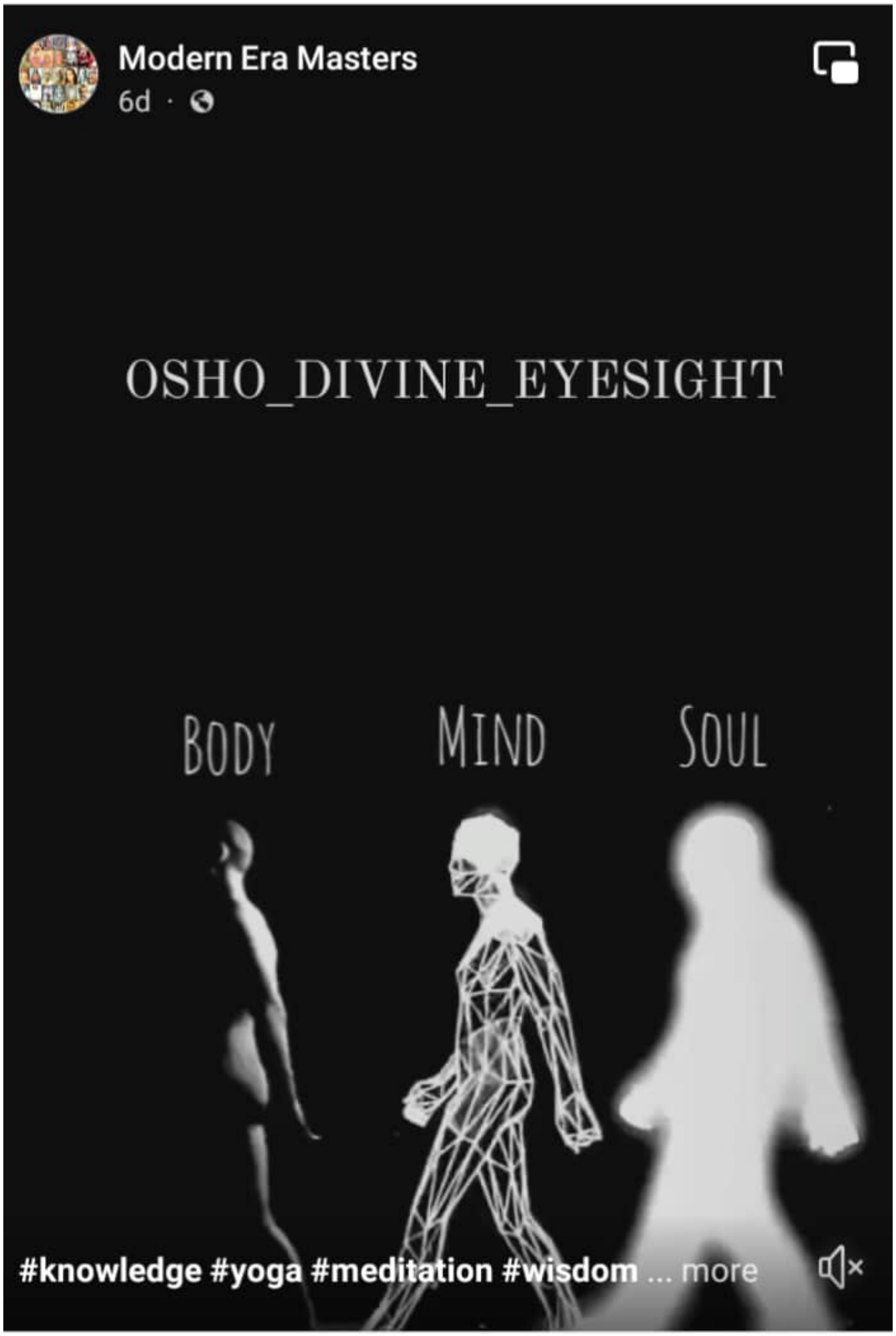

1 share

Like Comment Send Share

CamScanner

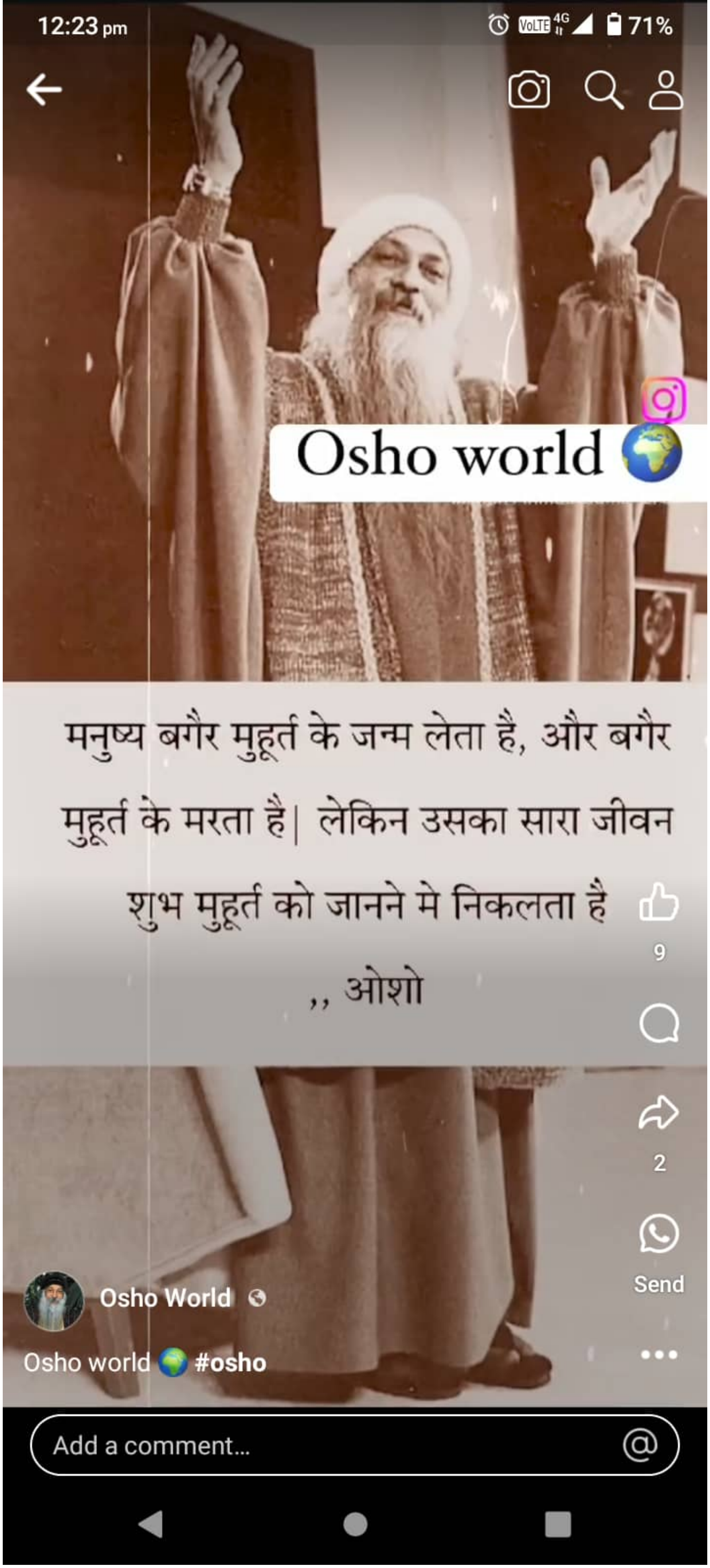
12:23 pm
71%
Osho world
मनुष्य बगैर मुहूर्त के जन्म लेता है, और बगैर
मुहूर्त के मरता है। लेकिन उसका सारा जीवन
शुभ मुहूर्त को जानने मे निकलता है
,, ओशो
9
2
Send
Osho World
Osho world #osho
Add a comment...

CamScanner

कृष्ण-करीम, राम-हरि-राघव जब लग एक न पेखा,
वेद-कतेब कुरान-पुरानन सहज एक नहि वेषा ।
जोइ-जोइ पूजिए, सोइ-सोइ कांची सहज भाव सत होई,
कह रैदास मैं ताहि को पूजूं जाके ठांव-नांव नहिं कोई ।

—संत रविदास

जन्म है नाव में बैठना!
मृत्यु है नाव से उतर जाना,
बीच में सब मित्रताए है शत्रुताए है।
हम कितना फैलाव कर लेते है, हम कितना पसारा
कर लेते है, कितनी आसक्तिया, कितने मोह, किस
किस भांति हम एक दूसरे से बंध जाते है, एक दूसरे
को बांध लेते है!
कितने बंधन! कितना कष्ट पाते है उन बंधनो से
हम ,और यह जानते हुए कि मौत आती होगी!
न जन्म के पहले उनसे हमारा कुछ संबंध था,
न मृत्यु के बाद कोई संबंध रह जाएगा।
मगर थोड़ी देर का! घडी भर का साथ,
और हमने कितना संसार रचा लिया!!

CamScanner

7 comments • 13 shares • 95 views

Like Comment Send Share

Bernd Kalidas Flory

7h ·

Whether you worship Christ, Krishna, Kali or Allah, you actually worship the one Light that is also in you, since It pervades all things. Everything originates from Light, everything in its essence is Light.

~ Sri Anandamayi Ma ~

> चाहे आप मसीह, कृष्ण, काली या अल्लाह की पूजा करते हो, आप वास्तव में एक प्रकाश की पूजा करते हैं जो आप में भी है, क्योंकि यह सब कुछ व्याप्त है। प्रकाश से ही सब कुछ उत्पन्न होता है, उसके सार में सब कुछ प्रकाश है।
>
> ~ श्री आनंदमयी माँ ~
>
> • Rate this translation

CamScanner

2:39 pm 59%

लेकिन हम हैं चालबाज, हम हैं होशियार। होशियारी ही हमारी डुबा रही है। हमारी होशियारी ही हमारी फांसी बनी है। हम परमात्मा के साथ भी हिसाब-किताब से चलते हैं। उसके साथ भी हम सौदा करते हैं। मैं इतना दूंगा तो तुम कितना दोगे? मैं इतना पुण्य करूंगा तो मुझे कितना स्वर्ग में मिलेगा? मैं इतना दान दूंगा तो इसका कितना फल होगा? और तुम्हें शोषण करने वाले पंडित हैं, पुरोहित हैं। वे कहते हैं: यहां एक पैसा दो, वहां करोड़ गुना पाओगे।

यह तो धर्म न हुआ, कुछ लाटरी की बात हो गई। और तब लोभी इस तरह के धर्म में उत्सुक होते हैं--प्रेमी नहीं, लोभी। और प्रेम का लोभ से क्या नाता है! प्रेम जानता है समर्पण, मांगता नहीं हालांकि मिलता है बहुत। करोड़ गुना ही क्यों, अनंत-अनंत गुना मिलता है! मगर मिलने की आकांक्षा प्रेम में नहीं होती। प्रेम तो सिर्फ देकर ही धन्यभागी है; चढ़ा कर कृतकृत्य है, कृतार्थ है। स्वीकार किया परमात्मा ने मेरी भेंट को, मेरी आहुति को, इतना ही क्या कम है! इतना आनंद बहुत है। इतना आनंद भी समाएगा नहीं। छाती छोटी पड़ जाएगी, पूरा आकाश छाती में उतर आएगा।

प्रेमी देने में मस्त होता है। लोभी देता भी है अगर, तो आंख के कोनों से देखता रहता है कि वापस मिल रहा है कि नहीं मिल रहा है। और ज्यादा मिल रहा है कि नहीं मिल रहा है। जितना लगाया है, कम से कम ब्याज सहित तो मिलना ही चाहिए! और जिसको ब्याज की चिंता है, वह निर्ब्याज नहीं हो पाता, सरल नहीं हो पाता। जिसको पाने की आकांक्षा है, उसका त्याग झूठा। त्याग तो सच्चा तभी है जब त्याग अपने आप में अपना लक्ष्य है; कोई और गंतव्य नहीं, कोई और मंजिल नहीं, जब त्याग अपने में अपना आनंद है।

इसलिए मलूकदास कहते हैं: रामदुवारे जो मरे! आते हो इस रास्ते पर तो मरने की तैयारी लेकर आना। यह रास्ता परवानों का है। और कितनी सदियां हो गयीं, परवाने शमाओं पर मरते ही जाते हैं! क्योंकि मरने में कुछ राज है जो परवाना ही जानता है। दूर खड़े हुए, देखने वाले, दर्शक उस सत्य को कभी नहीं देख सकते; वह आंतरिक अनुभव है। मिटने का मजा, गलने का मजा, खो जाने का मजा--परवाना जानता है! और परमात्मा तो परम ज्योति है। उस परम ज्योति के सामने तुम्हें खो जाने

CamScanner

2:39 pm 59%

मैंने सुना है, बंगाल में एक बहुत बड़ा वैयाकरण हुआ। कभी मंदिर नहीं गया। उसके पिता बूढ़े होने लगे थे, नब्बे साल की उम्र हो गई पिता की। बेटा भी अब कोई सत्तर पार कर रहा है।

आखिर पिता ने कहा कि तू कब जाएगा मंदिर, कब राम को पुकारेगा? तो बेटे ने कहा: मैं हूं व्याकरण का ज्ञाता। एक वचन में 'राम', 'राम' जिंदगी भर कहने से क्या फायदा? बहुवचन में एक ही बार राम को पुकार लेंगे। और एक ही बार पुकारूंगा! और पुकार सच्ची होगी तो एक ही बार में पहुंच जाएगी। और पुकार अगर झूठी है तो करोड़ बार में भी कैसे पहुंच सकती है?

नाव अगर कागज की है तो करोड़ बार चलाओ, डूब-डूब जाएगी। नाव सच्ची हो तो बस एक बार छोड़ी कि उस पार पहुंची। ऐसे अंधेरे में तीर चलाने से क्या फायदा है? एक बार समग्र शक्ति लगा कर सारी आंखों को एकजुट करके, एकाग्र करके पुकार लूंगा राम को। पिता ने कहा: मैं बूढ़ा हो गया हूं, तू भी सत्तर साल का हुआ, अब इन व्यर्थ की बातों में मत लगा रह। जब भी तुझसे कहता हूं, तभी तू यह बात कहता है--एक बार पुकार लूंगा! आखिर कब पुकारेगा? तो उसने कहा: आज ही पुकार लेता हूं।

बेटा मंदिर गया। जैसे बाप भी रोज मंदिर जाता था...जिंदगी भर का नियम था। बाप राह देखता रहा कि बेटा लौटता होगा, लौटता होगा, लौटता होगा। नहीं लौटा। दोपहर होने लगी, सूरज ढलने लगा, तो बाप भागा मंदिर गया कि बात क्या हुई? तब तक मंदिर से भी लोग आ रहे थे, उन्होंने कहा कि तुम्हारा बेटा तो चल बसा। उसने तो बस एक बार मूर्ति के सामने खड़े होकर जोर से 'राम' को पुकार दी और वहीं गिर गया। फिर उठा नहीं।

ऐसा रास्ता है जुआरी का। रामदुवारे जो मरे! वह परम जीवन को उपलब्ध हो जाता है।

लेकिन हम हैं चालबाज, हम हैं होशियार। होशियारी ही हमारी डुबा रही है। हमारी होशियारी ही हमारी फांसी बनी है। हम परमात्मा के साथ भी हिसाब-किताब से चलते हैं। उसके साथ भी हम सौदा करते हैं। मैं इतना

CamScanner

2:24 pm 60%

जैनी उन्हें नहीं पहचान सकते। अगर राम वापस लौट आएं, तो हिंदुओं के अतिरिक्त कोई भी उन्हें पहचान सकता है, लेकिन हिंदू उन्हें नहीं पहचान सकते। हमारी आंख अतीत के प्रति इतने व्यामोह से घिरी है कि वर्तमान को कभी भी नहीं देख पाती। यह झूठा है आपका खयाल कि अतीत के प्रति आदर, महापुरुषों के प्रति आदर है। महापुरुषों के प्रति नहीं; मुर्दों के प्रति, मृत के प्रति, जो बीत गया। मृत के प्रति हम क्यों आदर देते हैं? उसके पीछे भी कारण है। मृत के हम पूरे मालिक हो सकते हैं, ओनरशिप हो सकती है। जीवित के हम मालिक नहीं हो सकते। अगर राम जिंदा हैं, तो हम कुछ भी नहीं कह सकते कि राम क्या करेंगे और क्या नहीं करेंगे? लेकिन मरे हुए राम क्या करेंगे और क्या नहीं करेंगे, हम उसकी व्याख्या कर सकते हैं, निर्णय कर सकते हैं। मरे हुए राम हमारे विरोध में कुछ भी नहीं कह सकते, मरे हुए राम हमारे हाथ की कठपुतली हैं। सब मृत महापुरुषों को हमने हाथ की कठपुतली बनाया हुआ है। जिंदा छोटा सा आदमी भी हाथ की कठपुतली नहीं हो सकता, महापुरुष तो हाथ की कठपुतली कैसे हो सकते हैं? इसलिए मृत को हम आदर दे पाते हैं, क्योंकि वह हमारे हाथ में होता है, पूरे हमारे शिकंजे में होता है। वह कैसे उठे, कैसे बैठे, हम सब निर्णय कर सकते हैं। वह क्या बोले और क्या न बोले, इसका हम निर्णय कर सकते हैं। वह कपड़े पहने या न पहने, इसका हम निर्णय कर सकते हैं। हम सब निर्णय कर सकते हैं मृत के बाबत, क्योंकि मृत विरोध करने को नहीं आ सकता। लेकिन जीवित के बाबत हम कुछ भी निर्णय नहीं कर सकते और जितना जीवंत व्यक्ति होगा, उतना ही अनिर्णीत होता है। उसके बाबत हम कोई घोषणा नहीं कर सकते। यह महापुरुषों के प्रति आदर नहीं, यह अपने अहंकार की तृप्ति है। उनको हम अपनी मुट्ठी में बंद करके बैठ जाते हैं और वे बेचारे कोई विरोध नहीं कर सकते, क्योंकि जीवित होते तो विरोध करते। हम बदला ले रहे हैं महापुरुषों से। जब वे जीवित थे, तब हम उनको अपने हाथों में बंद नहीं कर सके, उनको अपना गुलाम नहीं बना पाए, उन पर हम जंजीरें नहीं पहना पाए। जब से वे मर जाते हैं, तब से हम उनके मालिक हो जाते हैं। और हम हर तरह की जंजीरें और हम हर तरह की गुलामी लेकर पूरा बदला चुका देते हैं। यह महापुरुषों के प्रति आदर नहीं, रिवेंज है, बदला है।

माटी कहै कुम्हार सूं

CamScanner

2:24 pm 60%

क्राइस्ट को पता नहीं, पुरोहित को आदर नहीं दिया जा रहा है। पुरोहित मुर्दा आदमी है, पुरोहित परंपरा का प्रतीक है, उसको आदर दिया जा रहा है। पुरोहित अपनी तरफ से बोले तो अभी अनादर शुरू हो जाएगा। वह परंपरा की तरफ से बोल रहा है, इसलिए उसको आदर है। मुर्दे का आदर है, वह जो डेड, जो समाप्त हो गया है, उसका आदर है। जीवित का कोई आदर नहीं है। उस पुरोहित ने आकर कहा कि उतर बदमाश, नीचे वहां क्यों खड़ा हुआ है? कौन है तू? जीसस हंसे और उन्होंने कहा, तू भी मुझे नहीं पहचान रहा है, तू तो सुबह से सांझ मेरी ही प्रार्थनाएं करता है। और तभी उस पुरोहित ने कहा, चार आदमी पकड़ कर इसे नीचे उतारो। कोई शरारती आदमी मालूम पड़ता है। उसे ले जाकर चर्च की एक कोठरी में जीसस क्राइस्ट को बंद कर दिया गया। जीसस तो अपने मन में बहुत हैरान हुए। क्या फिर से फांसी लगाई जाएगी? क्या दुबारा सूली पर लटकना पड़ेगा? आधी रात, दिन बीत गया, जीसस बंद हैं कोठरी में। आधी रात वह पुरोहित आया। उसने ताला खोला। अंधेरे में जाकर लालटेन रखी। जीसस के पैरों पर गिर पड़ा। जीसस ने कहा, क्या करते हो? क्या तुम्हें समझ में आ गया? उसने कहा, समझ में मुझे वहां भी आ गया था, लेकिन बाजार में हम तुम्हें नहीं पहचान सकते हैं। तुम हमारा सारा धंधा खराब कर दोगे। हम मुश्किल से अठारह सौ साल में दुकान जमा पाए, आप फिर आ गए। आप जैसे लोग हमेशा डिस्टर्ब करते हैं, हमेशा गड़बड़ कर देते हैं। सब जमा हुआ उखाड़ देते हैं। हम भीड़ में आपको नहीं पहचान सकते हैं। आप स्वर्ग में रहो, वह बहुत अच्छा, हम पूजा करेंगे। जमीन पर आपकी कोई भी जरूरत नहीं। हम आपका काम भलीभांति सम्हाल लेते हैं। आपके यहां आने की कोई जरूरत नहीं। नहीं तो याद रखना, फिर वही होगा, फिर हमें सूली लगानी पड़ेगी। और मैं तुम्हें बताए देता हूं, उस पुरोहित ने कहा, जिन पुरोहितों ने तुम्हें पहले सूली लगाई थी, वे भी भलीभांति पहचानते थे कि तुम आदमी ठीक हो। लेकिन ठीक आदमी हमेशा गड़बड़ करते हैं। आप कृपा करें, आपका स्वर्ग में ही निवास अच्छा है, पृथ्वी पर आने की कोई भी जरूरत नहीं है। शायद जीसस क्राइस्ट उसकी बात से राजी हो गए होंगे, क्योंकि उस कोठरी के बाद क्या हुआ, फिर कुछ भी पता नहीं। वे वापस लौट गए होंगे। अगर महावीर वापस लौट आएं, तो मैं आपसे कहता हूं, जैनियों के अतिरिक्त और कोई भी उन्हें पहचान सकता है, जैनी उन्हें नहीं पहचान सकते। अगर राम वापस लौट आएं, तो हिंदुओं के अतिरिक्त कोई भी उन्हें पहचान सकता है, लेकिन हिंदू उन्हें नहीं

CamScanner

2:24 pm 60%

Subhash Chandra · 7h ·

दोस्तोवस्की ने एक छोटी सी कहानी लिखी है। उसने लिखा है, जीसस क्राइस्ट ने अठारह सौ वर्ष बाद सोचा कि अब तो करीब-करीब एक तिहाई दुनिया ईसाई हो गई है। अब मैं वापस जाऊं। अब तो मेरा स्वागत हो सकेगा, अब तो लोग मेरी बात सुन सकेंगे। अब तो वे पुरोहित न रहे, जिन्होंने मुझे फांसी दी थी। अब तो वे लोग न रहे जो हंसे थे और मजाक उड़ाया था। अब तो वे लोग न रहे, जिनके सामने मैं असफल हो गया और मेरी मृत्यु के सिवाय कुछ भी फलित न हुआ था। मैं जाऊं।
जेरुसलम में एक सुबह, रविवार के दिन, जब कि लोग चर्च से वापस लौट रहे हैं, जीसस क्राइस्ट एक झाड़ के नीचे उतर कर खड़े हो गए। चर्च से लौटते हुए लोग, जो चर्च में जीसस क्राइस्ट की प्रार्थना करके आ रहे हैं, उन्होंने जीसस क्राइस्ट को खड़े देखा, तो भीड़ लगा ली और वे हंसने लगे और वे कहने लगे, कोई अभिनेता मालूम होता है, बिलकुल जीसस क्राइस्ट बन कर खड़ा हुआ है। जीसस क्राइस्ट ने कहा, मैं अभिनेता नहीं, मैं कोई एक्टर नहीं, मैं खुद जीसस क्राइस्ट हूं। वे लोग हंसने लगे, उन्होंने कहा कि ऐसे पागलपन की बातें मत करो। जीसस क्राइस्ट सिर्फ एक बार हुए हैं और हो चुके हैं। अब दुबारा नहीं हो सकते। जीसस क्राइस्ट ने कहा, मैं खुद कह रहा हूं कि मैं जीसस क्राइस्ट हूं। तुम नहीं मानते? उन्होंने कहा, कहां लिखा है बाइबिल में कि तुम दुबारा आओगे, और इस तारीखों में आओगे। किस शास्त्र में लिखा है, तुम्हारे आने की खबर, जरूर कोई धोखेबाज आदमी मालूम होता है। जीसस क्राइस्ट तो मन में बहुत घबड़ाने लगे। यह तो वही की वही बातें हैं, जो अठारह सौ वर्ष पहले उनसे लोगों ने कहीं। लेकिन तब तो पुरोहित दूसरों के थे, मंदिर दूसरों के थे, शास्त्र दूसरों के थे। अब तो पुरोहित मेरे हैं, शास्त्र मेरे हैं, ये लोग मेरे हैं, ये भी मुझसे वही बातें कह रहे हैं! जीसस क्राइस्ट को पता नहीं था, जिंदा आदमी के साथ हमेशा वही बातें कही जाती हैं।
और तभी चर्च का पादरी भीड़ लगी देख कर बाहर आ गया। लोगों ने जीसस क्राइस्ट को तो कोई आदर नहीं दिया, लेकिन झुक-झुक कर उस पादरी को वे नमस्कार करने लगे, जो जीसस क्राइस्ट का पादरी है, जो उनका क्रास अपने गले पर लटकाए हुए है। लोग झुक-झुक कर नमस्कार करने लगे। जीसस को बड़ी हैरानी हुई कि मैं स्वयं मौजूद हूं, लेकिन लोग मुझे आदर नहीं कर रहे, इस पुरोहित को...। लेकिन जीसस क्राइस्ट को पता नहीं, पुरोहित को आदर नहीं दिया जा रहा है। पुरोहित

CamScanner

4:30 pm 47%

Reels · 5h ·

स्वर्ग–नर्क मनोदशाएं है "ओशो"

#reels #osho #reelsvideo #reelsfb #trending2023

27 21 shares • 4.9K views

Like Comment Send Share

CamScanner

8:53 pm 16%

.... See more

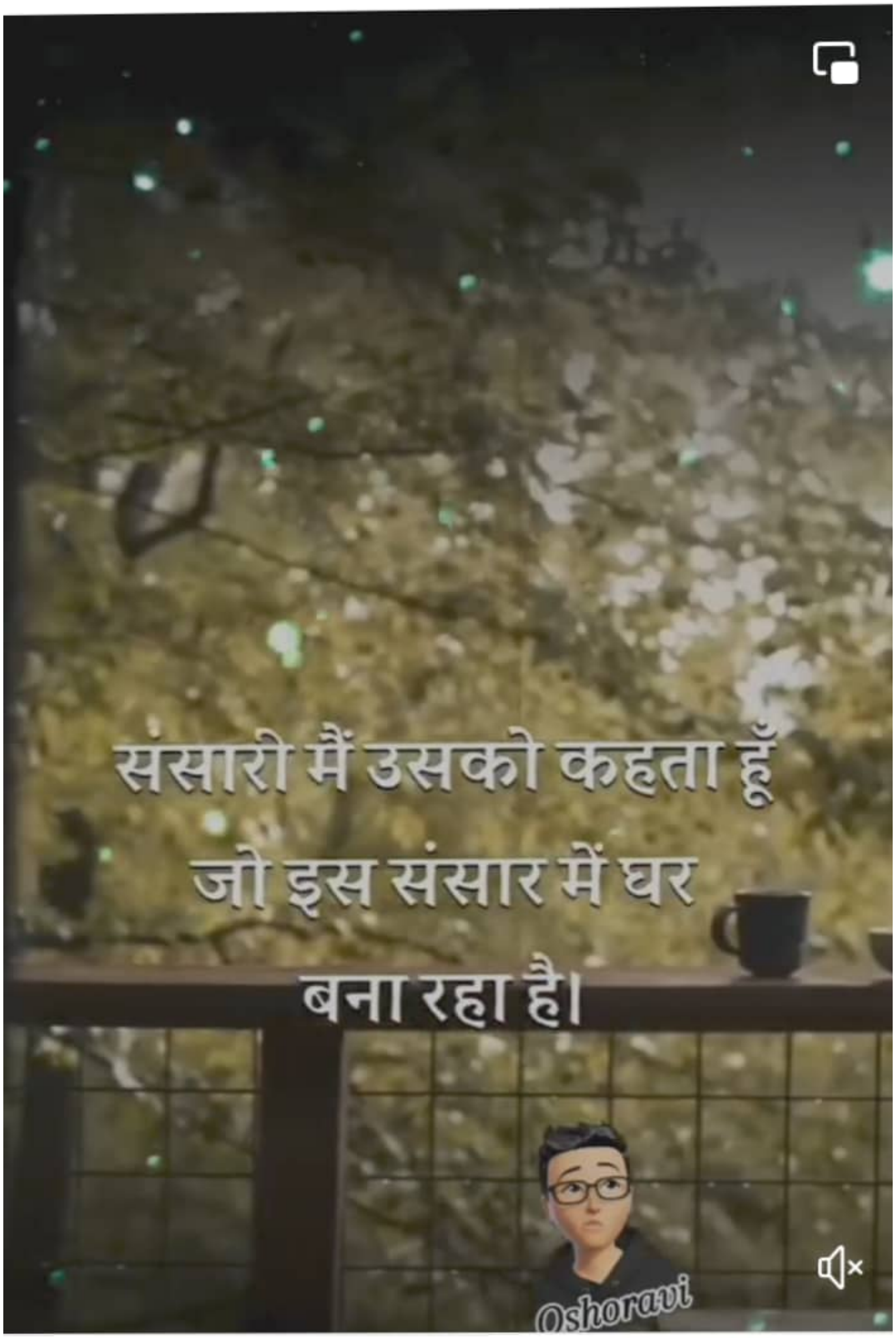

22 2 comments • 15 shares • 148 views

Like Comment Send Share

Dr and Master Sha
Sponsored ·

CamScanner

जीवन मे जो देता है ,केवल उसी की पूजा
होती है.....

समुद्र देता है तो उसकी पूजा होती है ..

वृक्ष देते हैं तो उसकी पूजा होती है ....

सूर्य देता है तो उसकी पूजा होती है ..

गाय देती है तो उसकी पूजा होती है ...

आप कुछ नही दे सकते ,परमात्मा
के बच्चे होने के नाते सब को प्रेम के दो
चार बोल तो दे ही सकते है ...

CS CamScanner

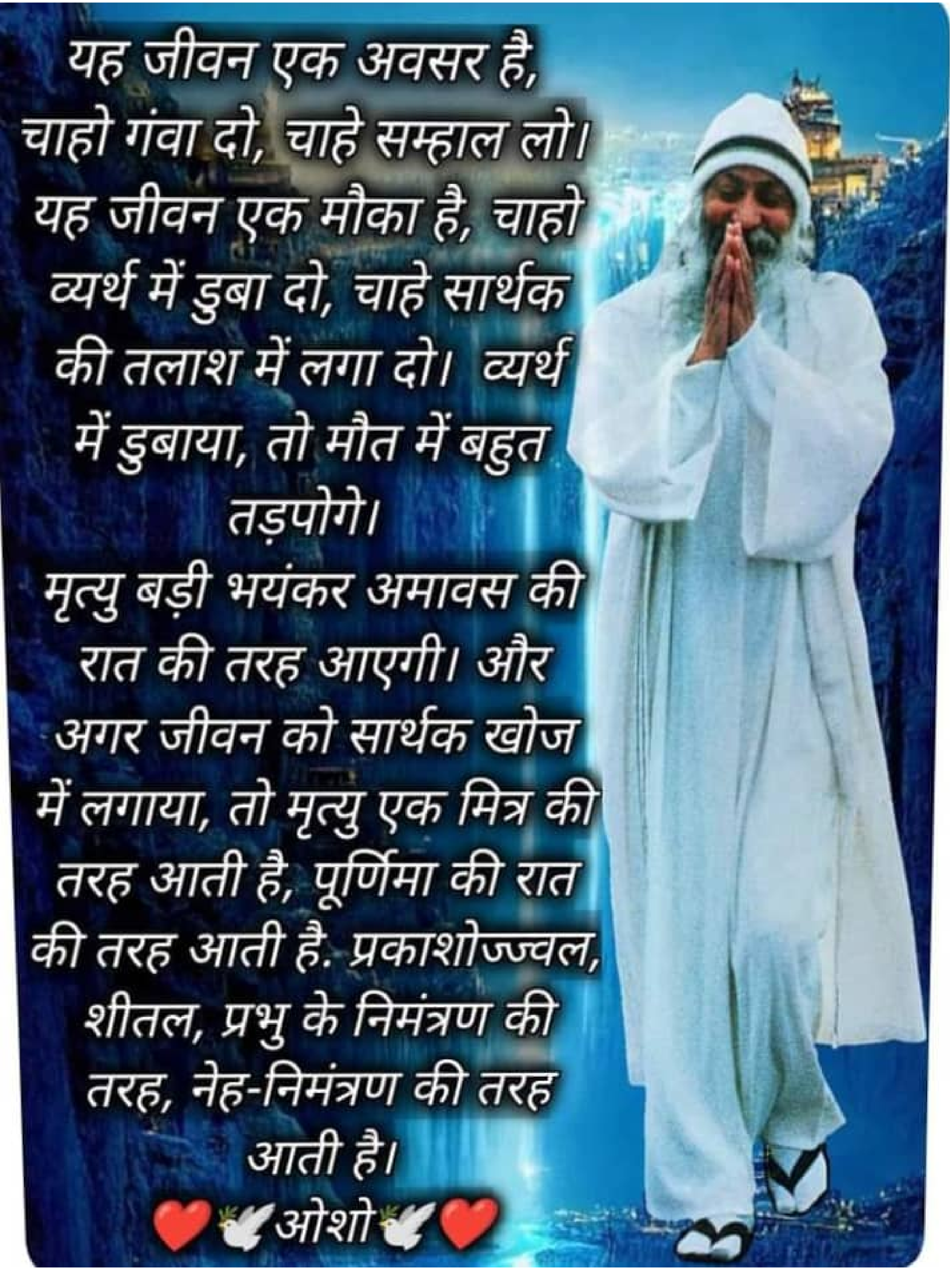

CS CamScanner

इस दुनियां में सबसे बड़ा
साहस! तुम्हारे तलवार
"उठाने में नहीं है..
ध्यान के लिए बैठने में है!
क्योंकि ध्यान में तुम
"संसार से दूर हट
जाते हो! और तुम्हारे गले
सड़े विचार गिरने लग
जाते हैं.!!
ओशो

CamScanner

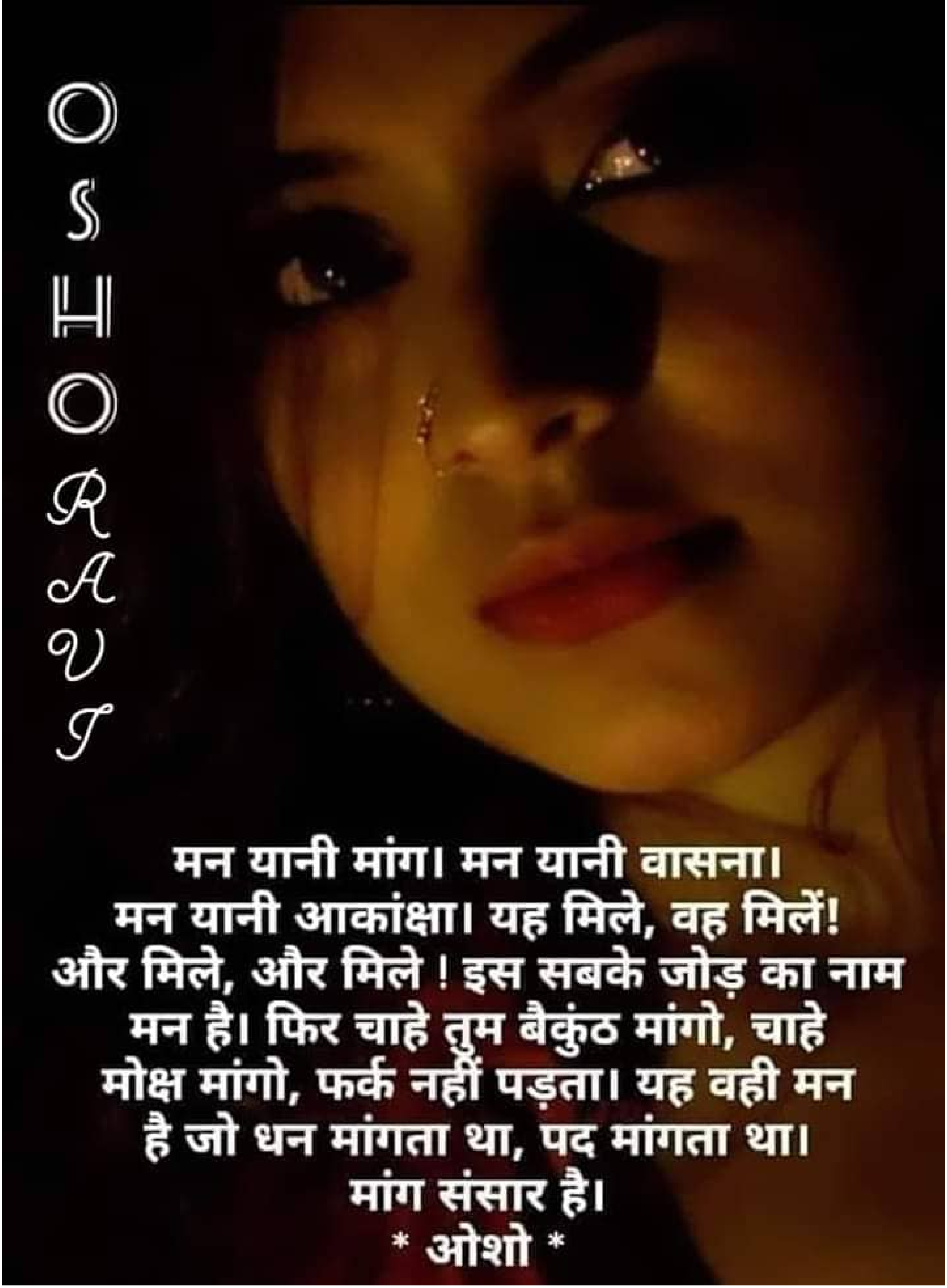
O S H O R A V I
मन यानी मांग। मन यानी वासना।
मन यानी आकांक्षा। यह मिले, वह मिलें!
और मिले, और मिले ! इस सबके जोड़ का नाम
मन है। फिर चाहे तुम बैकुंठ मांगो, चाहे
मोक्ष मांगो, फर्क नहीं पड़ता। यह वही मन
है जो धन मांगता था, पद मांगता था।
मांग संसार है।
* ओशो *

CamScanner

7:59 pm 31%

क्राइस्ट ने उससे पूछा कि कब तक मछलियां मारते रहोगे?

उसने लौट कर देखा, एक झील सामने थी और पीछे इस आदमी की आंखें थीं जो झील से भी ज्यादा गहरी थीं। उसने सोचा कि अब इस जाल को वहीं फेंक दूं और इन आंखों में एक जाल को फेंकूं। उसने जाल वहीं फेंक दिया और क्राइस्ट के पीछे हो लिया। उसने कहा, मैं साथ चलता हूं। अगर कुछ और पकड़ा जा सकता है, उसे पकड़ने को मैं तैयार हूं। यह जाल यहीं फेंक दिया, ये मछलियां यहीं छोड़ दीं।

जिसे धर्म की खोज करनी हो, उसे इतना साहस होना चाहिए कि समय पड़े तो जाल को और मछलियों को फेंक दे।

वह क्राइस्ट के पीछे गया। वे गांव के बाहर भी नहीं निकल पाए, एक आदमी ने आकर उस मछुए को खबर दी कि तुम कहां जा रहे हो? तुम्हारे पिता जो बीमार थे, उनकी रात्रि में मृत्यु हो गई। अभी-अभी वे समाप्त हो गए हैं। लौटो, हम तुम्हें खोजते हुए सब तरफ घूम आए हैं!

वह युवा मछुआ क्राइस्ट से बोला, क्षमा करें, मैं जाऊं और अपने पिता का अंतिम संस्कार करके दो-चार दिन में वापस लौट आऊंगा।

क्राइस्ट ने उसका हाथ पकड़ा और उससे कहा, तुम तो मेरे पीछे आओ। एंड लेट दि डेड बरी देयर डेड। और वे जो गांव के मुर्दे हैं, वे मुर्दे को दफना लेंगे। तुम मेरे पीछे आओ। क्राइस्ट ने कहा, वे जो गांव में बहुत मुर्दे हैं, वे मुर्दे को दफना लेंगे। तुम्हें जाने की कौन सी जरूरत है?

बहुत ही अजीब बात उन्होंने कही और बहुत अर्थपूर्ण भी। निश्चित ही जिन्हें अभी जीवन का पता नहीं है, वे मृत ही हैं। और हमें जीवन का कोई भी पता नहीं है। जिसे हम जीवन कहते हैं, वह तो क्रमिक मृत्यु का ही नाम है। वह वस्तुतः जीवन नहीं है। हम जिस दिन पैदा होते हैं और जिस दिन हम मर जाते हैं, इन दोनों के बीच में जो फैला हुआ है, वह जीवन नहीं है, वह तो धीमे-धीमे मरते जाने का नाम है। हम रोज मरते जा रहे हैं। जिसे हम जीवन कह रहे हैं, वह रोज मरते जाना है। वह ग्रेजुअल डेथ है।

CamScanner

7:59 pm 31%

एक छोटी सी कहानी से आज की चर्चा को मैं प्रारंभ करना चाहूंगा। बहुत बार उस कहानी को देश के कोने-कोने में अनेक-अनेक लोगों से कहा है। फिर भी मेरा मन नहीं भरता और मुझे लगता है उसमें कुछ बात है जो सभी को खयाल में आ जानी चाहिए।

जीसस क्राइस्ट यात्रा पर थे। जो उन्हें मिला था उसे लुटाने की यात्रा पर थे। और आनंद का स्वभाव है कि वह मिल जाए तो उसे लुटाना अनिवार्य हो जाता है। दुख मनुष्य को सिकोड़ता है और आनंद मनुष्य को फैला देता है। दुख में मनुष्य चाहता है, मैं अपने में बंद हो जाऊं; और आनंद में मनुष्य चाहता है, मैं सब तक पहुंच जाऊं और सब तक फैल जाऊं। इसीलिए आनंद को ब्रह्म कहा है। दुख अहंकार की अंतिम सीमा है; आनंद निर-अहंकारिता की, ब्रह्म होने की।

शायद आपने खयाल किया हो, महावीर और बुद्ध या क्राइस्ट जब दुख में हैं, तब वे जंगल में भाग गए हैं; और जब उन्हें आनंद उपलब्ध हुआ है, वे बस्ती में वापस लौट आए हैं। आनंद बंटना चाहता है, दुख सिकुड़ना चाहता है। दुख अपने में बंद होना चाहता है, आनंद दूसरे तक फैलना चाहता है।

क्राइस्ट को जब आनंद उपलब्ध हुआ, वे उसे बांटने की यात्रा पर निकल गए। वे एक गांव में पहुंचे। सुबह-सुबह ही उस गांव को वे पार करते थे--एक झील के किनारे उन्होंने एक मछुए को मछली मारते देखा। उसने अपना जाल फेंका था और मछलियों की प्रतीक्षा करता था। उसे पता भी नहीं था कि पीछे से कौन गुजरता है। क्राइस्ट ने जाकर उसके कंधे पर हाथ रखा और उससे कहा, मित्र, मेरी ओर देखो! कब तक मछलियां ही मारते रहोगे?

और जो क्राइस्ट ने उससे कहा, मैं हरेक आदमी के कंधे पर हाथ रख कर मेरा भी मन होता है कि पूछूं कि कब तक मछलियां ही मारते रहोगे? इससे क्या फर्क पड़ता है कि रोटियां मार रहे हैं या मछलियां मार रहे हैं! सब मछलियां मारना है। जीवन अधिक लोगों का मछलियां मारने में ही नष्ट हो जाता है।

क्राइस्ट ने उससे पूछा कि कब तक मछलियां मारते रहोगे?

CamScanner

ShareChat
@Vipan Singla

लघुकथा

एक आदमी रात को झोपड़ी में बैठकर एक छोटे से दीये को जलाकर कोई शास्त्र पढ़ रहा था।
आधी रात बीत गई
जब वह थक गया तो फूंक मार कर उसने दीया बुझा दिया।
लेकिन वह यह देख कर हैरान हो गया कि जब तक दीया जल रहा था, पूर्णिमा का चांद बाहर खड़ा रहा।
लेकिन जैसे ही दीया बुझ गया तो चांद की किरणें उस कमरे में फैल गई।
वह आदमी बहुत हैरान हुआ यह देख कर कि एक छोटे से दीए ने इतने बड़े चांद को बाहर रोक कर रखा।
इसी तरह हमने भी अपने जीवन में अहंकार के बहुत छोटे-छोटे दीए जला रखे हैं जिसके कारण परमात्मा का चांद बाहर ही खड़ा रह जाता है।
जबतक वाणी को विश्राम नहीं दोगे तबतक मन शांत नहीं होगा।
मन शांत होगा तभी ईश्वर की उपस्थिति महसूस होगी।

CamScanner

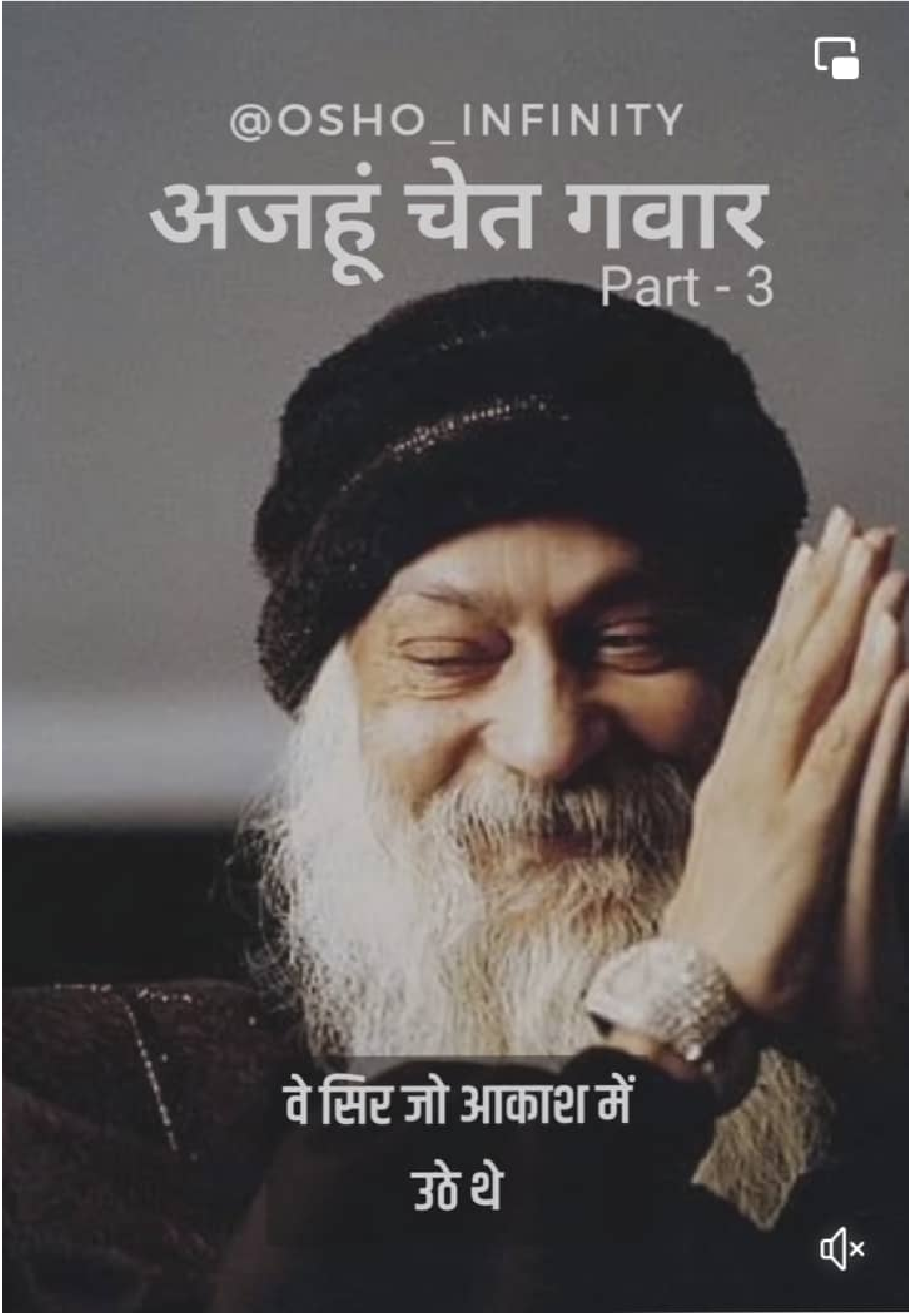

CamScanner

7:44 pm 35%

Once Sri Ramana Maharshi noticed that
a dog had been chased away....

He remarked:
"Just because you are in the body of a human
you think you are a human being,
and because he is in the body of a dog
you think him a dog...
Why don't you think of him as a Mahatma,
and treat him as a great person...
Why do you treat him like a dog?"

Sri Ramana Maharshi...

> एक बार श्री रमण महर्षि ने देखा कि
> एक कुत्ते को भगा दिया गया था....
>
> उन्होंने टिप्पणी की:
> "सिर्फ इसलिए कि आप मानव के शरीर में हैं
> तुम समझते हो कि तुम इंसान हो,
> और क्योंकि वह एक कुत्ते के शरीर में है
> आप उसे एक कुत्ते समझते हैं ...
> तुम इनको महात्मा क्यों नहीं समझते,
> और उसे एक महान व्यक्ति के रूप में व्यवहार करें ...
> तुम उसके साथ कुत्ते की तरह क्यों व्यवहार करते हो? "
>
> श्री रमण महर्षि...
> · Rate this translation

CamScanner

इस जन्म में
न चूकना।
यह साँसे बहुत अनमोल हैं
बहुत पीड़ा पाती हैं यह साँसें ,
जब देह के भीतर जाती हैं और
परमात्मा की बजाय
आपके अहंकार से मुलाक़ात कर बैठती हैं।
गिनती की ही मिली हैं ये साँसें।
इन्हें व्यर्थ न जाने देना।
यह परमात्मा की आपके लिए.. भेंट है।
इससे पहले कि देह से
इनका नाता टूटे
परमात्मा को अपने जीवन में
धारण कर लेना।
ध्यान रखना कि..
एक एक सांस का हिसाब है..!!

ओशो
अहोभाव

CamScanner

9:57 pm 4G 10%

लेकिन मेरी खुशी इस हीरे में नहीं है बल्कि मेरे भीतर है, समुद्र की लहरों की तरह ही दौलत और शोहरत आती जाती रहती है...

अगर अपनी खुशी इनसे जोड़ेंगे तो कभी खुश नहीं रह सकते, बूढ़े व्यक्ति ने हीरा उस महिला को वापस कर दिया और कहा कि यह हीरा तुम रखो और मुझे इससे कई गुना ज्यादा क़ीमती वह समर्पण का भाव दे दो जिसकी वजह से तुमने इतनी आसानी से यह हीरा मुझे दे दिया...

सारी उम्र हम अपने अहंकार को नहीं छोड़ पाते, हम व्यवहार में अनुभव करें तो पायेंगे कि दूसरों को बिना लोभ कुछ अर्पण भी नहीं कर पाते, भगवान को भी कुछ पाने की लालसा से ही प्रसाद चढाते हैं, लालसा पूर्ण नहीं होती तो भगवान को भी बदल लेते हैं, जबकि भगवान तो एक ही है...

समर्पण के बगैर परमात्मा की प्राप्ति असम्भव है और समर्पण ही है जो भक्ति को अपने गंतव्य तक ले जाती है, समर्पण से ही आत्मा परमात्मा में लीन होती है...

जय श्री राधे कृष्ण.....

CamScanner

9:56 pm

समर्पण का भाव...

एक बार एक महिला समुद्र के किनारे रेत पर टहल रही थी, समुद्र की लहरों के साथ कोई एक बहुत चमकदार पत्थर छोर पर आ गया, महिला ने वह नायाब सा दिखने वाला पत्थर उठा लिया, वह पत्थर नहीं असली हीरा था...

महिला ने चुपचाप उसे अपने पर्स में रख लिया, लेकिन उसके हाव-भाव पर बहुत फ़र्क नहीं पड़ा, पास में खड़ा एक बूढ़ा व्यक्ति बड़े ही कौतूहल से यह सब देख रहा था...

अचानक वह अपनी जगह से उठा और उस महिला की ओर बढ़ने लगा, महिला के पास जाकर उस बूढ़े व्यक्ति ने उसके सामने हाथ फैलाये और बोला, मैंने पिछले चार दिनों से कुछ भी नहीं खाया है, क्या तुम मेरी मदद कर सकती हो?

उस महिला ने तुरंत अपना पर्स खोला और कुछ खाने की चीज ढूँढ़ने लगी, उसने देखा बूढ़े की नज़र उस पत्थर पर है जिसे कुछ समय पहले उसने समुद्र तट पर रेत में पड़ा हुआ पाया था...

महिला को पूरी कहानी समझ में आ गयी, उसने झट से वह पत्थर निकाला और उस बूढ़े को दे दिया, बूढ़ा सोचने लगा कि कोई ऐसी क़ीमती चीज़ भला इतनी आसानी से कैसे दे सकता है...

बूढ़े ने गौर से उस पत्थर को देखा वह असली हीरा था बूढ़ा सोच में पड़ गया, इतने में औरत पलट कर वापस अपने रास्ते पर आगे बढ़ चुकी थी...

बूढ़े ने उस औरत से पूछा, क्या तुम जानती हो कि यह एक बेशकीमती हीरा है?

महिला ने जवाब देते हुए कहा, जी हाँ और मुझे यक़ीन है कि यह हीरा ही है...

लेकिन मेरी खुशी इस हीरे में नहीं है बल्कि मेरे भीतर है, समुद्र की लहरों की तरह ही दौलत और शोहरत आती जाती रहती है...

अगर अपनी खुशी इनसे जोड़ेंगे तो कभी खुश नहीं रह सकते, बूढ़े व्यक्ति ने हीरा उस महिला को वापस कर दिया और कहा कि यह हीरा तुम रखो और मुझे इससे कई गुना ज्यादा क़ीमती वह समर्पण का भाव दे दो जिसकी वजह से तुमने इतनी आसानी से यह हीरा मुझे दे दिया...

सारी उम्र हम अपने अहंकार को नहीं छोड़ पाते, हम व्यवहार में

CamScanner

CamScanner

अहोभाव

23h ·

अहोभाव

जिसे कुछ करना है, वह इसकी फ़िक्र नही लेता कि लोग क्या कहेंगे । लोग तो कहेंगे ही, चाहे कुछ करे या ना करें । जिसे भी अपना बेस्ट देना है, उसे लोगों की फ़िक्र नही लेनी चाहिए कि कोई क्या कहेगा। यदि चेतना इस पर गयी कि कोई क्या कहेगा , तो हम जीवन में कुछ भी अच्छा नही कर पायेंगे । अपने कृत्यों को स्वयं का आनन्द बनाने के लिए बस स्वयं के अतिरिक्त और किसी की फ़िक्र लेने की आवश्यकता नही है, तभी हम अपना बेस्ट दे पायेंगे । लोगों की राय की फ़िक्र वो करता है, जिसे स्वयं पर ज़रा सा भी भरोसा नही , जिसे स्वयं का कोई सम्मान नहीं। याद रखें लोग तो तब भी कहेंगे , जब हम कुछ नही करते, लोग तो कुछ न कुछ कहेंगे ही। पर इसकी कोई फ़िक्र नही करनी चाहिए।

ओशो

CamScanner

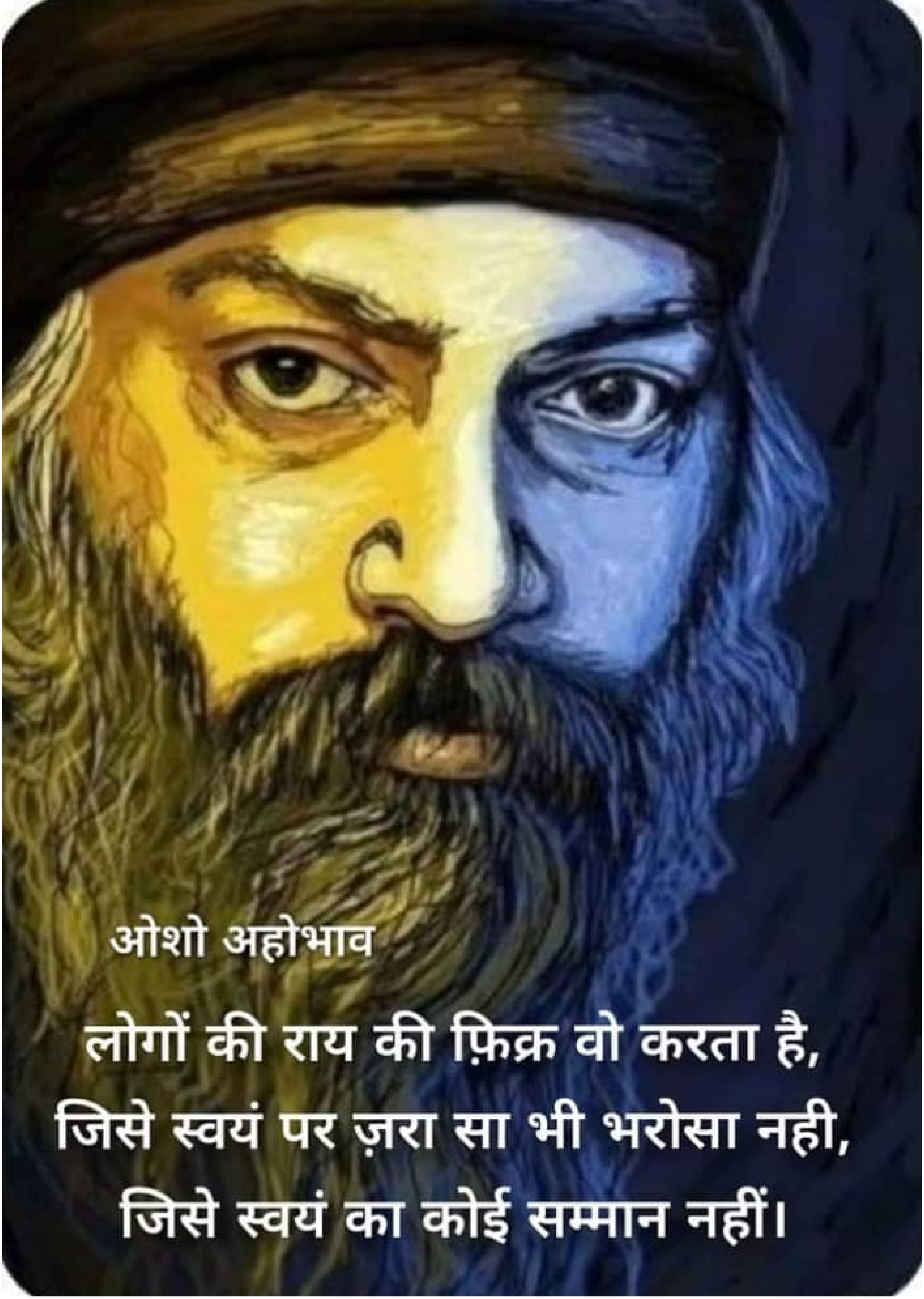
ओशो अहोभाव
लोगों की राय की फ़िक्र वो करता है,
जिसे स्वयं पर ज़रा सा भी भरोसा नही,
जिसे स्वयं का कोई सम्मान नहीं।

CamScanner

9:21 am VoLTE 4G 98%

Saath Denne Ka Vada Kiya Tha

Misaal o maawra hone se pehle
Khuda kya tha khuda hone se pehle

Tabiyat ko tabiyat se badal lo
Tabiyat aashna hone se pehle

Baja hone ki hai sirf ek soorat
Galat hoja baja hone se pehle

Saaz e hasti baja raha hoon main
Jashn e masti mana raha hoon main

Kya ada hai nisaar hone ki
Tujhse pehlu bacha raha hoon main

Kitni pukhta hai meri naadaani
Tujhko tujhse chhupa raha hoon main

Dil dubota hoon chasm e saaki mein
Mai ko mai mein mila raha hoon main
Aapko jeetne ke dhokhe mein
Jaan ki baazi laga raha hoon main

Unko milne ki aarzu mein adam
Apne nazdeek aa raha hoon main

Veerani e ghuman ko aqeedat se sej kar
Sdaadabi e hayaat ka unwaan bana diya
Duniya tere wajood ko karti rahi talaash
Hamne tere khayaal ko yazdaan bana diya

Saath dene ka waada kiya hai
Jaane jaan apna waada nibhaao

Yun na chchodo mujhe raaste mein
Do kadam toh mere saath aao

CamScanner

9:19 am 4G 99%

Othe amla te hone ne navede
Kise nai teri jaat puchni...

Jhoothe maan te aakad teri
Jhoothiyan teriyan baatan
Galaan naal banave pal vich
Dina[days] nu kaliyan raatan
Jhoothe mehal manaare tere
Jhoothiyan teriyan jaatan
Amlan baajho 'Sadik' uthe
Kise nai leniyan baatan
Othe amla te hone ne navede
Kise nai teri jaat puchni

Othe amla te hone ne navede
Kise nai teri jaat puchni...

Kise kaul ghadi pal na khalonaa[standing] aee
Kiti aapni nu saariyan ne rona aee
Hone vakho-vakh sangi-saathi jede
Kise nai teri jaat puchni
Othe amla te hone ne navede
Kise nai teri jaat puchni

Othe amla te hone ne navede
Kise nai teri jaat puchni...

Panchi vaangu udd jana ae
Ik din maar uddaari
Kadar unna di paeni uthe
Amal jina de bhari
Har shai chhadni[to leave] paeni bandiya
Jaan toh jehdi pyari
Aaj turaya koi kal tur jana
'Sadik' vaar-o-vaari
Othe amla te hone ne navede
Kise nai teri jaat puchni

CamScanner

7:48 am 100%

Khwaja E Khwajgan Lyrics - The Very Best of Nusrat Fateh Ali Khan - Top 50 Essentials

Mein Day Raha Hoon Sada Per Sada Ghareeb Nawaz Khawaja-E-Khawajgan Haami-E-Bekasa Iljita Sun Lo Shah-E-Umam K Liyeah Kerdo Kerdo Karam Murshid-E-Mohtaram

Musixmatch
https://www.musixmatch.com › lyrics

Nusrat Fateh Ali Khan - Bandya Nu Jana Painda Hai Lyrics

Ethe baith kise nahi rehna mela do din da Jo banneya so dhehna mela do din da Ethe bandeya parauna e tu aaya Parauneya nu jaana painda e Ethe kise vi nahi ...

People also search for

- Dulhe Ka Sehra lyrics urdu
- Punjabi Sehra song lyrics
- Dulhe Ka Sehra Lyrics in Hindi
- Dulhe Ka Sehra Suhana lagta hai lyrics in English
- Nusrat Fateh Ali Khan Dulhe Ka Sehra Suhana lagta hai
- Dhadkan dhadkan song lyrics

Navbharat Times
https://navbharattimes.indiatimes.com › ...

CamScanner

7:47 am 100%

twitter.com/thakkar_sam

Sameet Thakkar
@thakkar_sameet · 29 Jul 2022 · Follow

This is Pakistani singer Nusrat Fateh Ali Khan, he got more love in India than in Pakistan thanks to Bollywood.

173 1.6K 3.1K

CamScanner

SHASHWAT TRIPTI
अभी से परलोक
संवारने का प्रयास करो।
तब मृत्यु होगी ही नहीं,
तब तो अमरता प्राप्त हो जाती है।
029 राजा

CamScanner

9:29 am 96%

Swami Lokeshanand
3h ·

एक राज्य में राजवंश समाप्त हो गया था, राज्य का उत्तराधिकार किसे मिलता? तो दशकों से एक बड़ी विचित्र व्यवस्था चली आ रही थी। वे जन सामान्य में से ही किसी को राजा चुनते और पाँच वर्ष बाद उसे दूर घने जंगल में छोड़ देते, जहाँ जंगली जानवर उसे फाड़ कर खा जाते। कौन मरना चाहेगा? इसीलिए अपनी खुशी से कोई राजा न बनता, और जो बनता, वह खाने पीने और मौज करने में ही समय बिता देता।
एक बार एक संतसेवी युवक को राजा बनाया गया। वह तो लोक में ही परलोक का चिंतन करने का अभ्यासी था। उसने गद्दी संभालते ही, मंत्रिमंडल का गठन किया। राज्य को चार भागों में बाँटा, और अपने पाँच योग्य मित्रों को मंत्री चुना।
चार मंत्रियों को राज्य के एक एक भाग का, और पाँचवें मंत्री को उस घने जंगल को व्यवस्थित करने का दायित्व सौंपा गया।
पाँचों ही पूरी कर्तव्यनिष्ठा से कार्य करने लगे। राजा भी निरंतर संपर्क में रहता और गुरू जी से विचार विमर्श करता हुआ, सारी व्यवस्था पर दृष्टि रखता।
पाँचों ही स्थानों पर सड़कों का जाल बिछ गया, भवन और पुल बन गए, सुरक्षा व्यवस्था चाक चौबंद हो गई। राज्य तो चमक ही गया, जंगल भी कोई कम नहीं रहा।
योंही पाँच वर्ष बीत गए। राजा को जब जंगल की सीमा पर छोड़ा गया, तब वह अपने गुरूजी, अनेकानेक मित्रों और उनके संबंधी परिजनों के साथ सहर्ष जंगल में प्रवेश कर गया। जहाँ पहले से ही नगर बसा दिया गया था।
शीघ्र ही इसी संतसेवी युवक को पुनः पूरा राज्य सौंप दिया गया।
लोकेशानन्द कहता है कि हमें भी यह मनुष्य शरीर रूपी राज्य कुछ ही समय के लिए मिला है। मृत्यु के भय से, इसे विषय भोग में ही नष्ट मत करो। अभी से परलोक संवारने का प्रयास करो। तब मृत्यु होगी ही नहीं, तब तो अमरता प्राप्त हो जाती है।
लोक भी मिलता है, परलोक भी संवर जाता है।

CamScanner

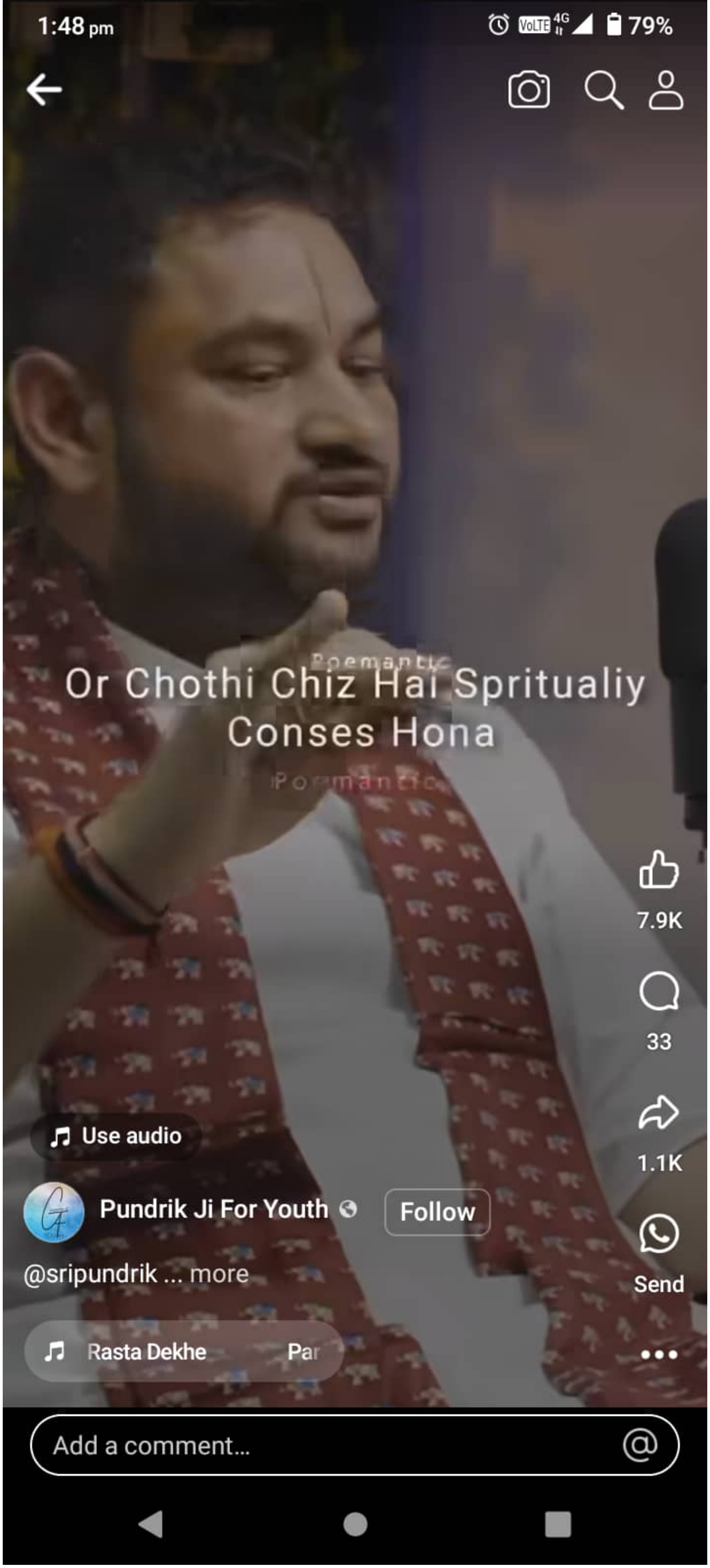
1:48 pm
79%
Or Chothi Chiz Hai Spritualiy
Conses Hona
7.9K
33
1.1K
Send
Use audio
Pundrik Ji For Youth
Follow
@sripundrik ... more
Rasta Dekhe
Par
Add a comment...

CamScanner

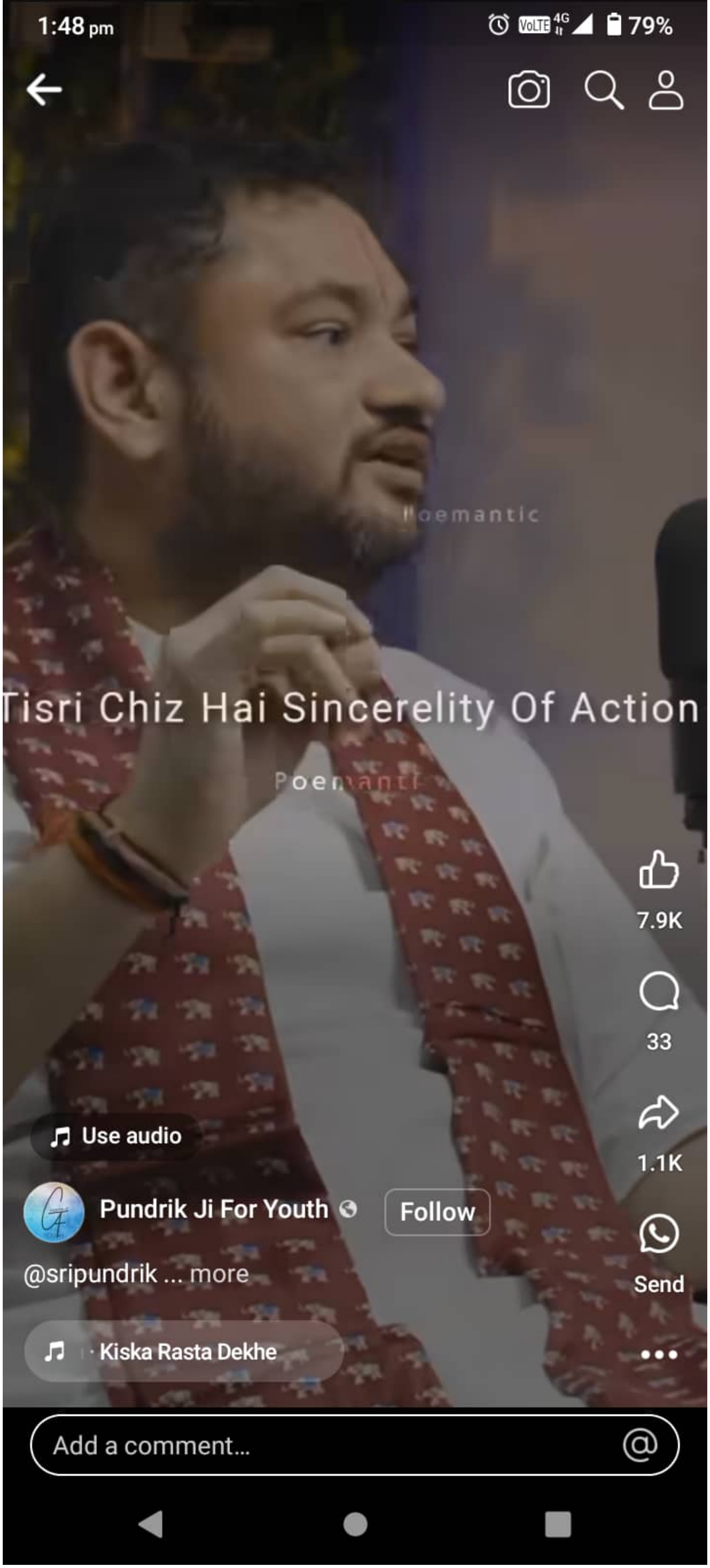
1:48 pm
79%
Tisri Chiz Hai Sincerelity Of Action
7.9K
33
1.1K
Send
Use audio
Pundrik Ji For Youth
Follow
@sripundrik ... more
Kiska Rasta Dekhe
Add a comment...

CamScanner

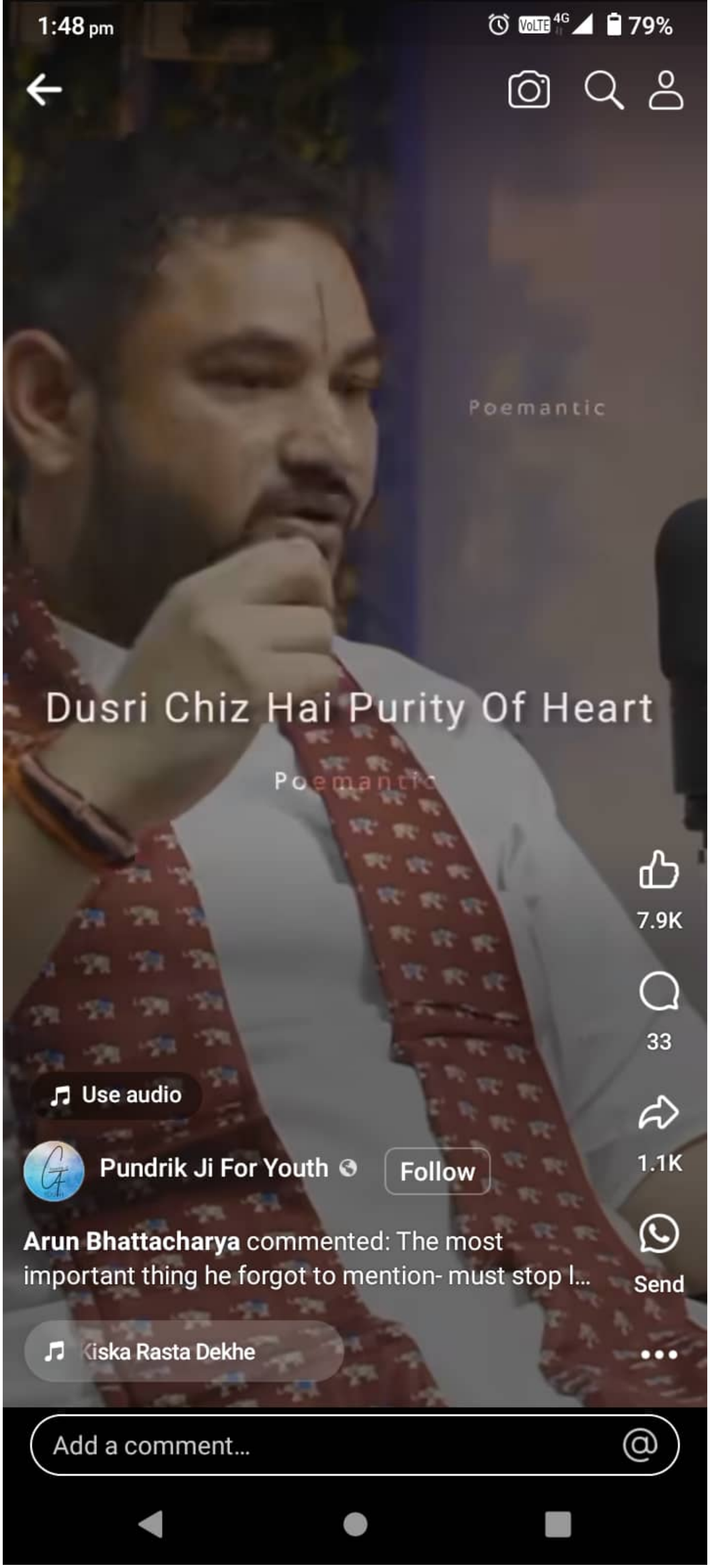
1:48 pm
79%
Poemantic
Dusri Chiz Hai Purity Of Heart
7.9K
33
Use audio
1.1K
Pundrik Ji For Youth
Follow
Arun Bhattacharya commented: The most important thing he forgot to mention- must stop l...
Send
Kiska Rasta Dekhe
Add a comment...

CamScanner

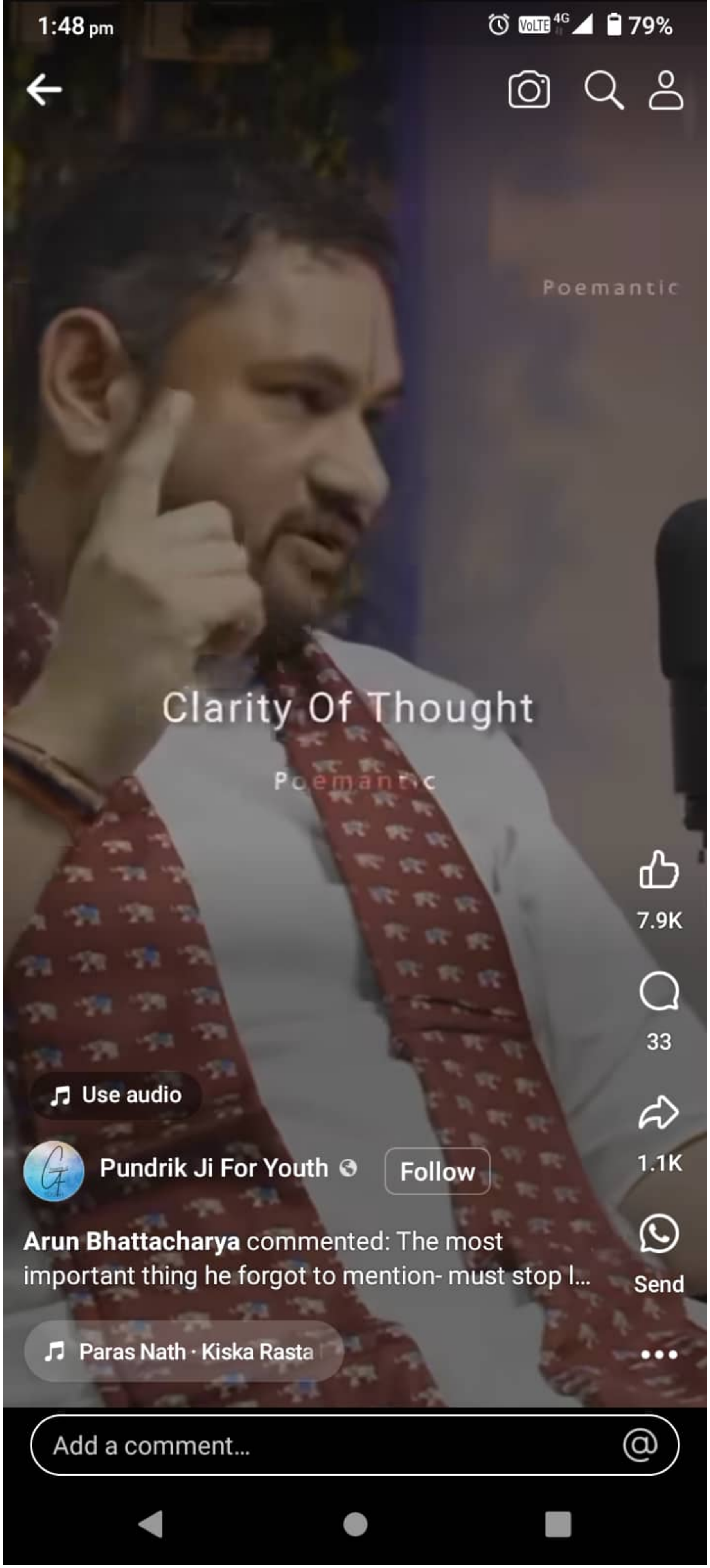
1:48 pm
79%
Poemantic
Clarity Of Thought
Poemantic
7.9K
33
1.1K
Send
Use audio
Pundrik Ji For Youth
Follow
Arun Bhattacharya commented: The most important thing he forgot to mention- must stop l...
Paras Nath · Kiska Rasta
Add a comment...

CamScanner

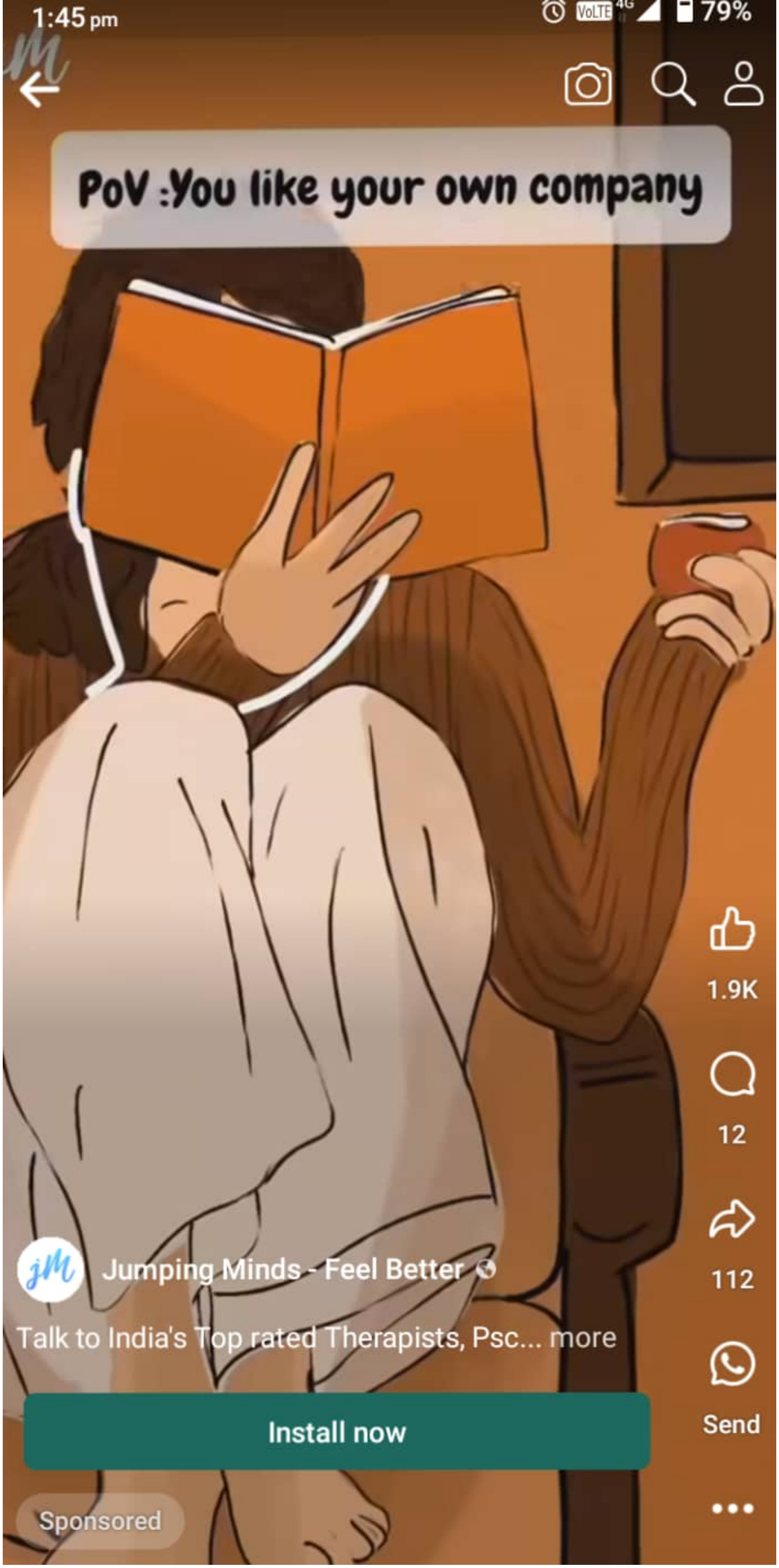
1:45 pm
79%
PoV :You like your own company
1.9K
12
112
Send
Jumping Minds - Feel Better
Talk to India's Top rated Therapists, Psc... more
Install now
Sponsored

CamScanner

CamScanner

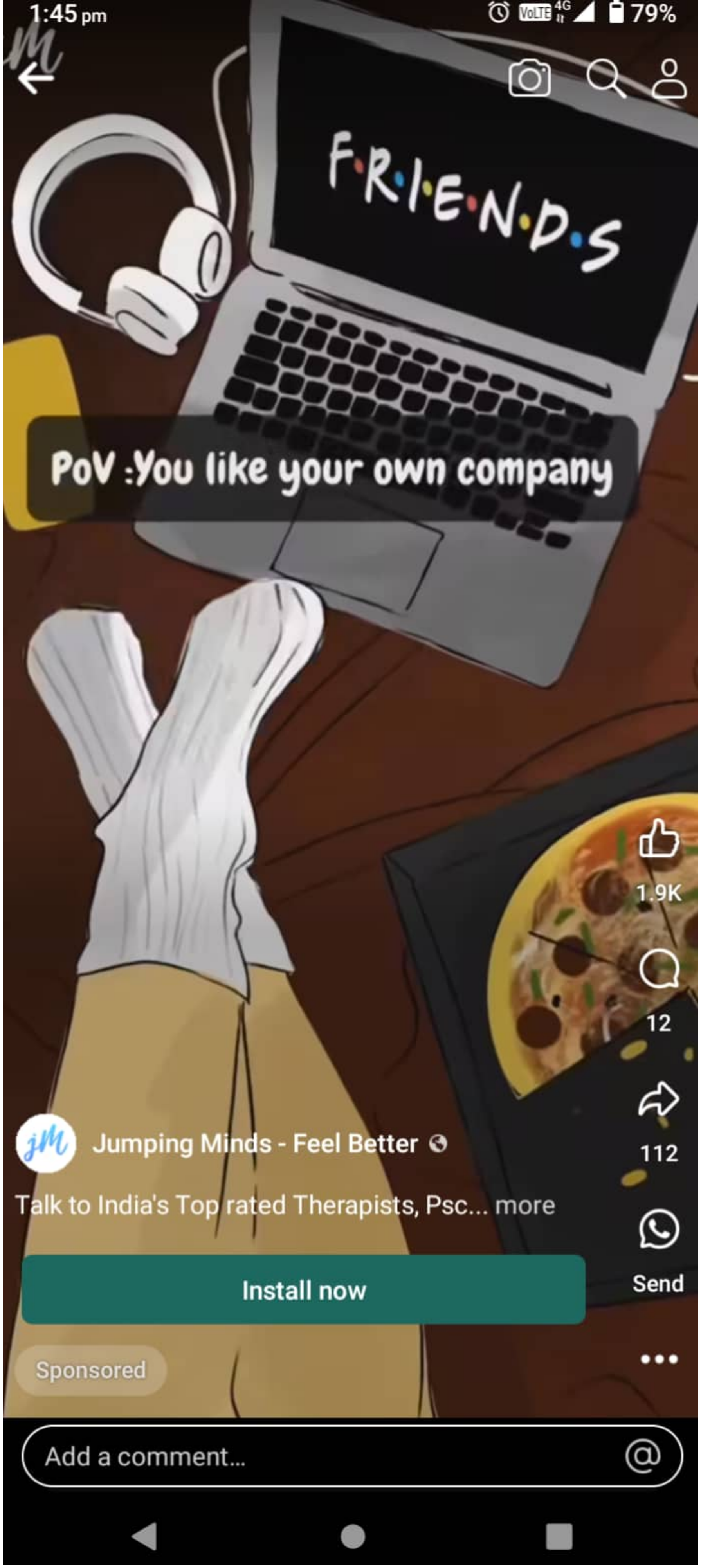
1:45 pm
79%
FRIENDS
PoV :You like your own company
1.9K
12
112
Send
Jumping Minds - Feel Better
Talk to India's Top rated Therapists, Psc... more
Install now
Sponsored
Add a comment...

CamScanner

1:44 pm
80%
क्या हम लोग...
कल्पनाओं में जी र
हैं..??
Osho jagjeet
लोग कल्पनाओं में जी रहे है!!
OSHO
154
19
Send
Osho Jagjeet
सभी मित्रों को ओशो जगजीत के हृदय से नमन।
sh Stroke by desiwebsite

CamScanner

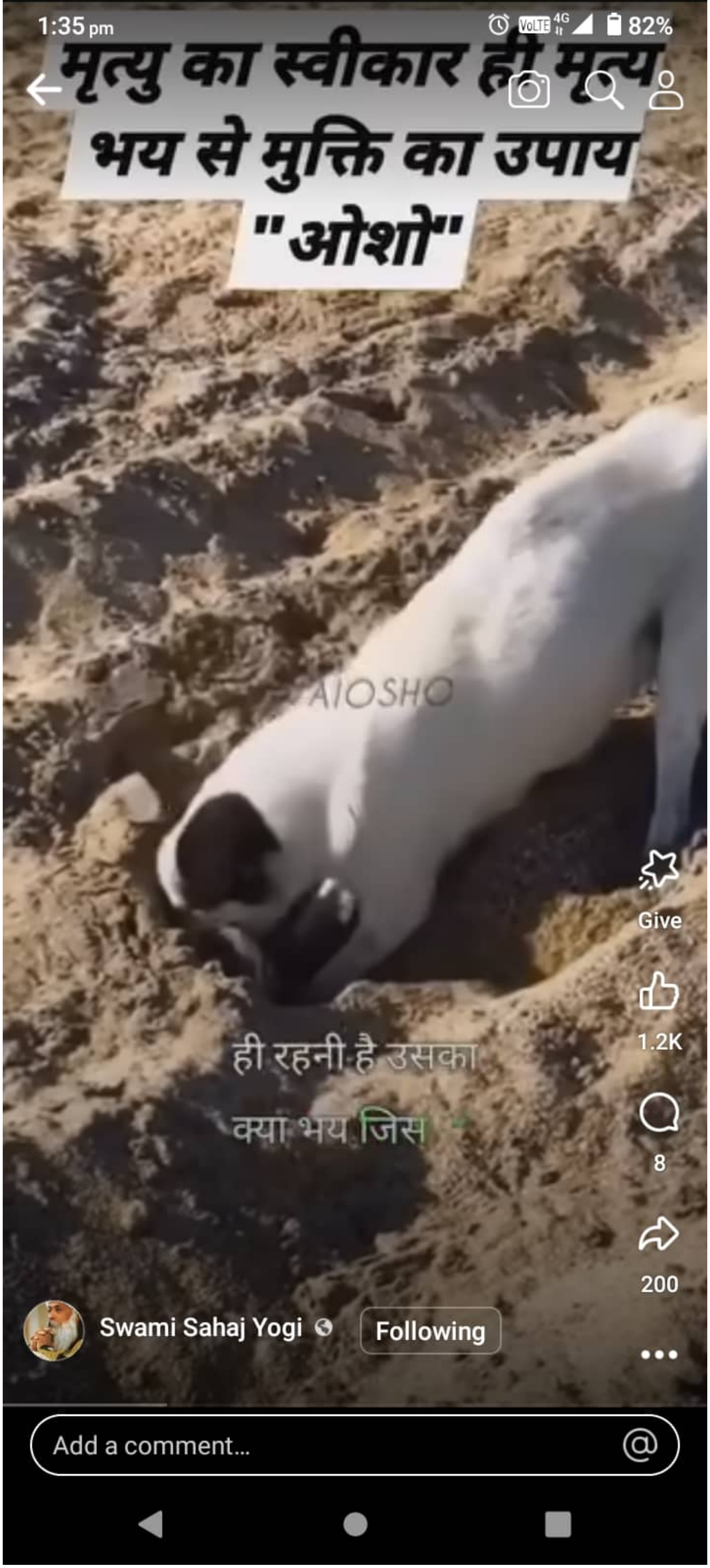
1:35 pm
82%
मृत्यु का स्वीकार ही मृत्यु
भय से मुक्ति का उपाय
"ओशो"
AIOSHO
ही रहनी है उसका
क्या भय जिस
Give
1.2K
8
200
Swami Sahaj Yogi
Following
Add a comment...

CamScanner

11:04 am 97%

क्योंकि तुम तो मृत्यु का अर्थ एक ही जानते हो..मर जाना, मिट जाना। वह दूसरा अर्थ, कि मृत्यु के बाद एक पुनरुज्जीवन है, वह तो तुम्हें पता नहीं है। वह गुरु को पता होगा, लेकिन उसका पता होना तुम्हारे काम नहीं आ सकता। तुम तो उसके हाथ में छुरी देखकर घबड़ा जाओगे।

तो वह छुरी छिपा कर रखता है। फूलों में ढांकता है। शब्दों और सिद्धांतों में रखता है। शास्त्रों में दबा देता है। वह तुम्हें देखने नहीं देता। वह तुम्हें उसी दिन देखने देगा, जिस दिन तुम्हें इस बोध की थोड़ी सी भनक पड़नी शुरू हो जाएगी, कि मरे बिना महाजीवन नहीं मिलता। मिटे बिना परमात्मा होने का कोई उपाय नहीं। खोना ही पाना है।

जिस दिन तुम राजी हो जाओगे, जैसे सागर में नदी खोने को राजी हो जाती है, गिर जाती है, तो खोती थोड़े ही है! पूरा सागर उसका अपना हो जाता है।

मेरा मुझ में कुछ नहीं

ओशो

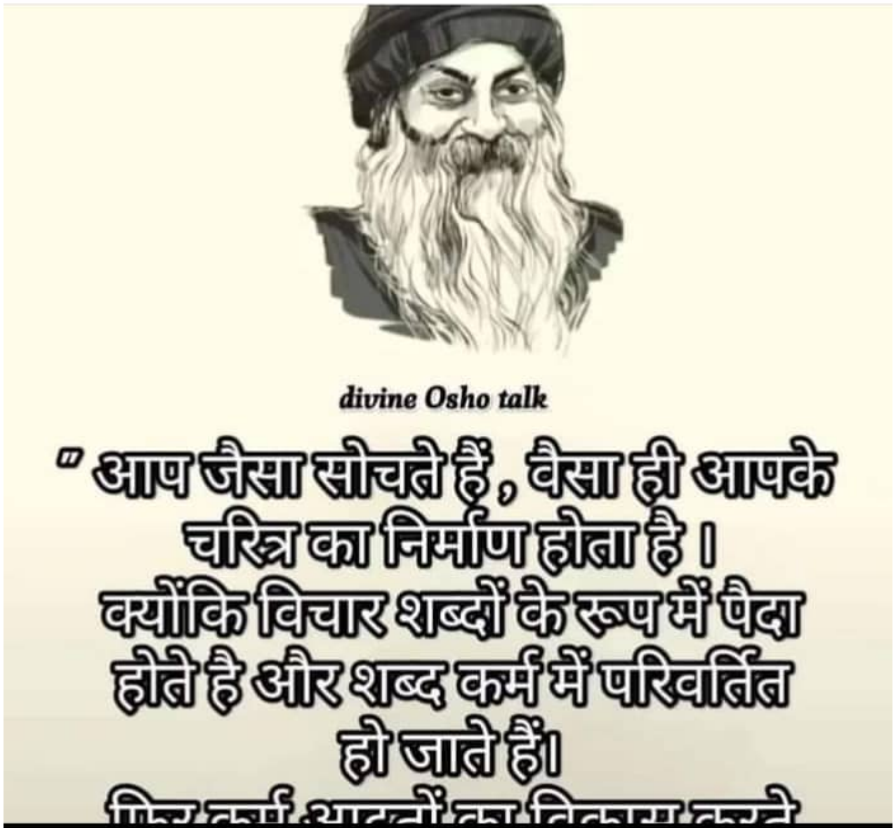

CamScanner

11:04 am 97%

पुराना तो गया, नहीं बचा; नये का जन्म हुआ। रात टूट गई, सुबह हुई। अब सुबह का रात से क्या लेना-देना? सुबह का सूरज और सुबह पक्षियों के गीत और आकाश में फैला किरणों का जाल, इससे क्या संबंध है उस अंधेरी रात का, जो अभी-अभी थी? रात तो मर गई। रात में और दिन में कोई सिलसिला थोड़े ही है! राम और दिन किसी एक ही चीज का फैलाव थोड़े ही मालुम होते हैं। दोनों के बीच एक अंतराल है। रात रात है, दिन दिन है।

जब ध्यान गहरा होगा तो तुम अचानक पाओगे कि तुम्हारा जो कल तक था, तुम्हारा अतीत, वह ऐसे ही चला गया, जैसे सुबह रात खो जाती है। और एक नये व्यक्तित्व का जन्म हुआ, एक नई आत्मा बिल्कुल कुंआरी और ताजी पैदा हुई; जिससे तुम अपरिचित थे, जिसे तुमने कभी जाना ही न था। यह द्वार भी है तुम्हारे भीतर। यह तुमने कभी खोला ही न था।

और इस द्वार के भीतर परमात्मा विराजमान है सिंहासन पर। इसकी तुम्हें कभी भनक भी न पड़ी थी। तुम तो अपने घर के बाहर-बाहर जी लिए थे। तुम तो भीतर कभी आए ही न थे। यह जो भीतर आया है, वह बिल्कुल नया है। मृत्यु का यही अर्थ है।

गुरु मृत्यु है; इसका अर्थ है, कि गुरु के पास तुम्हारा अतीत, तुम्हारा जराजीर्ण, तुम्हारा पुराना मरेगा; अभिनव का, अलौकिक का, अज्ञात का जन्म होगा।

यह आत्महत्या होती तो एक क्षण में भी हो जाती। तैयार होना पड़ेगा। यह मृत्यु तुम्हारी तैयारी से आएगी। यह तो तुम्हें अहंकार को छोड़ने की क्षमता आएगी, तभी हो सकती है। यह गुरु के हाथ में नहीं है, कि वह तुम्हें हलाल कर दे या झटके से मार डाले। धीरे-धीरे मारे, या जल्दी मार डाले; यह तुम्हारे हाथ में है। अगर तुम राजी हो, तो एक क्षण में भी गुरु मार डाल सकता है। गुरु को क्या अड़चन है? तुम्हारी देर से ही देर होती है। लेकिन तुम राजी नहीं हो, इसलिए गुरु तुम्हें लुभाता है, समझाता है, बुझाता है, राजी करता है। हजार बातें समझाता है, जिनके बिना समझाए चल जाता। लेकिन तब तुम भाग खड़े होते। तब तुम डर जाते। तब तुम भयभीत हो जाते।

CamScanner

11:04 am 97%

जब गुरु स्वयं शिष्य की मौत ही है, तो झटके से क्यों नहीं मार डालते? हलाल क्यों करते हैं?

कारण है। एक छोटी कहानी से कहूं। एक आदमी दांत के डाक्टर के पास गया। उसका दांत निकाला गया। लेकिन उसने इतना शोरगुल मचाया और इतनी हुल्लड़ की कि बाकी मरीज जो आए थे, वे सब भाग गए। जब डाक्टर ने उसको अपना बिल दिया, तो वह बिल साधारण से आठ गुना ज्यादा था। उस आदमी ने कहा, क्या मजाक कर रहे हो? कभी सुना है, एक दांत निकालने का इतना पैसा? यह तो आठ-दस गुना ज्यादा मालूम पड़ता है।

उस डाक्टर ने कहा कि नहीं, वे जो आठ मरीज भाग गए, उनका पैसा कौन देगा?

तुम्हें एक झटके से तो मार डालूं, मगर और मरीज भाग जाएंगे। ऐसे धीरे-धीरे हलाल करना पड़ता है। और जैसे-जैसे तुम तैयार होते हो, वैसे-वैसे ही मारे जा सकते हो। क्योंकि मृत्यु कोई साधारण घटना नहीं है।

गुरु के पास जो मृत्यु घटित होती है, वह तो परम घटना है। वह तो परम जीवन का द्वार है। उसकी तुम्हारी तैयारी भी तो होनी चाहिए। वह कोई आत्महत्या थोड़े ही है, कि जिसने चाहा, उसने कर ली। आत्महत्या के लिए कोई गुणधर्म तो नहीं चाहिए। कोई भी कूद पड़े पहाड़ से मर जाएगा। पानी में गिर पड़े, डूब जाएगा। कुएं में गिर जाए, मर जाएगा। जहर खा ले।

आत्महत्या तो नहीं है, गुरु के पास जो घटना घटती है, वह तो परम-मृत्यु है। उसको ही तो हमने समाधि कहा है।

यह हमारा शब्द 'समाधि' बड़ा बहुमूल्य है। जब संन्यासी मरता है तो उसकी कब्र को भी हम समाधि कहते हैं। और जब कोई व्यक्ति ध्यान को उपलब्ध होता है तब भी उसको हम समाधि कहते हैं। वह भी एक कब्र बन गई।

CamScanner

divine Osho talk

" आप जैसा सोचते हैं , वैसा ही आपके चरित्र का निर्माण होता है ।
क्योंकि विचार शब्दों के रूप में पैदा होते है और शब्द कर्म में परिवर्तित हो जाते हैं।
फिर कर्म आदतों का विकास करते हैं और आदतें चरित्र का निर्माण करते है ।

ओशो

CamScanner

CamScanner

5:06 pm 58%

तुमने कहानी सुनी है, जिस व्यक्ति ने. गुरुत्वाकषण का सिद्धांत खोजा, न्यूटन ने, वह एक बगीचे में बैठा है और एक सेव का फल वृक्ष पर पक गया और गिरा। उस वृक्ष से गिरते फल को देखकर उसके मन में जिज्ञासा उठी कि हर चीज नीचे की तरफ ही क्यों गिरती है? पत्थर को ऊपर फेंकते हैं, वह भी नीचे लोट आता है। छलाँग लगाओ, छलाँग पूरी भी नहीं हो पाती कि वापिस जमीन पर आ जाते हो। हर चीज जमीन पर लौट आती है। इससे उसने गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत निकाला कि जमीन खींचती है चीजों को अपनी तरफ।

यह अधूरा सिद्धांत है।

अगर मेरा कहीं न्यूटन से मिलना हो जाए तो उससे में कहूँ कि तूने यह प्रश्न तो पूछा, लेकिन इससे भी गहरा प्रश्न यह था कि फल यह ऊपर पहुँचा कैसे? हमने तो बीज बोया था जमीन में, हमने तो गड्ढे में डाला था बीज, फल लगा आकाश में! यह फल चढ़ा कैसे? फल टुटकर गिरता है तो जमीन पर गिरता है, यह सच है। तो इससे एक सिद्धांत तय होता है कि जमीन खींचती है। मगर कोई ताकत होनी चाहिए जो ऊपर की तरफ भी खींचती है, नहीं तो वृक्ष उठेगा ही कैसे?

चमत्कार है वृक्ष का उठना! होना नहीं चाहिए, नियम के अनुकूल नहीं है। और ऊपर की फुनगी तक भी पानी की धार पहुँचती है। कोई पंप भी नहीं लगा हुआ है। ऊपर की आखिरी फुनगी तक जल-गर उठती है–उठना पड़ता है; गुरुत्वाकर्षण के नियम को तोड़कर उठती है।

कोई नीचे की तरफ खींच रहा है, कोई ऊपर की तरफ भी खींच रहा है, तुम कहाँ खिंचोगे, तुम पर निर्भर है। बीज अगर: टूटे न, तो नीचे की तरफ जाएगा बीज अगर टूट जाए तो ऊपर जाएगा। अहंकार अगर टूटे न, तो नीचे की तरफ ले जाता है, नर्क की यात्रा करवाएगा; अहंकार अगर टूट जाए, तो सारा स्वर्ग तुम्हारा है, तुम्हारे लिए प्रतीक्षा कर रहा है-ऊपर की तरफ ले जाएगा। अहंकार टूटे न तो पत्थर है, छाती में लटकी चट्टान है-उड़ोगे कैसे? –अहंकार टूट जाए तो पंख। फिर खूब उड़ान हो सकती है।

ओशो

CamScanner

5:13 pm 56%

Things People Learn Too Late

1. Everything is temporary.
2. Change is the currency of growth.
3. Happiness is a choice.
4. Family matters the most.
5. Health is the ultimate wealth.
6. Habits define your life.
7. The biggest risk is taking no risk.
8. Save and invest early.
9. Don't take everything too personal.
10. Time doesn't wait for anyone.
11. Wisdom often follows mistakes.
12. Failure's tuition: priceless education.

3

2.2K

29

1.5K

Life's Ideal Follow

William Buckley commented: And why are you telling me that I learned it too late? What it's too l

Add a comment

CamScanner

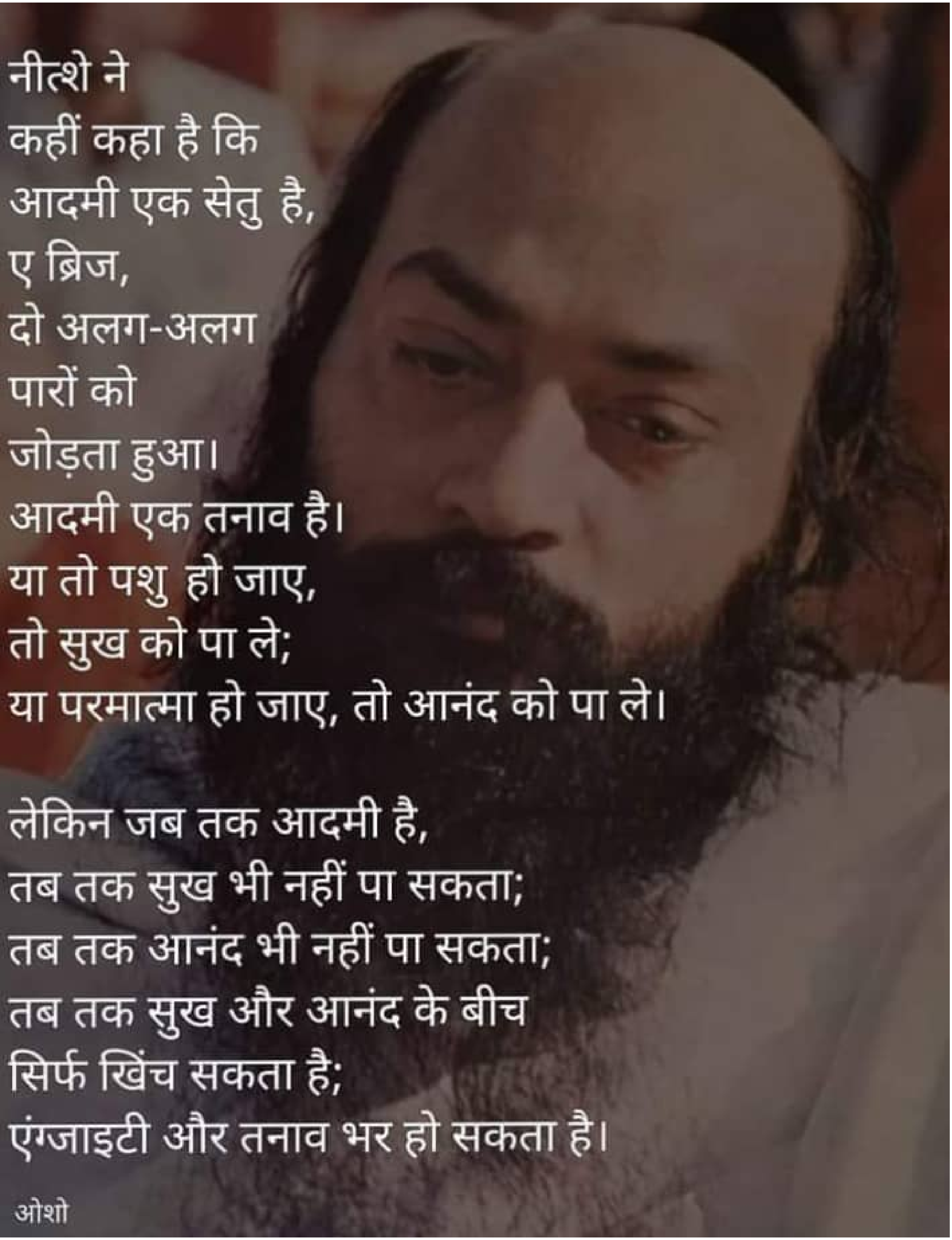
नीत्शे ने
कहीं कहा है कि
आदमी एक सेतु है,
ए ब्रिज,
दो अलग-अलग
पारों को
जोड़ता हुआ।
आदमी एक तनाव है।
या तो पशु हो जाए,
तो सुख को पा ले;
या परमात्मा हो जाए, तो आनंद को पा ले।
लेकिन जब तक आदमी है,
तब तक सुख भी नहीं पा सकता;
तब तक आनंद भी नहीं पा सकता;
तब तक सुख और आनंद के बीच
सिर्फ खिंच सकता है;
एंग्जाइटी और तनाव भर हो सकता है।
ओशो

CamScanner

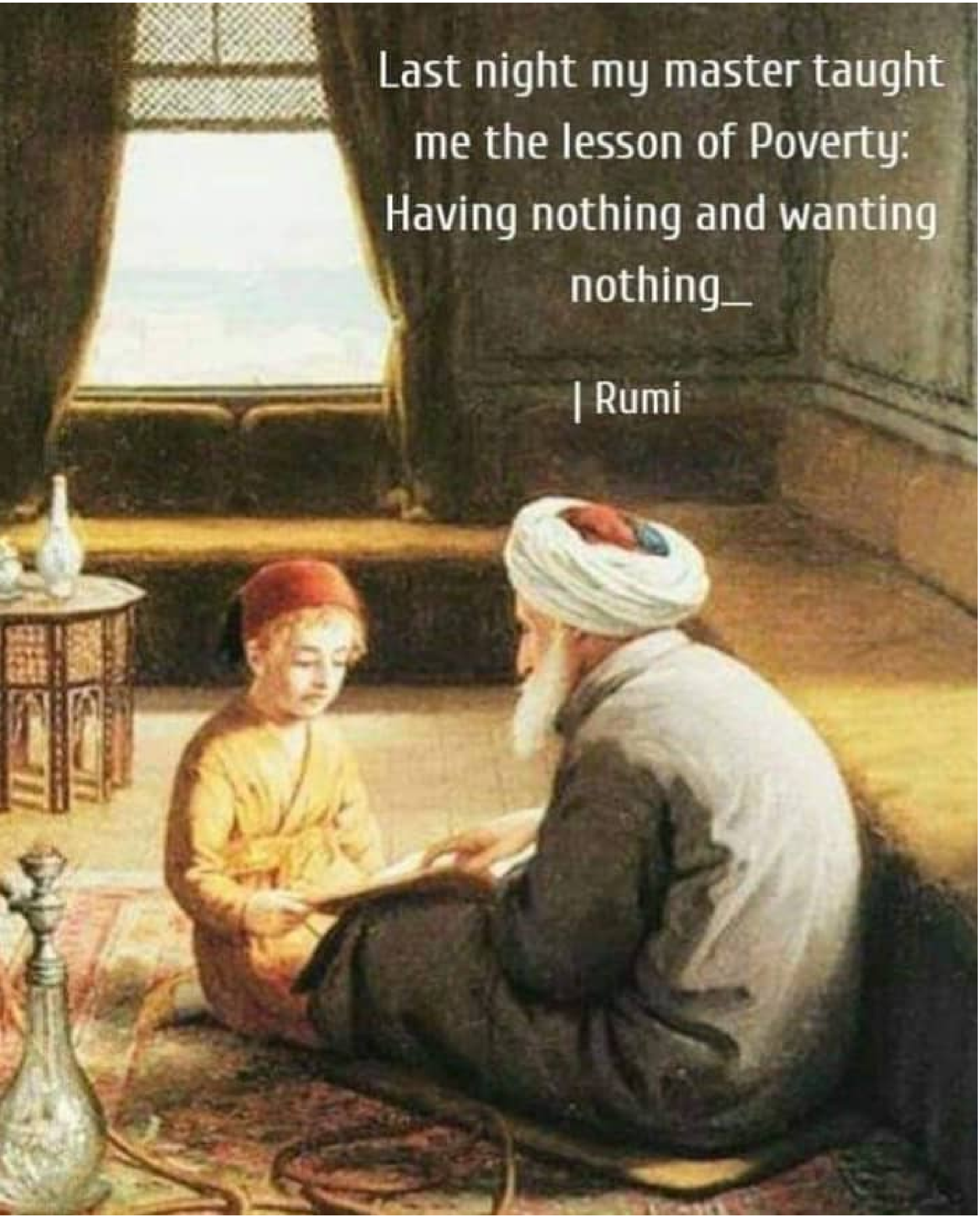
Last night my master taught
me the lesson of Poverty:
Having nothing and wanting
nothing_
| Rumi

CamScanner

5:41 pm 51%

Posts About Videos Photos More

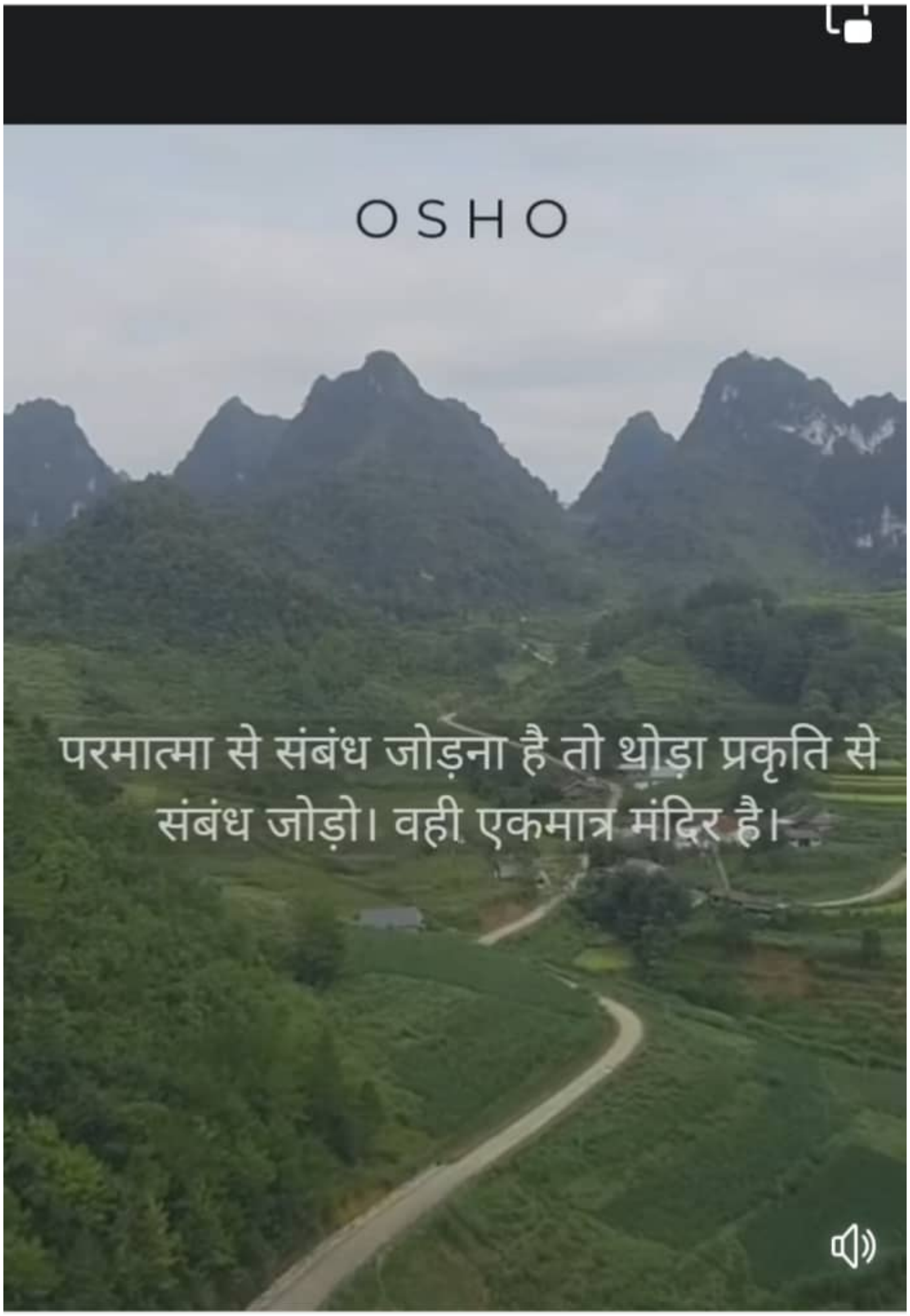

188 2 comments • 66 shares • 11K views

Like Comment Send Share

नवनीत विचार
25 Nov ·

CamScanner

5:40 pm 51%

Posts About Videos Photos More

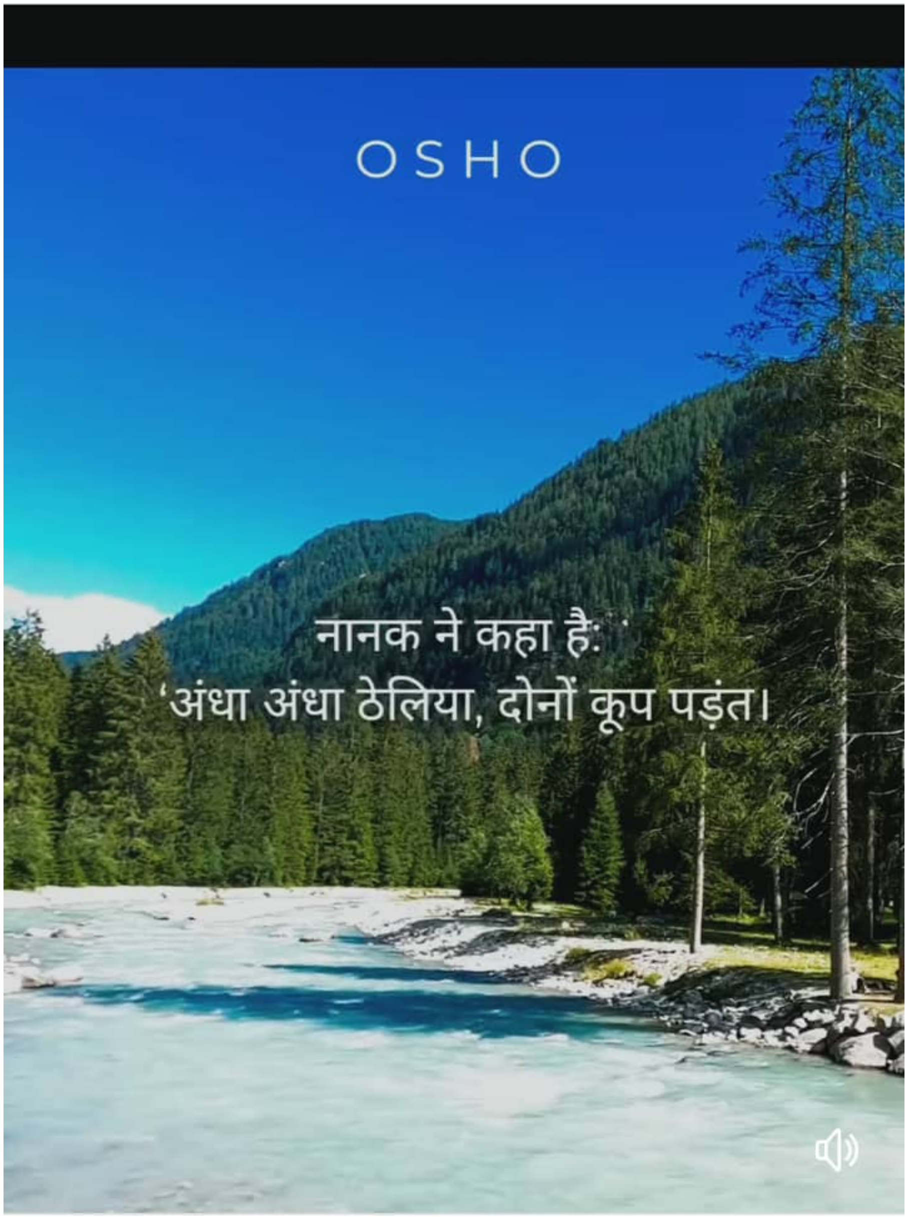

94 3 comments • 82 shares • 6.3K views

Like Comment Send Share

नवनीत विचार
2 Dec ·

CamScanner

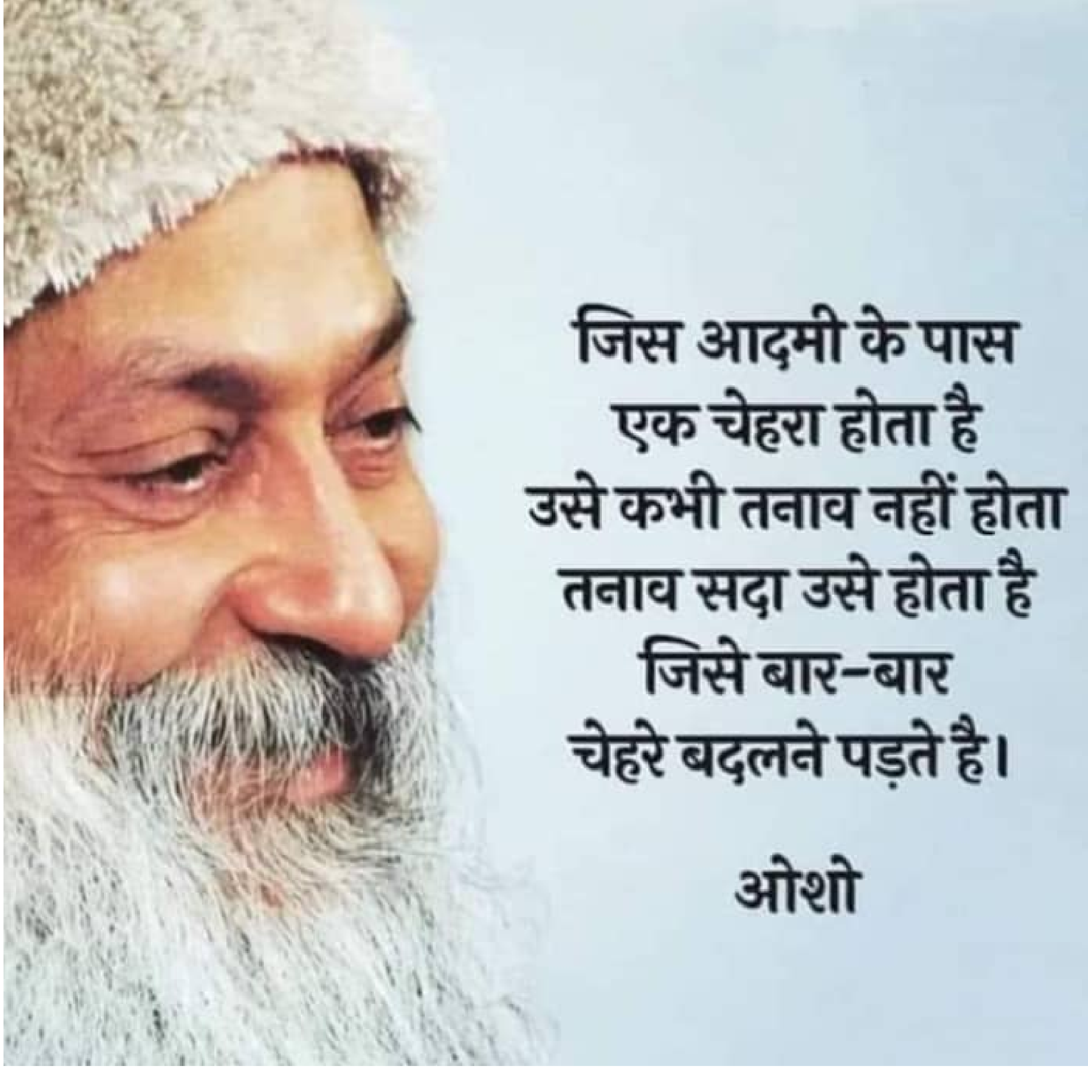
जिस आदमी के पास
एक चेहरा होता है
उसे कभी तनाव नहीं होता
तनाव सदा उसे होता है
जिसे बार-बार
चेहरे बदलने पड़ते है।
ओशो

CamScanner

गुरु जी का साथ

एक सन्त अपने शिष्य के साथ जा रहे थे , अचानक बारिश तेज हो गई और नदी में पानी बढ़ गया । लौटने का रास्ता एक ही था , जो सकरा सा पुल था उस पर से पानी बह रहा था। गुरु ने शिष्य से कहा मेरा हाथ पकड़ो हम पार कर लेंगे पर शिष्य ने हाथ नहीं पकड़ा ।

गुरु जी के बार-बार कहने पर भी शिष्य नहीं माना तो गुरु ने हाथ पकड़ा और खींचकर नदी के पार ले गए और बोले मै इतनी देर से बोल रहा हूँ मेरा हाथ पकड़ लो तो हाथ क्यों नहीं पकड़ा?

इस पर शिष्य ने बहुत ही प्यारा दिल को छू लेने वाला उत्तर दिया - मेरे गुरूवर , मै बहुत ही कमजोर और दुर्बल हूँ, मुझे खुद पर भरोसा नहीं था, यदि मै हाथ पकड़ता, तो छोड़ सकता था लेकिन मुझे आप पर पूरा भरोसा था कि यदि आपने हाथ पकड़ा तो कभी नहीं छोड़ोगे, इसलिए मैंने हाथ नहीं पकड़ा था।

हम भी दुआ करें के हमारा हाथ हमारे गुरु पकड़ लें क्योंकि यदि गुरु ने एक बार हाथ पकड़ लिया तो मंजिल पर ले जाकर ही छोडेंगे।

CamScanner

5:32 pm 52%

Like Comment Send Share

Osho Golden Wings International

18h ·

9 3 shares • 57 views

Like Comment Send Share

Hungama: Movies Music Podcasts

Sponsored ·

Price Drop Alert! Subscribe Yearly for Rs.399 Now

CamScanner

5:30 pm 53%

कि होना क्या है! उस दीए के बुझते ही उसने कहा, अब हमारे भी घर जाने का वक्त आ गया। तुम जिसे अभी प्रकाश समझ रहे हो, वह प्रकाश नहीं है। और तुम जिसे अभी जल समझ रहे हो, वह जल नहीं है। और जिससे तुम अभी प्यास बुझाने की कोशिश कर रहे हो, उससे प्यास बुझेगी नहीं, बढ़े भला!

एक ही बात का खयाल रखो और प्रतीक्षा करो, कि उसका तीर तुम्हारे हृदय में बिंध जाए। और तुम्हारे नख से लेकर सिर तक विरह की पीड़ा में तुम जल उठो। एक ही प्रार्थना हो तुम्हारी अभी, कि तेरा विरह चाहिए। तेरा निमंत्रण चाहिए। तू बुला। तेरी पुकार चाहिए। एक ही प्रार्थना और एक ही भाव रह जाए, कि उससे मिले बिना कोई सुख, कोई आनंद संभव नहीं है। तो फिर देर न लगेगी बिना हाथों के, बिना प्रत्यंचा और तीर के- उसका तीर सदा ही तैयार है। सदा सधा है, तुम इधर हृदय खोलो, उधर से तीर चल पड़ता है। तुम इधर राजी होओ, उसकी पुकार आ जाती है। कहना मुश्किल है कि उसकी पुकार पहले आती है, कि तुम पहले राजी होते हो~ओशो

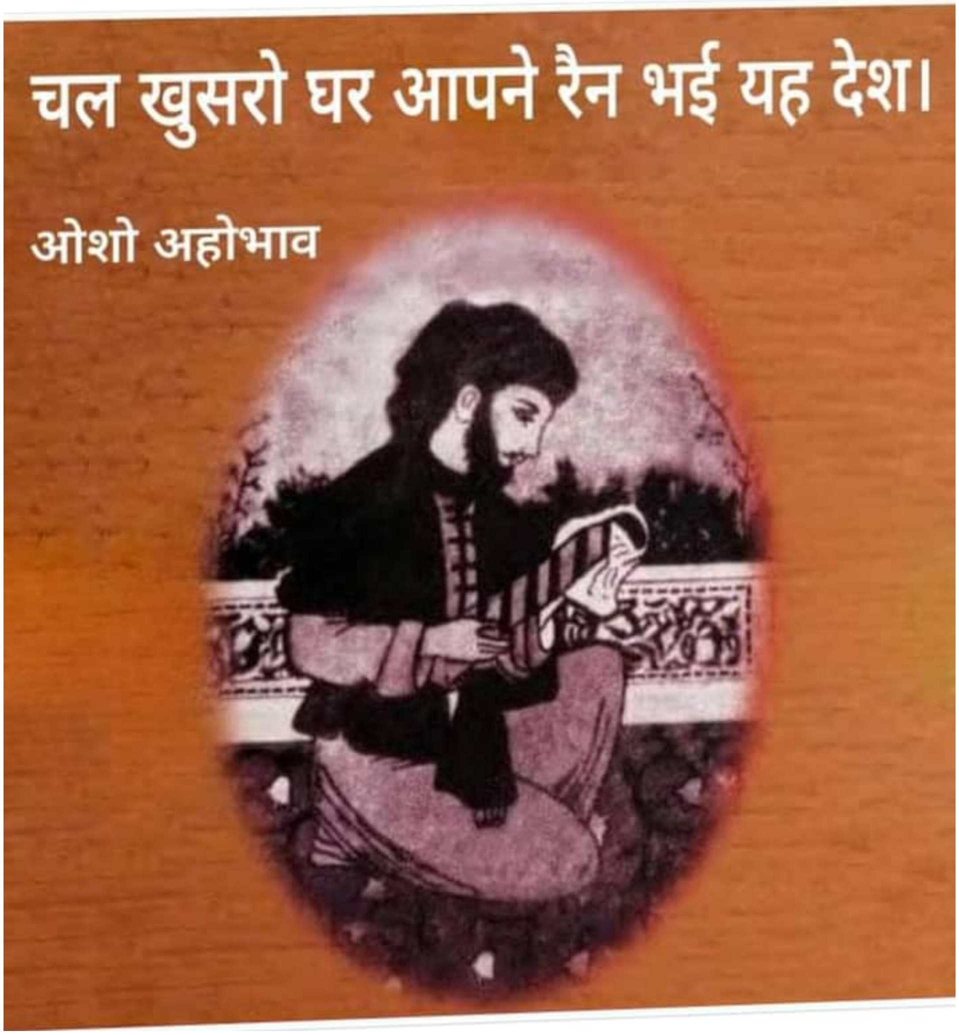

CS CamScanner

5:29 pm 53%

अहोभाव

अमीर खुसरो एक बहुत अदभुत कवि हुआ। वह साधारण कवि न था, ऋषि था। उसने जाना था, वही गाया है। और खूब गहराई से जाना था। उसके गुरु थे निजामुद्दीन औलिया, एक सूफी फकीर। निजामुद्दीन औलिया की मृत्यु हुई, तो हजारों भक्त आए। अमीर खुसरो भी गया अपने गुरु को देखने। लाश रखी थी, फूलों से सजी थी। अमीर खुसरो ने देखी लाश, और कहा,

"गौरी सोवत सेज पर
मुख पर डारे केश
चले खुसरो घर आपने
रैन भई यह देश"

खुसरो ने कहा, "गौरी सोवत सेज पर मुख पर डारे केश।" यह गोरी सो रही है सेज पर। मुख पर केश डाल दिए गए। "चल खुसरो घर आपने-अब यह वक्त हो गया, अब रोशनी चली गई इस संसार से, अब यहां सिर्फ अंधकार है। "चल खुसरो घर आपने रैन भई यह देश। यह देश अब अंधेरा हो गया, रात हो गई।

और कहते हैं, यह पद कहते ही खुसरो गिर पड़ा और उसने प्राण छोड़ दिए। बस, यह आखिरी पद है, जो उसके मुंह से निकला। तुमने जिसे रोशनी जानी है, वह रोशनी नहीं है। खुसरो ने रोशनी देख ली थी निजामुद्दीन औलिया की। उस रोशनी के जाते ही सारा देश अंधकार हो गया-रैन भई इस देश। चल खुसरो घर आपने। अब हम भी अपने घर चलें, अब वक्त-अब यहां कुछ रहने को बचा न।

खुसरो ने निजामुद्दीन औलिया में जीवन का दीया पहली दफा देखा। जाना कि जीवन क्या है! पहचाना, प्रकाश क्या है! होश में आया, कि होना क्या है! उस दीए के बुझते ही उसने कहा, अब हमारे भी घर जाने का वक्त आ गया। तुम जिसे अभी प्रकाश समझ रहे हो, वह प्रकाश नहीं है। और तुम जिसे अभी जल समझ रहे हो, वह जल नहीं है। और जिससे तुम अभी प्यास बुझाने की कोशिश कर रहे हो, उससे प्यास बुझेगी नहीं, बढ़े भला!

एक ही बात का खयाल रखो और प्रतीक्षा करो, कि उसका तीर तुम्हारे हृदय में बिंध जाए। और तुम्हारे नख से लेकर सिर तक विरह की पीड़ा में तुम जल उठो। एक ही प्रार्थना हो तुम्हारी अभी, कि तेरा विरह

CamScanner

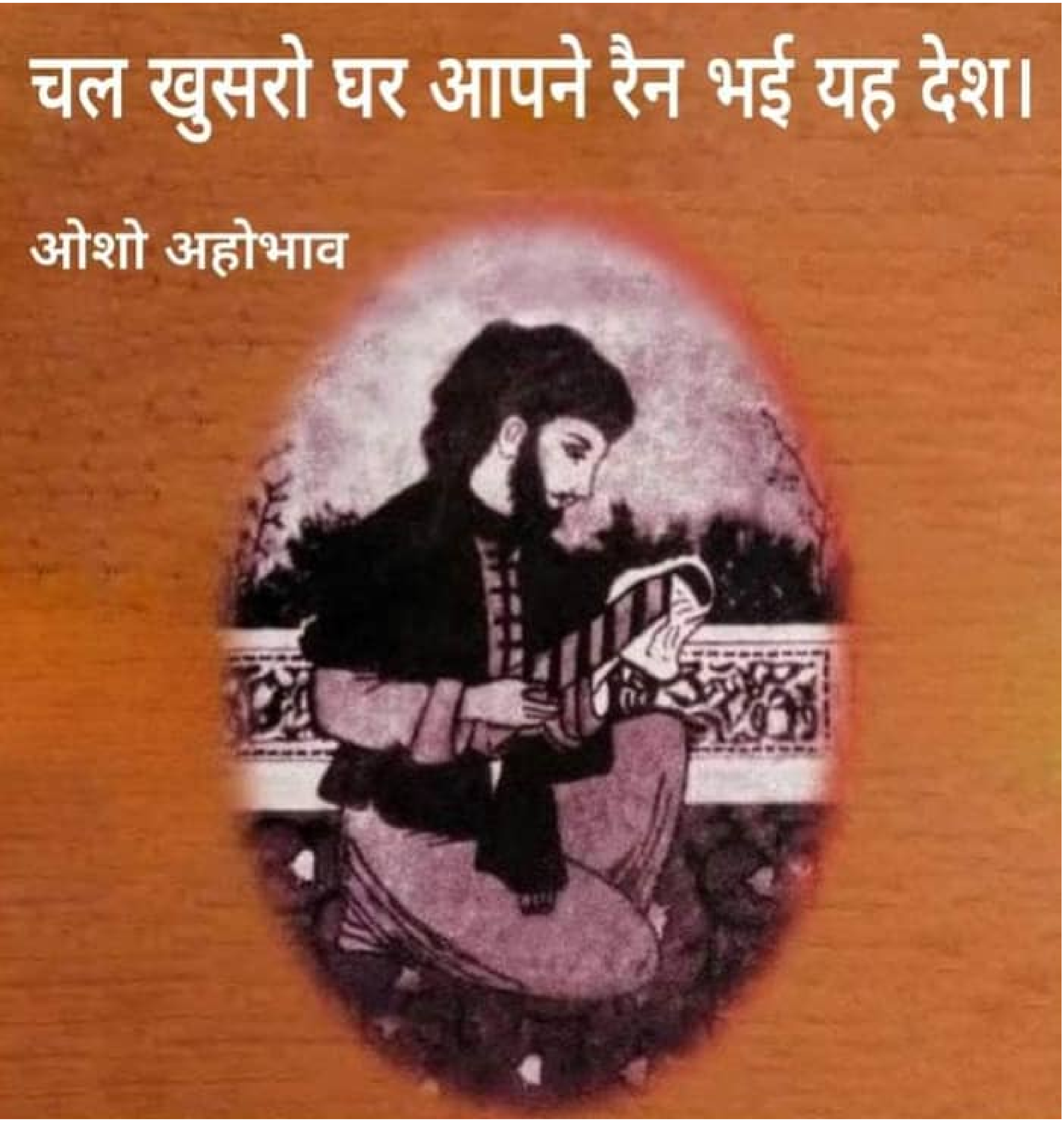

CamScanner

कुछ भी हो जाए, कितनी ही उत्तेजनाएं आएं और शैतान कितना ही हमारे गले को गुदगुदाए, कि कितने ही निकलें पुलिस वाले और सिपाही और संन्यासी, मगर हम आंख बंद किए, अंधेरी गलियों में छिपे हुए, नालियों में दबे हुए पड़े रहेंगे। एक दफा तो अपने गुरु को यह भरोसा आ जाए कि हमने भी तेरी बात सुनी और मानी।

गुरु निकला शाम से, जो उसका काम था कि कोई मिल जाए कुत्ता भौंकते हुए और वह पकड़े, दे उपदेश, पिलाए वही घोंटी। मगर कोई न मिला, बारह बज गए, रात हो गई आधी, सन्नाटा छाया हुआ है! सदगुरु बड़ा परेशान हुआ। उसने कहा, हरामजादे गए कहां! कमबख्त! कोई मिलता ही नहीं।

वह तो बेचारा समझा-समझा कर अपनी खुजलाहट निकाल लेता था। आज समझाने को भी कोई न मिला। एकदम गले में खुजलाहट उठने लगी। जब कोई कुत्ता न दिखा और सब कुत्ते नदारद, तो पहली दफा उसकी नजर सिपाहियों पर गई, पोस्टमैनों पर गई, संन्यासी चले जा रहे! बड़े जोर से जीवन भर का दबा हुआ एकदम उभर कर आने लगा। बहुत रोका, बहुत संयम साधा, बहुत राम-राम जपा, मगर कुछ काम न आए। नहीं रोक सका, एक गली में जाकर भौंक दिया।

उसका भौंकना था कि सारे गांव में क्या भुकभाहट मची, क्योंकि बाकी कुत्तों ने सोचा कोई गद्दार दगा दे गया। जब एक ने दगा दे दिया, हम क्यों पीछे रहें? अरे, हम नाहक दबे-दबाए पड़े हैं! सारे कुत्ते भौंकने लगे। ऐसी भौंक कभी नहीं मची थी। और सदगुरु वापस लौट आया! तीर्थंकर वापस आ गया! उसने कहा, अरे कमबख्तो! कितना समझाया, मगर नहीं, तुम न मानोगे। तुम अपनी जात न बदलोगे। तुम्हारा रोग न जाएगा। फिर भौंक रहे हो। इसी भौंकने में कुत्ते की जातियों का ह्रास हुआ। इसी में हम बरबाद हुए। नहीं तो आज आदमी के गले में पट्टे बांध कर घूमते होते। आ गया कलियुग! क्यों भौंक रहे हो?

फिर बेचारे कुत्ते पूंछ दबा कर चले कि क्या करें! क्या करें! छूटता ही नहीं। आज तो बहुत पक्का कर लिया था छोड़ने का, लेकिन कोई गद्दार दगा दे गया। पता नहीं कौन गद्दार है, किस धोखेबाज ने, किस बेईमान ने भौंक दिया!

सांच-सांच सो सांच(प्रवचन-7)

संकलन-रामजी🙏🌹🌹

CamScanner

5:26 pm 53%

खलील जिब्रान की प्रसिद्ध कहानी है। एक कुत्ता बाकी कुत्तों को समझाता था कि देखो भौंको मत, बेकार मत भौंको। बेकार भौंकने के कारण ही कुत्तों की जाति बरबाद हुई। और जब तक हम बेकार ही भौंकते रहेंगे, शक्ति व्यय होगी। और जब शक्ति भौंकने में ही व्यय हो जाएगी तो और क्या खाक करोगे? अरे, पिछड़े जा रहे हो! आदमियों तक से पिछड़े जा रहे हो!

कुत्तों को बात तो जंचती, कि बात तो सच है; मगर बेचारे कुत्ते आखिर कुत्ते हैं, बिना भौंके कैसे रहें। एकदम चांद निकल आए और कुत्ते बिना भौंके रह जाएं! सिपाही निकले और कुत्ते बिना भौंके रह जाएं! पोस्टमैन निकले, एकदम खरखरी उठती है। संन्यासी को देख लें...। कुत्ते वर्दी के खिलाफ, बड़े दुश्मन! वर्दीधारी देखा कि फिर उनसे नहीं रहा जाता। फिर सब संयम का बांध टूट जाता है। यम-नियम-प्राणायाम इत्यादि सब भ्रष्ट हो जाते हैं। फिर तो वे कहते, अब देखेंगे कल, अभी तो भौंक लें। अभी तो ऐसा मजा आता है भौंकने में!

मगर यह कुत्ता भी ठीक कहता था। इसको लोग पूजते थे कि यह अवतारी पुरुष है। ऐसा कुत्ता ही नहीं देखा जो खुद तो भौंकता ही नहीं, दूसरों को भी नहीं भौंकने देता। अदभुत है!

ऐसे वर्षों आए और गए और उपदेशक समझाता रहा और सुनने वाले सुनते रहे सिर झुका कर कि अब क्या करें, मजबूरी है, पापी हैं हम! मगर यह आदमी तो बड़ा पहुंचा हुआ है! यह कुत्ता कोई साधारण कुत्ता नहीं। यह तो सीधा आकाश से ही आया है, ईश्वर का ही अवतार होना चाहिए। न भौंके। कभी नहीं किसी ने उसको भौंकते देखा। उसका आचरण बिलकुल शुद्ध था, विचार के बिलकुल अनुकूल था। जैसा बाहर वैसा भीतर। संतों में उसकी गिनती थी।

लेकिन एक रात कुत्तों ने तय किया कि अपना गुरु कितना समझाता है और अब उसका बुढ़ापा भी आ गया है, एक दफा तो अपन ऐसा करें कि एक रात तय कर लें। अमावस की रात आ रही है कल। कल रात चाहे कुछ भी हो जाए, कितनी ही उत्तेजनाएं आएं और शैतान कितना ही हमारे गले को गुदगुदाए, कि कितने ही निकलें पुलिस वाले और सिपाही और संन्यासी, मगर हम आंख बंद किए, अंधेरी गलियों में छिपे हुए, नालियों में दबे हुए पड़े रहेंगे। एक दफा तो अपने गुरु को यह भरोसा आ जाए कि हमने भी तेरी बात सुनी और मानी।

गुरु निकला शाम से, जो उसका काम था कि कोई मिल जाए कुत्ता

CamScanner

कबीर कहते हैं: “खाऊं-पिऊं सो सेवा, उठूं-बैठूं सो परिक्रमा।’ {Oshoravi}

CamScanner

5:24 pm 54%

।।ओशो नमन।।

भोजन करो तो ऐसे ही करो जैसे भगवान को ही भोग लगा रहे हो। भोजन तो तुम ही कर रहे हो लेकिन अंततः तो भगवान को ही लग रहा है भोग। वही तो तुम्हारे भीतर आकर भूख बना। उसी ने तो तुम्हारी भूख जगाई। वही तो तुम्हारे भीतर भूखा है। उसके लिए ही तो तुम भोजन दे रहे हो। रस जगाओ। एकाग्रता की बात मत उठाओ। रस का सहज परिणाम एकाग्रता है। जो करते हो उसे रसपूर्ण ढंग से करो। उसमें डुबकी लो। छोटे और बड़े काम नहीं हैं दुनिया में। जिस काम में तुम डुबकी ले लो, वही बड़ा हो जाता है। बुहारी लगाने में डूब जाओ, वही बड़ा हो जाता है।

कबीर कहते हैं: "खाऊं-पिऊं सो सेवा, उठूं-बैठूं सो परिक्रमा।' मेरा उठना बैठना ही उस परमात्मा की परिक्रमा है। और जो मैं खाता-पीता हूं, यही उसकी सेवा है। रस!

मेरे देखे अधिक लोगों के जीवन का कष्ट यही है कि वे जीवन में कहीं भी रस नहीं ले रहे हैं। जो भी कर रहे हैं, बेमन से कर रहे हैं। कर रहे हैं क्योंकि करना है। खींच रहे हैं। जैसे बैलगाड़ी में जुते बैल; ऐसा जीवन को खींच रहे हैं। नाचते हुए, उमंग से भरे हुए नहीं।

अगर तुम कोई ऐसे काम में लगे हो, जिसमें तुम रस ले ही नहीं सकते तो बदलो वह काम। कोई काम जीवन से ज्यादा मूल्यवान नहीं है। अक्सर ऐसा हुआ है, हो रहा है कि लोग ऐसे काम में उलझे हैं जो उनमें रस नहीं जगाता। किसी को कवि होना था, वह जूते बेच रहा है, बाटा की दुकान पर बैठा है। और जिसको बाटा की दुकान पर बैठना था, वह कविता कर रहा है। तो उसकी कविता में जूते की पालिश की गंध आती। आएगी ही।

लोग वहां हैं, जहां उन्हें नहीं होना था। और यह विकृति के कारण है। क्योंकि तुमने कभी अपने सहज भाव को तो खोजा नहीं। किसी के पिता ने कहा कि दुकान करो। इसमें ज्यादा लाभ है। किसी के पिता ने कहा, डाक्टर बन जाओ। किसी की मां को खयाल था, बेटा इंजीनियर बने। परिवार को धुन थी कि बेटा नेता बने।

तो सब धक्का दे रहे हैं एक दूसरे को कि यह बन जाओ, वह बन जाओ।

CamScanner

ओशो रजनीश
Aadi Yogi · 6h

Aadi Yogi
2d

2.5 hrs.

20 मिनट प्रतिदिन ध्यान करने से तनावरहित जीवन के अलग आयाम में प्रवेश हो जाता है ।
शिवोहम ,एक ओमकार ॐ ,अद्वैत अनाहद नाद स्वरूप को मेरा प्रणाम
आदि 🥰🧘🙏
यदि ध्यान मेडिटेशन में इन्टरेस्ट है तो पीछली पोस्ट पढ़े और अपने जीवन को नई दिशा दे ।
यदि किसी को study, job, business,health & relationship में कोई समस्या है तो फॉलो करके हमारे एक्सपर्ट्स की काउंसलिंग ले
Team Online Job Training expert book

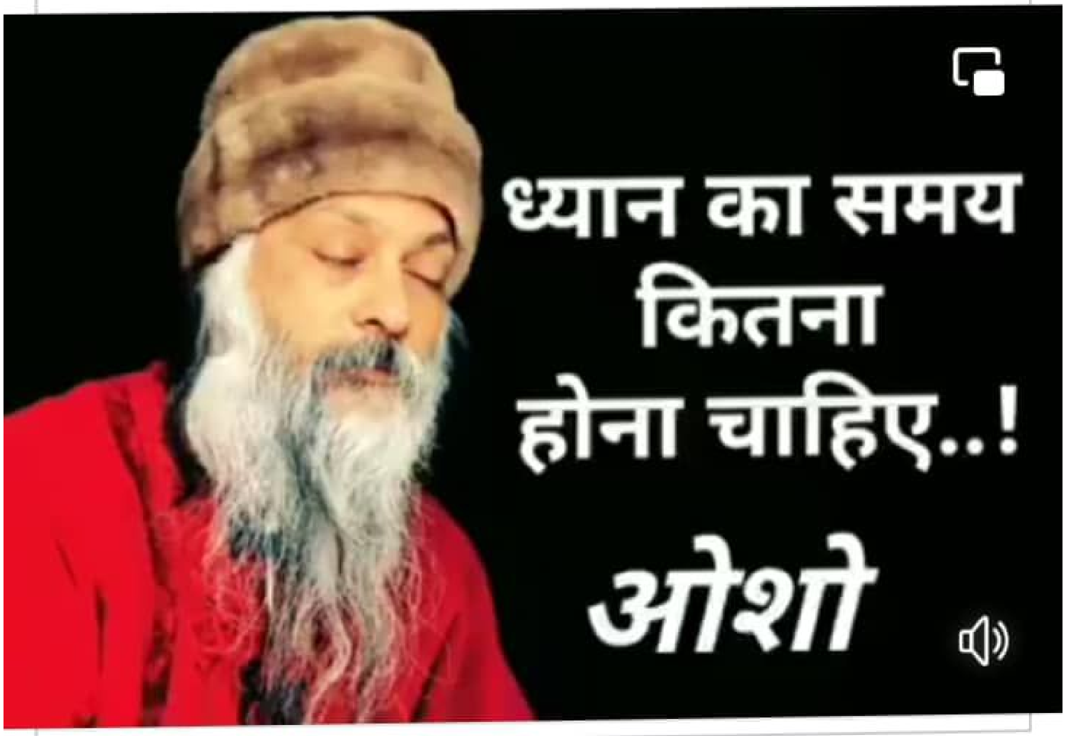

4 · 2 comments • 2 shares • 4K views

Like · Comment · Send · Share

CamScanner

7:49 am 28%

2h ·

एक नवविवाहित समुराई योद्धा, अपनी पत्नी के साथ, प्रसन्नता पूर्वक, एक नदी में, नौका विहार कर रहा था। कि अचानक बहुत भयंकर तूफान आया।
बड़ी बड़ी लहरें उस नौका से टकराने लगीं और नौका जोर से हिचकोले खाने लगी।
नौका डूबने के विचार से, मृत्यु सम्मुख देख कर, वह नवयुवती थर थर काँपने लगी और उस समुराई से चिपक गई।
समुराई योद्धा ने, अपनी पत्नी का हाथ पकड़ा, और झटके से अपने से दूर हटा कर, अपनी तलवार निकाली और उस युवती के गले पर टिका दी।
युवती ने हैरान होकर, समुराई की आँखों में झाँका, और अचानक ही हंसने लगी।
समुराई ने कहा- मेरी तलवार तेरी गर्दन पर टिकी है, मेरा हाथ हिला कि तेरे प्राण गए। फिर भी तूं हंसती है, डरती नहीं है। क्या अब तुझे मृत्यु का भय नहीं है?
वह युवती बोली- हाँ मैं हंसती हूँ, मुझे इस तलवार से मृत्यु का भय नहीं है, क्योंकि मैं जानती हूँ कि तलवार मेरे प्रेमी के हाथ में है। मैं तलवार नहीं देखती, तलवार जिस हाथ में है, वह हाथ देखती हूँ।
समुराई ने तलवार म्यान में रखी, और प्रेमपूर्वक उस के पास बैठ गया। उसका हाथ पकड़ा और कहने लगा- जब तूं तलवार नहीं देखती, तब तूफान क्यों देखती है? क्या तूं नहीं जानती कि तूफान किसके हाथ में है? तुझे मेरे हाथ पर भरोसा है, उस परमात्मा पर भरोसा नहीं है?
नवयुवती मुस्कुराई, उसका भय और कंपन मिट गया, और अब वह शांतचित्त होकर बैठी रही।
कुछ ही समय में तूफान भी शांत हो गया।
लोकेशानन्द कहता है कि हम जगत पर तो भरोसा करते हैं, जगदीश पर भरोसा नहीं करते। यदि हमें जगदीश पर भरोसा हो जाए, तो प्रलय की अग्नि में भी हमारा चित्त कंपायमान न हो। क्या हम नहीं जानते-
"जाको राखे साँइया मार सके ना कोय।
बाल ना बाँका कर सके जो जग बैरी होय॥"

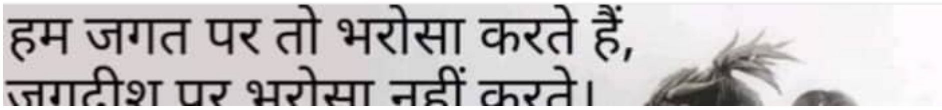

CamScanner

हम जगत पर तो भरोसा करते हैं,
जगदीश पर भरोसा नहीं करते।
यदि हमें जगदीश पर
भरोसा हो जाए, तो
प्रलय की अग्नि में भी
हमारा चित्त कंपायमान न हो।
031 समुराई योद्धा
SHASHWAT ATRIPTI

CamScanner

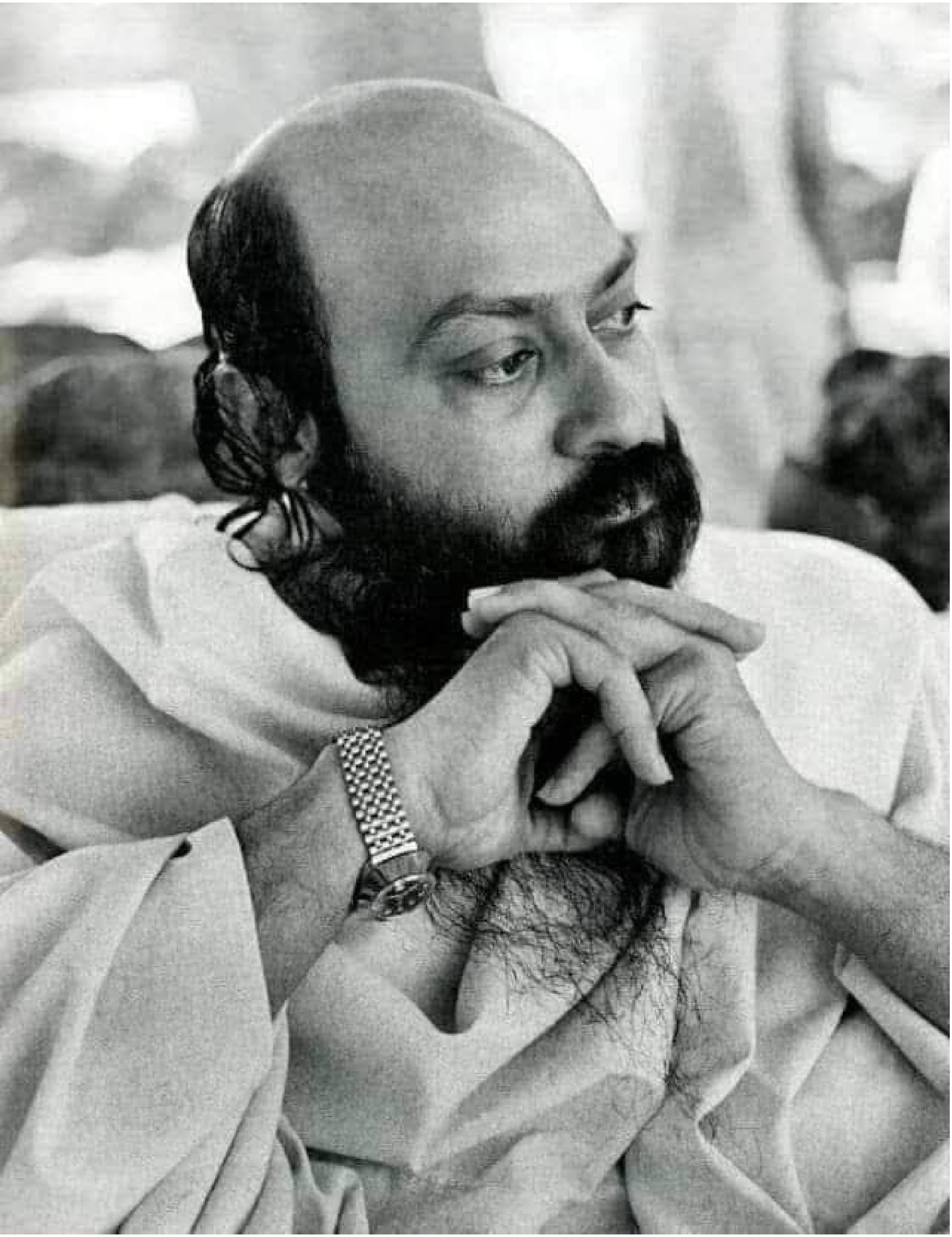

CamScanner

4:31 pm · VoLTE 4G R 29%

जिन ऋषियों को गंगा में परमात्मा दिखा, वे कोई आप जैसे गंगा के तीर्थयात्री नहीं थे, कि गए, और दो पैसे वहां फेंके, और पंडे से पूजा करवाई, और भाग आए अपने पाप गंगा को देकर! जिन्होंने अपने पुण्य गंगा को नहीं दिए, वे गंगा को कभी नहीं जान पाएंगे। पाप भी देकर कहीं कोई जान पा सकता है?

इसलिए हमारे लिए गंगा एक नदी है। हम कितना ही कहें कि पवित्र है, हम भीतर जानते हैं कि बस नदी है। हम कितना ही कहें, पूज्य है, लेकिन सब औपचारिक है।

लेकिन जिन्होंने वर्षों—वर्षों गंगा के तट पर रहकर उसके जीवन की धार से अपनी जीवन की धार मिला दी होगी, उनको पता चला होगा। तब किसी भी गंगा के किनारे पता चल जाएगा। तब किसी खास गंगा के किनारे ही जाने की जरूरत नहीं है, तब कोई भी नदी गंगा हो जाएगी और पवित्र हो जाएगी।

संवेदनाएं उधार नहीं मिलती। लेकिन बुद्धि उधार मिल जाती है। हमारे विश्वविद्यालय, विद्यालय बुद्धि को उधार देने का काम कर रहे हैं। बुद्धि उधार मिल जाती है, शब्द उधार मिल जाते हैं, संवेदनाएं स्वयं जीनी पड़ती हैं। और इसीलिए तो हम संवेदनाओं से धीरे— धीरे टूट गए। क्योंकि हम इतने उधार हो गए हैं कि जो उधार मिल जाए, बाजार से खरीदा जा सके, वह हम खरीद लेते है। जो उधार मिल जाए, वह हम ले लेते हैं, चाहे जिंदगी ही उसके बदले में क्यों न चुकानी पड़े। लेकिन जो खुद जानने से मिलता है, उतनी झंझट, उतना श्रम कोई उठाने को तैयार नहीं है।

तो हमने धीरे— धीरे जीवन के सब संवेदनशील रूप खो दिए। और उन्हीं की वजह से हमें पता नहीं चलता कि परमात्मा भी पुकारता है, वह भी आता है, वह भी हम से मिलने को आतुर है। चारों तरफ से उसके हाथ हमारी तरफ आते हैं, लेकिन हमें संवेदनहीन पाकर वापस लौट जाते हैं। जो व्यक्ति अपनी संवेदना के सभी द्वार खुले रख दे, उस व्यक्ति को, परमात्मा भी मुझसे मिलने को आतुर है, इसका पता चलेगा।

🪷आचार्य रजनीश "ओशो"🪷

🙏❤️🙏

CamScanner

4:31 pm VoLTE 4G R 29%

ओशो का हिन्दी साहित्य

Virendra Kumar · 26m ·

हरमन हेस ने किताब लिखी है, सिद्धार्थ। उसमें सिद्धार्थ एक पात्र है, वह नदी के किनारे वर्षों रहता है, नदी को अनुभव करता है। कभी नदी जोर में होती है, तूफान होता है, आधी होती है, तब नदी का एक रूप प्रकट होता है। कभी नदी शांत होती है, मौन होती है, लीन होती है अपने में, लहर भी नहीं हिलती है, तब नदी का एक और ही रूप होता है। कभी नदी वर्षा की नदी होती है, विक्षिप्त और पागल, सागर की तरफ दौड़ती हुई, उन्मत्त। तब नदी में एक उन्माद होता है, एक मैडनेस होती है, उसका भी अपना आयाम है, अपना अस्तित्व है। और कभी धूप आती है, गर्मी के दिन आते हैं, और नदी सूख जाती है, क्षीण हो जाती है; दीन—दुर्बल हो जाती है, पतली, एक नदी की चमकती धार ही रह जाती है। तब उस नदी की दुर्बलता में, उस नदी के मिट जाने में कुछ और है।

धीरे—धीरे सिद्धार्थ उस नदी के किनारे रहते—रहते नदी की वाणी समझने लगता है। धीरे— धीरे नदी के भाव समझने लगता है, मूड समझने लगता है। नदी कब नाराज है, नदी कब खुश है, कब नदी नाचती है और कब नदी उदास होकर बैठ जाती है! कब दुखी होती है, कब संतप्त होती है, कब प्रफुल्लित होती है, वह उसके सारे स्वाद, उसके सारे अनुभव, नदी की अंतर्व्यथा और नदी का अंतर्जीवन, नदी की आत्मकथा में डूबने लगता है।

धीरे—धीरे नदी उसके लिए बड़ी शिक्षक हो जाती है। वह इतना संवेदनशील हो जाता है कि वह पहले से कह सकता है कि आज सांझ नदी उदास हो जाएगी। वह पहले से कह सकता है कि आज रात नदी नाचेगी। वह पहले से कह सकता है कि आज नदी कुछ गुनगुना रही है, आज उसके प्राणों में कोई गीत है। वर्षों—वर्षों नदी के किनारे रहते—रहते, नदी और उसके बीच जीवंत संबंध हो जाते हैं।

तब नदी ही परमात्मा हो जाएगी। इतनी संवेदना अगर आ जाए, तो अब किसी और परमात्मा को खोजने जाना न पड़ेगा।

जिन ऋषियों को गंगा में परमात्मा दिखा, वे कोई आप जैसे गंगा के

CamScanner

CamScanner

9:49 pm 29%

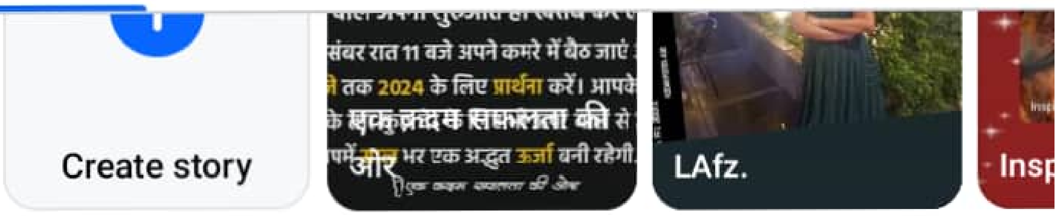

ओशो - जीवन-मृत्यु

दिनेश कौशिक · 51m

एक बार झेन भिक्षु! रिंझाई, बाज़ार से गुजर रहा था, वह एक कसाई की दुकान के पास से गुजरा, और एक ग्राहक को दुकानदार से यह कहते हुए सुना;- "तुम्हारे पास जो सबसे अच्छा मांस हो! वह मुझे दे दो।"

कसाई ने कहा, “क्या बकवास है! मैं कभी भी ऐसी कोई चीज़ नहीं बेचता जो सर्वोत्तम न हो। यहां सब कुछ बेहतरीन है।”

और कहते हैं, यह सुनकर रिंझाई को ज्ञान हो गया।

जैसे ही उसने यह सुना - "यहाँ, सब कुछ बेहतरीन है" - इससे उसके मन में कुछ टूट गया। एक शुद्ध पारदर्शी भेदी अंतर्दृष्टि - सब कुछ सर्वोत्तम है!... और उसे कुछ एहसास हुआ।

संपूर्ण अस्तित्व ऐसा ही है। यह कभी भी सर्वश्रेष्ठ से कम नहीं है।

और उसने नृत्य किया, और जब वह मठ में वापस आया, तो उसके गुरु ने बिना कुछ कहे-सुने ही सीधे उसे गले लगाया और कहा, “तो! – तो ऐसा हुआ है। अब मुझे पूरी कहानी बताओ कि यह कैसे हुआ।”

रिंझाई ने कहा, “यह हास्यास्पद है। यह एक कसाई को अपने ग्राहक से कुछ कहते हुए सुनने से हुआ।”

ओशो..

CamScanner

9:30 am 74%

Swami Lokeshanand
4h ·

पुराने समय की बात है, एक शिक्षार्थी को अपनी शिक्षा पूरी होने पर, गुरूजी के दरवाजे से, अपने घर जाना था।
अकेले जाना था, रेल का समय रात दो बजे का था और रेलवे स्टेशन वहाँ से दस मील दूर था। तो वह लड़का अंधेरा होते ही निकला। जंगल का मामला था, सुनसान रास्ता था और अंधेरा भी था, तो गुरूजी ने उसे अपनी पुरानी लालटेन पकड़ा कर विदा किया।
वह लड़का कुछ ही कदम चला होगा कि वापस लौट आया, और बोला- गुरूजी! आप अपनी लालटेन अपने पास ही रख लें, क्योंकि वैसे भी इसका कोई लाभ तो है नहीं। लम्बा रास्ता है। और लालटेन की रोशनी दो ही कदम तक पड़ती है। इतने से प्रकाश से, इतना लम्बा रास्ता कैसे तय होगा?
गुरूजी ने मुस्कुराते हुए पूछा- तुम एक बार में कितने कदम चलते हो?
लड़का- एक बार में तो एक कदम ही चलना होता है गुरूजी।
गुरूजी बोले- तब परेशानी क्या है? यह दो कदम रास्ता दिखाती है, तुम एक कदम चलते हो। यह फिर दो कदम दिखा देगी, तुम एक कदम फिर चल देना। योंही दो कदम आगे देखते देखते, एक एक कदम चलते रहना, रास्ता तय हो जाएगा।
लड़का बात समझ गया और इसी प्रकार लालटेन का उपयोग कर अपनी मंजिल पर पहुँच गया।
लोकेशानन्द कहता है कि हम भी उस लड़के जैसे ही हैं। हम भी घर से निकलने से पहले ही मंजिल तक का पूरा रास्ता देख लेना चाहते हैं। हम कमियाँ निकालते हैं, बहस करते हैं, सैंकड़ों सवाल पूछते हैं, हजार शंकाएँ उठाते हैं, लाख इंतजाम करना चाहते हैं, पर चलते एक कदम भी नहीं।
ध्यान दें! अपने कदम की लम्बाई पर ध्यान न देकर, रास्ते की लम्बाई का चिंतन करने वाला, कभी मंजिल नहीं पाता।

CS CamScanner

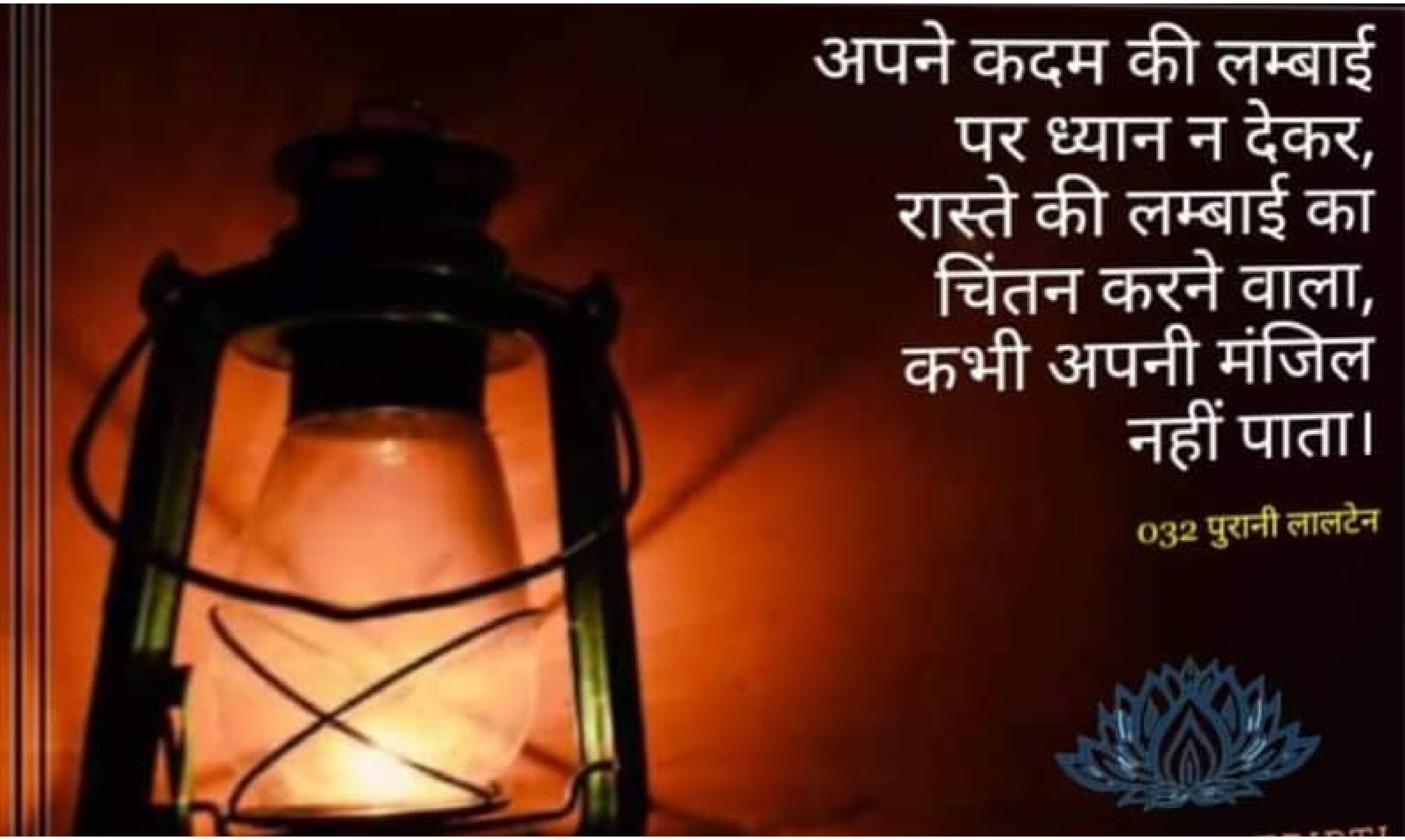
अपने कदम की लम्बाई
पर ध्यान न देकर,
रास्ते की लम्बाई का
चिंतन करने वाला,
कभी अपनी मंजिल
नहीं पाता।
032 पुरानी लालटेन

CamScanner

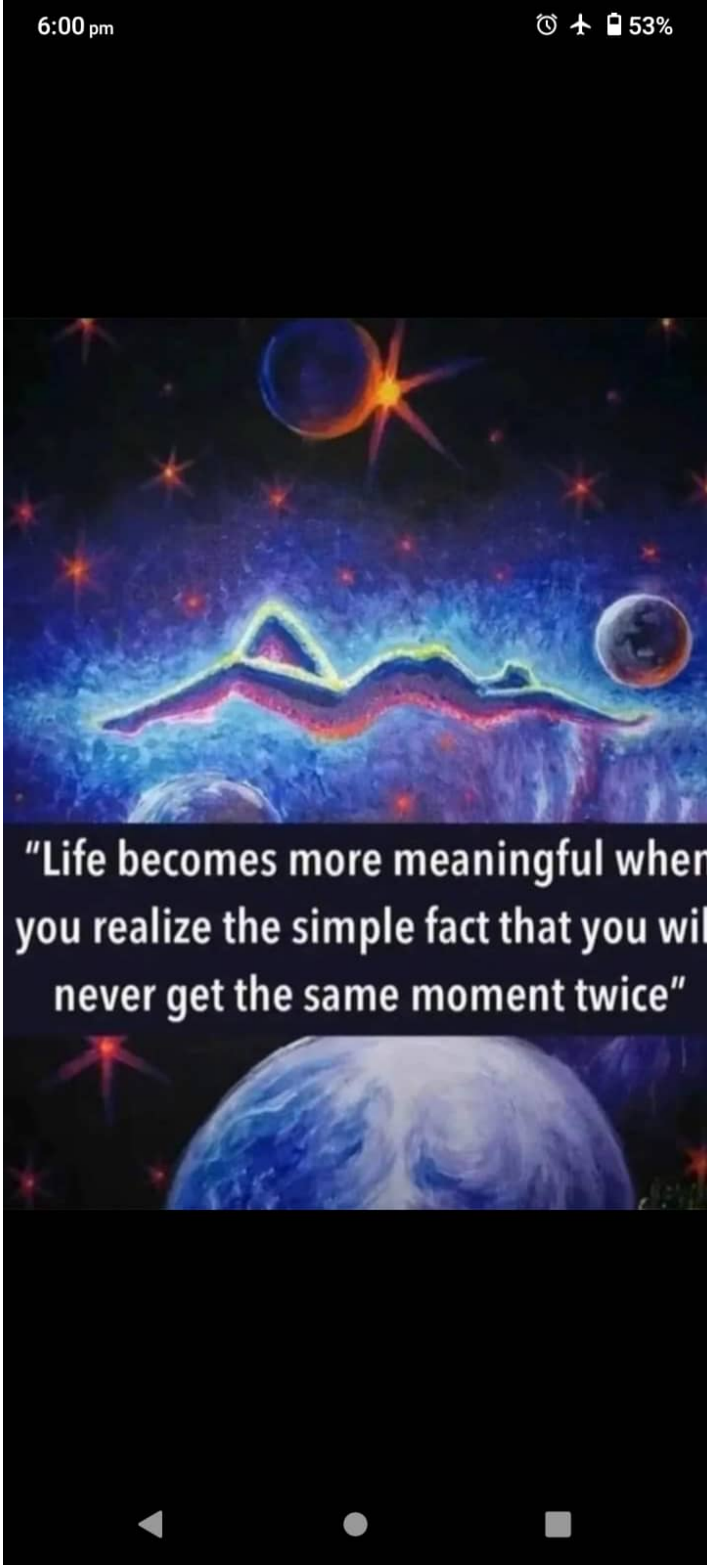
6:00 pm
53%
"Life becomes more meaningful whe
you realize the simple fact that you wil
never get the same moment twice"

CamScanner

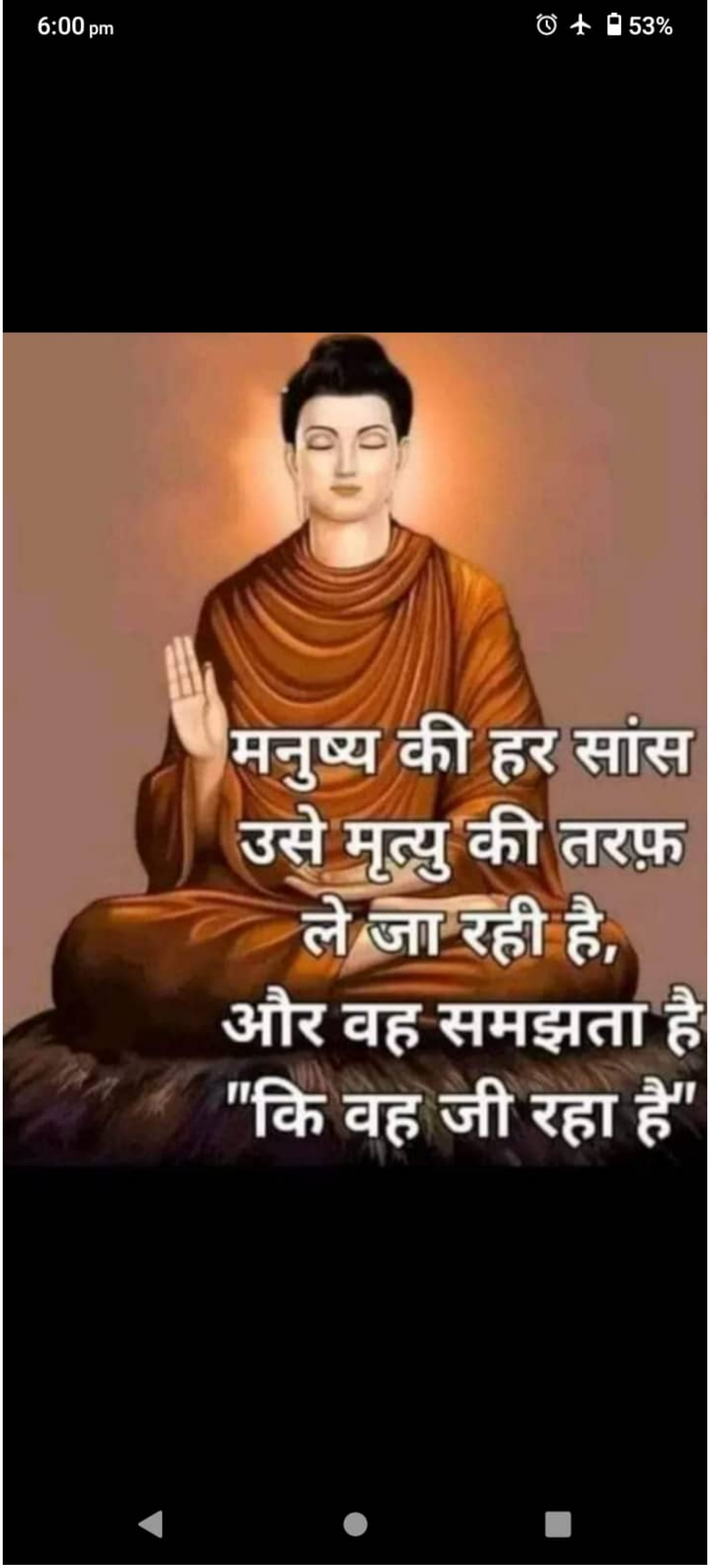

CamScanner

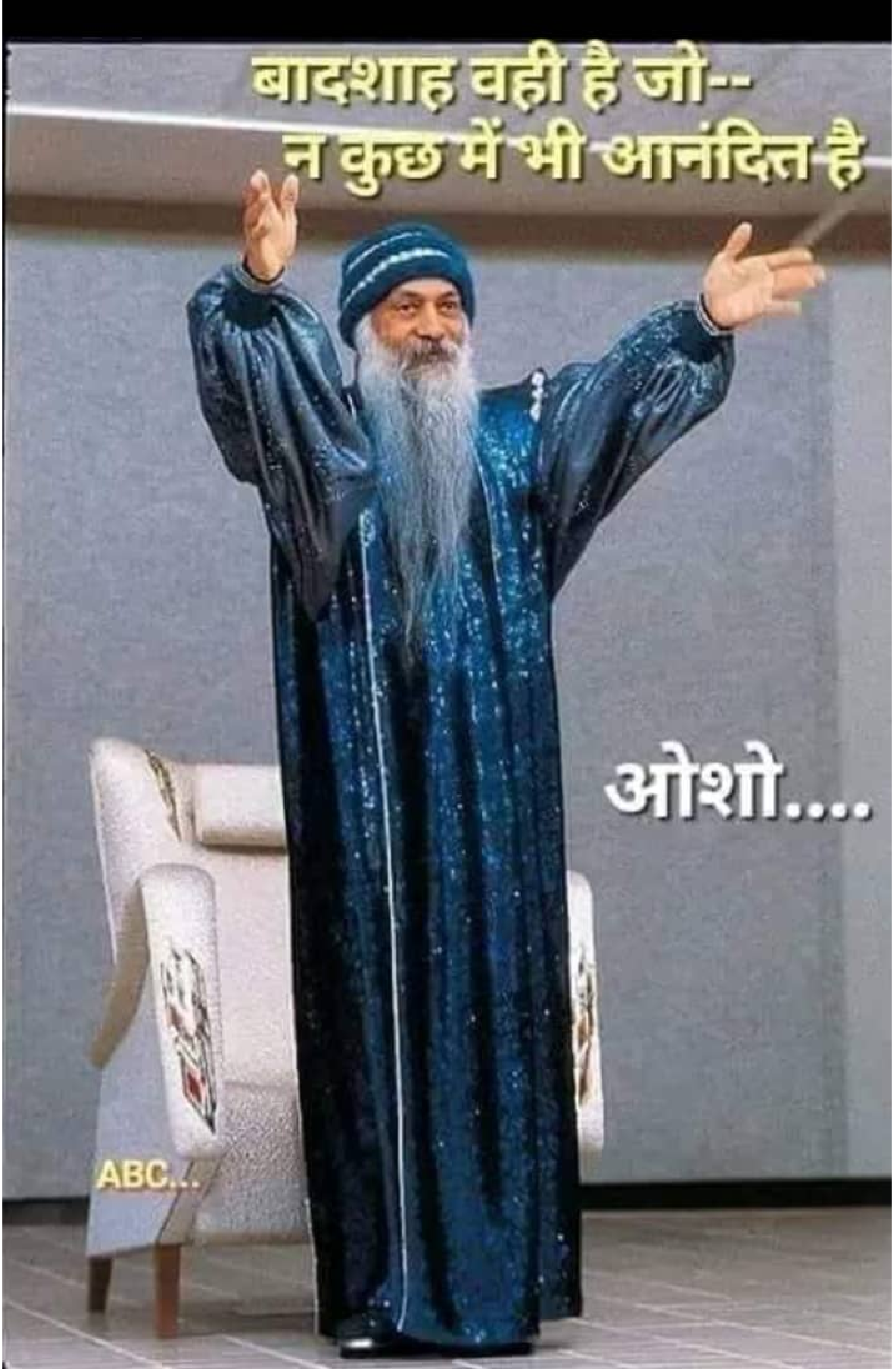

CamScanner

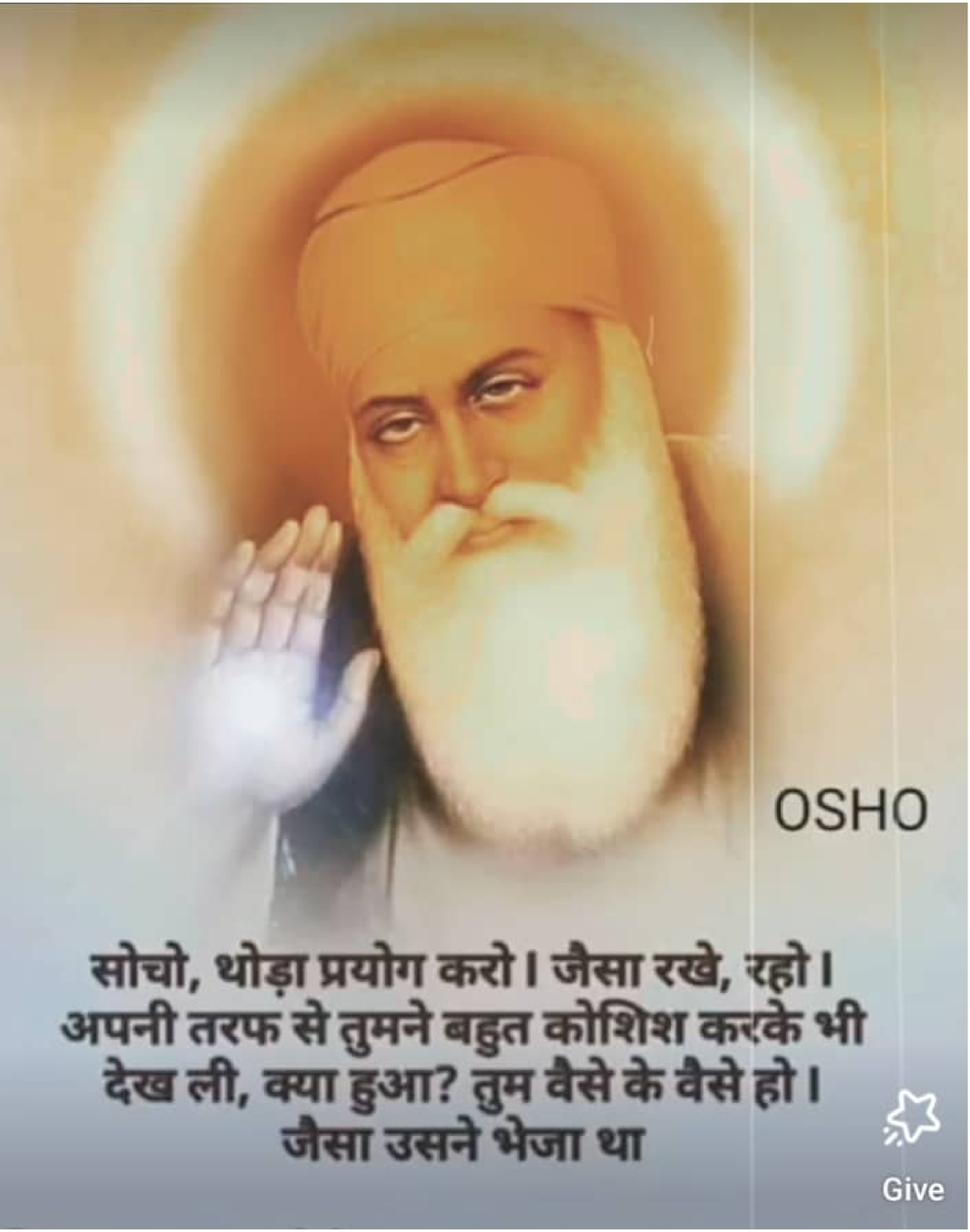
OSHO
सोचो, थोड़ा प्रयोग करो। जैसा रखे, रहो।
अपनी तरफ से तुमने बहुत कोशिश करके भी
देख ली, क्या हुआ? तुम वैसे के वैसे हो।
जैसा उसने भेजा था
Give

CamScanner

4:10 pm
68%
कुछ भी असम्भव नहीं
होता या तो आपकी संगत
बुरी है या फिर आपकी
सोच छोटी है!
17K
22
451
Send
Hindi health gyaan
Follow
Viral trend
Add a comment...

CamScanner

4:07 pm
68%
जिवन मे सबसे बड़ा गुरू
वक्त होता है 💯
क्यों की जो वक्त हमें सिखा देता। है
वो दुनिया में कोई गुरु नहीं सिखा
सकता है
1
36K
91
4.7K
Prithivi Kumar Ray Pk
Follow
Ashish Girdher commented: Jevan ka sabse bada guru agar waqt hai to waqt janam maran ke bare ...

CamScanner

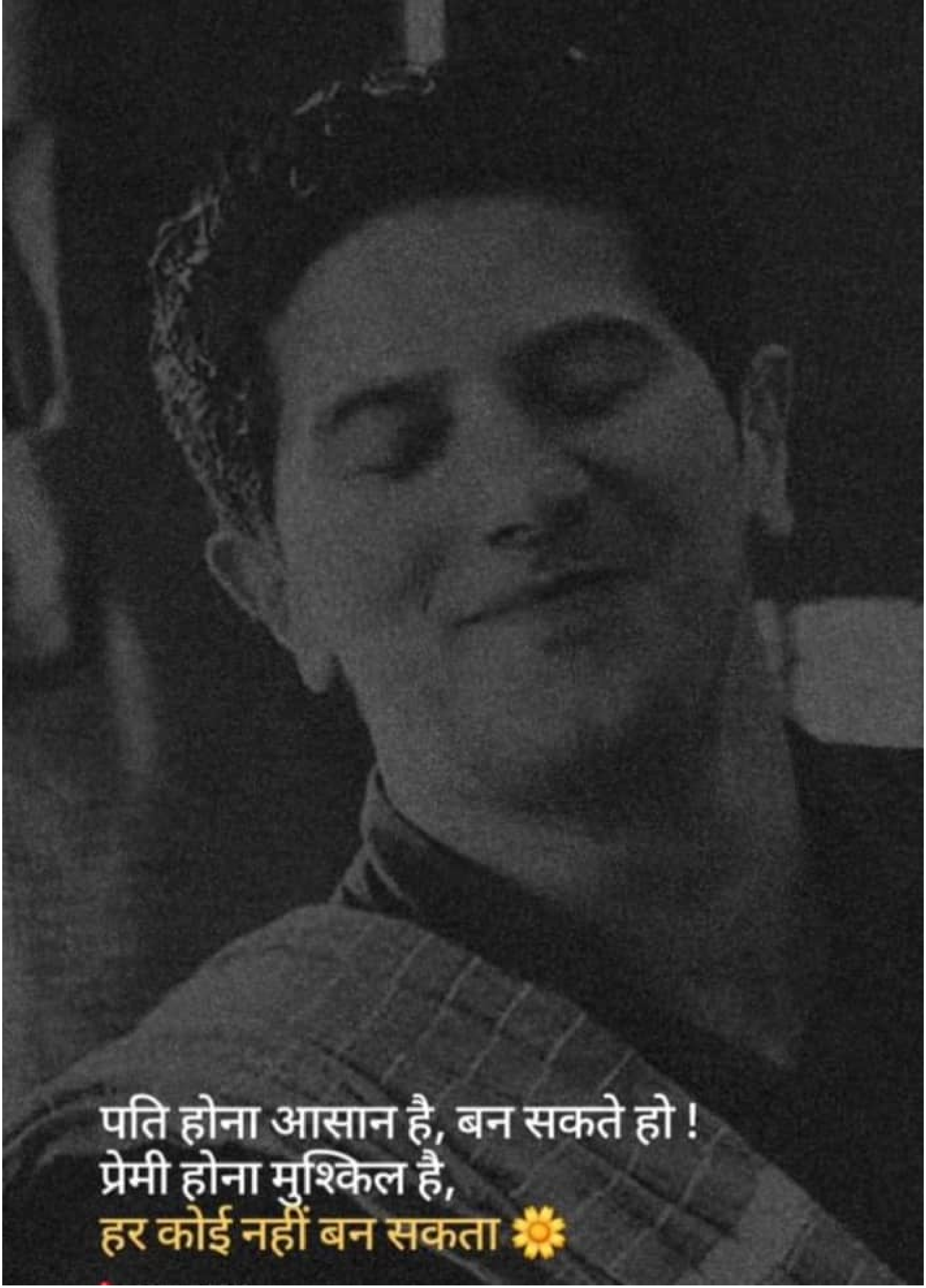

CS CamScanner

Do not expect

Do not ask favours

Don’t say anything

Just do your best

CamScanner

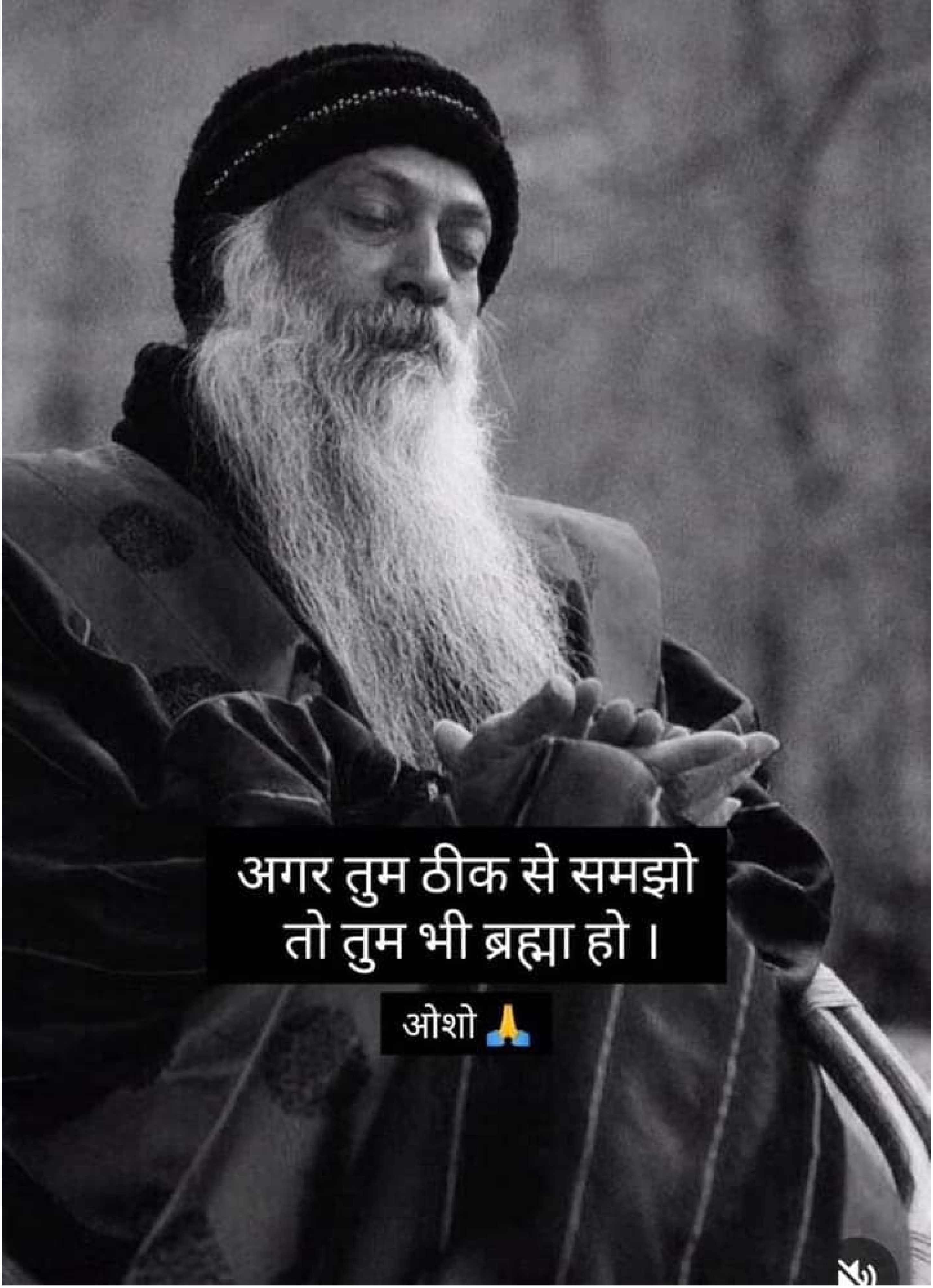

CamScanner

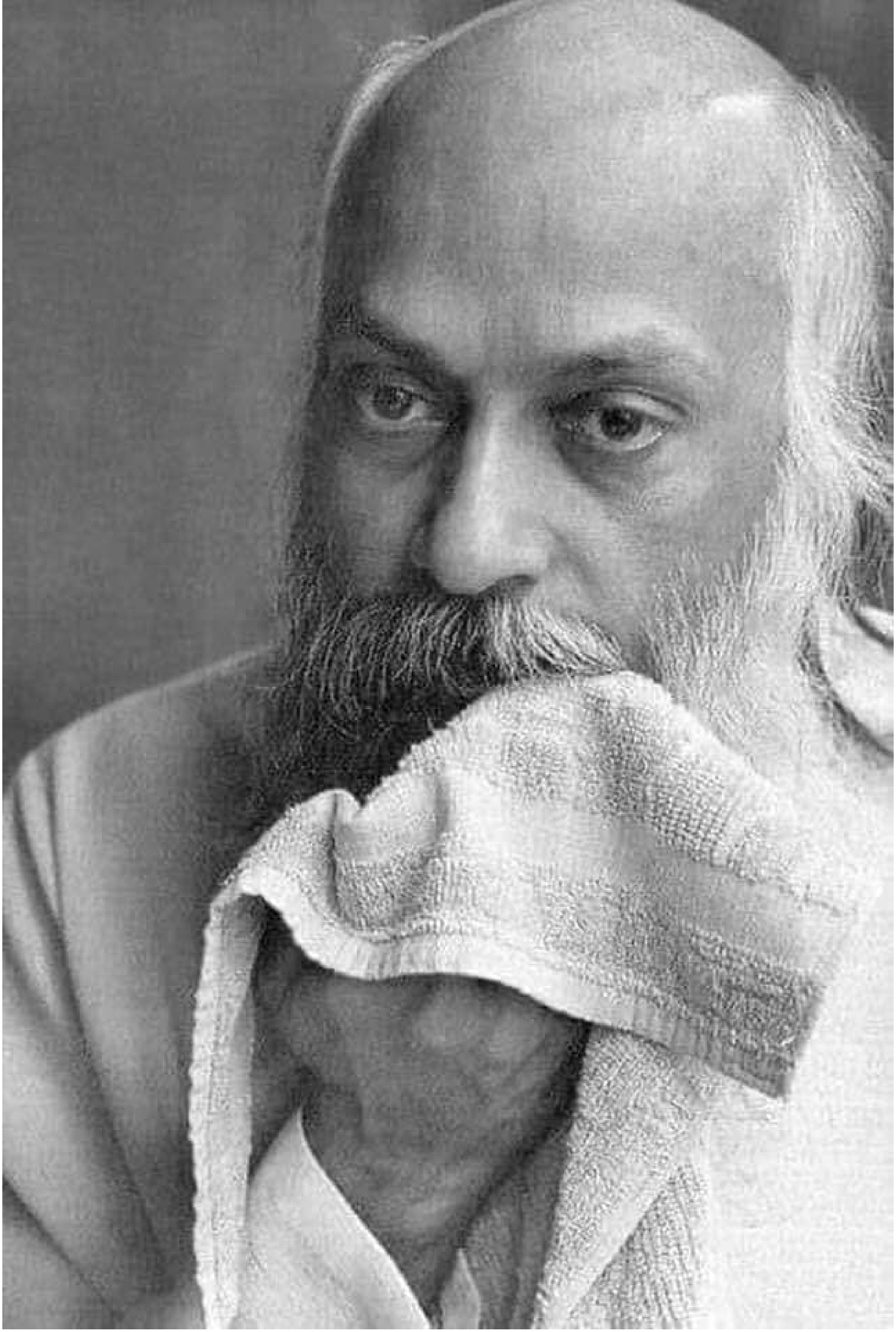

CamScanner

5:36 pm VoLTE 4G R 43%

बड़ी ही रोचक और महत्वपूर्ण कथा है। एक बहुत ही कामी और महत्वाकांक्षी राजा था। श्रोण उसका नाम था। उसकी संगीत में बहुत रुचि थी और वह स्वयं भी उच्च कोटि का वीणावादक था।
एक दिन श्रोण ने महात्मा बुद्ध को देखा। उनकी शांति, सौम्यता, रहस्यमयी मुस्कान और सुंदरता ने श्रोण के हृदय में जगत के विषयों से वैराग्य उत्पन्न कर दिया। और अपना राज पाट छोड़ कर वह उनका शिष्य हो गया।
कुछ ही समय बीता कि बुद्ध के पास श्रोण की बहुत शिकायतें आने लगी। बड़ा विचित्र था श्रोण। सभी भिक्षु प्रतिदिन भिक्षाटन को जाते, वह तीन दिन में एक बार जाता। सभी भिक्षु प्रतिदिन तीन समय भोजन करते, वह तीन दिन में एक बार करता। अन्य भिक्षु धूप से बचते और छाया में चलते, वह छाया से बचता और धूप में चलता। इतने ही दिनों में उसकी देह क्षीण हो चली थी।
भगवान बुद्ध श्रोण के पास आए। श्रोण चरणों में गिरा, उन्हें आसन पर बैठा कर, स्वयं भूमि पर बैठ गया।
बुद्ध ने श्रोण पर प्रेमपूर्ण दृष्टि डाली और पूछा- श्रोण! वीणा का तार बहुत ढीला हो, तो कैसा संगीत निकलता है?
श्रोण- भगवान! तार ढीला हो तो संगीत नहीं निकलता।
बुद्ध ने पुनः पूछा- श्रोण! वीणा का तार बहुत कसा हो, तो कैसा संगीत निकलता है?
श्रोण- भगवान! तार बहुत कसा हो तो भी संगीत नहीं निकलता। तब तो छूते ही तार टूट जाएगा।
बुद्ध उठे, और बाहर चले गए। श्रोण को जीवन का उपदेश मिल गया।
लोकेशानन्द कहता है कि हमें भी यह उपदेश समझना चाहिए।
"कईं तेज राह भटक गए, कईं सुस्त हो गए लापता।
जो उनके चरणों में झुक गए, उन्हें आके मंजिल ने पा लिया॥"
जो चला ही नहीं, उसकी तो बात ही मत छेड़ो, यहाँ बहुत तेज चलने वाला भी भटक जाता है। उसे मंजिल नहीं मिलती।
जो सहज चलता है, सरलता बनाए रखता है, निरंतर मध्य में रहता है, वह पहुँच जाता है। और ऐसा भी नहीं है कि उसे अधिक चलना पड़ता है, मंजिल ही उसकी ओर सरक आती है।

CamScanner

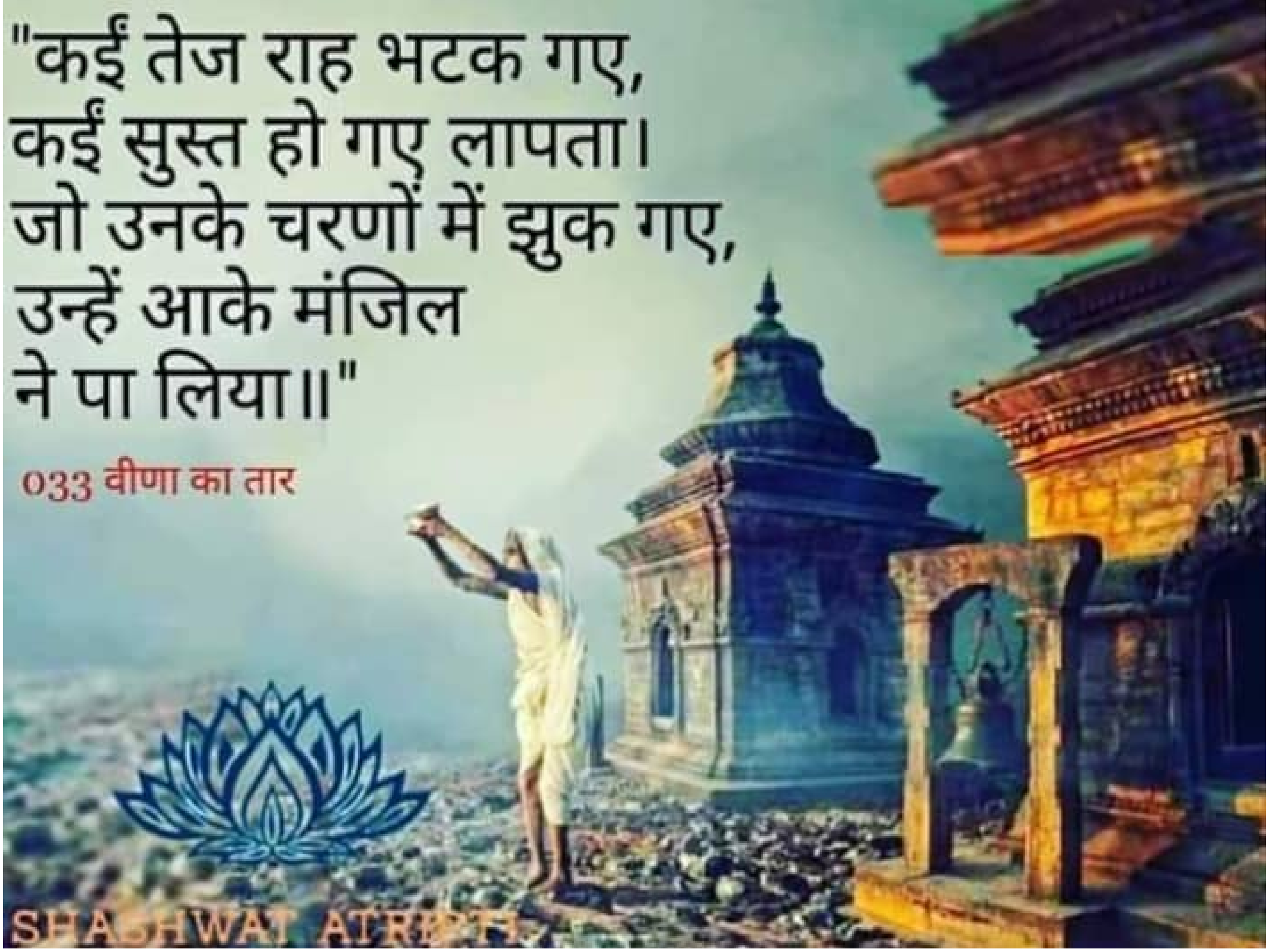
"कईं तेज राह भटक गए,
कईं सुस्त हो गए लापता।
जो उनके चरणों में झुक गए,
उन्हें आके मंजिल
ने पा लिया॥"
033 वीणा का तार

CamScanner

6:59 pm VoLTE 4G R 17%

facebook

Like Comment Send Share

अपो दीपो भव

31m ·

यह अपूर्व सूत्र है...........

कि अगर तुम निश्चिंत होना चाहो, तो छोटा-सा काम है बस; जरा-सी तरकीब है; जरा-सी कला है--और कला यह है: ....

अपने को हटा लो और परमात्मा को करने दे जो कराए।
कराए तो ठीक, न कराए तो ठीक।
पहुंचाए कहीं तो ठीक, न पहुंचाए तो ठीक।
तुम सारी चिंता उस पर छोड़ दो।
जिस पर इतना विराट जीवन ठहरा हुआ है,
चांदत्तारे चलते हैं, ऋतुएं घूमती हैं, सूरज निकलता है, डूबता है; इतना विराट जीवन का सागर, इतनी लहरें जो सम्हालना है, तुम्हारी भी छोटी लहर सम्हाल लेगा।

अपो दीपो भव

Like Comment Send Share

CamScanner

6:58 pm VoLTE 4G R 17%

क्या होगा मुझे दस हजार लोग प्रभावित हों कि दस करोड़ लोग प्रभावित हों। इससे होगा क्या? उनको प्रभावित करके मैं क्या पा लूंगा। अज्ञानियों की भीड़ को प्रभावीत करने की इतनी उत्सुकता अज्ञान की खबर देती है। राजनेता दूसरों को प्रभावित करने में उत्सुक होता है समझ में आता है; लेकिन धार्मिक व्यक्ति क्यों दूसरों को प्रभावित करने में उत्सुक होगा?

जब भी तुम दूसरों को प्रभावित करना चाहते हो, तब एक .बात याद रखना कि तुम आत्मस्थ नहीं हो। दूसरे को प्रभावित करने का अर्थ है कि तुम अहंकारस्थित हो। अहंकार दूसरे के प्रभाव को भोजन की तरह उपलब्ध करता है; उसी पर वह जीता है। जितनी आंखें मुझे पहचान लें, उतना मेरा अहंकार बड़ा होता है। अगर सारी दुनिया मुझे पहचान ले, मेरा अहंकार सर्वोत्कृष्ट हो जाता है। कोई मुझे न पहचाने गांव से निकलूं सड़क से गुजरूं, कोई देखे न, कोई रेकगनीशन नहीं, कोई प्रत्यभिज्ञा नहीं; किसी की आंख में झलक न आये, लगे ऐसा जैसा कि मैं हूं ही नहीं बस, वहां अहंकार को चोट है।

अहंकार चाहता है कि दूसरे ध्यान दें। यह बड़े मजे की बात है अहंकार ध्यान नहीं करना चाहता; दूसरे उस पर ध्यान करें.., सारी दुनिया उसकी तरफ देखे, वह केंद्र हो जाए।

धार्मिक व्यक्ति, दूसरा मेरी तरफ देखे, इसकी फिक्र नहीं करता; मैं अपनी तरफ देखूं क्योंकि अंततः वही मेरे साथ जाएगा। राह तो बच्चों की बात हुई। बच्चे खुश होते हैं कि दूसरे उनकी प्रशंसा करें। सटाफिकेट घर लेकर आते हैं तो नाचते—कूदते आते हैं। लेकिन बुढ़ापे में भी तुम सर्टिफिकेट मांग रहे हो तब तुमने जिंदगी गंवा दी! सिद्धि की आकांक्षा दूसरे को प्रभावित करने में है। धार्मिक व्यक्ति की वह आकांक्षा नहीं है। वही तो सांसारिक का स्वभाव है।

शिव सूत्र

ओशो

CamScanner

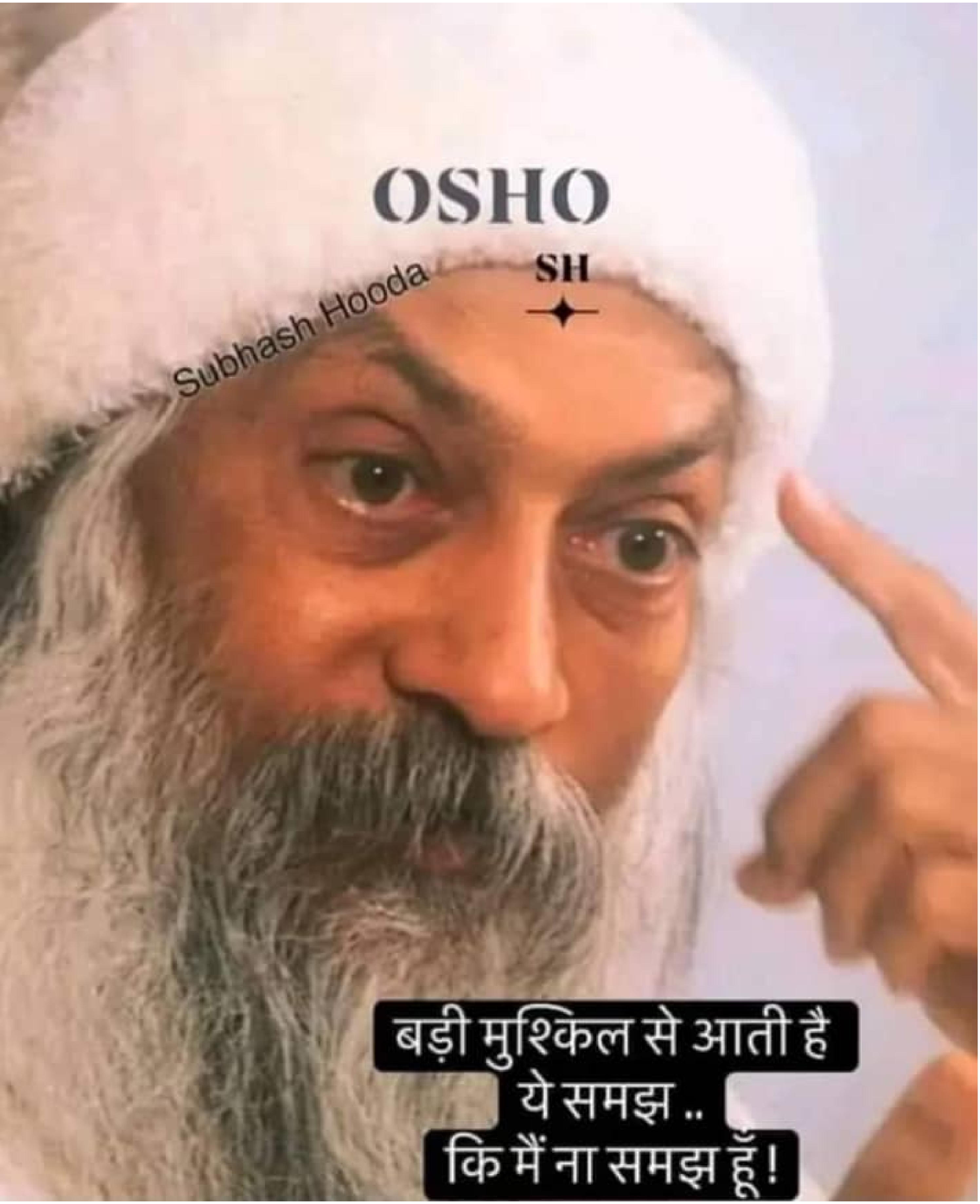

CamScanner

6:56 pm 18%

और वह बाकी के बच्चों जैसा भी नहीं रह गया था, वह अलग ही व्यक्तित्व पैदा कर पाने में सक्षम हो रहा था। उसे खेल-कूद में कोई रस न था। जब बाकी बच्चे खेलते, वह दूर कहीं रेगिस्तान में जाकर गोल-गोल घूमता रहता। यह अनुभव उसके लिए इतना आनंददायी था कि उसे किसी और चीज की सुध ही न थी। लेकिन उसे यह नहीं पता था कि यह कोई आध्यात्मिक विधि है या इसका बुद्धत्व से कोई लेना देना है।

जब वह जवान हुआ, तो कई गुरु उसमें उत्सुक हो गए- उसके गुणों को देखते हुए। वह कुछ अनूठा ही व्यक्ति था। वह बुद्धत्व के ठीक कगार पर खड़ा था, और उसे पता भी नहीं था- वह तो सत्य को खोज भी नहीं रहा था। वह तो बस इस विधि को कर रहा था। और इसे उसने जारी रखा।

और एक दिन उसने निर्णय लिया कि वह अपनी पूरी ताकत लगाकर जितनी देर तक घूम सकता है घूम कर देखेगा। जब थोड़ा-थोड़ा घूमने से ही इतने सुंदर अनुभव हो रहे हैं तो उसने सोचा, यदि मैं घूमता ही चला जाऊं, घूमता ही चला जाऊं तो न जाने क्या होगा! वह छत्तीस घंटे तक, दिन-रात, बिना रुके घूमता रहा। और जब छत्तीस घंटे बाद वह जमीन पर गिरा तो वह अलग ही व्यक्ति था, उसमें से एक अलग ही प्रकाश झर रहा था।

उसने एक परंपरा शुरू की, जो पिछले बारह सौ वर्षों से क्रियाशील है। उसकी परंपरा में सूफी दरवेश गोल-गोल घूमकर नृत्य करते हैं। उनके पास केवल एक ही विधि है- और कोई विधि वे नहीं जानते।

उनके पास कोई शास्त्र नहीं है, केवल रूमी की कुछ कविताएं हैं- वह बहुत सुंदर कविता करता था। तो इन दरवेशों के पास रूमी की कविताएं और एक विधि है, गोल-गोल घूमने की।

और केवल इस एक विधि के द्वारा इन बारह सौ वर्षों में न जाने कितने लोग परम घटना को उपलब्ध हुए हैं। पर यह परंपरा रूमी के द्वारा शुरू की गई थी, जो सत्य को खोज भी नहीं रहा था।

ओशो ।

CamScanner

6:56 pm VoLTE 4G R 18%

जलालुद्दीन रूमी को एक बड़ी ही विचित्र विधि से बुद्धत्व प्राप्त हुआ, जो उसने बचपन में सहज ही सीख ली थी *गोल घूमना।*
सभी बच्चों को गोल घूमने में मजा आता है, क्योंकि सामान्यतः *तुम्हारा शरीर और तुम्हारे प्राण एक जगह केंद्रित हैं।* लेकिन जब तुम गोल घूमना शुरू करते हो और तेज से तेज घूमते चले जाते हो, तो शरीर तो घूमता चला जाता है और *एक खास गति पर तुम्हारी चेतना उसके साथ कदम से कदम मिलाकर नहीं चल सकती।*

तो तुम्हारी चेतना उस पूरे चक्रवात का केंद्र बन जाती है; शरीर घूमता चला जाता है और चेतना बिना हिले एक जगह केंद्रित रहती है।

संसार भर में सभी बच्चे ऐसा करते हैं, लेकिन माता-पिता को डर लगता है कि वे गिर जाएंगे, उनकी हड्डी टूट जाएगी, उन्हें फ्रैक्चर हो जाएगा, शायद बीमार पड़ जाएंगे। तो मां-बाप उन्हें घूमने से रोकते हैं, क्योंकि उन्हें पता ही नहीं है कि बच्चे क्या कर रहे हैं, न उन्होंने कभी बच्चों से पूछा है, 'तुम घूम क्यों रहे हो और तुम्हें घूमने से क्या मिल रहा है?'

जलालुद्दीन रूमी ने बचपन से ही इस विधि का प्रयोग किया और उसका आनंद लिया, और क्योंकि लोग उसे रोकते थे, वह रेगिस्तान में चला जाता और अकेला इस विधि को करता। और इस विधि के लिए रेगिस्तान सबसे अच्छी जगह है, क्योंकि तुम यदि गिर भी जाओ, तो तुम्हें चोट नहीं लगेगी; तुम जितनी गति से घूमना चाहो घूम सकते हो।

उसे नहीं पता था कि उसके साथ कुछ आध्यात्मिक घटना घट रही है, लेकिन वह देख रहा था कि उसमें परिवर्तन आ रहे हैं। वह अलग किस्म का व्यक्ति होता जा रहा था। आसानी से उसे परेशान नहीं किया जा सकता था, निंदित नहीं किया जा सकता था, उसका अपमान नहीं किया जा सकता था। उसकी प्रतिभा की धार तेज से तेज होती जा रही थी।

और वह बाकी के बच्चों जैसा भी नहीं रह गया था, वह अलग ही व्यक्तित्व पैदा कर पाने में सक्षम हो रहा था। उसे खेल-कूद में कोई रस न था। जब बाकी बच्चे खेलते, वह दूर कहीं रेगिस्तान में जाकर गोल-गोल घूमता रहता। यह अनुभव उसके लिए इतना आनंददायी था कि उसे किसी और चीज की सुध ही न थी। लेकिन उसे यह नहीं पता था

CS CamScanner

मामा?'
बगुला भगत ठां-ठां करके खूब हंसा और बोला 'मूर्ख, वहां कोई जलाशय नहीं है। मैं एक- एक को पीठ पर बिठाकर यहां लाकर खाता रहता हूं। आज तू मरेगा।'
केकडा सारी बात समझ गया। वह सिहर उठा परन्तु उसने हिम्मत न हारी और तुरंत अपने जंबूर जैसे पंजों को आगे बढाकर उनसे दुष्ट बगुले की गर्दन दबा दी और तब तक दबाए रखी, जब तक उसके प्राण पखेरु न उड गए।
फिर केकडा बगुले भगत का कटा सिर लेकर तालाब पर लौटा और सारे जीवों को सच्चाई बता दी कि कैसे दुष्ट बगुला भगत उन्हें धोखा देता रहा।
इस कहानी से क्या सीखें:
ये कहानी भी हमें २ महत्वपूर्ण सीख देती है,
1. दूसरों की बातों पर आंखें मूंदकर विश्वास नहीं करना चाहिए, वास्तविक परिस्थिति के बारे में पहले पता लगा लेना चाहिए, हो सकता है सामने वाला मनगढंत कहानियाँ बना रहा हो और आपको लुभाने की कोशिश कर रहा हो।
2. कठिन से कठिन परिस्थिति और मुसीबत के समय में भी अपना आपा नहीं खोना चाहिए और धीरज व बुद्धिमानी से कार्य करना चाहिए।

CamScanner

3:28 pm VoLTE 4G R 23%

बगुले ने कुछ सोचकर बताया कि वहां से कुछ कोस दूर एक जलाशय हैं जिसमें पहाडी झरना बहकर गिरता हैं। वह कभी नहीं सूखता। यदि जलाशय के सब जीव वहां चले जाएं तो बचाव हो सकता हैं। अब समस्या यह थी कि वहां तक जाया कैसे जाएं? बगुले भगत ने यह समस्या भी सुलझा दी 'मैं तुम्हें एक-एक करके अपनी पीठ पर बिठाकर वहां तक पहुंचाऊंगा क्योंकि अब मेरा सारा शेष जीवन दूसरों की सेवा करने में गुजरेगा।'

सभी जीवों ने गद्-गद् होकर 'बगुला भगतजी की जै' के नारे लगाए। अब बगुला भगत के पौ-बारह हो गई। वह रोज एक जीव को अपनी पीठ पर बिठाकर ले जाता और कुछ दूर ले जाकर एक चट्टान के पास जाकर उसे उस पर पटककर मार डालता और खा जाता। कभी मूड हुआ तो भगतजी दो फेरे भी लगाते और दो जीवों को चट कर जाते तालाब में जानवरों की संख्या घटने लगी। चट्टान के पास मरे जीवों की हड्डियों का ढेर बढने लगा और भगतजी की सेहत बनने लगी।

खा-खाकर वह खूब मोटे हो गए। मुख पर लाली आ गई और पंख चर्बी के तेज से चमकने लगे। उन्हें देखकर दूसरे जीव कहते 'देखो, दूसरों की सेवा का फल और पुण्य भगतजी के शरीर को लग रहा है।'

बगुला भगत मन ही मन खूब हंसता। वह सोचता कि देखो दुनिया में कैसे-कैसे मूर्ख जीव भरे पडे हैं, जो सबका विश्वास कर लेते हैं। ऐसे मूर्खों की दुनिया में थोडी चालाकी से काम लिया जाए तो मजे ही मजे हैं। बिना हाथ-पैर हिलाए खूब दावत उडाई जा सकती है संसार से मूर्ख प्राणी कम करने का मौक़ा मिलता है बैठे-बिठाए पेट भरने का जुगाड हो जाए तो सोचने का बहुत समय मिल जाता हैं।

बहुत दिन यही क्रम चला। एक दिन केकडे ने बगुले से कहा 'मामा, तुमने इतने सारे जानवर यहां से वहां पहुंचा दिए, लेकिन मेरी बारी अभी तक नहीं आई।'

भगतजी बोले 'बेटा, आज तेरा ही नंबर लगाते हैं, आजा मेरी पीठ पर बैठ जा।'

केकडा खुश होकर बगुले की पीठ पर बैठ गया। जब वह चट्टान के निकट पहुंचा तो वहां हड्डियों का पहाड देखकर केकडे का माथा ठनका। वह हकलाया 'यह हड्डियों का ढेर कैसा है? वह जलाशय कितनी दूर है, मामा?'

बगुला भगत ठां-ठां करके खूब हंसा और बोला 'मूर्ख, वहां कोई जलाशय नहीं है। मैं एक- एक को पीठ पर बिठाकर यहां लाकर खाता

CamScanner

एक वन प्रदेश में एक बहुत बडा तालाब था। हर प्रकार के जीवों के लिए उसमें भोजन सामग्री होने के कारण वहां नाना प्रकार के जीव, पक्षी, मछलियां, कछुए और केकडे आदि वास करते थे। पास में ही बगुला रहता था, जिसे परिश्रम करना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था। उसकी आंखें भी कुछ कमज़ोर थीं। मछलियां पकडने के लिए तो मेहनत करनी पडती हैं, जो उसे खलती थी। इसलिए आलस्य के मारे वह प्रायः भूखा ही रहता। एक टांग पर खडा यही सोचता रहता कि क्या उपाय किया जाए कि बिना हाथ-पैर हिलाए रोज भोजन मिले। एक दिन उसे एक उपाय सूझा तो वह उसे आजमाने बैठ गया।

बगुला तालाब के किनारे खडा हो गया और लगा आंखों से आंसू बहाने। एक केकडे ने उसे आंसू बहाते देखा तो वह उसके निकट आया और पूछने लगा 'मामा, क्या बात है भोजन के लिए मछलियों का शिकार करने की बजाय खडे आंसू बहा रहे हो?'

बगुले ने ज़ोर की हिचकी ली और भर्राए गले से बोला

'बेटे, बहुत कर लिया मछलियों का शिकार। अब मैं यह पाप कार्य और नहीं करूंगा। मेरी आत्मा जाग उठी हैं। इसलिए मैं निकट आई मछलियों को भी नहीं पकड रहा हूं। तुम तो देख ही रहे हो।'

केकडा बोला 'मामा, शिकार नहीं करोगे, कुछ खाओगे नहीं तो मर नहीं जाओगे?'

बगुले ने एक और हिचकी ली 'ऐसे जीवन का नष्ट होना ही अच्छा है बेटे, वैसे भी हम सबको जल्दी मरना ही है। मुझे ज्ञात हुआ है कि शीघ्र ही यहां बारह वर्ष लंबा सूखा पडेगा।'

बगुले ने केकडे को बताया कि यह बात उसे एक त्रिकालदर्शी महात्मा ने बताई हैं, जिसकी भविष्यवाणी कभी ग़लत नहीं होती। केकडे ने जाकर सबको बताया कि कैसे बगुले ने बलिदान व भक्ति का मार्ग अपना लिया हैं और सूखा पडने वाला हैं।

उस तालाब के सारे जीव मछलियां, कछुए, केकडे, बत्तखें व सारस आदि दौडे-दौडे बगुले के पास आए और बोले 'भगत मामा, अब तुम ही हमें कोई बचाव का रास्ता बताओ। अपनी अक्ल लडाओ तुम तो महाज्ञानी बन ही गए हो।'

बगुले ने कुछ सोचकर बताया कि वहां से कुछ कोस दूर एक ज... हैं जिसमें पहाडी झरना बहकर गिरता हैं। वह कभी नहीं सूखता। ... जलाशय के सब जीव वहां चले जाएं तो बचाव हो सकता हैं। अब

CS CamScanner

कोई आपसे आगे निकलने के लिए ऐसे रास्ते अपनाता हुआ दिखेगा जो आपके आदर्शों के विरुद्ध होंगे...
ऐसे में आपको हतोत्साहित हो कर कुएँ में ही नहीं पड़े रहना है बल्कि साहस के साथ हर तरह की गंदगी को गिरा देना है और उससे सीख ले कर उसे सीढ़ी बनाकर बिना अपने आदर्शों का त्याग किये अपने कदमों को आगे बढ़ाते जाना है।
सकारात्मक रहे.. सकारात्मक जिए!
इस संसार में....

सबसे बड़ी सम्पत्ति *"बुद्धि "*
सबसे अच्छा हथियार *"धैर्य"*
सबसे अच्छी सुरक्षा *"विश्वास"*
सबसे बढ़िया दवा *"हँसी"* है

और आश्चर्य की बात कि *"ये सब निशुल्क हैं "*

सोच बदलो जिंदगी बदल जायेगी

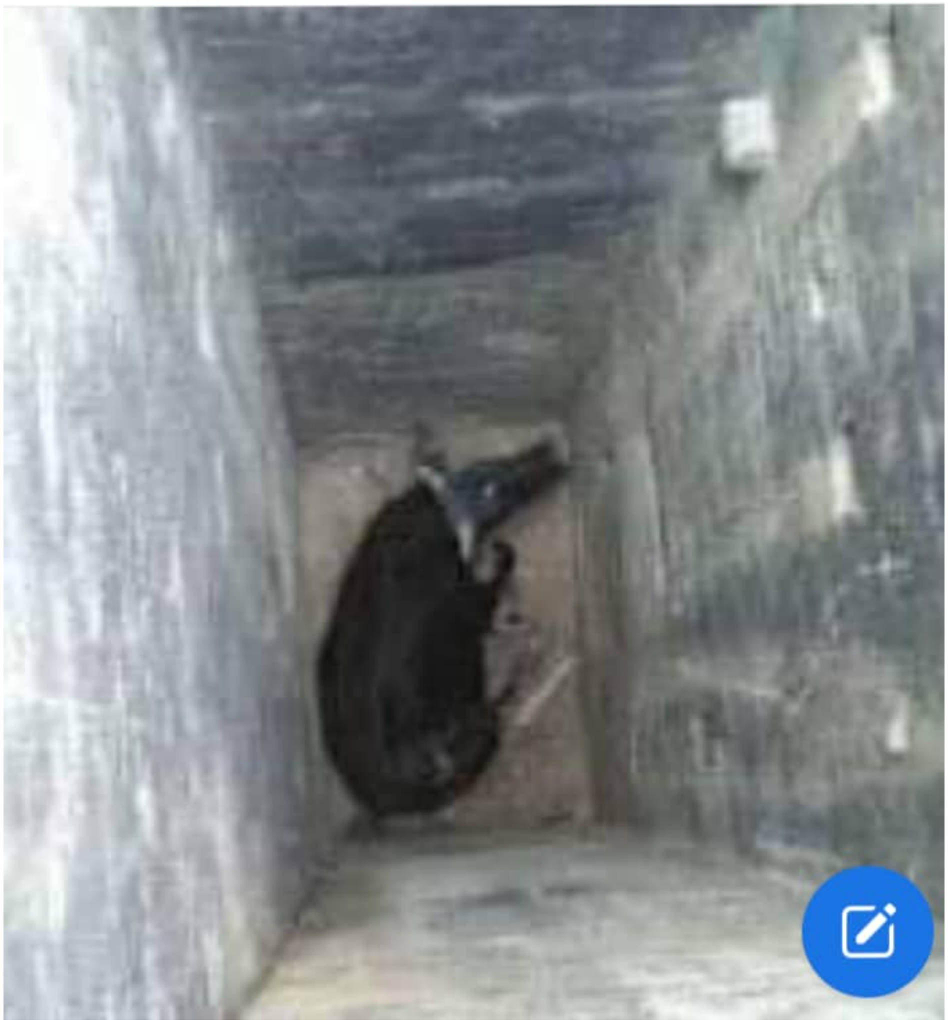

CamScanner

एक दिन एक किसान का बैल कुएँ में गिर गया।
वह बैल घंटों ज़ोर -ज़ोर से रोता रहा और किसान सुनता रहा और विचार करता रहा कि उसे क्या करना चाहिऐ और क्या नहीं।
अंततः उसने निर्णय लिया कि चूंकि बैल काफी बूढा हो चूका था अतः उसे बचाने से कोई लाभ होने वाला नहीं था और इसलिए उसे कुएँ में ही दफना देना चाहिऐ।।
किसान ने अपने सभी पड़ोसियों को मदद के लिए बुलाया सभी ने एक-एक फावड़ा पकड़ा और कुएँ में मिट्टी डालनी शुरू कर दी।
जैसे ही बैल कि समझ में आया कि यह क्या हो रहा है वह और ज़ोर-ज़ोर से चीख़ चीख़ कर रोने लगा और फिर ,अचानक वह आश्चर्यजनक रुप से शांत हो गया।
सब लोग चुपचाप कुएँ में मिट्टी डालते रहे तभी किसान ने कुएँ में झाँका तो वह आश्चर्य से सन्न रह गया..
अपनी पीठ पर पड़ने वाले हर फावड़े की मिट्टी के साथ वह बैल एक आश्चर्यजनक हरकत कर रहा था वह हिल-हिल कर उस मिट्टी को नीचे गिरा देता था और फिर एक कदम बढ़ाकर उस पर चढ़ जाता था।
जैसे-जैसे किसान तथा उसके पड़ोसी उस पर फावड़ों से मिट्टी गिराते वैसे -वैसे वह हिल-हिल कर उस मिट्टी को गिरा देता और एक सीढी ऊपर चढ़ आता जल्दी ही सबको आश्चर्यचकित करते हुए वह बैल कुएँ के किनारे पर पहुंच गया और फिर कूदकर बाहर भाग गया ।
ध्यान रखे आपके जीवन में भी बहुत तरह से मिट्टी फेंकी जायेगी बहुत तरह की गंदगी आप पर गिरेगी जैसे कि ,
आपको आगे बढ़ने से रोकने के लिए कोई बेकार में ही आपकी आलोचना करेगा
कोई आपकी सफलता से ईर्ष्या के कारण आपको बेकार में ही भला बुरा कहेगा
कोई आपसे आगे निकलने के लिए ऐसे रास्ते अपनाता हुआ दिखेगा जो आपके आदर्शों के विरुद्ध होंगे...
ऐसे में आपको हतोत्साहित हो कर कुएँ में ही नहीं पड़े रहना है बल्कि साहस के साथ हर तरह की गंदगी को गिरा देना है और उससे सीख ले कर उसे सीढ़ी बनाकर बिना अपने आदर्शों का त्याग किये अपने कदमों को आगे बढ़ाते जाना है।
सकारात्मक रहे.. सकारात्मक जिए!

CS CamScanner

7:38 am VoLTE 4G R 100%

2h ·

एक राजा ने सुना कि शुकदेव जी से भागवत सुन कर परीक्षित मुक्त हो गए थे।
राजा ने सोचा कि मैं भी भागवत सुनकर मुक्त होऊँगा। बस फिर क्या था? घोषणा करवा दी गई। एक के बाद एक कथा सुनाने वाले आने लगे। राजा प्रत्येक सप्ताह कथा सुनता, पर मुक्त न होता, और कथा सुनाने वाला कैद में डाल दिया जाता। योंही बहुत समय बीत गया। कल ही एक बूढ़े बाबा को भी जेल में डाला गया है।
आज एक युवक दरबार में आया है। कहता है कि मैं आपको कथा सुनाऊँगा। पर मेरी एक शर्त है। पहले मुझे एक घंटे के लिए राजा बनाया जाए।
मंत्रियों की तलवारें खिंच गईं। राजा मुस्कुराया। मंत्रियों को शांत रहने का इशारा कर, सिंहासन से नीचे उतर आया।
"सिंहासन स्वीकार करें" राजा ने युवक से कहा।
युवक सिंहासन पर बैठा, और बोला- जेल में बंद मेरे दादा, बूढ़े बाबा को दरबार में बुलाया जाए और दो रस्सियाँ मंगवाई जाएँ।
ऐसा ही किया गया। बाबा समझ नहीं पाए कि वहाँ क्या हो रहा है? अब युवक ने एक मंत्री से कहा- एक रस्सी से बाबा को एक खम्बे से, तो दूसरी रस्सी से महाराज को दूसरे खम्बे से बाँध दिया जाए।
जब दोनों बंध गए तो युवक ने राजा से कहा- महाराज! आप बाबा को खोल सकते हैं?
राजा मौन ही रहा। तब युवक बाबा से बोला- दादा जी! आप ही महाराज को खोल दीजिए।
बाबा चिल्लाए- मूर्ख! तूं कर क्या रहा है? मैं तो जेल में ही था, पर तूं फांसी चढ़ेगा। अभी तक तो मैं यही समझता था कि तू आधा पागल है, पर तूं तो महामूर्ख है। जब मैं खुद बंधा हूँ, तो महाराज को कैसे खोल सकता हूँ?
युवक मुस्कुराया। उसने दोनों रस्सियाँ खुलवाईं और सिंहासन से उतर गया। राजा के चरणों में झुका और बोला- महाराज! मेरी धृष्टता क्षमा हो। मुझे बस इतना ही कहना था कि जो स्वयं बंधन में पड़ा हो, वह दूसरे को मुक्त कैसे करेगा? आपका सिंहासन आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।
लोकेशानन्द भी यह कहानी सुन कर मुस्कुरा कर रह जाता है।

CamScanner

जो स्वयं बंधन में पड़ा है,
वह दूसरे को
मुक्त कैसे करेगा?
035 बंधनग्रस्त
SHASHWAT ATRIPTI

CamScanner

10:19 pm 91%
en.m.wikipedia.org/wiki/
4

Several terms redirect here. For other uses, see Bhagavad Gita (disambiguation) and Gita (disambiguation).

The **Bhagavad Gita** (/ˌbʌɡəvəd ˈɡiːtɑː/; Sanskrit: भगवद्गीता, romanized: *bhagavad-gītā*, lit. 'The Song by God'[a]), often referred to as the **Gita** (IAST: *gītā*), is a 700-verse Hindu scripture, which is part of the epic *Mahabharata*. It forms the chapters 23–40 of book 6 of the Mahabharata called the Bhishma Parva. The work is dated to the second half of the first millennium BCE.[2]

Bhagavad Gita	

Bhagavad Gita's revelation: Krishna tells the Gita to Arjuna

Information	
Religion	Hinduism
Author	Traditionally attributed to Vyasa
Language	Sanskrit

CamScanner

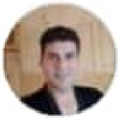

Naye bharat ke khoj

6h ·

दान और त्याग

रस्किन ने कहां है कि धनी आदमी तब होता है, जब वह धन को दान कर पाता है। नहीं तो गरीब ही होता है। रस्किन का मतलब यह है कि आप धनी उसी दिन हैं, जिस दिन आप धन को छोड़ पाते हैं। अगर नहीं छोड़ पाते तो आप गरीब ही हैं। पकड़ गरीबी का लक्षण है, छोड़ना मालकियत का लक्षण है। अगर किसी चीज को आप छोड़ पाते है, तो समझना कि आप उसके मालिक हैं; और अगर किसी चीज को आप केवल पकड़ ही पाते हैं तो आप भूल कर मत समझना कि आप उसके मालिक हैं। इसका तो बडा अजीब मतलब हुआ। इसका मतलब हुआ कि जो चीजें आप किसी को बांट देते हैं, उनके आप मालिक हैं। और जो चीजें आप पकड़कर बैठे रहते है, उनके आप मालिक नहीं हैं।

दान मालकियत है; क्योंकि जो आदमी दे सकता है, वह यह बता रहा है कि वस्तु मुझ से नीची है, मुझसे ऊपर नहीं। मैं दे सकता हूं। देना मेरे हाथ में है। और जो व्यक्ति देकर प्रसन्न हो सकता है, उसकी मूर्छा टूट गयी। जो व्यक्ति केवल लेकर ही प्रसन्न होता है और देकर दुखी हो जाता है, वह मुर्छित है। त्याग का ऐसा है अर्थ।

त्याग का अर्थ है—दान की अनंत क्षमता, देने की क्षमता। जितना बड़ा हम दे पाते हैं, जितना ज्यादा हम दे पाते है, उतने ही हम मालिक होते चले जाते हैं।

CS CamScanner

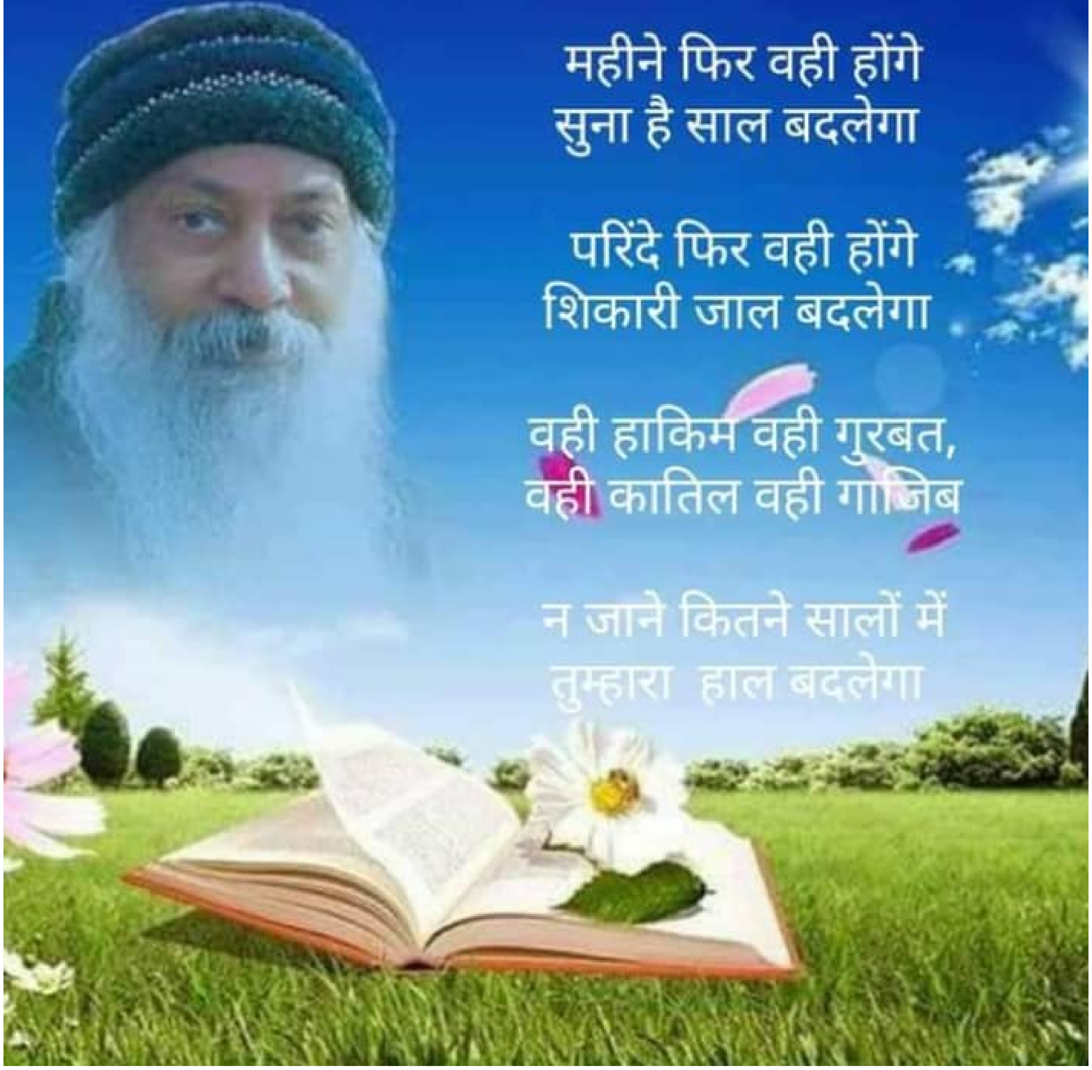
महीने फिर वही होंगे
सुना है साल बदलेगा
परिंदे फिर वही होंगे
शिकारी जाल बदलेगा
वही हाकिम वही गुरबत,
वही कातिल वही गालिब
न जाने कितने सालों में
तुम्हारा हाल बदलेगा

CamScanner

10:27 am 67%

13 3

नये वर्ष के नये दिन पर पहली बात तो यह कहना : चाहूंगा कि दिन तो रोज ही नया होता है, लेकिन रोज नये दिन को न देख पाने के कारण हम वर्ष में कभी-कभी नये दिन को देखने की कोशिश करते हैं। अपने को धोखा देने की तरकीबों में से एक तरकीब यह भी है। दिन तो कभी भी पुराना नहीं लौटता, रोज ही नया होता है। हर पल और हर क्षण नया होता है। लेकिन हमने अपनी पूरी जिंदगी को पुराना कर डाला है। उसमें नये की तलाश मन में बनी रहती है। तो वर्ष में एकाध दिन नया दिन मान कर अपनी इस तलाश को पूरा कर लेते हैं।

लेकिन सोचने जैसा है जिसका पूरा वर्ष पुराना होता हो उसका एक दिन नया कैसे हो सकता है? जिसकी एक वर्ष की पुराना देखने की आदत हो वह एक दिन को नया कैसे देख पाएगा? मैं कल तक जो रोज हर दिन को, हर सुबह को पुराना देखा हूं आज की सुबह को नया कैसे देख सकूंगा?

मैं ही देखने वाला हूं। और मेरा जो मन हर चीज को पुरानी कर लेता है वह आज को भी पुराना कर लेगा। तब फिर नये का धोखा पैदा करने के लिए नये कपड़े हैं, उत्सव है, मिठाइयां हैं,गीत हैं; फिर नये का हम धोखा पैदा करना चाहते हैं।

लेकिन न नये कपड़ों से कुछ नया हो सकता है, न नये गीतों से कुछ हो सकता है। नया मन चाहिए! और नया मन जिसके पास हो, उसे कोई दिन कभी पुराना नहीं होता।

और जिसके पास ताजा मन हो, फ्रेश माइंड हो, वह हर चीज को ताजी और नई कर लेता है। लेकिन ताजा मन हमारे पास नहीं है। तो हम चीजों को नई करते हैं। मकान पर नया रंग-रोगन कर लेते हैं। पुरानी कार बदल कर नई कार ले लेते हैं। पुराने कपड़े की जगह नया कपड़ा कर लेते हैं। हम चीजों को नया करते रहते हैं, क्योंकि नया मन हमारे पास नहीं है।

नई चीजें कितनी देर धोखा देंगी? नया कपड़ा कितनी देर नया रहेगा? पहनते ही पुराना हो जाता है। नई कार कितनी देर नई रहेगी? पोर्च में आते ही पुरानी हो जाती है। कभी सोचा है यह कि नये और पुराने होने के बीच में कितना फासला होता है? जब तक जो नहीं मिला है, नया होता है; मिलते ही पुराना हो जाता है। अगर नई कार खरीद लाए हैं, तो कल तक सोचा था कि नई कार कैसे आए, और आज से ही सोचना

CamScanner

10:27 am 67%

नई चीजें कितनी देर धोखा देंगी? नया कपड़ा कितनी देर नया रहेगा? पहनते ही पुराना हो जाता है। नई कार कितनी देर नई रहेगी? पोर्च में आते ही पुरानी हो जाती है। कभी सोचा है यह कि नये और पुराने होने के बीच में कितना फासला होता है? जब तक जो नहीं मिला है, नया होता है; मिलते ही पुराना हो जाता है। अगर नई कार खरीद लाए हैं, तो कल तक सोचा था कि नई कार कैसे आए, और आज से ही सोचना शुरू कर देंगे कि और नई कैसे आए! इससे छुटकारा कैसे हो!

चीजों को नया करने वाली इस वृत्ति ने सब तरफ जीवन को बड़ी कठिनाई में डाल दिया है। क्योंकि कार ही नई नहीं करनी पड़ेगी, पत्नी भी नई लानी पड़ेगी। चीजें नई होनी चाहिए न! मकान को नया पोत कर नया कर लेने पर, नई कार खरीद लेने पर पत्नी भी खुश हो रही है, पति भी खुश हो रहा है। लेकिन उन्हें खयाल नहीं कि यह जो आदमी चीजों को नया करने में लगा है, यह एक पत्नी से जीवन भर राजी नहीं रह सकता, न यह पत्नी एक पति से जीवन भर राजी रह सकती है। क्योंकि नये होने का मतलब चीजें बदलना होता है। तो पहले पश्चिम में मकान बदले, कारें बदलीं, फिर अब आदमी बदलने लगे हैं। वह यहां भी होगा।

और नये की खोज जरूर है मन में, होनी भी चाहिए। लेकिन दो तरह की नये की खोज होती है। या तो स्वयं को नया करने की एक खोज होती है। और जो आदमी स्वयं को नया कर लेता है उसे कभी कोई चीज पुरानी होती ही नहीं। जो अपने मन को रोज नया कर लेता है उसके लिए हर चीज रोज नई हो जाती है, क्योंकि वह आदमी रोज नया हो जाता है। और जो अपने को नया नहीं कर पाता उसके लिए सब चीजें पुरानी ही होती हैं। थोड़ी देर धोखा दे सकता है नये से, लेकिन थोड़ी देर बाद सब चीज पुरानी पड़ जाती है।
दुनिया में दो ही तरह के लोग हैं-एक वे जो अपने को नया करने का राज खोज लेते हैं, और एक वे जो अपने को पुराना बनाए रखते हैं और चीजों को नया करने में लगे रहते हैं।

CamScanner

12:55 pm 75%

यह बात सोचने जैसी है।
जितने संक्षिप्त में कहनी हो बात,
उतनी देर लग जाती है।

और अगर एक ही शब्द में कहनी हो,
तो स्वभावतः अगस्तीन को बड़ा मंथन करना पड़ा।
बहुत-से शब्द उठे होंगे उसके भीतर,
जब वह सोचने लगा कि क्या उत्तर दूं इस ग्रामीण को। सारे शास्त्र घूम गए होंगे उसके भीतर।
शास्त्रों का ज्ञाता था; बाइबिल उसे कंठस्थ थी।
उन सभी शब्दों ने सिर उठाए होंगे।

लेकिन उन्होंने सबको इनकार कर दिया।
सारे मंदिर, सारे मस्जिद, सारी प्रार्थनाएं,
सब इनकार कर दीं। और उस सब में से चुना एक शब्द, जो शायद भीड़ में कहीं खो ही जाता।

क्योंकि प्रेम ऐसा है कि अंत में खड़ा होता है।
पंक्तियों के आगे खड़े होने का प्रेम का
कोई आग्रह नहीं है। लेकिन अगस्तीन
ने खोज लिया सूत्र, सारसूत्र खोज लिया।
भक्ति का सारसूत्र भी प्रेम है।

आज के वचन प्रेम की दिशा का
अपूर्व रूप से प्रस्थापन करते हैं।
एक-एक सूत्र को खयाल से समझे
ओशो

Osho Prem Naman 🙏💞
Osho international

CS CamScanner

12:54 pm 75%

सब धर्मशास्त्र, सब नीतियां,
सब आदर्श। एक शब्द याद रखो फिर–प्रेम।

और प्रेम जीवन में आ गया तो सब आ जाएगा।
फिर तुम फिकर छोड़ो परमात्मा की।
तुम प्रेम को संभाल लो,
प्रेम के धागे में बंधा हुआ परमात्मा
अपने-आप आ जाता है।'

अगस्तीन का यह उत्तर अत्यधिक मूल्यवान है।
सारे धर्मों का सार प्रेम है।
और प्रेम संभल जाए तो सब संभल गया।
और प्रेम न संभल पाए तो तुम सब संभालते रहो,
फिर सब औपचारिक है, उसका कोई मूल्य नहीं है।
और यह बात भी महत्त्वपूर्ण है कि अगस्तीन को
सोचना पड़ा।

किसी ने रूज़वेल्ट को एक बार
पूछा कि आप व्याख्यान देते हैं,
तो आपको तैयारी करनी पड़ती होगी?
कितनी तैयारी करनी पड़ती है?

रूज़वेल्ट ने कहा : निर्भर करता है।
अगर दो घंटे बोलना हो तो तैयारी
बिल्कुल नहीं करनी पड़ती;
फिर तो जो भी बोलना है बोले चला जाता हूं।
अगर आधा घंटा बोलना हो तो तैयारी करनी पड़ती है; दिनभर लगाना
पड़ता है।

और अगर दस मिनट ही बोलना
हो तो दो दिन भी लग जाते हैं।
और अगर दो ही मिनट में बात कहनी हो तो
सप्ताह बीत जाते हैं, तब कहीं मैं तैयार कर पाता हूं।

CamScanner

12:54 pm 75%

एक सुबह,
ईसाई फकीर अगस्तीन
से एक युवक ने आकर पूछाः

"मैं पढ़ा-लिखा नहीं हूं; ग्रामीण हूं, गंवार हूं।
धर्मशास्त्र की बातें मेरी समझ में नहीं आतीं।
बड़े उपदेश मेरे पल्ले नहीं पड़ते।
आपने तो उस प्रभु को देखा है,
आप मुझे दो शब्दों में सार की बात कह दें–
ऐसी कि मैं उसे गांठ बांध लूं;
ऐसी कि भुलाना भी चाहूं अपने अज्ञान में
तो भी भुला न पाऊं;
ऐसी कि चिंगारी बन जाए मेरे भीतर।'

कहते हैं, अगस्तीन,
जो कभी किसी प्रश्न के उत्तर
देने में न झिझका था,
क्षणभर को झिझक गया और
उसने आंखें बंद कर लीं।
उसके शिष्य बड़े चकित हुए।
बड़े विद्वान आते हैं, बड़े पंडित आते हैं,
बड़े धर्मशास्त्री आते हैं–अगस्तीन
उनके प्रश्नों में कभी आंख बंद नहीं किया।
उत्तर तत्क्षण होते हैं।

बड़ा मेधावी पुरुष था अगस्तीन।
और आज एक छोटे-से प्रश्न के
उत्तर में आंखें बंद कर ली हैं।
और बड़ी देर लगी,
जैसे अगस्तीन भीतर बहुत खोजता रहा।
फिर उसने आंखें खोलीं और उसने कहा :
"तो फिर एक शब्द याद रखो–प्रेम।
उसमें सब आ जाता है–सब धर्म,

CamScanner

आदमी
मरने के बाद
कुछ नहीं सोचता।

आदमी
मरने के बाद
कुछ नहीं बोलता।

कुछ नहीं सोचने
और कुछ नहीं बोलने पर
आदमी
मर जाता है।

रचयिता || उदय प्रकाश

CamScanner

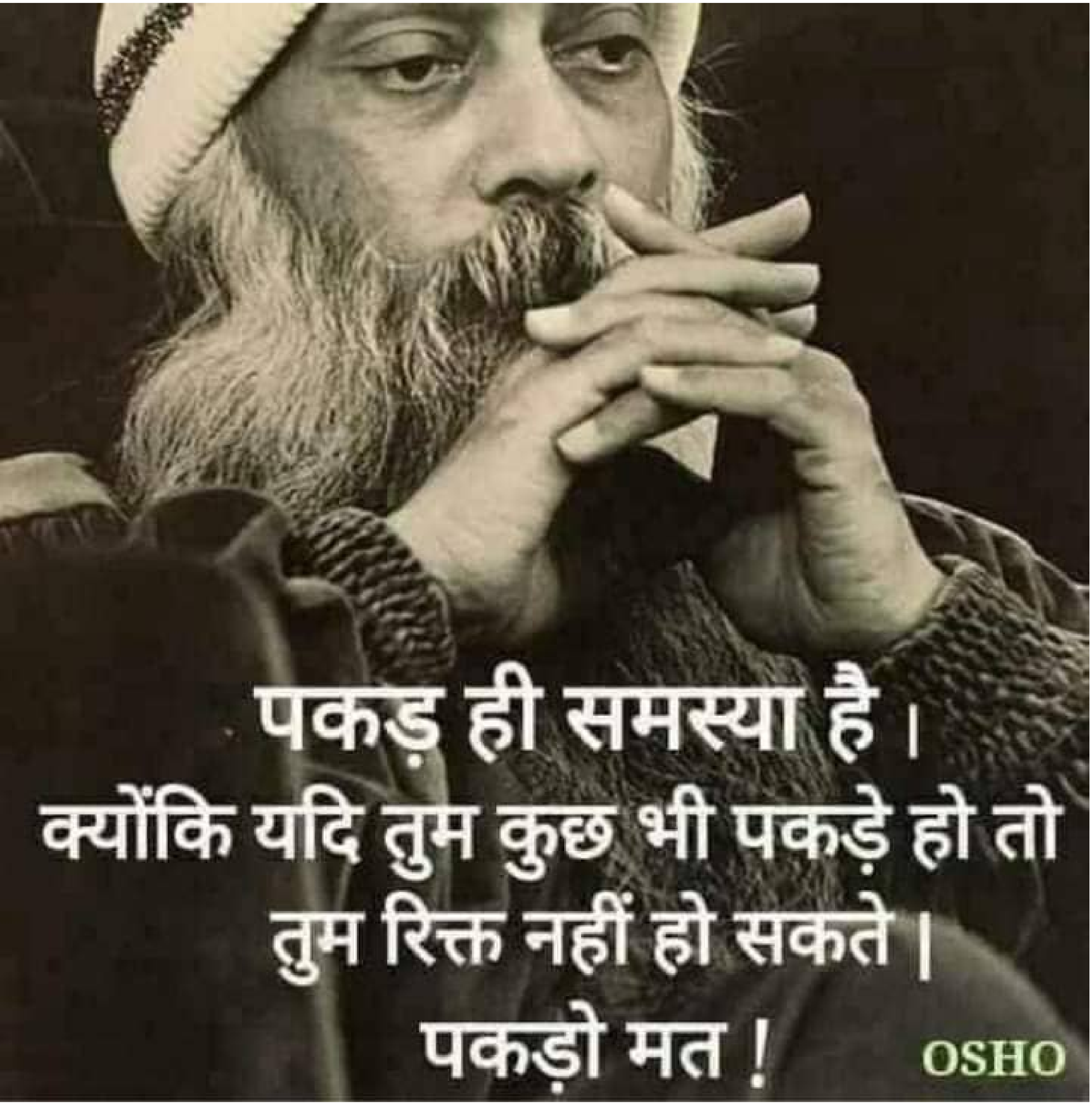

CamScanner

तुम प्रेम करो! प्रेम से चुको
मत., इतना गहरा
प्रेम करो! "कि जिससे भी
"प्रेम करते हो.. वही
तुम्हारे लिए परमात्मा हो
जाए.!!
ओशो

CamScanner

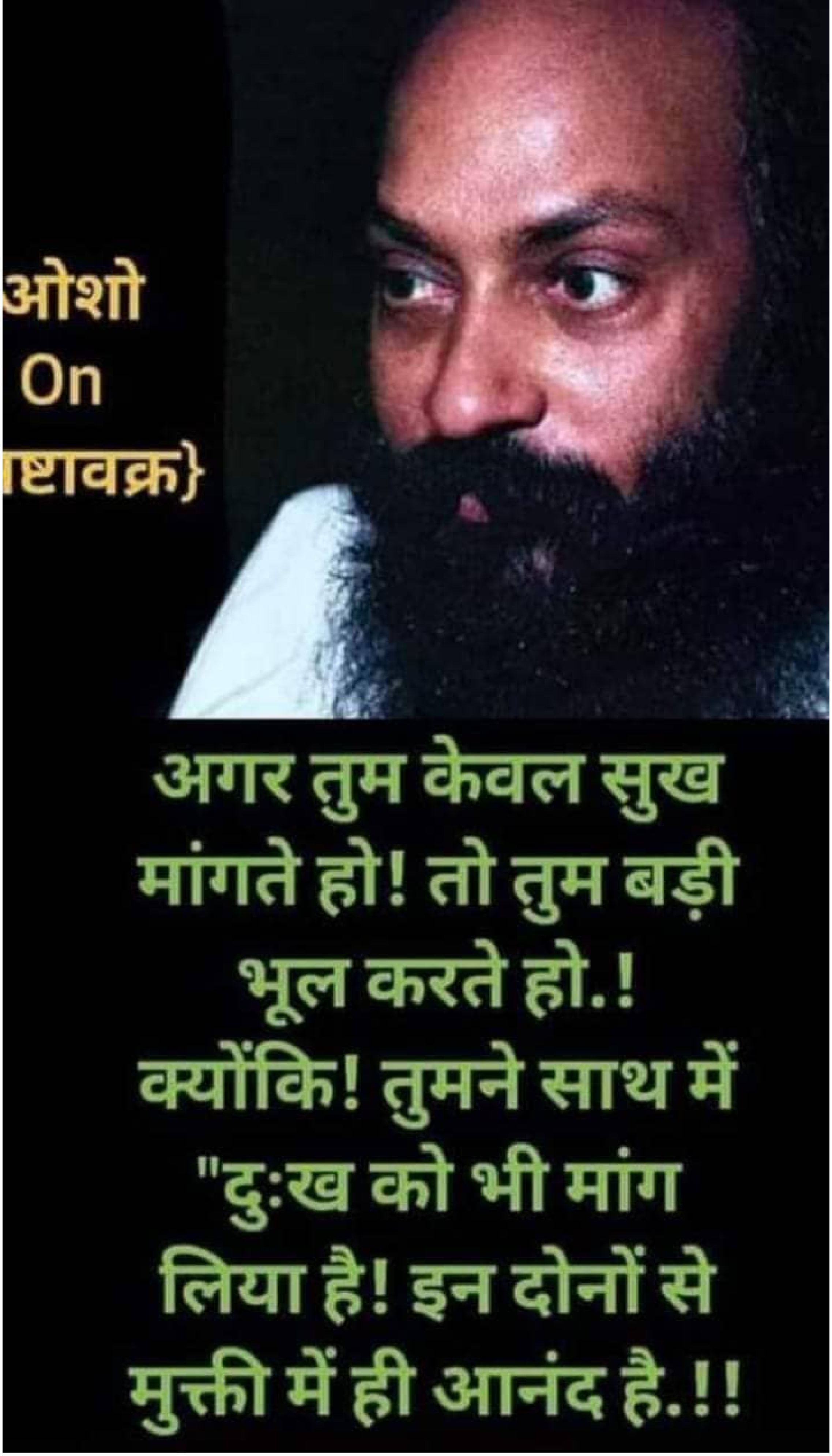

CS CamScanner

1:02 pm 73%

ऐसा हुआ चीन में कि एक आदमी—उससे चीन में आक्यूपक्चर नाम के चिकित्सा—शास्त्र का जन्म हुआ—इस आदमी के पैर में लंगड़ापन था सदा, बचपन से था। और किसी दुश्मन ने छिपकर उसको तीर मार दिया। वह उसे मार डालना चाहता था। लेकिन तीर उसको कुछ ऐसी जगह लगा कि उसका लंगड़ापन ठीक हो गया। उससे आक्यूपंक्चर का पूरा चिकित्सा—शास्त्र पैदा हुआ।

तो चीन में यह पता चल गया कि कुछ ऐसे हिस्से हैं शरीर में कि अगर वहा कोई तीखा औजार चुभाया जाए, तो शरीर—ऊर्जा की गति बदल जाती है।

तो वह जो लंगड़ा था आदमी, वह इसीलिए लंगड़ा था कि ऊर्जा ठीक धारा में नहीं बह रही थी। विद्युत शरीर की ठीक धारा में नहीं बह रही थी, थोड़ी तिरछी थी। धारा तिरछी थी, तो पैर तिरछा था। क्योंकि पैर तो ऊर्जा का अनुसरण करता है। तीर लगने से धारा झटककर सीधी बहने लगी; पैर सीधा हो गया। फिर तो आक्यूपंक्वर का पूरा शास्त्र पैदा हुआ।

जिसने मारा था, उसने सोचा भी न होगा कि तीर मारने से यह आदमी मरेगा तो नही, उलटा, लंगड़ा था, ठीक हो जाएगा। न केवल यह ठीक होगा, बल्कि इसके आधार पर एक शास्त्र का जन्म होगा, जिससे हजारों साल तक लाखों लोग ठीक होंगे।

फिर तो धीरे— धीरे उन्होंने सात सौ बिंदु खोज लिए, आक्यूपक्चर ने, आदमी के शरीर में। और हर बिंदु से संबंधित बीमारियां हैं। आक्यूपंक्चर कुछ भी नहीं करता है—बडी अनूठी कला है—सिर्फ सुई चुभोता है। अब तो तीर भी नहीं चुभोता। क्योंकि उतने बड़े की भी जरूरत नहीं है। इतनी छोटी—सी सुई चुभोता है कि तुम्हें पता ही नहीं चलता। सिर में दर्द है और हाथ में सुई चुभाके वे, और अचानक तुम्हारा दर्द तिरोहित हो जाता है। पेट में तकलीफ है, कहीं पीठ में सुई चुभोएंगे। उनके हिसाब हैं कि कहां सुई चुभाने से कहा की धारा में रूपांतरण होता है। एक शास्त्र, एक विज्ञान का जन्म हो गया।

CamScanner

स्त्री पहल नहीं करती -

प्रेम में पहल नहीं करती।

स्त्री जाकर किसी से निवेदन नहीं करती।

अगर स्त्री के हृदय में प्रेम भी उठे

तो प्रतीक्षा करती है।

आक्रामक नहीं होती।

राह देखती है, राह देखती है, राह देखती है।

हृदय के भाव को घना होने देती है,

और भरोसा रखती है कि

अगर हृदय का भाव घना होगा तो

प्रेमी एक दिन द्वार पर आकर दस्तक देगा।

पुरुष पहल करता है।

स्त्री से निवेदन करता है प्रेम का;

चेष्टा करता है, यत्न करता है।

Osho

CS CamScanner

परमात्मा के पास बैठिये
इतने गहरे भाव से कि
आँसू आ जाएँ,
किसी प्रकार की कोई आकांक्षा
या मांग न रखें,
परमात्मा का होना ही आशीर्वाद है
मांगना नहीं पड़ता
उनके पास होने से ही सब मिल जाता है।
जैसे फूल के पास जाओ
खुशबू अपने आप ही मिलने लगती है
परमात्मा ने सारी व्यवस्था पहले ही की हुई है
मांगने की जरूरत ही नही है
बस उनके पास जाना है,
उनकी शरणागति स्वीकार कर लेना
उनके बताये मार्ग पर चलना
हमारा कर्तव्य बस इतना ही है
बाकी सब कुछ स्वयं ही हो जाता है।
ओशो
facebook/wisdomguruwar

CamScanner

Why do we live this meaningless life, working for forty years, breeding a few children, educating them in absurd ways, and then dying?

CamScanner

कुछ लोग शंका उठाते हैं-कहीं मैं कोई संगठन या सम्प्रदाय तो खड़ा नहीं कर रहा ?मैं शुरू से ही इसके विरोध में हूं। सभी सम्प्रदाय और संगठन आगे जाकर सड़े पानी के पोखरे बन जाते हैं। उसमें प्रतियोगिता और महत्वाकांक्षा आ जाती है। फिर सम्प्रदाय बनता है किसी के विरोध में। ये नये संन्यासी किसी के खिलाफ नहीं है। सभी धर्मों में जो कुछ भी सारभूत है वे उसके पक्ष में हैं। ये संन्यासी सभी सम्प्रदायों और सभी देशों के हैं। ये प्रेम के धागे से एक दूसरे से जुड़े हैं।

मैं संन्यासी को आचरण नहीं बोध दे रहा हूं। मैं उसे कोई अनुशासन न देकर,आत्म अनुशासन कैसे उत्पन्न हो,इसका उपाय बतला रहा हूं। संन्यासी का मतलब ही यही है कि जो अपने ऊपर कुछ भी थोप नहीं रहा है,जीवन को सहजता में ले रहा है। वह अपने शरीर की अंतर्प्रज्ञा के अनुसार जी रहा है। वह अतियों पर नहीं डोलता। वह मध्य में आकर संतुलन में जीता है।
वह ज़ोरबा की तरह मस्ती से हंसता-नाचता-गाता और उत्सवपूर्ण ढंग से जीता है। वह सभी से प्रेम करता है पर साथ ही ध्यान करते हुये निर्विचार हो अपने केंद्र पर पहुंचता है। स्वयं अपने को जानकर उसमें नष्ट होती पृथ्वी के लिये पूरी मनुष्यता के लिए एक करूणा,एक दायित्व बोध उत्पन्न होता है। मैं इसी को 'नया मनुष्य' कहता हूं।

मनुष्य होकर उत्पन्न होना और आनंदपूर्वक,प्रेमपूर्वक जीते हुये सहज सरल निर्दोष होकर,ध्यान करते हुये नया मनुष्य बनकर, दिव्य होकर अस्तित्व के साथ एकाकार हो जाना ही जीवन है।"

CamScanner

10:20 pm VoLTE 4G R 47%

लाओत्से का जो कीमती से कीमती सूत्र है वह है: "स्वीकार" लाओत्से कहता है, दु:ख को भी स्वीकार कर लो और तुम आनंदित हो जाओगे। क्योंकि स्वीकार दु:ख जानता ही नहीं है।स्वीकार को दु:ख का कोई पता ही नहीं है। स्वीकार के साथ ही परिणाम आने शुरू हो जाते है।

आपके संन्यासी के लिये क्या शर्तें और अनिवार्यताएं होगी, उसे किन नियमों और अनुशासन का पालन करना होगा ?"

भगवान् श्री उत्तर दिया-
मेरे संन्यास में केवल एक ही अनिवार्य शर्त है,और वह है ध्यान। बाकी कोई व्रत,नियम या अनुशासन मैं ऊपर से थोपे जाने के पक्ष में नहीं हूं। वे सभी दमन और पाखंड उत्पन्न करते हैं। मेरा संन्यासी स्वछंद,अपने छंद से,अपनी मस्ती से जीयेगा।

मैं संन्यासी से ध्यान की विधि सीख कर ध्यान में गहरा उतरने को कह रहा हूं क्योंकि जो ध्यान में गहरा उतर जाता है उसके इन्द्रियों के रस, खो जाते हैं। इन्द्रियां अंतर्मुखी हो जाती हैं। उसकी वृत्तियां भस्म हो जाती हैं।

ध्यान की अग्नि में उसका सारा कूड़ा कचरा जल जाता है और वह शुद्ध कुंदन बन जाता है। जो गैरिक वस्त्र मैंने संन्यासी को दिये हैं उसका उपयोग मात्र यह स्मरण रखने का है कि मैं संन्यासी हूं और मुझे ध्यान करना है। यह वस्त्र अग्नि के रंग के हैं। यह भी याद दिलाते हैं कि भीतर ध्यान के एक सौ आठ गुरिये हैं,वे ध्यान कि एक सौ आठ विधियों के प्रतीक है। सभी एक सौ आठ गुरिये कितने ही अलग हों,पर उनके भीतर पिरोया हुआ धागा एक ही है। चाहे हाथ में माला का एक ही गुरिया हो,पर वे स्मरण रखें कि एक सौ सात मार्ग और भी हैं और सभी मार्ग पहुंचा देते हैं मंजिल पर। फिर माला में जो तस्वीर है वह उन्हें याद दिलाती है कि उन्होंने मेरी साक्षी में संन्यास लिया है। उनका गुरु तो केवल परमात्मा है।

कुछ लोग शंका उठाते हैं-कहीं मैं कोई संगठन या सम्प्रदाय तो खड़ा नहीं कर रहा ?मैं शरू से ही इसके विरोध में हूं। सभी सम्प्रदाय और संगठन

CamScanner

10:20 pm VoLTE 4G R 47%

लाओत्से का जो कीमती से कीमती सूत्र है वह है: "स्वीकार" लाओत्से कहता है, दुःख को भी स्वीकार कर लो और तुम आनंदित हो जाओगे। क्योंकि स्वीकार दुःख जानता ही नहीं है।स्वीकार को दुःख का कोई पता ही नहीं है। स्वीकार के साथ ही परिणाम आने शुरू हो जाते है।

आपके संन्यासी के लिये क्या शर्तें और अनिवार्यताएं होगी, उसे किन नियमों और अनुशासन का पालन करना होगा ?"

भगवान् श्री उत्तर दिया-
मेरे संन्यास में केवल एक ही अनिवार्य शर्त है,और वह है ध्यान। बाकी कोई व्रत,नियम या अनुशासन मैं ऊपर से थोपे जाने के पक्ष में नहीं हूं। वे सभी दमन और पाखंड उत्पन्न करते हैं। मेरा संन्यासी स्वछंद,अपने छंद से,अपनी मस्ती से जीयेगा।

मैं संन्यासी से ध्यान की विधि सीख कर ध्यान में गहरा उतरने को कह रहा हूं क्योंकि जो ध्यान में गहरा उतर जाता है उसके इन्द्रियों के रस, खो जाते हैं। इन्द्रियां अंतर्मुखी हो जाती हैं। उसकी वृत्तियां भस्म हो जाती हैं।

ध्यान की अग्नि में उसका सारा कूड़ा कचरा जल जाता है और वह शुद्ध कुंदन बन जाता है। जो गैरिक वस्त्र मैंने संन्यासी को दिये हैं उसका उपयोग मात्र यह स्मरण रखने का है कि मैं संन्यासी हूं और मुझे ध्यान करना है। यह वस्त्र अग्नि के रंग के हैं। यह भी याद दिलाते हैं कि भीतर ध्यान के एक सौ आठ गुरिये हैं,वे ध्यान कि एक सौ आठ विधियों के प्रतीक है। सभी एक सौ आठ गुरिये कितने ही अलग हों,पर उनके भीतर पिरोया हुआ धागा एक ही है। चाहे हाथ में माला का एक ही गुरिया हो,पर वे स्मरण रखें कि एक सौ सात मार्ग और भी हैं और सभी मार्ग पहुंचा देते हैं मंजिल पर। फिर माला में जो तस्वीर है वह उन्हें याद दिलाती है कि उन्होंने मेरी साक्षी में संन्यास लिया है। उनका गुरु तो केवल परमात्मा है।

CamScanner

CamScanner

10:16 pm 47%

अहोभाव
3d ·

अहोभाव

64 5 comments • 2 shares

Like Send Share

Sadhguru Hindi
Sponsored ·

"कार्यक्रम से पहले, मैं कभी भी खुद को स्थिर नहीं रख पाता था। इनर इंजीनियरिंग ने मुझे बहुत ज्यादा आंतरिक संतुलन, फो... See more

CamScanner

ओशो का हिन्दी साहित्य
Mandira Sinh Thakuri · 3d ·

क्या राम और कृष्ण काल्पनिक हैं?

अगर राम पश्चिम में पैदा होते तो उन्होंने बराबर हिसाब रखा होता, कब पैदा हुए, किस दिन पैदा हुए, किस दिन मरे, किस दिन दफ़नाए गए; सब हिसाब रखा होता। हमने कोई हिसाब नहीं रखा है। राम का जन्म होता है, राम का जीवन होता है, राम की जीवन की लीला होती है; सब होता है, लेकिन हमने कोई ऐतिहासिक कालबद्ध हिसाब नहीं रखा। कारण? कारण हमारा यह है कि हर युग में राम होते रहे हैं और हर युग में राम होते रहेंगे। यह एक वर्तुल है जो घूमता ही रहता है।..

पश्चिम हिसाब रखता है। इसलिए जीसस ऐतिहासिक हैं। उस अर्थ में कृष्ण ऐतिहासिक नहीं हैं। कृष्ण पौराणिक हैं। पौराणिक का अर्थ यह नहीं कि नहीं हुए। पौराणिक का मतलब, बहुत बार हुए और बहुत बार होंगे। ऐतिहासिक का अर्थ है, एक बार हुए और दुबारा नहीं हो सकते; पुनरुक्ति नहीं हो सकती।

ओशो

ताओ उपनिषद - ७६

75 3 comments • 7 shares

Like Comment Send Share

अहोभाव
3d ·

10:15 pm 47%

Like Comment Share

Bhagwan Shree Rajneeh

1d ·

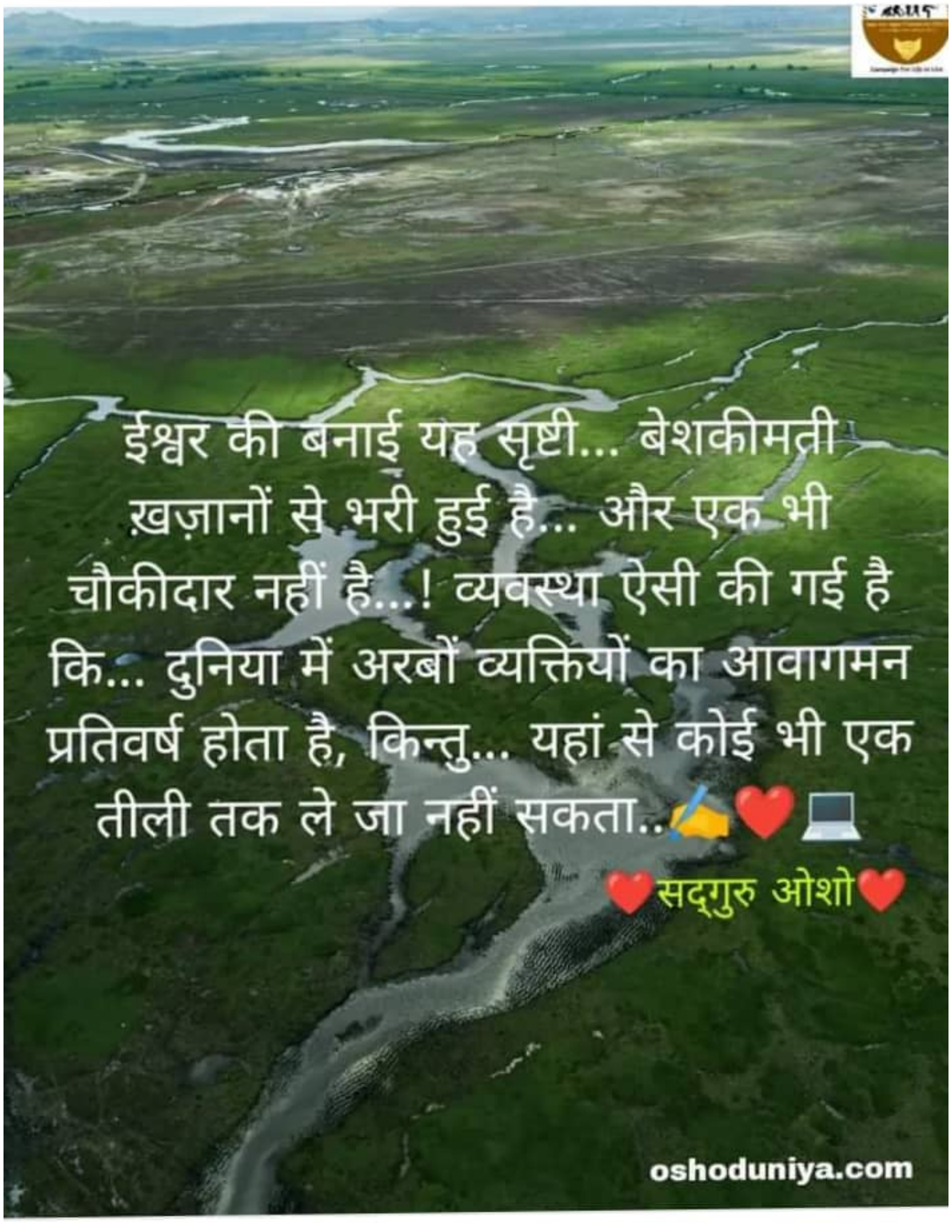

12 1 share

Like Comment Send Share

You'll see more posts like this for a while. Undo

CamScanner

CamScanner

10:14 pm 47%

Osho Osho
1d ·

तुम्हारी आंखों में भी चमक हो सकती है बुद्धों की। तुम अधिकारी हो। जन्म से तुम्हारा यह हक है। गंवाओ तो तुम जिम्मेवार हो। इस हक को पाने की तैयारी करो। तुम्हारे सुर-सुर में गीत हो जाएगा। तुम्हारी श्वास-श्वास संगीत बन जाएगी। परमात्मा से जुड़ो! मगर दीवानगी चाहिए। क्यों? दुकानदारों का यह काम नहीं। वे इतना बड़ा दांव नहीं लगा सकते। यह जुआरियों का काम है।

इसलिए मैं निरंतर कहता हूं कि मेरे संन्यासी को जुआरी होने की क्षमता चाहिए, साहस चाहिए।

अहंकार को दांव पर लगाना कोई छोटा-मोटा खेल नहीं है। सबसे बड़ा खेल है, उससे बड़ा फिर कोई खेल भी नहीं है। क्योंकि जिस दिन, जिस क्षण तुम इतना साहस जुटा लोगे कि कह सको कि मैं नहीं हूं, कि जान सको कि मैं नहीं हूं, कि अनुभव कर सको कि मैं नहीं हूं, कि मर जाओ स्वेच्छा से, वही संन्यास है। और उसी मृत्यु में समाधि का फूल खिलता है।

तुम्हारी आंख भी ज्योति से भरेगी--बुद्धों की ज्योति। और तुम्हारे चरण भी कमलों पर होंगे--बुद्धों के कमल। और तुम्हारे प्राण में भी सरगम उठेगा--सरगम जो त्रिभुवन को, सारे लोक को आनंद से और आलोक से आंदोलित कर देता है। इतनी बड़ी संपदा के तुम मालिक हो। मगर कैसे छोटे-छोटे भ्रम में जीवन गंवा रहे हो! मन तें इतने भरम गंवावो!

अब जागो! जागने की बेला आ गई। बेला तो कब की आई है, मगर तुम जागो तभी सवेरा है। तुम जब तक सोए हो, रात ही है। तुम्हारे जागने में ही सवेरा है, तुम्हारे सोने में ही रात्रि है। तुम्हारे सोने का नाम संसार है, तुम्हारे जागने का नाम मोक्ष है।

ओशो..."राम दुवारे जो मरे - 5"

CamScanner

10:13 pm 47%

खोली टोंटी और पानी निकल आएगा!

वह जो शास्त्र है सिर्फ टोंटी है। उसके पीछे बड़ा जाल है। शास्त्र की टोंटी खोलने से कोई ज्ञान नहीं निकल आएगा। उसके पीछे बड़ा जाल है। कृष्ण की गीता सिर्फ टोंटी है, पीछे कृष्ण का बड़ा जाल है, बड़ा रिजर्वायर है। वह आप गीता को दबाए फिर रहे हैं! आप वही गलती कर रहे हैं, वे जो अरब नासमझी से करते थे। शास्त्रों को दबाए फिरने से कुछ भी न होगा। वे सिर्फ टोंटियां हैं, उनसे कुछ भी नहीं निकल सकता। उनके पीछे बड़ा जाल है। उस पीछे बड़े जाल पर पहुंचना होगा, तो आप भी शास्त्र बन जाएंगे। तब आप जो बोलेंगे, वह शास्त्र बन जाएगा। लेकिन उस पीछे के रिजर्वायर पर वह छिपे जलस्रोत, परमात्मा का, सत्य का जहां है, वहां पहुंचना पड़ेगा। टोंटी ले जाने से कुछ भी नहीं हो सकता।

टोंटियां बिक रही हैं, मुफ्त भी बिक रही हैं! वह गीता प्रेस गोरखपुर टोंटियां छापता है! उसे अपने घर में रख लो! दो-दो पैसे, चार-चार पैसे में रख लो! खोलो टोंटी ज्ञान की धारा बहने लगेगी! नहीं, टोंटियों से कुछ भी नहीं हो सकता। ज्ञान नहीं, जानने की क्षमता विकसित करनी पड़ेगी।
मानना किसी और का दिया हुआ उधार ज्ञान है जबकि जानना स्वयं द्वारा अर्जित अनुभव है,इसलिए मानो मत जानो ।
आज बस इतना ही।

ओशो
शून्य के पार (प्रवचन-2)
संकलन-रामजी🙏🏽🌹🌹

Like Comment Send Share

19

Top comments

Write a public comment...

CamScanner

जाकर टोंटी खोल कर देखते फिर पानी गिर रहा है!

जिस दिन जाने का वक्त आया, सब वापस लौटने को थे। कार बाहर आ गई। सामान रख गया, सब अरब एकदम नदारद हो गए! तो उसने खोजवाया कि वे कहां गए? मैनेजर से पूछा कि सब साथी कहां गए? अभी तो यहां थे, पता नहीं कहीं बाहर तो नहीं निकल गए? होटल के आस-पास दिखवाया, कहीं भटक न जाएं, भाषा नहीं जानते! लेकिन वे कहीं न निकले! फिर उसे खयाल आया कि कहीं वे बाथरूम में न चले गए हों, जाने का वक्त है!

वह गया। अंदर जाकर देखा तो वे सब अपने-अपने बाथरूम में नल की टोंटी निकालने की कोशिश करते थे! तो उसने पूछाः यह तुम क्या कर रहे हो पागलो?

तो उन्होंने कहाः इस टोंटी को हम घर ले जाना चाहते हैं। ये बड़ी अद्भुत चीज हैं। बस खोलो और पानी निकलता है!

उसने कहा कि पागलो, टोंटी ले जाने से कुछ भी न होगा, क्योंकि टोंटी के पीछे बड़ा जाल है, बड़ा रिजर्वायर है पानी का। उधर से यहां तक आई हुई नालियां पड़ी हैं, उनसे पानी आ रहा है। टोंटी से कोई मतलब नहीं है।

और वे बिचारे यही समझते थे कि इतनी सी टोंटी, इसको खोल कर ले चलें घर, अरब में मजा आ जाएगा! जो भी देखेगा, वही चमत्कृत होगा। खोली टोंटी और पानी निकल आएगा!

वह जो शास्त्र है सिर्फ टोंटी है। उसके पीछे बड़ा जाल है। शास्त्र की टोंटी खोलने से कोई ज्ञान नहीं निकल आएगा। उसके पीछे बड़ा जाल है। कृष्ण की गीता सिर्फ टोंटी है, पीछे कृष्ण का बड़ा जाल है, बड़ा रिजर्वायर है। वह आप गीता को दबाए फिर रहे हैं! आप वही गलती कर रहे हैं, वे जो अरब नासमझी से करते थे। शास्त्रों को दबाए फिरने से कुछ भी न होगा। वे सिर्फ टोंटियां हैं, उनसे कुछ भी नहीं निकल सकता।

Write a public comment...
CamScanner

सत्य के साथ ओशो
Satish Purohit · 12h ·

एक आदमी था, बहुत अदभुत आदमी था–लारेंस। वह अरेबिया में, बहुत दिन तक अरब में आकर रहा। अरब की क्रांति में उसने भाग लिया। और धीरे-धीरे अरब लोगों के साथ उसका इतना प्रेम हुआ कि वह करीब-करीब अरबी हो गया। फिर अपने कुछ अरब मित्रों को लेकर वह पेरिस गया दिखाने। पेरिस में एक बड़ा मेला भरा हुआ था तो उसने कहा कि चलो तुम्हें पेरिस दिखा लाऊं। एक बड़े होटल में ठहराया। जाकर पेरिस घुमाया-एफिल टावर दिखाया, म्युजियम दिखाया, सब बड़ी-बड़ी चीजें दिखाईं! लेकिन अरबों को किसी चीज में रस न था! उनको रस एक अजीब चीज में था, जिसकी आप सोच ही नहीं सकते! वे लूव्र म्यूजियम में जल्दी करें, कि जल्दी होटल वापस चलो!

मेले में दिखाने ले गया। एक्झिबीशन दिखाई–बड़ी-बड़ी चीजें थीं। एफिल टावर को दिखाया। वे कहते कि जल्दी वापस चलो और जल्दी से जाकर बाथरूम में घुस जाते! इसने कहा, मामला क्या है!

सिनेमा में ले जाएं तो वे बीच में कहें कि जल्दी वापस चलो और जाकर सबके सब, जो आठ-दस साथी थे, सब अपने-अपने बाथरूम के अंदर हो जाते! उसने कहा कि मामला क्या है!

पता चला कि मामला यह था–उनके लिए सबसे चमत्कार की चीज थी–टोंटी नल की! रेगिस्तान में रहने वाले लोग थे, उनके लिए इतना बड़ा मिरेकल था यह कि टोंटी खोलो और पानी बाहर! वे तो बस बाथरूम भी इतना बड़ा चमत्कार था–क्योंकि पानी की बड़ी तकलीफ थी और उनकी समझ में नहीं आता था कि यह हुआ क्या, होता कैसे! कि यह होता कैसे है? वे तो बार-बार दिन में बीस दफा अंदर बाथरूम में जाकर टोंटी खोल कर देखते फिर पानी गिर रहा है!

जिस दिन जाने का वक्त आया, सब वापस लौटने को थे। कार बाहर आ गई। सामान रख गया, सब अरब एकदम नदारद हो गए! तो उसने

Write a public comment...

CamScanner

10:07 pm 48%

Naye bharat ke khoj · 17h ·

जो पुरुष तृप्त है, शुद्ध इंद्रिय वाला है और सदा एकाकी रमण करता है, उसी को ज्ञान और योगाभ्यास का फल प्राप्त हुआ है।'*

एक–एक शब्द को ध्यानपूर्वक समझना।

पहली बात. साधारणत: लोग सोचते हैं, एकाकी रमेंगे तो ज्ञान उपलब्ध होगा। यह सूत्र उलटा है। यह कहता है. जो एकाकी रमने में सफल हो गया उसे ज्ञान का फल मिल गया। एकाकी रमने से कोई ज्ञान को नहीं पाता, ज्ञान को पाने से एकाकी होने की क्षमता आती है। अकेले भाग जाने से तुम ज्ञान को उपलब्ध न हो जाओगे, हिमालय की कंदराओं में बैठ कर ज्ञान को उपलब्ध न हो जाओगे। तुम तो तुम ही रहोगे, जो बाजार में था वही हिमालय की गुफा में बैठ जायेगा। बाहर की स्थिति को बदलने से भीतर कोई क्रांति न हो जायेगी। घर में हो कि मंदिर में हो, क्या फर्क पड़ेगा? और भीड़ में हो कि अकेले, क्या फर्क पड़ेगा रूम तुम तो तुम ही रहोगे। यह तुम्हारा होना इतनी आसानी से नहीं बदलता। तो कोई संसार को छोड़ कर चला गया है, सोचता है, संसार को छोड़ने से बदलाहट हो जायेगी। बदलाहट हो जाये तो संसार छूट जाता है, लेकिन संसार को छोड़ने से बदलाहट नहीं होती।

*यह सूत्र अत्यधिक महत्वपूर्ण है। मेरी पूरी देशना यही है। लोगों ने अक्सर कारण को कार्य समझ लिया है, कार्य को कारण समझ लिया है। लोग सोचते हैं : भोग छूट जाये तो त्याग फलित हो जायेगा। नहीं, ऐसा नहीं है। त्याग फलित हो जाये तो भोग छूट जाता है। त्याग का रस आ जाये तो भोग विरस हो जाता है। जिसके हाथों में हीरे–जवाहरात आ गये, वह कंकड़–पत्थर नहीं बीनता। लेकिन तुम सोचते हो कि कंकड़–पत्थर बीनना बंद कर देने से हीरे–जवाहरात हाथ में आ जायेंगे, तो तुम बड़ी गलती में पड़े हो। कंकड़–पत्थर न बीनने से केवल कंकड़–पत्थर न हाथ में रहेंगे, हीरे–जवाहरातों के आने का क्या संबंध है ?,,,,,,,,,,

संन्यास का अर्थ होता है; अकेले होने की क्षमता। अकेला होना नहीं, अकेले होने की क्षमता। जहां भी हो, यह स्मरण बना रहे कि "मैं अकेला हूं।' तब बीच-बाजार

CamScanner

10:07 pm 48%

संन्यास का अर्थ होता है; अकेले होने की क्षमता। अकेला होना नहीं, अकेले होने की क्षमता। जहां भी हो, यह स्मरण बना रहे कि "मैं अकेला हूं।" तब बीच-बाजार में तुम संन्यासी हो । गृहस्थ होकर संन्यासी हो । पत्नी है, बच्चे हैं, दुकान है, बाजार है तुम संन्यासी हो। इतनी याद बनी रहे कि "मैं अकेला हूं।"

ओशो

जिन सूत्र

(भाग – 02) प्रवचन – 31

अहोभाव

CamScanner

10:06 pm 48%

तीसरा कहता है:

"कभी भी यह शुरू होता है सही समय होता है। "

सब कुछ सही समय पर शुरू होता है न पहले न बाद में

जब हम अपने जीवन में कुछ नया शुरू करने के लिए तैयार होते हैं, तभी यह शुरू होगा।

और चौथा और अंतिम:

"जब कुछ समाप्त होता है, तो वह समाप्त होता है। "

बस यूं ही।

यदि हमारे जीवन में कुछ समाप्त हो गया है, तो यह हमारे विकास के लिए है, इसलिए बेहतर है कि इसे छोड़ देना, आगे बढ़ना और पहले से ही उस अनुभव से समृद्ध हो गया है।

मुझे लगता है कि यह संयोग से नहीं है कि आप इसे पढ़ रहे हैं, अगर ये शब्द आज हमारे जीवन में आते हैं; ऐसा इसलिए है क्योंकि हम यह समझने के लिए तैयार हैं कि कोई भी बर्फ का टुकड़ा गलत जगह पर नहीं गिरता है। "

Rate this translation

CamScanner

शमन के चार कानून

पहला कहता है:

"जो व्यक्ति हमारे जीवन में आता है वही सही व्यक्ति होता है"

दूसरे शब्दों में, कोई भी हमारे जीवन में संयोग से नहीं आता है, हमारे आस-पास के सभी लोग, जो हमारे साथ बातचीत करते हैं, किसी न किसी कारण से होते हैं, जो हमें हर स्थिति में सीखने और आगे बढ़ने के लिए मजबूर

दूसरा कानून कहता है:

"जो होता है वही होता है जो हो सकता था। "

कुछ भी नहीं, लेकिन कुछ भी नहीं, बिल्कुल कुछ भी नहीं जो हमारे जीवन में हमारे साथ होता है अन्यथा नहीं हो सकता था।

यहां तक कि सबसे महत्वहीन विवरण भी नहीं।

वहाँ नहीं है: "अगर मैंने ऐसा काम किया होता, तो ऐसा दूसरा होता ... ".

नहीं।

जो हुआ वही हो सकता था और हमें उस सबक को सीखने और आगे बढ़ने के लिए ऐसा होना चाहिए था।

हमारे जीवन में हमारे साथ होने वाली प्रत्येक परिस्थितियाँ परिपूर्ण होती हैं, भले ही हमारा मन और हमारा अहंकार विरोध करें और इसे स्वीकार नहीं करना चाहते।

तीसरा कहता है:

"कभी भी यह शुरू होता है सही समय होता है। "

सब कुछ सही समय पर शुरू होता है न पहले न बाद में

CS CamScanner

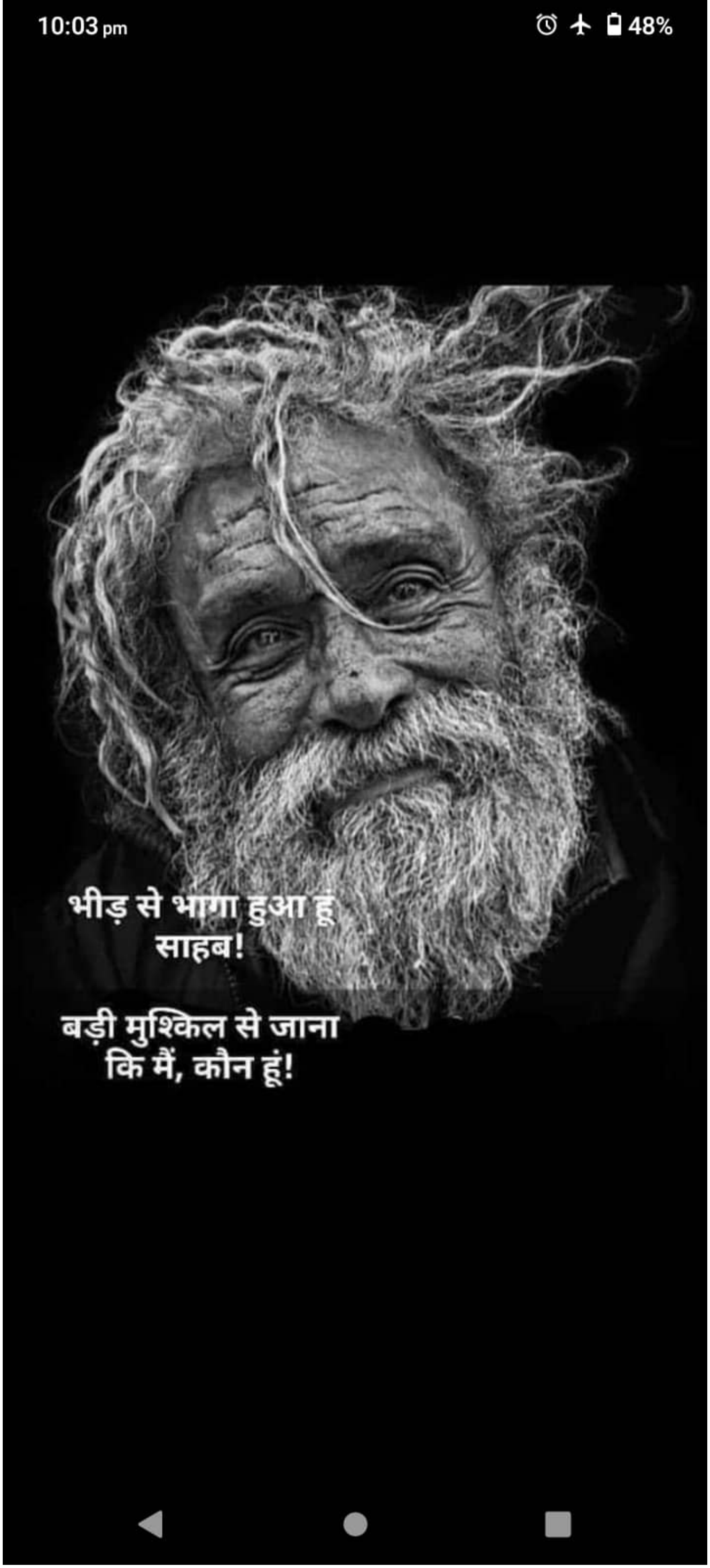

CamScanner

10:03 pm
48%
जो आदमी! 100%
समझदार है,
समझ लेना! वह आदमी
"मर चुका है.!!
ओशो
दिनेश कौशिक
19
2 comments
Like
Comment
Send

CamScanner

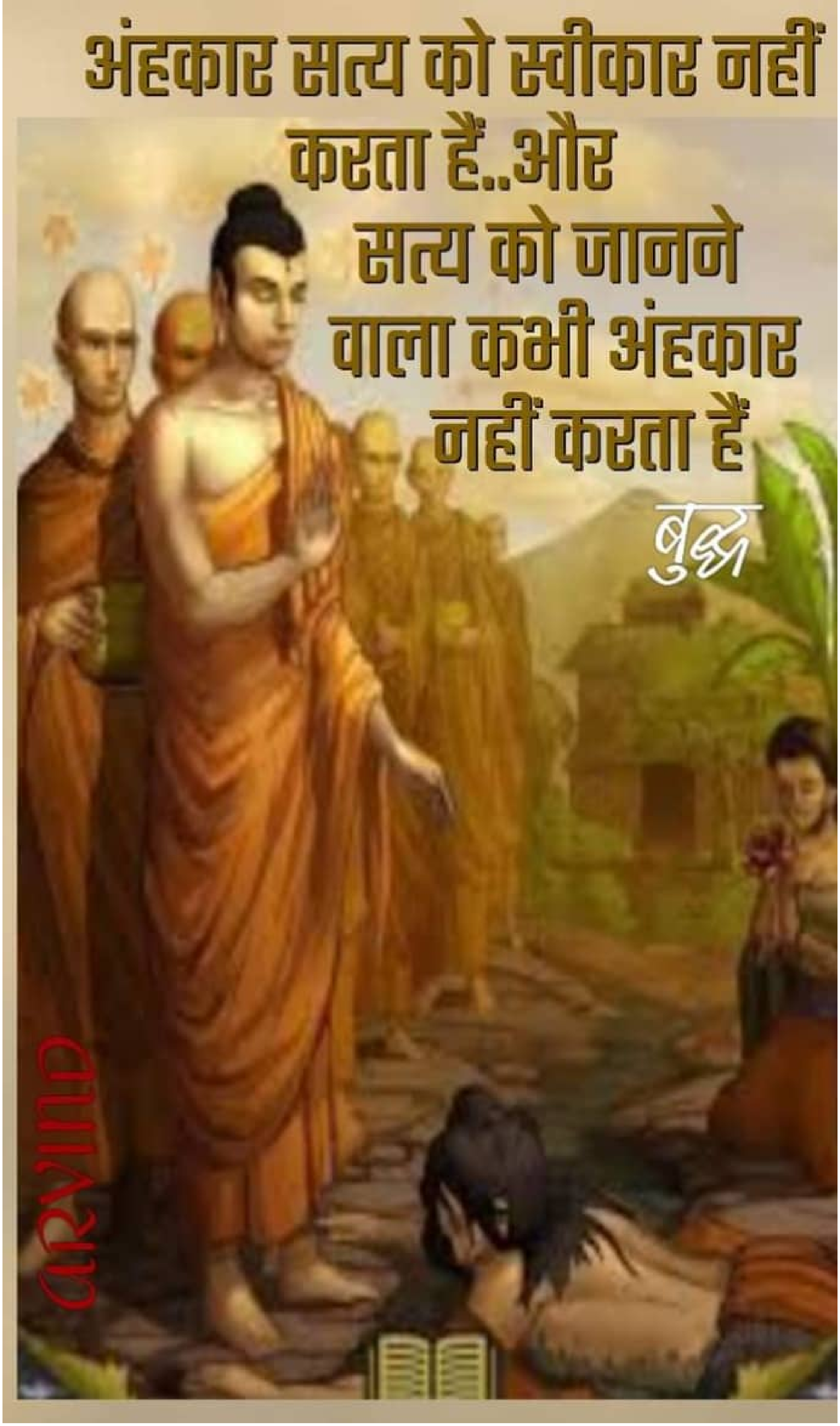
अंहकार सत्य को स्वीकार नहीं
करता हैं..और
सत्य को जानने
वाला कभी अंहकार
नहीं करता हैं
बुद्ध
ARVIND

CamScanner

9:58 pm 48%

कबीर कहते हैं : 'जहिया किरतम न हता...।' कबीर कहते हैं: जब कर्ता भी नहीं था; 'धरती हती न नीर।' और न पानी था और न पृथ्वी थी; 'उतपति परलय ना हता।' जब उत्पत्ति भी नहीं हुई थी संसार की ; प्रलय की तो बात हो कहां ! 'तब की कहै कबीर ।' कबीर तब को कह रहा है।

कबीर उस मूल स्रोत की कह रहा है, जिससे सब आया। कबीर उसकी देखकर कह रहा है। अब्राहम से पहले जीसस !

और कबीर तो और भी एक कदम आगे बढ़ गए; वे कहते हैं: पर- मात्मा से पहले कबीर । 'जहिया किरतम न हता'-कर्ता भी नहीं था, बनाने वाला भी नहीं था; कुछ बना नहीं था- 'धरती हती न नीर...। सृष्टि हुई ही न थी; सब शून्य था- महाशून्य था। 'उतपति परलय ना हता, तब की कहै कबीर ।'

तुम भी थे तब - अब्राहम से पहले। तुम भी थे तब-धरती हती न नीर । तुम पुराने हो। तुम अतिपुरातन हो। तुम सनातन हो। तुम्हें याद- भर नहीं रही, कबीर को याद आ गई है।

तुम वही हो, जो मूल में था । यही अर्थ है कहने का तत्त्वमसि - तुम परमात्मा हो । सब तुम्हारे बाद में हुआ है। और सब मिट जाएगा, तब भी तुम बचोगे । तुम्हारा कोई मिटना नहीं; तुम अमृत हो ।

-OSHO -

CamScanner

जीसस एक गांव के लोगों को समझा रहे हैं। यहूदियों की भीड़ है। क्योंकि यहूदी ही थे; और तो वहां कोई था नहीं। एक यहूदी रबाई ने पूछा कि, 'महानुभाव ! अब्राहम का नाम सुना कभी ?'

अब्राहम यहूदियों का सबसे पहला पैगम्बर, यहूदियों का पिता, जैसे राम हिन्दुओं के लिए प्यारे, वैसे अब्राहम यहूदियों के लिए प्यारे। और कुछ का तो कहना है कि राम और अब्राहम एक ही आदमी के दो नाम हैं। अब्राहम का पुराना नाम है-अवराम । और 'अब' का मतलब होता है- श्री-हिब्रू में,तो जो हिन्दी में श्रीराम का अर्थ होता है, वह अबराम का अर्थ होता है- हिब्रू में।

संभव है कि कहीं बहुत प्राचीन समय में, दूर, राम को मानने वाले लोग दो हिस्सों में बंट गए हों। और ये ही दो धर्म दुनिया में सब से ज्यादा पुराने हैं - हिन्दू और यहूदी। और इन्हीं दो धर्मों से दुनिया के सब धर्म निकले हैं। यहूदियों से निकली - ईसाइत और इसलाम । और हिन्दुओं से बौद्ध और जैन। इतने ही धर्म हैं दुनिया में खास । यहूदी और हिन्दू दो मूलधर्म मालूम होते हैं। दोनों के पीछे राम का नाम है।

तो उस यहूदी ने पूछा कि 'अब्राहम का नाम सुना कभी ?' और जीसस ने जो कहा, वह बड़ो अनूठी बात कही। जीसस ने कहा, 'जब अब्रा- हम भी पैदा नहीं हुआ था, तब भी मैं था।' यह तो बड़ी चोट करने वाली बात हो गई। और यहूदियों को बहुत बुरा लगा कि 'जब अब्राहम भी नहीं थे, तब भी मैं था ! मैं अब्राहम से पुराना हूं।'

जीसस यह कह रहे हैं कि मैं शाश्वत हूं। तुम भी शाश्वत हो। रूप आते हैं, जाते हैं। अब्राहम आया और गया । जीसस आया और गया । तुम आए और गए। ये रूप ही हैं, जो आते हैं और जाते हैं-आकृतियां । लेकिन जो भीतर छिपा हुआ सत्य है, वह शाश्वत है।

कबीर कहते हैं : 'जहिया किरतम न हता...।' कबीर कहते हैं: जब कर्ता भी नहीं था; 'धरती हती न नीर।' और न पानी था और न पृथ्वी थी; 'उतपति परलय ना हता।' जब उत्पत्ति भी नहीं हुई थी संसार की ; प्रलय की तो बात हो कहां ! 'तब की कहै कबीर ।' कबीर तब को कह रहा है।

CamScanner

9:56 pm 49%

लोभ, क्रोध और वासना

ये तीनों अगर न हो तो तुम्हारा अहंकार
बुझ जाएगा। और जहां अहंकार बुझा...
कि शून्य पैदा हुआ।

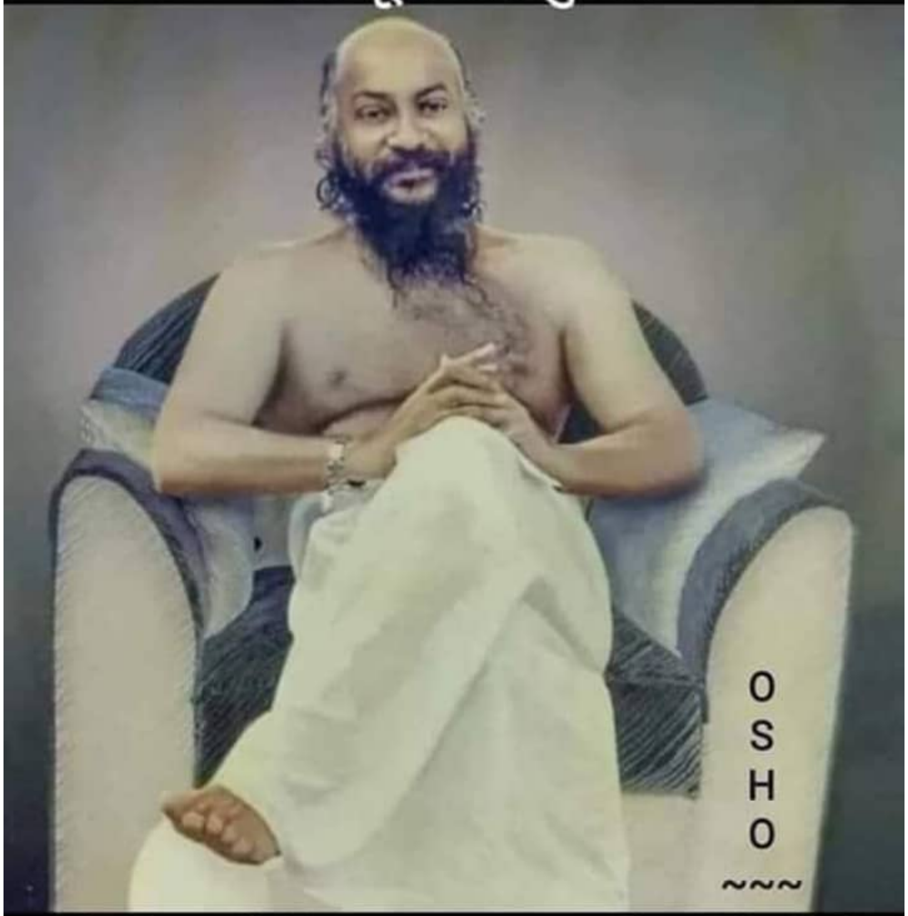

उसी शून्य में परमात्मा अवतरित होता है।
उसी खाली जगह मे,

CamScanner

9:56 pm 49%

Osho Rishi Valley. Shimla is feeling blessed.
1d ·

अब कितने सब मित्र नये वर्ष पर एक-दूसरे को शुभकामनाएं देंगे। इन मित्रों को पिछले वर्ष भी उन्होंने दी थीं। और फिर हम शुभकामनाओं को बड़े सरल मन से ग्रहण करेंगे और सरल मन से उनका प्रदान भी करेंगे। और जानते हुए कि यह सब व्यर्थ है, इसका कोई मतलब नहीं है।
तो मैं तो कोई शुभकामना नहीं करूंगा नये वर्ष के लिए आपको। क्योंकि मैं एक ही बात कह सकता हूं कि आपको याद दिलाऊं कि आपने इतने वर्ष पुराने कर डाले, तो नये वर्ष पर आप खयाल रखना कि अब फिर वही न करना आप जो अब तक किया है। इसको फिर वापस पुराना मत कर डालना, इसे नये करने की कोशिश करना। यह नया हो सकता है। और अगर यह नया हो गया तो प्रतिदिन नया हो जाता है, प्रतिदिन नये वर्ष का आरंभ है। पुराना टिकता ही नहीं, बचता ही नहीं, सब बह जाता है।
लेकिन हम ऐसा पकड़ते हैं पुराने को कि नये को होने के लिए अवकाश नहीं, स्पेस नहीं रह जाता। अगर हम अपने मन की खोजबीन करें, तो सब तरफ हम पुराने को इतने जोर से पकड़े हुए हैं कि नये के लिए जगह कहां है? नया आए कहां से आपके घर में? आपके चित्त में नये की किरण प्रवेश कहां से करे? आप तो पुराने को इतने जोर से पकड़े हुए हैं। उसे छोड़ते ही नहीं, रत्ती भर जगह नहीं छोड़ते उसमें। उधर स्पेस की जरूरत है, वहां जगह की जरूरत है, वहां से नया आ सकता है।

मेरी बातों को इतने प्रेम से सुना, उससे बहुत अनुगृहीत हूं। और आपके भीतर नया पैदा हो सके, ऐसी परमात्मा से प्रार्थना करता हूं।

आज इतना ही।

ओशो

CamScanner

एक दृष्टि राम भक्त हनुमान की ओर

1.	हनुमान जी का पहला नाम क्या था?
Ans	मारुति
2.	हनुमान जी की गदा का नाम क्या है?
Ans	कौमोदकी गदा
3.	हनुमान जी की आयु कितनी है?
Ans	4.32 अरब वर्ष
4.	हनुमान जी का सबसे शक्तिशाली मंत्र क्या है?
Ans	ॐ नमो भगवते हनुमते नमः।
5.	हनुमान जी को कौन सा भोग प्रिय है?
Ans	बूंदी
6.	हनुमान जी को कौन फूल पसंद है?
Ans	लाल पुष्प
7.	हनुमान अभी कहां है?
Ans	गंधमादन पर्वत पर
8.	हनुमान गदा का वजन कितना था?
Ans	21 टन, 42 फिट
9.	हनुमान जी पृथ्वी पर कब तक रहेंगे?
Ans	कलियुग के अंत तक

@Pi_education

~ शेयर जरूर करें🙏

CamScanner

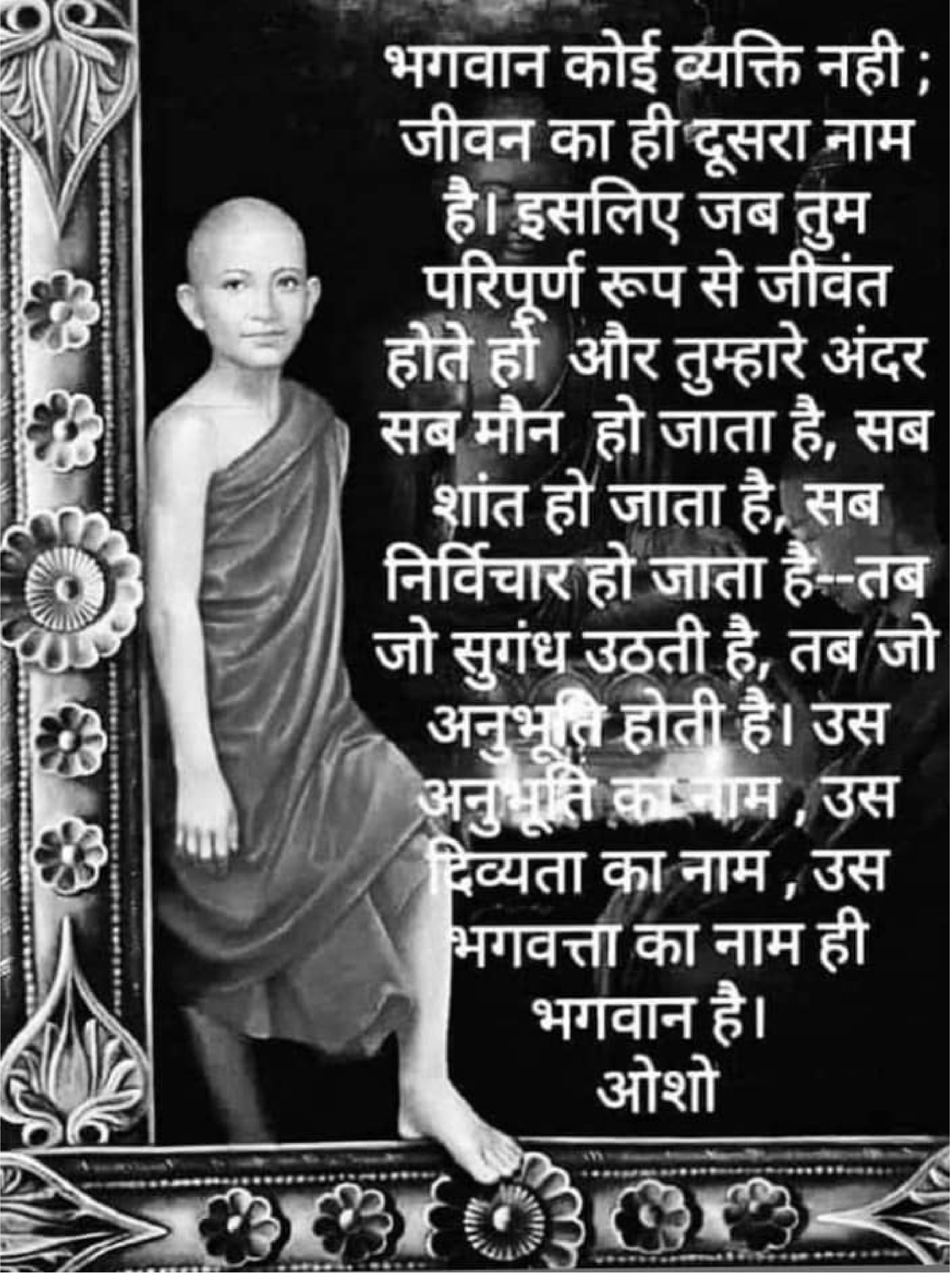

CS CamScanner

लोगों की हास्यास्पद बातों पर तुम आसानी से हंस सकते हो, लेकिन कभी तुम स्वयं पर भी हंसे हो? कभी तुमने स्वयं को कुछ हास्यास्पद करते हुए पकड़ा है? नहीं, स्वयं को तुम बिलकुल अनदेखा रखते हो -- तुम्हारा सारा देखना दूसरों के विषय में ही है, और उसका कोई लाभ नहीं है।

अवलोकन की इस ऊर्जा का उपयोग अपने अंतस के रूपांतरण के लिए कर लो। यह इतना आनंद दे सकती है, इतने आशीष बरसा सकती है कि तुम स्वप्न में भी नहीं सोच सकते। सरल सी प्रक्रिया है, लेकिन एक बार तुम इसका उपयोग स्वयं पर करने लगो, तो यह एक ध्यान बन जाता है।

किसी भी चीज को ध्यान बनाया जा सकता है!

अवलोकन तो तुम सभी जानते हो, इसलिए उसे सीखने का कोई प्रश्न नहीं है, केवल देखने के विषय को बदलने का प्रश्न है। उसे करीब पर ले आओ। अपने शरीर को देखो, और तुम चकित होओगे।

अपना हाथ मैं बिना द्रष्टा हुए भी हिला सकता हूं, और द्रष्टा होकर भी हिला सकता हूं। तुम्हें भेद नहीं दिखाई पड़ेगा, लेकिन मैं भेद को देख सकता हूं। जब मैं हाथ को द्रष्टा-भाव के साथ हिलाता हूं, तो उसमें एक प्रसाद और सौंदर्य होता है, एक शांति और एक मौन होता है।

तुम हर कदम को देखते हुए चल सकते हो, उसमें तुम्हें वे सब लाभ तो मिलेंगे ही जो चलना तुम्हें एक व्यायाम के रूप में दे सकता है, साथ ही इससे तुम्हें एक बड़े सरल ध्यान का लाभ भी मिलेगा।
ओशो🙏

CamScanner

9:51 pm 49%

🙏साक्षी🙏

साक्षी का प्रयोग शुरु करना होता है शरीर को चलते हुए, बैठे हुए, बिस्तर पर जाते हुए, या खाते हुए देखने से! स्थूलतम चीजों से व्यक्ति को शुरु करना चाहिए,
 क्योंकि यह सरल है। और फिर उसे सूक्ष्म अनुभवों की ओर जाना चाहिए -- विचारों को देखना शुरु करना चाहिए।और जब व्यक्ति विचारों को देखने में कुशल हो जाता है, तो उसे अनुभूतियों को देखना शुरु करना चाहिए। जब तुम्हें लगे कि तुम अपनी अनुभूतियों को भी देख सकते हो, तो फिर अपनी भाव-दशाओं को देखना शुरु करो, जो कि अनुभूतियों से अधिक सूक्ष्म भी हैं, और स्पष्ट भी।

द्रष्टा होने का चमत्कार यह है कि जब तुम शरीर को देखते हो, तो तुम्हारा द्रष्टा अधिक मजबूत होता है। जब तुम अपने विचारों को देखते हो, तो तुम्हारा द्रष्टा और भी मजबूत होता है। और जब अनुभूतियों को देखते हो, तो तुम्हारा द्रष्टा फिर और मजबूत होता है। जब तुम अपनी भाव-दशाओं को देखते हो, तो द्रष्टा इतना मजबूत हो जाता है कि स्वयं बना रह सकता है -- स्वयं को देखता हुआ, जैसे कि अंधेरी रात में जलता हुआ एक दीया न केवल अपने आस-पास प्रकाश करता है, बल्कि स्वयं को भी प्रकाशित करता है!

लेकिन लोग बस दूसरों को देख रहे हैं, वे कभी स्वयं को देखने की चिंता नहीं लेते। हर कोई देख रहा है -- यह सबसे उथले तल पर देखना है -- कि दूसरा व्यक्ति क्या कर रहा है, दूसरा व्यक्ति क्या पहन रहा है, वह कैसा लगता है। हर व्यक्ति देख रहा है -- देखने की प्रक्रिया कोई ऐसी नई बात नहीं है, जिसे तुम्हारे जीवन में प्रवेश देना है। उसे बस गहराना है -- दूसरों से हटाकर स्वयं की आंतरिक अनुभूतियों, विचारों और भाव-दशाओं की ओर करना है -- और अंततः स्वयं द्रष्टा की ओर ही इंगित कर देना है।

लोगों की हास्यास्पद बातों पर तुम आसानी से हंस सकते हो, लेकिन कभी तुम स्वयं पर भी हंसे हो? कभी तुमने स्वयं को कुछ हास्यास्पद करते हुए पकड़ा है? नहीं, स्वयं को तुम बिलकुल अनदेखा रखते हो -- तुम्हारा सारा देखना दूसरों के विषय में ही है, और उसका कोई लाभ

CamScanner

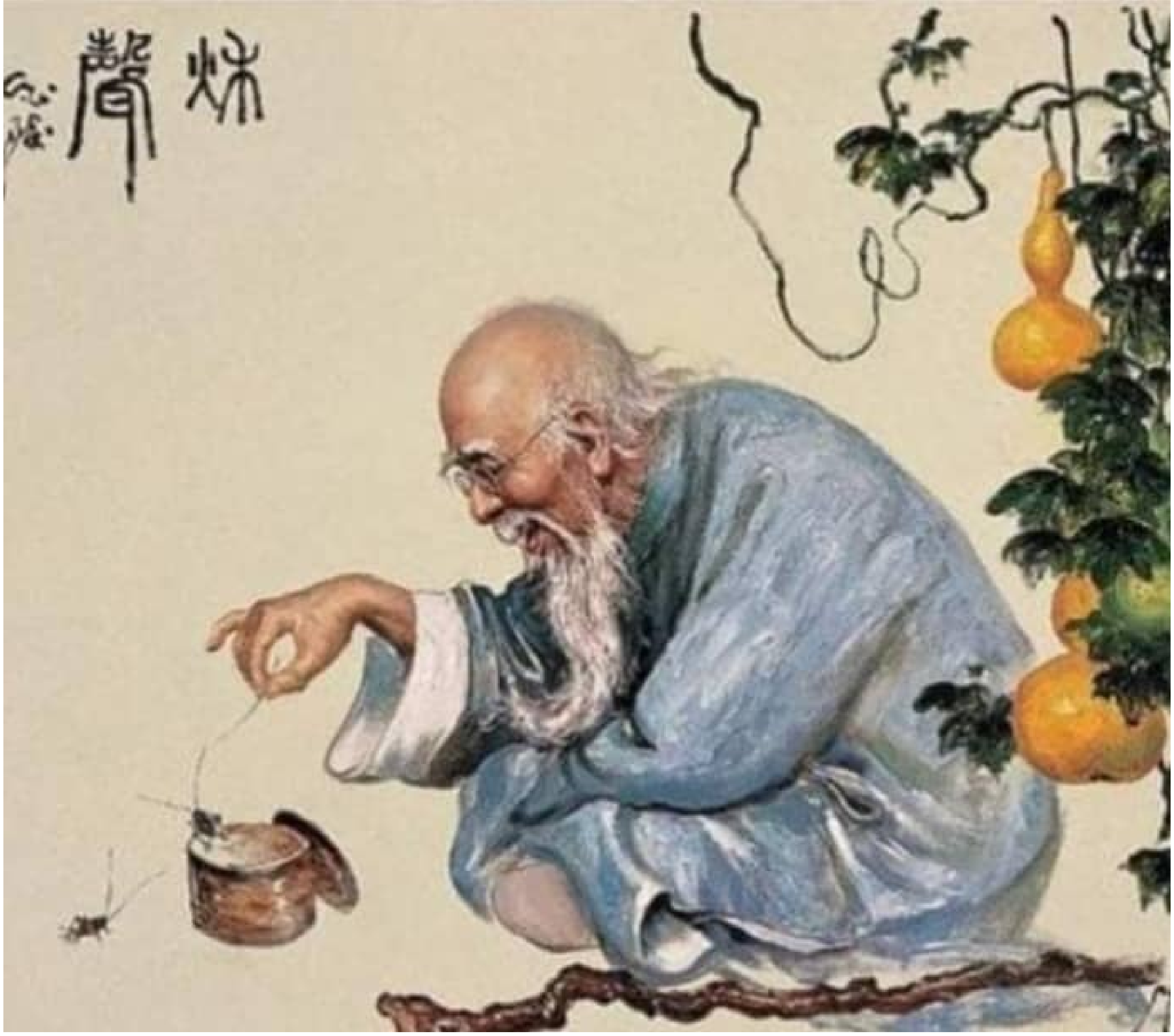

CamScanner

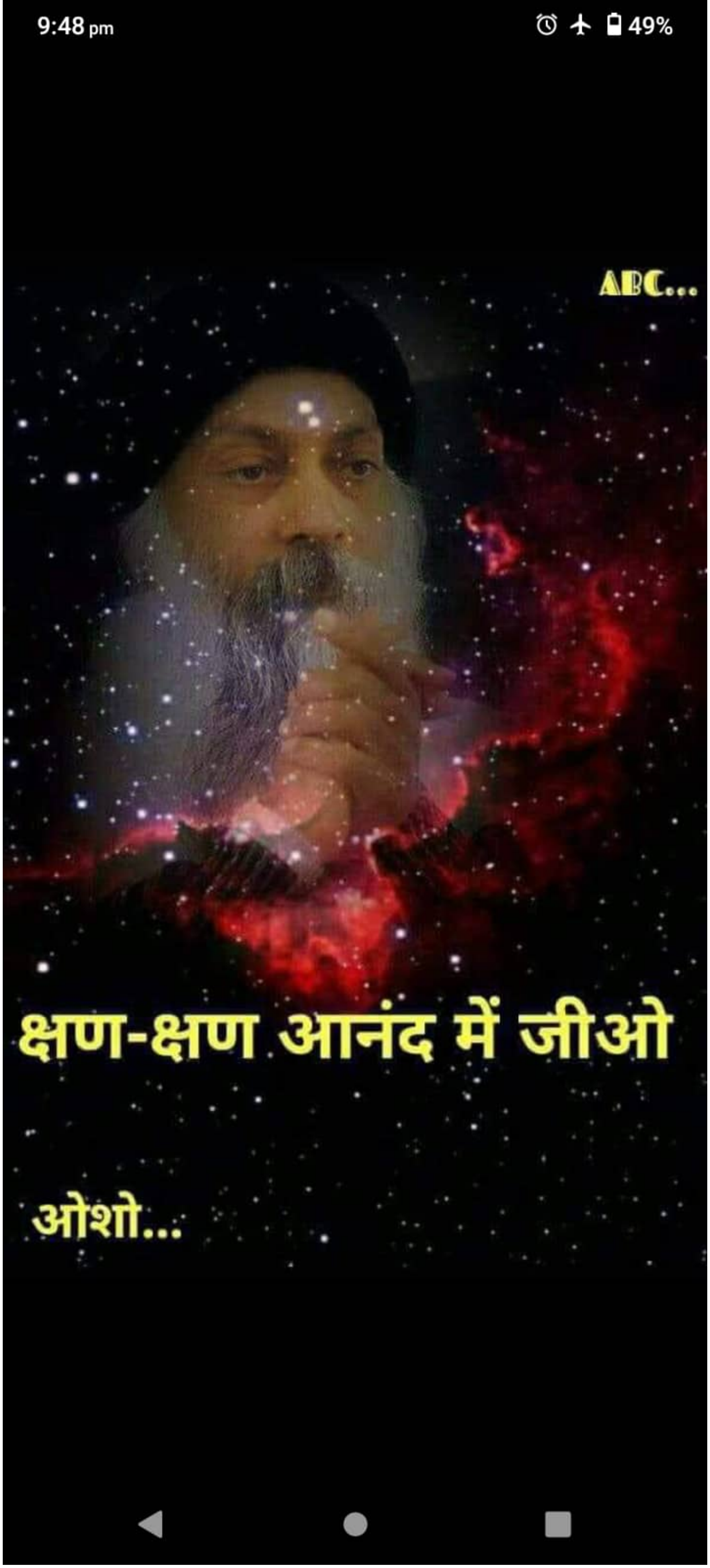

CamScanner

9:47 pm 49%
5 6

वह गया, लेकिन रोता हुआ वापिस लौटा। परमात्मा रोता हुआ वापिस लौटा! क्योंकि अंधे से जब उसने कहा कि मैं परमात्मा हूं तुझे वरदान देने आया हूं मांग ले जो मांगना है—उसने कहा कि लंगडे को अँधा कर दो। जब उसने लगडे से कहा तो लंगडे ने कहा कि अंधे को लंगडा कर दो प्रभु। 'ऐसे ही अज्ञनुभवों के कारण उसने आना भी जमीन पर धीरे—धीरे बंद कर दिया। कोई सार नहीं है। बीमारी दुगुनी हो गई। आने से कुछ फायदा न हुआ। दया का परिणाम और घातक हो गया।

अंधे ने मांगा, वहीं भूल हो गई। लंगड़े ने मांगा, वहीं भूल हो गई। आदतें पुरानी थीं और अभी भी क्रोध का जहर बाकी था। तो परमात्मा भी सामने खड़ा था, फिर भी चूक गए। आदमी के सामने कई बार मोक्ष की घड़ी आ जाती है, फिर भी आदमी चूक जाता है (क्योंकि पुरानी आदतें हमला करती हैं और मोक्ष की घड़ी में बड़ी जोर से हमला करती हैं। क्योंकि आदतें भी अपनी रक्षा करना चाहती हैं। हर आदत अपनी रक्षा करती है, टूटना नहीं चाहती।

ओशो - अष्टावक्र: महागीता, (भाग–1) प्रवचन–15
संकलन-रामजी 🙏🌹🌹

CamScanner

प्रेम मार्ग

Prema Agrawal · 6d ·

पुरानी आदतें जाती नहीं। बोध भी आ जाता है तो पुरानी आदतें लौट—लौट कर हमला करती हैं। आदतें बदला लेती हैं।

मैंने सुना है, एक अंधा और एक लंगड़ा दो मित्र थे—दोनों भिखारी। और दोनों की मित्रता एकदम जरूरी भी थी, क्योंकि एक अंधा था और एक लंगड़ा था। लंगड़ा चल नहीं सकता था, अंधा देख नहीं सकता था। तो अंधा चलता था और लंगड़ा देखता था। लंगड़ा अंधे के कंधों पर बैठ जाता, दोनों भिक्षा मांग लेते। साझेदारी थी भिखारी की दूकान में। लेकिन कभी—कभी झगड़ा भी हो जाता था; जैसा सभी साझेदारों में होता है। कभी एक ज्यादा ले लेता, दूसरा कम ले लेता। या लंगड़ा चकमा दे देता अंधे को, तो झगड़ा हो जाता था। एक दिन झगड़ा इतना बढ़ गया कि मारपीट हो गई। मारपीट हो गई और दोनों ने कहा कि अब यह साझेदारी खत्म, यह पार्टनरशिप बंद, अब नहीं करते। अब अपनी तरफ से ही घिसट लेंगे, मगर यह नहीं चलेगा। यह तो काफी धोखा चल रहा है।

कहते हैं, परमात्मा को बड़ी दया आई। पहले आती रही होगी अब नहीं आती। क्योंकि परमात्मा भी थक गया दया कर—कर के, कुछ सार नहीं। आदमी कुछ ऐसा ह,ऐ कि तुम दया करो तो भी उस तक दया पहुंचती नहीं। परमात्मा भी थक गया होगा। पर यह पुरानी कहानी है, दया आ गई। परमात्मा मौजूद हुआ, प्रगट हुआ। उसने उस दिन सोचा कि आज दोनो को आशीर्वाद दे दूंगा। अंधे के पास जा कर कहूंगा मांग ले जो तुझे मांगना है। स्वभावत: अंधा मांगेगा कि मुझे आंखें दे दो, क्योंकि वही उसकी पीड़ा है,। लंगड़े से कहूंगा, जो तुझे मांगना है तू मांग ले। वह मांगेगा पैर, उसको पैर दे दूंगा। अब दोनों को स्वतंत्र कर देना उचित है।

वह गया, लेकिन रोता हुआ वापिस लौटा। परमात्मा रोता हुआ वापिस लौटा! क्योंकि अंधे से जब उसने कहा कि मैं परमात्मा हूं तुझे वरदान देने आया हूं मांग ले जो मांगना है—उसने कहा कि लंगडे को अँधा कर दो। जब उसने लगडे से कहा तो लंगडे ने कहा कि अंधे को लंगडा कर दो प्रभु। 'ऐसे ही अज्ञनुभवों के कारण उसने आना भी जमीन पर धीरे—धीरे

CS CamScanner

अपो दीपो भव
5h ·

🙏मैं उपदेशक नहीं हूँ।कोई शिक्षा मैं नहीं देना चाहता हूँ।अपना कोई विचार तुम्हारे मन में डालने की मेरी कोई आकांक्षा नहीं है।सब विचार व्यर्थ हैं और धूलिकणों की भांति वे तुम्हें आच्छादित कर लेते हैं।और फिर जो तुम नहीं हो वैसे दिखाई पड़ने लगते हो।और जो तुम नहीं हो वह ज्ञात-सा मालूम होने लगता है।यह बहुत आत्मघातक है।
विचारों से अज्ञान मिटता नहीं, केवल छिप जाता है।ज्ञान को जगाने के लिये अज्ञान को उसकी पूरी नग्नता में जानना जरूरी है।इसलिए विचार के वस्त्रों से अपने को मत ढांको।समस्त वस्त्रों और आवरणों को अलग कर दो ताकि तुम अपनी नग्नता और रिक्तता से परिचित हो सको।वह परिचय ही तुम्हें अज्ञान के पार ले जाने वाला सेतु बनेगा।अज्ञान के बोध का तीव्र संताप ही क्रांति का बिंदु है।
इससे मैं तुम्हें ढांकना नहीं, उघाड़ना चाहता हूँ।जरा देखो।तुमने कितनी अंधी श्रद्धाओं और धारणाओं और कल्पनाओं में अपने को छिपा लिया है।और इन मिथ्या सुरक्षाओं में तुम अपने को सुरक्षित समझ रहे हो।यह सुरक्षा नहीं, आत्मवंचना है।
मैं तुम्हारी इस निद्रा को तोड़ना चाहता हूँ।स्वप्न नहीं, केवल सत्य ही एकमात्र सुरक्षा है।
और यदि तुम स्वपनों को छोड़ने का साहस करो तो सत्य को पाने के अधिकारी हो जाते हो।कितना सस्ता सौदा है!सत्य को पाने के लिए और कुछ नहीं केवल स्वप्न ही छोड़ने पड़ते हैं।
विचारों की,स्वपनों की,कल्पना-चित्रों की मूर्च्छा को तोड़ना है।उससे,जो कि दिख रहा है,उसपर जागना है, जो कि देख रहा है।
'वह द्रष्टा ही सत्य है,उसे पा लो,तो समझो जीवन पा लिया है।'यह किसी से कह रहा था।वे सुनकर विचारमग्न हो गए।मैंने उनसे कहा:आप तो सोच में पड़ गये।उसी से तो मैं जागने को कह रहा हूँ।वही तो निद्रा है।
🙏ओशो🙏

CamScanner

9:42 pm 49%

अपो दीपो भव

5h ·

🙏 अपने जन्मदिन (11th Dec, 1970) पर दिया गया ओशो का प्रवचन 🙏

उस दिन से आपका जन्म शुरू हुआ जिस दिन से यह जिंदगी व्यर्थ दिखाई पड़नी शुरू हो जाए, उस दिन मैं कहूंगा आपकी असली जिंदगी शुरू हुई। आपका असली जन्म शुरू हुआ। और इस तरह के आदमी को ही द्विज, ट्वाइस बॉर्न। जनेऊ डालने वाले को नहीं। क्योंकि जनेऊ तो किसी को भी डाला जा सकता है।
द्विज हम कहते रहे हैं उस आदमी को जो इस दूसरी जिंदगी में प्रवेश कर जाता है। एक जन्म है जो मां-बाप से मिलता है वह शरीर का ही हो सकता है। कि और जन्म है जो स्वयं की खोज से मिलता है वही जीवन की शुरुआत है। इस जन्मदिन पर, मेरे तो नहीं कह सकता। क्योंकि मैं तो जीसस, बुद्ध और लाओत्से से राजी हूं। लेकिन इस जन्मदिन पर जो कि अ, ब, स, द किसी का भी हो सकता है। आपसे इतना ही कहना चाहता हूं कि एक और सत्य भी है। उसे खोजें। एक और जीवन भी है यहीं पास, जरा मुड़ें तो शायद मिल जाए। बस किनारे पर, कोने पर ही। और जब तक वह जीवन न मिल जाए, तब तक जन्मदिन मत मनाएं। तब तक सोचें मत जन्म की बात। क्योंकि जिसको आप जन्म कह रहे हैं, वह सिर्फ मृत्यु का छिपा हुआ चेहरा है। हां, जिस दिन जिसको मैं जन्म कह रहा हूं, उसकी आपको झलक मिल जाए, उस दिन मनाएं। उस दिन फिर प्रतिपल जन्म है, क्योंकि उसके बाद फिर जीवन ही जीवन है–शाश्वत, अनंत; फिर उसका कोई अंत नहीं है। ऐसे जन्म की यात्रा पर आप निकलें, ऐसी परमात्मा से प्रार्थना करता हूं।

🌼 ओशो 🌼

CamScanner

CamScanner

4:49 am 35%

खान भाई नें कन्हैया को गोद में उठाकर प्यार से उसके चरणों से खून पूँछते हुए पूछा बेटे तेरा क्या नाम है कन्हैया बोला श्याम, खान भाई बोला तुम तो मंदिर से आये हो फिर ये खून क्यों निकल रहे हैं।

कन्हैया बोला नहीं मैं मन्दिर से नहीं गोकुल से पैदल चलकर आया हूँ क्योंकि तुमने मेरी जैसी मूरत दिल में बसाई में उसी मूरत में तुम्हारे पास आया हूँ इसलिए मुझे गोकुल से पैदल आना पड़ा है और पैरों में काँटे लग गये हैं।

खान भाई भगवान को पहचान गया और वादा किया कि हे कन्हैया, हे मेरे मालिक, में तेरा हूँ और तेरे गुण गाया करूँगा और तेरे ही पद लिखा करूँगा इस तरह एक मुसलमान खान भाई से रसखान बनकर भगवान का पक्का भक्त बना।

----------:::×:::----------

"जय जय श्री राधे"

****

"श्रीजी की चरण सेवा" की सभी धार्मिक, आध्यात्मिक एवं धारावाहिक पोस्टों के लिये हमारे पेज से जुड़े रहें।

CamScanner

4:49 am VoLTE 4G R 35%

"कल्याण"- गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित मासिक "पत्रिका"

श्रीजी की चरण सेवा · 15h ·

. "भक्त रसखान"

एक मुसलमान था जो रोज पान की दुकान पर पान खाने जाता था। एक दिन उसकी नजर वहाँ लगी हुई कन्हैया की तस्वीर पर पड़ी तो उसने पान वाले से पूछा भाई ये बालक किसका है और इसका क्या नाम है। पान वाला बोला ये श्याम है। खान साहब बोले ये बालक बहुत सुन्दर है, घुंघराले बाल हैं, हाथ में मुरली भी मनोहर लगती है मगर ये जिस जमीन पर खड़ा है वो खुरदरी है, इसके पैरों में छाले पड़ जायेंगे, इसको चप्पल क्यों नहीं पहनाते हो। पान वाला बोला तुझे दया आ रही है तो तू ही पहना दे।

ये बात खान भाई के दिल में उतर गई और दूसरे दिन कन्हैया के लिए चप्पल खरीदकर ले आया और बोला लो भाई मैं चप्पल ले आया बुलाओ बालक को। पान वाला बोला कि ये बालक यहाँ नहीं रहता है ये वृंदावन रहता है, वृंदावन ही जाओ। खान साहब ने पूछा की इसका पता तो बताओ कि वृंदावन में कहाँ रहता है पान वाला बोला इसका नाम श्याम है और वृंदावन के बांके बिहारी मन्दिर में रहता है।

खान साहब वृंदावन के लिए चल दिए वृंदावन में बांके बिहारी मंदिर में जैसे ही प्रवेश करने लगा तो मंदिर के पुजारी ने बाहर ही रोक दिया और कहा कि तुम दूसरे समाज के हो इसलिए मंदिर में तुम्हारा प्रवेश नहीं कर सकते। खान भाई यह सोचकर कि मेरा श्याम कभी तो घर से बाहर आयेगा मन्दिर के गेट पर ही बैठकर इन्तजार करने लग गया।

उसे इन्तजार करते-करते पूरा दिन निकल गया रात भी निकल गई भोर का समय था तो उसके कानों में घुंघरूओं की आवाज आई उसने खड़ा होकर चारों तरफ देखा कुछ दिखाई नहीं दिया फिर उसने अपने चरणों की तरफ देखा तो श्याम उसके चरणों में बैठा हुआ दिखते हैं। श्याम को देखकर खान भाई की खुशी का ठिकाना नहीं रहा मगर उसे बहुत दु:ख हुआ जब कन्हैया के चरणों से खून निकलता हुआ देखा।

खान भाई नें कन्हैया को गोद में उठाकर प्यार से उसके चरणों से

CamScanner

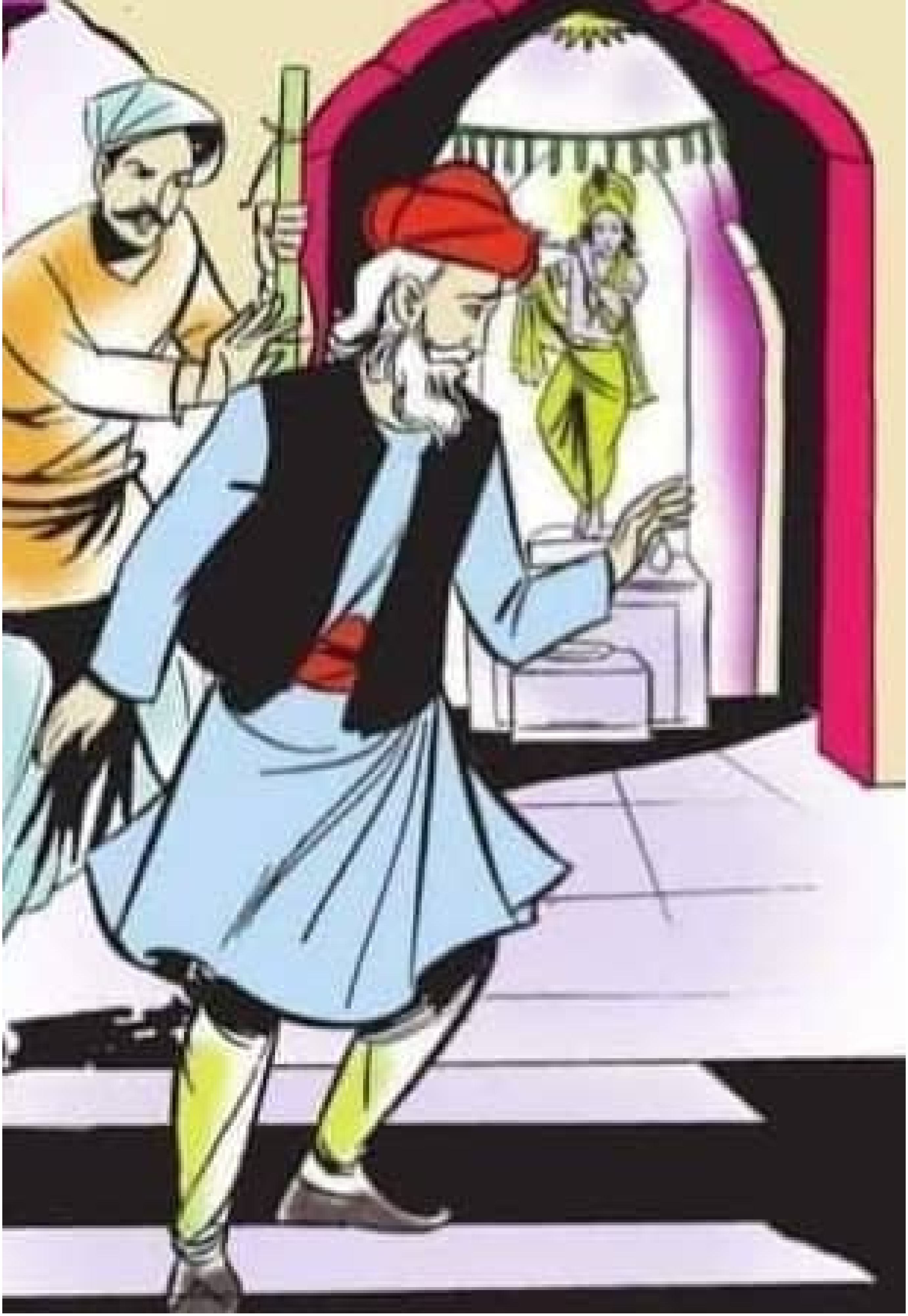

CamScanner

सत्यनाम
सदगुरु कबीर साहेब वाणी वचन
दास:नरेश कुमार बैरागी
सदगुरु कबीर साहेब
देख कबीरा दंग रह गया,
मिला ना कोई मीत।
मंदिर मस्जिद के चक्कर में,
खत्म हो गई प्रीत।।
सदगुरु कबीर साहेब वाणी वचन
दास:नरेश कुमार बैरागी

CamScanner

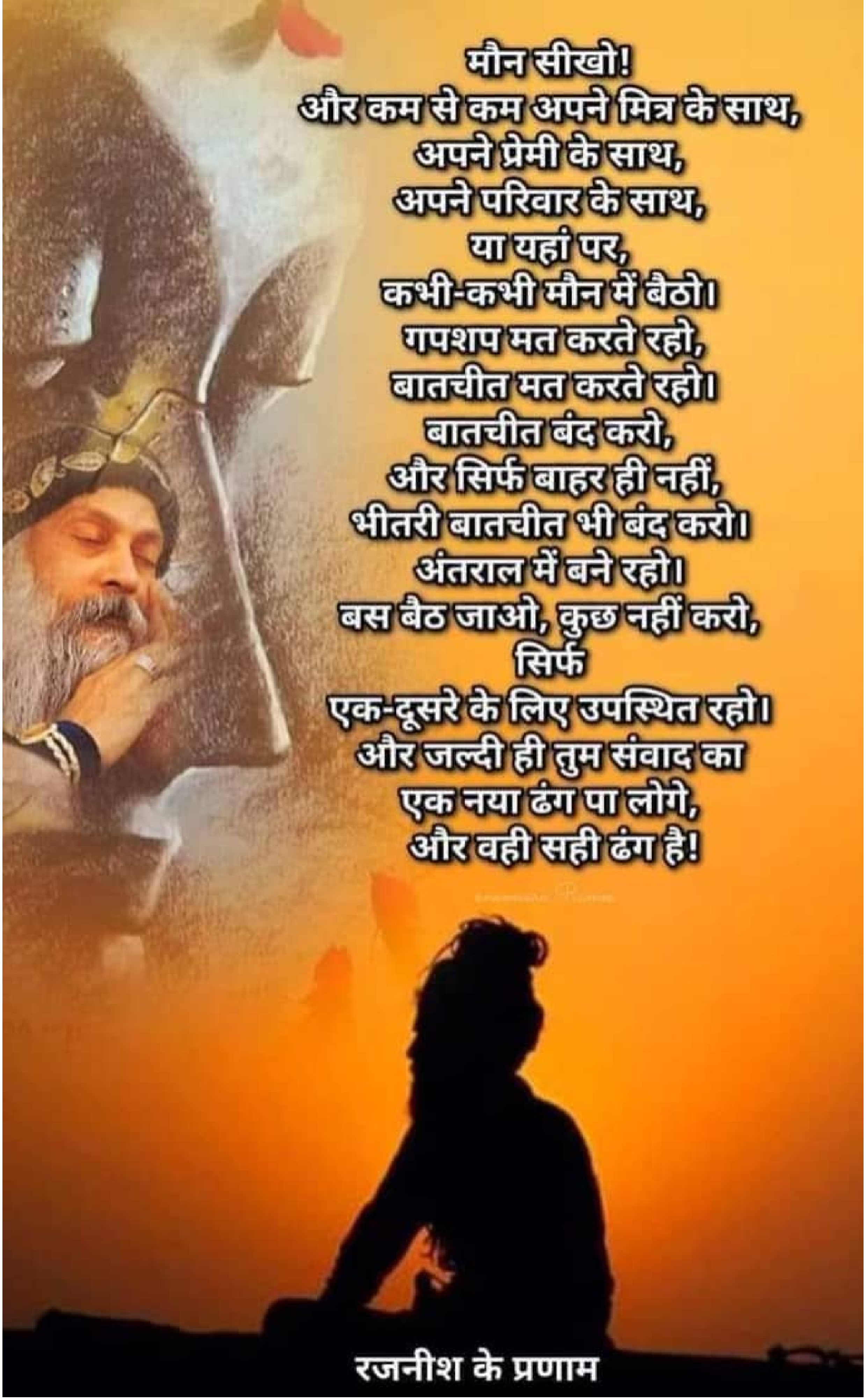
मौन सीखो!
और कम से कम अपने मित्र के साथ,
अपने प्रेमी के साथ,
अपने परिवार के साथ,
या यहां पर,
कभी-कभी मौन में बैठो।
गपशप मत करते रहो,
बातचीत मत करते रहो।
बातचीत बंद करो,
और सिर्फ बाहर ही नहीं,
भीतरी बातचीत भी बंद करो।
अंतराल में बने रहो।
बस बैठ जाओ, कुछ नहीं करो,
सिर्फ
एक-दूसरे के लिए उपस्थित रहो।
और जल्दी ही तुम संवाद का
एक नया ढंग पा लोगे,
और वही सही ढंग है!
रजनीश के प्रणाम

CamScanner

4:44 am
VoLTE 4G R 36%

APP STORE
Watch the Best Movies of Peacock - Fifty Shades of Grey
Subscribe

720
3 comments • 9 shares
Like Comment Share

ओशो - जीवन-मृत्यु

Abhishekh Kumar · 6h ·

कार्ल मार्क्स ने कहा है कि धर्म ने आज तक आदमी को अफीम दी है।

और इसमें बहुत दूर तक सचाई है। कम से कम जिनको तुम साधु-संत कहते हो, उनके संबंध में तो यह बात सौ प्रतिशत सच है। हां, दो-चार लोगों को छोड़ दो-एक बुद्ध को, एक कृष्ण को, एक महावीर को, एक क्राइस्ट को, एक मोहम्मद को, ऐसे कुछ लोग छोड़ दो, वे अपवाद हैं-बाकी जो भीड़-भाड़ है कुंभ के मेले में तुम्हारे साधु-संतों की, उनके संबंध में मार्क्स बिल्कुल ठीक कहता है कि जनता को अफीम पिलाई गई है।

लेकिन तुम अफीम मांगते हो। तुम कहते हो, किसी तरह जिंदगी को झेलने योग्य बना दो। तुम्हारी जिंदगी दुखपूर्ण है, यह सच है। यह दुख मिट भी सकता है, यह भी सच है। मगर दुख को मिटाना अफीम से नहीं होता। दुख को मिटाने के लिए श्रम करना होगा, साधना करनी होगी। दुख को मिटाने के लिए दुख की आधारभूत जड़ें काटनी होंगी। दुख है तो उसके कारण हैं। उन कारणों को मिटाना होगा। बीमारी है तो उसकी वजह है। सिर्फ बीमारी के लक्षण मिटाने से बीमारी न मिट जाएगी।

- ओशो

CamScanner

हमें भी मृत्यु पर विजय प्राप्त करनी है।
हमें भी बिना घबराए, बिना अटके,
बिना भटके, बिना पीछे मुड़कर देखे,
निरंतर आगे बढ़ते रहना है।

037 नाव जला दो

SHASHWAT ATRIPTI

Swami Lokeshanand Paramhans

CamScanner

4:35 pm 69%

Swami Lokeshanand
10h ·

मालूम नहीं यह कहानी कभी घटी थी, या काल्पनिक है, पर कीमती है। वैसे भी इस मिथ्या जगत में, जहाँ स्वप्न के सिवा कुछ है ही नहीं, झूठी कहानी से भी सत्य को पाने का रास्ता मिल जाए तो हर्ज भी क्या है?
एक राजा अपने विजय अभियान पर निकला हुआ था। कईं राज्य जीतने के बाद वह राजा अपने मंत्रियों से, एक और द्वीप पर चढ़ाई करने की योजना पर विचार विमर्श कर रहा था।
मंत्री कह रहे थे कि अब और युद्ध न किया जाए। कारण यह था कि एक तो सेना कम रह गई थी, वह बहुत थकी हुई थी और उन्हें घर की याद भी सता रही थी। दूसरे, उस द्वीप पर खूंखार आदमखोर लोग रहते थे और उनकी संख्या भी बहुत अधिक थी।
राजा का पीछे हटने का मन नहीं था। तो उसने अपने मंत्रियों को कुछ निर्देश दिए और शाम को ही आक्रमण करने का आदेश दे दिया।
राजा की आज्ञा कैसे टाली जाए? तो शाम को सेना ने नावें तैयार कीं, और कूच कर दिया। सभी मृत्यु के भय से निष्प्राण हुए, अपनी मृत्यु निश्चित जान, बेमन ही आगे बढ़े जा रहे थे।
जैसे ही सेना द्वीप के किनारे उतरी, एक मंत्री ने सभी नावों में आग लगा दी। तब तक रात हो चली थी। नावें धू धू कर जलने लगीं, चारों ओर बड़ी भयंकर लपटें छा गयीं और चीख पुकार मच गई। एक बार तो सभी की रही सही उम्मीद भी दम तोड़ गई।
पर तब बड़ा विचित्र वातावरण उत्पन्न हो गया। पीछे लौटने का तो कोई उपाय बचा न था, तो दो ही रास्ते बचे, करना या मरना। सभी की रगों में जोश भर गया। और जैसे सिंह मृगशावक को फाड़ डालता है, सैनिकों ने उस द्वीप की सेना को देखते ही देखते काट डाला।
लोकेशानन्द कहता है कि हमें भी मृत्यु पर विजय प्राप्त करनी है। हमें भी बिना घबराए, बिना अटके, बिना भटके, बिना पीछे मुड़कर देखे, निरंतर आगे बढ़ते रहना है। इस कहानी में तो नाव दूसरे ने जलाई है, पर हमें अपनी नाव स्वयं जलानी होगी।
तब आप देखेंगे कि मृत्यु के सिर पर पैर रख दिया गया है।

CamScanner

कठिन हो जाएगा, जटिल हो जाएगा। उसका चित्त खंड-खंड हो जाएगा। वह टूट जाएगा अपने भीतर। उसके भीतर द्वंद्व उत्पन्न हो जाएगा। और बड़ी मुश्किल तो यही है कि महावीर होने के लिए सरल होना जरूरी है; बुद्ध होने के लिए सरल होना जरूरी है; क्राइस्ट होने के लिए सरल होना जरूरी है; और जो उनका अनुगमन करते हैं, अनुगमन करने के कारण जटिल हो जाते हैं।

यह स्थिति आपको दिखनी चाहिए। कोई किसी का अनुगमन करके कभी सरल नहीं हो सकता। अनुगमन का अर्थ ही हुआ कि मैंने दूसरे मनुष्य जैसे होने की चेष्टा शुरू कर दी, बिना उस मनुष्य को समझे हुए, जो मैं था, जो मैं हूं। मैं जो हूं, इसे समझे बिना मैंने दूसरा मनुष्य होने की चेष्टा शुरू कर दी। मैं जो रहूंगा, वह रहा आऊंगा, और दूसरे मनुष्य का आवरण, अभिनय, पाखंड अपने ऊपर थोप लूंगा।

इसीलिए धार्मिक मुल्क अत्यंत पाखंडग्रस्त हो जाते हैं। हमारा मुल्क है। इससे ज्यादा पाखंडी मुल्क जमीन पर खोजना कठिन है। इससे ज्यादा जटिल मुल्क, जटिल कौम, जटिल जाति खोजनी बिलकुल मुश्किल है। जितना पाखंड हममें घना और गहरा है, इतना जमीन पर किसी कौम में नहीं हो सकता। और उसका कारण कुल यह है कि हम सब अनुकरण, आदर्श, हम कुछ होने के पागलपन में लगे हैं, उस मनुष्य को समझे बिना, जो हम हैं। जब कि जीवन की कोई भी वास्तविक क्रांति, जो हम हैं, उसके समझने से शुरू होती है। जो मैं वस्तुतः हूँ उसे समझने से शुरू होती है।

अमृत की दशा

ओशो

12:35 pm

:12 pm

OSHO Darshan🌹

Announcements

महावीर को हुए ढाई हजार वर्ष हुए, क्राइस्ट को हुए दो हजार वर्ष हुए, बुद्ध को हुए ढाई हजार वर्ष हुए; राम को और भी ज्यादा हुआ; कृष्ण को बहुत समय हुआ। उनके बाद हमने आदर्श पकड़ लिए हैं। बुद्ध के बाद ढाई हजार वर्ष से उनके पीछे चलने वाला बुद्ध होने की कोशिश में लगा है। कोई दूसरा आदमी बुद्ध हुआ? ढाई हजार वर्षों में नहीं हुआ। कोई दूसरा आदमी महावीर हुआ? ढाई हजार वर्षों में नहीं हुआ। कोई दूसरा आदमी क्राइस्ट हुआ? दो हजार वर्षों का अनुभव तो इनकार करता है कि नहीं हुआ। फिर भी लाखों लोग क्राइस्ट होने की चेष्टा में लगे हैं, लाखों लोग बुद्ध होने की, लाखों लोग महावीर होने की। जरूर इसमें कोई बुनियादी गलती है।

जो आदमी भी किसी दूसरे आदमी के जैसा होने की चेष्टा में लगता है, वह जटिल हो जाएगा। स्वभावत: जटिल हो जाएगा। वह अपने को इनकार करने लगेगा और दूसरे को अपने ऊपर थोपने लगेगा। वह अपनी वास्तविकता को निषेध करने लगेगा और दूसरे की आदर्शवत्ता को ओढ़ने लगेगा। वह आदमी कठिन हो जाएगा, जटिल हो जाएगा। उसका चित्त खंड-खंड हो जाएगा। वह टूट जाएगा अपने भीतर। उसके भीतर द्वंद्व उत्पन्न हो जाएगा। और बड़ी मुश्किल तो यही है कि महावीर होने के लिए सरल होना जरूरी है; बुद्ध होने के लिए सरल होना जरूरी है; क्राइस्ट होने के लिए सरल होना जरूरी है; और जो उनका अनुगमन करते हैं, अनुगमन करने के कारण जटिल हो जाते हैं।

यह स्थिति आपको दिखनी चाहिए। कोई किसी का अनुगमन करके कभी सरल नहीं हो सकता। अनुगमन का अर्थ ही हुआ कि मैंने दूसरे मनुष्य जैसे होने की चेष्टा शुरू कर दी, बिना उस मनुष्य को समझे हुए, जो मैं था, जो मैं हूं। मैं जो हूं, इसे समझे बिना मैंने दूसरा मनुष्य होने की चेष्टा शुरू कर दी। मैं जो रहूंगा, वह रहा आऊंगा, और दूसरे मनुष्य का आवरण, अभिनय, पाखंड अपने ऊपर थोप लूंगा।

...dmins can send messages

CamScanner

O निजानंद - Neo
Community admin

कामभोग से विरक्ति महावीर के साधना-पथ की अत्यंत अनिवार्य भूमिका है। कामवृत्ति का अर्थ है: मैं अपने से बाहर जा रहा हूं। कामवृत्ति का अर्थ है: मेरा सुख किसी और में निर्भर है। कामवृत्ति का अर्थ है: मैं स्वयं अपने में पर्याप्त नहीं हूं, कोई और मुझे पूरा करने को जरूरी है - महावीर वाणी #53 (41:30)

12:34 pm

O निजानंद - Neo
Community admin

20 MB

12:34 pm

41:30

O निजानंद - Neo
Community admin

Witnessing Love And Compassion in Self - From Death to Deathlessness#7 (03:31)

12:35 pm

CS CamScanner

6:19 pm 63%
facebook
15
Like Comment Send Share

Naye bharat ke khoj
13h ·

"तुम बस तुम जैसे हो , और तुम्हें अपना रास्ता खुद ही खोजना होगा"

सहारे मिल सकते हैं , सुझाव मिल सकते हैं , आदेश नहीं । *दूसरे की समझ के प्रकाश से तुम* *अपनी समझ को जगा सकते हो लेकिन दूसरे के जीवन* *को ढांचा मान कर* *अपने को ढाला कि मुक्ति तो दूर* * *जीवित भी तुम न रह जाओगे । तब तुम एक मुर्दे की भांति होओगे ; एक अनुकृति* *जिसकी आत्मा खो गई है ।*
और तुम्हें अगर कुछ होना है तो बस अपने ही जैसा होना है ।
*कोई दूसरा न तो आदर्श है , न कोई दूसरा तुम्हारे लिए नियम है , न तो कोई दूसरा तुम्हारा अनुशासन है । तुम्हारा बोध , तुम्हारी समझ , तुम्हारे अपने जीवन की भीतर की ज्योति को ही बढ़ाना है । सहारा लो , साथ लो ; जो पहुंच गए हैं उनसे स्वाद लो ; जो पहुंच गए हैं उनको गौर से देखो , पहचानो ; पर नकल मत करो , *अनुसरण मत करो*।

तुम समझना , देखना , सीखना , स्वाद लेना । उसी स्वाद , समझ और सीखने से तुम्हारी अपनी अंतर्ज्योति जगने लगेगी । उस अंतर्ज्योति के प्रकाश में ही तुम पहुंच सकोगे ।

दूसरे का प्रकाश न कभी किसी को ले गया है , न ले जा सकता है । वह दूसरे का है । वह कितना ही प्रकाशित मालूम पड़े , उससे अंधकार नहीं मिटेगा...!!

CamScanner

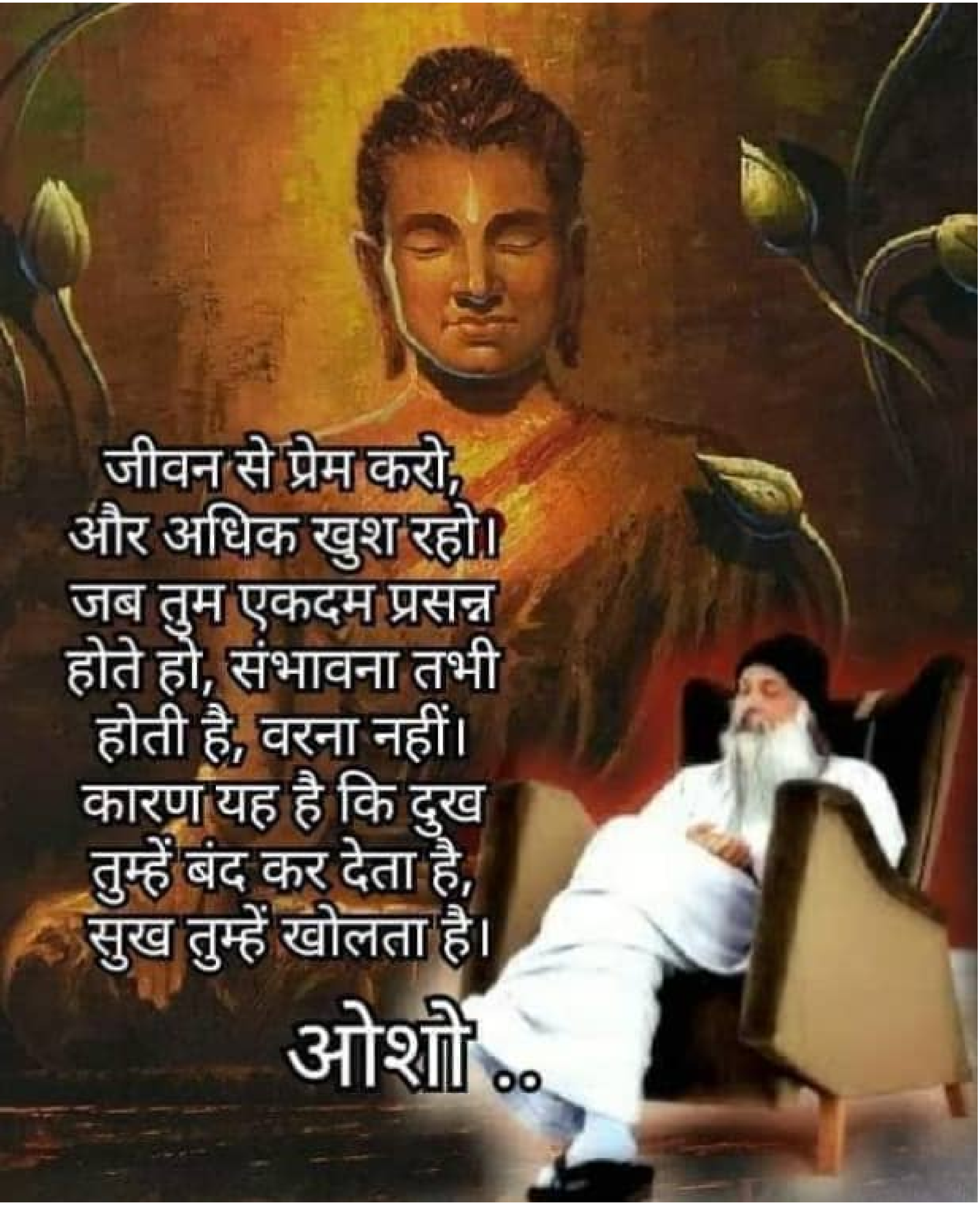
जीवन से प्रेम करो,
और अधिक खुश रहो।
जब तुम एकदम प्रसन्न
होते हो, संभावना तभी
होती है, वरना नहीं।
कारण यह है कि दुख
तुम्हें बंद कर देता है,
सुख तुम्हें खोलता है।
ओशो ..

CamScanner

6:19 pm VoLTE 4G R 63%

Naye bharat ke khoj
1d ·

जो पुरुष तृप्त है, शुद्ध इंद्रिय वाला है और सदा एकाकी रमण करता है, उसी को ज्ञान और योगाभ्यास का फल प्राप्त हुआ है।'*

एक—एक शब्द को ध्यानपूर्वक समझना।

पहली बात. साधारणत: लोग सोचते हैं, एकाकी रमेंगे तो ज्ञान उपलब्ध होगा। यह सूत्र उलटा है। यह कहता है. जो एकाकी रमने में सफल हो गया उसे ज्ञान का फल मिल गया। एकाकी रमने से कोई ज्ञान को नहीं पाता, ज्ञान को पाने से एकाकी होने की क्षमता आती है। अकेले भाग जाने से तुम ज्ञान को उपलब्ध न हो जाओगे, हिमालय की कंदराओं में बैठ कर ज्ञान को उपलब्ध न हो जाओगे। तुम तो तुम ही रहोगे, जो बाजार में था वही हिमालय की गुफा में बैठ जायेगा। बाहर की स्थिति को बदलने से भीतर कोई क्रांति न हो जायेगी। घर में हो कि मंदिर में हो, क्या फर्क पड़ेगा? और भीड़ में हो कि अकेले, क्या फर्क पड़ेगा रूम तुम तो तुम ही रहोगे। यह तुम्हारा होना इतनी आसानी से नहीं बदलता। तो कोई संसार को छोड़ कर चला गया है, सोचता है, संसार को छोड़ने से बदलाहट हो जायेगी। बदलाहट हो जाये तो संसार छूट जाता है, लेकिन संसार को छोड़ने से बदलाहट नहीं होती।

*यह सूत्र अत्यधिक महत्वपूर्ण है। मेरी पूरी देशना यही है। लोगों ने अक्सर कारण को कार्य समझ लिया है, कार्य को कारण समझ लिया है। लोग सोचते हैं : भोग छूट जाये तो त्याग फलित हो जायेगा। नहीं, ऐसा नहीं है। त्याग फलित हो जाये तो भोग छूट जाता है। त्याग का रस आ जाये तो भोग विरस हो जाता है। जिसके हाथों में हीरे—जवाहरात आ गये, वह कंकड़—पत्थर नहीं बीनता। लेकिन तुम सोचते हो कि कंकड़—पत्थर बीनना बंद कर देने से हीरे—जवाहरात हाथ में आ जायेंगे, तो तुम बड़ी गलती में पड़े हो। कंकड़—पत्थर न बीनने से केवल कंकड़—पत्थर न हाथ में रहेंगे, हीरे—जवाहरातों के आने का क्या संबंध है ?,,,,,,,,,

संन्यास का अर्थ होता है; अकेले होने की क्षमता। अकेला होना नहीं, अकेले होने की क्षमता। जहां भी हो,

CamScanner

मुझसे नफरत करनी है

तो होश में करना, जरा

भी चूके तो

मोहब्बत हो जाएगी।

-ओशो

CamScanner

12:12 pm 79%
facebook
मुक्ति है। चेष्टा हो और मांग न हो, तो परमात्मा इसी क्षण उपलब्ध है। श्रम हो और आकांक्षा न हो, तो परमात्मा इसी क्षण उपलब्ध है।
और नारद ने कहा: एक घटना आप ही जैसी और घटी है। जब मैं आपके पास से गया था, तो पास में ही एक युवा संन्यासी था, वह नाच रहा था वीणा को लेकर, उसी दिन दीक्षित हुआ था। मैंने उससे पूछा: तुम्हें भी पूछना है परमात्मा से कि कितनी देर लगेगी? वह कुछ बोला नहीं, हंसने लगा। मेरे प्रश्न पर हंसने लगा, कुछ बोला नहीं। लेकिन मैंने उसके लिए भी पूछा। और जब मैं लौट कर उसके पास गया और मैंने कहा, मित्र, बड़ी मुश्किल है; मैं डर गया क्योंकि जब आप तीन जन्म में माला नीचे पटक दिए, तो वह क्या करेगा पता नहीं, क्योंकि परमात्मा ने जो कहा वह बहुत लंबी बात थी। वह युवक बोला: क्या बोले वे? तो मैंने उससे कहा: तुम जिस वृक्ष के नीचे नाचते हो, उसमें जितने पत्ते हैं, भगवान ने कहा, उतने ही जन्म और लग जाएंगे अभी मुक्ति में। वह युवक वापस नाचने लगा और उसने कहा: तब तो पा ही लिया, जमीन पर कितने पत्ते हैं, इतने थोड़े से पत्ते! तब तो पा ही लिया। इतने ही जन्म! तब तो पा लिया। जमीन पर कितने पत्ते हैं! और कितने अनंत जन्म हो सकते हैं! और वीणा उसकी वहीं गिर गई और वह उसी क्षण मुक्ति को उपलब्ध हो गया। उसी क्षण!
यह भाव-दशा, यह अनंत प्रतीक्षा का बोध उसी क्षण साधना को परिपूर्णता पर पहुंचा देता है।
तो मैंने चार सूत्र कहे साधने की दृष्टि से। एक सूत्र कहा भूमिका की दृष्टि से। अगर इन पांच सूत्रों पर जीवन निर्धारित हो, अगर इन पांच सूत्रों पर जीवन को निर्मित किया जाए, तो कोई भी वजह नहीं है कि कोई भी मनुष्य आनंद को, परम सत्य को, अमृत को जानने से वंचित रहे। सबका अधिकार है, सबको मिल सकता है। लेकिन जो अपने अधिकार के लिए चेष्टा नहीं करेंगे वे अपने अभाग्य के स्वयं ही जिम्मेवार हैं, कोई दूसरा नहीं। मेरी इन बातों को इतने प्रेम से सुना है, उसके लिए बहुत-बहुत अनुगृहीत हूं। और अंत में सबके भीतर बैठे हुए परमात्मा को प्रणाम करता हूं। मेरे प्रणाम स्वीकार करें।
-ओशो
Source: अमृत वर्षा-प्रवचन-04--जागरण का आनंद
.
CamScanner

12:12 pm 79%

Osho Ravi Yog
1d ·

।।ओशो नमन।।
जो अपने अधिकार के लिए चेष्टा नहीं करेंगे वे अपने अभाग्य के स्वयं ही जिम्मेवार हैं, कोई दूसरा नहीं।

एक छोटी सी कहानी और अपनी चर्चा को पूरा कर दूंगा। एक बहुत पुराने समय में एक बड़ी झूठी कहानी है। नारद एक गांव से निकले, एक फकीर था, वह वहां माला जपता था। वृद्ध था, सौ वर्ष उसकी उम्र थी। उसने नारद को कहा कि मैं सुनता हूंः तुम निरंतर भगवान से साक्षात्कार के लिए जाते हो, जरा उनसे पूछना कि मेरी मुक्ति में कितनी देर और है? नारद ने कहाः जरूर पूछ लूंगा। जब इतनी उत्सुकता है मुक्ति के लिए तो जरूर पूछ लूंगा। उन्होंने भगवान से पूछा या नहीं; लेकिन लौटे तो उन्होंने उस फकीर को कहा कि मैंने पूछा था, वे बोले कि अभी तीन जन्म और लग जाएंगे। उस फकीर ने माला नीचे पटक दी, उसने कहा कि क्या अन्याय हो रहा है? इतने दिन से हम प्रार्थना और पूजा कर रहे हैं और अभी तीन जन्म और लग जाएंगे? और मुझसे पीछे जो आए वे आगे निकल गए। यह निपट अन्याय है मेरे ऊपर। नारद ने कहाः बड़ी मुश्किल, हम क्या करें। क्योंकि जो मुक्ति को इतने जोर से मांग रहा है वह मुक्ति से ही बंध जाता है। मुक्ति ही उसका बंधन हो जाती है, वह मुक्त कैसे होगा? क्योंकि इतने जोर से मांगना ही तो बंधन है। न मांगना मुक्ति है। चेष्टा हो और मांग न हो, तो परमात्मा इसी क्षण उपलब्ध है। श्रम हो और आकांक्षा न हो, तो परमात्मा इसी क्षण उपलब्ध है।
और नारद ने कहाः एक घटना आप ही जैसी और घटी है। जब मैं आपके पास से गया था, तो पास में ही एक युवा संन्यासी था, वह नाच रहा था वीणा को लेकर, उसी दिन दीक्षित हुआ था। मैंने उससे पूछाः तुम्हें भी पूछना है परमात्मा से कि कितनी देर लगेगी? वह कुछ बोला नहीं, हंसने लगा। मेरे प्रश्न पर हंसने लगा, कुछ बोला नहीं। लेकिन मैंने उसके लिए भी पूछा। और जब मैं लौट कर उसके पास गया और मैंने कहा, मित्र, बड़ी मुश्किल है; मैं डर गया क्योंकि जब आप तीन जन्म में माला नीचे पटक दिए, तो वह क्या करेगा पता नहीं, क्योंकि परमात्मा ने जो कहा वह बहुत लंबी बात थी। वह युवक बोलाः क्या बोले वे? तो मैंने उससे कहाः तुम जिस वृक्ष के नीचे नाचते हो, उसमें जितने पत्ते हैं,

CamScanner

SHASHWAT ATRIPTI
सिकंदर सिकंदर की
कहानी नहीं जानता था।
पर अब आप तो जानते हैं?
'आप' कब आराम करेंगे?
038 सशर्त आराम

CamScanner

12:07 pm VoLTE 4G R 80%

यूनान में एक संत हुए हैं डायोजनीज। एक कुत्ते को सागर से निकल कर, रेत में लोटते देखकर, डायोजनीज ने अपना लंगोट और कटोरा गिरा दिया था, कि कुत्ता इनके बिना मस्त रह सकता है तो मैं क्यों नहीं? तब से वह सागर किनारे ही रहने लगे।

उधर सिकंदर ने विश्व विजय के लिए निकलने से पहले, उसके दर्शन करने का विचार किया।

डायोजनीज रेत में लेटा था। सिकंदर आया और बोला- मैं तुम्हारे दर्शन करने आया हूँ।

डायोजनीज ने कहा- दर्शन हो गए हों, तो सामने से हट जाओ। तुम मेरी धूप में बाधा बन रहे हो।

सिकंदर- तुमने मुझे पहचाना नहीं? मैं सिकंदर हूँ।

डायोजनीज- ओह! तो तुम हो सिकंदर? यहाँ से रोज जो लाव लश्कर निकलते हैं, वे तुम्हारे हैं?

"हाँ!" सिकंदर मुस्कुराया।

डायोजनीज- इतनी तैयारी किसलिए चल रही है?

सिकंदर- मैं विश्व विजय के लिए जा रहा हूँ।

डायोजनीज- अच्छा? पर किसलिए?

सिकंदर- यह मेरी इच्छा है। जब तक मैं पूरा विश्व न जीत लूं मेरे मन को चैन नहीं पड़ता।

डायोजनीज- लेकिन तुम विश्व को जीत कर करोगे क्या?

सिकंदर- तब करने को कुछ बचेगा ही कहाँ? तब तो मैं आराम करूंगा।

डायोजनीज- जो करना हो करो। मेरा कोई आग्रह नहीं है, पर अगर तुम आखिर आराम ही करना चाहते हो, तो उसके लिए पूरी दुनिया का चक्कर लगाने की क्या जरूरत है? देखते हो? कितना सुंदर मौसम है? कितनी प्यारी धूप है? कितनी नर्म रेत है? कितनी मस्त हवा चल रही है? छुट्टी कर सब की, तूं भी सबसे छूट जा। ये ताज गिरा दे, कपड़े उतार, और यहीं लेट जा। यहाँ बहुत आराम है। आराम ही आराम है।

पर सिकंदर को आराम कहाँ? और आप जानते ही होंगे, वह कभी यूनान न लौट सका, कभी आराम न कर सका। वह रास्ते में ही मर गया।

लोकेशानन्द कहता है कि सिकंदर तो सिकंदर की कहानी नहीं जानता था। पर अब आप तो जानते हैं? 'आप' कब आराम करेंगे?

CamScanner

लाओत्से कहता है:
"मछली को गहरे पानी में ही रहने देना चाहिए।"

जो भी मूल्यवान है आपके भीतर, और
जिसको भी आप चाहते हैं कि बचाना है,
उसे गहरे में डाल देना। नष्ट करना हो
तो बाहर; बचाना हो तो भीतर।

वृक्ष ऊपर दिखाई पड़ता है; जड़ें जमीन में
छिपी रहती हैं। जड़ें मूल्यवान हैं। वृक्ष जड़ों
को दिखाने बाहर ले आए तो मौत हो जाएगी।

धर्म को, ध्यान को, विनम्रता को,
सादगी को, सरलता को जितने
गहरे रहने दें उतना अच्छा।
क्योंकि जितनी होगी गहरी उतना
ही उसके द्वारा रूपांतरण आपकी
आत्मा का होगा।

CamScanner

8:23 pm 28%
1 view
Like Comment Send Share

Osho Love
1d ·

तुम परमात्मा की तरफ सीधा नहीं देख पाते, सूरज की तरफ सीधा देखना बहुत मुश्किल है। देखो, तो अड़चन समझ में आ जाएगी। प्रकाश की जगह आंखें अंधकार से भर जाएंगी। परमात्मा की तरफ सीधा देखना असंभव है, रोशनी ज्यादा है, बहुत ज्यादा है, तुम सम्हाल न पाओगे, असह्य हो जाएगी। तुम उसमें टूट जाओगे,खंडित हो जाओगे, विकसित न हो पाओगे। इसलिए हमने सूरज की बात छोड़ दी। वह थोड़ा ज्यादा है; शिष्य की सामर्थ्य के बिलकुल बाहर है। इसलिए हमने बीच में गुरु को लिया है।

गुरु एक दर्पण है, पकड़ता है सूरज की रोशनी और तुम्हें दे देता है। लेकिन इस देने में रोशनी मधुर हो जाती है। इस देने में रोशनी की त्वरा और तीव्रता समाप्त हो जाती है। दर्पण को पार करने में रोशनी का गुणधर्म बदल जाता है। सूरज इतना प्रखर है, चांद इतना मधुर है इसलिए हम सूरज नहीं कहते गुरु को, चांद कहते हैं। चांद शीतल है। रोशनी तो उसमें है, लेकिन शीतल है। सूरज में रोशनी है, लेकिन जला दे। सूरज की रोशनी प्रखर है, छिदती है, तीर की तरह है। चांद की रोशनी फूल की वर्षा की तरह है, छूती भी नहीं और बरस जाती है। गुरु चांद है, पूर्णिमा का चांद 13 July 23

10 1 share
Like Comment Send Share

Saregama Bhakti · Follow
14 Dec 2023 ·

प्रभु के इस भजन से मन को शांत और सुखद भावनाएं मिलती हैं।

"Nirgun Rangi Chadariya":... See more

CamScanner

जब आवश्यकता हो,
मन से काम ले लें।
जब काम न रहे
तो श्वास में
नाम जप
करने लगो।
039 भूत
SHASHWAT ATRIPTI

CamScanner

8:47 am VoLTE 4G R 69%
11 1 13

एक आदमी ने एक भूत पकड़ लिया और उसे बेचने शहर गया। संयोगवश उसकी मुलाकात एक सेठ से हुई। सेठ ने उससे पूछा- भाई! यह क्या है?
उसने जवाब दिया कि यह एक भूत है। इसमें अपार बल है। कितना भी कठिन कार्य क्यों न हो, यह एक पल में निपटा देता है। यह कई वर्षों का काम मिनटों में कर सकता है।
सेठ भूत की प्रशंसा सुनकर ललचा गया और उसकी कीमत पूछी। उस आदमी ने कहा- कीमत बस पाँच सौ रुपए है। कीमत सुनकर सेठ ने हैरानी से पूछा- बस पाँच सौ रुपए?
उस आदमी ने कहा- सेठ जी! जहाँ इसके असंख्य गुण हैं वहाँ एक दोष भी है। अगर इसे काम न मिले तो मालिक को खाने दौड़ता है।
सेठ ने विचार किया कि मेरे तो सैकड़ों व्यवसाय हैं, विलायत तक कारोबार है। यह भूत मर जाएगा पर काम खत्म न होगा। यह सोचकर उसने भूत खरीद लिया।
भूत तो भूत ही था। वह अपना चेहरा फैला कर बोला- काम! काम! काम! काम!
सेठ भी तैयार ही था। तुरंत दस काम बता दिए। पर भूत उसकी सोच से कहीं अधिक तेज था। इधर मुंह से काम निकलता, उधर पूरा होता। अब सेठ घबरा गया।
संयोग से एक संत वहाँ आए। सेठ ने विनयपूर्वक उन्हें भूत की पूरी कहानी बताई। संत ने हँस कर कहा- अब जरा भी चिंता मत करो। एक काम करो। उस भूत से कहो कि एक लम्बा बाँस लाकर, आपके आँगन में गाड़ दे। बस, जब काम हो तो काम करवा लो, और कोई काम न हो, तो उसे कहें कि वह बाँस पर चढ़ा और उतरा करे। तब आपके काम भी हो जाएँगे और आपको कोई परेशानी भी न रहेगी।
सेठ ने ऐसा ही किया और सुख से रहने लगा।
लोकेशानन्द कहता है कि यह मन ही वह भूत है। यह सदा कुछ न कुछ करता रहता है। एक पल भी खाली बिठाना चाहो तो खाने को दौड़ता है। श्वास ही बाँस है। श्वास पर नामजप का अभ्यास ही, बाँस पर चढ़ना उतरना है।
आप भी ऐसा ही करें। जब आवश्यकता हो, मन से काम ले लें। जब काम न रहे तो श्वास में नाम जपने लगो। तब आप भी सुख से रहने लगेंगे।

CS CamScanner

है। वह कहता है : ये किस तरह के भगवान! भगवान तो जीसस हैं। दुनिया के दुख के लिए अपने को सूली पर लटकाया है। और ये सज्जन बांसुरी बजा रहे हैं! और दुनिया इतने दुख में है। तो यह कोई समय बांसुरी बजाने का है! और ये वृंदावन में रास रचा रहे हैं! और दुनिया दुख में सड़ रही है, महापाप में गली जा रही है। जीसस जैसा होना चाहिए—कि अपने को सूली पर चढ़वा दिया, ताकि दुनिया मुक्त हो सके।

अब तुम्हारी धारणा; तुम जो पकड़ लोगे। उस धारणा से तोलने चलोगे, तो बाकी सब गलत हो जाएंगे। तुम्हारी धारणा ने ही तुम्हें धक्का देने का उपाय कर दिया। अब तुम सोचते हो कि मेरे कारण तुम्हें धक्का लगा, तो तुम गलती में हो। मेरे कारण भी धक्का लग सकता है, वह धक्का तो तुम्हारे जीवन में सौभाग्य होगा। उससे तो क्रांति हो जाएगी। मगर वह यह धक्का नहीं है। जो धक्का तुम्हें लगा है, वह तुम्हारी धारणा का है। तुम एक पक्की धारणा लेकर आए थे : ऐसा होना चाहिए। और ऐसा नहीं है।

अब हो सकता है, इन सज्जन को पच्चीस अड़चनें आयी होंगी। इनको पीड़ा हुई होगी। यह इनके अनुकूल नहीं है।

जो तुम्हारे अनुकूल नहीं है, वह गलत होना चाहिए—ऐसी जिद्द मत करो। अभी तुमको सही का पता ही कहां है! सही का पता होता, तो यहां आने की जरूरत क्या होती! अभी आए हो, तो खुले मन से आओ; निष्पक्ष आओ। अपनी जराजीर्ण धारणाओं को बाहर रखकर आओ।

एस धम्मो सनंतनो

ओशो

12:18 pm

CamScanner

मैंने उनको पत्र लिखा। पूछा कि एक को भगवान और एक को महात्मा क्यों कहा? उन्होंने कहा : इतना फर्क तो है ही। महावीर भगवान हैं। बुद्ध महात्मा हैं; ऊंचे पुरुष हैं, मगर अभी आखिरी अवस्था नहीं आयी है। क्योंकि कपड़े पहने हुए हैं। वह कपड़े से बाधा पड़ रही है! कपड़े के पीछे बेचारों को महात्मा रह जाना पड़ रहा है। वे नंगे जब तक न हों, तब तक वे भगवान नहीं हो सकते!

इसलिए तो जैन राम को भगवान नहीं मान सकते। और धनुष लिए हैं, तो बिलकुल नहीं मान सकते।

और जो जीसस को देखा है, जो जीसस को मानता है, वह जब देखता है कृष्ण को बांसुरी बजाते, तो उसे बड़ा सदमा पहुंचता है। वह कहता है : ये किस तरह के भगवान! भगवान तो जीसस हैं। दुनिया के दुख के लिए अपने को सूली पर लटकाया है। और ये सज्जन बांसुरी बजा रहे हैं! और दुनिया इतने दुख में है। तो यह कोई समय बांसुरी बजाने का है! और ये वृंदावन में रास रचा रहे हैं! और दुनिया दुख में सड़ रही है, महापाप में गली जा रही है। जीसस जैसा होना चाहिए—कि अपने को सूली पर चढ़वा दिया, ताकि दुनिया मुक्त हो सके।

अब तुम्हारी धारणा; तुम जो पकड़ लोगे। उस धारणा से तोलने चलोगे, तो बाकी सब गलत हो जाएंगे। तुम्हारी धारणा ने ही तुम्हें धक्का देने का उपाय कर दिया। अब तुम सोचते हो कि मेरे कारण तुम्हें धक्का लगा, तो तुम गलती में हो। मेरे कारण भी धक्का लग सकता है, वह धक्का तो तुम्हारे जीवन में सौभाग्य होगा। उससे तो क्रांति हो जाएगी। मगर वह यह धक्का नहीं है। जो धक्का तुम्हें लगा है, वह तुम्हारी धारणा का है। तुम एक पक्की धारणा लेकर आए थे : ऐसा होना चाहिए। और ऐसा नहीं है।

CamScanner

:33 pm

OSHO Darshan🌹

Announcements

यह मूढ़ता बड़ी पुरानी है। तुम प्रतिमूर्तियां खोज रहे हो! इस जगत में परमात्मा दो व्यक्ति एक जैसे बनाता ही नहीं। तुमने देखा : अंगूठे की छाप डालते हो। दो अंगूठों की छाप भी एक जैसी नहीं होती। दो आत्माओं के एक जैसे होने की तो बात ही गलत है।

मैं मेरे जैसा हूं। बुद्ध बुद्ध जैसे थे। कबीर कबीर जैसे थे।

तुम गलत धारणाएं लेकर यहां आ गए। तुम्हारी खोपड़ी में कचरा भरा है। उस कचरे से तुम मुझे तोल रहे हो! तुम पहले से तैयार होकर आए हो कि कैसा होना चाहिए व्यक्ति को—नानक जैसा होना चाहिए; कि बुद्ध जैसा; कि कबीर जैसा—किस जैसा होना चाहिए! तो तुम चूकोगे। तो तुम्हें धक्का लगेगा।

तुम्हें धक्का इसी से लग जाएगा कि मैं कुर्सी पर बैठा हूं। तुम्हारे धक्के भी तो बड़े क्षुद्र हैं! तुम्हें धक्का इसी से लग जाएगा—कि अरे! मैं इस सुंदर मकान में, इस बगीचे में क्यों रहता हूं! ये धक्के तुम्हें सदा लगते रहे हैं, क्योंकि तुम्हारी धारणाओं के कारण लगते हैं।

मेरे एक जैन मित्र हैं। गांधी के अनुयायी हैं, तो उनको समन्वय की धुन सवार रहती है। तो मुझसे वे बोले कि मैं समन्वय की एक किताब लिख रहा हूं। बुद्ध और महावीर में समन्वय—कि दोनों बिलकुल एक ही बात कहते हैं। मैंने कहा : जब किताब पूरी हो जाए, तो मुझे भेजना।

किताब छपी तो उन्होंने मुझे भेजी। मैं देखकर चौंका। किताब का जो शीर्षक था, वह था— भगवान महावीर और महात्मा बुद्ध।

CamScanner

OSHO Darshan🌹
Announcements

अगर तुम कबीर के पास गए होते, तो भी तुम्हें यही अड़चन हुई होती, जो यहां हो गयी। तुम कहते, अरे! हमने तो सोचा था कि कबीर महावीर की प्रतिमूर्ति होंगे! और ये तो कपड़ा पहने बैठे हैं! कपड़ा पहने ही नहीं बैठे, कपड़ा बुन रहे हैं! जुलाहा! और महावीर तो नग्न खड़े हो गए थे। बुनने की तो बात दूर, पहनते भी नहीं थे कपड़ा। छूते भी नहीं थे कपड़ा। ये कैसे महावीर की प्रतिमूर्ति हो सकते हैं?

और रोज कबीर बाजार जाते हैं, बुना हुआ कपडा जो है, उसे बेचने। और कबीर की पत्नी भी है! और कबीर का बेटा भी है। और कबीर का परिवार भी है। और बुद्ध तो सब छोड़कर भाग गए थे।

कबीर ने तो जुलाहापन कभी नहीं छोड़ा। बुद्ध तो राजपाट छोड़ दिए थे। कबीर के पास तो छोड़ने को कुछ ज्यादा नहीं था, फिर भी कभी नहीं छोड़ा। तो कबीर को तुम बुद्ध की प्रतिमूर्ति न कह सकोगे।

और न ही तुम बुद्ध को कृष्ण की प्रतिमूर्ति कह सकोगे। और मैं जानता हूं कि भगवानदास आर्य वहां भी गए होंगे। इस तरह के लोग सदा से रहे हैं। बुद्ध के पास भी गए होंगे और देखा होगा, अरे! तो कृष्ण की प्रतिमूर्ति नहीं हैं आप! मोर—मुकुट कहा? बांसुरी कहां? सखियां कहां? रास क्यों नहीं हो रहा है यहां? ये सिर घुटाए हुए संन्यासी बैठे हैं सब! रास कब होगा?

यही होता रहा है। बुद्ध को मानने वाले महावीर के पास जाते थे और कहते थे कि आप नग्न! और बुद्ध तो कपड़ा पहने हुए हैं! और महावीर के मानने वाले बुद्ध के पास जाते थे और कहते थे आप कपड़ा पहने हुए हैं! महावीर ने तो सब त्याग कर दिया है। उनका त्याग महान है। नग्न खड़े हैं!

CamScanner

:33 pm • VoLTE 4G R 74

पहले मेरी धारणा थी कि आप भी बुद्ध, नानक, कबीर आदि की प्रतिमूर्ति होंगे।

लेकिन जब अपनी आंखों से आपको देखातो मुझे बहुत धक्का लगा। और फिरआपको देख—सुनकर जैसे ही बाहर निकला कि भीड़ के बीच एक विदेशी युवाजोड़े को मनोहारी प्रेम—पाश में बंधे देखकर मैं ठगा—सा रह गया। और सोचा :क्या यह भी धर्म कहा जा सकता है?

पूछा है भगवानदास आर्य ने।

उनके पीछे जो पूंछ लगी है—आर्य—उसी में से ये प्रश्न निकला है।

पहली बात : मैं किसी की प्रतिमूर्ति नहीं हूं। क्योंकि प्रतिमूर्ति तो प्रतिलिपि होगा, कार्बन कापी होगा। प्रतिमूर्ति कोई किसी की नहीं है, न होना है किसी को।

क्या तुम सोचते हो कि नानक बुद्ध की प्रतिमूर्ति थे? या तुम सोचते हो कि बुद्ध कृष्ण की प्रतिमूर्ति थे? या तुम सोचते हो कि कबीर महावीर की प्रतिमूर्ति थे? तो तुम समझे ही नहीं।

अगर तुम कबीर के पास गए होते, तो भी तुम्हें यही अड़चन हुई होती, जो यहां हो गयी। तुम कहते, अरे! हमने तो सोचा था कि कबीर महावीर की प्रतिमूर्ति होंगे! और ये तो कपड़ा पहने बैठे हैं! कपड़ा पहने ही नहीं बैठे, कपड़ा बुन रहे हैं! जुलाहा! और महावीर तो नग्न खड़े हो गए थे। बुनने की तो बात दूर, पहनते भी नहीं थे कपड़ा। छूते भी नहीं थे कपड़ा। ये कैसे महावीर की

CamScanner

9:28 pm 39%
20

1d ·

Osho Vaani
1d ·

आपके शरीर के लिए ऑक्सीजन जरूरी है - रात्रि और दिन का भोजन ग्रहण करने के लिए क्यों?

जब सूरज उगता है तो ऑक्सीजन की प्राणवायु की मात्रा बढ़ती है, प्राणवायु जरूरी है श्रम को करने के लिए, जब रात्रि आती है सूर्य डूब जाता है तो प्राण वायु का औसत गिर जाता है हवा में, जीवन को अब कोई जरूरत नहीं है, कार्बन डाइऑक्साइड का, कार्बन दुई औषध का मात्रा बढ़ जाती है, जो कि विश्राम के लिए जरूरी है, जान के आप हैरान होंगे कि ऑक्सीजन जरूरी है भोजन को पचाने के लिए कार्बन डाइऑक्साइड के साथ भोजन मुश्किल से पचेगा मनोवैज्ञानिक अब कहते है कि हमारे अधिकतर दुख स्वप्नों का कारण हमारे पेट में पड़ा हुआ भोजन है हमारी निद्रा की जो अस्तव्यस्तता है अराजकता है उसका कारण पेट में पड़ा हुआ भोजन है आपके सपने अधिक मात्रा में आपके भोजन से पैदा हुआ है आपका पेट परेशान है काम में लीन है दिन भर चूक गया काम का समय बीट गया और अब भी आपका पेट काम में लीन है लेकिन हम तो अद्भुत लोग है हमारा असली भोजन रात में होता है बाक़ी तो दिन भर हम काम चला लेते है जो असली भोजन है बड़ा भोजन डिनर वो हम रात में लेते है उससे ज़्यादा दुष्टता शरीर के साथ दूसरी नहीं हो सकती इसलिए अगर महावीर ने रात्रि भोजन को हिंसा कहा है तो मैं कहता हूँ कीड़े मकोड़ों के मरने के कारण नहीं अपने साथ हिंसा करने के कारण वो आत्महिंसा है आप अपने शरीर के साथ दुर्व्यवहार कर रहे है एक अवैज्ञानिक है भोजन की ज़रूरत है सुबह सूर्या के उगने के साथ जीवन की आवश्यकता है शक्ति की आवश्यकता है

#trending #osho #india #peace #meditation #mindfulness #healing #spirituality #wisdom #zen #awareness #consciousness #reiki #spiritualawakening #buddha #enlightenment #angel #humanity #mooji #sadhguru #rumi #sufi

CamScanner

जो शेष बची है।
उसे ही विशेष बनाइये ॥
अन्यथा अवशेष तो होना
ही है।

– ओशो

CamScanner

शांत हूं।

दो सौ मील पैदल चल कर मुझे यह बताने आओगे कि मैं शांत हूं! और अगर इसके लिए आए हो, तो बात खतम हो गई। धन्यवाद! परमात्मा करे कि तुम सच में ही शांत होओ। लेकिन एक दफा बाहर जाकर फिर सोच आओ।

युवक बाहर जाता है। और तभी हुआंग पो कहता है, अब बाहर जाने की कोई जरूरत नहीं, लौट आओ। क्योंकि अगर अभी इतनी भी अशांति बाकी है कि सोचना है कि शांत हूं या नहीं, वापस आ जाओ।

तुम्हारी झिझक ने सब कुछ कह दिया है। तुम सोचने जा रहे हो बाहर कि मैं शांत हूं या नहीं, यह काफी अशांति है। हुआंग पो कहता है, रुको! हुआंग पो कहता जहां भी चुनाव है, वहीं अशांति है।

तुम अशांत हो और मन तुम्हें धोखा दे रहा है कि तुम शांत हो। तुम्हें कुछ पता नहीं है और तुम कहते हो, मुझे मालूम है कि भीतर आत्मा है। तुम्हें कुछ पता नहीं,

जब तक तुम्हें पता चलता हो कि विचार चल रहा है और मुझे पता चल रहा है कि विचार चल रहा है, तब तक तुम जानना कि मन ने अपने दो हिस्से किए: एक हिस्सा विचार चलाने वाला, और एक हिस्सा एक विचार का कि मैं विचार नहीं हूं, मैं निर्विचार हूं।

यह मन का ही द्वैत है।
सच तो यह है कि मन के बाहर द्वैत होता ही नहीं। मन के बाहर अद्वैत हो जाता है। और अद्वैत का कोई बोध नहीं होता, ऐसा बोध नहीं होता कि तुम कह सको, ऐसा है। ज्यादा से ज्यादा तुम इतना ही कह सकोगे, ऐसा नहीं है, ऐसा नहीं है, ऐसा नहीं है।

10:00 am

CS CamScanner

1:16 pm • VoLTE 4G R 81%

OSHO Darshan🌹
Announcements

~ Shivam +91 97952 58282
Community admin

हुआंग पो के सामने एक युवक आया है और कह रहा है कि मैं शांत हो गया हूं। हुआंग पो पूछता है, फिर तुम यहां किसलिए आए हो? अगर तुम शांत हो गए हो, तो तुम यहां किसलिए आए हो?

जाओ! क्योंकि मैं तो सिर्फ अशांत लोगों का इलाज करता हूं। युवक न तो जा सकता है, क्योंकि देखता है, हुआंग पो किसी और ही ढंग से शांत मालूम होता है। कहता है, नहीं, कुछ दिन तो रुकने की आज्ञा दें।

हुआंग पो कहता है, शांत लोगों के लिए रुकने की कोई भी आज्ञा नहीं है। जरा सोच कर बाहर से फिर आओ। अशांत तो नहीं हो? क्योंकि मैं नहीं सोचता हूं, हुआंग पो कहता है, कि तुम दो सौ मील पैदल चल कर मुझे बताने सिर्फ यह आओगे कि मैं शांत हूं।

दो सौ मील पैदल चल कर मुझे यह बताने आओगे कि मैं शांत हूं! और अगर इसके लिए आए हो, तो बात खतम हो गई। धन्यवाद! परमात्मा करे कि तुम सच में ही शांत होओ। लेकिन एक दफा बाहर जाकर फिर सोच आओ।

युवक बाहर जाता है। और तभी हुआंग पो कहता है, अब बाहर जाने की कोई जरूरत नहीं, लौट आओ। क्योंकि अगर अभी इतनी भी अशांति बाकी है कि सोचना है कि शांत हूं या नहीं, वापस आ जाओ।

तुम्हारी झिझक ने सब कुछ कह दिया है। तुम सोचने जा रहे हो बाहर कि मैं शांत हूं या नहीं, यह काफी अशांति है। हुआंग पो कहता है, रुको! हुआंग पो कहता जहां भी चुनाव है, वहीं अशांति है।

तुम अशांत हो और मन तुम्हें धोखा दे रहा है कि तुम शांत हो। तुम्हें कुछ पता नहीं है और तुम कहते हो, मुझे मालूम है कि

Only community admins can send messages

CamScanner

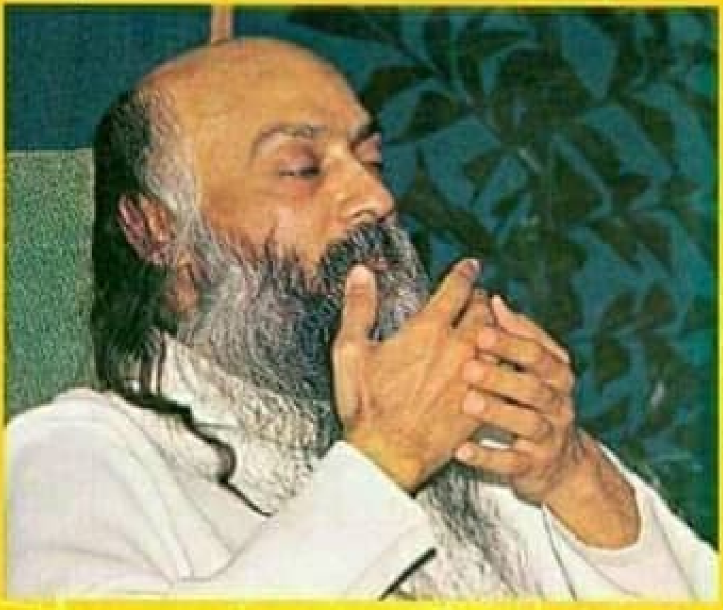

जब आप वासना से भरे होते हैं,
जितनी गहरी वासना से भरे होते हैं,
उतनी ही स्त्रियां
ज्यादा सुंदर मालूम होंगी,
या पुरुष ज्यादा सुंदर मालूम होंगे।
अगर वासना से बहुत भरे हों तो
कुरूप स्त्री भी सुंदर मालूम पड़ेगी।
अगर वासना से बहुत भरे हों
और उपवास बहुत करना पड़ा हो
तो वृद्ध स्त्री भी सुंदर मालूम
पड़ने लगेगी। वह जो सौंदर्य दिखाई
पड़ता है, वह आपका प्रक्षेपण है।
ओशो, साधना सूत्र , प्रवचन # 10

CS CamScanner

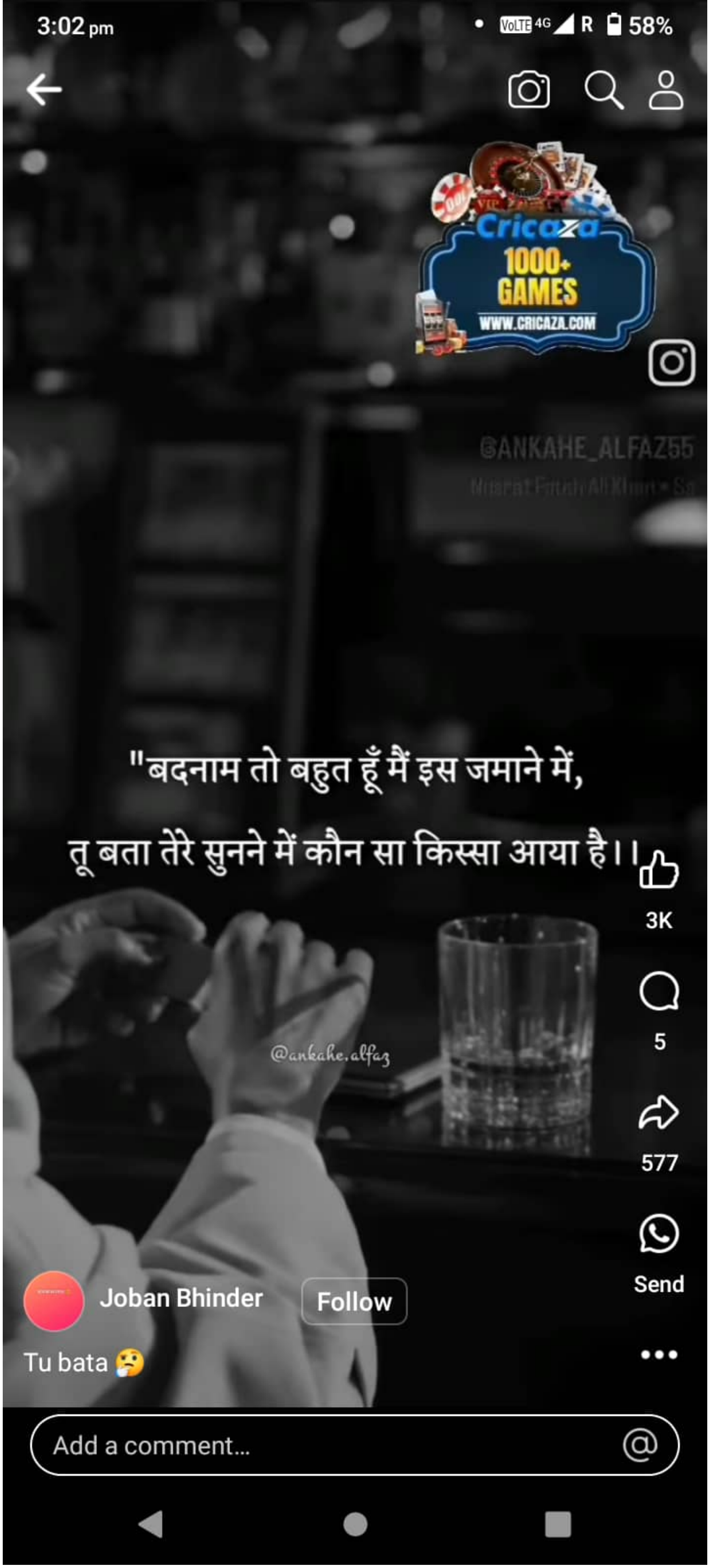
3:02 pm
58%
Cricaza
1000+ GAMES
WWW.CRICAZA.COM
@ANKAHE_ALFAZ55
"बदनाम तो बहुत हूँ मैं इस जमाने में,
तू बता तेरे सुनने में कौन सा किस्सा आया है।।
3K
5
577
Send
@ankahe.alfaz
Joban Bhinder
Follow
Tu bata
Add a comment...

CamScanner

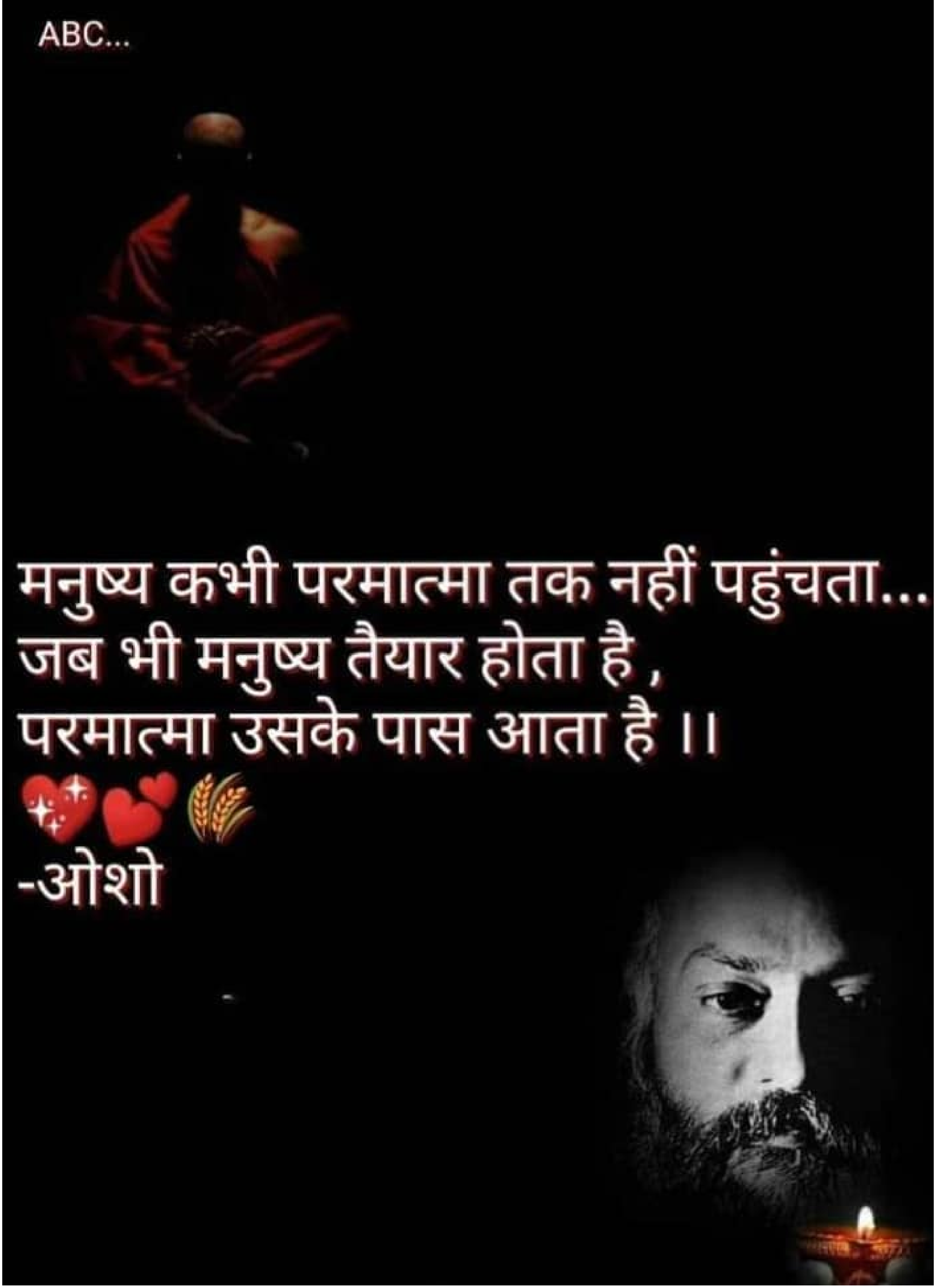
ABC...
मनुष्य कभी परमात्मा तक नहीं पहुंचता...
जब भी मनुष्य तैयार होता है,
परमात्मा उसके पास आता है ।।
-ओशो

CamScanner

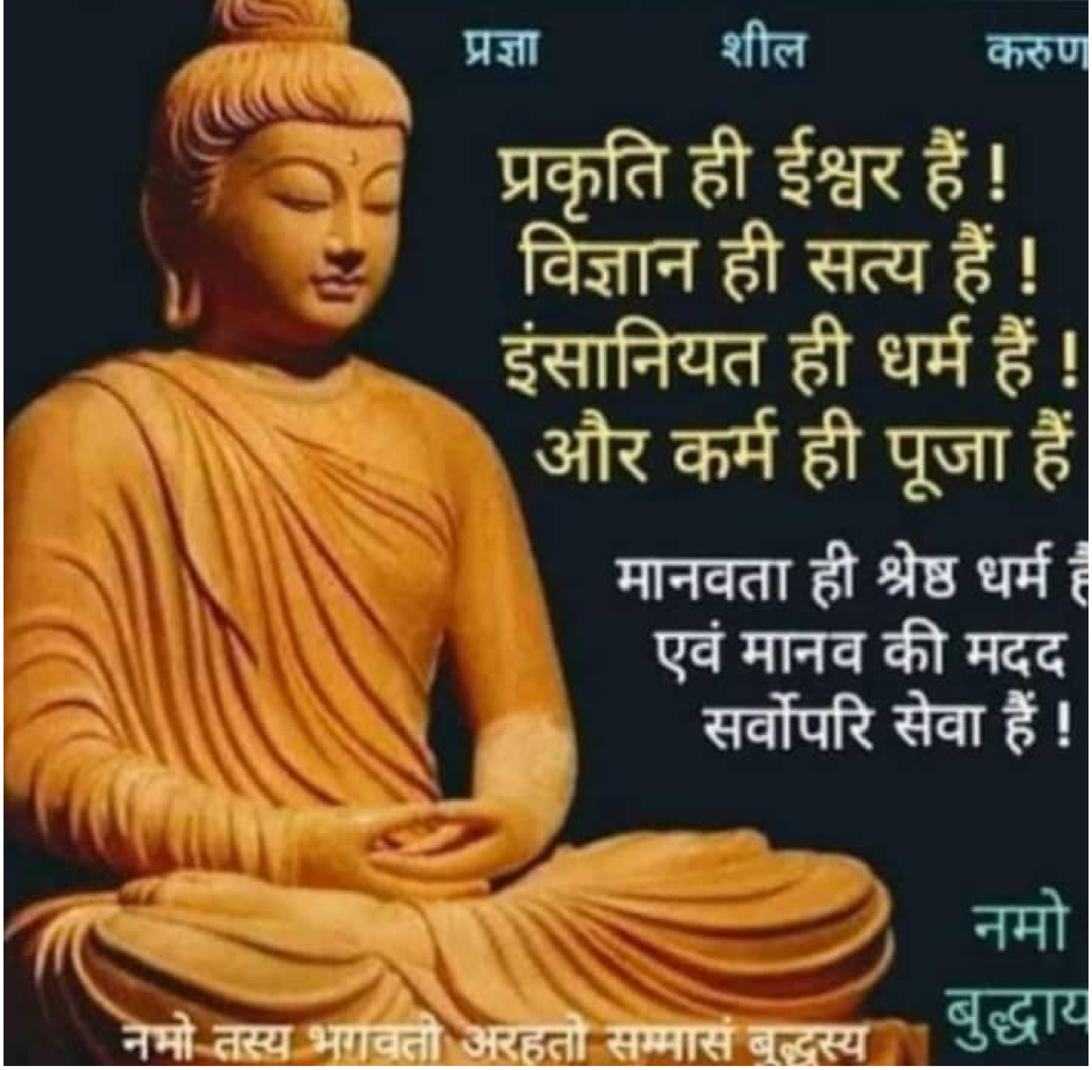

प्रज्ञा
शील
करुण
प्रकृति ही ईश्वर हैं !
विज्ञान ही सत्य हैं !
इंसानियत ही धर्म हैं !
और कर्म ही पूजा हैं
मानवता ही श्रेष्ठ धर्म है
एवं मानव की मदद
सर्वोपरि सेवा हैं !
नमो
बुद्धाय
नमो तस्य भगवतो अरहतो सम्मासं बुद्धस्य

CamScanner

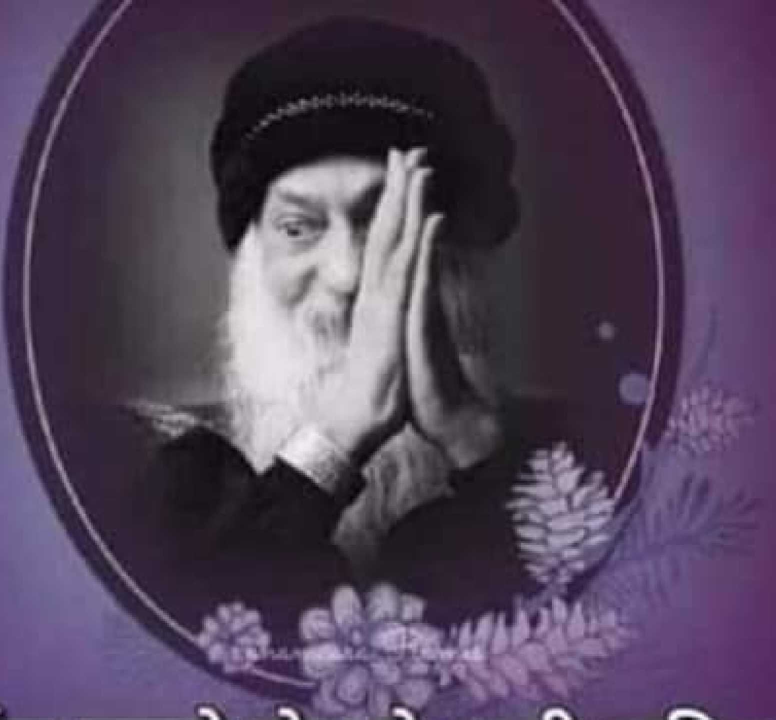

मर्यादा तुम्हारे बोध से आनी चाहिए।

मैं तुम्हें बोध देता हूं।

और अगर बोध मैं न दे पाऊं और मर्यादा दे दूं,
तो मैं तुम्हारा दुश्मन हूं।
वही तो तुम्हारे अन्य धर्मों ने किया है।
उन्होंने तुम्हें बोध नहीं दिया, मर्यादा दी।
उन्होंने तुम्हें आंख नहीं दी,
उन्होंने लकड़ी दी है टटोल-टटोल कर चलने के लिए।
मैं तुम्हें लकड़ी नहीं देता;

मैं तुम्हें आंख देता हूं।

तुम्हें दिखाई पड़ने लगे।
फिर भी तुम्हें अगर गड्ढे में गिरना हो तो
मौज से गिरना, देख कर गिरना।

CamScanner

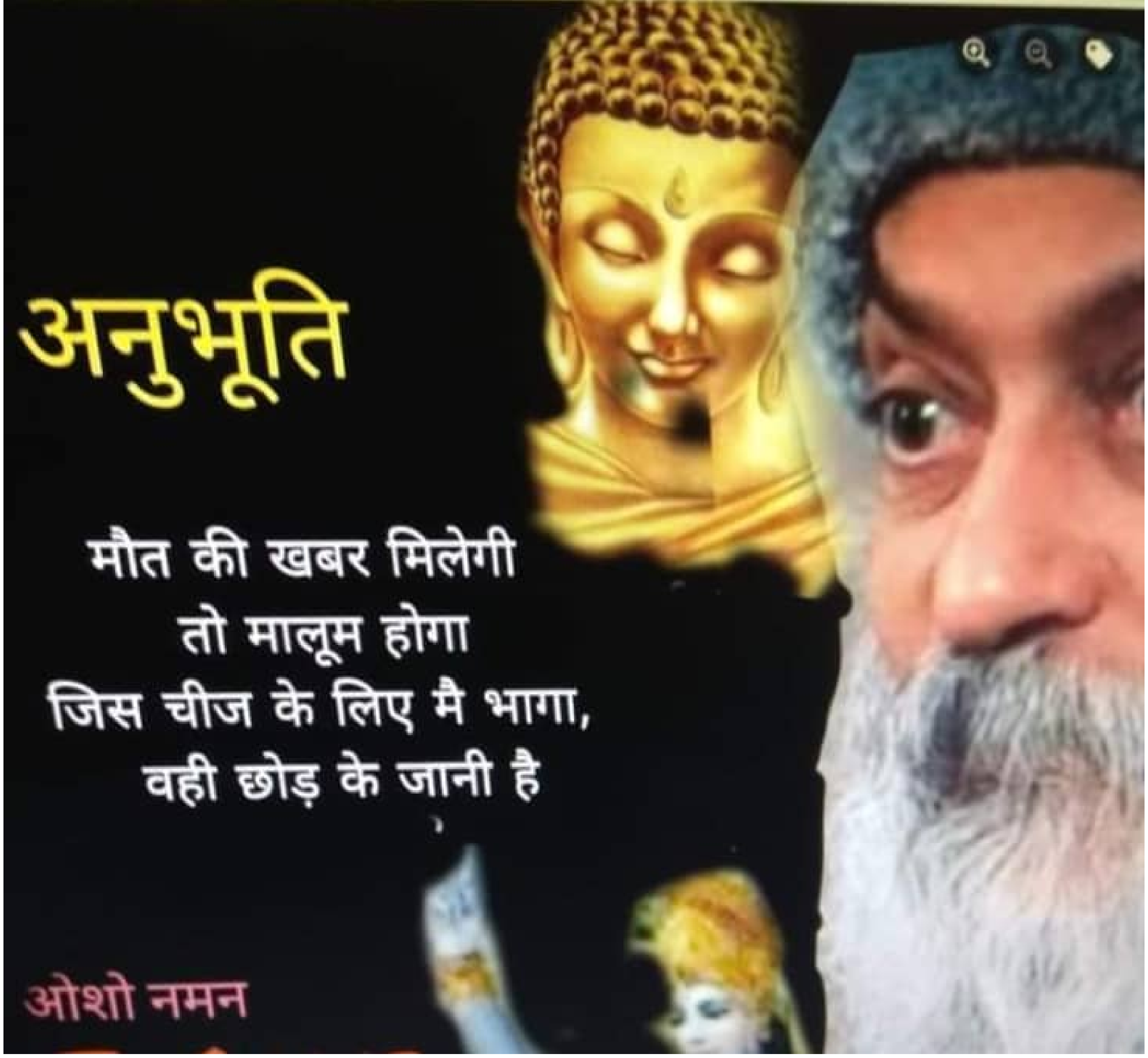

CamScanner

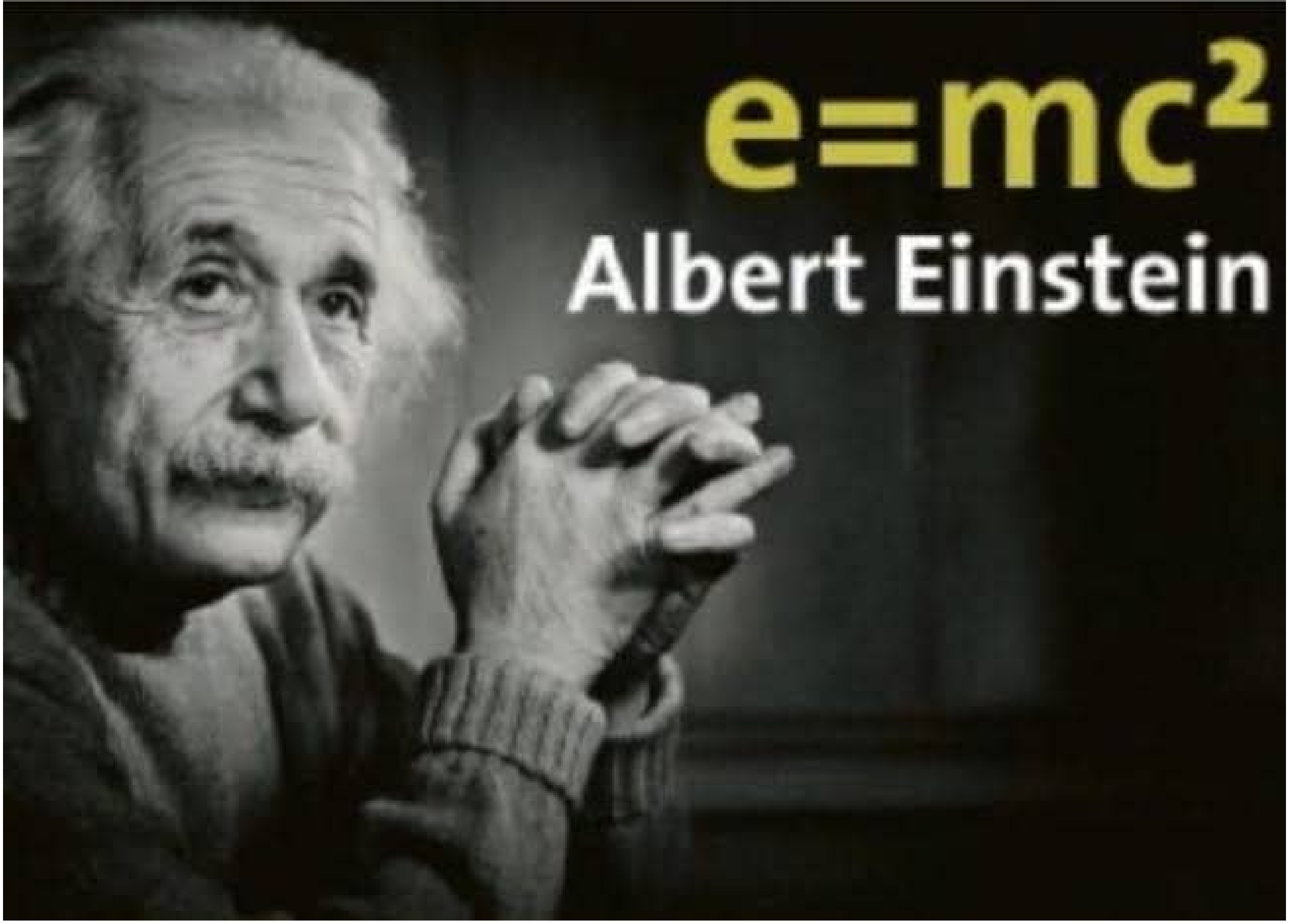

CamScanner

10:35 am 88%

google.com/search?clier

Metallurgy for Dummies

Hydrogen bomb | Metallurgy for Dummies

Visit

Images may be subject to copyright. **Learn More**

Save

Share

CamScanner

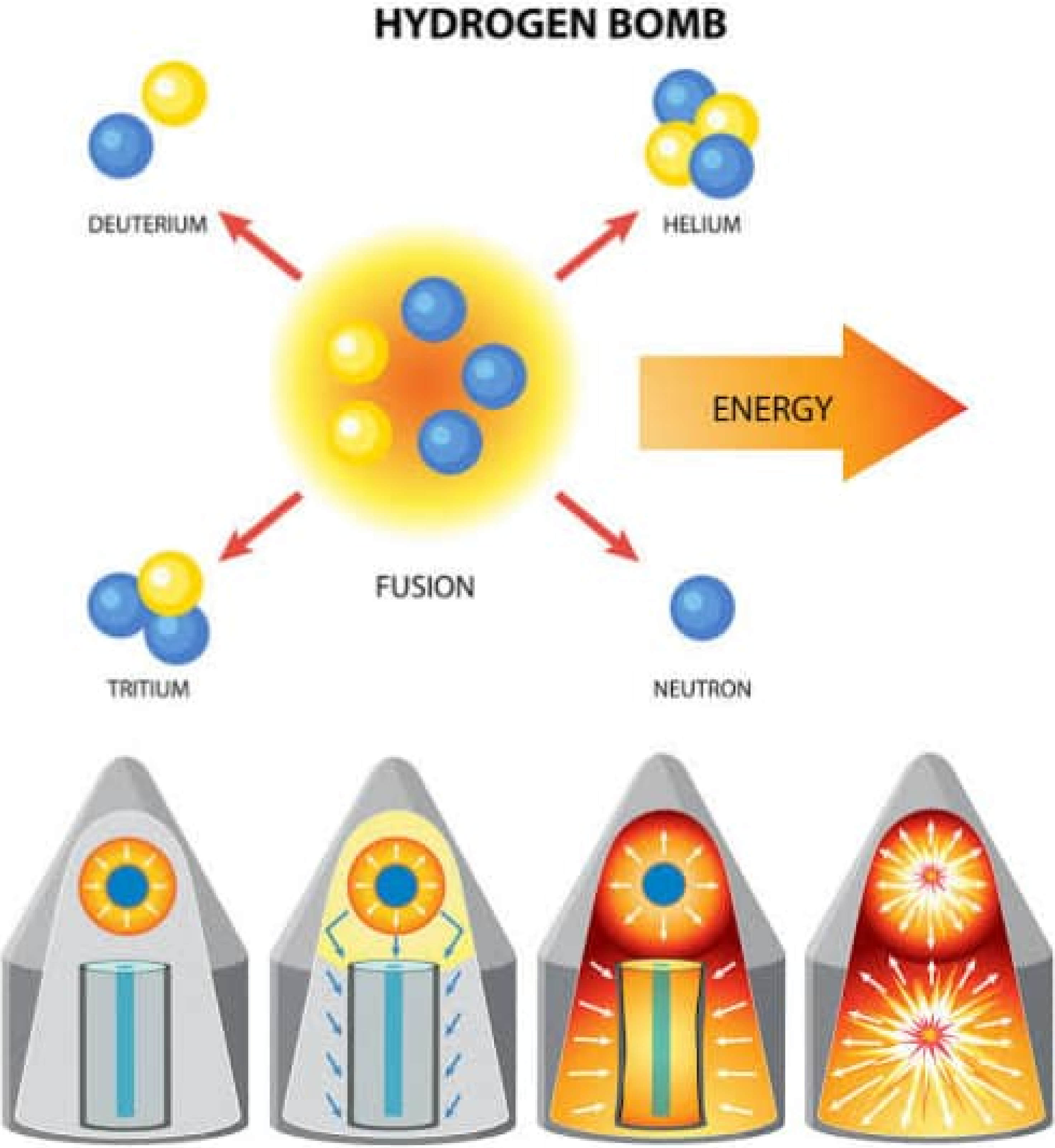
HYDROGEN BOMB
DEUTERIUM
HELIUM
ENERGY
FUSION
TRITIUM
NEUTRON

CamScanner

All you need to know about hydrogen bombs - India Today

Visit ›

Images may be subject to copyright. **Learn More**

Save

Share

Sciencing

Effects of the Hydrogen Bo...

Atomic Heritage Foundation ...

Hydrogen Bomb - 1950 - N...

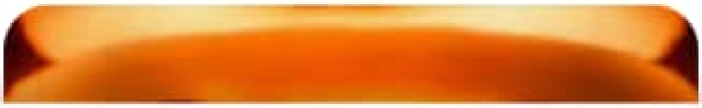

indiatoday.in

CamScanner

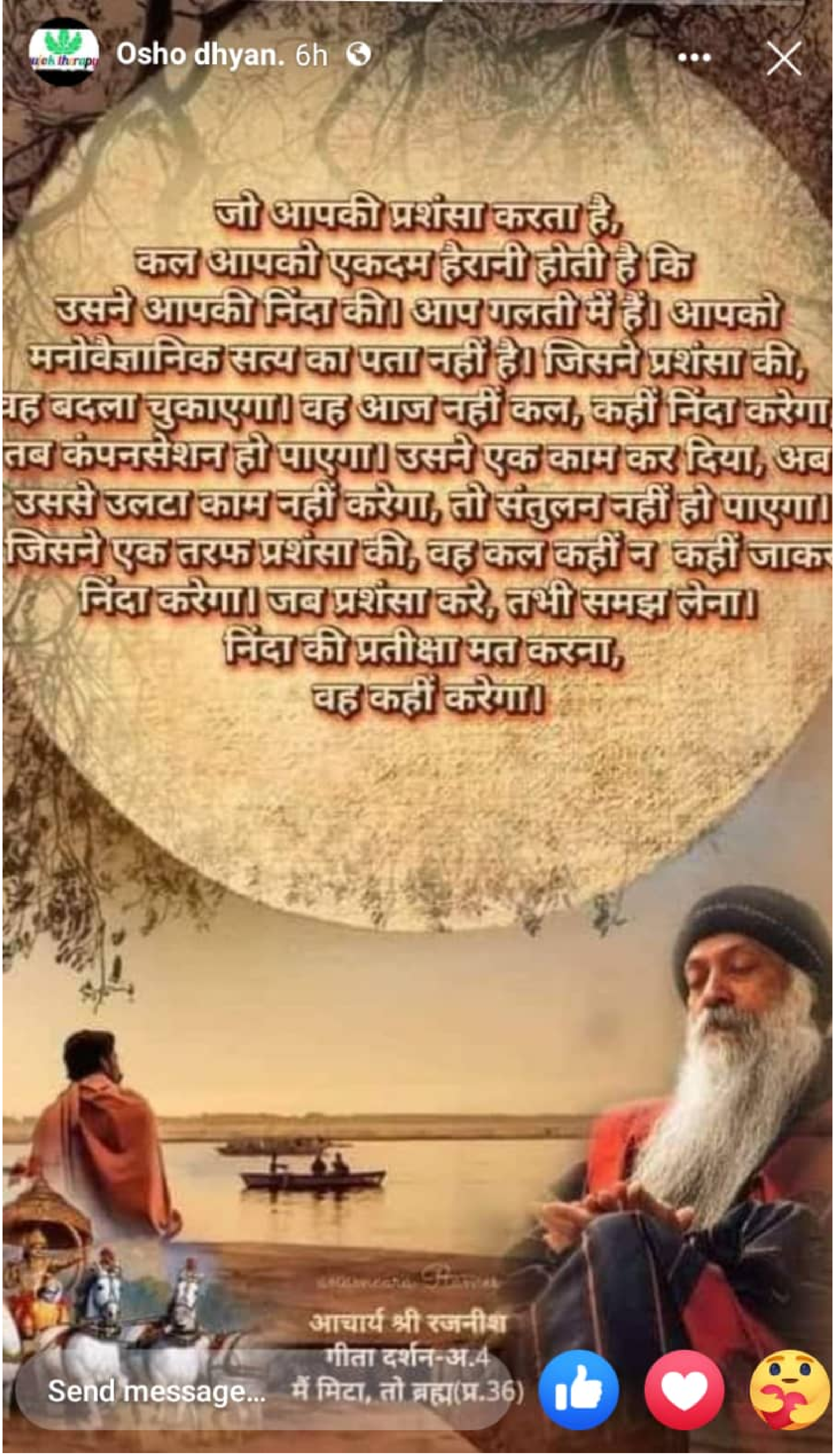
Osho dhyan. 6h
जो आपकी प्रशंसा करता है,
कल आपको एकदम हैरानी होती है कि
उसने आपकी निंदा की। आप गलती में हैं। आपको
मनोवैज्ञानिक सत्य का पता नहीं है। जिसने प्रशंसा की,
वह बदला चुकाएगा। वह आज नहीं कल, कहीं निंदा करेगा,
तब कंपनसेशन हो पाएगा। उसने एक काम कर दिया, अब
उससे उलटा काम नहीं करेगा, तो संतुलन नहीं हो पाएगा।
जिसने एक तरफ प्रशंसा की, वह कल कहीं न कहीं जाक
निंदा करेगा। जब प्रशंसा करे, तभी समझ लेना।
निंदा की प्रतीक्षा मत करना,
वह कहीं करेगा।
आचार्य श्री रजनीश
गीता दर्शन-अ.4
में मिटा, तो ब्रह्म(प्र.36)
Send message...

CamScanner

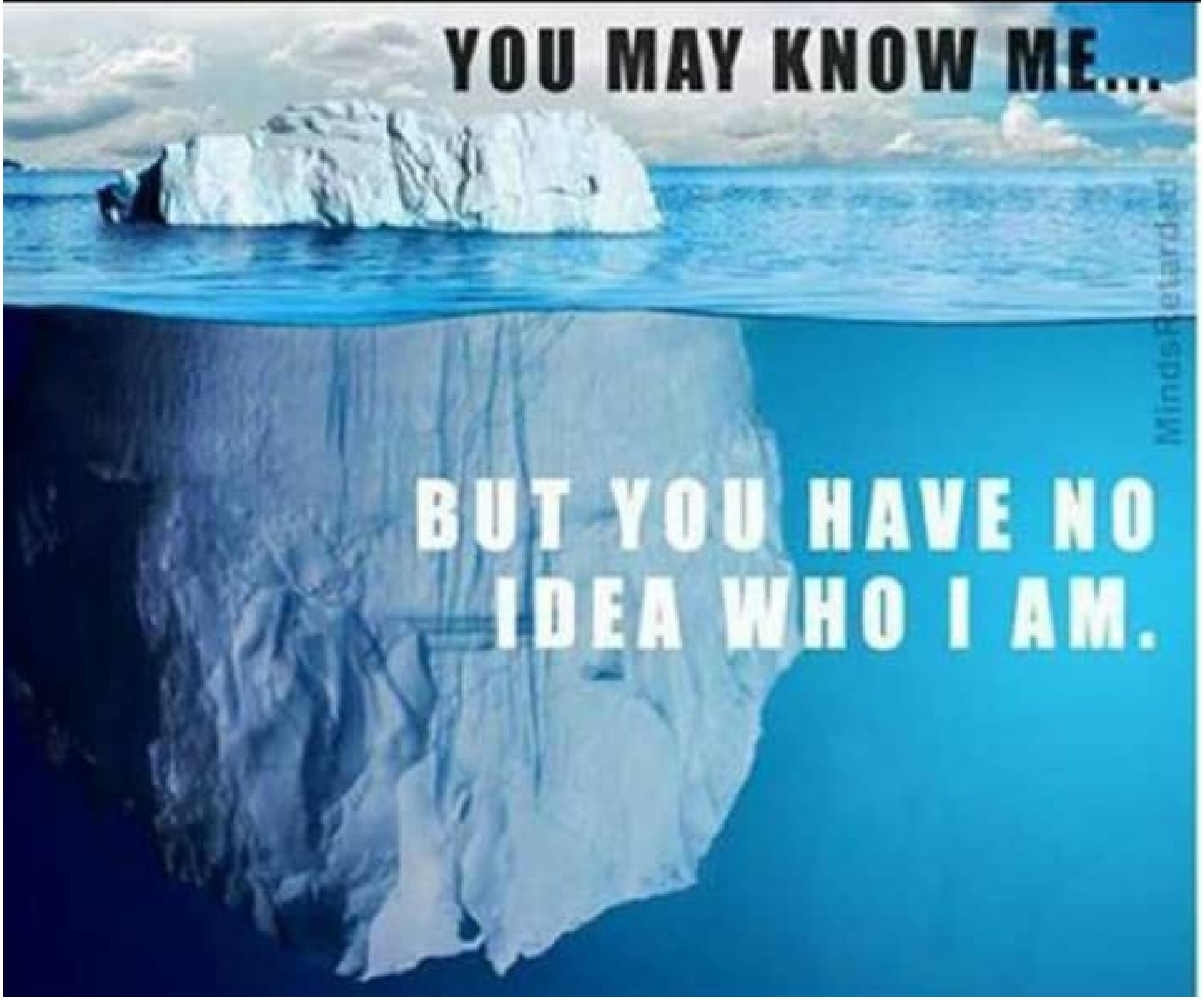

CamScanner

Live Workshop
Sponsored · webinar.amanmaskee...
Sign up

तीसरा मुगल अकबर-156: जिस अकबर का मुंह देखने पर दुःख उत्पन्न होता है, उसे सीकरी आकर सलाम क्यों ...

6.6K views 2 yr ago ...more

Glimpse of Indian History... 1.94 lakh Subscribe

388 Share Remix Download

Comments 51

Add a comment...

CamScanner

4:04 pm ● VoLTE 4G R 53%

सभी वीडियो इमेज समाचार शॉपिंग किताबें मैप फ़

Showing results for अकबर ने राजस्थान के कवि ***कुंभनदास*** जी को बुलावा भेजा . कवि ने कहा जिसका मुंह देखन

Search instead for अकबर ने राजस्थान के कवि कुंभलदास जी को बुलावा भेजा . कवि ने कहा जिसका मुंह देखन

हिंदी में खोजें अकबर ने राजस्थान के कवि कुंभनदा...

इसे सुनें

वे मुगल बादशाह अकबर के समकालीन थे। कहते हैं, एक बार अकबर ने उन्हें फतेहपुर सीकरी आमंत्रित किया, कुम्भनदास को इससे बहुत ग्लानि महसूस हुई। इस भाव को उन्होंने अपनी कविता में इस तरह व्यक्त किया है- **सन्तन को कहा सीकरी सों काम, आवत जात पनहिया टूटी, बिसर गयो हरि नाम**।

W https://hi.m.wikipedia.org › wiki

कुम्भन दास - विकिपीडिया

About featured snippets Feedback

W Wikipedia
https://hi.m.wikipedia.org › wiki

कुम्भनदास

कुम्भनदास(१४६८-१५८३) अष्टछाप के प्रसिद्ध कवि थे। ये परमानंददास जी के समकालीन थे। कुम्भनदास का चरित "चौरासी वैष्णवन की ...

Missing: ~~राजस्थान~~ मुंह

YouTube · Glimpse of Indian History By Dr. Mo...
6.7T+ views · 2 years ago

CamScanner

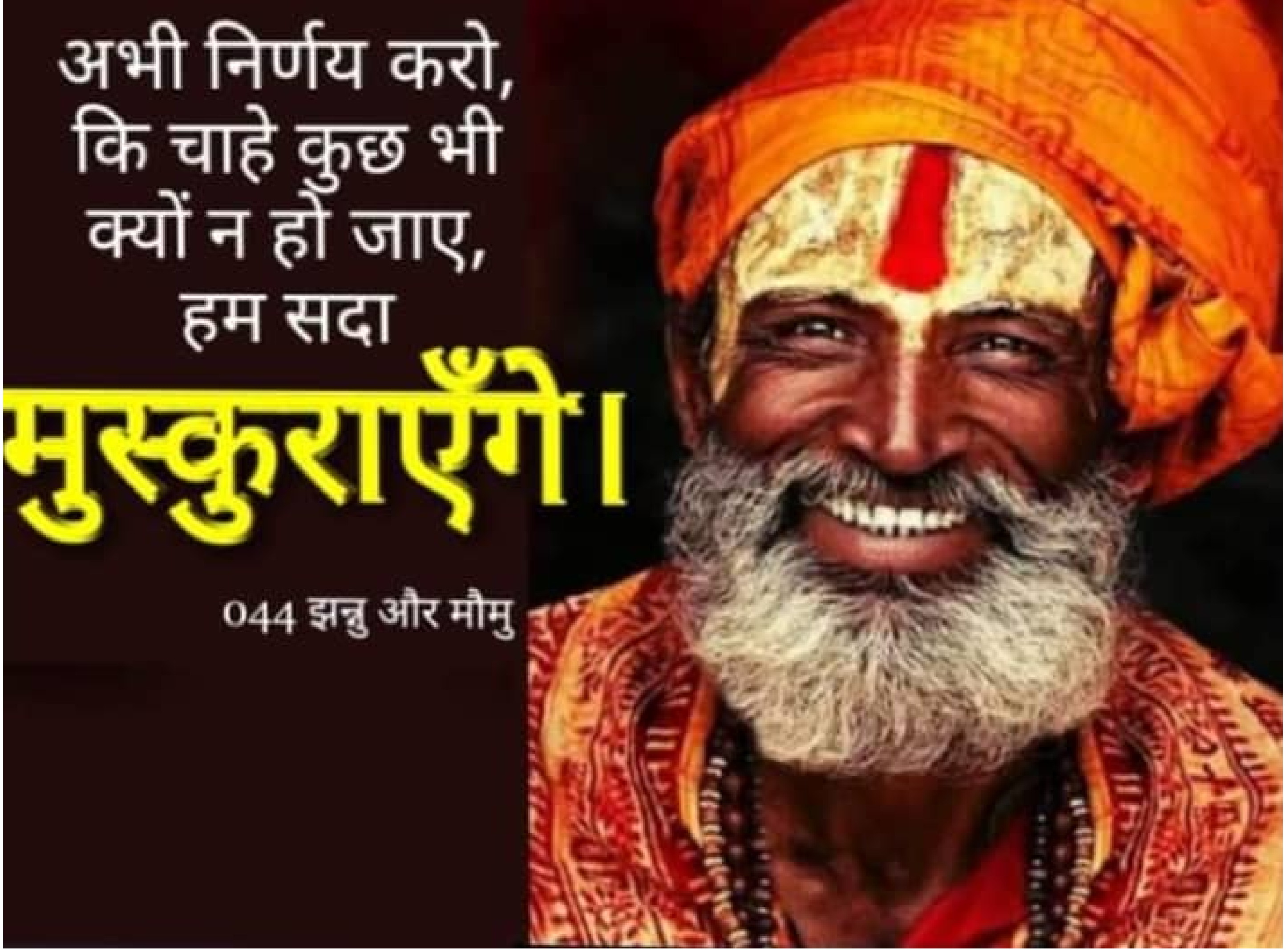

CamScanner

1:54 pm
VoLTE 4G R 77%
facebook
20 1 13

संत मुस्कुराए और बोले- मैं तो अपना काम ही कर रहा हूं, बिल्कुल सही से कर रहा हूँ। तुम ही अपना काम सही से नहीं कर रहे।
झन्नु झटका खा गया। उसे ऐसे उत्तर की उम्मीद नहीं थी। पूछने लगा- क्या मतलब?
संत उसके पास बैठ गए। बोले- बेटा! मालूम है तुम्हारा नाम झन्नु क्यों है? क्योंकि झन्नाया रहना और नुकसान उठाना, यही तुम करते आए हो। अगर तुम अपना स्वभाव बदल लो, तो तुम्हारा जीवन बदल सकता है। मेरी बात मानो तो चाहे कुछ भी हो जाए, खुश रहा करो।
झन्नु बोला- महाराज! खुश कैसे रहूँ? मेरा तो नसीब ही खराब है।
संत बोले- खुशनसीब वह नहीं जिसका नसीब अच्छा है, खुशनसीब वह है जो अपने नसीब से खुश है। तुम खुश रहने लगो तो नसीब बदल भी सकता है। तुम नहीं जानते कि कामयाब आदमी खुश रहे न रहे, पर खुश रहने वाला एक ना एक दिन कामयाब जरूर होता है।
झन्नु बोला- महाराज! दुनिया बड़ी खराब है और मेरा ढंग ही ऐसा है कि मुझसे झूठ बोला नहीं जाता।
संत बोले- झन्नु! झूठ नहीं बोल सकते पर चुप तो रह सकते हो? तुम दो सूत्र पकड़ लो। मौन और मुस्कान। मुस्कान समस्या का समाधान कर देती है। मौन समस्या का बाध कर देता है।
चाहे जो भी हो जाए, तुम चुप रहा करो, और मुस्कुराया करो। फिर देखो क्या होगा?
झन्नु को संत की बात जंच गई। और भगवान की कृपा से उसका स्वभाव और भाग्य दोनों बदल गए। फल क्या मिला? समय बदल गया, झन्नु मौन और मुस्कान के सहारे चलते चलते मौमु सेठ बन गया।
लोकेशानन्द कहता है कि आप टेलिविज़न नहीं हैं जो आपका रिमोट दूसरे के हाथ रहे। वह चाहे तो आप हंसें, वह चाहे तो रोएँ। हमारा चेहरा हमारा है। यह हंसेगा या रोएगा, इसका निर्णय दूसरा क्यों करे? अभी निर्णय करो, कि चाहे कुछ भी क्यों न हो जाए, हम सदा मुस्कुराएँगे। तब दुनिया में कोई भी आपके चेहरे की मुस्कान न छीन पाएगा। याद रहे-
"गुजरी हुई जिंदगी को कभी याद ना कर,
तकदीर में जो नहीं तो फ़रियाद ना कर।
जो होना होगा वो होकर ही रहेगा,
कल की फिक्र में आज हंसी बर्बाद ना कर॥"

CS CamScanner

EkKadamSafaltakiOrr
"ज़िंदगी के 4 कड़वे सच"
(1).आप कभी किसी को,संतुष्ट नहीं कर पाओगे।
(2).आपकी जिम्मेदारी,कभी खत्म नहीं होगी।
(3).दूसरों के लिए कितना भी जी लो,कोई तुम्हारी कद्र नहीं करेगा।
(4).आप चाह के भी किसी की ज़िंदगी नहीं बदल सकते। क्योंकि उसे उसके कर्मो का फल मिल रहा है।
इसलिए चिंता छोड़ो अपने लिए थोड़ा जी लो।
एक कदम सफलता की ओर

CamScanner

है। चाहे तेज तलवार की धार क्यों न हो, वह धार तो उसी की है। चाहे फूल की कोमलता क्यों न हो, कोमलता तो उसी की है।

वह आदमी फिर मेरी तरफ गौर से देखा, लेकिन आज मुझे उसमें वैसी पैनी धार न दिखाई पड़ी। आज मैं बदल गया था। और वह आदमी कहने लगा, तो निश्चित तुझे अनुभव हुआ है। अभी—अभी हुआ है, कल तक न हुआ था। अभी—अभी तूने कुछ जाना है, तू जागा है। मैं तेरा स्वागत करता हूं। नोबल पुरस्कार के कारण नहीं, न तेरे गीतों की प्रसिद्धि के कारण—अब तू शांता बन कर लौटा है; तुझे कुछ स्वाद मिला, तूने कुछ चखा है।

अष्टावक्र कहते हैं 'क्या कंगना, बाजूबंद, नूपुर सोने से भिन्न भासते हैं?'

सोने के कितने आभूषण बन जाते हैं, ऐसे ही परमात्मा के कितने रूप बनते! रावण भी उसका
ही रूप। अगर रामकथा पढ़ी और रावण में उसका रूप न दिखा तो रामकथा व्यर्थ गयी। अगर राम में ही दिखा और रावण में न दिखा तो तुमने व्यर्थ ही सिर मारा। तो द्वार न खुले। रामकथा लोग पढ़ते हैं, रामलीला देखते हैं और रावण को जलाये जाते हैं। समझे नहीं। बात ही पकड़ में नहीं आई, चूक ही गए। अगर राम में ही राम दिखाई पड़े तो तुम्हारे पास आंखें नहीं हैं। जिस दिन रावण में भी दिखाई पड़ जायें, उसी दिन तुम्हारी आंखें खुलीं। शुभ में शुभ दिखाई पड़े', यह कोई बड़ा गुण है। अशुभ में भी शुभ दिखाई पड़ जाये तब?.।

सब आभूषण उस एक के ही हैं। कहीं राम हो कर, कहीं रावण हो कर; कहीं कृष्ण, कहीं कंस कहीं जीसस, कहीं जुदास; कहीं प्रीतिकर, कहीं अप्रीतिकर; कहीं फूल, कहीं कांटा—लेकिन कांटा भी उसका ही रूप है। और जब कांटा चुभे तब भी उसे स्मरण करना। तो तुम धीरे— धीरे पाओगे, एकरस होने लगे। जो एक को देखने लगता है वह एकरस होने लगता है। जो एकरस होने लगता है, उसे फिर एक दिखाई पड़ने लगता है।

~ओशो..अष्ट्रावक्र महागीता (भाग 3), प्रवचन : 43

CamScanner

10:07 am • VoLTE 4G R 95%

रवींद्रनाथ ने लिखा है, उस रात मैं सो न सका। मुझे मेरे ही गाये गये गीत झूठे मालूम पड़ने लगे। रात सपने में भी उसकी आंख मुझे छेदती रही। वह मुझे घेरे रहा। दूसरे दिन सुबह जल्दी ही उठ आया। आकाश में बादल घिरे थे, रात वर्षा भी हुई थी। जगह—जगह सड़क के किनारे डबरे भर गये थे। मैं समुद्र की तरफ गया—मन बहलाने को। लौटता था, तब सूरज उगने लगा। विराट सागर पर उगते सूरज को देखा। फिर राह पर जब घर वापिस आने लगा तो राह के किनारे गंदे डबरों में, जिनमें भैंसें लोट रही थीं, लोगों ने जिनके आस—पास मलमूत्र किया था, वहां भी सूरज के प्रतिबिंब को देखा। अचानक आंख खुल गई। मैं ठिठक कर खड़ा हो गया कि क्या इन गंदे डबरों में जो प्रतिबिंब बन रहा है सूरज का, वह गंदा हो गया? विराट सागर में जो बन रहा है, क्या विराट हो गया? क्षुद्र डबरे में जो बन रहा है, क्या क्षुद्र हो गया? प्रतिबिंब तो एक के हैं।

रवींद्रनाथ ने लिखा है, जैसे सोये से कोई जग जाये, जैसे अंधेरे में बिजली कौंध जाये, ऐसा मैं नाचता हुआ उस आदमी के घर पहुंचा। उसे गले लगा लिया। उसमें भी मुझे प्रभु दिखाई पड़ा। प्रतिबिंब तो उसका ही है। चाहे तेज तलवार की धार क्यों न हो, वह धार तो उसी की है। चाहे फूल की कोमलता क्यों न हो, कोमलता तो उसी की है।

वह आदमी फिर मेरी तरफ गौर से देखा, लेकिन आज मुझे उसमें वैसी पैनी धार न दिखाई पड़ी। आज मैं बदल गया था। और वह आदमी कहने लगा, तो निश्चित तुझे अनुभव हुआ है। अभी—अभी हुआ है, कल तक न हुआ था। अभी—अभी तूने कुछ जाना है, तू जागा है। मैं तेरा स्वागत करता हूं। नोबल पुरस्कार के कारण नहीं, न तेरे गीतों की प्रसिद्धि के कारण—अब तू शांता बन कर लौटा है; तुझे कुछ स्वाद मिला, तूने कुछ चखा है।

अष्टावक्र कहते हैं 'क्या कंगना, बाजूबंद, नूपुर सोने से भिन्न भासते हैं?'

सोने के कितने आभूषण बन जाते हैं, ऐसे ही परमात्मा के कितने रूप बनते! रावण भी उसका
ही रूप। अगर रामकथा पढ़ी और रावण में उसका रूप न दिखा तो रामकथा व्यर्थ गयी। अगर राम में ही दिखा और रावण में न दिखा तो

CamScanner

है। चाहे तेज तलवार की धार क्यों न हो, वह धार तो उसी की है। चाहे फूल की कोमलता क्यों न हो, कोमलता तो उसी की है।

वह आदमी फिर मेरी तरफ गौर से देखा, लेकिन आज मुझे उसमें वैसी पैनी धार न दिखाई पड़ी। आज मैं बदल गया था। और वह आदमी कहने लगा, तो निश्चित तुझे अनुभव हुआ है। अभी—अभी हुआ है, कल तक न हुआ था। अभी—अभी तूने कुछ जाना है, तू जागा है। मैं तेरा स्वागत करता हूं। नोबल पुरस्कार के कारण नहीं, न तेरे गीतों की प्रसिद्धि के कारण—अब तू शांता बन कर लौटा है; तुझे कुछ स्वाद मिला, तूने कुछ चखा है।

अष्टावक्र कहते हैं 'क्या कंगना, बाजूबंद, नूपुर सोने से भिन्न भासते हैं?'

सोने के कितने आभूषण बन जाते हैं, ऐसे ही परमात्मा के कितने रूप बनते! रावण भी उसका
ही रूप। अगर रामकथा पढ़ी और रावण में उसका रूप न दिखा तो रामकथा व्यर्थ गयी। अगर राम में ही दिखा और रावण में न दिखा तो तुमने व्यर्थ ही सिर मारा। तो द्वार न खुले। रामकथा लोग पढ़ते हैं, रामलीला देखते हैं और रावण को जलाये जाते हैं। समझे नहीं। बात ही पकड़ में नहीं आई, चूक ही गए। अगर राम में ही राम दिखाई पड़े तो तुम्हारे पास आंखें नहीं हैं। जिस दिन रावण में भी दिखाई पड़ जायें, उसी दिन तुम्हारी आंखें खुलीं। शुभ में शुभ दिखाई पड़े', यह कोई बड़ा गुण है। अशुभ में भी शुभ दिखाई पड़ जाये तब?.।

सब आभूषण उस एक के ही हैं। कहीं राम हो कर, कहीं रावण हो कर; कहीं कृष्ण, कहीं कंस कहीं जीसस, कहीं जुदास; कहीं प्रीतिकर, कहीं अप्रीतिकर; कहीं फूल, कहीं कांटा—लेकिन कांटा भी उसका ही रूप है। और जब कांटा चुभे तब भी उसे स्मरण करना। तो तुम धीरे— धीरे पाओगे, एकरस होने लगे। जो एक को देखने लगता है वह एकरस होने लगता है। जो एकरस होने लगता है, उसे फिर एक दिखाई पड़ने लगता है।

~ओशो..अष्ट्रावक्र महागीता (भाग 3), प्रवचन : 43

CamScanner

9:50 am VoLTE 4G R 96%

रवींद्रनाथ ने लिखा है, उस रात मैं सो न सका। मुझे मेरे ही गाये गये गीत झूठे मालूम पड़ने लगे। रात सपने में भी उसकी आंख मुझे छेदती रही। वह मुझे घेरे रहा। दूसरे दिन सुबह जल्दी ही उठ आया। आकाश में बादल घिरे थे, रात वर्षा भी हुई थी। जगह—जगह सड़क के किनारे डबरे भर गये थे। मैं समुद्र की तरफ गया—मन बहलाने को। लौटता था, तब सूरज उगने लगा। विराट सागर पर उगते सूरज को देखा। फिर राह पर जब घर वापिस आने लगा तो राह के किनारे गंदे डबरों में, जिनमें भैंसें लोट रही थीं, लोगों ने जिनके आस—पास मलमूत्र किया था, वहां भी सूरज के प्रतिबिंब को देखा। अचानक आंख खुल गई। मैं ठिठक कर खड़ा हो गया कि क्या इन गंदे डबरों में जो प्रतिबिंब बन रहा है सूरज का, वह गंदा हो गया? विराट सागर में जो बन रहा है, क्या विराट हो गया? क्षुद्र डबरे में जो बन रहा है, क्या क्षुद्र हो गया? प्रतिबिंब तो एक के हैं।

रवींद्रनाथ ने लिखा है, जैसे सोये से कोई जग जाये, जैसे अंधेरे में बिजली कौंध जाये, ऐसा मैं नाचता हुआ उस आदमी के घर पहुंचा। उसे गले लगा लिया। उसमें भी मुझे प्रभु दिखाई पड़ा। प्रतिबिंब तो उसका ही है। चाहे तेज तलवार की धार क्यों न हो, वह धार तो उसी की है। चाहे फूल की कोमलता क्यों न हो, कोमलता तो उसी की है।

वह आदमी फिर मेरी तरफ गौर से देखा, लेकिन आज मुझे उसमें वैसी पैनी धार न दिखाई पड़ी। आज मैं बदल गया था। और वह आदमी कहने लगा, तो निश्चित तुझे अनुभव हुआ है। अभी—अभी हुआ है, कल तक न हुआ था। अभी—अभी तूने कुछ जाना है, तू जागा है। मैं तेरा स्वागत करता हूं। नोबल पुरस्कार के कारण नहीं, न तेरे गीतों की प्रसिद्धि के कारण—अब तू शांता बन कर लौटा है; तुझे कुछ स्वाद मिला, तूने कुछ चखा है।

अष्टावक्र कहते हैं 'क्या कंगना, बाजूबंद, नूपुर सोने से भिन्न भासते हैं?'

सोने के कितने आभूषण बन जाते हैं, ऐसे ही परमात्मा के कितने रूप बनते! रावण भी उसका
ही रूप। अगर रामकथा पढ़ी और रावण में उसका रूप न दिखा तो रामकथा व्यर्थ गयी। अगर राम में ही दिखा और रावण में न दिखा तो

CamScanner

रवींद्रनाथ ने एक स्मरण लिखा है। जब वे पहली—पहली बार पश्चिम से प्रसिद्ध हो कर लौटे, नोबल प्राइज ले कर लौटे, तो जगह—जगह उनके स्वागत हुए। लोगों ने बड़ा सम्मान किया।

जब वे अपने घर आये तो उनके पड़ोस में एक आदमी था, वह उनको मिलने को आया। उस आदमी से वे पहले से ही कुछ बेचैन थे, कभी मिलने आया भी न था। लेकिन उस आदमी की आंख ही बेचैन करती थी। उस आदमी की आंख में कुछ तलवार जैसी धार थी कि सीधे हृदय में उतर जाये। वह आया और गौर से उनकी आंख में आंख डाल कर देखने लगा। वे तो तिलमिला गये। और उसने उनके कंधे पकड़ लिये और जोर से हिलाकर कहा, तुझे सच में ही ईश्वर का अनुभव हुआ है? क्योंकि गीतांजलि, जिस पर उन्हें नोबल पुरस्कार मिला, प्रभु के गीत हैं, उपनिषद जैसे वचन हैं। उस आदमी ने उनको तिलमिला दिया।

कहा, सच में ही तुझे ईश्वर का दर्शन हुआ है? क्रोध भी उन्हें आया। वह अपमानजनक भी लगा। लेकिन उस आदमी की आंखों की धार कुछ ऐसी थी कि झूठ भी न बोल सके और वह आदमी हंसने लगा और उसकी हंसी और भी गहरे तक घाव कर गई। और वह आदमी कहने लगा, तुझे मुझमें ईश्वर दिखाई पड़ता है कि नहीं 2: यह और मुश्किल बात थी। उसमें तो कतई नहीं दिखाई पड़ता था, और सब में दिखाई पड़ भी जाता। जो फूलमालायें ले कर आये थे, जिन्होंने स्वागत किया था, सम्मान में गीत गाये थे, नाटक खेले थे, नृत्य किये थे—उनमें शायद दिख भी जाता। वे बड़े प्रीतिकर दर्पण थे। यह आदमी! वह आदमी खिलखिलाता, उन्हें छोड़कर लौट भी गया।

रवींद्रनाथ ने लिखा है, उस रात मैं सो न सका। मुझे मेरे ही गाये गये गीत झूठे मालूम पड़ने लगे। रात सपने में भी उसकी आंख मुझे छेदती रही। वह मुझे घेरे रहा। दूसरे दिन सुबह जल्दी ही उठ आया। आकाश में बादल घिरे थे, रात वर्षा भी हुई थी। जगह—जगह सड़क के किनारे डबरे भर गये थे। मैं समुद्र की तरफ गया—मन बहलाने को। लौटता था, तब सूरज उगने लगा। विराट सागर पर उगते सूरज को देखा। फिर राह पर जब घर वापिस आने लगा तो राह के किनारे गंदे डबरों में, जिनमें भैंसें लोट रही थीं, लोगों ने जिनके आस—पास मलमूत्र किया था, वहां भी सूरज के प्रतिबिंब को देखा। अचानक आंख खुल गई। मैं ठिठक कर

CS CamScanner

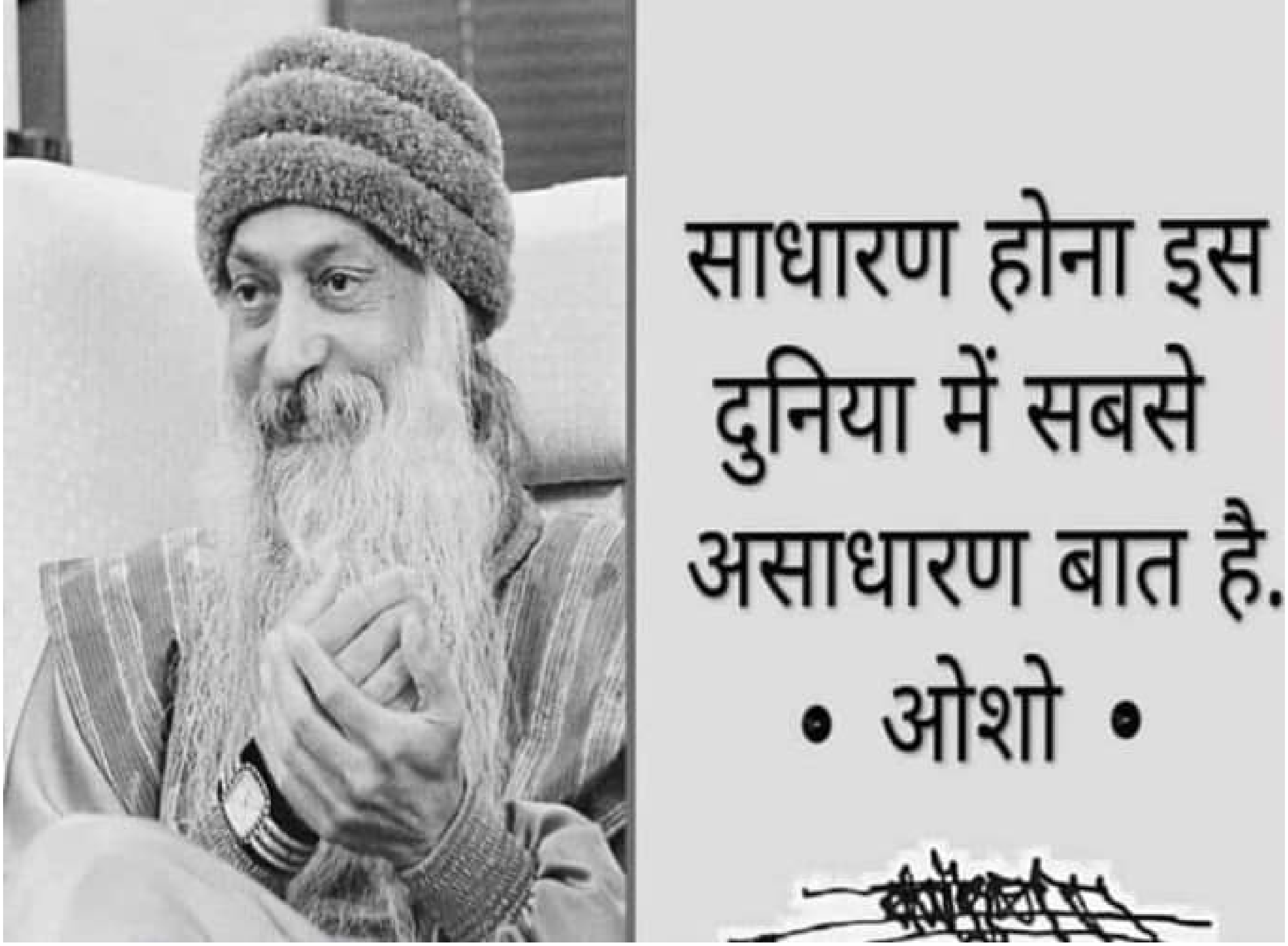

CamScanner

को तृप्त करने की दौड़ में पड़ जाता है, उसके जीवन में असत्य घना से घना होता जाता है और सत्य से उसके संबंध सदा के लिएक्षीण होते जाते हैं। अंतत:, अंतत: उसके पास झूठ का एक ढेर रह जाता है और सत्य की कोई भी किरण नहीं। लेकिन जो सरल हो जाता है, सीधा, साधारण, सामान्य, उसके जीवन में झूठ की कोई गुंजाइश नहीं रह जाती, उसके जीवन में सत्य की किरण का जन्महोता है और सारा अंधकार समाप्त हो जाता है।

ये थोड़ी सी बातें मैंने कही हैं सरलता के लिए, इन पर विचार करना, इन परसोचना, अपने जीवन में निरीक्षण करना और देखना कि क्या तुम्हारे जीवन में सरलता बढ़ रही है या जटिलता बढ़ रही है? अगर जटिलता बढ़ रही हो, तो समझना कि तुमने गलत मार्ग चुना है- और जीवन के अंत में तुम्हें विफलता मिलेगी, दुख मिलेगा, पीड़ा, चिंता के अतिरिक्त तुम्हारे हाथ में कुछ भी नहीं आएगा। और अगर तुमने सरलता का मार्ग जीवन में चुना, और स्मरण पूर्वक रोज सरल से सरल होती गईं, तो तुम पाओगी कि बचपन में जो आनंद था, उससे बहुत बड़ा आनंद निरंतर बढ़ता जाएगा। और बुढ़ापा तुम्हारा एक अदभुतगौरव-कलश की भांति होगा, जिसमें आनंद की पूरी छाया, जिसमें आनंद की पूरीअनुभूति, जिसमें एक तरिक सौंदर्य, सत्य का एक बल, और जिसमें आंतरिक रूप से
का अनुभव, अमृत उसका अनुभव जिसकी कोई मृत्यु नहीं होती है, उपलब्ध होता है।
इन पर तुम विचार करना, इन पर तुम सोचना और अपने जीवन से तौलना कितुम्हारे जीवन की दिशा क्या है?
स्मरण रहे, जो व्यक्ति भी परमात्मा की दिशा के प्रतिकूल जाता है, वह अपने ही हाथों अपने को नष्ट कर लेता है। और जो व्यक्ति परमात्मा की दिशा में चरण उठाता है, वह धीरे- धीरे विकसित होता है, उसके भीतर अनुभूतियों घनी होती हैं, उसके जीवन मेंअर्थ आता है, उसके जीवन में बहुत तरिक संपदा आती है, और अंतत: उसे कृतार्थता और धन्यता का अनुभव होता है।

जीवन गीत-(प्रवचन-04)

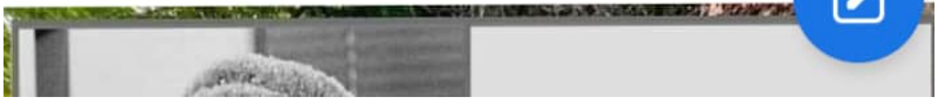

CamScanner

लाओत्से हटा और वापस लौट आया। और उसने कहा : उस दिन से मैं समझगया कि अगर सच में तुम्हें जीवन में बड़ा होना है तो उस दरख्त की भांति हो जाओ जोबिलकुल साधारण है जिसके पत्ते भी अर्थ के नहीं जिसकी लकड़ी भी अर्थ की नहीं। तोउस दिन से मैं वैसा ही दरख्त हो गया बेकार। मैंने फिर सारी महत्वाकांक्षा छोड़ दी – बड़ाहोने की ऊंचा होने की। असाधारण होने की सारी दौड़ छोड़ दी। क्योंकि मैंने पाया कि जोऊपर होना चाहेगा वह काटा जाएगा। मैंने पाया कि जो बड़ा होना चाहेगा वह काट कर छोटा कर दिया जाएगा। मैंने पाया कि प्रतियोगिता में प्रतिस्पर्धा में महत्वाकांक्षा में सिवाय मृत्यु के और कुछ भी नहीं है। और तब मैं अति साधारण जैसा मैं था ना-कुछ, चुपचापवैसा ही बैठ रहा। और जिस दिन मैंने सारी दौड़ छोड़ दी उसी दिन मैंने पाया कि मेरे भीतर कोई अदभुत चीज का जन्म हो गया है। उसी दिन मैंने पाया कि मेरे भीतर परमात्मा के अनुभव की शुरुआत हो गई है।

जो व्यक्ति साधारण से साधारण और सरल से सरल होने को राजी हो जाता है सत्य खुद उसके द्वार आ जाता है। और जो व्यक्ति असाधारण होने की विशिष्ट होने कीबड़ा होने की, महत्वाकांक्षा होने की, अहंकार को तृप्त करने की दौड़ में पड़ जाता है, उसके जीवन में असत्य घना से घना होता जाता है और सत्य से उसके संबंध सदा के लिएक्षीण होते जाते हैं। अंतत:, अंतत: उसके पास झूठ का एक ढेर रह जाता है और सत्य की कोई भी किरण नहीं। लेकिन जो सरल हो जाता है, सीधा, साधारण, सामान्य, उसके जीवन में झूठ की कोई गुंजाइश नहीं रह जाती, उसके जीवन में सत्य की किरण का जन्महोता है और सारा अंधकार समाप्त हो जाता है।

ये थोड़ी सी बातें मैंने कही हैं सरलता के लिए, इन पर विचार करना, इन परसोचना, अपने जीवन में निरीक्षण करना और देखना कि क्या तुम्हारे जीवन में सरलता बढ़ रही है या जटिलता बढ़ रही है? अगर जटिलता बढ़ रही हो, तो समझना कि तुमने गलत मार्ग चुना है- और जीवन के अंत में तुम्हें विफलता मिलेगी, दुख मिलेगा, पीड़ा, चिंता के अतिरिक्त तुम्हारे हाथ में कुछ भी नहीं आएगा। और अगर तुमने सरलता का मार्ग जीवन में चुना, और स्मरण पूर्वक रोज सरल से सरल होती गईं, तो तुम पाओगी कि बचपन में जो आनंद था, उससे बहुत बड़ा आनंद निरंतर बढ़ता जाएगा। और बुढ़ापा तुम्हारा एक अदभुतगौरव-कलश की भांति होगा, जिसमें आनंद की पूरी छाया, जिसमें आनंद की पूरीअनुभूति

CamScanner

9:47 am • VoLTE 4G R 96%
ओशो का हिन्दी साहित्य
Moderator · 1d ·

यह घटना ऐसे घटी कि मैं एक जंगल गया था लाओत्से ने कहा : औरवहां मैंने लोगों को लकड़ियां काटते देखा। बड़े-बड़े दरख्त काटे जा रहे थे ऊंचे-ऊंचेदरख्त काटे जा रहे थे। सारा जंगल कट रहा था। बढ़ई लगे हुए थे और जंगल कट रहाथा। लेकिन बीच जंगल में एक बहुत बड़ा दरख्त था इतना बड़ा दरख्त था कि उसकी छाया इतने दूर तक फैल गई थी वह इतना पुराना और प्राचीन मालूम होता था कि उसकेनीचे एक हजार बैलगाड़ियां विश्राम कर सकती थीं इतनी उसकी छाया थी। तो मैंने अपने मित्रों से कहा कि जाओ और पूछो इस दरख्त को कोई क्यों नहीं काटता है? यह दरख्त
इतना बड़ा कैसे हो गया? जहां पूरा जंगल कट रहा है वहां एक इतना बड़ा दरख्त कैस?जहां सब दरख्त ठूंठ रह गए हैं जहां नये दरख्त काटे जा रहे हैं रोज वहां यह इतना बड़ादरख्त कैसे बच रहा? इसको क्यों लोगों ने छोड़ दिया?
तो मेरे मित्र और मैं वहां गया और मैंने वृद्ध बढ़इयों से पूछा जो लकड़ियां काटतेथे कि यह इतना दरख्त बड़ा कैसे हो गया?
उन्होंने कहा : यह दरख्त बड़ा अजीब है। यह दरख्त बिलकुल साधारण है। इसकेपत्ते कोई जानवर नहीं खाते। इसकी लकड़ियों को जलाया नहीं जा सकता वे धुंआ करतीहैं। इसकी लकड़ियां बिलकुल एड़ी-टेढ़ी है इनको काट कर फर्नीचर नहीं बनाया जासकता, द्वार-दरवाजे नहीं बनाए जा सकते। दरख्त बिलकुल बेकार है बिलकुल साधारणहै। इसलिए इसको कोई काटता नहीं। लेकिन जो दरख्त सीधा है और ऊंचा गया है उसेकाटा जाता है उसके खंभे बनाए जाते हैं।
लाओत्से हटा और वापस लौट आया। और उसने कहा : उस दिन से मैं समझगया कि अगर सच में तुम्हें जीवन में बड़ा होना है तो उस दरख्त की भांति हो जाओ जोबिलकुल साधारण है जिसके पत्ते भी अर्थ के नहीं जिसकी लकड़ी भी अर्थ की नहीं। तोउस दिन से मैं वैसा ही दरख्त हो गया बेकार। मैंने फिर सारी महत्वाकांक्षा छोड़ दी – बड़ाहोने की ऊंचा होने की। असाधारण होने की सारी दौड़ छोड़ दी। क्योंकि मैंने पाया कि जोऊपर होना चाहेगा वह काटा जाएगा। मैंने पाया कि जो बड़ा होना चाहेगा वह काट कर छोटा कर दिया जाएगा। मैंने पाया कि प्रतियोगिता में प्रतिस्पर्धा में महत्वाकांक्षा में सिवाय मृत्यु के और कुछ भी नहीं है। और तब मैं अति साधारण जैसा मैं था ना-कुछ, चुपचापवैसा ही बैठ रहा। और जिस दिन मैंने सारी दौड़ छोड़ दी उसी दिन मैंने पाया कि मेरे

CamScanner

9:45 am VoLTE 4G R 96%

हिम्मत बड़ी है।

कृष्ण कहते हैं, दोनों ही मैं हूं। वह जो तुम्हें अच्छा लगता है, वह भी मैं हूं। वह जो तुम्हें बुरा लगता है, वह भी मैं हूं। दोनों ही मैं हूं।

जिसको यह समग्र स्वीकृति, यह टोटल एक्सेप्टेबिलिटी समझ में आ जाए, वही कृष्ण के तत्व-दर्शन को ठीक से समझ पाएगा।

कृष्ण बेबूझ हैं। क्योंकि कृष्ण कहते हैं, दोनों ही मैं हूं, युद्ध भी मैं और शांति भी मैं। दोनों ही मैं हूं, अंधेरा भी मैं, प्रकाश भी मैं। और जब दोनों की तरह तू मुझे देख पाएगा, तभी तू मुझे देख पाएगा। अगर तू बांटकर देखेगा, आधे को देखेगा, चुनकर देखेगा, तो तू मुझे कभी नहीं देख पाएगा।

परमात्मा में चुनाव नहीं किया जा सकता। यू कैन नाट चूज। और अगर आपने चुनाव किया, तो वह परमात्मा आपके घर का होममेड परमात्मा होगा, घर का बनाया हुआ। वह परमात्मा असली नहीं होगा।

परमात्मा तो जैसा है, उसके लिए वैसे ही होने के लिए राजी होना पड़ेगा। अगर वह प्रलय है तो सही। अगर वह मृत्यु है तो सही। राजी हैं। अगर आपने कहा कि नहीं, हम तो जरा परमात्मा के चेहरे पर रंग-रोगन करेंगे। हम तो जरा शक्ल को सुंदर बनाएंगे। मेकअप में हर्ज भी क्या है? हम थोड़ा इसकी शक्ल को ठीक कर लें। अगर आपने ऐसा किया, तो जो आपके हाथ में लगेगा, वह आपके हाथ का बनाया हुआ परमात्मा होगा। उससे परमात्मा का कोई भी संबंध नहीं है।

धार्मिक आदमी दुस्साहसी है। दुस्साहस उसका यह है कि जैसा है, ऐज इट इज़, वह उसे स्वीकार करता है। वह कहता है, यह भी तेरा और यह भी तेरा। जन्म भी तेरा और मृत्यु भी तेरी। दोनों के लिए मैं राजी हूं। इसलिए कृष्ण अर्जुन को कहते हैं, प्रलय भी मैं, सृजन भी मैं। दोनों ही मैं हूं।

आपका हृदय ढलता है उसी रूप में, जिस रूप में आप परमात्मा को स्वीकार करते हैं। तोड़कर नहीं, जोड़कर, इकट्ठा, सबको लिए हुए। और जब सुबह आपके पैर में कांटा गड़े, तो यह मत सोचना कि शैतान ने गड़ाया। तब उसको भी सोचना कि परमात्मा ने गड़ाया; और परमात्मा ने आपको इस योग्य समझा कि कांटा गड़ाया, उसके लिए भी धन्यवाद दे देना।

और जिस दिन फूल के लिए ही नहीं, कांटे के लिए भी परमात्मा कोई धन्यवाद दे पाता है, उस दिन उसे मंदिरों में जाने की जरू रह जाती। वह जहां है, वहीं मंदिर आ जाता है।

CamScanner

9:44 am VoLTE 4G R 96%

पर बुद्ध ने कहा, निमंत्रण तो मुझे आपके पहले मिल गया

पर प्रसेनजित ने कहा कि अगर इसकी खबर भी लोगों को हो जाएगी कि आप आम्रपाली वेश्या के घर भोजन करने गए, महा अनर्थ हो जाएगा, प्रतिष्ठा धूल में मिल जाएगी। आप और वेश्या के घर जाएंगे!

पर बुद्ध ने कहा, निमंत्रण उसका ही पहले है और हां भी भरी जा चुकी है। और जिन बातों से आप मुझे भयभीत करते हैं, अगर मैं उनसे भयभीत ही होता हूं, तो फिर मैं बुद्ध ही नहीं हूं। अब तो होगी बदनामी, तो अच्छा। इस जगत में बदनामी होगी।

लेकिन अगर वेश्या के घर जाने की बदनामी से डर कर प्रसेनजित, तुम्हारी मैं मान लूं, तो अनंत-अनंत काल में जो बुद्ध हुए हैं, वे मुझ पर हंसेंगे। वहां मेरी बड़ी बदनामी हो जाएगी। तो इस बदनामी को हो जाने दो।

लाओत्से कहता है, निष्पक्ष हो जाता है वैसा व्यक्ति। जीता है-पक्षों से नहीं, सहजता से। कोई निर्णय नहीं लेता-क्या बुरा है और क्या भला है, क्या होना चाहिए और क्या नहीं होना चाहिए।

थोड़ी कठिनाई लगेगी; क्योंकि जिनकी नैतिक बुद्धि है और जो सोचते हैं कि जीवन की जो ऊंची से ऊंची बात है, वह नीति है, उनको बहुत कठिनाई होगी।

नीति ऊंची से ऊंची बात उनके लिए है, जिनके जीवन अनैतिक हैं। जैसे औषधि उनके काम की है जो बीमार हैं। लेकिन भूल कर भी स्वस्थ लोगों को औषधि मत पिलाने लगना।

नीति उनके काम की है, जो अनीति में भरे हैं और पड़े हैं। लेकिन जो धर्म को उपलब्ध होते हैं, उनसे नीति वैसे ही छूट जाती है जैसे अनीति छूट जाती है। पक्ष छूट जाते हैं।

ओशो,
ताओ उपनिषद-38

CamScanner

12:16 pm • VoLTE 4G R 91%

hi.m.wikipedia.org/wiki/

विकिपीडिया

कुम्भन दास

भक्तिकाल मे कृष्णभक्ति धारा का विशेष महत्त्व है। पुष्टिमार्ग के प्रवर्तक बल्ल्भाचार्य के शिष्यों में कुम्भनदास का योगदान इस लिये ज्यादा है कि उन्होंने कृष्णभक्ति को राज भक्ति से अधिक महत्त्व दिया। वे मुगल बादशाह अकबर के समकालीन थे। कहते हैं, एक बार अकबर ने उन्हें फतेहपुर सीकरी आमंत्रित किया, कुम्भनदास को इससे बहुत ग्लानि महसूस हुई। इस भाव को उन्होंने अपनी कविता में इस तरह व्यक्त किया है- सन्तन को कहा सीकरी सों काम, आवत जात पनहिया टूटी, बिसर गयो हरि नाम। अर्थात्, सन्तों को सीकरी से क्या लेना-देना, राजा के यहां आने-जाने में जूता घिसा अर्थात थकान हुई अलग, ईश्वर का नाम भी याद ना रहा। वे लिखते हैं - जिनके मुख देखे दुख उपजत, तिन्को करना परी प्रनाम। अर्थात्, जिनका मुंह देखना भी कष्टप्रद है, उनको प्रणम करना पडता है। राजा के प्रति ऐसी विरक्ति सामान्य बात है क्या?

बाहरी कड़ियाँ

CamScanner

12:16 pm 91%

google.com/search?q=जि

जिनको मुख देखत दुख उपजत

सभी वीडियो इमेज शॉपिंग समाचार किताबें मैप

हिंदी में खोजें जिनको मुख देखत दुख उपजत

इसे सुनें

" जिनको देखे दुख उपजत है तिनको करना परि प्रणाम " का अर्थ है कि जिनको देखने से ही दुख होता है उनको नमस्ते या सलाम करनी पड़ रही है। उपुर्युक्त पंक्तियां कुम्भनदास जी की है। एक बार बादशाह अकबर ने उन्हें फतेह पुर सीकरी पुरस्कार देने के लिए आमंत्रित किया।

10 Dec 2019

https://brainly.in › question

meaning of jinko dekhe dukh upjat hai tinko karbo pare salam - Brainly.in

About featured snippets Feedback

विकिपीडिया
https://hi.m.wikipedia.org › wiki

कुम्भन दास

वे लिखते हैं - जिनके मुख देखे दुख उपजत, तिन्को करना परी प्रनाम। अर्थात्, जिनका मुंह देखना ...

Quora
https://hi.quora.com › संतन-को-...

संतन को कहा सीकरी सों काम । आवत जात पनहियाँ

CamScanner

11:27 pm   VoLTE 4G R 22%

Video

Vipin Kumar Singh · Follow

1d ·

पूज्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री अविमुक्तेश्वरानंद: सरस्वती जी बता रहें हैं कि सनातम धर्म के चारों पूज्य #शंकर... See more

1.9K   518 comments • 223 shares • 51K views

Like   Comment   Give   Share

New for you

See all (2)

Shared by: Rajesh Kumar Pandey, Om Prakash Upadhyay Upadhyay and oth...

CamScanner

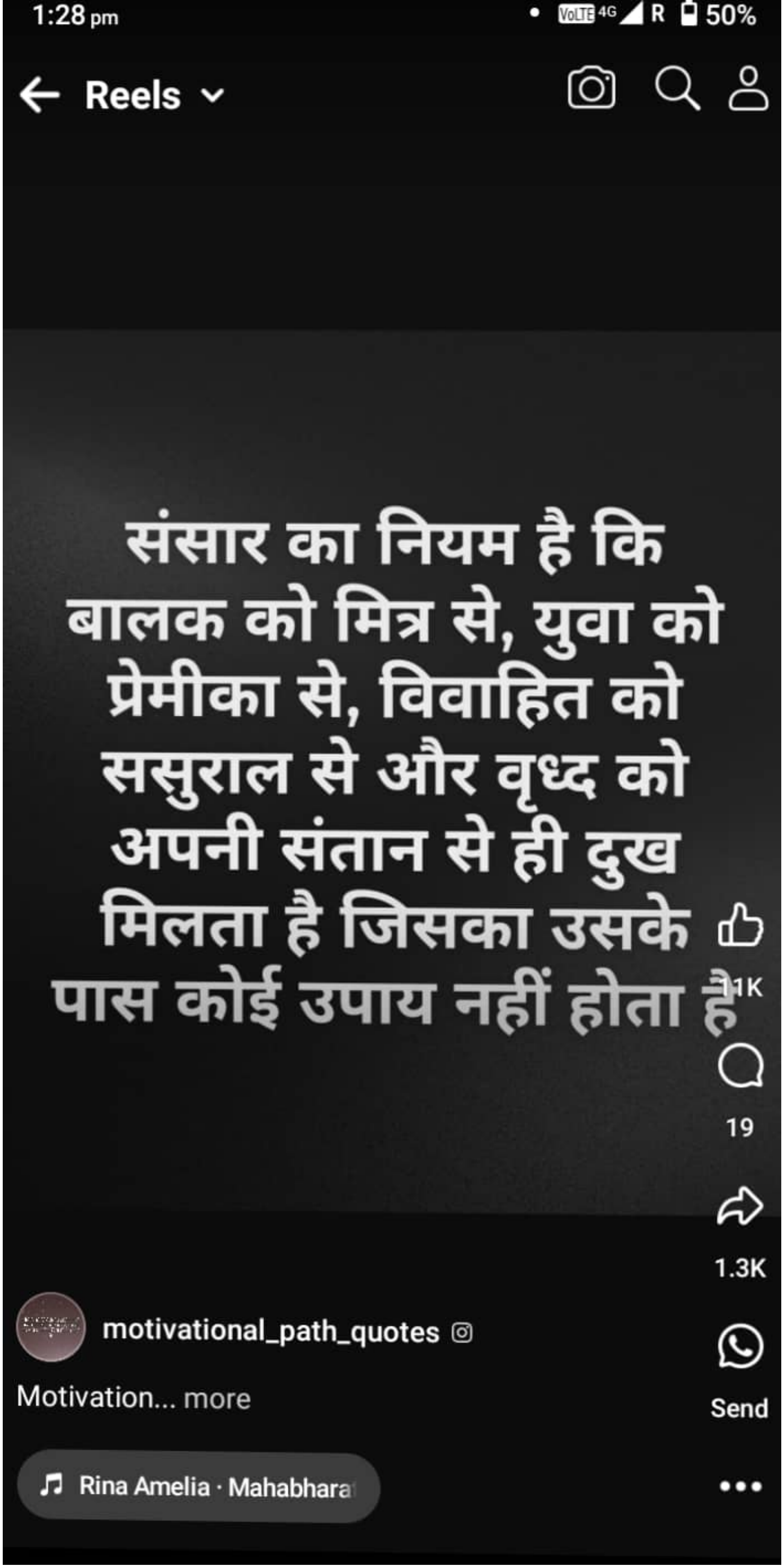
1:28 pm
50%
Reels
संसार का नियम है कि
बालक को मित्र से, युवा को
प्रेमीका से, विवाहित को
ससुराल से और वृध्द को
अपनी संतान से ही दुख
मिलता है जिसका उसके
पास कोई उपाय नहीं होता है
11K
19
1.3K
motivational_path_quotes
Motivation... more
Send
Rina Amelia · Mahabhara

CamScanner

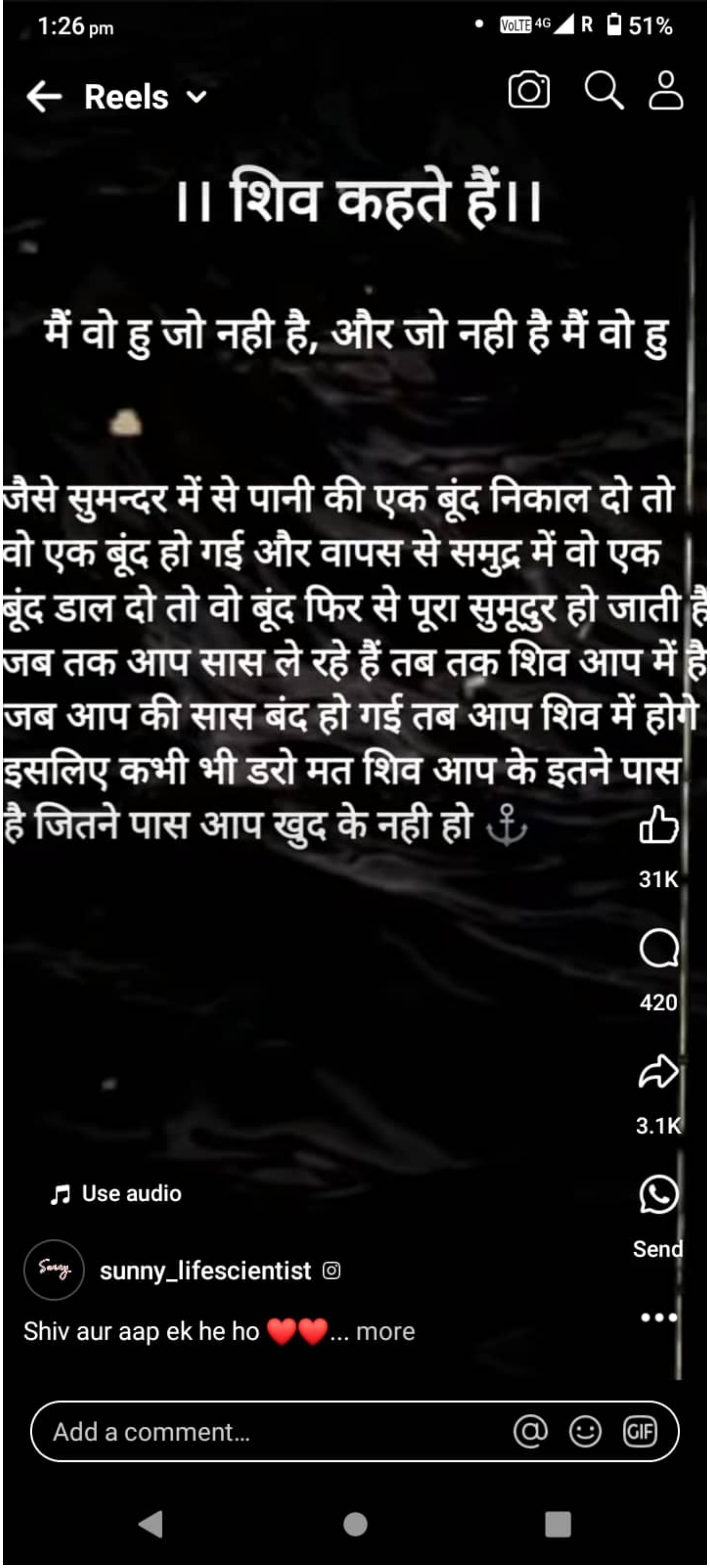
1:26 pm
51%
Reels
।। शिव कहते हैं।।
मैं वो हु जो नही है, और जो नही है मैं वो हु
जैसे सुमन्दर में से पानी की एक बूंद निकाल दो तो
वो एक बूंद हो गई और वापस से समुद्र में वो एक
बूंद डाल दो तो वो बूंद फिर से पूरा सुमूदुर हो जाती है
जब तक आप सास ले रहे हैं तब तक शिव आप में है
जब आप की सास बंद हो गई तब आप शिव में होगे
इसलिए कभी भी डरो मत शिव आप के इतने पास
है जितने पास आप खुद के नही हो ⚓
31K
420
3.1K
Send
Use audio
sunny_lifescientist
Shiv aur aap ek he ho ❤️❤️... more
Add a comment...
GIF

CamScanner

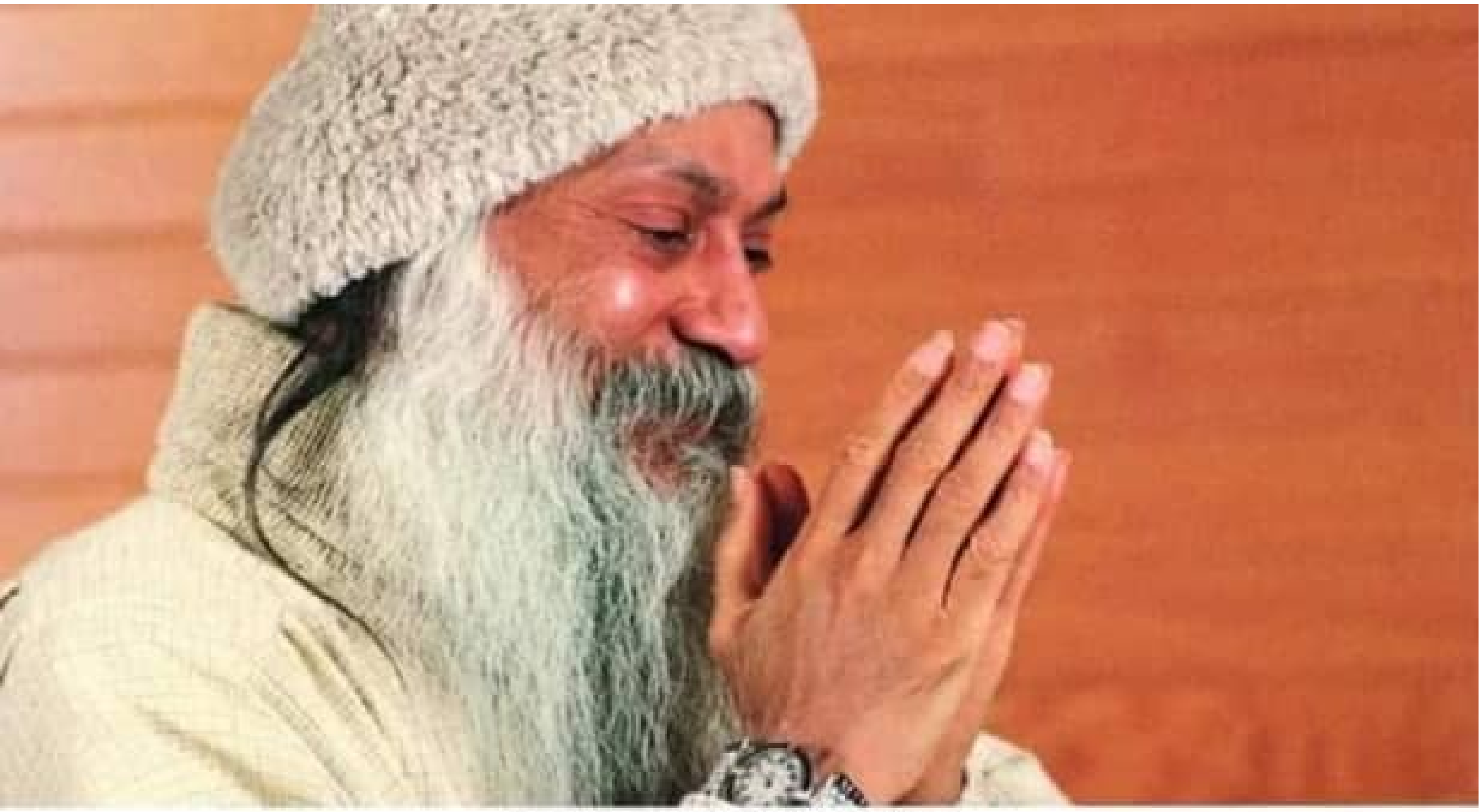

insta:- swami_dhyan_rohan

जिस दिन तुम्हें अपने मूल्य का पता लग गया। उस दिन के बाद तुम्हें, किसी के द्वारा की गई प्रशंसा निंदा से कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

~ओशो

CamScanner

प्रेम कभी व्यक्ति से नहीं होता, व्यक्तित्व से होता है। प्यार कभी शरीर से नहीं होता, वो तो आत्माओं का विषय है, और आत्मा की तरह ही, प्रेम कभी नहीं मरता | जो मरता है,नी: संदेह वो प्रेम नहीं, प्रेम का भ्रम है !!

आचार्य रजनीश..!!

Osho_madhushala_...!!

CS CamScanner

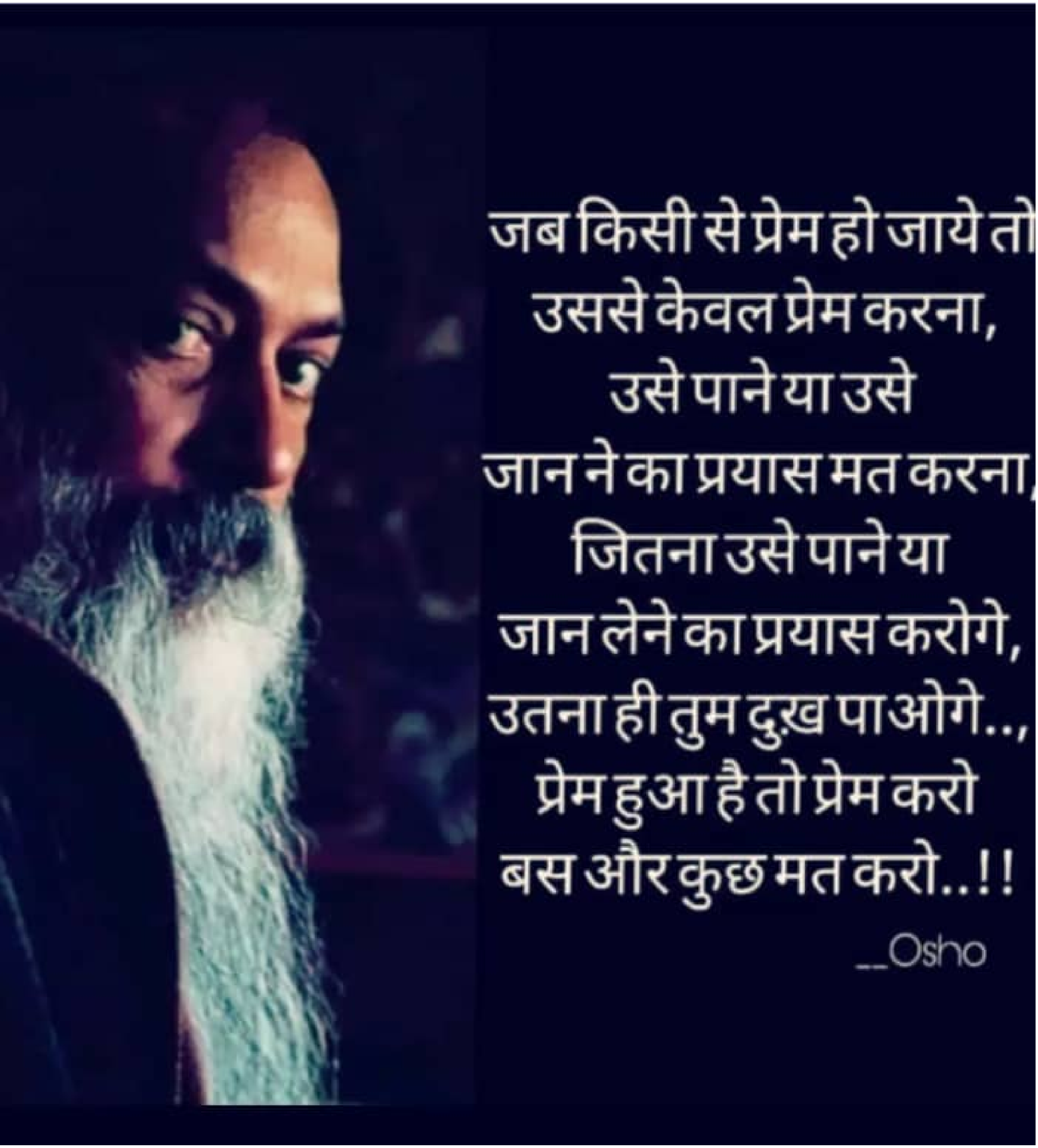
जब किसी से प्रेम हो जाये तो
उससे केवल प्रेम करना,
उसे पाने या उसे
जान ने का प्रयास मत करना,
जितना उसे पाने या
जान लेने का प्रयास करोगे,
उतना ही तुम दुख़ पाओगे..,
प्रेम हुआ है तो प्रेम करो
बस और कुछ मत करो..!!
__Osho

CamScanner

8:15 pm 52%

दिन थे, जब मैं कृष्ण की गीता पर बोला, क्योंकि भीड़ भाड़ मेरे पास थी। भीड़ भाड़ के लिए अष्टावक्र—गीता का कोई अर्थ न था।

बड़ी चेष्टा करके भीड़ भाड़ से छुटकारा पाया है। अब तो थोड़े से विवेकानंद यहां हैं। अब तो उनसे बात करनी है, जिनकी बड़ी संभावना है। उन थोड़े से लोगों के साथ मेहनत करनी है, जिनके साथ मेहनत का परिणाम हो सकता है। अब हीरे तराशने हैं, कंकड़ पत्थरों पर यह छैनी खराब नहीं करनी। इसलिए चुनी है अष्टावक्र की गीता। तुम तैयार हुए हो, इसलिए चुनी है।

ओशो
अष्टावक्र महागीता
भाग—1, प्रवचन—1

27 5 comments • 4 shares

CamScanner

8:14 pm 52%

उन्होंने कहा, 'छोड़, प्रमाण वगैरह बाद में सोच लेंगे। मैं जरा बूढ़ा हुआ, मुझे पढ़ने में अड़चन होती है। तू अभी जवान, तेरी आंख अभी तेज यह किताब पड़ी है, इसे तू पढ़।वह थी अष्टावक्र गीता।' जरा मुझे सुना दे।'

कहते हैं, विवेकानंद को इसमें तो कुछ अड़चन न मालूम पड़ी, यह आदमी कुछ ऐसी तो कोई खास बात नहीं मांग रहा है!

दो चार सूत्र पढ़े और एक घबड़ाहट, और रोआं रोआं कंपने लगा! और विवेकानंद ने कहा, मुझसे नहीं पढ़ा जाता। रामकृष्ण ने कहा : पढ़ भी! इसमें हर्ज क्या है? तेरा क्या बिगाड़ लेगी यह किताब? तू जवान है अभी। तेरी आंख अभी ताजी हैं। और मैं बूढ़ा हुआ, मुझे पढ़ने में दिक्कत होती है। और यह किताब मुझे पढ़नी है तो तू पढ़ कर सुना दे।

कहते हैं उस किताब को सुनाते—सुनाते ही विवेकानंद डूब गये। रामकृष्ण ने देखा इस व्यक्ति के भीतर बड़ी संभावना है, बड़ी शुद्ध संभावना है, जैसी एक की होती है जो कभी न कभी बुद्ध होना जिसका निर्णीत है, आज नहीं कल, भटके कितना ही, बुद्धत्व जिसके पास चला आ रहा है।

क्यों अष्टावक्र की गीता रामकृष्ण ने कही कि तू पढ़ कर मुझे सुना दे? क्योंकि इससे ज्यादा शुद्धतम वक्तव्य और कोई नहीं। ये शब्द भी अगर तुम्हारे भीतर पहुंच जायें तो तुम्हारी सोयी हुई आत्मा को जगाने लगेंगे। ये शब्द तुम्हें तरंगायित करेंगे। ये शब्द तुम्हें आह्लादित करेंगे। ये शब्द तुम्हें झकझोरेंगे। इन शब्दों के साथ क्रांति घटित हो सकती है।

अष्टावक्र की गीता को मैंने यूं ही नहीं चुना है। और जल्दी नहीं चुना बहुत देर करके चुना है, सोच विचार कर।

दिन थे, जब मैं कृष्ण की गीता पर बोला, क्योंकि भीड़ भाड़ मेरे पास थी। भीड़ भाड़ के लिए अष्टावक्र—गीता का कोई अर्थ न था।

बड़ी चेष्टा करके भीड़ भाड़ से छुटकारा पाया है। अब तो थोड़े से विवेकानंद यहां हैं। अब तो उनसे बात करनी है, जिनकी बड़ी संभावना है। उन थोड़े से लोगों के साथ मेहनत करनी है, जिनके साथ मेहनत का

CamScanner

8:14 pm VoLTE 4G R 53%

विवेकानंद रामकृष्ण के पास आये, तब उनका नाम 'नरेंद्रनाथ' था। 'विवेकानंद' तो बाद में रामकृष्ण ने उनको पुकारा।

जब आये रामकृष्ण के पास तो अति विवादी थे, नास्तिक थे, तर्कवादी थे। हर चीज के लिए प्रमाण चाहते थे।

कुछ चीजें हैं जिनके लिए कोई प्रमाण नहीं मजबूरी है। परमात्मा के लिए कोई प्रमाण नहीं है; है और प्रमाण नहीं है। प्रेम के लिए कोई प्रमाण नहीं है; है और प्रमाण नहीं है। सौंदर्य के लिए कोई प्रमाण नहीं है; है और प्रमाण नहीं है।

अगर वृक्षों के सौंदर्य को देखना हो तो कला की आंख चाहिए और कोई प्रमाण नहीं है। अगर किसी के प्रेम को पहचानना हो तो प्रेमी का हृदय चाहिए और कोई प्रमाण नहीं है।

और परमात्मा तो इस जगत के सारे सौंदर्य और सारे प्रेम और सारे सत्य का इकट्ठा नाम है। उसके लिए तो ऐसा निर्विकार चित्त चाहिए, ऐसा साक्षी– भाव चाहिए, जहां कोई शब्द न रह जाये, कोई विचार न रह जाये, कोई तरंग न उठे। वहां कोई धूल न रह जाये मन की और चित्त का दर्पण परिपूर्ण शुद्ध हो! प्रमाण कहां?

रामकृष्ण से विवेकानंद ने कहा : प्रमाण चाहिए। है परमात्मा तो प्रमाण दें।

और विवेकानंद को देखा रामकृष्ण ने। बड़ी थी संभावनाएं इस युवक की। बड़ी थी यात्रा इसके भविष्य की। बहुत कुछ होने को पड़ा था इसके भीतर। बड़ा खजाना था, उससे यह अपरिचित है। रामकृष्ण ने देखा, इस युवक के पिछले जन्मों में झांका। यह बड़ी संपदा, बड़े पुण्य की संपदा ले कर आ रहा है। यह ऐसे ही तर्क में दबा न रह जाये। कराह उठा होगा पीड़ा और करुणा से रामकृष्ण का हृदय।

उन्होंने कहा, 'छोड़, प्रमाण वगैरह बाद में सोच लेंगे। मैं जरा बूढ़ा हुआ, मुझे पढ़ने में अड़चन होती है। तू अभी जवान, तेरी आंख अभी तेज यह किताब पड़ी है, इसे तू पढ़।वह थी अष्टावक्र गीता।' जरा मुझे सुना दे।'

CamScanner

8:13 pm 53%

देखो पीछे लौटकर इतिहास में। महावीर और बुद्ध जैसे त्यागी गरीब घरों में पैदा नहीं होते; हो नहीं सकते। क्योंकि सुख से ऊब पैदा होनी चाहिये, तब त्याग होता है। बुद्ध के जीवन में इतना सुख है कि उस सुख का स्वाद मर गया। जिसने रोज सुस्वादु भोजन किये हों, तो स्वाद मर जाए। कभी-कभी उपवास जरूरी है भूख का रस लेने के लिये। अगर भूख का मौका ही न मिले और रोज उत्सव चलता रहे घर में, और मिष्ठान्न बनते रहें तो जल्दी ही स्वाद मर जाएगा। भूख ही मर जाएगी।

इसलिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि गरीबों के धार्मिक उत्सव सदा भोजन के उत्सव होते हैं। और अमीरों के धार्मिक उत्सव सदा उपवास के होते हैं। अगर जैनों का धार्मिक पर्व उपवास का है, तो उसका अर्थ है। लेकिन एक मुसलमान, एक गरीब हिंदू–जब उसका धार्मिक दिन आता है तो ताजे और नये कपड़े पहनता है। अच्छे से अच्छा भोजन बनाता है। हलवा और पूड़ी उस दिन बनाता है। वह धार्मिक दिन है। जिसके तीन सौ चौंसठ दिन भूख से गुजरते हों, उसका धार्मिक दिन उपवास का नहीं हो सकता। होना भी नहीं चाहिये; वह अन्याय हो जाएगा। लेकिन जो तीन सौ चौंसठ दिन उत्सव मनाता हो भोजन का, उसका धार्मिक दिन उपवास का ही होना चाहिये।

हम अपने स्वाद को विपरीत से पाते हैं। इसलिए जब जैनों का पर्युषण होता है, तभी पहली दफा उन्हें भूख का अनुभव होता है। और पर्युषण के बाद पहली दफा दो चार दिन खाने में मजा आता है, और खाने के संबंध में सोचने में मजा आता है। और पर्युषण के दिनों में ही सपने देखते हैं वे खाने के, बाकी दिन नहीं देखते क्योंकि सपनों की कोई जरूरत नहीं है। बाकी दिन वे सलाह लेते हैं चिकित्सक से कि भूख मर गई है।

ओशो

CamScanner

8:10 pm 53%

उस वेश्या की समझ में कुछ न आया। क्योंकि वासना तो बिलकुल अंधी है, वह कुछ नहीं समझ पाती। करुणा के पास आंखें हैं, वासना के पास कोई आंखें नहीं हैं। लोग कहते हैं, प्रेम अंधा है। वह जो प्रेम वासना से भरा है, निश्चित ही अंधा है। बीस वर्ष बाद, अंधेरी रात है अमावस की। और एक स्त्री पड़ी है गांव के बाहर और तड़प रही है। क्योंकि गांव ने उसे बाहर फेंकदिया। वह कोढ़ ग्रस्त हो गई।

यह वही वेश्या है, जिसके द्वार पर सम्राट दस्तक देते थे। अब दस्तक देने का तो कोई सवाल नहीं है। अब उसके शरीर से बदबू आती है। उस अंधेरी रात में सिर्फ एक भिक्षु उसके सिर के पास बैठा हुआ है। वह करीब-करीब बेहोश पड़ी है। बीच-बीच में उसे थोड़ा-सा होशआता है,

तो भिक्षु कहता है, 'सुन, मैं आ गया! अब भीड़ जा चुकी है।
अब कोई तेरा चाहने वाला न रहा। लेकिन मैं तुझे अब भी चाहता हूं। और मैं कुछ तुझे देना चाहता हूं, कोई सूत्र, जो जीवन को निश्चित ही तृप्ति से भर देता है। उस दिन तूने मांगा था, लेकिन उस दिन तू ले न पाती। और जो तू मांगती थी, वह देने योग्य नहीं है। प्रेम उसे नहीं दे सकता है।'

बौद्ध कहते हैं इस कथा के संबंध में, कि वह भिक्षुणी, वह जो स्त्री थी, वह उस रात दीक्षित हुई। भिक्षुणी की तरह मरी। और परम तृप्त मरी। और बौद्ध कहते हैं कि वह बुद्धत्व को उपलब्ध हुई। इसने उसे ध्यान दिया। प्रेम ध्यान ही दे सकता है। क्योंकि उससे बड़ा देने योग्य कुछ भी नहीं।
OSHO💞💞💞💞💞

Osho Prem Naman 🙏💞
Osho international

CamScanner

8:10 pm VoLTE 4G R 53%

एक बौद्ध भिक्षु रास्ते से गुजर रहा है। सुंदर है। एक वेश्या ने उसे रास्ते से गुजरते देखा। और उन दिनों वेश्या बड़ी बहुमूल्य बात थी। इस मुल्क में उन दिनों बिहार में, बुद्ध के दिनों में जो नगर में सबसे सुंदर युवती होती, वही वेश्या हो सकती थी। एक समाजवादी धारणा थी वह। वह धारणा यह थी कि इतनी सुंदर स्त्री एक व्यक्ति की नहीं होनी चाहिए।

इसलिए इसको पत्नी नहीं बनने देंगे। इतनी सुंदर स्त्री सबकी ही हो सकती है। इसलिए वह नगर-वधू कही जाती थी। और नगर-वधू का सौभाग्य श्रेष्ठतम स्त्रियों को मिलता था। यह नगर-वधू थी, और उसने अपने महल से नीचे झांककर देखा, और यह शानदार भिक्षु अपनी मस्ती में चला जा रहा है।

वह मोहित हो गई। वह भागी। उसने जाकर भिक्षु का चीवर पकड़ लिया। और कहा कि 'रुको। सम्राट मेरे महल पर दस्तक देते हैं, लेकिन सभी को मैं मिल नहीं पाती; क्योंकि समय की सीमा है। यह पहला मौका है, मैं किसी के द्वार पर दस्तक दे रही हूं। तुम आज रात मेरे पास रुक जाओ।'

भिक्षु संत ही रहा होगा। उसकी आंखों में आंसू आ गए। उस वेश्या ने पूछा कि 'आंख में आंसू?'उसने कहा, 'इसीलिए कि तुम जो मांगती हो, वह मांगने जैसा भी नहीं है। तुम्हारे अज्ञान को, तुम्हारे अंधेरे को देखकर पीड़ा होती है। आज तो तुम युवा हो, सुंदर हो। अगर मैं न भी रुका आज रात तुम्हारे घर, तो कुछ बहुत अड़चन न होगी।

बहुत युवक प्यासे हैं तुम्हारे पास रुकने को। लेकिन जब कोई तुम्हारे द्वार पर न आए, तब मैं आऊंगा।' यह संत का व्यवहार है। मना नहीं किया उसने, कि मैं नहीं आता। उसने कहा,
मैं आऊंगा, लेकिन अभी तो बहुत बाजार पड़ा है। अभी मेरी कोई जरूरत भी नहीं है। लेकिन जिस दिन कोई न होगा...ज्यादा देर न लगेगी, यह भीड़ छंट जाएगी। आज सुंदर हो, कल कुरूप हो जाओगी,गांव के बाहर फेंक देंगे। और जिस दिन कोई न होगा, उस दिन मैं आऊंगा। मुझे भी तुमसे प्रेम है, लेकिन प्रेम प्रतीक्षा कर सकता है।

उस वेश्या की समझ में कुछ न आया। क्योंकि वासना तो बिलकुल अंधी

CS CamScanner

8:03 pm 54%

Posts

Satguru Osho · **Joined**
Sachin Gupta · 4d ·

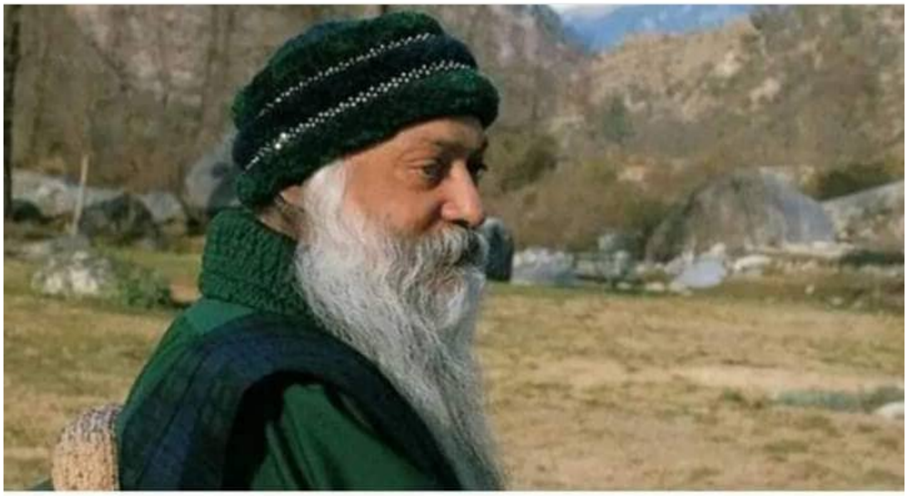

खुद से बहस करोगे तो सारे सवालों के
जवाब मिल जाएंगे, अगर
दूसरों से करोगे तो नए सवाल खड़े हो जाएंगे..

आचार्य रजनीश

Like Comment Send Share

2

Seen by 5

Write a public comment...

CamScanner

CamScanner

10:41 pm 38%

तुम अपने जीवन की प्रत्येक क्रिया को तीन में बांट सकते हो। ध्यान रखना, यंत्र में ही मत मर जाना। अधिक लोग यंत्र की तरह ही जीते, यंत्र की तरह ही मर जाते। बहुत थोड़े--से धन्यभागी मांत्रिक हो पाते हैं--कवि, संगीतज्ञ, नर्तक। बहुत थोड़े--से लोग! और वे भी बहुत थोड़े--से क्षणों में, चौबीस घंटे नहीं। चौबीस घंटे तो वे भी यांत्रिक होते हैं। कभी-कभी किसी क्षण में, किसी पुलक में, जरा--सा द्वार खुलता, जरा--सा झरोखा खुलता और उस तरफ का जगत झांकता; उस आयाम का प्रवेश होता। क्षण भर को एक कविता लहर जाती, फिर द्वार बंद हो जाते हैं।

फिर बहुत विरले लोग हैं-'कृष्ण और बुद्ध और अष्टावक्र--बहुत विरले लोग हैं, करोड़ों में कभी एक होता, जो तांत्रिक रूप से जीता। जिसका प्रतिपल दो आकाशों का मिलन है--प्रतिपल! सोते, जागते, उठते, बैठते जो भी उसके जीवन में हो रहा है, उसमें अंतर और बाहर मिल रहे हैं, परमात्मा और प्रकृति मिल रही है, संसार और निर्वाण मिल रहा है। परम मिलन घट रहा है। परम उत्सव हो रहा है। रसो वै सः। वैसी ही अवस्था में किसी ने कहा है, परमात्मा रसरूप है। महोत्सव हो रहा है। तो तुम अपनी प्रत्येक क्रिया को यात्रिक से तांत्रिक तक पहुंचाना।

ओशो, अष्टावक्र : महागीता--(भाग-6)--प्रवचन--78

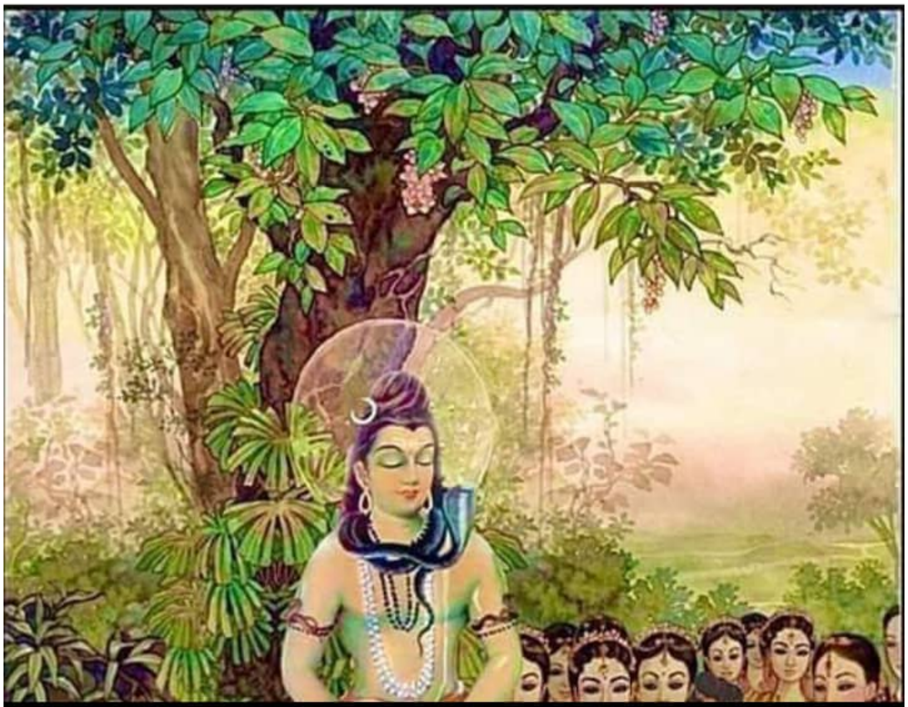

CamScanner

10:41 pm • VoLTE 4G R 38%

फिर कोई व्यक्ति बड़े मनोभाव से.. किसी ने बड़े प्रेम से भोजन बनाया है। तुम्हारी मां ने बड़े प्रेम से भोजन बनाया है, कि तुम्हारी पत्नी दिन भर तुम्हारी प्रतीक्षा की है, ऐसा अपमान तो न करो उसका! इतने भाव से बनाये गये भोजन का ऐसा तिरस्कार तो न करो कि तुम खाते-बही कर रहे हो, कि तुम भीतर-भीतर गणित बिठा रहे हो, कि तुम यहां हो ही नहीं।

कोई मन से भोजन करता है तो भोजन भी मांत्रिक हो जाता है। तब सब हटा दिया। कहीं और नहीं, यहीं है। बड़े मनोभावपूर्वक, बड़ी तल्लीनता से, बड़े ध्यानपूर्वक, बड़ी अभिरुचि से, स्वाद से, सम्मान से।

और कोई ऐसा भी भोजन करता जो आध्यात्मिक। उपनिषद कहते हैं, अन्न ब्रह्म-अन्न ब्रह्म है। यह ऋषियों ने भोजन भी आध्यात्मिक ढंग से किया होगा-'तांत्रिक। क्योंकि भोजन भी वही है। हम उसी को तो पचाते हैं। हम भोजन में उसी का तो स्वाद लेते हैं। भोजन में वही तो हमारे भीतर जाकर जीवन का नवसंचार करता, नये रस से भरता, पुनरुज्जीवित करता। जो मुर्दा कोष्ठ हैं उन्हें बाहर फेंक देता, नये जीवित कोष्ठ निर्मित कर देता। तो परमात्मा भोजन से भीतर आता है-'तांत्रिक।

ऐसे तुम समझो प्रत्येक क्रिया तीन तल पर है। कोई आदमी रास्ते पर घूमने गया और हजार-हजार विचारों में उलझा--यांत्रिक। कोई रास्ते पर घूम रहा, विचारों में उलझा हुआ नहीं। सुबह की हवा उसे छूती, संवेदनशील, सुबह का सूरज अपनी किरणें बरसात।, पक्षी गुनगुनाते। वह इन सबको सुन रहा मंत्रमुग्ध। मस्ती में जा रहा--मांत्रिक। और फिर कोई ऐसे भी जा सकता है कि हर हवा का झोंका परमात्मा का झोंका मालूम पड़े। और हर किरण उसकी ही किरण मालूम पड़े। और हर पक्षी की गुनगुनाहट उसके ही वेदों का उच्चार, उसके ही कुरान का अवतरण--तो तांत्रिक।

तुम अपने जीवन की प्रत्येक क्रिया को तीन में बांट सकते हो। ध्यान रखना, यंत्र में ही मत मर जाना। अधिक लोग यंत्र की तरह ही जीते, यंत्र की तरह ही मर जाते। बहुत थोड़े--से धन्यभागी मांत्रिक हो पाते हैं--कवि, संगीतज्ञ, नर्तक। बहुत थोड़े--से लोग! और वे भी बहुत थोड़े--से क्षणों में, चौबीस घंटे नहीं। चौबीस घंटे तो वे भी यांत्रिक होते

CamScanner

10:41 pm • VoLTE 4G R 38%

तीसरा प्रश्न :

तंत्र को आपने कहा, आकाश से आकाश में उड़ान...।
क्या यही तंत्र का मूल स्वर है? इसमें जीवन का परम स्वीकार किस भांति समाहित है? कृपा करके समझायें।

मैंने कहा, अक्षर से क्षर की यात्रा यंत्र क्षर से अक्षर की यात्रा मंत्र अक्षर से अक्षर की यात्रा तंत्र देह है यंत्र। दो देहों के बीच जो संबंध होता है वह है यांत्रिक। सेक्स यांत्रिक है। कामवासना यांत्रिक है। दो मशीनों के बीच घटना घट रही है। मन है मंत्र। मंत्र शब्द मन से ही बना है। जो मन का है वही मंत्र। जिससे मन में उतरा जाता है वही मंत्र। जो मन का मौलिक सूत्र है वही मंत्र। मन और मंत्र की मूल धातु एक ही है।

तो देह है यंत्र। देह से देह की यात्रा यांत्रिक-कामवासना, सेक्स। मन है मंत्र। मन से मन की यात्रा मांत्रिक। जिसको तुम साधारणत: प्रेम कहते हो--दो मनों के बीच मिल जाना। दो मनों का मिलन। दो मनों के बीच एक संगीत की थिरकन। दो मनों के बीच एक नृत्य। देह से ऊपर है। देह है भौतिक, मंत्र है मानसिक, मनोवैज्ञानिक, सायकॉलॉजिकल। और आत्मा है तंत्र। दो आकाशों का मिलन। अक्षर से अक्षर की यात्रा। जब दो आत्मायें मिलती हैं तो तंत्र--न देह, न मन। तंत्र ऊंचे से ऊंची घटना है। तंत्र परम घटना है।

तो इससे ऐसा समझो देह--यंत्र, सेक्यूअल, शारीरिक।
मन--मंत्र, सायकॉलॉजिकल, मानसिक।
आत्मा--तंत्र, कॉस्मिक, आध्यात्मिक।
ये तीन तल हैं तुम्हारे जीवन के। यंत्र का तल, मंत्र का तल, तंत्र का तल।
इन तीनों को ठीक से पहचानो। और तुम्हारे हर काम तीन में बंटे हैं।

कोई व्यक्ति भोजन करता यंत्रवत। न उसे स्वाद का पता है, न वह भोजन करते वक्त भोजन कर रहा है; डाल रहा है किसी तरह। हिसाब लगा रहा है दुकान का, ग्राहकों से बात कर रहा है, हिसाब-किताब, बही-खाते कर रहा है भीतर, इधर भोजन डाले जा रहा है। यह भोजन हुआ यांत्रिक। तो भोजन भी यंत्रवत हो गया।

CamScanner

मैंने सुना है, काफ्का ने एक छोटी सी कहानी लिखी है। उसने एक कहानी लिखी है कि एक बड़ा सर्कस है, और उस बड़े सर्कस में बहुत तरह के लोग हैं, और बहुत तरह के खेल तमाशे हैं। उस सर्कसवाले ने एक फास्ट करनेवाले को, उपवास करनेवाले को भी इकट्ठा कर लिया है। वह उपवास करने का प्रदर्शन करता है। उसका भी एक झोपड़ा है। सर्कस में और बहुत चीजों को लोग देखने आते हैं— जंगली जानवरों को देखते हैं, अजीब—अजीब जानवर हैं। इस अजीब आदमी को भी देखते हैं। यह महीनों बिना खाने के रह जाता है। वह तीन—तीन महीने तक बिना खाने के रहकर उसने दिखलाया है। निश्चित ही, उसको भी लोग देखने आते हैं। लेकिन कितनी बार देखने आएं? एक गांव में सर्कस छह —सात महीने रुका। महीने—पंद्रह दिन लोग उसको देखने आए। फिर ठीक है, अब भूखा रहता है तो रहता है। कब तक लोग देखने आएंगे? सर्कस है, साधु—संन्यासी हैं, इसलिए इनको गांव बदलते रहना चाहिए। एक ही गांव में ज्यादा दिन रहे तो बहुत मुश्किल हो। वे कितने दिन तक लोग आएंगे? इसलिए दों—तीन दिन में गांव बदल लेने से ठीक रहता है। दूसरे गांव में फिर लोग आ जाते हैं। दूसरे गांव में फिर लोग आ जाते हैं। उस गांव में सर्कस ज्यादा दिन रुक गया। लोग उसको देखने आना बंद कर दिए। उसकी झोपड़ी की फिकर ही भूल गए। वह इतना कमजोर हो गया था कि मैनेजर को जाकर खबर भी नहीं कर पाया, उठ भी नहीं सकता था, पड़ा रहा, पड़ा रहा, पड़ा रहा—बड़ा सर्कस था, लोग भूल ही गए। चार महीने, पांच महीने हो गए, तब अचानक एक दिन पता चला कि भई, उस आदमी का क्या हुआ जो उपवास किया करता था?

तो मैनेजर भागा कि वह आदमी मर न गया हो। उसका तो पता ही नहीं है! जाकर देखा तो वह जिस घास की गठरी में पड़ा रहता था वहां घास ही घास था, आदमी तो था नहीं। आवाज दी! उसकी तो आवाज नहीं निकलती थी। घास को अलग किया तो वह बिलकुल हड्डी—हड्डी रह गया था। आंखें उसकी जरूर थीं।

मैनेजर ने पूछा कि भई, हम भूल ही गए, क्षमा करो! लेकिन तुम कैसे पागल हो, अगर लोग नहीं आते थे, तो तुम्हें खाना लेना शुरू कर देना चाहिए था! उसने कहा कि लेकिन अब खाना लेने की आदत ही छूट गई है; भूख ही नहीं लगती। अब मैं कोई खेल नहीं कर रहा हूं अब तो खेल करने में फंस गया हूं। कोई खेल नहीं कर रहा, लेकिन अब भूख ही नहीं है। अब मैं जानता ही नहीं कि भूख क्या है। भूख कैसी चीज है वह मेरे

2:43 pm VoLTE 4G R 51%

पागल हो, अगर लोग नहीं आते थे, तो तुम्हें खाना लेना शुरू कर देना चाहिए था! उसने कहा कि लेकिन अब खाना लेने की आदत ही छूट गई है; भूख ही नहीं लगती। अब मैं कोई खेल नहीं कर रहा हूं अब तो खेल करने में फंस गया हूं। कोई खेल नहीं कर रहा, लेकिन अब भूख ही नहीं है। अब मैं जानता ही नहीं कि भूख क्या है। भूख कैसी चीज है वह मेरे भीतर होती ही नहीं।

क्या हो गया इस आदमी को? लंबी भूख व्यवस्था से की जाए तो भूख मर जाती है। परमात्मा की भूख को हम जगने नहीं देते। क्योंकि परमात्मा से ज्यादा डिस्टरबिंग फैक्टर कुछ और नहीं हो सकता है। इसलिए हमने इंतजाम किया हुआ है। हम बड़ी व्यवस्था से, प्लान से रोके हुए हैं सब तरफ से कि वह कहीं से भीतर न आ जाए। अन्यथा हर आदमी प्यास लेकर पैदा होता है। और अगर उसे जगाने की सुविधा दी जाए, तो धन की प्यास, यश की प्यास तिरोहित हो जाएं, वही प्यास रह जाए।

आत्मिक प्यास से क्रांति:

और भी एक कारण है कि या तो परमात्मा की प्यास रहे और या फिर दूसरी प्यासे रहें, सब साथ नहीं रह सकतीं। इसलिए इन प्यासों को—धन की, यश की, काम की—इन प्यासों को बचाने के लिए परमात्मा की प्यास को रोकना पड़ा है। अगर उसकी प्यास जगेगी, तो वह सभी को तिरोहित कर लेगी, अपने में समाहित कर लेगी। वह अकेली ही रह जाएगी।

परमात्मा बहुत ईर्ष्यालु है। वह जब आता है तो बस अकेला ही रह जाता है, फिर वह किसी को टिकने नहीं देता वहां। जब वह आपको अपना मंदिर बनाएगा तो वहां छोटे—मोटे देवी—देवता और न टिकेंगे, कि कई रखे हुए हैं हनुमान जी भी वहीं विराजमान हैं, और देवी—देवता भी विराजमान हैं, ऐसा परमात्मा न टिकने देगा। जब वह आएगा तो सब देवी—देवताओं को बाहर कर देगा। वह अकेला ही विराजमान हो जाता है। बहुत ईर्ष्यालु है।

🌹ओशो

Osho Prem Naman 🙏💞

Osho international

CamScanner

2:44 pm 51%
Like Comment Share

कबीर दास जी महाराज
RamNiwas Raigar · 1d ·

मोको कहाँ ढूंढ़े बन्दे मैं तो तेरे पास में॥

ना तीरथ में ना मूरत में, ना एकान्त निवास में।
ना मंदिर में ना मस्जिद में, ना काशी कैलाश में॥
मोको कहाँ ढूंढ़े बन्दे मैं तो तेरे पास में॥
ना मैं जप मे ना मैं तप में, ना मैं व्रत उपवास में।
ना मैं क्रियाकर्म में रहता, ना ही योग सन्यास ॥
मोको कहाँ ढूंढ़े बन्दे मैं तो तेरे पास में॥

नहिं प्राण में नहिं पिण्ड में, ना ब्रह्मांड आकाश में।
ना मैं भृकुटी भंवर गुफा में, सब श्वासन की श्वास में॥
मोको कहाँ ढूंढ़े बन्दे मैं तो तेरे पास में॥

खोजि होय तो तुरंत मिलिहौं, पल भर की तलाश में।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, मैं तो हूं विश्वास में॥
मोको कहाँ ढूंढ़े बन्दे मैं तो तेरे पास में॥

- कबीर

316 27 comments • 78 shares
Like Comment Send Share

Osho international is at **OSHO International Meditation Resort**.
22h ·

तृप्ति के द्वारा अध्यात्म में प्रवेश,,,,,,

एक मित्र मेरे पास आए। वृद्ध हैं। रो रहे थे। बड़े भाव से ... See more

CamScanner

2:45 pm VoLTE 4G R 50%

तृप्ति के द्वारा अध्यात्म में प्रवेश,,,,,,

एक मित्र मेरे पास आए। वृद्ध हैं। रो रहे थे। बड़े भाव से भरे थे। रोकर कह रहे थे कि मेरी कुंडलिनी अभी तक जगी नहीं। बीस वर्ष से भटक रहा हूं। न—मालूम कितने आश्रम, कितने गुरु, कितनी साधनाएं कर चुका हूं लेकिन कुंडलिनी नहीं जगी।

उनके भाव में कमी नहीं है, उनकी खोज में कमी नहीं है, लेकिन उनकी मौलिक दृष्टि गलत है। वे कुंडलिनी को ऐसे ही खोज रहे हैं, जैसे कोई धन को खोजता हो। और न मिले तो रोता हो। न मिले तो परेशान हो, पीड़ित हो, संतप्त हो। कुंडलिनी उनका लोभ बन गई है।

और ध्यान रहे, इस आंतरिक यात्रा की यही सबसे बड़ी कठिनाई है कि वहा लोभ के द्वारा कोई भी प्रवेश नहीं हो सकता। वहां तृप्ति के द्वारा प्रवेश है।

जो नहीं मिला है, उसकी फिक्र छोड़े; जो मिला है, उसका अनुग्रह मानें और प्रवेश बढ़ता जाएगा। लेकिन वे परेशान हैं। इस परेशानी से कुंडलिनी जाग्रत होने वाली नहीं है। उस परेशानी से ही रुकी है। बीस साल की खोज के कारण नहीं मिली, ऐसा नहीं है। बीस साल की खोज के कारण ही रुकी है। वह जो अति तनाव है पाने का, उसी से भीतर सब सिकुड़ गया है।

जहां पाने का तनाव रहेगा, वहां हम संसार में हैं। यह पाने की दौड़ संसार है। और न पाने के लिए राजी हो जाना, संसार से बाहर हटने लगना है।

एक आदमी धन के लिए दौड़ रहा है। एक आदमी पद के लिए दौड़ रहा है। एक आदमी यश के लिए दौड़ रहा है। और एक आदमी मोक्ष के लिए दौड़ रहा है। फर्क क्या है? कोई भी फर्क नहीं है। मोक्ष के लिए दौड़ा ही नहीं जा सकता। मोक्ष तो खड़े होने वाले को मिलता है।

धन के लिए दौड़ा जा सकता है, क्योंकि धन खड़े होने वाले को नहीं मिलता। दौड़ने वाले को भी नहीं मिल पाता है, तो खड़े होने वाले को तो

CamScanner

2:45 pm • VoLTE 4G R 50%

एक आदमी धन के लिए दौड़ रहा है। एक आदमी पद के लिए दौड़ रहा है। एक आदमी यश के लिए दौड़ रहा है। और एक आदमी मोक्ष के लिए दौड़ रहा है। फर्क क्या है? कोई भी फर्क नहीं है। मोक्ष के लिए दौड़ा ही नहीं जा सकता। मोक्ष तो खड़े होने वाले को मिलता है।

धन के लिए दौड़ा जा सकता है, क्योंकि धन खड़े होने वाले को नहीं मिलता। दौड़ने वाले को भी नहीं मिल पाता है, तो खड़े होने वाले को तो मिलने का कोई उपाय नहीं है। धन, पद, यश, सब दौड़े हैं। मोक्ष दौड़ नहीं है। मोक्ष ठहर जाना है, रुक जाना है।

एक साधिका ने आज ही मुझे आकर कहा कि अभी तक कोई अनुभव नहीं हो रहा है! अनुभव करना क्या है? प्रकाश दिखाई पड़ने लगे तो कुछ हो जाएगा? कि भीतर रंग दिखाई पड़ने लगें तो कुछ हो जाएगा? कि भीतर कोई सुगंध आने लगे तो कुछ हो जाएगा? या आपके हाथ से राख झड़ने लगे तो कुछ हो जाएगा न: कि ताबीज निकलने लगे तो कुछ हो जाएगा? कि आप बीमारों को छू दें और वे ठीक हो जाएं तो कुछ हो जाएगा? वह सब खेल संसार का है और मन का है।

अनुभव की तलाश लोभ है। उस तलाश को गिर जाने दें। अनुभव को नहीं चाहिए; अनुभोक्ता को। वह जो अनुभव करने वाला है, उसकी पहचान। अनुभव तो फिर भी पराए हैं, बाहर हैं। अध्यात्म अनुभव नहीं है। अध्यात्म, अनुभव जिसको होते हैं, उसके साथ एक हो जाना है। जिसके सामने प्रकाश आते है, और जिसके सामने सुगंधें तैरती हैं, और जिसके सामने रंगों की बहार आ जाती है और इंद्रधनुष फैल जाते हैं, और जिसके भीतर संगीत बजने लगता है...। लेकिन ये सब बाहर ही हैं। चाहे आंख बंद करके ये घटनाएं घट रही हों, तो भी बाहर हैं। इनको जानने वाला तो और भीतर है। जानने वाला हमेशा, जिसे भी जानता है, उससे भीतर है, पीछे है, पार है। और जब तक आप जानने वाले में न ठहर जाएं, तब तक अध्यात्म का कोई स्वाद आपको नहीं मिल सकता।

तो कोई बाहर का सेंसेशन खोज रहा है कि चलो फिल्म देखें, रेडियो सुने; कोई नायिका आई, कोई नर्तकी आई—उसको देखें। कोई बाहर का रूप—रंग खोज रहा है; कुछ भीतर के रूप—रंग खोज रहे हैं, कि चलो कुंडलिनी जगाएं, भीतर का प्रकाश देखें, कि भीतर का आनंद लें,

CamScanner

2:45 pm 50%
facebook

हो जाएगा? कि आप बीमारों को छू दें और वे ठीक हो जाएं तो कुछ हो जाएगा? वह सब खेल संसार का है और मन का है।

अनुभव की तलाश लोभ है। उस तलाश को गिर जाने दें। अनुभव को नहीं चाहिए; अनुभोक्ता को। वह जो अनुभव करने वाला है, उसकी पहचान। अनुभव तो फिर भी पराए हैं, बाहर हैं। अध्यात्म अनुभव नहीं है। अध्यात्म, अनुभव जिसको होते हैं, उसके साथ एक हो जाना है। जिसके सामने प्रकाश आते है, और जिसके सामने सुगंधें तैरती हैं, और जिसके सामने रंगों की बहार आ जाती है और इंद्रधनुष फैल जाते हैं, और जिसके भीतर संगीत बजने लगता है...। लेकिन ये सब बाहर ही हैं। चाहे आंख बंद करके ये घटनाएं घट रही हों, तो भी बाहर हैं। इनको जानने वाला तो और भीतर है। जानने वाला हमेशा, जिसे भी जानता है, उससे भीतर है, पीछे है, पार है। और जब तक आप जानने वाले में न ठहर जाएं, तब तक अध्यात्म का कोई स्वाद आपको नहीं मिल सकता।

तो कोई बाहर का संसेशन खोज रहा है कि चलो फिल्म देखें, रेडियो सुने; कोई नायिका आई, कोई नर्तकी आई—उसको देखें। कोई बाहर का रूप—रंग खोज रहा है; कुछ भीतर के रूप—रंग खोज रहे हैं, कि चलो कुंडलिनी जगाएं, भीतर का प्रकाश देखें, कि भीतर का आनंद लें, लेकिन खोज वही है कि कुछ संसेशन, कोई उत्तेजना। दोनों ही अध्यात्म नहीं हैं।

अध्यात्म तो उसकी तलाश है, उस चैतन्य की, उस साक्षी— भाव की, जहा सब अनुभव समाप्त हो जाते हैं और केवल अनुभोक्ता रह जाता है। जहां सब दृश्य खो जाते हैं और केवल द्रष्टामात्र रह जाता है। जहा सब ज्ञेय समाप्त हो जाते हैं और मात्र ज्ञाता शेष रह जाता है। उस केवल— ज्ञान की, उस कैवल्य की खोज अध्यात्म है।
ओशो

Osho Prem Naman 🙏💞
Osho international

CamScanner

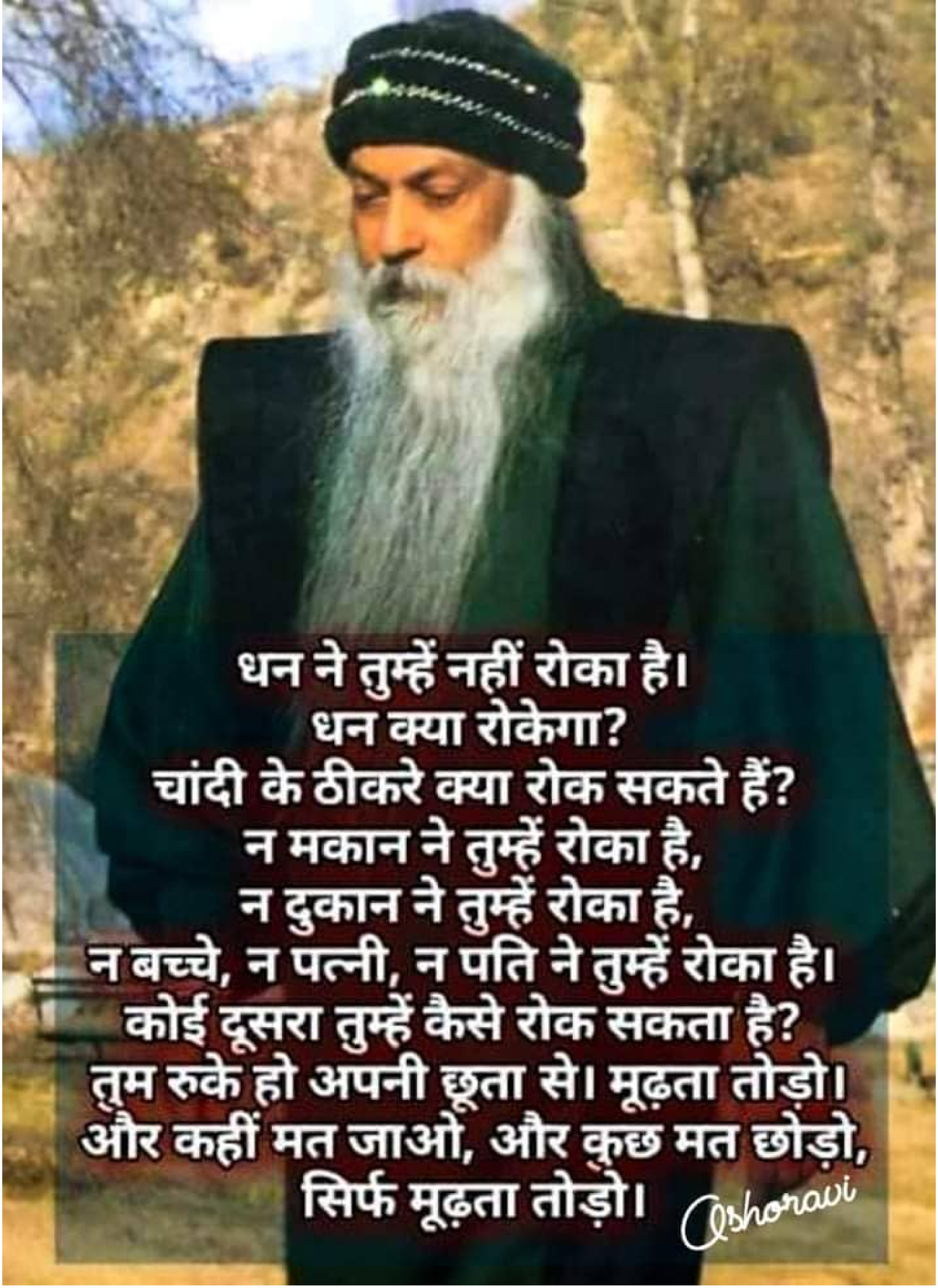
धन ने तुम्हें नहीं रोका है।
धन क्या रोकेगा?
चांदी के ठीकरे क्या रोक सकते हैं?
न मकान ने तुम्हें रोका है,
न दुकान ने तुम्हें रोका है,
न बच्चे, न पत्नी, न पति ने तुम्हें रोका है।
कोई दूसरा तुम्हें कैसे रोक सकता है?
तुम रुके हो अपनी मूढ़ता से। मूढ़ता तोड़ो।
और कहीं मत जाओ, और कुछ मत छोड़ो,
सिर्फ मूढ़ता तोड़ो।
Oshoravi

CamScanner

2:49 pm
VoLTE 4G R 50%

Osho leela Ashram
1d ·

बुद्ध खूब हैं, लेकिन कृष्ण के ओंठों पर रखी बांसुरी की कमी है। थोड़ा सा चूक रहा है। हो सकता है बुद्ध के भीतर वह पूरा भी है गया हो; लेकिन बुद्ध नाच नहीं सकते। उनकी सारी प्रक्रिया शून्यता की है, अहोभाव की नहीं। हो सकता है, भीतर वे आनंद को भी उपलब्ध हो गए हों, लेकिन वह आनंद उनके रोएं-रोएं से बहता नहीं। उसमें भी एक संयम मालूम पड़ता है। उसमें वे पागल होकर नाच नहीं उठते, बावले नहीं हो जाते।खयाल रखना--विचार, निर्विचार, फिर भाव। विचार से मुक्त होना है, निर्विचार को लाना है, ताकि भाव आ सके। और जब भाव आ जाए तो संकोच मत करना और डरना मत; और भयभीत न होना और संयम मत रखना। फिर नाचना अबाध! तभी जीवन परम उत्सव को उपलब्ध होना है। और जीवन की आखिरी घड़ी अगर उत्सव न हो सके, तो कहीं कुछ कमी रह गई। थोड़ी सी रह गई हो, लेकिन कमी रह गई।नाचते हुए तुम मृत्यु में जा सको तो ही आवागमन से छुटकारा है। तुम्हारा मंदिर तुम्हारा नृत्यगृह बन जाए और तुम्हारा ध्यान तुम्हारे भीतर अनाहत नाद को जगा दे। तुम्हारी विचार-शून्यता में ओंकार का विस्फोट हो। तुम शून्य बनो और पूर्ण का अतिथि तुम्हारे द्वार पर दस्तक दे। 🙏ओशो 🌹 कहै कबीर मैं पूरा पाया 🌹 14 🙏

Osho leela Ashram + 144 8 comments • 14 shares

CamScanner

2:50 pm VoLTE 4G R 50%

6d ·

अन्तर्यात्रा, ध्यान समर्पण
------------------------ॐ
सारा आनंद का खजाना स्वम के अंतर में छुपा है। बस उसे महा शून्य में पाने की जरूरत है। जागने की देर है।सवेरा तो पट खोलते ही हो जाएगा,जीवन होश पूर्वक जीने का नाम है। मुक्ति स्वतः अंतर में घट जाती है। जिसे तुम बाहर ढूंढ रहे हो। वो बाहर नही है वो आपके अन्तरात्मा में है। उसे महाशून्य में तरासने के जरूरत है।

मिट्टी का कोई रूप नही रंग नही खुश्बू नही होती। पर उसे भाव पूण रूप,रंग,और नाम के साथ तराश लिया जाता है तो श्रद्धा जाग जाती है। उस श्रद्धा की खुश्बू स्वम को तो आनंद से भर देती है पर दूसरों के अन्तरको भी परमात्मा के सुगंध से भर देती है।अंतर आत्मा भी इसी तरह है। इसी में वो दिव्यता का अंकुरण है जिससे तुम महाशून्य को पा आनंद से भर जाते हो। पत्थर(मन) जब राह रूपी सांसारिक क्रिया कलापों से की ठोकर खा रहा होता है।तो स्वम को तो चोट पहुंचा रहा होता है।आप दूसरों को भी दुख के भाव मे ले जाता है। पर जब उस राह के पत्थर को,सद गुरु रूपी जोहरी के ,ज्ञान के प्रकाश से काट छांट कर एक महा दिव्य मूर्ति का रूप दिया जाता है। तो उसकी सुगंध परमात्म की होती है।उस तेजोमय प्रकाश की होती है। जो जीवन को अनंदशुन्य में ले जाकर मुक्तिबोध को पा लेता है।सद गुरु का जीवन मे एना उतना ही जरूरी है। जितना अंधेरे में प्रकाश की। हर क्षण,हर स्थिति स्वम में स्थिति ,परम स्थिर,एक सांस की बात है। जो गई फिर बिसरा जाओगे। एक प्रकाश की बात है। पल में ही मुक्ति घटती है।पल में ही आनंद,पल में ही म्रत्यु।जो इस देह के रहते मृत्युं को अनुभव कर लिया उसे फिर कौन मार सका। अनंत से अनंत तक है ये परम आत्मा ।
अजन्मा,अजर,अमर,तत्व से उस परे।आत्म बिंदु में स्थिर फिर न जन्म का भय न मृतु का। न संसार का है
ओशो

Osho Prem Naman 🙏💞
Osho international

CamScanner

3:52 pm • VoLTE 4G R 45%

ओशो का हिन्दी साहित्य
Rahul Kumar Ojha · 21h ·

यूनान में एक बड़ा मूर्तिकार हुआ।
उसकी बड़ी दूर-दूर तक ख्याति थी।
दूर देशों तक उसका नाम और उसकी कीर्ति पहुँच गई थी।
उसकी मूर्तियाँ विश्व के सभी बाजारों में बिकी थीं,
और शायद ही कोई राजमहल हो जहाँ उसकी मूर्तियाँ न पहुँची हों।
बड़ी उसकी ख्याति थीं बड़ा उसका यश था।
यश और ख्याति में वह भूल ही गया था,
एक दिन मौत आ जाती है, और सब नष्ट हो जाता है।
एक दिन मौत आ गई।

मैंने कहा कहानी हैं...
सच्ची तो नहीं होती लेकिन कभी-कभी कहानियाँ ऐसे सत्य कह देती हैं,जो जीवन में भी उपलब्ध नहीं होतीं।
उसकी मौत आ गई। बड़ा कलाकार था, और बड़ा मूर्तिकार था।
आते हुए बुढ़ापे और मृत्यु को देख कर उसने सोचा,
मैं बचने का कोई उपाय करूँ। मौत से किस भांति बचूं!
एक सीधी सी बात जो उसे सूझ गई वह यह थी।
उसने अपनी ही ग्यारह मूर्तियाँ बना लीं,
और जिस दिन मौत उसके द्वार पर आई,
वह उन ग्यारह मूर्तियों में छिप कर खड़ा हो गया।
उसकी कुशलता इतनी अद्भुत थी कि यह तय करना मुश्किल था,
कि कौन मूर्ति है और कौन मूल!
असली आदमी कौन है उन बारह मूर्तियों में खोजना कठिन था।

मौत भीतर आई। मौत घबड़ा गई......
जिसको लेने आई थी, वैसे बारह लोग वहाँ मौजूद थे।
वह मूर्तिकार भी श्वांस बंद कर मूर्तियों के बीच मूर्ति बन कर खड़ा हो गया। पहचानना कठिन था, कौन असली है। एक को ले जाना था,
बारह को तो ले जाया नहीं जा सकता था। भूल करना उचित न था।
मौत वापस लौट गई। और उसने जाकर परमात्मा को पूछा,
कि वहाँ तो बारह लोग एक जैसे मौजूद हैं। मैं किसको लाऊँ?
और जो असली है उसका पता कैसे लगे?,

CamScanner

3:52 pm VoLTE 4G R 45%

मौत भीतर आई। मौत घबड़ा गई......
जिसको लेने आई थी, वैसे बारह लोग वहाँ मौजूद थे।
वह मूर्तिकार भी श्वांस बंद कर मूर्तियों के बीच मूर्ति बन कर खड़ा हो गया। पहचानना कठिन था, कौन असली है। एक को ले जाना था,
बारह को तो ले जाया नहीं जा सकता था। भूल करना उचित न था।
मौत वापस लौट गई। और उसने जाकर परमात्मा को पूछा,
कि वहाँ तो बारह लोग एक जैसे मौजूद हैं। मैं किसको लाऊँ?
और जो असली है उसका पता कैसे लगे?,
परमात्मा ने मौत के कान में कुछ कहा: जाकर इस सूत्र को बोल देना,
जो असली है वह बाहर निकल आएगा।मौत वापस लौटी।
उस मूर्तिकार के भवन में मूर्तिकार छिपा था अपनी मूर्तियों में।

मौत भीतर गई,
उसने एक-एक मूर्ति को गौर से देखा फिर अचानक वह बोली:
और सब तो ठीक है, एक थोड़ी सी भूल रह गई।
और जैसे ही उसने यह कहा: और तो सब ठीक है,
थोड़ी सी भूल रह गई, वह मूर्तिकार बोला, कौन सी भूल?
उस मृत्यु ने कहा: यही, कि तुम अपने को नहीं भूल सकते हो।
और नहीं भूल सकते हो कि तुमने इन मूर्तियों को बनाया। तुम हो।
इस बात को तुम नहीं भूल सकते हो, बाहर आ जाओ।
तुम पकड़ लिए गए, मौत ने तुम्हें चुन लिया है।

मूर्तियाँ बनाई थीं उस चित्रकार ने,
लेकिन एक बात वह नहीं भूल सकता था,कि मैंने बनाई मैं हूँ।
और मृत्यु से रास्ते में उसने पूछा कि अगर मैं यह भूल जाता,
कि मैं हूँ तो क्या होता? उस मृत्यु ने कहा:
मैं तुझे खोजने में असमर्थ हो जाती।
जो यह भूल जाता है कि मैं हूँ उसके लिए मृत्यु समाप्त हो जाती है।
मृत्यु उसे नहीं खोज पाती है। जो भूल जाता है कि मैं हूँ,
जिसे अहंकार विसर्जित हो जाता है,
वह अमृतत्व को उपलब्ध कर लेता है।
वह उसे पा लेता है जिसकी कोई मृत्यु नहीं।

*एक नया द्वार

CamScanner

यह तुम्हारा ही चुनाव है।
अगर परमात्मा तुम्हें नहीं मिलता,
तो इसमें परमात्मा को दोष मत देना,
तुमने उसे अभी चुना ही नहीं; क्योंकि जिन्होंने भी,
जब भी उसे चुना है, तत्क्षण वह मिल गया है-
-एक क्षण की भी वहां देरी नहीं है।
लेकिन अगर तुम्हीं न चाहो तो परमात्मा
तुम्हारे ऊपर जबरदस्ती नहीं करता;
सत्य तुम्हारे ऊपर जबरदस्ती आरूढ़ नहीं होता।
तुम्हें जन्मों-जन्मों तक सत्य को इंकार करने की
स्वतंत्रता है।

यही मनुष्य की गरिमा है,
यही मनुष्य का दुर्भाग्य भी।

ओशो

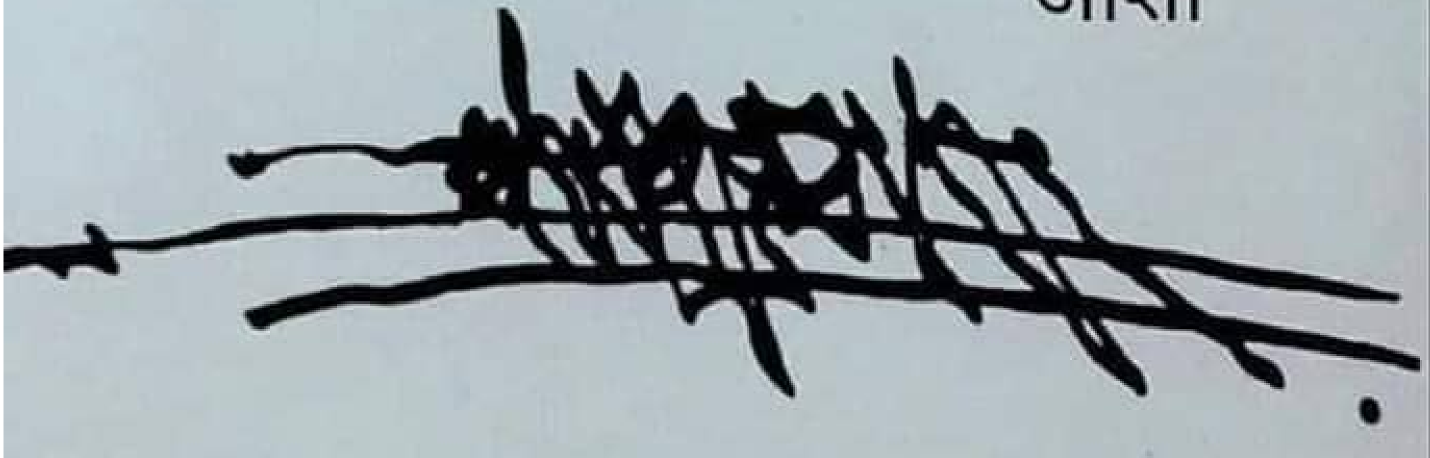

CamScanner

6:53 pm VoLTE 4G R 14%

अनलहक

शब्दभेद : संज्ञा स्त्रीलिंग

अनलहक का हिंदी अर्थ

- "मैं ही ख़ुदा हूँ"—ईरान के मशहूर सूफ़ी संत मंसूर बिन अल-हल्लाज की वह उक्ति जिसके लिए उसे सूली पर चढ़ा दिया गया।

आप ये रचनाएँ भी पढ़ सकते हैं

कविता से एक अंतरंग संवाद
शैलप्रिया

नमक
विपिन चौधरी

कवि और कच्चा रास्ता
देवेश पथ सारिया

कविता के लिए
स्नेहमयी चौधरी

हम कविता लिखते हैं
प्रमोद बेड़िया

विशेष

CamScanner

6:53 pm 14%

google.com/search?q=ai

Google

anhalak meaning in hindi

All Images Videos Shopping News Books

हिंदी में खोजें anhalak meaning in hindi

इसे सुनें

अनलहक सूफियों की एक इत्तला (सूचना) है जिसके द्वारा वे आत्मा को परमात्मा की स्थिति में लय कर देते हैं।

W https://hi.m.wikipedia.org › wiki

अनलहक - विकिपीडिया

About featured snippets Feedback

People also search for

Anhalak meaning in hindi in urdu

अनलहक' की बात किसने कही? मंसूर जायसी मंझन शम्स तबरेज़

अनलहक ki baat kisne kahi

मंसूर कौन था उसे क्यों मारा गया

CamScanner

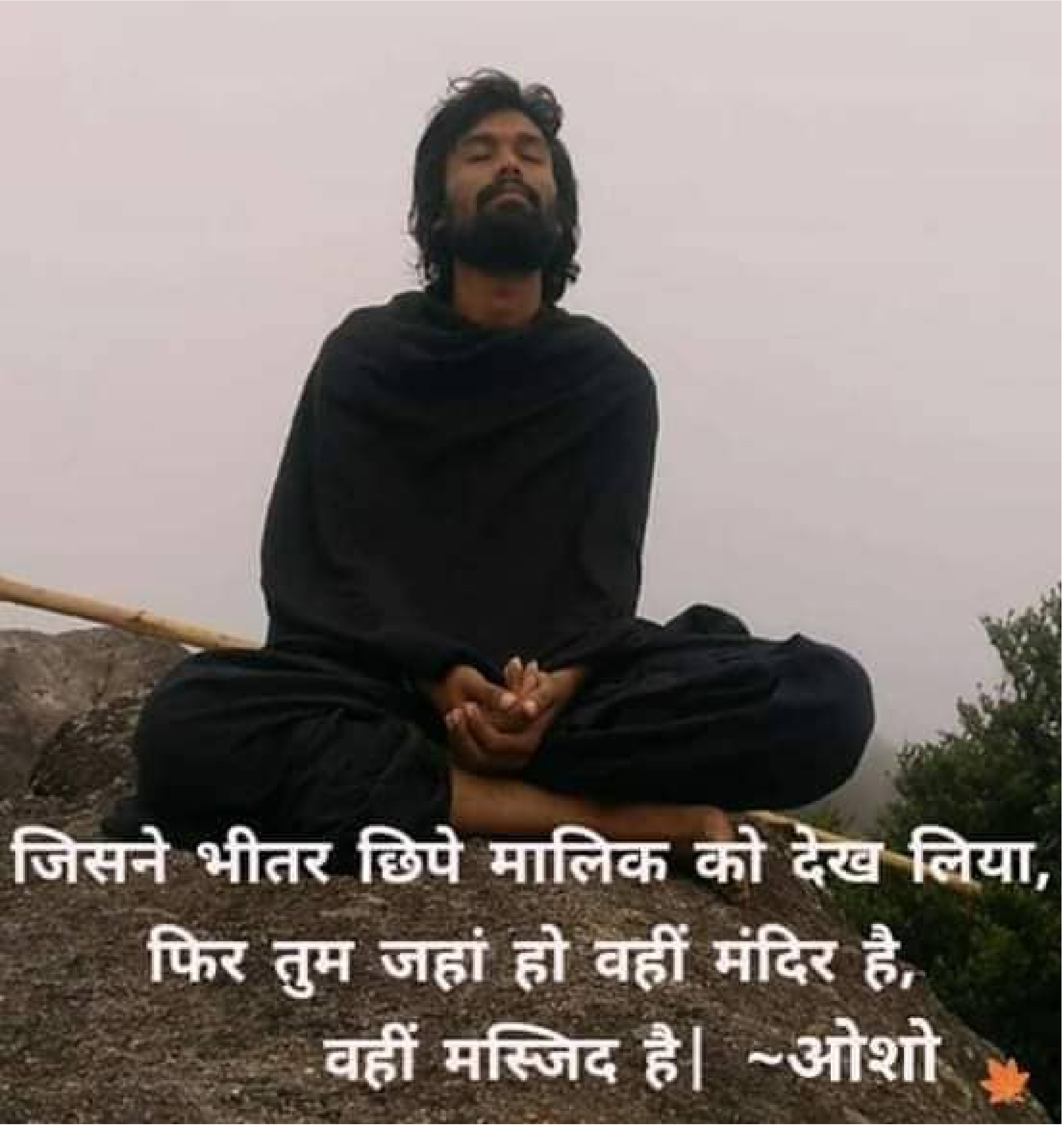

CamScanner

6:52 pm VoLTE 4G R 14%

तो गुरु के पास छह बार दस्तावेज लाई गई और गुरु ने कहा कि नहीं, मैं दस्तखत नहीं करूंगा। सातवीं बार खबर आई कि अगर अब गुरु दस्तखत न करे तो तब गुरु भी जिम्मेवार है। फिर वह भी हिस्सेदार है। तो गुरु को भी शर्म लगी कि अब सूफी का वेश पहने कैसे दस्तखत करूं? यह तो सूफी के वेश की भी बदनामी हो जायेगी। तो वह भूल गया भविष्यवाणी मंसूर की। उसने कहा, अगर इस पर मुझे दस्तखत करने हैं तो मैं मौलवी के कपड़े पहनकर ही दस्तखत कर सकता हूं। यह मौलवी को ही शोभा देता है इस तरह की मूढ़तापूर्ण बातें, सूफियों को नहीं शोभा देता। तो उसने कपड़ा अपना फेंक दिया, मौलवी के कपड़े पहने और दस्तखत किये।

और जब मंसूर को खबर मिली तो वह हंसा। उसने कहा, मैंने कहा था न! अब रंगा जायेगा खून से मेरे। अब तक नहीं रंगा जा सकता था। लेकिन यह कैसी बुरी दुनिया आ गई कि सूफी भी मौलवी के कपड़े पहनने लगे।

तांत्रिक स्वर का अर्थ होता है, तुम्हारे भीतर परमात्मा की उदघोषणा। शरीर तक तो तुम्हारा ही स्वर नहीं है। मंत्र में तुम्हारा स्वर है, तंत्र में परमात्मा का स्वर है। अक्षर से अक्षर तक की यात्रा।

ओशो, अष्टावक्र : महागीता (भाग-6) प्रवचन--78

CamScanner

6:52 pm 14%

तो मंसूर ने कहा, कोई जगह भी होगी ऐसी कि नहीं? कि मैं सभी जगह भटकाया जाऊंगा? किसी ने कहा कि तू ऐसा कर, एक बहुत बड़े फकीर हैं--पहुंचे हुए औलिया, पीर, उनके पास चला जा। तो वह वहां चला गया। लेकिन वहां भी अड़चन आनी शुरू हो गई। गुरु ने बहुत समझाया; बड़े प्रेम से समझाया कि मत बोल। इसको रखना हो तो भीतर रख, मगर इसको बोल मत, क्योंकि चारों तरफ दुश्मन हैं। उलझ जायेंगे।

उसने कहा कि मैं कोशिश करता हूं लेकिन एक ऐसी घड़ी आती है कि मैं तो होता ही नहीं, फिर कोशिश कौन करे? ऐसा बहुत बार गुरु ने समझाया लेकिन एक दिन नहीं माना मंसूर। और गुरु के सामने ही बैठा था, आंख बंद की और जोर से बोला, अनलहक! तो गुरु ने कहा, अब बहुत हो गया। तू मुझे झंझट में डाल देगा। जल्दी ही तेरे खिलाफ फतवा आयेगा। और गुरु ने कहा, देख मैं यह भविष्यवाणी करता हूं कि जल्दी ही लकड़ी का एक टुकड़ा तेरे खून से रंगा जायेगा, तेरी फांसी लगेगी। तो मंसूर ने कहा, फिर मैं भी एक भविष्यवाणी करता हूं कि जिस दिन खून से मेरे लकड़ी का टुकड़ा रंगा जायेगा उस दिन तुम्हें यह सूफी का वेश उतारकर मुल्ला का वेश पहनना पड़ेगा।

लोगों ने समझा ऐसे ही मजाक में वह कह रहा है। उसका कोई भरोसा भी नहीं करता था। वह आदमी ही कुछ अजीब था। लेकिन दोनों की भविष्यवाणियां पूरी हुईं। छह बार खलीफा के पास यह खबर पहुंचाई गई। बार-बार, छह बार खबर पहुंचाई गई कि मंसूर को फांसी दे दी जाये क्योंकि यह कुफ्र की बातें कह रहा है। यह इस्लाम के खिलाफ है। लेकिन खलीफा ने कहा, अगर ऐसा हो तो उसके गुरु का दस्तखत चाहिए। अगर गुरु भी कह दे कि इस्लाम के खिलाफ है, तो ठीक।

तो गुरु के पास छह बार दस्तावेज लाई गई और गुरु ने कहा कि नहीं, मैं दस्तखत नहीं करूंगा। सातवीं बार खबर आई कि अगर अब गुरु दस्तखत न करे तो तब गुरु भी जिम्मेवार है। फिर वह भी हिस्सेदार है। तो गुरु को भी शर्म लगी कि अब सूफी का वेश पहने कैसे दस्तखत करूं? यह तो सूफी के वेश की भी बदनामी हो जायेगी। तो वह भूल गया भविष्यवाणी मंसूर की। उसने कहा, अगर इस पर मुझे दस्तखत करने हैं तो मैं मौलवी के कपड़े पहनकर ही दस्तखत कर सकता हूं। यह

CamScanner

#मंसूर के जीवन में बड़ी मजेदार घटना है। मंसूर पहले एक सूफी फकीर के पास था। और जब मंसूर की यह तांत्रिक घटना घटी--मंत्र तक तो ठीक थी, क्योंकि मंत्र तक तो सभी धर्म आशा देते हैं कि ठीक है। तंत्र की मुश्किल खड़ी हो जाती है, क्योंकि तंत्र की घोषणा बड़ी अनूठी है।

जब तक मंसूर मंत्र साध रहा था तब तक तो गुरु राजी था। लेकिन जब अनलहक--सी ये घोषणायें उठने लगीं--मैं ईश्वर हूं मैं सत्य हूं तो गुरु ने कहा सुन, तू झंझट में पड़ेगा, हमको भी झंझट में डालेगा--गुरु कुछ बड़ा गहरा गुरु न रहा होगा--तू यहां से जा, या बंद कर। इस तरह के वचन बोलना बंद कर। लेकिन मंसूर ने कहा, मैं बोलता हूं तो बंद कर दूं। यह जो बोल रहा है, वह जाने। मैं तो, जब भी भीतर मेरे तार जुड़ जाते हैं तो बस, फिर मैं नहीं जानता क्या हो रहा है। फिर तुम मुझसे कहो ही मत। अपनी तरफ से कोशिश करूंगा, लेकिन मेरी कोशिश मंत्र तक जाती है। जब तक मैं दोहराता हूं कुछ, तब तक ठीक है। लेकिन एक ऐसी घड़ी आती है कि मैं तो होता ही नहीं, फिर कौन मेरे भीतर बोलता है उसके लिए मैं कैसे जिम्मेवार?

तो गुरु ने कहा, तू यहां से जा, नहीं तो हम फंसेंगे। क्योंकि यह बात मुसलमान देशों में तो बड़ी कुफ्र की है कि कोई आदमी कह दे, 'मैं ईश्वर।' वे तो बरदाश्त नहीं कर सकते। यह तो बात ही गलत हो गई। इस्लाम धर्म मंत्र के ऊपर नहीं बढ़ सका। मंसूर जैसे लोग उसे ले जाते तंत्र तक लेकिन नहीं ले जाने दिया। सूफी छिप-छिप कर करने लगे अपनी साधनायें क्योंकि प्रगट होकर फांसी लगने लगी। तो मंसूर दूसरे गुरु के पास गया। कुछ दिन रहा, फिर उस गुरु ने भी कहा कि भाई तू जा, क्योंकि सिलसिला बिगड़ रहा है। खलीफा तब खबर पहुंच गई है। और पुरोहित तेरे खिलाफ फतवा देनेवाला है। और तेरे साथ हम भी फंसेंगे।

तो मंसूर ने कहा, कोई जगह भी होगी ऐसी कि नहीं? कि मैं सभी जगह भटकाया जाऊंगा? किसी ने कहा कि तू ऐसा कर, एक बहुत बड़े फकीर हैं--पहुंचे हुए औलिया, पीर, उनके पास चला जा। तो वह वहां चला गया। लेकिन वहां भी अड़चन आनी शुरू हो गई। गुरु ने बहुत समझाया; बड़े प्रेम से समझाया कि मत बोल। इसको रखना हो तो भीतर रख, मगर इसको बोल मत, क्योंकि चारों तरफ दुश्मन हैं। खलीफा

प्रहलाद जानी

1929 में योगी प्रहलाद जानी का हुआ था जन्म

१२ वर्ष की आयु में अपनाया वैराग्य का जीवन

सात दशकों तक नहीं किया भोजन और न ही पिया पानी

वर्षो तक मूत्रत्याग और शौच भी नहीं गए प्रहलाद जानी

दुनियाभर के वैज्ञानिकों के लिए अंत तक बने रहे अनसुलझी पहेली

वैज्ञानिकों ने कई बार उनपर किए शोध लेकिन हर बार रहे विफल

25 मई 2020 को ली अंतिम सांस

गुजरात में चुनरी वाले माताजी के नाम से थे प्रसिद्ध

CamScanner

5:58 pm • VoLTE 4G R 26%

Title

देखे कहीं चेहरे जहाँ में मगर, एक तेरे ही चेहरे पे प्यार आया
होंगे हसी लखो जहाँ में मगर, एक तुझपे ही दिल दीदार आया
आँखों में ऐसी काजल की रेखा, पहले कभी भी मैने ना देखा
गालो पे ऐसा तिल का निशान, देखा ना मैने कभी मेरी जान
हुए जवा दुनिया में कितने मगर, यूँ किसी पे ना ऐसा निखार आया
मुझको किसी से उलफत नही थी, पहले मेरी ऐसी हालत नही थी
आँखो से पढ़ ली दिल की कहानी, तुझ पे लूटा दी ये ज़िंदगानी
बेताबी इस दिल की बढ़ती गयी, प्यार ऐसा किसी पे पहली बार आया
देखे कहीं ...
प्यार आया
प्यार आया (प्यार आया)
एक तेरे ही ...

CamScanner

11:28 pm 29%

तीन चीजें

तीन चीजें किसी की प्रतिक्षा नहीं करतीं।
समय ★ मृत्यु ★ ग्राहक
तीन चीजें भाई-भाई को दुश्मन बनाती हैं।
ज़र ★ जोरू ★ ज़मीन
तीन चीजें याद रखना जरूरी हैं।
सच्चाई ★ कर्तव्य ★ मौत
तीन चीजें जीवन में एक बार ही मिलती हैं।
माँ ★ बाप ★ जवानी
तीन चीजें कोई दूसरा चुरा नहीं सकता।
अक्ल ★ चरित्र हुनर
तीन चीजें निकल कर वापिस नहीं आतीं।
तीर कमान से ★ बात ज़बान से प्राण शरीर से
तीन चीजें पर्दे योग्य हैं।
धन ★ स्त्री भोजन
इन तीनों का सम्मान करो।
माता ★ पिता ★ गुरू,

Give
5.6K
32
693
DR CHANDAN SIR
Dr Chandan Sir Follow
Dr Chandan Sir #reelsfb #quotes #motiv... more
Add a comment...
CamScanner

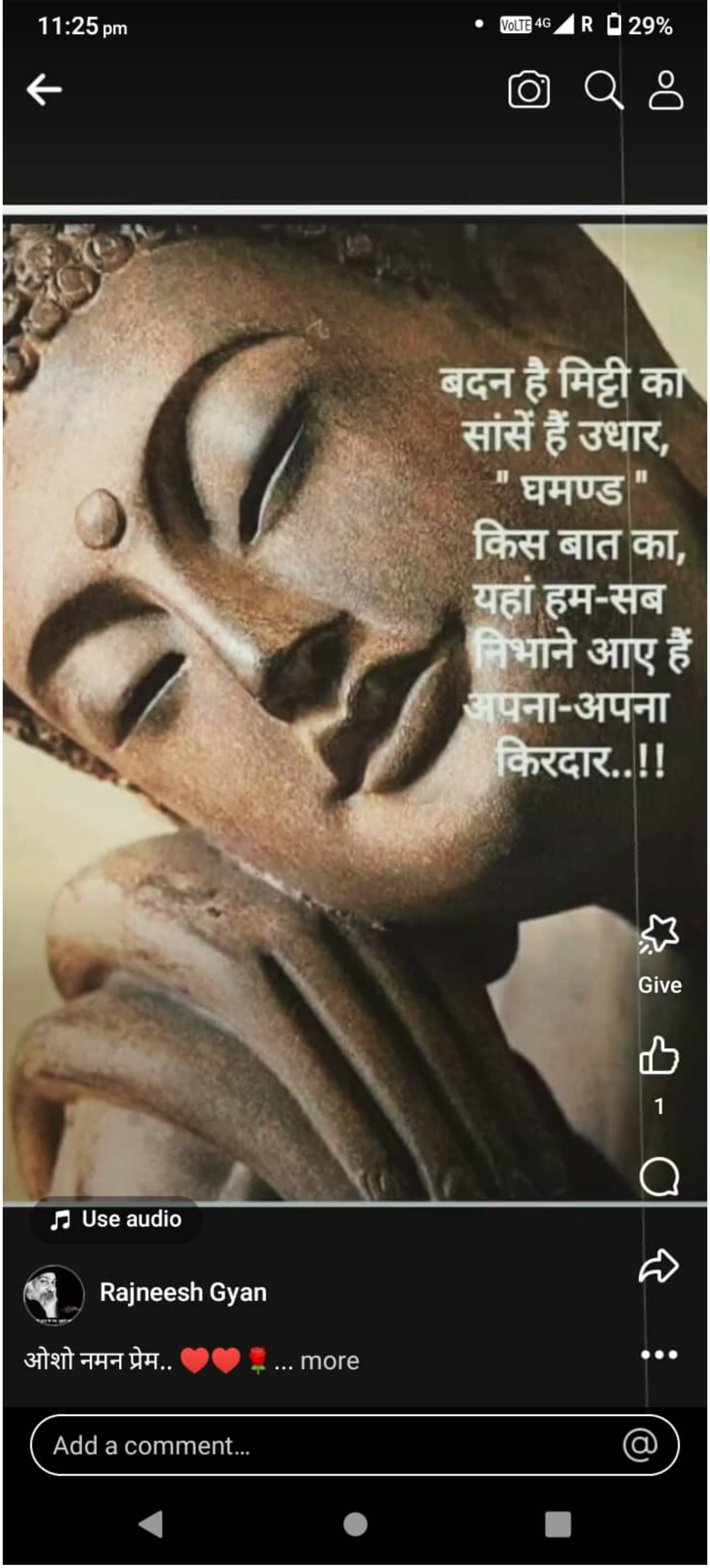
11:25 pm
29%
बदन है मिट्टी का
सांसें हैं उधार,
" घमण्ड "
किस बात का,
यहां हम-सब
निभाने आए हैं
अपना-अपना
किरदार..!!
Give
1
Use audio
Rajneesh Gyan
ओशो नमन प्रेम.. ❤️❤️🌹 ... more
Add a comment...

CamScanner

8:25 pm VoLTE 4G R 42%
facebook

शब्दकोश में जो लिखा है वह पता है। मोक्ष का अर्थ हमें मालूम है, ईश्वर का अर्थ हमें मालूम है, आत्मा का अर्थ हमें मालूम है। लेकिन अर्थ तो अस्तित्व नहीं है। ईश्वर कहने से, ईश्वर सुनने से, ईश्वर का कोई भी पता नहीं चलता। ईश्वर शब्द तो ईश्वर नहीं है। जो बोल रहा है, उसने अगर जाना है, तो भी वह अपने ज्ञान को आप तक नहीं पहुंचा सकता। शब्द ही जाएंगे, ज्ञान तो पीछे रह जाएगा। शब्द याददाश्त के हिस्से हो जाएंगे, स्मृति भरी-पूरी हो जाएगी, स्मृति सघन हो जाएगी, स्मृति का बोझ हो जाएगा, स्मृति शास्त्र बन जाएगी। और आपको भ्रांति पैदा होगी कि ईश्वर को मैं जानता हूं, क्योंकि ईश्वर शब्द को आपने सुना, पढ़ा और भाषाकोश में अर्थ लिखा है।

लेकिन बिना ईश्वर तक गए कोई कैसे ईश्वर को जान सकेगा? काश, इतना सरल होता कि भाषाकोश को जानकर हम ईश्वर को जान लेते, तो अब तक पृथ्वी पर कोई अज्ञानी न बचता, अभी तक सभी ज्ञानी हो गए होते। अगर मोक्ष का अभिप्राय, मोक्ष शब्द की व्युत्पत्ति में, उसके व्याकरण में छिपा होता, तो सभी मुक्त हो गए होते, बंधन में कोई भी न होता।

शब्द को जानना कितना सरल है!

लेकिन मन यात्रा से बचना चाहता है, तो भ्रांति पैदा करता है। मन यात्रा से बचना चाहे, यह स्वाभाविक भी है, क्योंकि यह यात्रा मृत्युऱ्यात्रा होने वाली है। ईश्वर को खोजने जो निकलेगा, वह स्वयं को खो देगा। भाषाकोश को देख लेने से स्वयं के खोने का कोई संबंध नहीं। शास्त्र को कंठस्थ कर लेने से स्वयं के मिटने का कोई सवाल नहीं। लेकिन जो मोक्ष खोजने जाएगा, वह मिटेगा। क्योंकि मिटे बिना कोई मोक्ष नहीं, कोई मुक्ति नहीं। मूलतः, मैं ही मेरा बंधन हूं, तो जब तक मेरा मैं विसर्जित न हो जाए तब तक कैसा मोक्ष? मैं ही मेरे और परमात्मा के बीच दीवार हूं, जब तक यह दीवार न गिर जाए तब तक कैसे परमात्मा की अनुभूति? यह यात्रा मृत्युऱ्यात्रा है। साधक मरने ही निकला है।

लेकिन मरकर ही परम जीवन उपलब्ध होता है। खोकर ही स्वयं को पाया जाता है।

....नही राम बिन ठाँव #01

🌷ओशो🙏

CamScanner

8:25 pm 42%

शब्द के तल पर जो परिचय है उसे परिचय कहना भी ठीक नहीं। धर्म के आयाम में, शब्द से बड़ा कोई धोखा नहीं है।
शब्द तो समझ में आ जाता है, उसमें जरा भी कठिनाई नहीं, लेकिन शब्द में जो छिपा है वह समझ के बाहर रह जाता है। वहीं असली कठिनाई है।

और शब्द समझ में आ जाए, शब्द में जो छिपा है वह समझ के बाहर रह जाए, तो जीवन में बड़ा उपद्रव पैदा होता है। अज्ञानी रहते हुए ज्ञानी होने का भ्रम शुरू हो जाता है। इससे बड़ी मुसीबत दूसरी नहीं है। जानते नहीं हैं; और लगता है, जानते हैं।
और जीना तो वहां से होगा, जहां जानना है। जीवन तो जानने से रूपांतरित होगा। इस भ्रांति के कारण कि शब्द को जान लिया, इसलिए धर्म को जान लिया, हमारा जीवन एक दिशा में और हमारा मन दूसरी दिशा में यात्रा करता है। अक्सर वे दिशाएं विपरीत होती हैं।
पाखंड, हिपोक्रेसी इसलिए तथाकथित धार्मिक आदमी की जीवन-चर्या बन जाता है। तथाकथित धार्मिक आदमी नितांत पाखंडी मालूम होता है। कहता कुछ है, जीता कुछ है। और उसके जीवन और उसके कहने में, कहीं कोई तालमेल नहीं दिखाई पड़ता। यह जो गैरत्तालमेल है, यह पैदा होता है शब्द को समझ लेने से। इस संबंध में कुछ बातें और विचार कर लें, फिर हम प्रश्न को लें।
ईश्वर, आत्मा, मोक्ष, सुनते ही समझ में आ जाते हैं। क्योंकि अर्थ हमें शब्दकोश में जो लिखा है वह पता है। मोक्ष का अर्थ हमें मालूम है, ईश्वर का अर्थ हमें मालूम है, आत्मा का अर्थ हमें मालूम है। लेकिन अर्थ तो अस्तित्व नहीं है। ईश्वर कहने से, ईश्वर सुनने से, ईश्वर का कोई भी पता नहीं चलता। ईश्वर शब्द तो ईश्वर नहीं है। जो बोल रहा है, उसने अगर जाना है, तो भी वह अपने ज्ञान को आप तक नहीं पहुंचा सकता। शब्द ही जाएंगे, ज्ञान तो पीछे रह जाएगा। शब्द याददाश्त के हिस्से हो जाएंगे, स्मृति भरी-पूरी हो जाएगी, स्मृति सघन हो जाएगी, स्मृति का बोझ हो जाएगा, स्मृति शास्त्र बन जाएगी। और आपको भ्रांति पैदा होगी कि ईश्वर को मैं जानता हूं, क्योंकि ईश्वर शब्द को आपने सुना, पढ़ा और भाषाकोश में अर्थ लिखा है।
लेकिन बिना ईश्वर तक गए कोई कैसे ईश्वर को जान सकेगा? काश, इतना सरल होता कि भाषाकोश को जानकर हम ईश्वर को जान लेते, तो

CamScanner

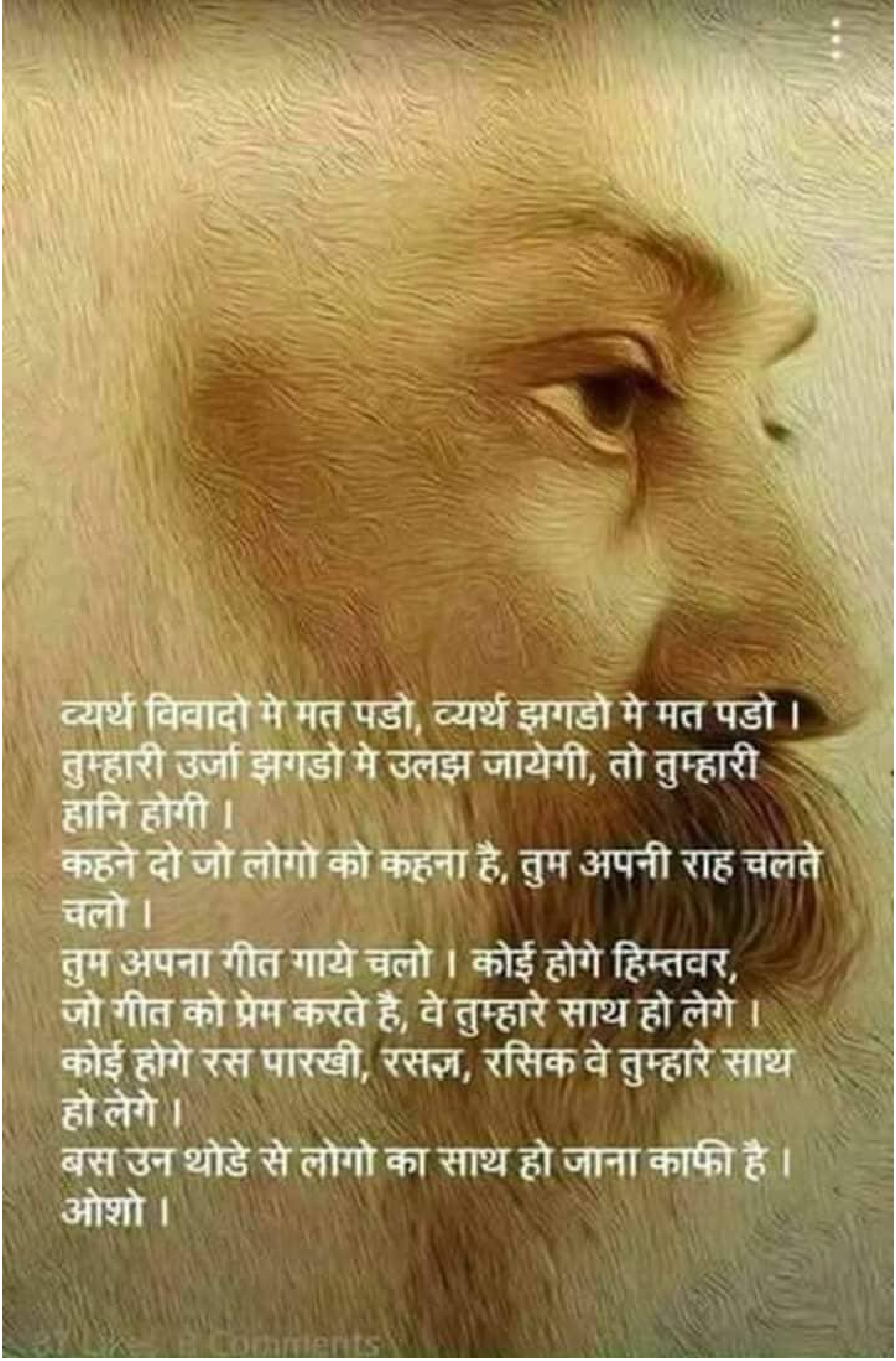

CS CamScanner

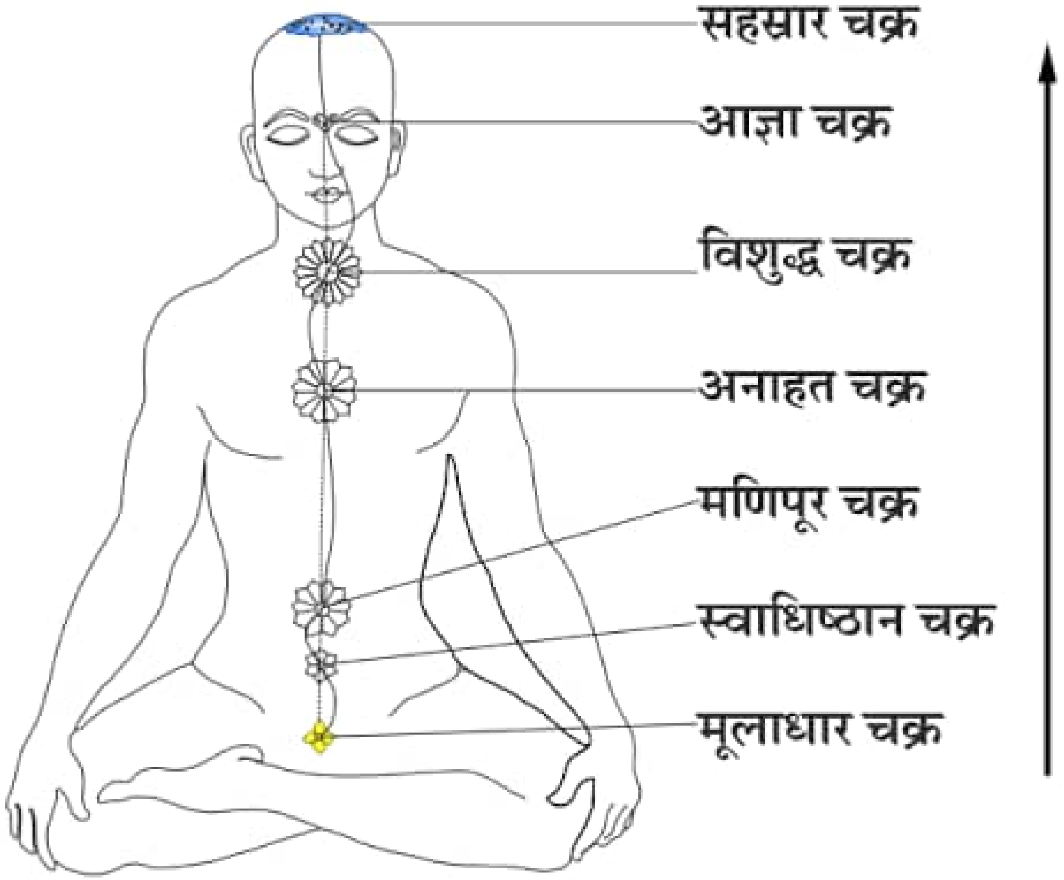

CS CamScanner

10:49 am • VoLTE 4G R 91%

आप जो होना चाहते हैं, वह हो जाते हैं। जो आप हैं, वह तो आप हैं ही। वह इस होने के पीछे दबा पड़ा रहता है। जैसे राख में अंगारा दबा हो, ऐसे आपके होने में, बिकमिंग में आपका बीइंग, आपका अस्तित्व दबा रहता है।

जिस दिन आप थक जाते हैं होने से, और आप कहते हैं, अब कुछ भी मुझे होना नहीं है, अब तो जो मैं हूं राजी हूं। अब मुझे कुछ भी नहीं होना है। अब तो जो मेरा होना है, वही ठीक है। मेरा अस्तित्व ही अब मेरे लिए काफी है। अब मेरी कोई वासना, कोई दौड़ नहीं है। जिस दिन आपकी भाव की यात्रा बंद हो जाती है, आप मुक्त हो जाते हैं।

इसलिए भावना से आप मुक्त न हो सकेंगे। भावना संसार का स्रोत है। भावना रुक जाएगी, तो आप मुक्त हो जाएंगे। यह कहना भी ठीक नहीं कि मुक्त हो जाएंगे; क्योंकि मुक्त आप हैं। भावना के कारण आप बंधे हैं। आपकी मुक्ति भावना के जाल में बंधी है। जिस दिन भावना का जाल गिर जाएगा, आप मुक्त हैं।

आप सदा मुक्त थे। मोक्ष कोई भविष्य नहीं है। और मोक्ष कोई स्थान नहीं है। ध्यान रहे, मोक्ष आपका स्वभाव है। आप जो हैं अभी, इसी वक्त, इसी क्षण, आप मोक्ष प्राप्त कर सकते हो अगर आप सब भाव, विचार, मान्यता , अभिप्राय छोड़ दो ।

ओशो

CamScanner

एक और मित्र ने पूछा है कि आपने कहा कि व्यक्ति जैसा भाव करता ई, वैसा ही बन जाता है। तो क्या मुक्त होने के भाव को गहन करने से वह मुक्त भी हो सकता है?
🌸

कभी भी नहीं। क्योंकि मुक्त होने का अर्थ ही है, भाव से मुक्त हो जाना। इसलिए संसार में सब कुछ हो सकता है भाव से, मुक्ति नहीं हो सकती। मुक्ति संसार का हिस्सा नहीं है।

भाव है संसार का विस्तार या संसार है भाव का विस्तार। तो आप जो भी भाव से चाहें, वही हो जाएंगे। स्त्री होना चाहें, स्त्री; पुरुष होना चाहें, पुरुष; पशु होना चाहें, पशु; पक्षी होना चाहें, पक्षी; स्वर्ग में देवता होना चाहें तो, नरक में भूत—प्रेत होना चाहें तो, जो भी आप होना चाहे मुक्ति को छोड़कर,आप अपने भाव से होते हैं और हो सकते हैं।

मुक्ति का अर्थ ही उलटा है। मुक्ति का अर्थ है कि अब हम कुछ भी नहीं होना चाहते। अब जो हम हैं, हम उससे ही राजी हैं। अब हम कुछ होना नहीं चाहते हैं।

जब तक आप कुछ होना चाहते हैं, तब तक आप जो हैं, उससे आप राजी नहीं हैं। कुछ होना चाहते हैं। गरीब अमीर होना चाहता है; स्त्री पुरुष होना चाहती है; दीन धनी होना चाहता है। कुछ होना चाहते हैं। पशु पुरुष होना चाहता है, पुरुष स्वर्ग में देवता होना चाहता है। लेकिन कुछ होना चाहते हैं, कुछ होना चाहते हैं।

होना चाहने का अर्थ है कि जो मैं हूं उससे मैं राजी नहीं हूं; मैं कुछ और होना चाहता हूं। और जो आप हैं, वही आपका सत्य है। और जो भी आप होना चाहते हैं, वह झूठ है।

भाव से झूठ पैदा हो सकते हैं, सत्य पैदा नहीं होता। सत्य तो है ही। इसलिए सभी भाव असत्य को जन्माते हैं। सारा संसार इसीलिए माया है, क्योंकि वह भाव से निर्मित है।

आप जो होना चाहते हैं, वह हो जाते हैं। जो आप हैं, वह तो आप हैं ही।

CamScanner

10:48 am · VoLTE 4G R 91%

ओशो - जीवन-मृत्यु
आनंद स्वामी · 2h ·

swami_dhyan_rohan
12h ·

ओशो महापरिनिर्वाण दिवस 💗 19 जनवरी

258 · 37 comments • 35 shares • 3.5K views

Like · Comment · Send · Share

swami_dhyan_rohan
Reels · 12h ·

Never Born – Never Died Only visited this planet Earth between December 11, 1931 and January 19, 1990 .... See more

See translation

CamScanner

10:48 am ● VoLTE 4G R 91%

Create story | Janice Hung | Songs | ओशो

You chose to see more posts from this Group.

ओशो - जीवन-मृत्यु

Hitesh Motiani · 8h ·

690 214 comments • 43 shares

Like Comment Send Share

Sargaman Maharjan

CamScanner

11:41 pm VoLTE 4G R 42%

19 जनवरी :
ओशो के निर्वाण दिवस पर हम सभी ओशो प्रेमियो
की तरफ से, गुरुवर को शत् शत् कोटि कोटि प्रणाम।
हमारा प्रणाम स्वीकार करें। और हम सब को यह आशीष
प्रदान करें कि हमारे जीवन में भी यह शुभ घडी शीघ्र आये।

ओशो का भौतिक शरीर तो 11 दिसंबर 1931 को पैदा हुआ और 19 जनवरी 1990 को इस दुनिया से विदा हुआ।

लेकिन केवल शरीर के विदा होने से विदा होने वाली वह चेतना नहीं है। इस ग्रह से जाने से पहले उन्होंने अपनी समाधि पर जो लिखवाया वह बहुत अर्थ पूर्ण है :

" ओशो जो न कभी पैदा हुए, न कभी मृत हुए "।

ओशो किसी व्यक्ति का नाम नहीं है, वरन वह एक चेतना है। चेतना का न जन्म होता है न मृत्यु। वह सदा वर्तमान है।

ओशो ने हिदायत दी है कि मेरा उल्लेख भूतकाल में मत करना। ओशो के विषय में अक्सर पुछा जाता है कि ओशो का दर्शन क्या है। स्वभावतया जिन्होंने 650 किताबे बोली है उनका कोई तो सिद्धांत, कोई तो ' वाद ' होगा। वे क्या कहना चाहते है?

ओशो के बारे में सबसे अनूठी बात यह है कि उन्हें किसी भी कोटि में बांधा नहीं जा सकता क्योकि विश्व में जितने भी दर्शन है, जितने भी इज्म्स है उनकी उन्होंने व्याख्या की है। उनका अपना कोई दर्शन नहीं है, न कोई सिद्धांत है। उनकी चेतना एक शून्य है, एक खाली दर्पण है। चूंकि वह दर्पण है इसलिए किसी को भी प्रतिबिंबित कर सकता है।

दर्पण का अपना चुनाव कहा होता है?
जो सामने आया, दिखा दिया।
कोई नहीं आया तो खाली बैठे है।

ओशो कहते है, मैं धर्म नहीं, धार्मिकता सिखाता हूं।

CS CamScanner

11:41 pm • VoLTE 4G R 42%

ओशो कहते है, मैं धर्म नहीं, धार्मिकता सिखाता हूं।
धार्मिकता का कोई पंथ या कोई शास्त्र नहीं हो सकता।
यह वह गुणवत्ता है जो हर वस्तु में जन्मजात होती है।

जैसे फूल में सुगंध,
अग्नि में उष्णता या पानी में शीतलता,
वैसे धार्मिकता मनुष्य का आतंरिक स्वभाव है।

में तो यहां मनुष्य को बदलने का नया विज्ञान दे रहा हूं कि वह स्वयं से प्रेम करना सिखें। स्वयं से इतना प्रेम करो की कोई भी उपद्रवी तुम्हे किसी तरह की आत्महत्या के लिए राज़ी न कर पाये।

सत्य यह है कि मनुष्य के भीतर एक विराट आकाश छिपा है। जो अपने भीतर उतर जाए वह जगत के रहस्यों के द्वार पर खड़ा हो जाता है। उसके लिए मंदिर के द्वार खुल जाते है।

जो अपने भीतर की सीढियां उतरने लगता है वह जीवन के मंदिर की सीढ़िया उतरने लगता है। जो अपने भीतर जितना गहरा जाता है उतना ही परमात्मा का अपूर्व अद्वितीय रूप, सौंदर्य, सुगंध संगीत सब बरस उठता है।

ओशो के निर्वाण को
26 साल ही हुए हैं
लेकिन उनकी गूंज हर ओर है–

पंछी लौट- लौट आते है,
तेरे बरगद में कुछ तो होगा।
सबके सब बौने लगते है,
तेरे कद में कुछ तो होगा।

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

CS CamScanner

CS CamScanner

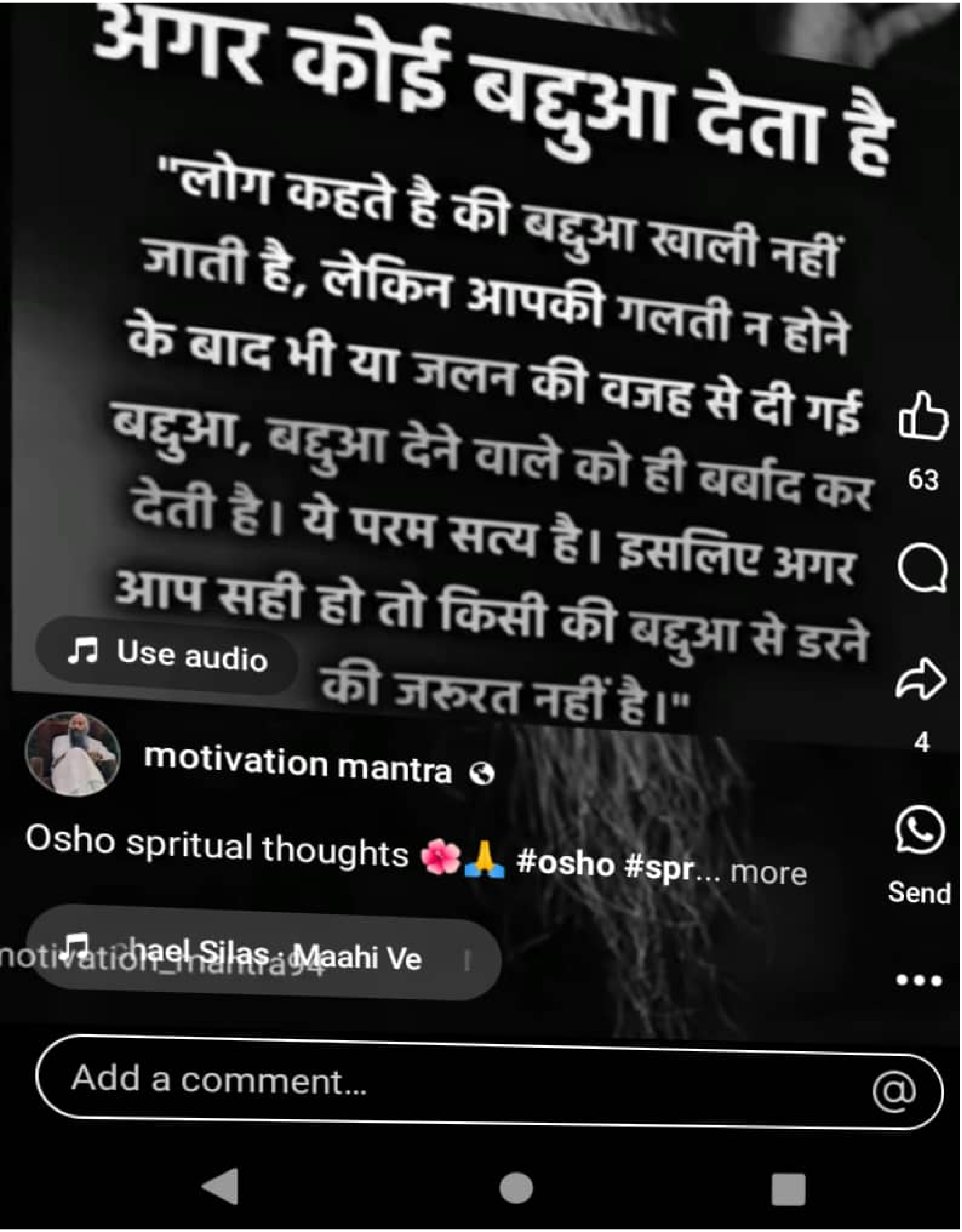

अगर कोई बद्दुआ देता है
"लोग कहते है की बद्दुआ खाली नहीं जाती है, लेकिन आपकी गलती न होने के बाद भी या जलन की वजह से दी गई बद्दुआ, बद्दुआ देने वाले को ही बर्बाद कर देती है। ये परम सत्य है। इसलिए अगर आप सही हो तो किसी की बद्दुआ से डरने की जरूरत नहीं है।"
Use audio
63
4
Send
motivation mantra
Osho spritual thoughts 🌺🙏 #osho #spr... more
Maahi Ve
Add a comment...

CamScanner

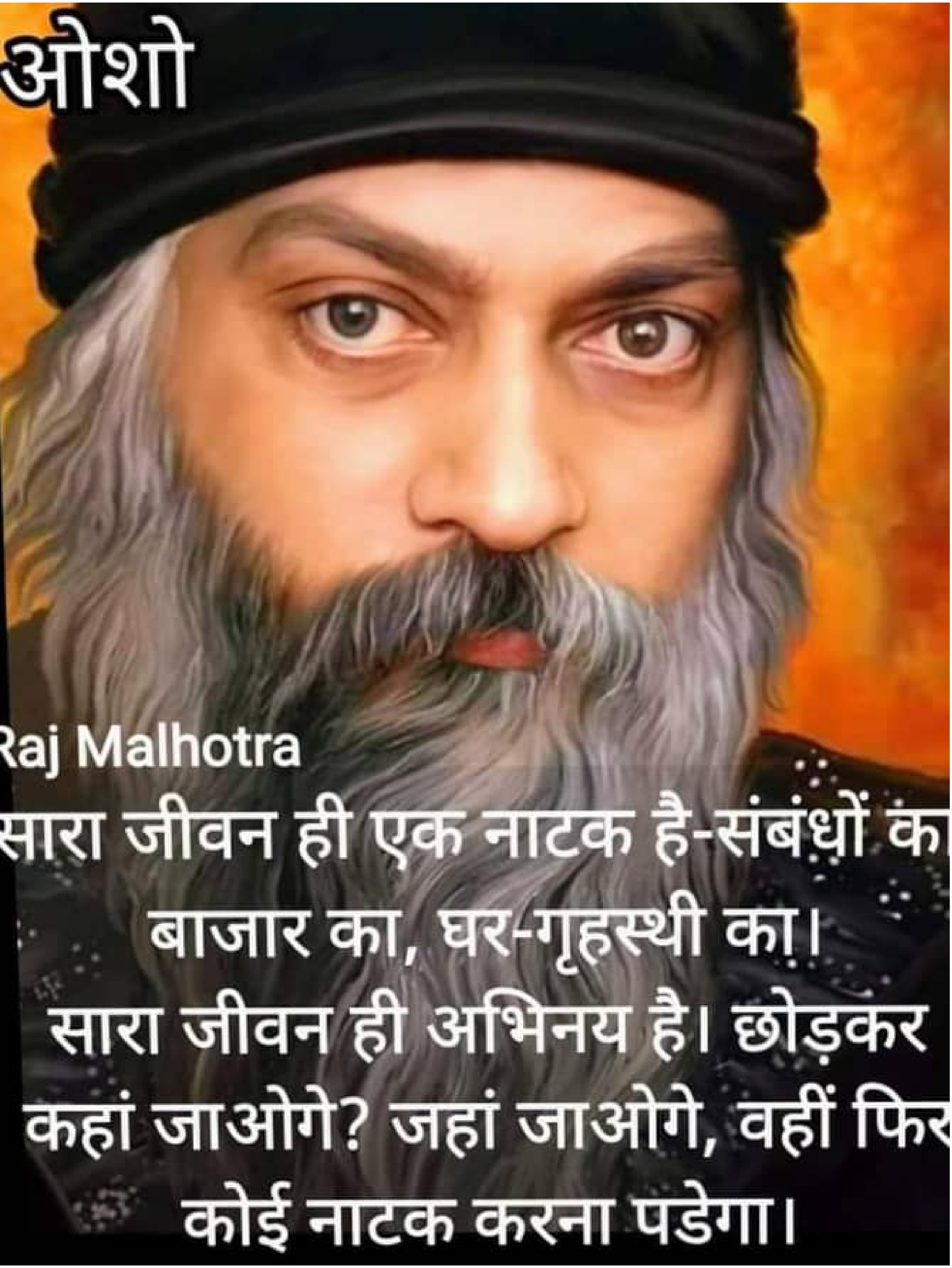
ओशो
Raj Malhotra
सारा जीवन ही एक नाटक है-संबंधों का
बाजार का, घर-गृहस्थी का।
सारा जीवन ही अभिनय है। छोड़कर
कहां जाओगे? जहां जाओगे, वहीं फिर
कोई नाटक करना पडेगा।

CamScanner

6:22 pm 7 KB/s VoLTE 4G R 47%

Osho international · 20h ·

🌹🌹 मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ। बुद्ध यह कहानी बहुत बार सुनाते थे। एक आदमी मर रहा था। बुद्ध एक जंगल से गुजर रहे थे और उस आदमी के शरीर में एक तीर लगा था-किसी शिकारी का तीर। वह आदमी मर रहा था। वह एक दार्शनिक था। बुद्ध उस आदमी से कहते हैं कि इस तीर को निकाला जा सकता है। मुझे इसे बाहर निकाल लेने दो। वह आदमी कहता है, 'नहीं, पहले मुझे यह बताओ कि यह तीर किसने मारा? मेरा शत्रु कौन है? यह तीर मेरे शरीर में क्यां लगा? मेरे किन कर्मों का यह फल है? क्या तीर विष-बुझा है, या नहीं है?' बुद्ध कहते है, 'यह सारी बात तुम बाद में पूछ लेना। पहले मुझे तीर खींच लेने दो, क्योंकि तुम मरने ही वाले हो। यदि तुम सोचते हो कि नहीं पहले इन सब बातों का पता चल जाये और फिर तीर को खींचा जाये, तो तुम बचने वाले नहीं हो।'

यह कहानी उन्होंने बहुत बार सुनाई थी। उनका इस कहानी से क्या मतलब था? उनका अर्थ था कि हम सब मृत्यु के किनारे ही खड़े हैं। मृत्यु का तीर पहले ही तुम्हारी छाती में चुभा हुआ है। तुम्हें इसका पता हो या नहीं हो। मृत्यु का तीर तुमको पहले से ही लग चुका है। इसीलिए तुम दु:ख में हो। तीर चाहे दिखाई नहीं पड़ता हो, किन्तु पीड़ा तो है। तुम्हारी पीड़ा कहती है कि मृत्यु का तीर तुम्हारे भीतर प्रवेश कर चुका है। मत पूछो इस तरह के सवाल कि इस जगत को किसने बनाया और मैं क्यों बना गया, कि जीवन बहुत है कि एक ही जीवन है, क्या मैं मृत्यु के बाद भी बचूँगा या नहीं।

बुद्ध कहते हैं, ये बातें बाद में पूछ लेना। पहले इस दु:ख के तीर को खींच लेने दो। तब बुद्ध हँसते हैं और कहते हैं कि फिर बाद में मैंने किसी को पूछते हुए नहीं पाया, इसलिए बाद में सारी पूछताछ कर लेना।

यह योग है, इसका तुम्हारी स्थिति से ज्यादा संबंध है-तुम्हारी पीड़ा की वास्तविक स्थिति से और कैसे उससे पार हुआ जाये। इसका ज्यादा संबंध है तुम्हारी दासता से, तुम्हारे कारागृह से। और कैसे इसका अतिक्रमण किया जाये, कैसे मुक्त हुआ जाये? इसलिए 'मोक्ष' लक्ष्य है, अंतिम लक्ष्य, वास्तविक लक्ष्य। यह कोई सैद्धान्तिक सत्य नहीं है। हमने बहुत-से सिद्धान्त प्रस्तुत किये हैं, लेकिन वे सिर्फ उपाय हैं। हमारे पास नौ प्रणलियाँ हैं और बहुत बड़ा साहित्य है। सर्वाधिक समृद्ध साहित्यों में से एक परन्तु हमारे सारे सिद्धान्त अर्थपूर्ण नहीं हैं। हमने

CamScanner

6:22 pm 0 KB/s VoLTE 4G R 47%

बुद्ध कहते हैं, ये बातें बाद में पूछ लेना। पहले इस दुःख के तीर को खींच लेने दो। तब बुद्ध हँसते हैं और कहते हैं कि फिर बाद में मैंने किसी को पूछते हुए नहीं पाया, इसलिए बाद में सारी पूछताछ कर लेना।

यह योग है, इसका तुम्हारी स्थिति से ज्यादा संबंध है-तुम्हारी पीड़ा की वास्तविक स्थिति से और कैसे उससे पार हुआ जाये। इसका ज्यादा संबंध है तुम्हारी दासता से, तुम्हारे कारागृह से। और कैसे इसका अतिक्रमण किया जाये, कैसे मुक्त हुआ जाये? इसलिए 'मोक्ष' लक्ष्य है, अंतिम लक्ष्य, वास्तविक लक्ष्य। यह कोई सैद्धान्तिक सत्य नहीं है।

हमने बहुत-से सिद्धान्त प्रस्तुत किये हैं, लेकिन वे सिर्फ उपाय हैं। हमारे पास नौ प्रणलियाँ हैं और बहुत बड़ा साहित्य है। सर्वाधिक समृद्ध साहित्यों में से एक परन्तु हमारे सारे सिद्धान्त अर्थपूर्ण नहीं हैं। हमने बहुत से विचित्र सिद्धान्तों को निर्मित किया है। लेकिन बुद्ध तथा महावीर कहते हैं कि यदि कोई सिद्धान्त बन्धन से पार जाने में मदद करते हैं, तो वे ठीक हैं।

किसी भी सिद्धान्त के बारे में चिंतित होने की जरूरत नहीं है कि वह सही है या गलत है, उसके तर्क-वितर्क पर भी चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। उसका उपयोग करो और पार चले जाओ। नाव के बारे में सोचना-विचारना कैसा? यदि वह तुम्हें नदी पार करने में सहायता करे, तो नदी के पार चले जाओ। पार जाना अर्थपूर्ण है, नाव तो अर्थ हीन है। अतः कोई भी नाव काम दे देगी। इसीलिए हिन्दुओं ने एक अगूठा सहिष्णु मन विकसित किया, वह एक मात्र सहिष्णु मन है। एक ईसाई सहिष्णु नहीं हो सकता। असहिष्णुता वहाँ होगी। एक मुसलमान सहिष्णु नहीं हो सकता। असहिष्णुता वहाँ भी होगी ही।

इसमें उसका दोष नहीं है। यह इसलिए है क्योंकि उसके लिये नाव बहुत महत्वपूर्ण है। वह कहता है कि तुम केवल इसी नाव से नदी के पार जा सकते हो। दूसरी नावें 'नाव' नहीं हैं, वे सब नहीं हैं। दूसरा किनारा इतना महत्वपूर्ण नहीं है। इस किनारे की यह नाव ज्यादा महत्वपूर्ण है। इसलिए यदि तुमने गलत नाव चुनी तो तुम उस किनारे नहीं पहुँच सकोगे। परन्तु हिन्दू मन कहता है कि कोई भी नाव काम दे देगी। नाव असंगत है।

सब सिद्धान्त नावें हैं। यदि तुम ठीक से दूसरे किनारे पर दृष्टि लगाये हो, यदि तुम्हारी आँख दूसरे किनारे पर लगी हुई है, यदि तुम्हारा मन दूसरे छोर का ध्यान कर रहा है, तो फिर कोई भी नाव काम दे देगी। और यदि तुम्हारे पास कोई नाव नहीं है, तो तुम तैरो।

CamScanner

6:22 pm U KB/s • VoLTE 4G R 47%

6

तुम्हारे पास कोई नाव नहीं है, तो तुम तैरो।
प्रत्येक व्यक्ति पार जासकता है, किसी भी संगठित नाव की आवश्यकता नहीं है। तैरो और यदि तुम हवा के रुख को जानते तो तुम्हें तैरने की भी जरूरत नहीं है। तब सिर्फ बहो। यदि तुम हवा के रुख को ठीक दिशा में हवा को बहने दो। फिर सिर्फ गिर पड़ना और छोड़ देना, और हवायें स्वयं तुम्हें उसे पार ले जायेंगी।
किसी नाव ने कोई ठेका नहीं ले लिया है। बिना नाव के भी कोई तैर सकता है। और यदि कोई आदमी बुद्धिमान है तो तैरने की भी जरूरत नहीं है, वह भी व्यर्थ है। यह आखिरी बात है जो कि बुद्धि से समझ में नहीं आयेगी। वे कहते हैं कि यदि तुम समग्र रूप से छोड़ दो, और विश्राम में आ जाओ तो यह किनारा ही वह किनारा है। तब कहीं जाना नहीं हैं। यदि तुम पूर्णरूप से विश्राम में हो, और पूर्णरूप से समर्पित हो, तो फिर यह किनारा ही वह किनारा है।
🌹 ओशो 🌹

Osho Prem Naman 🙏💞
Osho international

CS CamScanner

ओशो Gold Medallist हैं । 150000 किताबों का अध्ययन किया , 650 किताबें उनके नाम से प्रकाशित है । बोलने पर इतना नियंत्रण था कि जो बोल दिया वही अंतिम है , वही छपता है । उन्हों ने उस में कभी सुधार नहीं किया । " माफ़ " करना या " मेरा मतलब था यह नहीं " ... आदि शब्दों का कभी भी उपयोग नहीं किया . कोई भी व्यक्ति ओशो से वाद -विवाद नही कर सका । पोप ने कभी उनका चैलेंज स्वीकार नहीं किया ।ओशो को गालियां बहुत दी गयी , किन्तु अखंड विश्व में कोई भी व्यक्ति उनसे शास्त्रार्थ करने को राजी नहीं हुआ . २१ देशों ने अपने देश में ओशो को प्रवेश नहीं दिया . उन्होंने अपने ज्ञान का झंडा विश्व में फहरा दिया किन्तु कोई भी उनके अश्वमेध के रथ को रोक नहीं पाया.ओशो विश्व के अपराजित योद्धा हैं । ओशो इतने विशाल हैं कि कोई भी धर्म या देश उन्हें आत्म सात नहीं कर सकता और फिर भी हर आदमी को लगता है ओशो मेरे ही मन की बात करते हैं ...

जीवन के रंग

CamScanner

6:26 pm 0 KB/s VoLTE 4G R 46%

मैंने सुना है, सूफियों में एक कहानी है कि एक पहाड़ के पास एक झील है। और उस झील के पास जब भी कोई साधक पहुंच जाता है और आग्रह करता है झील से, और आग्रह अगर वस्तुत: प्रामाणिक होता है, तो झील से उत्तर मिलते हैं।

एक फकीर वर्षों की तलाश के बाद अंततः उस झील के पास पहुंच गया। और उसने चिल्ला कर जोर से पूछा कि मेरा एक ही सवाल है: जीवन क्या है? झील चुप रही। लेकिन वह पूछता ही गया। कहते हैं तीन दिन अहर्निश, रात और दिन उसने एक कर डाले। एक ही सवाल कि जीवन क्या है? आखिर झील के देवता को भी झुकना पड़ा। और उसने कहा कि तेरी निष्ठा पूरी है। तू कोई साधारण कुतूहल से नहीं आया। तू साधारण जिज्ञासु भी नहीं है, तू मुमुक्षु है; इसलिए तेरे प्रश्न का उत्तर हम देते हैं: जीवन एक वीणा है।

उस आदमी ने कहा, और पहेलियां अब नहीं चाहता। सीधा-सीधा उत्तर दो। मैं कोई संगीतज्ञ नहीं हूं। वीणा मैंने अपने जीवन में अभी तक देखी भी नहीं। सुना है नाम; लेकिन मुझे जीवन का भी पता नहीं, वीणा का भी पता नहीं। अब यह एक और उलझन हो गई। अभी मैं जीवन को हल करता रहा, अब वीणा का भी पता लगाऊं! तुम मुझे सीधा-सीधा ही कह दो।

झील ने कहा, उत्तर दे दिया गया है।

तो उस आदमी ने कहा, थोड़े संकेत दो जिससे कि मैं रास्ता खोजूं।

तो झील से उत्तर आया कि तू गांव में जा और पहली तीन दुकानों पर गौर से देख। और जो भी तू पाए, लौट कर उत्तर दे।

वह आदमी गया। उसने पहली दुकान पर देखा, वहां कुछ भी न था, लोहे-लंगर की दुकान थी, धातुओं के अलग-अलग तरह के रूप-रंग के ढेर लगे थे। वह कुछ समझा नहीं कि जीवन से इसका क्या लेना-देना! दूसरी दुकान पर गया। वह एक तारों की दुकान थी। वहां भी उसको समझ में नहीं आया कि जीवन से तारों का क्या लेना-देना? तीसरी दुकान एक बढ़ई की दुकान थी।

वह बड़ा नाखुश लौटा। उसने सोचा कि इससे तो हम पहले ही बेहतर थे। इस झील से पूछने के पहले ही बेहतर थे। कम से कम इस तरह की मूढ़ता तो दिमाग में न थी। इससे जीवन का क्या लेना-देना? यह तो ज्ञान न मिला और अज्ञानी हो गए। लौट कर नाराज आया और उसने झील से कहा कि यह-यह मैंने देखा। पर इससे जीवन का क्या संबंध है?

CS CamScanner

6:26 pm 0 KB/s VoLTE 4G R 46%

दूसरी दुकान पर गया। वह एक तारों की दुकान थी। वहां भी उसको समझ में नहीं आया कि जीवन से तारों का क्या लेना-देना? तीसरी दुकान एक बढ़ई की दुकान थी।

वह बड़ा नाखुश लौटा। उसने सोचा कि इससे तो हम पहले ही बेहतर थे। इस झील से पूछने के पहले ही बेहतर थे। कम से कम इस तरह की मूढ़ता तो दिमाग में न थी। इससे जीवन का क्या लेना-देना? यह तो ज्ञान न मिला और अज्ञानी हो गए। लौट कर नाराज आया और उसने झील से कहा कि यह-यह मैंने देखा। पर इससे जीवन का क्या संबंध है? झील ने पुनः कहा कि जीवन एक वीणा है। अब तू इस सूत्र को पकड़ ले और इसकी खोज कर।

वर्षों बीत गए। वह आदमी करीब-करीब भूल ही गया वह खोज--जीवन का वीणा होना। एक दिन अचानक एक बगीचे के पास से गुजरते वक्त उसने किसी को वीणा बजाते सुना। वह स्वरलहरी उसे खींच ली। वह खिंचा हुआ जादू के वश बगीचे के भीतर पहुंच गया।

कोई कलाकार वीणा बजा रहा था। साधक को पहली दफा दिखाई पड़ा कि वही तार हैं जो दुकान पर पड़े थे। वही धातुएं हैं जो दुकान पर पड़ी थीं, वीणा में लग गईं। और उस बढ़ई ने भी काम किया है। लकड़ी का भी इंतजाम है।

आज उसे सूत्र साफ हुआ। आज उसे साफ हुआ कि जीवन एक वीणा है। लकड़ी भी है, तार भी हैं, धातुएं भी हैं; अलग-अलग पड़े हैं। कोई संगीत पैदा नहीं होता। तीनों जुड़ जाएं, एक ढंग में बैठ जाएं, तालमेल आ जाए, तो संगीत उठ सकता है। इतना अदभुत संगीत उठ सकता है--निराकार! इतना प्राणों को मोहित कर लेने वाला संगीत उठ सकता है! ऐसी जादूभरी रहस्यपूर्ण घटना घट सकती है!

मैं भी तुमसे यही कहता हूं: जीवन एक वीणा है। लेकिन तुम्हें अपनी वीणा जमानी है। दूसरों की नकल मत करना। उन्हें अपनी वीणा जमानी है। वीणाएं बहुत तरह की हैं। और हरेक व्यक्ति के पास अपने तरह की वीणा है और अपने ही
तरह का छिपा हुआ संगीत है।

स्वधर्मे निधनं श्रेयः।

ओशो, सबै सयाने एक मत-08

CamScanner

9:24 pm 11 KB/s VoLTE 4G R 23%

फिर इससे भी पीछे लौटना है और उस छोटे बच्चे की भांति हो जाना है, जब आप अपने को ही प्रेम करते हैं। पुरुष भी खो गया, स्त्री भी खो गई। संन्यासी अपनी गुहा में बैठा हुआ अपने में ही रत है। ध्यान की यह दशा आत्म-रति है। यह ठीक वैसे ही है, जैसा बच्चा अपने झूले में पड़ा है और आनंदित हो रहा है। किसी दूसरे की जरूरत नहीं है आनंद के लिए। उसका खुद का होना ही काफी आनंद है। ध्यान की यह अवस्था है।

फिर इससे भी पीछे लौटना है–अपना भी खयाल न रह जाए। वह गर्भ में वापस लौट गया। इस अवस्था का नाम समाधि है। तब बच्चा, जैसे पूरा अस्तित्व गर्भ हो गया और अब उसे अपना बोध ही न रहा, वह अबोध हो गया। इस सारे अस्तित्व के साथ एक हो गया। यह वर्तुल पूरा हुआ। फिर अ-रति पैदा हुई। इस अंतिम अवस्था को मैं ब्रह्मचर्य कहता हूं।

और अगर आप सीधे ही चलते गए और चौथे चरण के बाद ब्रह्मचारी हो गए पांचवें चरण में, तो वह ब्रह्मचर्य दमन होगा। और विकृत होगा और उसमें सौंदर्य नहीं हो सकता। उसमें वह महिमा प्रगट नहीं होगी, जो एक बच्चे में प्रगट होगी मां के गर्भ में वापस लौटकर।

अ-रति, फिर आत्म-रति, फिर स्वलिंगीय-रति, फिर पर-रति, और फिर वापस है यात्रा। और जिस दिन आपका वर्तुल पूरा होगा, उस दिन परम शांति आप पर प्रगट होगी। आशीर्वाद सब तरफ से बरसने लगेंगे। यह आदमी घर आ गया। झेन फकीर कहते हैं, कमिंग बैक टू होम। जहां से चला था, वहीं वापस आ गया। मूल-स्रोत को उपलब्ध हो गया।

प्रकृति से लड़ेंगे, तो भी प्राकृतिक; समर्पण करेंगे, तो भी प्राकृतिक। छोड़ देंगे अपने को, बिलकुल भूल जाएंगे, न संघर्ष, न समर्पण, तो भी प्राकृतिक है। सभी कुछ प्राकृतिक है, क्योंकि अप्राकृतिक हो ही कैसे सकता है? इसलिए सवाल प्रकृति और अप्रकृति के बीच चुनने का नहीं है, सवाल सुख, दुख और आनंद के बीच चुनने का है। तीनों द्वार खुले हैं। जिस तरफ भी जाना हो, होशपूर्वक जाना।

--नही राम बिन ठाँव #13

CamScanner

9:24 pm 0 KB/s VoLTE 4G R 23%

बच्चा जब पैदा होता है तो पहली अवस्था है अ-रति, नो-सेक्स। इसके विकास को ठीक से समझें, क्योंकि यही वापसी में संत की यात्रा होगी। दूसरा चरण है आत्म-रति, आटो-इरोटिक। बच्चा खुद ही को प्रेम करता है। अपने ही हाथ-पैर से खेलता है। ऐसे ही प्रसन्न होता है अकारण। कोई साथी-संगी नहीं, खुद ही पड़ा-पड़ा मजा लेता है। मुस्कुराता है। माताएं समझती हैं शायद पिछले जन्म की याद वगैरह करके प्रसन्न हो रहा है। वह आत्म-रति में लीन है, अभी आटो-इरोटिक है। खुद ही प्रेमी है, खुद ही प्रेम-पात्र है।

फिर तीसरा चरण आता है, तब बच्चा होमो-सेक्सुअल हो जाता है। समलिंगीयऱ्यौन पैदा होती है। इसलिए लड़कों की उत्सुकता लड़कों में, लड़कियों की लड़कियों में होती है।

एक उम्र है बच्चों की जब लड़के लड़कों के साथ मेल करते हैं, लड़कियां लड़कियों के साथ। लड़के लड़कों के प्रेम में पड़ जाते हैं, लड़कियां लड़कियों के।

इसलिए बचपन में जैसी दोस्ती बनती है, फिर कभी नहीं बनती। फिर जिंदगीभर वैसी दोस्ती का स्वाद नहीं आता। बच्चे जैसी दोस्ती एक-दूसरे से कर लेते हैं, वह प्रेमियों जैसी दोस्ती है, वह जीवनभर टिकती है। फिर बहुत लोगों से मिलना होगा, अच्छे लोगों से मिलना होगा, संबंध बनेंगे, लेकिन परिचय रहेगा, दोस्ती नहीं हो पाएगी। क्योंकि वह जो होमो-सेक्सुअल, समलिंगीय-प्रेम की अवस्था थी, फिर दुबारा नहीं आएगी। अनेक लोग होमो-सेक्सुअल रह जाते हैं, उसका अर्थ है, उनका ठीक विकास नहीं हुआ।

फिर बाहर आने के लिए नहीं खुलता। तो उसने विपरीत सेक्स का जगत छोड़ दिया। अब वह पुरुषों के साथ ही रहेगा। उसकी मैत्री होगी वैसी ही, जैसी एक बार बचपन में हुई थी। यह वापस लौट रहा है।

फिर इससे भी पीछे लौटना है और उस छोटे बच्चे की भांति हो जाना है, जब आप अपने को ही प्रेम करते हैं। पुरुष भी खो गया, स्त्री भी खो गई। संन्यासी अपनी गुहा में बैठा हुआ अपने में ही रत है। ध्यान की यह

CamScanner

9:23 pm 0 KB/s VoLTE 4G R 23%

गर्भ की जो दशा है, वही मोक्ष की दशा है। गर्भ छोटा-सा आनंद-रूप है मोक्ष का।

बच्चा मां के साथ एक है, अपने मूल-स्रोत के साथ एक है। मां श्वास लेती है, तो वही बच्चे की श्वास है। मां का खून चलता है, तो वही बच्चे के खून की गति है। मां का हृदय धड़कता है, तो वही बच्चे की धड़कन है। मां अभी मर जाए, तो बच्चा मरेगा। अभी मां का जीवन बच्चे का जीवन है। अभी पृथकता पैदा नहीं हुई। अभी अहंकार नहीं जन्मा। यह मोक्ष का आनंद-रूप है।

फिर परम संतत्व की अवस्था में भी यही घटना घटती है। तब यह पूरा अस्तित्व मां का गर्भ हो जाता है। इसलिए जहां हम मंदिर में परमात्मा की मूर्ति रखते हैं, उसको कहते हैं गर्भगृह। जिस दिन यह सारा जगत मंदिर की तरह हो जाता है, उस दिन गर्भगृह में तुम पुनः प्रवेश कर जाते हो। फिर तुम्हारा अस्तित्व नहीं रह जाता, फिर सर्व है, तुम नहीं हो।

इसलिए जिन लोगों ने परमात्मा की कल्पना पुरुष की जगह स्त्री के रूप में की है, उन लोगों ने ज्यादा कुशलता दिखाई है। परमात्मा की धारणा पुरुष के रूप में ठीक नहीं है। क्योंकि वह गर्भ कैसे बनेगा? इसलिए परमात्मा की धारणा स्त्री के रूप में ज्यादा योग्य है। लेकिन पुरुष के अहंकार के कारण हम आमतौर से परमात्मा को पुरुष बनाए हुए हैं। अहंकार को छोड़कर अगर तथ्य को समझने की कोशिश करें, तो परमात्मा स्त्रैण ही होना चाहिए, क्योंकि उसमें जगह चाहिए। मोक्ष, उसमें जगह है, गर्भ की संभावना। हम उसमें वापस लौट सकें।

तो काली, जगदंबा की जो धारणा है, वह ज्यादा सत्य के निकट है। पुरुष में तो जगह ही नहीं है, उसमें जाइएगा कहां? पुरुष में कोई स्थान नहीं है। परमात्मा गर्भ बन जाता है पुनः संत को।

बच्चा जब पैदा होता है तो पहली अवस्था है अ-रति, नो-सेक्स। इसके विकास को ठीक से समझें, क्योंकि यही वापसी में संत की यात्रा होगी। दूसरा चरण है आत्म-रति, आटो-इरोटिक। बच्चा खुद ही को प्रेम करता है। अपने ही हाथ-पैर से खेलता है। ऐसे ही प्रसन्न होता है अकारण। कोई साथी-संगी नहीं, खुद ही पड़ा-पड़ा मजा लेता है। मुस्कराता है।

CamScanner

9:22 pm 20 KB/s VoLTE 4G R 23%

जब मैं कहता हूं कि मेरे चरणों में नत झुको, तो कुछ हैं जो बड़े खुश होंगे कि बहुत बढ़िया बात कही। इसलिए नहीं कि वे किन्हीं और चरणों में झुकेंगे परमात्मा के, बल्कि इसलिए कि झुकने में उनको बड़ी बेचैनी मालूम पड़ती है, झुक नहीं सकते कहीं भी। वे कहेंगे, बिलकुल दुरुस्त, एकदम ठीक बात कही। जहां भी भीतर अहंकार मजबूत है, वे कहेंगे कि बिलकुल ठीक बात कही। झुकना नहीं चाहिए!

और यह बड़े मजे की बात है कि जो झुक जाता है उसके चरणों में, उसका फिर झुकना बंद हो जाता है, फिर और झुकने की कोई जरूरत नहीं रह जाती। जो झुक जाता है उसके चरणों में, उससे ऊंचा कोई नहीं रह जाता, वह सबसे ऊंचा हो जाता है। वे चरण इतने ऊंचे हैं कि उनमें झुकने में आप नीचे नहीं हो जाते, उनमें झुक कर आप ऊंचे हो जाते हैं, वे चरण इतने ऊंचे हैं।

लाओत्से कहता था: धन्य हैं वे जो झुके हुए हैं, क्योंकि उनको झुकना नहीं पड़ेगा।

ओशो

CamScanner

9:22 pm 0 KB/s VoLTE 4G R 23%

10 4 7

Rahul Kumar Ojha · 16h ·

रामकृष्ण के पास एक आदमी गया। रामकृष्ण से कहने लगा, गंगा-स्नान को जा रहा हूं। सुना है मैंने, परमहंसदेव, कि वहां नहाने से पाप बह जाते हैं।

परमहंस ने कहा, बिलकुल बह जाते हैं। लेकिन गंगा से बाहर मत निकलना! निकले कि फिर चढ़ जाते हैं। वे जो झाड़ देखे हैं न किनारे पर खड़े हुए, जब तक तुम डुबकी लगाते हो, गंगा तो पवित्र है, जब तुम डुबकी लगाओगे, वे झाड़ पर बैठ जाएंगे। वे बड़े-बड़े झाड़ इसीलिए हैं गंगा के किनारे, पता है आपको? वे उस पर बैठे रहेंगे कि बेटा, कब निकलते हो! और आखिर बेटा कब तक डूबा रहेगा? थोड़ी-बहुत देर में निकलेगा कि निकल गए पाप, वे फिर उतर कर सवार हो जाएंगे।

तो रामकृष्ण ने कहा, ऐसी गंगा में डूबो जहां से निकलना न पड़े। ऐसी भी गंगा है परमात्मा की, जहां डूबो तो निकलना न पड़े। निकलने को जगह ही नहीं है फिर वहां, डूबे तो डूबे ही, वही-वही है। फिर निकलना भी चाहो तो कहीं भागने का उपाय नहीं है, क्योंकि वही-वही है।

तो मैं भी कहता हूं कि चरण ऐसे भी हैं कि जहां झुको तो झुक ही जाओ, फिर उठना न पड़े। उन्हीं चरणों में झुकने का अर्थ है। जिन चरणों में झुको और उठो, तो बेकार की कवायद हो जाती है, कोई मतलब नहीं होता।

इसलिए कहता हूं, कोई झुकने की जरूरत नहीं है। झुको जरूर! यह मत सोच लेना...क्योंकि यह बड़ा डेलीकेट, बहुत नाजुक बात है। क्योंकि जब मैं कहता हूं कि मेरे चरणों में मत झुको, तो कुछ हैं जो बड़े खुश होंगे कि बहुत बढ़िया बात कही। इसलिए नहीं कि वे किन्हीं और चरणों में झुकेंगे परमात्मा के, बल्कि इसलिए कि झुकने में उनको बड़ी बेचैनी मालूम पड़ती है, झुक नहीं सकते कहीं भी। वे कहेंगे, बिलकुल दुरुस्त, एकदम ठीक बात कही। जहां भी भीतर अहंकार मजबूत है, वे कहेंगे कि बिलकुल ठीक बात कही। झुकना नहीं चाहिए!

और यह बड़े मजे की बात है कि जो झुक जाता है उसके चरणों में, उसका फिर झुकना बंद हो जाता है, फिर और झुकने की कोई जरूरत

CamScanner

9:18 am 0 KB/s VoLTE 4G R 78%

राम से कोई मतलब नहीं है। मेरे अहंकार को थोड़ा और बढ़ा दें कि मैं लौट कर जाकर कह सकूं कि मैं सदा ठीक था, सदा ही ठीक था। मैं और तर्क और प्रमाण जुटा लूं अपने ठीक होने के।
नहीं ऐसी भूल मैं नहीं करता।
ऐसा आदमी अगर बहुत हिम्मतवर हो तो ही मेरे पास टिक सकता है, नहीं तो भाग जाएगा। उसके बचने का कोई उपाय नहीं।
बहुत साहसी हो कि अपने अहंकार को टूटता देख सके और रुक जाए, तो ही रुक पाएगा। लेकिन तो ही रुके तो कोई अर्थ है।
तुम्हारे अहंकार को बचा कर तुम्हें मैंने रोक भी लिया अपने पास तो तुम्हारी भीड़ को इकट्ठा करके क्या करूंगा?

तुम्हारी भीड़ नहीं चाहिए, तुम्हारा निरहंकार भाव चाहिए।
एक भी व्यक्ति मेरे पास हो, लेकिन निरहंकार की भाव-दशा में हो, तो जो मैं चाहता हूं--जो परम फूल मुक्ति का--वह उसमें खिल सकता है...

-Osho

*

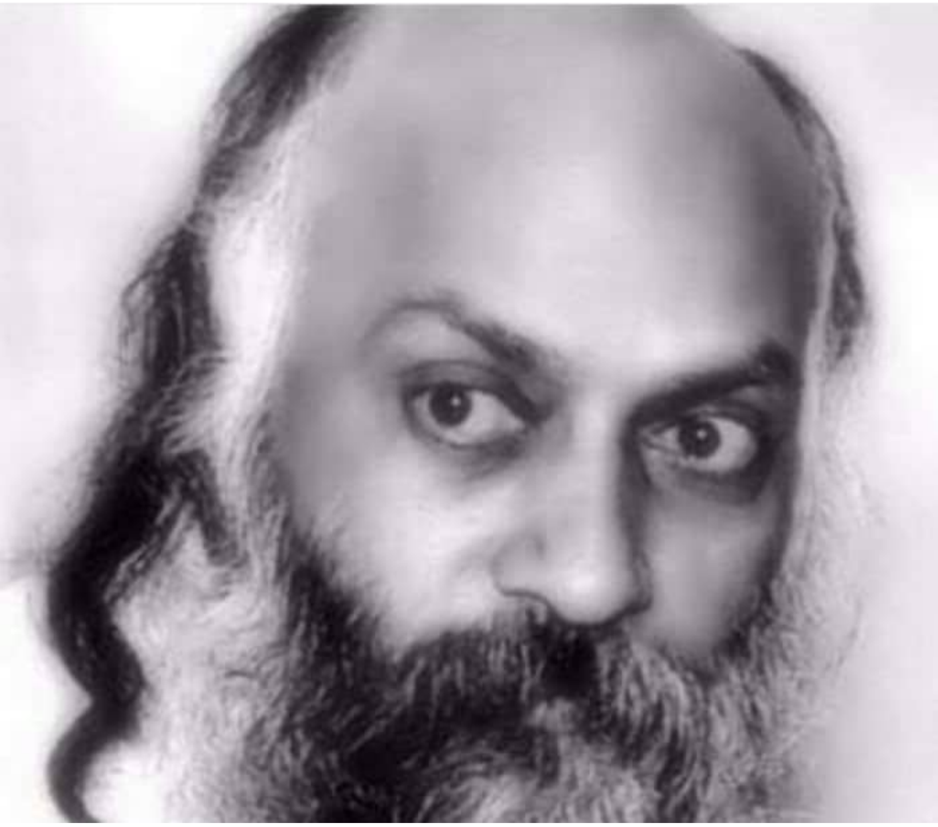

CamScanner

9:18 am 0 KB/s VoLTE 4G R 78%

वे आए थे सुनने कि मैं राम की प्रशंसा करूं। राम की प्रशंसा में मुझे कोई दिक्कत नहीं है, लेकिन मुसलमान से करता हूं मैं राम की प्रशंसा, राम के भक्त से नहीं करता। लोग मुझसे पूछते हैं, यह लाओत्से पर आप किसलिए बोल रहे हैं? तो मैं कहता हूं, यहां कोई चीनी नहीं है इसलिए। अगर चीन जाऊं तो लाओत्से पर भूल कर नहीं बोलूंगा। क्योंकि वहां लाओत्से के आधार पर अहंकार खड़े हो गए हैं। वहां तो लोग बड़े प्रसन्न होंगे कि ठीक; उनकी ही बात को मैं ठीक कह रहा हूं।

इसे थोड़ा समझ लें।

यह मेरा गणित थोड़ा समझ में आ जाए तो अच्छा। न कुछ लेना-देना है लाओत्से से, न कुछ लेना-देना है कृष्ण से।

अगर सवाल है कुछ तो मेरे और तुम्हारे बीच है।

तुम्हें तोड़ना है।

तुम्हारे अहंकार को गिराना है। और *जो-जो सहारे तुमने ले रखे हैं वे भी हटाने पड़ेंगे। नहीं कि वे सहारे गलत थे, बल्कि उन सहारों से तुमने एक गलत अहंकार खड़ा कर लिया था। इसलिए कभी हटाऊंगा और कभी जमाऊंगा।*

क्योंकि कभी मुझे लगेगा कि कोई ऐसा आदमी आ गया, कोई जैन आ जाए, तो मैं राम की प्रशंसा करता हूं।

गहरे में सवाल इस तरह के आदमी के साथ यह होता है कि वह जो मानता है उसकी परितृप्ति हो जाए, उसका अहंकार भर जाए; मैंने भी हां भर दी, मैंने भी प्रमाण पत्र दे दिया कि वह ठीक है।

जब राम का भक्त कहता है राम पर कुछ बोलें, तो वह यह नहीं कह रहा है कि राम से उसको कुछ लेना-देना है, वह यह कह रहा है कि मेरी जो मान्यताएं हैं उनको तृप्त करें, मेरी मान्यताओं पर जल सींचें।

राम से कोई मतलब नहीं है। मेरे अहंकार को थोड़ा और बढ़ा दें कि मैं लौट कर जाकर कह सकूं कि मैं सदा ठीक था, सदा ही ठीक था। मैं और तर्क और प्रमाण जुटा लूं अपने ठीक होने के।

नहीं ऐसी भूल मैं नहीं करता।

ऐसा आदमी अगर बहुत हिम्मतवर हो तो ही मेरे पास टिक सकता है, नहीं तो भाग जाएगा। उसके बचने का कोई उपाय नहीं।

बहुत साहसी हो कि अपने अहंकार को टूटता देख सके और रुक जाए,

CamScanner

9:18 am 279 KB/s 78%

37m ·

...मेरे पास इतने लोग आते हैं; उनमें तीन कोटियों के लोग हैं। एक वे हैं जो इसलिए आते हैं कि मैं उनकी मान्यताओं को पुष्ट कर दूं। वे मेरे पास आते ही नहीं; वे अपनी मान्यताओं की पुष्टि के लिए आते हैं। वे जो मानते हैं, अगर मैं भी कह दूं कि ठीक है, तो उनके चित्त की प्रसन्नता देखने जैसी होती है। उनका अहंकार पुष्ट हुआ। वे गीता के भक्त थे, और मैंने गीता की प्रशंसा कर दी; तत्क्षण मैं उनके लिए ज्ञानी हो जाता हूं। मैं ज्ञानी हो जाता हूं, क्योंकि वे ज्ञानी हैं, और गीता में उनकी श्रद्धा है और मैंने भी कह दी बात। मैंने उनकी ही बात कह दी। ऐसे लोग मुझसे आकर कहते हैं कि आपने जो कहा वह हमारी ही बात कह दी; चित्त प्रसन्न हो गया; बड़े आनंदित जा रहे हैं।
ऐसा मौका कम ही आ पाता है। ऐसे लोगों को मैं आनंदित नहीं भेजता। क्योंकि वह तो गलती हो जाएगी। यह तो गलत तरह का आनंद होगा। यह तो दवा न होगी, जहर होगा। इनके अहंकार को तो तोड़ना है। और अगर इनके अहंकार में गीता की बुनियाद रखी है तो गीता को भी तोड़ना जरूरी है, ताकि इनका अहंकार गिर जाए। अगर इन्होंने अपने अहंकार को कृष्ण के सहारे खड़ा कर रखा है तो कृष्ण को भी खींच लेना जरूरी है, ताकि इनका अहंकार गिर जाए।
एक मित्र कुछ ही दिन पहले आए। आते ही से हाथ जोड़ कर कहा कि और सब ठीक है, आप कभी रामायण पर बोलें। आए थे मुझे सुनने को। रामायण के भक्त हैं। मैंने कहा, राम में मेरा कोई लगाव नहीं। इसलिए नहीं कि राम में मेरा कोई लगाव नहीं है। जैसे ही मैंने कहा राम में मेरा कोई लगाव नहीं, उनके चेहरे पर अंधेरे बादल घिर गए। और मैंने कहा, तुलसीदास होंगे अच्छे कवि, लेकिन उनके संतत्व में मेरा भरोसा नहीं। पैर के नीचे से जमीन खिसक गई; फिर दोबारा उनके मुझे दर्शन ही न हुए। आए थे यहां रुकने दस दिन कि हां सुनेंगे। लेकिन दूसरे दिन सुबह वे दिखाई ही नहीं पड़े। सांझ मिल कर ही निबटारा हो गया।
ओशो

२

वे आए थे सुनने कि मैं राम की प्रशंसा करूं। राम की प्रशंसा में मुझे कोई दिक्कत नहीं है, लेकिन मुसलमान से करता हूं मैं राम की प्रशंसा,

CamScanner

7:45 pm 0 KB/s VoLTE 4G R 62%

समझ का अर्थ कृत्य है, करना है। जब तुम किसी चीज को समझ लेते हो तो तुम तुरंत उस दिशा में कुछ करने लगते हो। तुम्हें उसके संबंध में कुछ करना ही होगा। क्योंकि अगर वह बात ठीक है और तुम समझते हो कि वह ठीक है तो तुम्हें उसके लिए कुछ करना ही होगा। अन्यथा वह उधार ज्ञान बनकर रह जाता है, और उधार ज्ञान समझ नहीं बन सकता।

तुम भूल सकते हो कि यह ज्ञान उधार है तुम भूलना चाहोगे कि यह उधार है क्योंकि यह प्रतीति कि यह उधार है, तुम्हारे अहंकार को चोट पहुंचाती है। इसलिए तुम भूल भूल जाते हो कि यह उधार है। और धीरे धीरे तुम मानने लगते हो कि यह मेरा अपना ज्ञान है। और यह बात बहुत खतरनाक है।

भगवान श्री रजनीश
तंत्र सूत्र

96 29 comments • 14 shares

Like Comment Send Share

आध्यात्मिक मार्ग Aadhyaatmik Marg
Parshotam Rai · 6h ·

CamScanner

7:45 pm 0 KB/s VoLTE 4G R 62%

तुम्हें कुछ करने की दिशा में निर्णायक होना है। तुम संकट में हो घर जल रहा है। जीवन सदा जल रहा है, क्योंकि मृत्यु सदा पीछे छिपी है। किसी भी क्षण तुम नहीं हो सकते हो। और तुम मृत्यु के साथ तर्क—वितर्क नहीं कर सकते; तुम कुछ नहीं कर सकते। जब मृत्यु आती है, आ जाती है। समय बहुत कम है। अगर तुम सत्तर साल जीओगे, या सौ साल जीओगे, तो भी समय बहुत कम है। और तुम्हें रूपांतरित होने के लिए, आमूल क्रांति से गुजरने के लिए अपने ऊपर जो काम करना है, वह बहुत बड़ा है। इसलिए स्थगित मत करते रहो।

जब तक तुम्हें आपातस्थिति का, गहन संकट का बोध नहीं होगा, तुम कुछ नहीं करोगे। जब तक धर्म तुम्हारे लिए जीवनमरण का प्रश्न न बन जाए, जब तक तुम्हें ऐसा न लगने लगे कि रूपांतरण के बिना मेरा सारा जीवन व्यर्थ है, तब तक कुछ नहीं होगा, तुम व्यर्थ ही जीओगे। जब तुम इस बात को बहुत तीव्रता से, बहुत गंभीरता से और बहुत ईमानदारी से अनुभव करोगे तो ही ये विधियां काम की हो सकती हैं। तुम उन्हें समझ सकते हो, लेकिन समझने से क्या होगा? समझ किसी काम की नहीं है; यदि तुम उसके संबंध में कुछ कहते नहीं हो। दरअसल तुम जब तक उस दिशा में कुछ करते नहीं, समझना कि तुमने समझा ही नहीं। क्योंकि समझ को कृत्य बनाना जरूरी है; अगर समझ कृत्य नहीं बनती है तो वह परिचय भर है, वह समझ नहीं है।

इस फर्क को समझने की कोशिश करो। परिचय समझ नहीं है। परिचय तुम्हें कृत्य में उतरने को मजबूर नहीं करेगा, परिचय तुम्हें अपने में बदलाहट लाने के लिए विवश नहीं करेगा। उससे तुम कुछ करने के लिए बाध्य नहीं होगे। तुम उसे मन में इकट्ठा कर लोगे और वह तुम्हारी जानकारी बन जाएगा। तुम ज्यादा पंडित हो जाओगे, ज्यादा जानकार हो जाओगे। लेकिन मृत्यु के सामने सब खो जाता है, समाप्त हो जाता है। तुम बहुत सी चीजें इकट्ठी करते रहते हो, लेकिन उनके संबंध में कुछ करते नहीं; फिर वे तुम्हारे ऊपर बोझ बन कर रह जाती हैं।

समझ का अर्थ कृत्य है, करना है। जब तुम किसी चीज को समझ लेते हो तो तुम तुरंत उस दिशा में कुछ करने लगते हो। तुम्हें उसके संबंध में कुछ करना ही होगा। क्योंकि अगर वह बात ठीक है और तुम समझते हो

CamScanner

7:45 pm 0 KB/s • VoLTE 4G R 62%

शैतान ने कहा. 'तुम्हारा प्रस्ताव थोड़ा बेहतर है। तुम थोड़े से लोगों को समझाने में सफल हो सकते हो, लेकिन बहुसंख्यक लोग तुम्हारी नहीं सुनेंगे। वे नरक से उतने भयभीत नहीं हैं जितने वे स्वर्ग में प्रवेश पाने की कामना से भरे हुए हैं। यदि तुमने उन्हें समझा भी लिया कि नरक नहीं है, तो भी वे स्वर्ग की कामना करेंगे और उसके लिए वे नेक बनने की चेष्टा करेंगे।'

तब तीसरा शिष्य, जो सबसे बुद्धिमान था, बोला 'मेरा एक सुझाव है, मुझे उसे प्रयोग करने का मौका दें। मैं जाऊंगा और कहूंगा कि धर्म जो भी कहता है वह बिलकुल सच है, ईश्वर भी है और स्वर्ग भी है और नरक भी है, लेकिन कोई जल्दी नहीं है।'

और शैतान ने कहा : 'बिलकुल ठीक, तुम्हारे पास सही उपाय है। तुम जाओ।'

और कहा जाता है कि तब से फिर कभी नरक में कोई संकट पैदा नहीं हुआ। बल्कि वे अति भीड़ भाड़ की समस्या से परेशान हैं।

हमारा मन भी इसी भांति काम करता है। हम सदा सोचते हैं कि कोई जल्दी नहीं है। और ये विधियां जिनकी हम चर्चा कर रहे हैं, किसी काम की न होंगी, यदि तुम्हारा मन कहता है कि कोई जल्दी नहीं है। तब तुम स्थगित करते रहोगे और मृत्यु पहले पहुंच जाएगी और वह दिन नहीं आएगा जब तुम सोचो कि जल्दी करनी है, कि अब समय आ गया है। तुम निरंतर स्थगित करते रह सकते हो। यही हम अपने जीवन के साथ कर रहे हैं।

तुम्हें कुछ करने की दिशा में निर्णायक होना है। तुम संकट में हो घर जल रहा है। जीवन सदा जल रहा है, क्योंकि मृत्यु सदा पीछे छिपी है। किसी भी क्षण तुम नहीं हो सकते हो। और तुम मृत्यु के साथ तर्क—वितर्क नहीं कर सकते; तुम कुछ नहीं कर सकते। जब मृत्यु आती है, आ जाती है। समय बहुत कम है। अगर तुम सत्तर साल जीओगे, या सौ साल जीओगे, तो भी समय बहुत कम है। और तुम्हें रूपांतरित होने के लिए, आमूल क्रांति से गुजरने के लिए अपने ऊपर जो काम करना है, वह बहुत बड़ा है। इसलिए स्थगित मत करते रहो।

CamScanner

Rahul Kumar Ojha · 2d ·

कोई जल्दी नहीं है !

एक बार ऐसा हुआ कि शैतान वर्षों वर्षों प्रतीक्षा करता रहा और एक आदमी भी नरक नहीं आया। वह स्वागत के लिए तैयार था, लेकिन संसार इतने ढंग से चल रहा था और लोग इतने नेक थे कि कोई आदमी नरक नहीं आया। स्वभावत:, शैतान बहुत चिंतित हो उठा। उसने एक विशेष सभा बुलाई; उसके सर्वश्रेष्ठ शिष्य इस स्थिति पर विचार करने के लिए इकट्ठे हुए। नरक बहुत बड़े संकट से गुजर रहा था और यह बात बरदाश्त नहीं की जा सकती थी। कुछ करना जरूरी था। तो उसने सलाह मांगी 'हमें क्या करना चाहिए?'

एक शिष्य ने सुझाव दिया 'मैं पृथ्वी पर जाऊंगा और लोगों से बातें करूंगा, उन्हें समझाने की कोशिश करूंगा कि कोई ईश्वर नहीं है और सभी घर्म झूठे है और बाइबिल, कुरान और वेद जो भी कहते हैं वह सब बकवास है।'

शैतान ने कहा. 'इससे कुछ हल नहीं होगा, क्योंकि यह तो हम शुरू से ही करते आ रहे हैं और इससे लोग बहुत प्रभावित नहीं हुए। ऐसी शिक्षा से तुम सिर्फ उन्हें ही समझा सकते हो जो समझे ही हुए हैं। यह उपाय किसी काम का नहीं है, यह बहुत काम का नहीं है।'

तब दूसरे शिष्य ने, जो पहले से ज्यादा कुशल था, कहा: 'मैं जाऊंगा और लोगों को यह सिखाने की, समझाने की कोशिश करूंगा कि बाइबिल, कुरान और वेद जो भी कहते हैं वह सही है। स्वर्ग है, परमात्मा भी है। लेकिन कोई शैतान नहीं है, इसलिए तुम्हें डरने की जरूरत नहीं है। और अगर हम उन्हें कम भयभीत बना सके तो वे धर्म की बिलकुल फिक्र नहीं करेंगे; क्योंकि सभी धर्म भय पर खड़े हैं।'

शैतान ने कहा. 'तुम्हारा प्रस्ताव थोड़ा बेहतर है। तुम थोड़े से लोगों को समझाने में सफल हो सकते हो, लेकिन बहुसंख्यक लोग तुम्हारी नहीं सुनेंगे। वे नरक से उतने भयभीत नहीं हैं जितने वे स्वर्ग में प्रवेश पाने की कामना से भरे हुए हैं। यदि तुमने उन्हें समझा भी लिया कि नरक नहीं है, तो भी वे स्वर्ग की कामना करेंगे और उसके लिए वे नेक बनने की चेष्टा करेंगे।'

CamScanner

7:43 pm 0 KB/s VoLTE 4G R 63%

13h ·

एक नगर में पचपन वर्ष आयु की औरत रहती थी। एक दिन उसने एक ज्योतिषी को बुला कर उससे पूछा कि अभी मेरी कितनी उम्र बची है? ज्योतिषी ने हिसाब लगाकर बताया कि माता जी अभी तो आपके तीस वर्ष बचे हुए हैं। यह सुनकर वह खुश हो गई, और अपना पर्स बगल में दबा कर ब्यूटी पार्लर पहुँच गई।

दो घंटे लगा कर, एक हजार रुपये खर्च, जब वह बाहर निकली तो पहचान में ही नहीं आ रही थी। बिल्कुल पैंतीस की लग रही थी।

पर वह जैसे ही सड़क पर आई, एक ट्रक ने उसे कुचल दिया, और वह मर गई।

अब यमराज के यहाँ, यमदूतों से झगड़ रही है। कहती है कि तुम अंधे हो क्या? मुझे क्यों मार डाला? यहाँ कोई इंसाफ है या नहीं? अभी तो मेरे तीस वर्ष बाकी थे। तुमसे जरूर कोई भूल हुई है।

झगड़ा बढ़ा तो यमराज स्वयं आया। कहता है- देवी! हमारे यहाँ पक्का काम होता है। हमें जिसे उठाना होता है, हम उसी को उठाते हैं। यहाँ अंदाजा नहीं चलता। हम अपने यमदूतों को तस्वीर देकर भेजते हैं। भली प्रकार से मिलान होने पर ही किसी को मारा जाता है।

तस्वीर का नाम सुनते ही उस औरत ने कहा- वह तस्वीर मुझे दिखाएँ, जरूर कोई गड़बड़ है।

उसने तस्वीर देखी, सारा माजरा समझ गई और यमराज से कहा- महाराज! कृपा करके मुझे एक बाल्टी पानी मंगवा दें।

पानी आने पर जब उसने मल मल कर अपना चेहरा धोया, तो भीतर से असली चेहरा बाहर आया। जिसे देख कर यमराज ने भी अपना माथा पीट लिया। और कहा- देवी! इतना मेकअप क्यों करती हो, कि यमदूतों की भी पहचान में नहीं आती?

लोकेशानन्द कहता है कि दुनिया में सभी अपनी उम्र छिपाना चाहते हैं। बाल काले कर के, झुर्रियाँ दबा कर, हम किसे धोखा दे रहे हैं?

हमें समझना होगा कि हम दूसरों को धोखा नहीं दे रहे, खुद ही धोखा खा रहे हैं। हमें तो चेहरे की झुर्रियों और बालों की सफेदी से, सीख लेकर, वासनाओं का त्याग और परमात्मा प्राप्ति का प्रयास करना चाहिए।

CamScanner

7:42 pm 0 KB/s VoLTE 4G R 63%

स्वभावत:, जिनके हित तुम्हें कोल्हू के बैल बनाने में हैं वे सभी नाराज होंगे। मां-बाप चाहते हैं बच्चे आज्ञाकारी हों--बिना इसकी फिक्र किए कि उनकी आज्ञाएं मानने योग्य हैं या नहीं। शिक्षक चाहते हैं बच्चे आज्ञाकारी हों--बिना इसकी फिक्र किए कि उनकी आज्ञाएं मानने योग्य हैं या नहीं। राजनेता चाहते हैं कि जनता आज्ञाकारी हो। पंडित-पुरोहित चाहते हैं कि जनता आज्ञाकारी हो। हरेक चाहता है कि दूसरा आज्ञाकारी हो, क्योंकि आज्ञाकारी का शोषण किया जा सकता है। कोई नहीं चाहता कि दूसरा विचारशील हो।

विचारशील कभी मानेगा और कभी नहीं मानेगा। मानेगा तब जब उसके अंत:करण से मेल होगा; नहीं मानेगा, जब उसके अंत:करण से मेल नहीं होगा। उसके पास अपना मापदंड है, अपनी कसौटी है। कसेगा। सोना होगा तो हाँ कहेगा और पीतल होगा तो फेंक देगा।

और सभी चमकने वाली चीजें सोना नहीं हैं। और सभी आज्ञाएं सत्य नहीं हैं; और सभी आज्ञाएं शुभ नहीं हैं; और सभी आज्ञाएं सुंदर नहीं हैं।

काहे होत अधीर

प्रवचन 18

ओशो
संकलन-रामजी🙏🌹🌹

126 11 comments • 35 shares

Like Comment Send Share

Swami Lokeshanand
12h ·

एक नगर में पचपन वर्ष आयु की औरत रहती थी। एक दिन उसने एक ज्योतिषी को बुला कर उससे पूछा कि अभी मेरी कितनी उम्र बची है? ज्योतिषी ने हिसाब लगाकर बताया कि माता जी अभी त... See more

CamScanner

7:42 pm 0 KB/s VoLTE 4G R 63%

उसने कहा, तुमने मुझे नासमझ समझा है? बैल से ज्यादा नासमझ समझा है? मैंने उसके गले में घंटी बांध रखी है। चलता रहता है, घंटी बजती रहती है। और मैं जानता हूं कि बैल चल रहा है। जैसे ही रुकता है, घंटी बंद हो जाती है। मैं जल्दी से उचक कर उसे हांक देता हूं। उसे पता नहीं चल पाता कि पीछे हांकने वाला नहीं था। जैसे ही घंटी रुकी कि मैंने हांका, कि मैंने हांक दी। तो वह डरा रहता है कि कोई पीछे है, जरा रुका कि कोड़ा पड़ेगा।

तर्कशास्त्री तो तर्कशास्त्री फिर भी। उसने कहा, एक प्रश्न, आखिरी प्रश्न, क्या बैल खड़े होकर अपना सिर हिला कर घंटी नहीं बजा सकता?

उस तेली ने कहा, महाशय, जरा धीरे बोलिए। अगर बैल सुन लेगा, मेरा सारा धंधा खराब हो जाएगा। और तेल आप आगे से कहीं और से खरीदना। ऐसे आदमियों का आना-जाना ठीक नहीं। मैं बाल-बच्चे वाला आदमी हूं। यह बैल बिगड़ जाए तो मेरा सारा व्यवसाय टूट जाएगा। और बैल ही नहीं, मेरे बच्चे सुन लें तुम्हारी बातें, तो वे भी बिगड़ जाएंगे।

इसलिए तो जीसस को सूली देनी पड़ी, सुकरात को जहर पिलाना पड़ा। ये वे लोग थे जो तुम्हारी आंखों की पट्टियां उतारने की कोशिश कर रहे थे। ये वे लोग थे जो तुम्हारे गले में बंधी हुई घंटी से तुम्हें सचेत कर रहे थे। ये वे लोग थे जो कह रहे थे कि तुम गोल चक्करों में घूम रहे हो; तुम कहीं जा नहीं रहे हो; तुम व्यर्थ ही मेहनत कर रहे हो। रुको! सोचो पुनः! ये वे लोग थे जो तुम्हें समझा रहे थे कि आदमी बनो, कोल्हू के बैल नहीं।

स्वभावतः, जिनके हित तुम्हें कोल्हू के बैल बनाने में हैं वे सभी नाराज होंगे। मां-बाप चाहते हैं बच्चे आज्ञाकारी हों--बिना इसकी फिक्र किए कि उनकी आज्ञाएं मानने योग्य हैं या नहीं। शिक्षक चाहते हैं बच्चे आज्ञाकारी हों--बिना इसकी फिक्र किए कि उनकी आज्ञाएं मानने योग्य हैं या नहीं। राजनेता चाहते हैं कि जनता आज्ञाकारी हो। पंडित-पुरोहित चाहते हैं कि जनता आज्ञाकारी हो। हरेक चाहता है कि दूसरा आज्ञाकारी हो, क्योंकि आज्ञाकारी का शोषण किया जा सकता है। कोई नहीं चाहता कि दूसरा विचारशील हो।

विचारशील कभी मानेगा और कभी नहीं मानेगा। मानेगा तब जब उसके

CamScanner

7:41 pm 0 KB/s VoLTE 4G R 63%

Satish Purohit · 10h

आज्ञाकारी का शोषण किया जा सकता है

मैंने सुना है, एक तर्कशास्त्री सुबह-सुबह एक तेली के घर तेल लेने गया था। तेली तेल तौलने लगा। उसी की पीठ के पीछे कोल्हू चल रहा है। कोल्हू का बैल कोल्हू को चला रहा है, तेल पेरा जा रहा है। हैरान हुआ तर्कशास्त्री। क्योंकि बैल को कोई चला नहीं रहा है, वह अपने से ही चल रहा है। पूछा उसने तेली को। एक जिज्ञासा मेरे मन में उठी है, कहा उसने, इतना धार्मिक बैल कहां पा गए कलियुग में? सतयुग की छोड़ो, ऐसे ही ऐसे बैल होते थे। लेकिन यह बैल कलियुग में कहां पा गए? अब तो मारो-पीटो तो भी बैल चलते नहीं हैं। हड़ताल कर दें, घिराव कर दें, सींग मारें, शोरगुल मचाएं, झंडा उठाएं, स्वतंत्रता की आवाज दें। यह बैल तुम्हें कहां मिल गया--ऐसा श्रद्धालु कि कोई चला भी नहीं रहा है और चल रहा है!

तेली हंसने लगा। उसने कहा, आपको राज पता नहीं है। बैल धार्मिक नहीं है, उसे चलाने के पीछे एक व्यवस्था है। देखते हैं, उसकी आंखों पर पट्टी बंधी है! उसे सिर्फ अपने सामने दिखाई पड़ता है; न इस तरफ देख सकता है, न उस तरफ; न बाएं, न दाएं। इसलिए वह यह सोचता है कि यात्रा कर रहा है, कहीं जा रहा है। उसे पता ही नहीं चलता कि गोल चक्कर खा रहा है; कहीं जा नहीं रहा है; कोई यात्रा नहीं हो रही है। उसे समझ में आ जाए कि गोल घूम रहा हूं, तो अभी रुक जाए। मगर वह सोच रहा है--कहीं पहुंच रहा हूं, कोई मंजिल, कोई मुकाम करीब आ रहा है।

तर्कशास्त्री भी तर्कशास्त्री था। उसने कहा, माना, देखा मैंने कि आंख पर पट्टी बांधी है। लेकिन कभी रुक कर भी तो देख सकता है कि कोई हांकने वाला है या नहीं।

उसने कहा, तुमने मुझे नासमझ समझा है? बैल से ज्यादा नासमझ समझा है? मैंने उसके गले में घंटी बांध रखी है। चलता रहता है, घंटी बजती रहती है। और मैं जानता हूं कि बैल चल रहा है। जैसे ही रुकता है, घंटी बंद हो जाती है। मैं जल्दी से उचक कर उसे हांक देता हूं। उसे पता नहीं चल पाता कि पीछे हांकने वाला नहीं था। जैसे ही घंटी रुकी

CamScanner

जिसने तुम्हारा अपमान किया है,
वह उसकी मौज है। उसे जो ठीक लगा,
उसने किया। जिसने तुम्हारा सम्मान
किया है, उसकी मौज। उसे जो
ठीक लगा उसने किया।
जो उसके पास था, उसने दिया।
तुम अपमान और सम्मान दोनों को
एक ही धन्यवाद के भाव से स्वीकार
कर लेना, दोनों का आभार प्रगट कर
देना और आंख मूंदकर भीतर
डुबकी लगा लेना। "ओशो"

CamScanner

7:34 pm
64%
ओशो की बातें 21h
कैसे सुकून पाऊँ
तुझे देखने के बाद
PLEASE FOLLOW
O_S_H_O_WORLD
Send message...

CamScanner

11:39 am
68%
WINEXCH
वो करीब ही न आये तो इज़हार क्या करते!
खुद बने निशाना तो शिकार क्या करते!
मर गए पर खुली रखी आँखें! इससे ज्यादा किसी का
इंतजार क्या करते!
2.1K
Insta || @faqir_.bab
2
221
Use audio
Send
faqir__.baba
Post पसंद आऐ तो follow जरूर करें ... more
Add a comment...

CamScanner

11:39 am
0 KB/s
VoLTE 4G R 68%
WINEXCH
LINK IN BIO
5000+ SLOTS & CRASH GAMES
WINEXCH.COM
अजीब सौदागर हैं, ये वक़्त भी.
जवानी का लालच देकर, बचपन ले गया और..
अमीरी का लालच देकर, जवानी ले गया..!!
Insta || @faqir_.baba
17
1
Use audio
Send
faqir__.baba
Post पसंद आऐ तो follow जरूर करें... more

CamScanner

11:40 am
WINEXCH
चश्मदीद अन्धा बन रहा, बहरा सुने दलील
झूठों का है दबदबा, सच्चे हुए जलील
66
4
2
@Faqirbaba
faqir__.baba
Post पसंद आऐ तो follow जरूर करें... more
Send
Nusrat Fateh Ali Khan · Ki

CamScanner

11:40 am
faqir__.baba
Post पसंद आऐ तो follow जरूर करें... more
Send
Nusrat Fateh Ali Khan · Ki
आखिर क्यों रिश्तो की गलियाँ इतनी तंग हैं...
शुरुआत कौन करे, यहीं सोच कर बात बंद है...
Insta || @faqir_.baba
32
1

CamScanner

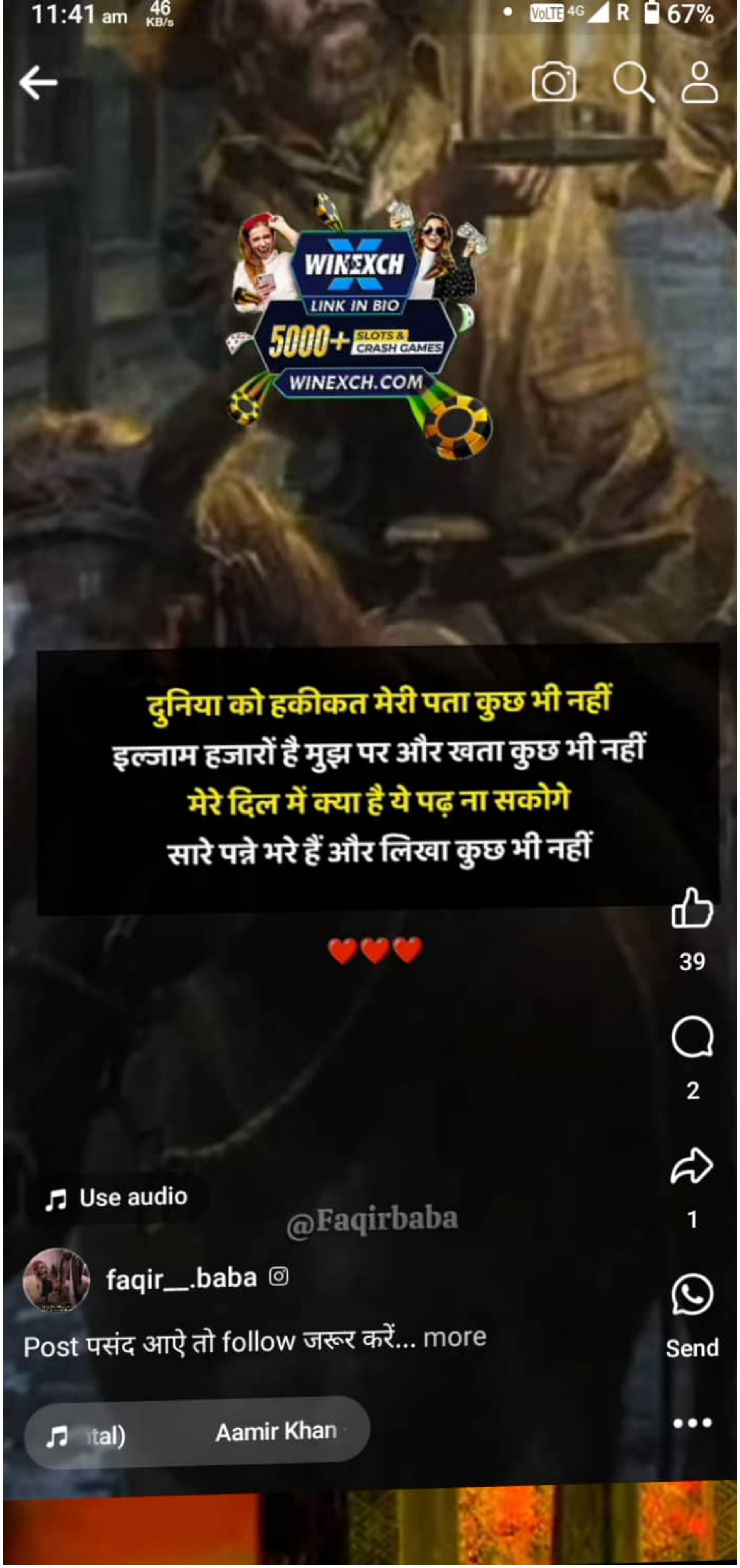
11:41 am
WINEXCH
LINK IN BIO
5000+ SLOTS & CRASH GAMES
WINEXCH.COM
दुनिया को हकीकत मेरी पता कुछ भी नहीं
इल्जाम हजारों है मुझ पर और खता कुछ भी नहीं
मेरे दिल में क्या है ये पढ़ ना सकोगे
सारे पन्ने भरे हैं और लिखा कुछ भी नहीं
39
2
1
Send
Use audio
@Faqirbaba
faqir__.baba
Post पसंद आऐ तो follow जरूर करें... more
Aamir Khan

CamScanner

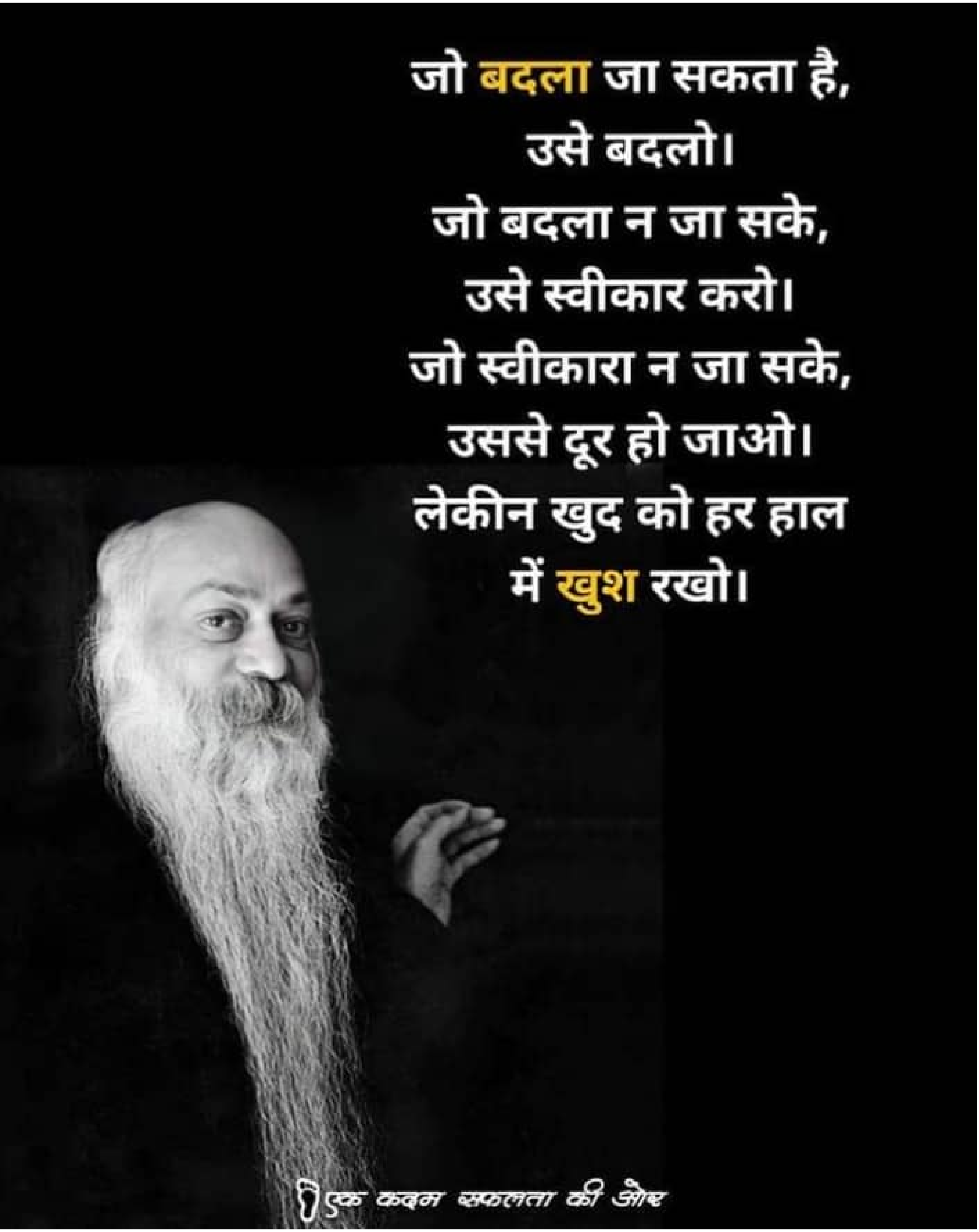
जो बदला जा सकता है,
उसे बदलो।
जो बदला न जा सके,
उसे स्वीकार करो।
जो स्वीकारा न जा सके,
उससे दूर हो जाओ।
लेकिन खुद को हर हाल
में खुश रखो।
एक कदम सफलता की ओर

CamScanner

12:30 pm 0 KB/s VoLTE 4G R 79%
facebook
8

Rahul Kumar Ojha · 5d ·

🌹🌹तुम्हें अपनी पीड़ा का पता है? काश, पता होता, तो तुम ऐसे ही बने रहते जैसे तुम हो! कुछ करते न! घर में आग लगी हो और तुम बैठे रहते, ताश खेलते रहते! चौपड़ बिछाए रहते! शतरंज के हाथी-घोड़े चलाते रहते!--घर में आग लगी होती! काश, तुम्हें दिखाई पड़ जाए कि घर लपटों से घिरा है, तो कुछ करोगे, आग को बुझाने के लिए कोई उपाय करोगे।

तुम्हें अभी अपनी पीड़ा भी नहीं दिखाई पड़ती। कभी भूल-चूक से दिखाई भी पड़ जाए, तो तुम उसे जल्दी छिपा लेते हो। ढांक लेते हो। शराब पी कर छिपा लेते हो; सिनेमा-गृह में बैठ कर भूल जाते हो; मित्रों से गपशप करने में लग जाते हो; अपने को सदा व्यस्त रखते हो, जब तक जागे रहते हो, सुबह से लेकर रात तक उलझे रहते हो, लगे रहते हो कहीं न कहीं। क्योंकि लगे रहोगे, उलझे रहोगे, तो पीड़ा दिखाई न पड़ेगी। न पड़ेगी पीड़ा दिखाई, न पीड़ा को बदलने के लिए कुछ करना पड़ेगा। थके-मांदे रात गिर जाते हो--रात भी चैन नहीं, सपनों में उलझे रहते हो। वह भी तुम्हारी चालबाजी है। सपने भी तुम्हारी ईजाद हैं।

दिन में तुम काम में उलझाए रखते हो अपने को, रात भी विश्राम नहीं। क्योंकि जहां विश्राम हुआ, वहां डर है कि कहीं भीतर के घाव दिखाई न पड़ जाएं।

इस दुनिया में अधिकतम लोग अपने घावों को भुलाने में लगे हैं। मिटाने में नहीं। जो घावों को भुलाने में लगे हैं, उन्हीं को मैं गृहस्थ कहता हूं।

और जो घावों को मिटाने में लग जाते हैं, उन को संन्यस्त कहता हूं। गृहस्थ और संन्यस्त की मेरी और कोई परिभाषा नहीं है। भगोड़ों को नहीं कहता संन्यासी, जगोड़ों को कहता हूं--जो जाग उठे। जिन्होंने देखा कि घर में आग लगी है और हम क्या कर रहे हैं! हम कैसे गंवा रहे हैं समय को!

लोग समय गंवा ही नहीं रहे हैं, लोगों से अगर पूछो कि भई, क्या कर रहे हो? लोग कहते हैं: समय काट रहे हैं। कोई हुक्का पीकर समय काट रहा

CamScanner

12:30 pm 0 KB/s VoLTE 4G R 79%
facebook

लोग समय गंवा ही नहीं रहे हैं, लोगों से अगर पूछो कि भई, क्या कर रहे हो? लोग कहते हैं: समय काट रहे हैं। कोई हुक्का पीकर समय काट रहा है; कोई ताश खेल कर समय काट रहा है; कोई व्यर्थ की बकवासों में पड़ा है और समय काट रहा है। पागलो, समय तुम्हें काट रहा है; और तुम सोच रहे हो कि तुम समय को काट रहे हो!

हमारे पास समय के लिए जो मौलिक शब्द है, वैसा शब्द दुनिया में किसी भाषा के पास नहीं है। क्योंकि हमारे पास एक ऐसा शब्द है समय के लिए जो अनूठा है। समय को हमने कहा है: काल। और मृत्यु को भी काल कहा है। दोनों का एक ही नाम है, अकारण नहीं है। उसके पीछे सार्थकता है। क्योंकि समय मृत्यु है। समय तुम्हारी मृत्यु को करीब ला रहा है। जो तुम्हारी मृत्यु को करीब ला रहा है, वही समय है। इसलिए ठीक है दोनों को एक ही नाम देना। समय और कुछ नहीं, मृत्यु की पगध्वनियां हैं। इसलिए समय को भी काल कहा, मृत्यु को भी काल कहा।

समय तुम्हें खा रहा है। गला रहा है! और मूढ़ता की हद है, कि लोगों का समय काटे नहीं कटता, समय काटने के लिए मनोरंजन चाहिए, समय काटने के लिए न मालूम क्या-क्या उपाय करते हैं। किसे धोखा दे रहे हो? जरा आंख खोलो! समय कितनों को काट चुका है! करोड़ों-करोड़ों लोग काटे जा चुके हैं। रोज कोई गिरता है, रोज कोई मरता है, फिर भी तुम समय काट रहे हो?!

पहली तो जरूरत है कि अपनी पीड़ा को समझो। अपने गहन दुख को समझो। तुम्हारा जीवन अभी नरक है। लेकिन नहीं समझना चाहते। नहीं समझना चाहते तो नहीं सुनते हो। मलूक जैसे व्यक्ति से मिलना भी हो जाए तो भी बहरे हो जाते हो। अंधे हो जाते हो।

जीसस ने बार-बार कहा है: आंखें हों तो देख लो और कान हों तो सुन लो! किससे कहते हैं जीसस? तुमसे कहते हैं। तुम्हारे ही जैसे लोगों से कहा था। उनके पास भी तुम्हारी जैसी आंखें थीं, और तुम्हारे जैसे कान थे। लेकिन क्यों बार-बार कहते हैं: कान हों तो सुन लो, आंख हों तो देख

CamScanner

12:30 pm 0 KB/s VoLTE 4G R 79%
facebook

जीसस ने बार-बार कहा है: आंखें हों तो देख लो और कान हों तो सुन लो! किससे कहते हैं जीसस? तुमसे कहते हैं। तुम्हारे ही जैसे लोगों से कहा था। उनके पास भी तुम्हारी जैसी आंखें थीं, और तुम्हारे जैसे कान थे। लेकिन क्यों बार-बार कहते हैं: कान हों तो सुन लो, आंख हों तो देख लो? इसलिए कहते हैं कि लोग कहां देखते हैं, यहां-वहां देखते हैं! कान हों तो कुछ का कुछ सुनते हैं। जो देखना चाहिए, नहीं देखते; जो सुनना चाहिए, नहीं सुनते।

सबसे बड़ी देखने की बात तो यह है कि मैं अपनी परिस्थिति समझूं कि मैं कहां हूं, क्या हूं?

🌹ओशो🌹
"राम दुवारे जो मरे - 9"

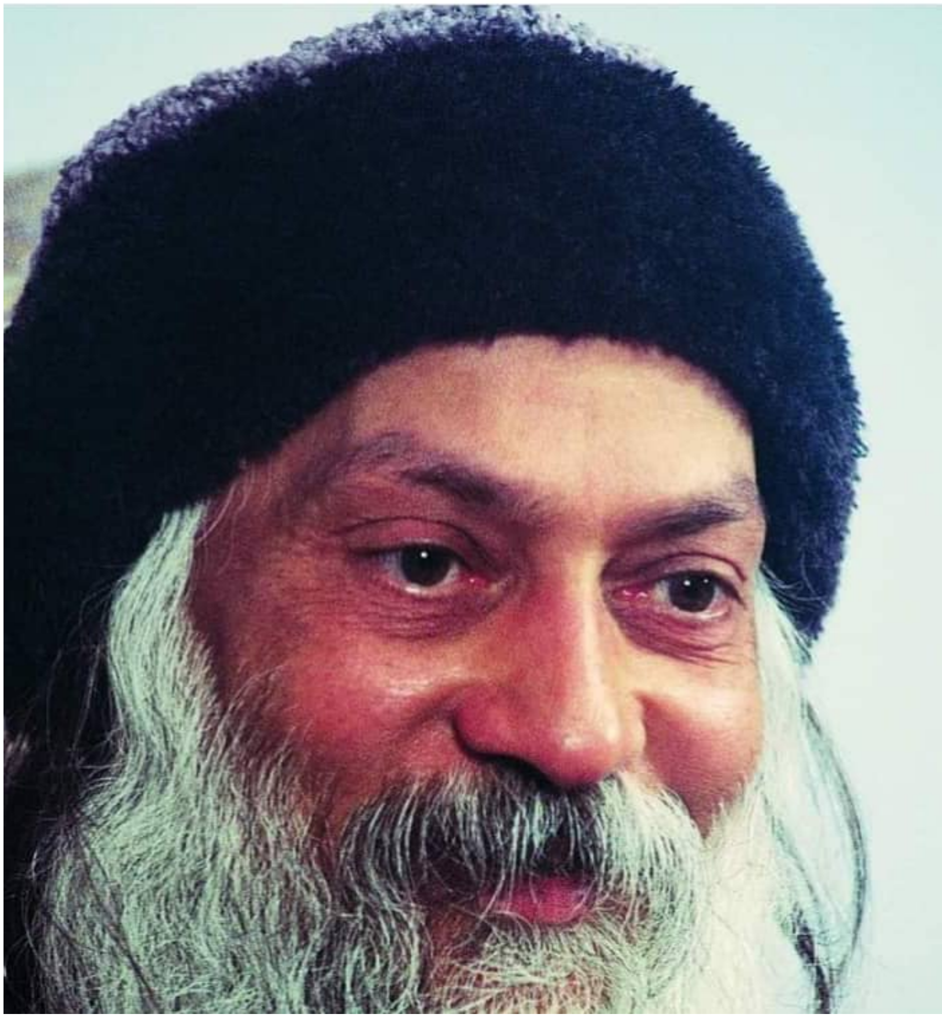

CamScanner

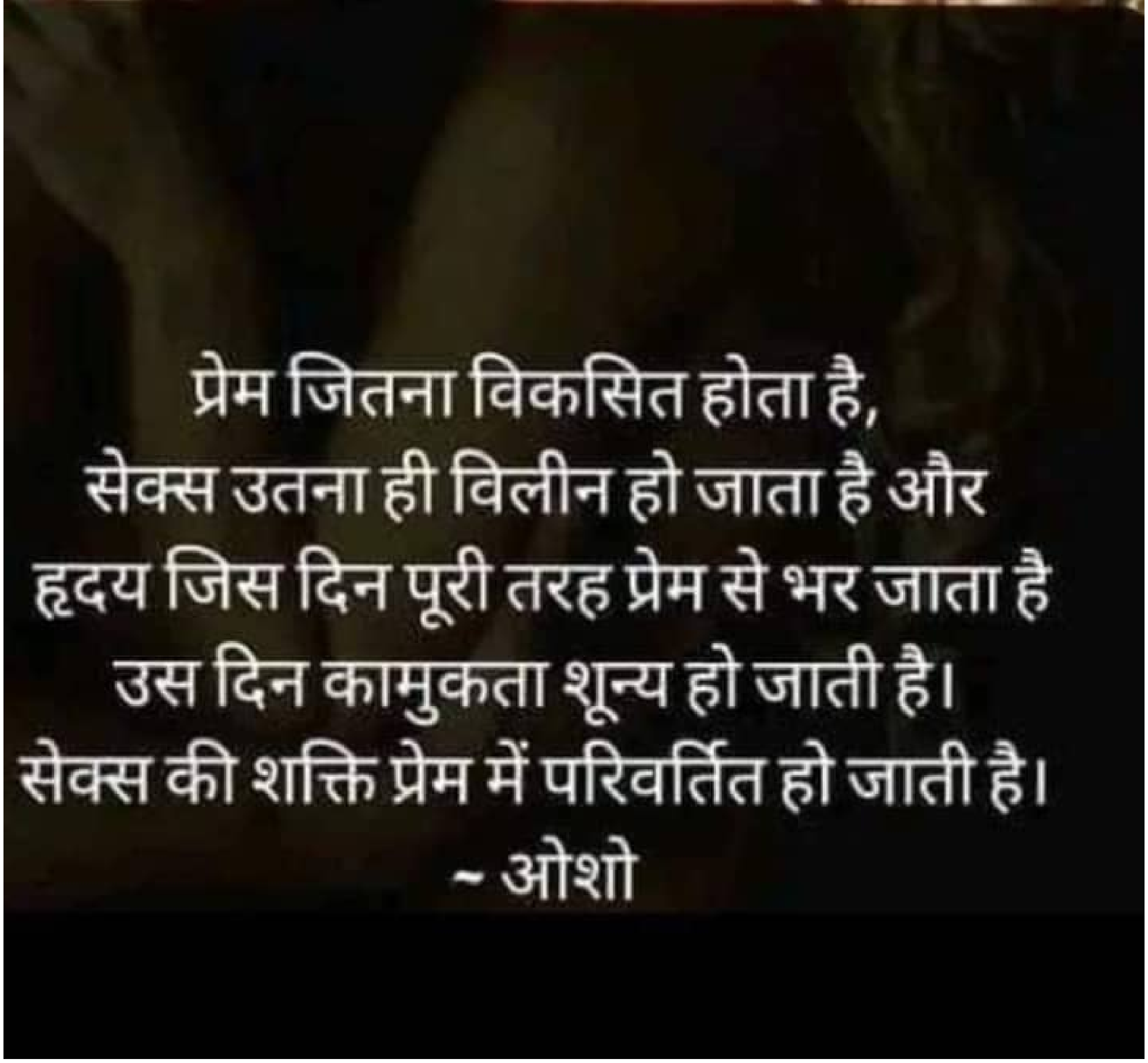
प्रेम जितना विकसित होता है,
सेक्स उतना ही विलीन हो जाता है और
हृदय जिस दिन पूरी तरह प्रेम से भर जाता है
उस दिन कामुकता शून्य हो जाती है।
सेक्स की शक्ति प्रेम में परिवर्तित हो जाती है।
~ ओशो

CamScanner

LAfz. 10h
Rahat Fateh Ali Khan
0:10
उम्र ने लोगों को पढ़ना सिखा दिया..
और अनुभव ने समझना..।।
Sanjida soch

CamScanner

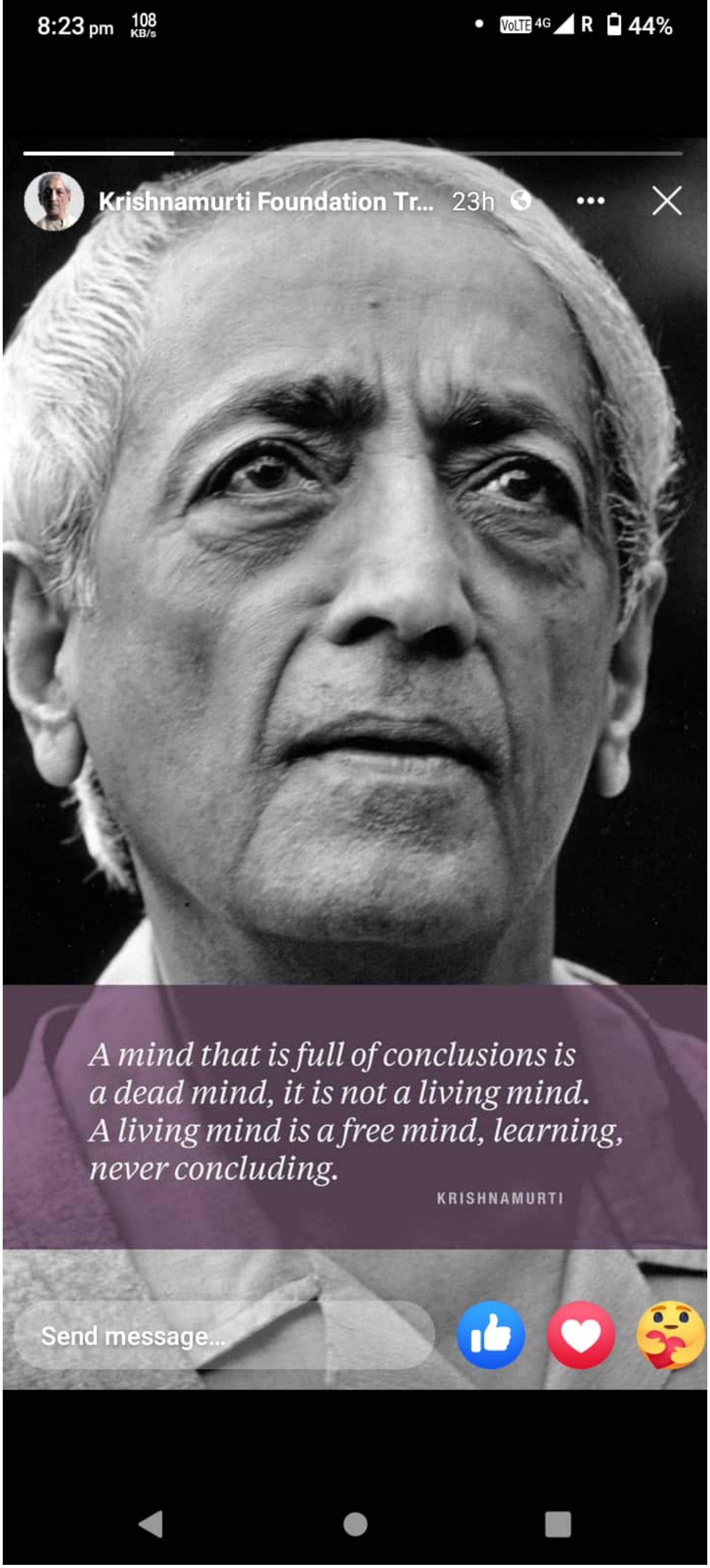
8:23 pm
Krishnamurti Foundation Tr... 23h
A mind that is full of conclusions is a dead mind, it is not a living mind. A living mind is a free mind, learning, never concluding.
KRISHNAMURTI
Send message...

CamScanner

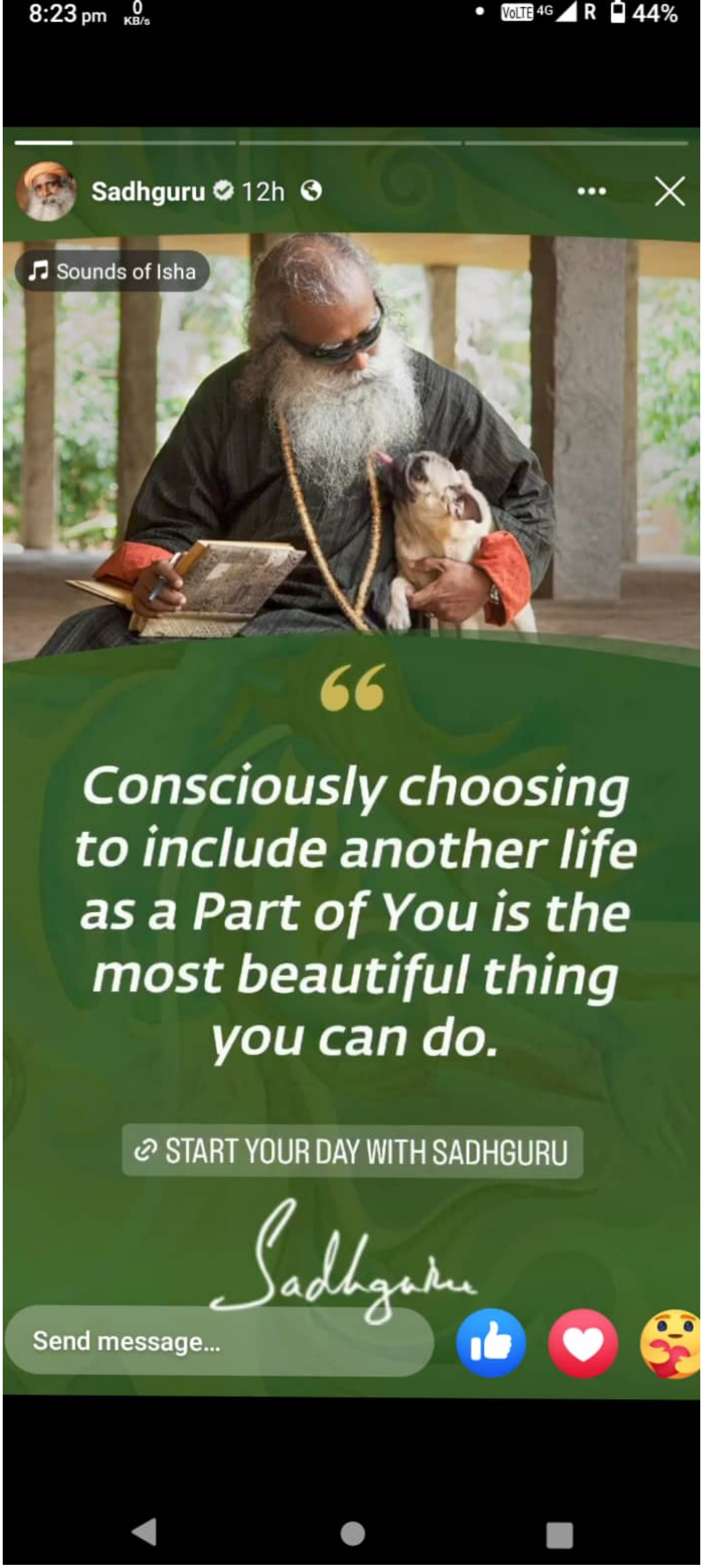
8:23 pm
Sadhguru 12h
Sounds of Isha
Consciously choosing to include another life as a Part of You is the most beautiful thing you can do.
START YOUR DAY WITH SADHGURU
Sadhguru
Send message...

CamScanner

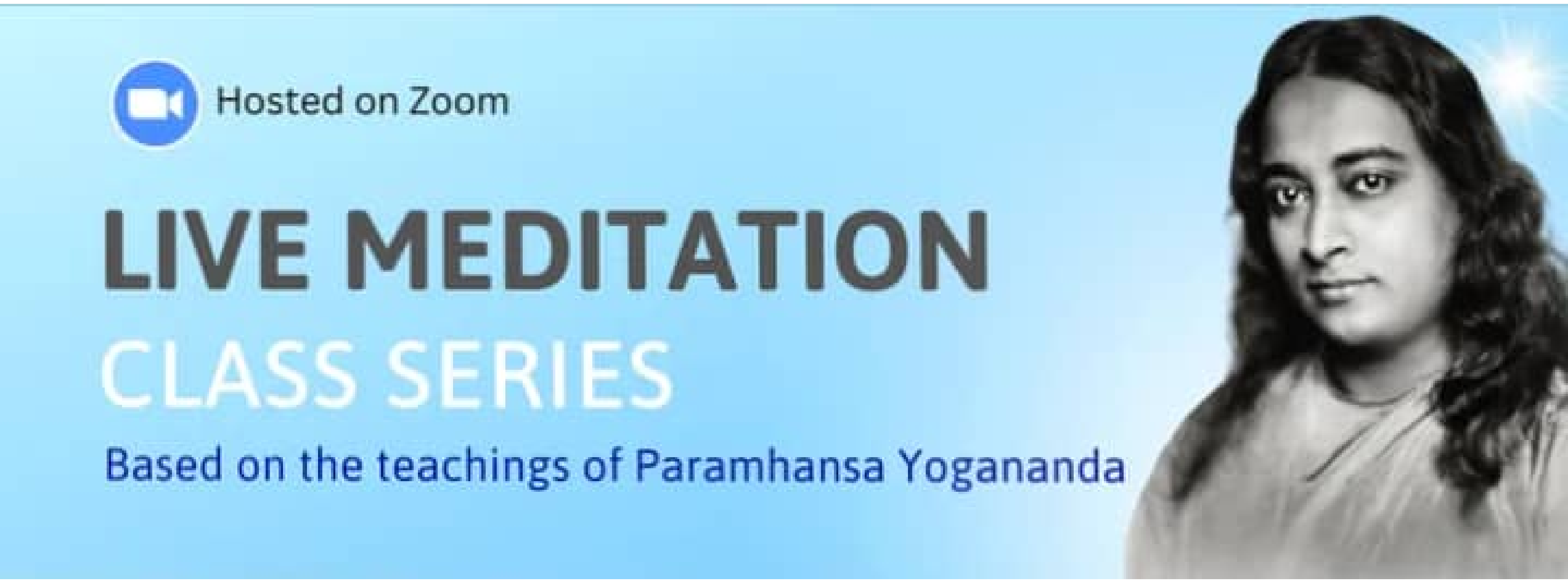
Hosted on Zoom
LIVE MEDITATION
CLASS SERIES
Based on the teachings of Paramhansa Yogananda

CamScanner

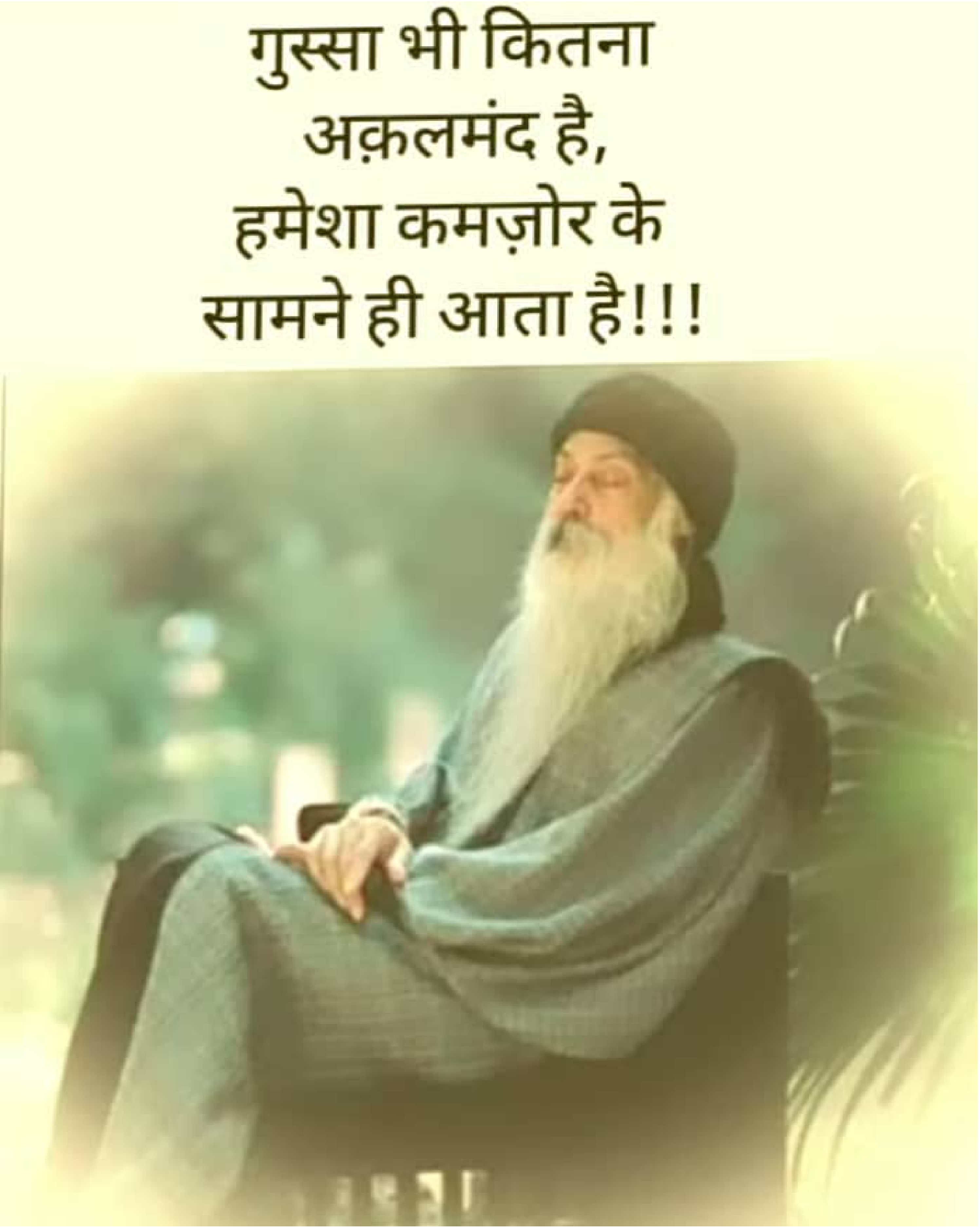

CamScanner

ओशो एक सत्य

osho_तनाव_तीव्र_होगा_अंततः_तनाव आपको_तोड़_देगा ।
#ओशो #Osho #oshotrack #oshohindi ...

CamScanner

ओशो एक सत्य

किसी का ह्रदय प्रेम से जीता जाता है तर्क से नही।
#ओशो #Osho #oshotrack #oshohindi
#oshodairy #oshovani #oshozen #oshodi ...

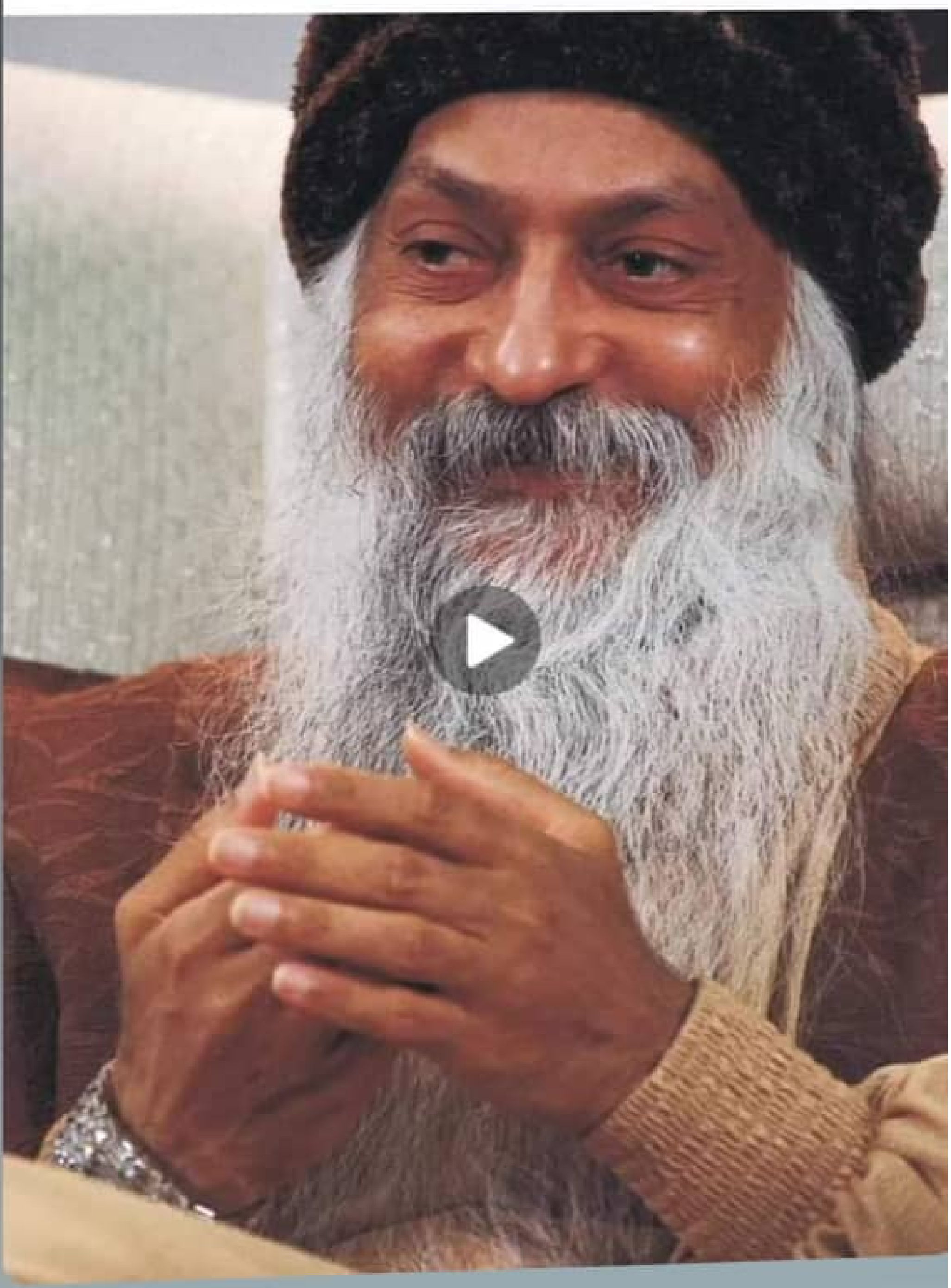

Send message...

CamScanner

No Meditation, No Life
Know Meditation, Know Life

Are you unfulfilled despite having everything?

Sadhguru says:

"A good bank balance, a good body and a g ...More

SIGN UP

CamScanner

CamScanner

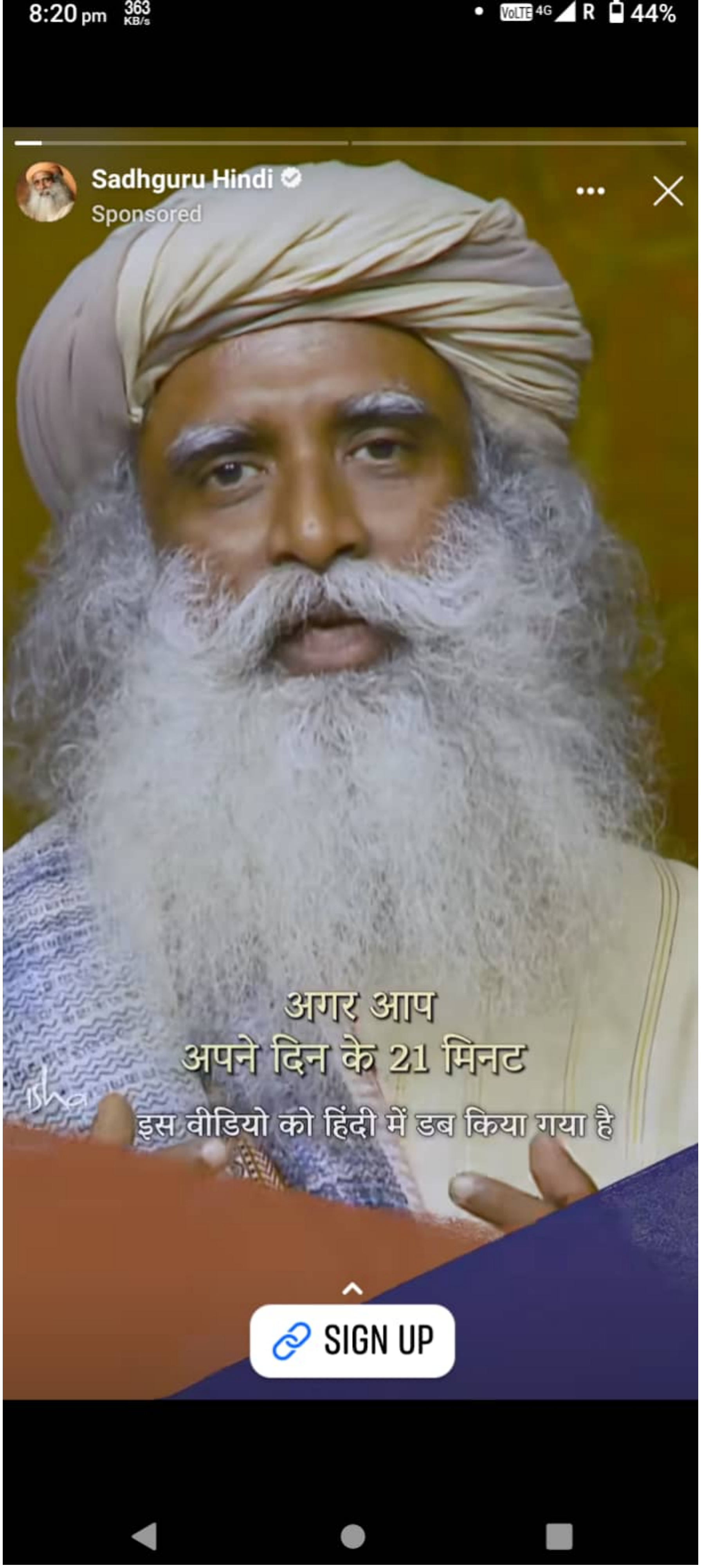
8:20 pm
363 KB/s
44%
Sadhguru Hindi
Sponsored
अगर आप
अपने दिन के 21 मिनट
इस वीडियो को हिंदी में डब किया गया है
SIGN UP

CamScanner

8:20 pm
Osho dhyan. 10h
अफवाहें नफरत करने
वालों द्वारा बनाई जाती है।
मुर्खों द्वारा फैलाई जाती है।
और बेवकूफों द्वारा स्वीकार
की जाती है।
Send message...

CamScanner

एक क़दम सफलता की ओर 10h
EkKadamSafaltakiOrr
आज फिर से लौट आया बिना माँगे
तेरे दर से। तुझे देख लेता हूँ तो
ख्वाहिशें खत्म हो जाती है.!
एक कदम सफलता की ओर
Send message...

CamScanner

एक क़दम सफलता की ओर 23h
EkKadamSafaltakiOrr
जब भी तू मुझसे कुछ छीन लेता है मैं
नाच उठता हूँ की, पूरी दुनिया में
एक मैं ही तुझे अमीर मिला.!
एक कदम सफलता की ओर
Send message...

CamScanner

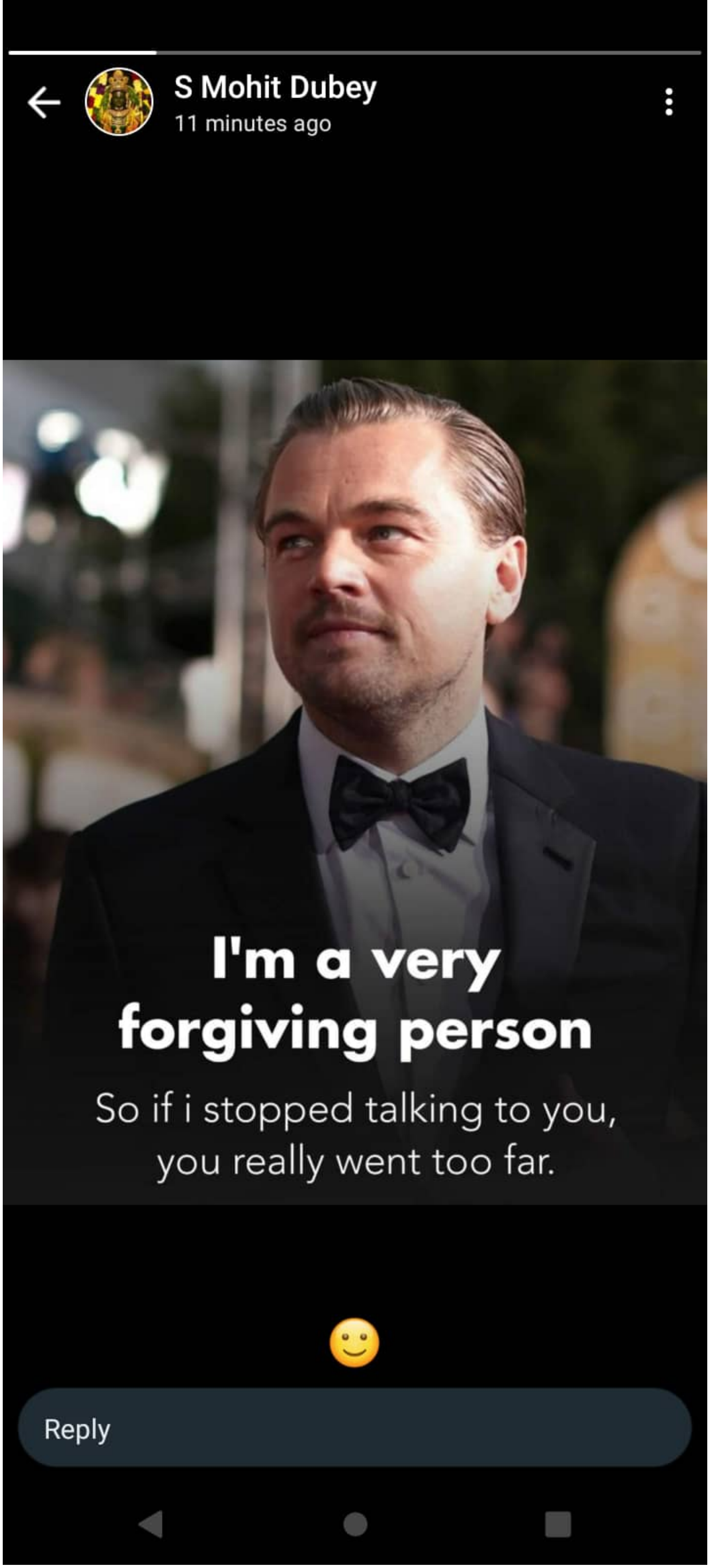
S Mohit Dubey
11 minutes ago
I'm a very
forgiving person
So if i stopped talking to you,
you really went too far.
Reply

CamScanner

11:22 pm 2 KB/s • VoLTE 4G R 24%
facebook
3 2

Naye bharat ke khoj
1d ·

चलो! खोजो! तुम्हारा जीवन है, तुम्हें अन्वेषण करना है, तुम्हें जानना है--क्या है यह जीवन? क्या है यह चैतन्य? क्या है तुम्हारे भीतर छिपा हुआ राज? कौन हो तुम अपने अंतरतम में? कौन छिपा है तुम्हारे हृदय की गुफा में--कौन सा नाद? कौन सा संगीत? कौन सा सत्य? कौन सा सौंदर्य?
और जिसने अपने भीतर के केंद्र को पहचान लिया, उसे मिल गया निर्वाण, उसे मिल गया मोक्ष, उसे मिल गया राम! राम कोई व्यक्ति नहीं है जो तुम्हें बाहर मिलेगा। *राम है तुम्हारी आंतरिक संभावना!* मेरा प्रयोजन तुम्हारे भीतर बैठे हुए शाश्वत के स्वर से है।
शांत होओ, मौन होओ, निःशब्द होओ, धीरे-धीरे मन की भीड़ से बाहर निकलो, चल पड़ो अपने अंतर-गृह की तरफ! जब पूर्ण सन्नाटा रह जाए, जब कोई तरंग भी न उठती हो, जब चेतना की झील यूं हो जाए जैसे दर्पण, तब सब राज खुल जाते हैं-भीतर के भी, बाहर के भी। क्योंकि वस्तुतः भीतर और बाहर के राज अलग-अलग नहीं हैं। भीतर और बाहर शब्द उपयोग करने पड़ते हैं तुम्हारे अहंकार के कारण। अहंकार गया तो फिर भीतर ही बाहर है और बाहर ही भीतर है। फिर एक ही शेष रह जाता है!

-ओशो

CamScanner

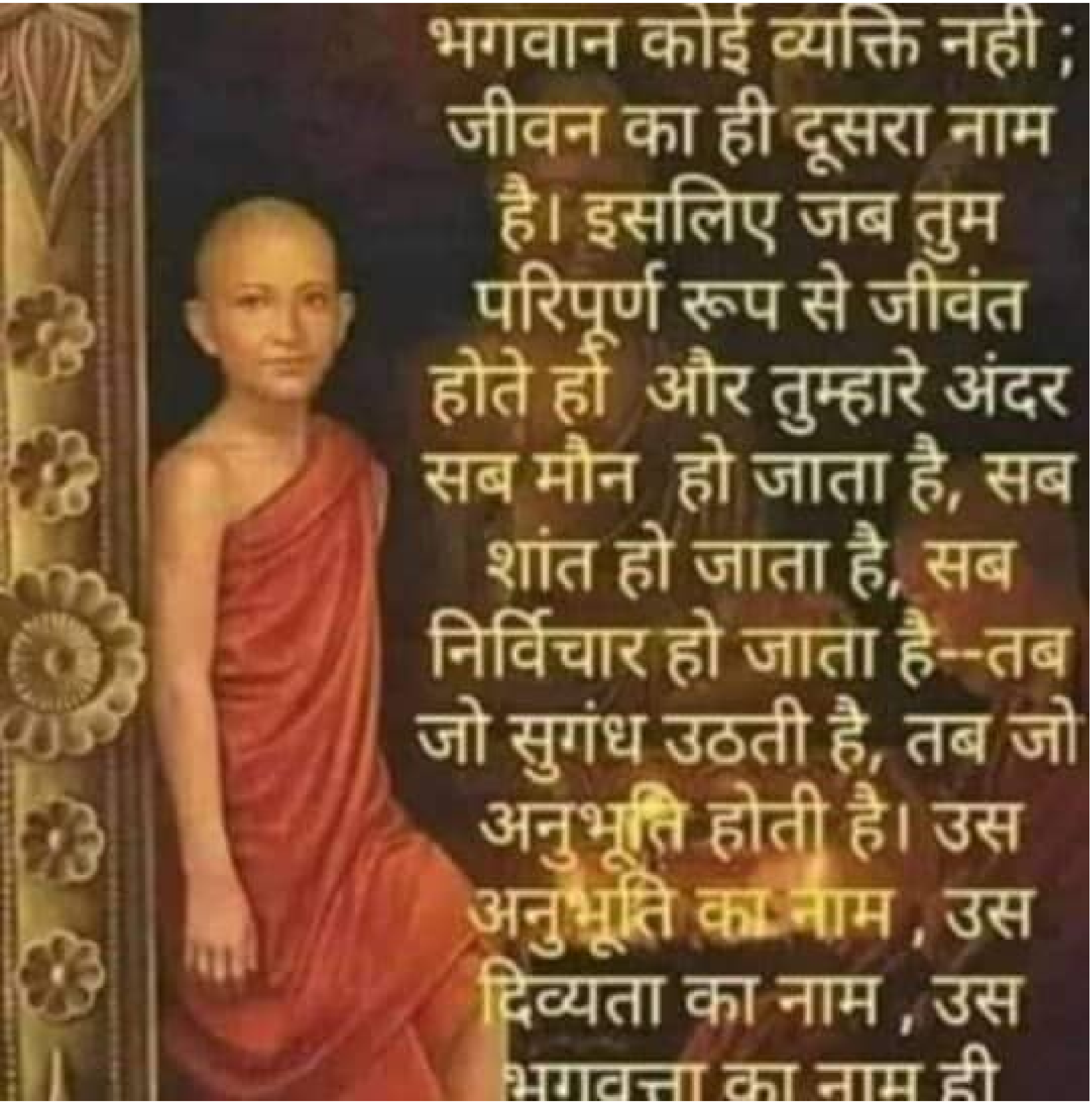
भगवान कोई व्यक्ति नही ;
जीवन का ही दूसरा नाम
है। इसलिए जब तुम
परिपूर्ण रूप से जीवंत
होते हो और तुम्हारे अंदर
सब मौन हो जाता है, सब
शांत हो जाता है, सब
निर्विचार हो जाता है--तब
जो सुगंध उठती है, तब जो
अनुभूति होती है। उस
अनुभूति का नाम , उस
दिव्यता का नाम , उस

CamScanner

मैं काबिल नहीं,
तेरा शुकराना कैसे
अदा करूँ मेरे मालिक
ना मिट्टी मेरी,
ना रूह मेरी,
बोल क्या अर्पण करूँ।
facebook/wisdomguruwar

CamScanner

आप अस्तित्व की इच्छा से पैदा
नही हुए
बल्कि आप स्वयं अस्तित्व की
ही इच्छा हो
गहराई में खुद को खोजोगे तो
खुद को ही वह अस्तित्व के रूप
में पाओगे।

CamScanner

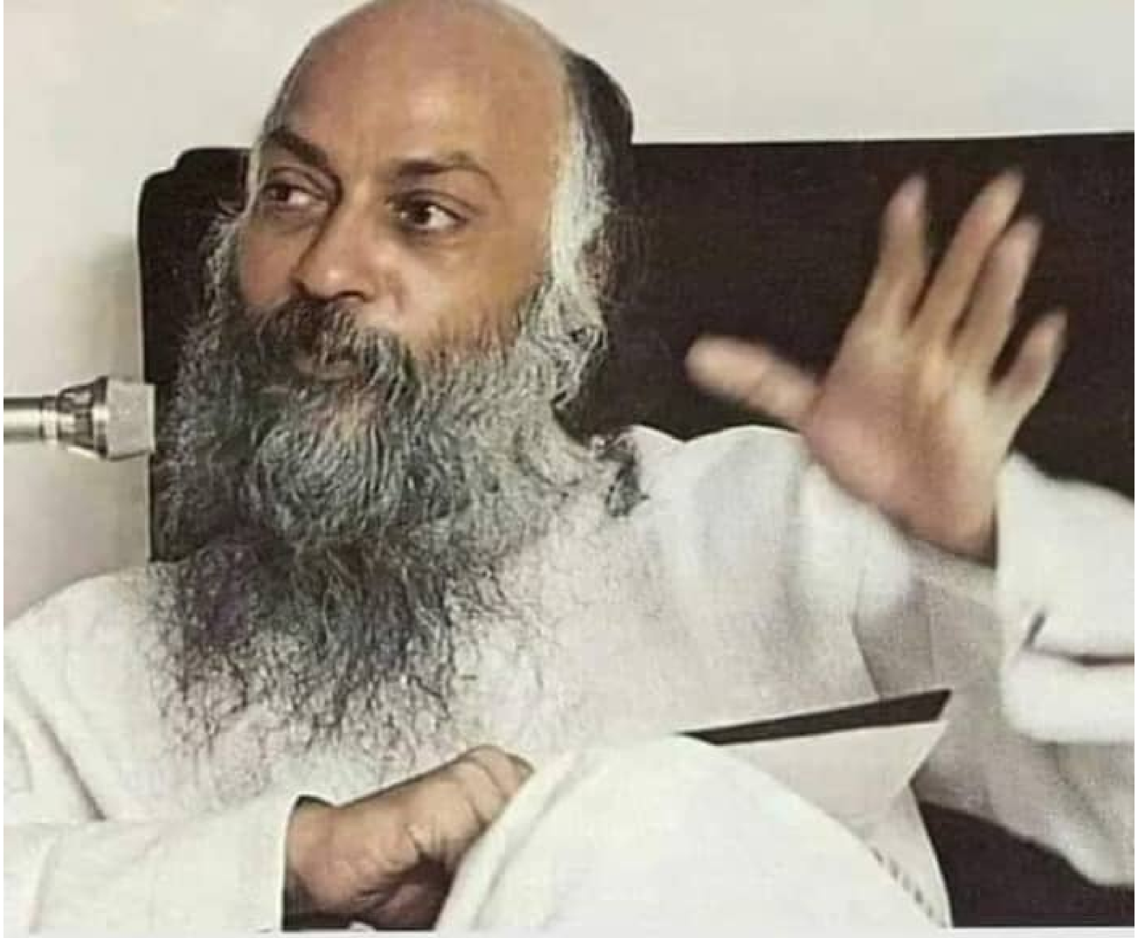

जीव दया पर महावीर का इतना
जोर है। वह सिर्फ अहिंसा के
कारण नहीं। उसके कारण बहुत
गहरे आध्यात्मिक हैं। वह जो
तुम्हारे पास चलता हुआ कीड़ा
है, वह तुम ही हो। कभी तुम भी
वही थे। कभी तुम भी वैसे ही
सरक रहे थे, एक छिपकली की
तरह, एक चींटी की तरह, एक
बिच्छू की तरह तुम्हारा जीवन
था। आज तुम भूल गये हो, तुम
आगे निकल आये हो। लेकिन
जो आगे निकल जाये और पीछे
वालों को भूल जाये, उस आदमी
के भीतर कोई करुणा, कोई
प्रेम, कोई मनुष्यत्व नहीं है।
ओशो

CamScanner

दुनिया में कोई भी संतुष्ट नहीं हैं ।
गरीब अमीर होना चाहतें है ।अमीर सुदंर होना
चाहतें है ।कुवारें शादी करना चाहते हैं और
शादी-शुदा मरना चाहते हैं ।
यहाँ हर आदमी दुःखी है ।इसका कारण इतना
ही है कि यहाँ कोई अपने होने में राजी नहीं हैं।
हरेक आदमी दूसरे जैसा होना चाहता है।
जबकि सुखी होने का *फार्मूला है* –
तुम अपने होने में राजी हो जाओ,
क्योंकि तुम सिर्फ तुम हो।
~ओशो

CamScanner

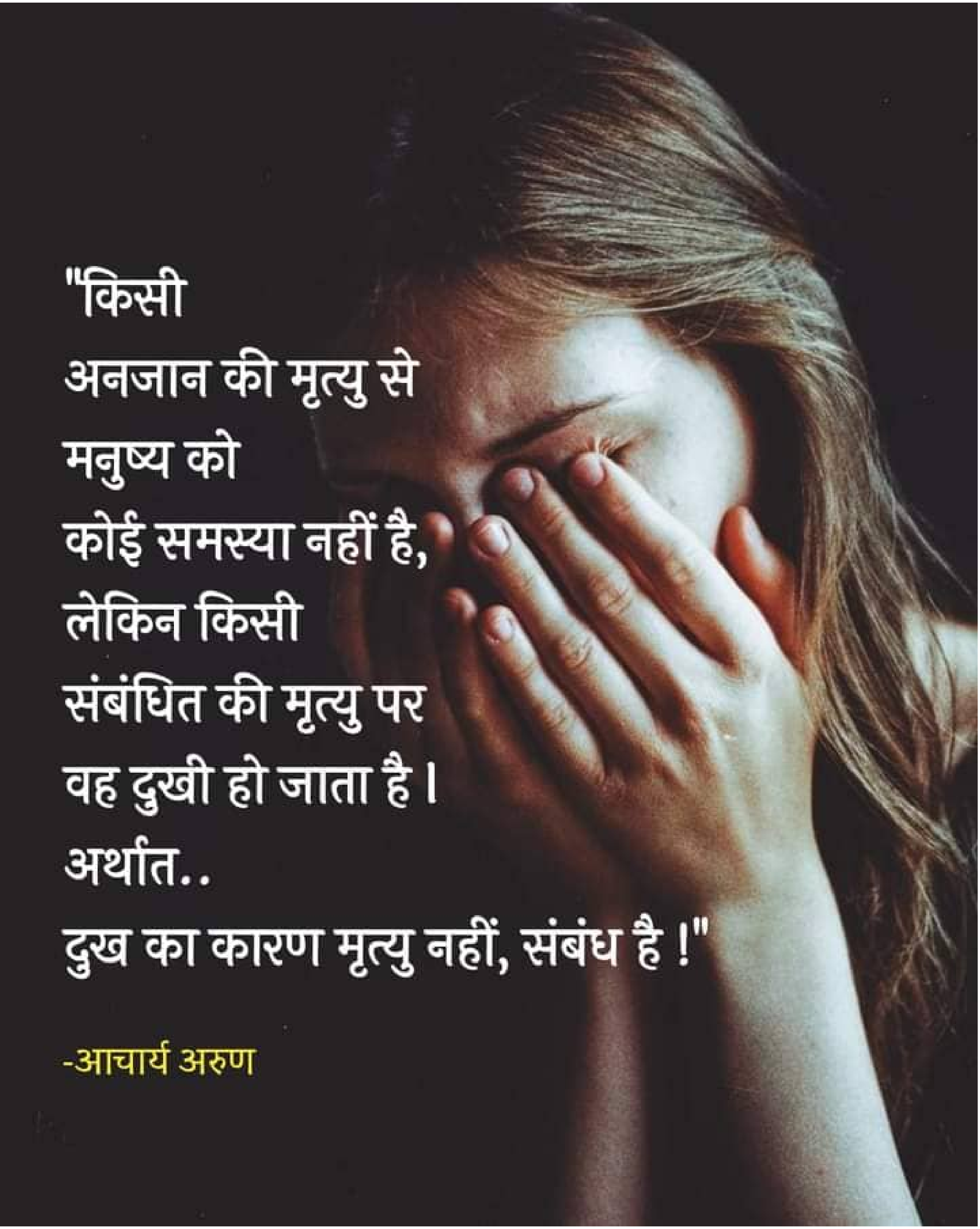

CS CamScanner

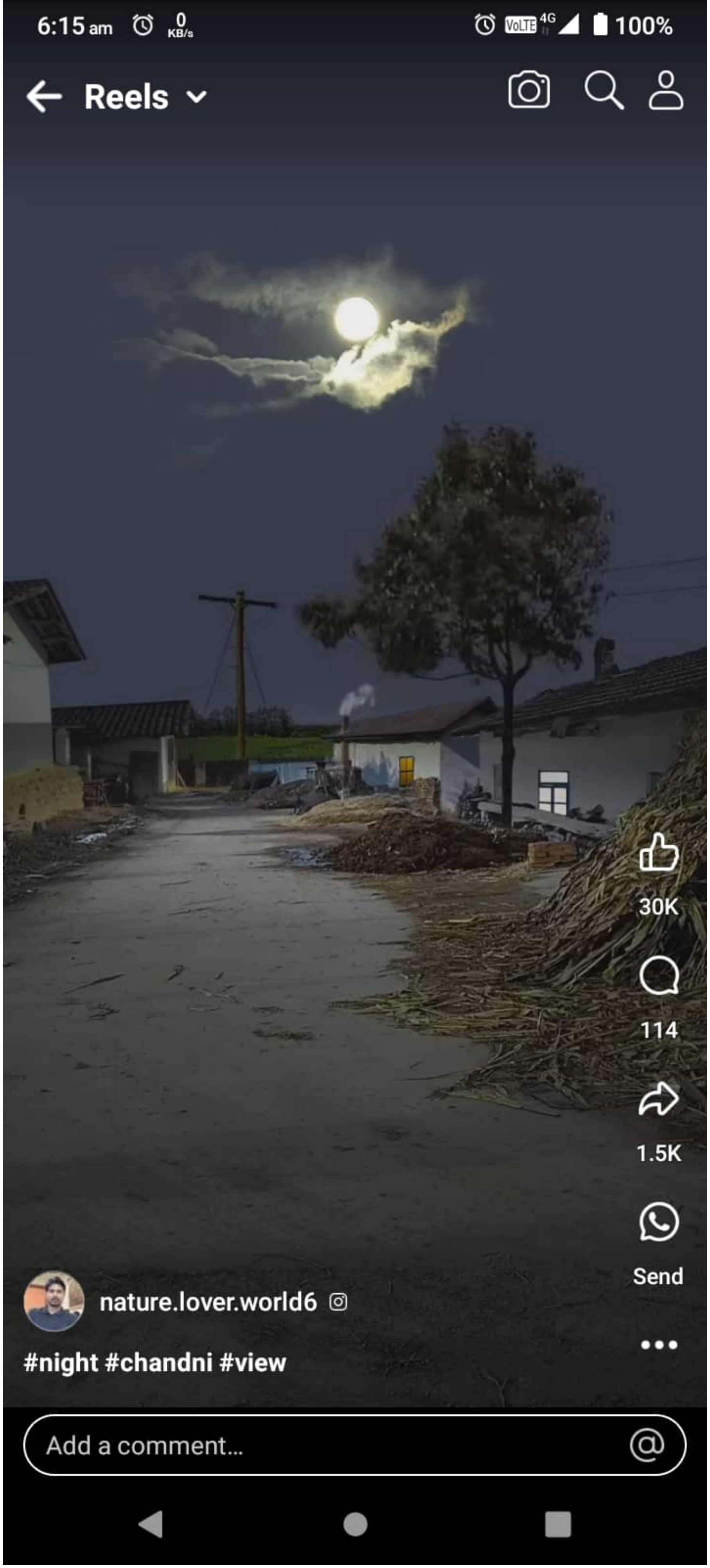
6:15 am
100%
Reels
30K
114
1.5K
Send
nature.lover.world6
#night #chandni #view
Add a comment...

CamScanner

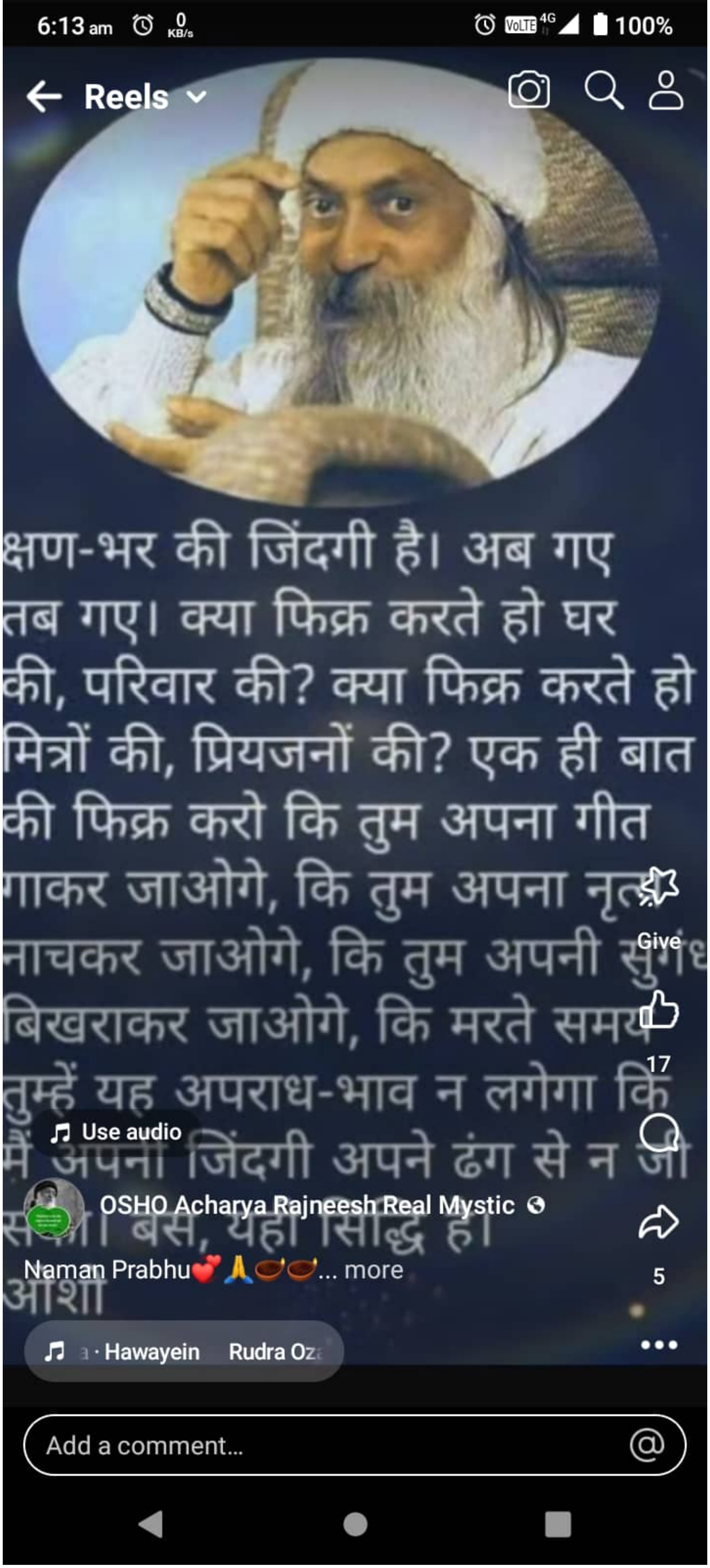
6:13 am
100%
Reels
क्षण-भर की जिंदगी है। अब गए
तब गए। क्या फिक्र करते हो घर
की, परिवार की? क्या फिक्र करते हो
मित्रों की, प्रियजनों की? एक ही बात
की फिक्र करो कि तुम अपना गीत
गाकर जाओगे, कि तुम अपना नृत्
नाचकर जाओगे, कि तुम अपनी सुगंध
बिखराकर जाओगे, कि मरते समय
तुम्हें यह अपराध-भाव न लगेगा कि
मैं अपनी जिंदगी अपने ढंग से न जी
सका। बस, यही सिद्धि है।
ओशो
Give
17
Use audio
OSHO Acharya Rajneesh Real Mystic
Naman Prabhu💕🙏🪔🪔... more
5
Hawayein Rudra Oz
Add a comment...

CamScanner

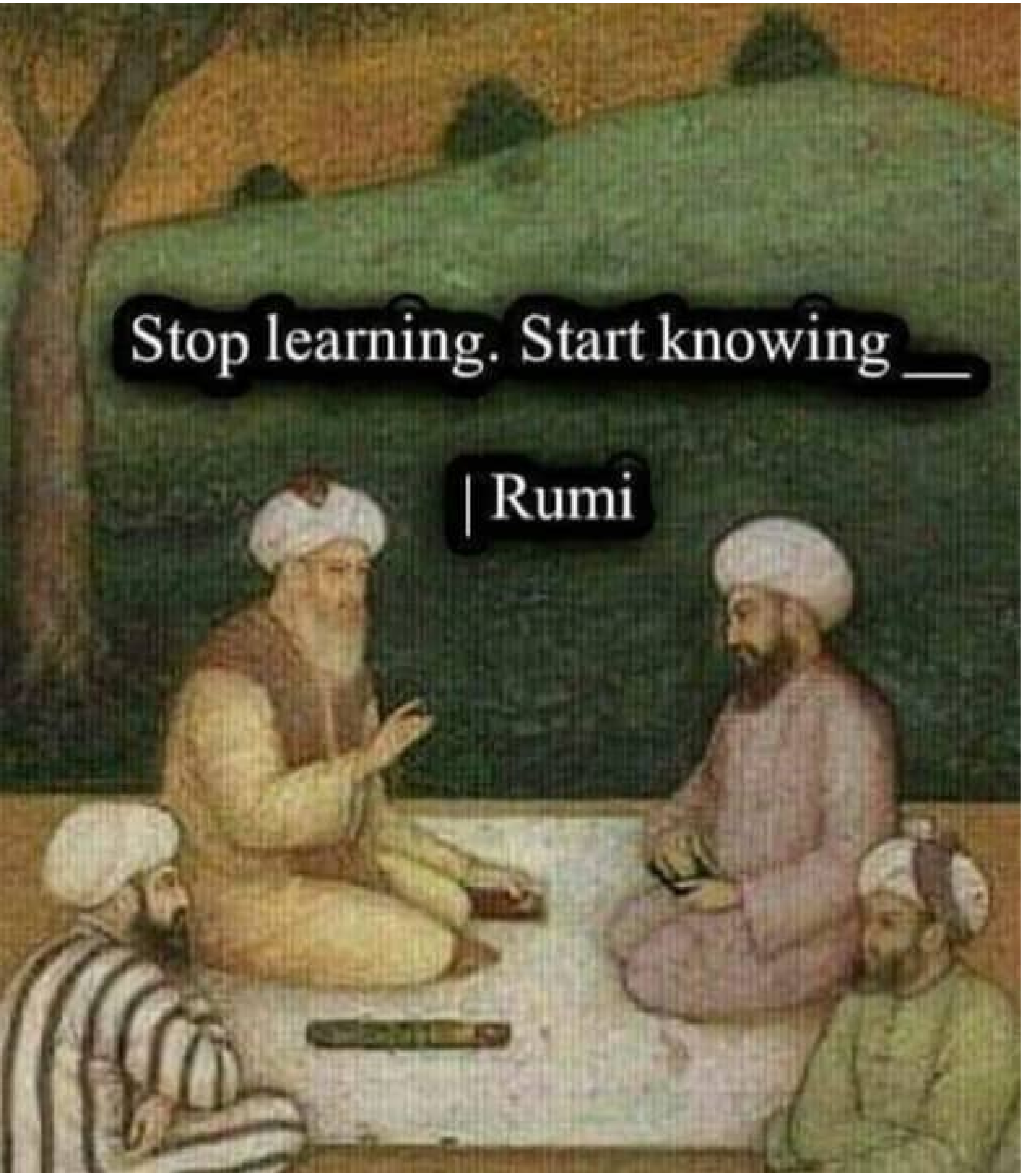

CamScanner

O Shivam

Community admin

Monday

सूफियों की एक कहानी है कि एक गिलहरी एक वृक्ष के नीचे बैठी है और एक लोमड़ी गुजरती है। तो वह लोमड़ी गिलहरी से कहती है कि नासमझ, मुझे देख कर भी तू भाग नहीं रही है! तुझे पता है, मैं लोमड़ी हूं, तुझे अभी दो टुकड़े कर सकती हूं।
गिलहरी ने कहा कि कोई प्रमाणपत्र है? हैव यू गॉट एनी सर्टिफिकेट? तुम लोमड़ी हो, इसका कोई लिखित प्रमाणपत्र है?

लोमड़ी बड़ी हैरानी में पड़ी, क्योंकि ऐसा गिलहरियों ने कभी पूछा ही नहीं था। यह बड़ी अनहोनी घटना थी। गिलहरी भाग जाती थी लोमड़ी को देख कर। किसी गिलहरी ने कभी कोई यह जुर्रत ही नहीं की थी कि लोमड़ी से पूछे कि कोई प्रमाणपत्र है तुम्हारे पास? यह कैसे हम मानें कि तुम लोमड़ी हो, कुछ लिखित है? लोमड़ी को पसीना आ गया, यह कभी ऐसा इतिहास में नहीं हुआ था। उसने कहा, तू ठहर, मैं अभी प्रमाणपत्र लेकर आती हूं।
वह सिंह के पास गई और उसने कहा कि कृपा करो एक लिखित प्रमाणपत्र दो।

इज्जत बेइज्जत हुई जाती है। एक साधारण सी गिलहरी मुझसे--यह उसके मन में चल रहा है--इज्जत बेइज्जत हुई जाती है। एक साधारण सी गिलहरी। यह उसने सिंह से नहीं कहा। उसने इतना ही कहा कि मुझे प्रमाणपत्र दे दो। मन में उसके यह चल रहा है कि हद हो गई। हद हो गई, ऐसा कभी इतिहास में भी नहीं सुना था।

सिंह ने उसे लिख कर एक प्रमाणपत्र दिया। वह लेकर वापस लौटी। गिलहरी अपनी जगह बैठी थी। उसने प्रमाणपत्र पढ़ कर सुनाया, जहां सिंह ने चर्चा की थी कि यह लोमड़ी है और बहुत खतरनाक जानवर है, और गिलहरी को इससे सावधान होना चाहिए

सिंह ने उसे लिख कर एक प्रमाणपत्र दिया। वह लेकर वापस लौटी। गिलहरी अपनी जगह बैठी थी। उसने प्रमाणपत्र पढ़ कर सुनाया, जहां सिंह ने चर्चा की थी कि यह लोमड़ी है और बहुत खतरनाक जानवर है, और गिलहरी को इससे सावधान होना चाहिए, और इस तरह की बातें नहीं करनी चाहिए। उसने यह प्रिफेस, यह भूमिका सुन कर ही गिलहरी तो नदारद हो गई। उसने सोचा कि है तो पक्का। वह तो भाग गई। लेकिन लोमड़ी पढ़ने में इतनी तल्लीन हो गई थी और खुद की प्रशंसा पढ़ने में इतने धीरे-धीरे पढ़ रही थी कि उसने जब पूरा पढ़ पाई प्रमाणपत्र, तब देखा कि गिलहरी जा चुकी है।

वह वापस लौटी। जब वह पहुंची सिंह के पास, तो देख कर हैरान हुई कि एक हिरण वहां खड़ा हुआ था और वह सिंह से कह रहा था, कोई लिखित प्रमाणपत्र है आपके पास? हम कैसे मान लें कि आप सिंह हो? लोमड़ी ने कहा, हद हो गई! अब यह सिंह बेचारा क्या करेगा? हम तो खैर प्रमाणपत्र ले गए।

सिंह ने उस हिरण से कहा कि देख, अगर मुझे भूख लगी हो, तो तुझे प्रमाणपत्र लेने की फुर्सत भी नहीं मिलेगी। सिद्ध हो जाएगा। और अगर मुझे भूख न लगी हो, तो आई डोंट केयर। इससे कोई मतलब ही नहीं है कि तू मानता है मुझे सिंह कि नहीं मानता। अगर मुझे भूख नहीं लगी, तो मैं तेरी चिंता नहीं करता कि तू क्या मानता है। और अगर मुझे भूख लगी है, तो तुझे फुर्सत भी न मिलेगी इस बात की फिकर करने की कि मैं कौन हूं।

लोमड़ी ने कहा कि महाराज, यह मुझसे क्यों न कहा? मुझे क्यों सर्टिफिकेट दे दिया? एक साधारण सी गिलहरी, मैं भी उसको ठीक कर देती। सिंह ने कहा, लेकिन तूने मुझे बताया ही नहीं था कि गिलहरी ने सर्टिफिकेट मांगा है। मैं तो समझा कि सम स्टुपिड ह्यूमन बीइंग, कोई मूढ़ आदमी ने मांगा होगा। इधर कुछ देर से ये जंगली जानवर भी आदमी की बेवकूफी में पड़ने लगे हैं, सर्टिफिकेट मांगते हैं।

...unity admins can send messages

CamScanner

मान लें कि आप सिंह हो? लोमड़ी ने कहा, हद हो गई! अब यह सिंह बेचारा क्या करेगा? हम तो खैर प्रमाणपत्र ले गए।

सिंह ने उस हिरण से कहा कि देख, अगर मुझे भूख लगी हो, तो तुझे प्रमाणपत्र लेने की फुर्सत भी नहीं मिलेगी। सिद्ध हो जाएगा। और अगर मुझे भूख न लगी हो, तो आई डोंट केयर। इससे कोई मतलब ही नहीं है कि तू मानता है मुझे सिंह कि नहीं मानता। अगर मुझे भूख नहीं लगी, तो मैं तेरी चिंता नहीं करता कि तू क्या मानता है। और अगर मुझे भूख लगी है, तो तुझे फुर्सत भी न मिलेगी इस बात की फिकर करने की कि मैं कौन हूं।

लोमड़ी ने कहा कि महाराज, यह मुझसे क्यों न कहा? मुझे क्यों सर्टिफिकेट दे दिया? एक साधारण सी गिलहरी, मैं भी उसको ठीक कर देती। सिंह ने कहा, लेकिन तूने मुझे बताया ही नहीं था कि गिलहरी ने सर्टिफिकेट मांगा है। मैं तो समझा कि सम स्टुपिड ह्यूमन बीइंग, कोई मूढ़ आदमी ने मांगा होगा। इधर कुछ देर से ये जंगली जानवर भी आदमी की बेवकूफी में पड़ने लगे हैं, सर्टिफिकेट मांगते हैं।

आदमी की बुनियादी नासमझियों में से नेमिंग, लेबलिंग, नामकरण बुनियादी नासमझियों में से है। नाम देकर बड़ी सुविधा हो जाती है। आदमी कहता है, मैं परमात्मा से अपने को भर रहा हूं। तब वह भूल जाता है कि यह द्वैत है। यह भी द्वैत है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि किससे तुम भर रहे हो। एक बात तय है कि तुम घड़े हो और किसी से भरे जा रहे हो। वह संसार है, कि परमात्मा है, कि प्रेम है, कि प्रार्थना है, इससे कोई अंतर नहीं पड़ता। तुम नहीं हो। तुम तो भरने वाले हो, या जिसमें भरा जा रहा है, वह हो। फिर जो भी भरा जा रहा है, उसका कोई भी नाम हो--उसको संसार न कह कर मोक्ष कहने लगेंगे, तो फर्क नहीं पड़ने वाला है--द्वैत जारी रहेगा।

ताओ उपनिषद #12, ओशो।

CamScanner

1:35 pm 5 KB/s 65%

osho_never_born_never_die 📌Whatsapp- 98765-67791 For... more

View all 21 comments

2 days ago

krishnamurtifoundationtrust
Sponsored

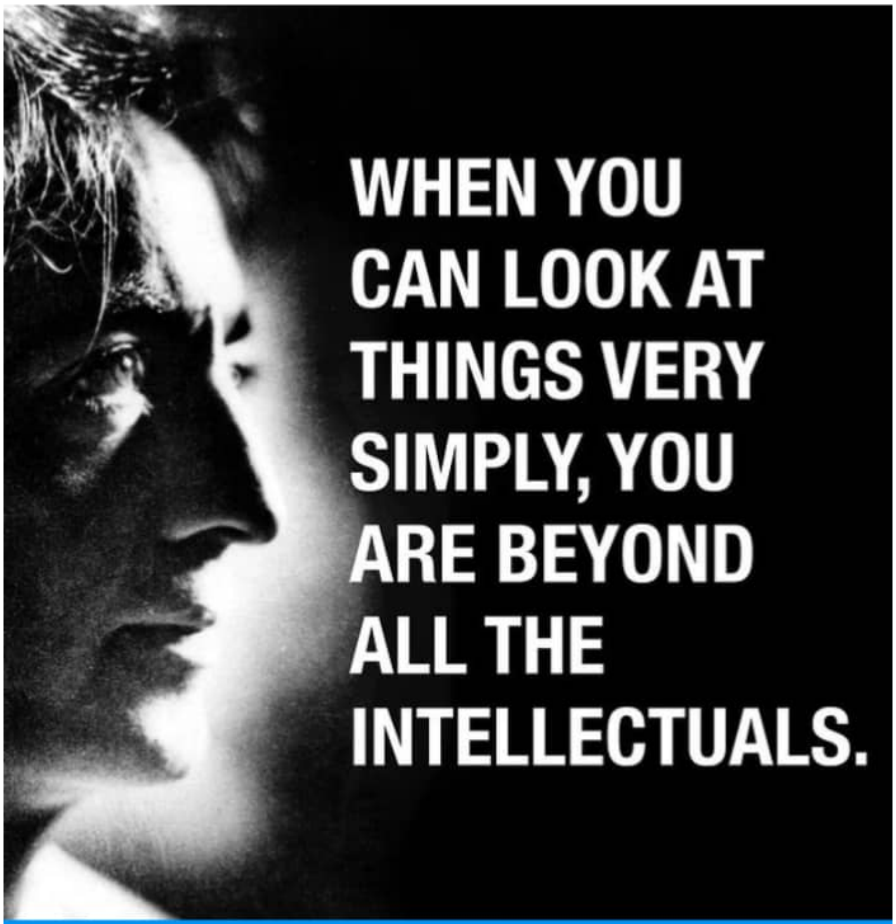

Visit Instagram Profile

Liked by **osho_excellent_guru** and **2,38,601 others**

krishnamurtifoundationtrust We are frightened to be simple. We want things to be complicated. The more thing... more

View all 302 comments

oshosaura

1:35 pm 0 KB/s 65%

osho_never_born_never_die 📌Whatsapp- 98765-67791 For... more

View all 21 comments

2 days ago

krishnamurtifoundationtrust
Sponsored

Visit Instagram Profile >

Liked by **osho_excellent_guru** and **2,38,601 others**

krishnamurtifoundationtrust We are frightened to be simple. We want things to be complicated. The more thing... more

View all 302 comments

oshosaura

CamScanner

1:35 pm 0 KB/s 65%

osho_never_born_never_die 📌Whatsapp- 98765-67791 For... more

View all 21 comments

2 days ago

krishnamurtifoundationtrust
Sponsored

Visit Instagram Profile

Liked by **osho_excellent_guru** and **2,38,601 others**

krishnamurtifoundationtrust We are frightened to be simple. We want things to be complicated. The more thing... more

View all 302 comments

oshosaura

CamScanner

1:34 pm 0 KB/s 65%

osho_never_born_never_die 📌Whatsapp- 98765-67791 For... more

View all 21 comments

2 days ago

krishnamurtifoundationtrust
Sponsored

Visit Instagram Profile

Liked by **osho_excellent_guru** and **2,38,601 others**

krishnamurtifoundationtrust We are frightened to be simple. We want things to be complicated. The more thing... more

View all 302 comments

oshosaura

CamScanner

1:34 pm 0 KB/s 65%

Your story rekhtapublicati... rekhtabooks_o... kalam.ka.shahar

osho_never_born_never_die
osho_never_born_never_die • Original audio

तुम ज़रा धनी की आत्मा की टटोल के तो देखो

ओशो

CamScanner

1:34 pm 0 KB/s VoLTE 4G 65%

58,592 likes

benmeer 7 New Year challenges to change your life in 2024....
more

oshofragrance

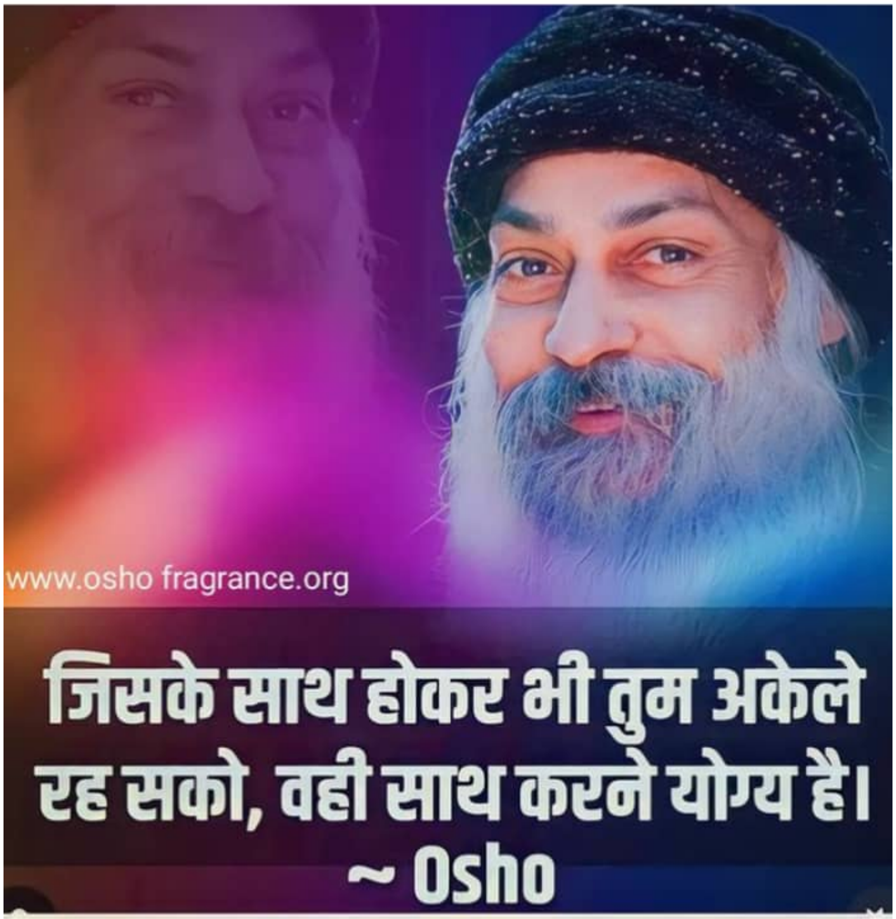

207 likes

View 1 comment

5 days ago

osholifestyle
osholifestyle • Original audio
Subscribe

CamScanner

1:33 pm 253 KB/s 65%

15,766 views

saareymusic Listen to the classical music you love.

View all 2 comments

loving_shimansh बहूत ख़ूब साहब

osho.vichar
Music From The World Of OSHO • Celebration

ho.vichar @osho.vichar @osho.vichar @osho.vichar @osho.vichar @osho.vic

लोग कहतें हैं कि प्यार अंधा हैं क्योंकि वह नही
जानतें प्यार क्या हैं, मैं तुम्हें कहता हूँ सिर्फ प्यार के
ही आँखे होतीं हैं प्यार के बिना सब कुछ अंधा है।🌼

- ओशो

3,930 likes

osho.vichar OSHO ❤️... more

View all 7 comments

Add a comment...

17 hours ago

CamScanner

insta:- swami_dhyan_rohan

सबसे ज्यादा गरीब वह है, जिसकी खुशियाँ
दूसरों की अनुमति पर निर्भर करती है

~ आचार्य रजनीश

CamScanner

1:33 pm 63 KB/s 65%

Instagram

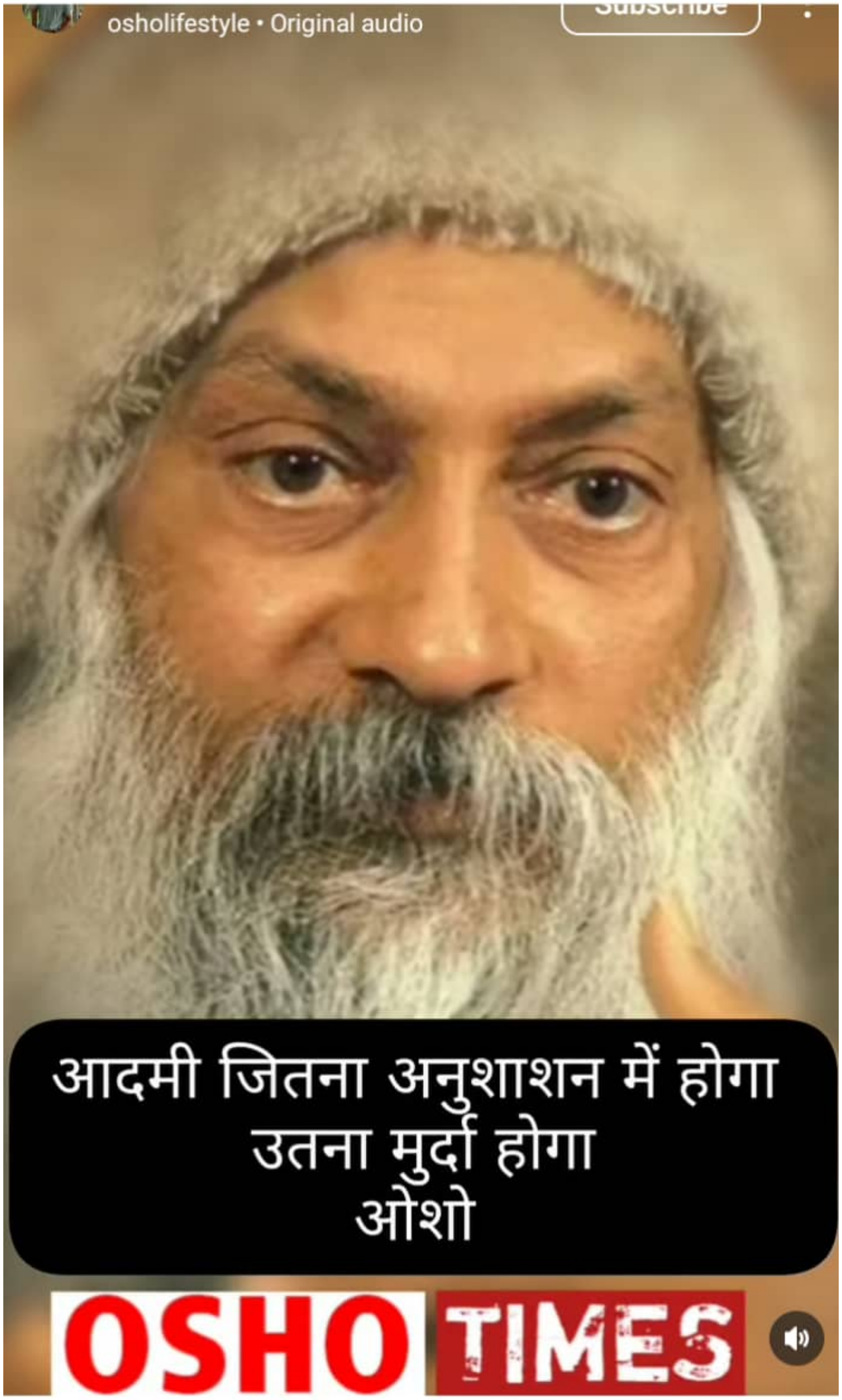

2,923 likes

CamScanner

1:33 pm 3 KB/s 65%

510 likes

Published by discovery+

⚠️ नई पेशकश ⚠️ बुद्ध के अवशेषों के पीछे की कहानी को उजागर करने की यात्रा पर मनोज बाजपेयी से जुड़ें केवल डिस्कवरी+ पर

See translation

oshosatsang

हमारा इंतजाम चींटी जैसा इंतजाम है। मैं नहीं कहता, इंतजाम न करें। न लाओत्से कहता है, इंतजाम न करें। यह नहीं कहता कि वर्षा के लिए घर में दो दाने न रखें; जरूर रख लें। लेकिन जान लें भलीभांति कि हमारा सब इंतजाम चींटी जैसा इंतजाम है। और जिंदगी के विराट नियम का जो पहिया घूम रहा है, उस पर हमारा कोई वश नहीं है।

Tao Upnishad #13, OSHO

18 likes

oshosatsang ताओ उपनिषद #13, ओशो।

Add a comment...

3 hours ago

osholifestyle

CamScanner

एकांत मूर्ख के लिए कैदखाना है, ज्ञानी के लिए स्वर्ग होता है।

~ओशो

Liked by **osho_hindi_official** and **1,936 others**

View all 4 comments

Add a comment...

31 January

discovery+
Sponsored

CamScanner

1:31 pm 11 KB/s 66%

ram ram ram ram ram ram ram ram ram

3 replies · 240 likes

osho__quotes

Revathy Krishna • Satyam Shivam Sundaram - Part 1

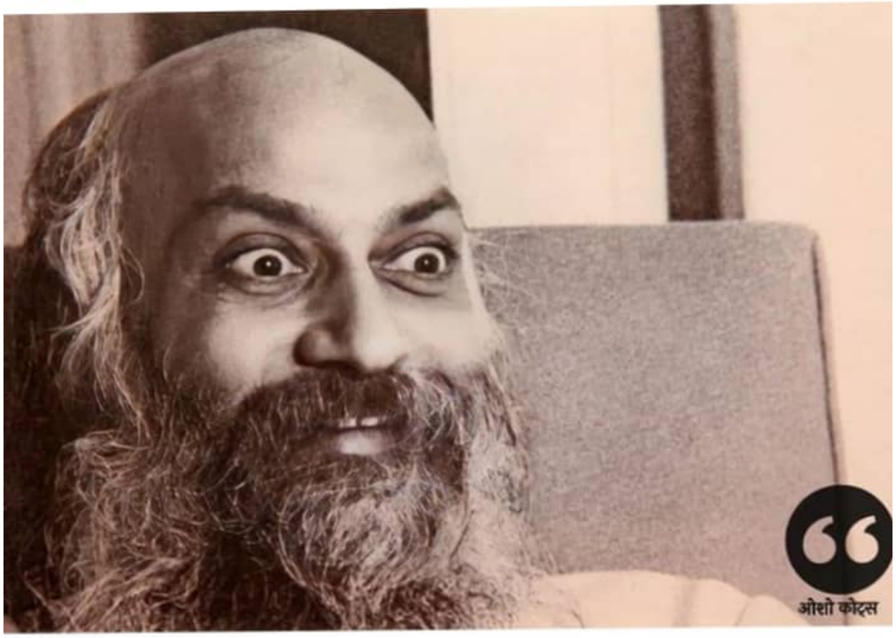

जहां तुम कर्ता हुए, वहीं गृहस्थ हो गए

जहां तुम द्रष्टा रहे, वहीं संन्यस्त हो गए

तो कहीं से भागना नहीं है, कहीं जाना नहीं है,

जहां हो वहीं जागना है।

• ओशो

@osho__quotes

863 likes

osho__quotes जागने का नाम बुद्धत्व 🍁

View all 2 comments

CamScanner

1:31 pm 0 KB/s 66%

Instagram

365 likes

1 day ago

oshorajneesh__

Andrea Krux • In Dreams Acapella Cover, The Lord of...

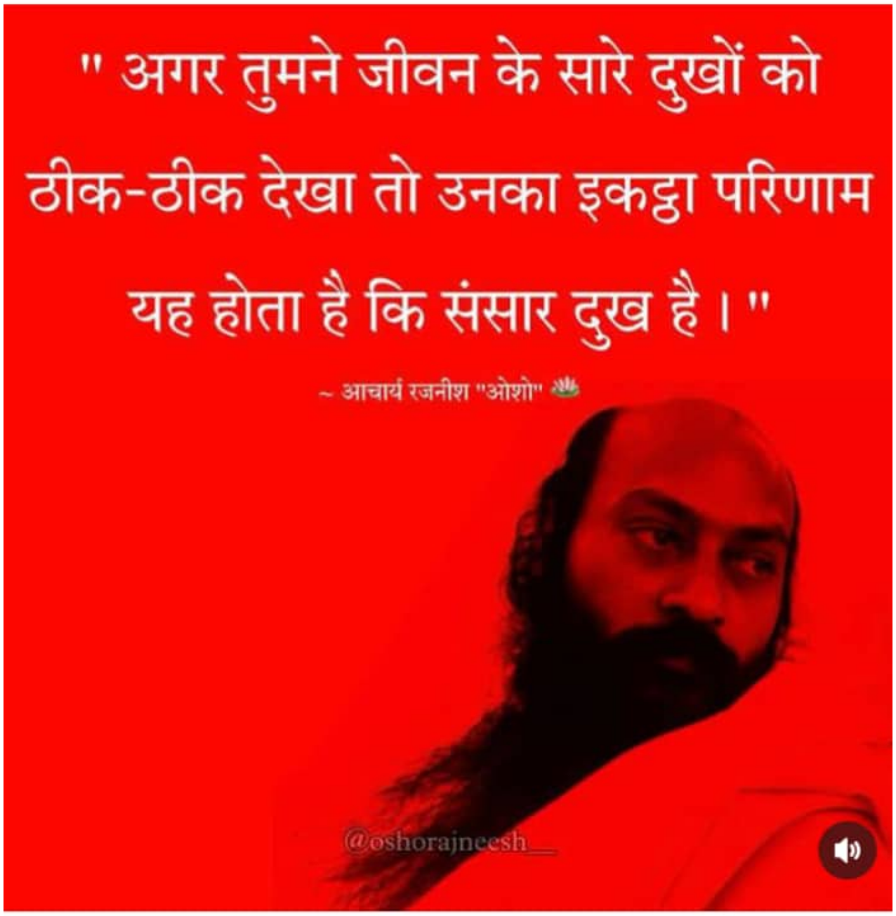

4,062 likes

oshorajneesh__ OSHO 🙏💯🤍🙌

Follow : @oshorajneesh__... more

View all 23 comments

Add a comment...

CamScanner

1:31 pm 66%

95 likes

oshospirituality ताओ उपनिषद #13, ओशो।

Add a comment...

3 hours ago

only_osho_1968

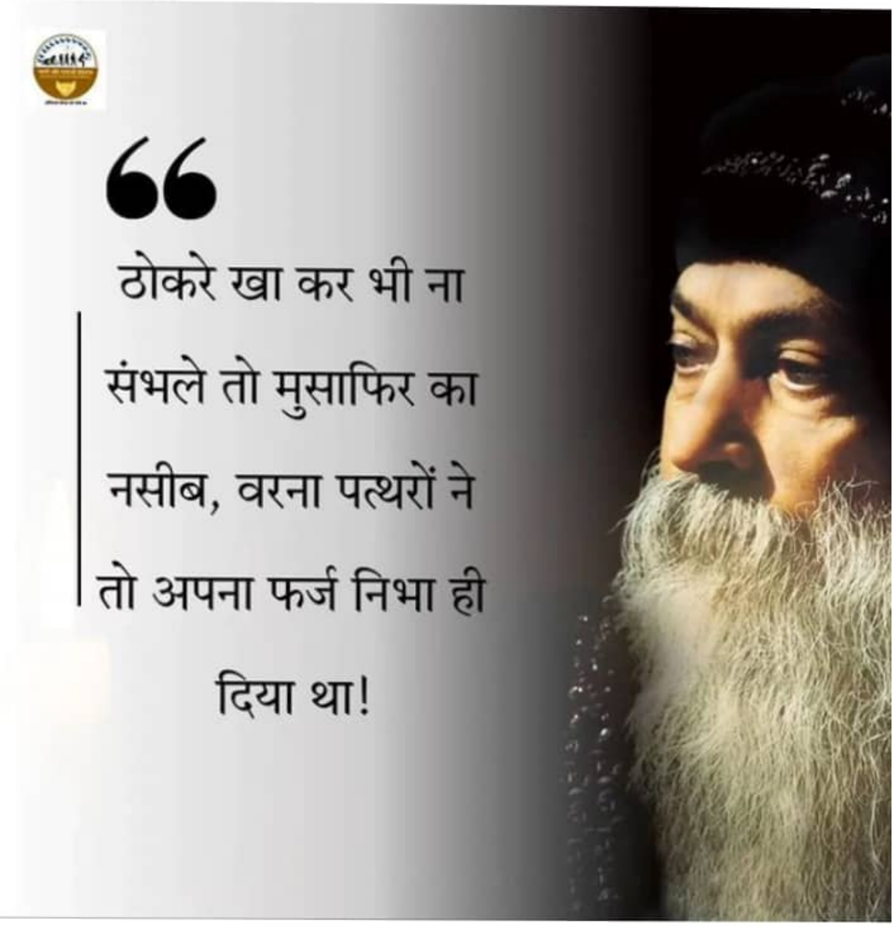

365 likes

1 day ago

oshorajneesh__

Andrea Krux • In Dreams Acapella Cover, The Lord of...

CamScanner

1:30 pm 5 KB/s VoLTE 4G 66%

oshospirituality

आप क्या सोचते हैं, आपकी कोई बड़ी हैसियत है? चींटी को दबा लेते हैं, इसलिए सोचते हैं कोई बड़ी हैसियत है? इस विराट जगत में कौन सी स्थिति है मनुष्य की? एक महासूर्य पास से गुजर जाए, सब राख हो जाए।

Tao Upnishad #13, OSHO

95 likes

oshospirituality ताओ उपनिषद #13, ओशो।

Add a comment...

3 hours ago

only_osho_1968

CamScanner

1:28 pm 4 KB/s 67%

View all 3 comments

Add a comment...

31 January

osho__quotes

Anirudh Ravichander, Vishal Mishra • Feel of Jailer (F...

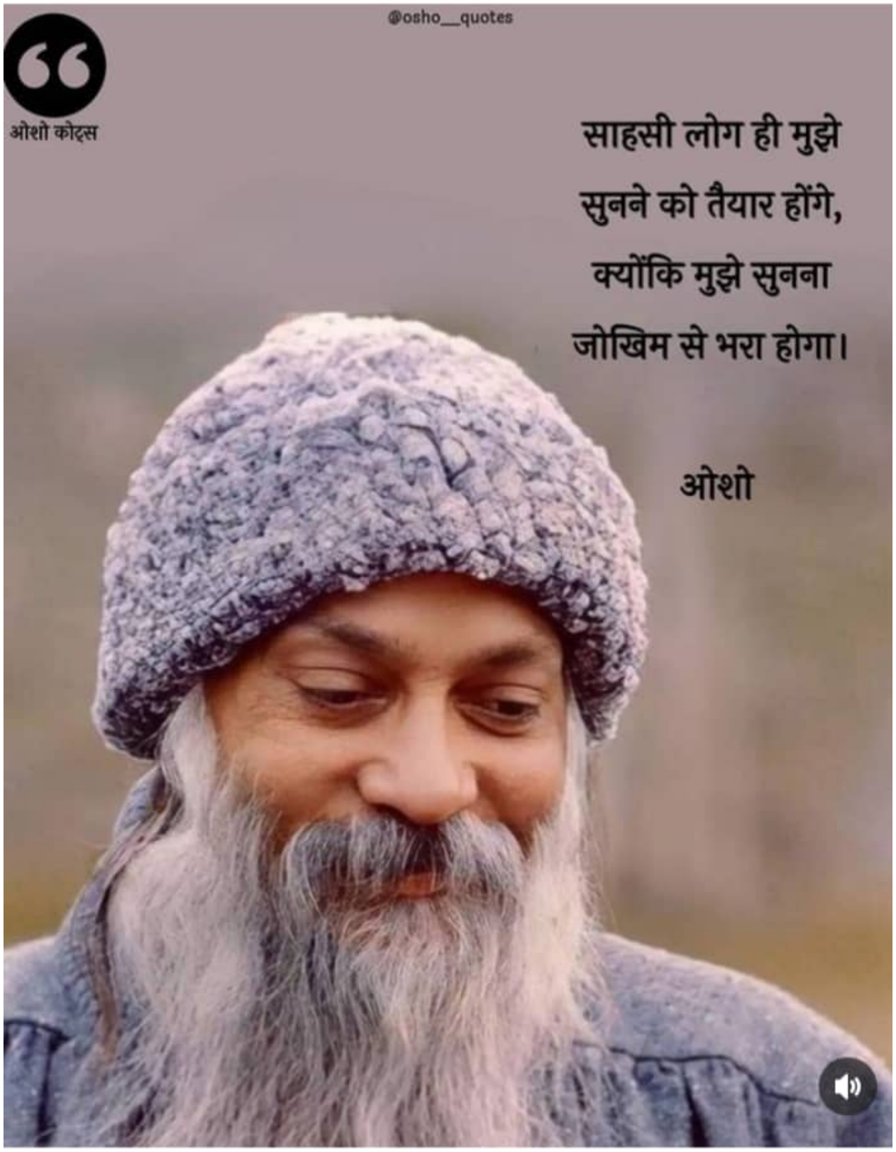

Liked by **osho_hindi_official** and **13,346 others**

osho__quotes ❣️

View all 43 comments

2 days ago

CamScanner

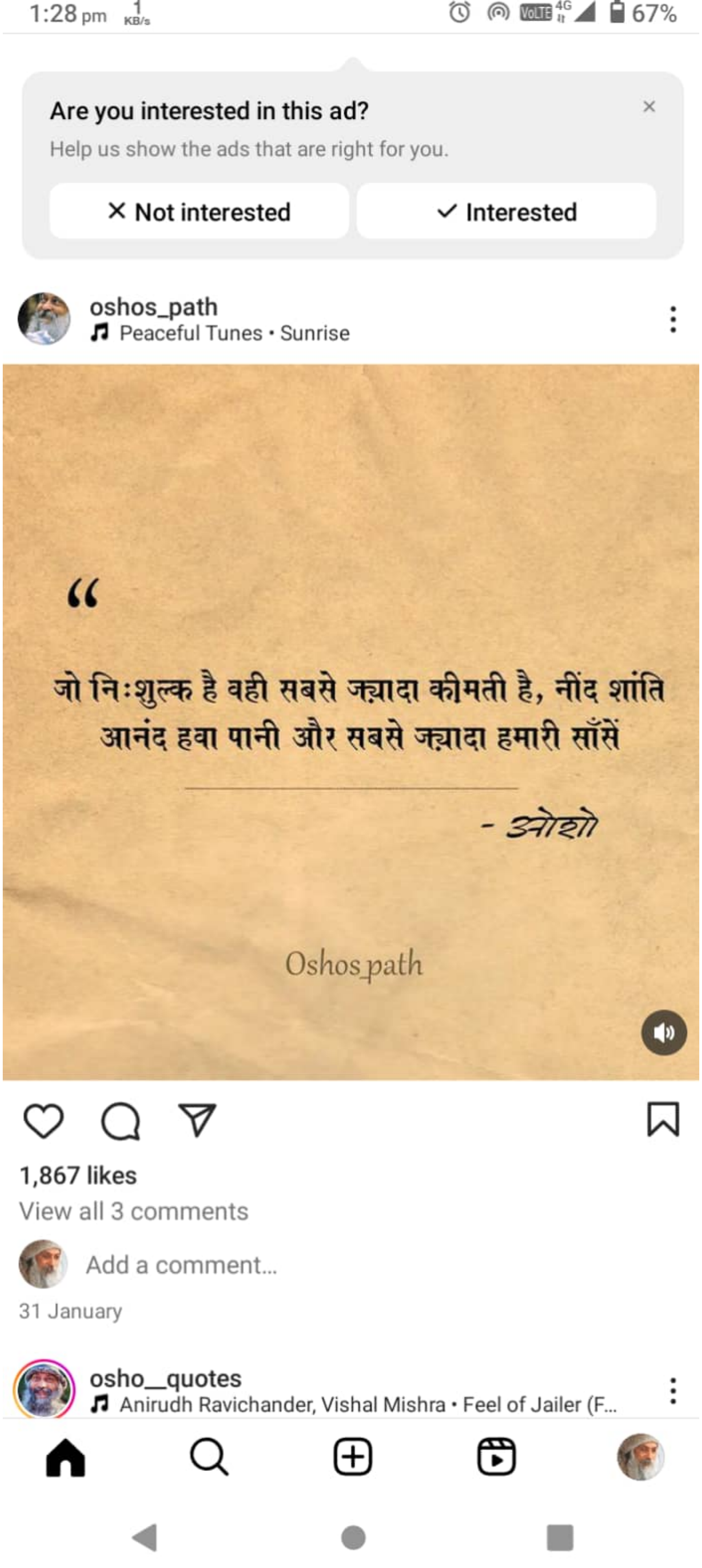
1:28 pm
67%
Are you interested in this ad?
Help us show the ads that are right for you.
× Not interested
✓ Interested
oshos_path
Peaceful Tunes • Sunrise
"
जो निःशुल्क है वही सबसे ज़्यादा कीमती है, नींद शांति आनंद हवा पानी और सबसे ज़्यादा हमारी साँसें
- ओशो
Oshos path
1,867 likes
View all 3 comments
Add a comment...
31 January
osho__quotes
Anirudh Ravichander, Vishal Mishra • Feel of Jailer (F...

CamScanner

1:27 pm 15 KB/s 67%

Instagram

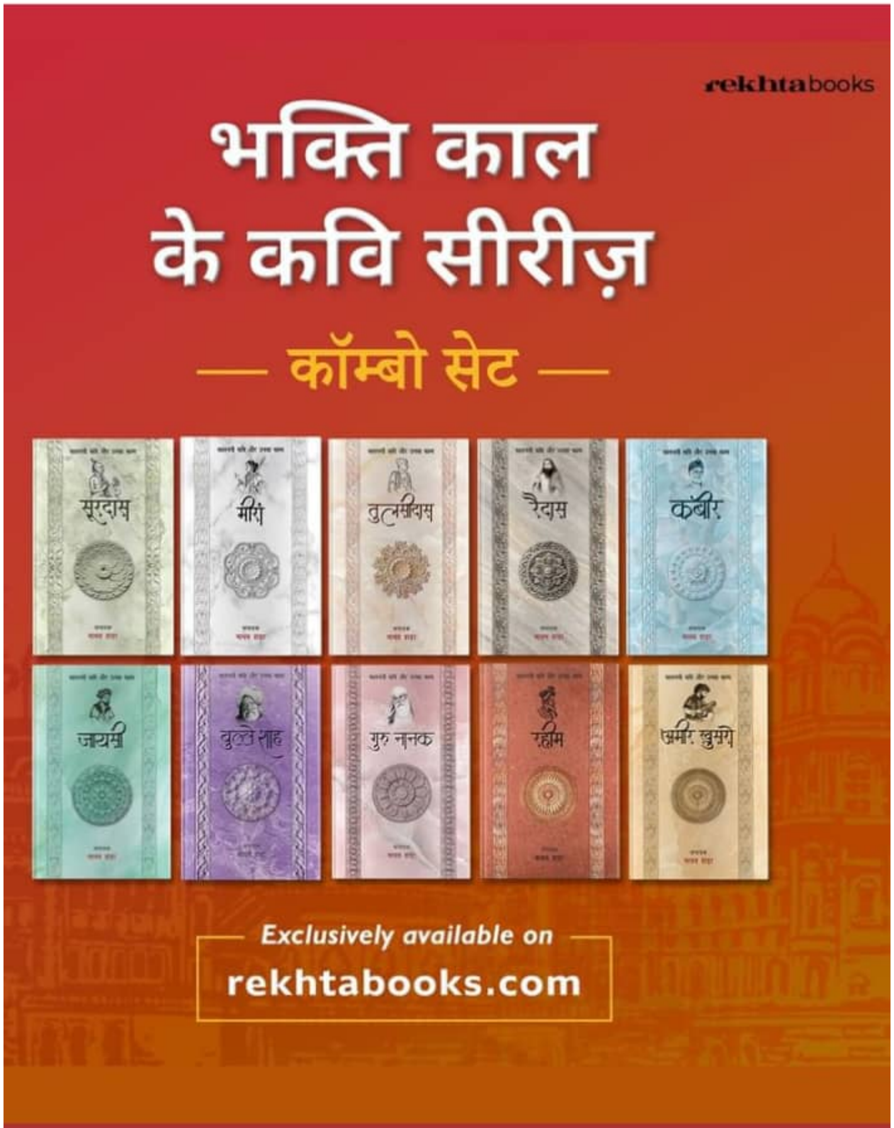

Order now

43 likes

rekhtabooks_official भक्ति कवि किताब संयोजन सेट एक सुंदर रचना संग्रह है जो भारत के कुछ महान भक्ति कवियों की रचनाओं को संग्रहित करत... more

See translation

Are you interested in this ad?

CamScanner

1:27 pm 3 KB/s 4G 68%

Instagram

Ashasunowal
New to Instagram
Follow

OSHO_💚
New to Instagram
Follow

osho__quotes and **hindi_rachnakaar**
Varanasi - Kashi - Banaras
Buddha's Flute • Osho Dream

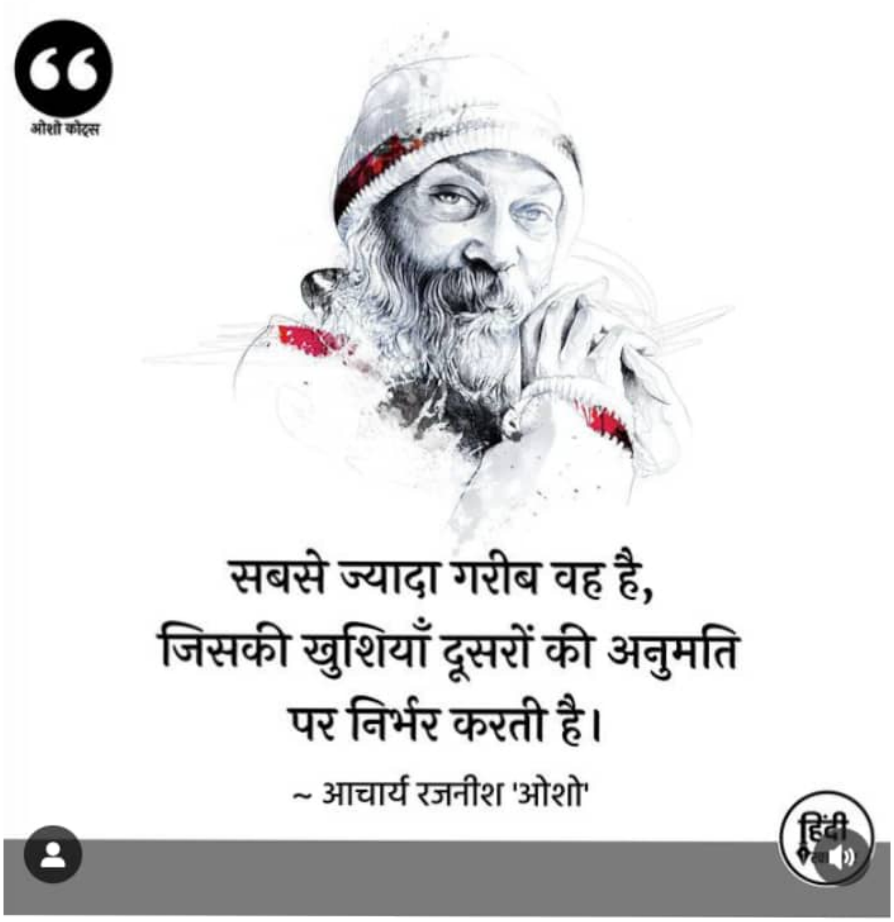

Liked by **osho_excellent_guru** and **10,340 others**

hindi_rachnakaar सबसे ज्यादा गरीब वह है, जिसकी खुशियाँ दूसरों की अनुमति पर निर्भर करती है।... more

View all 22 comments

CamScanner

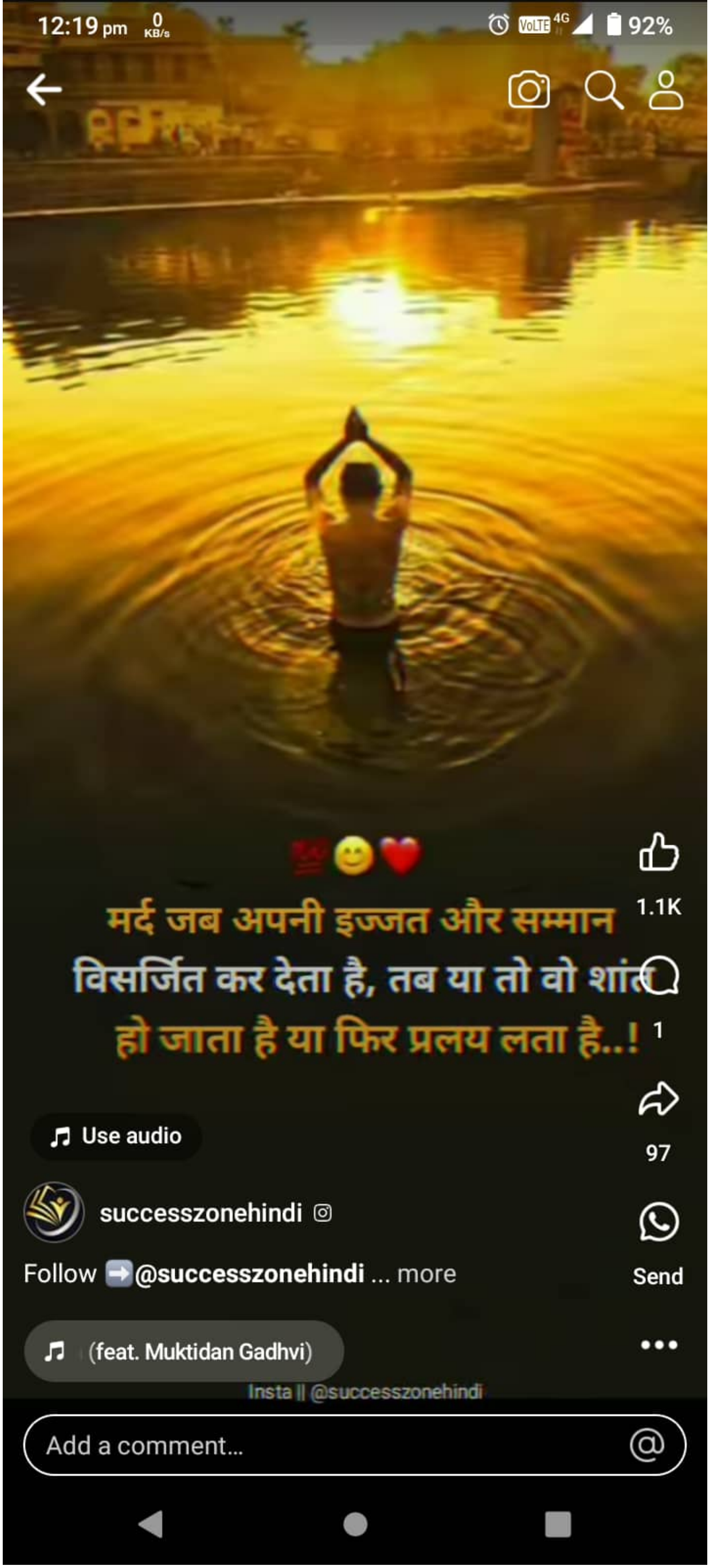
12:19 pm
92%
मर्द जब अपनी इज्जत और सम्मान
विसर्जित कर देता है, तब या तो वो शांत
हो जाता है या फिर प्रलय लता है..!
1.1K
1
97
Send
Use audio
successzonehindi
Follow ➡️@successzonehindi ... more
(feat. Muktidan Gadhvi)
Insta || @successzonehindi
Add a comment...

CamScanner

12:18 pm
0 KB/s
VoLTE 4G
92%
@CreatorHost
करने दो जो आपकी बुराइयां करते हैं,
ऐसी छोटी-छोटी हरकतें छोटे लोग ही
करते हैं..!
29K
15
2.1K
Send
Use audio
Creator
HOST
creatorhost
Karne do basssssss... more
arniy Aaradhana (feat. M
Light Leak by andy

CamScanner

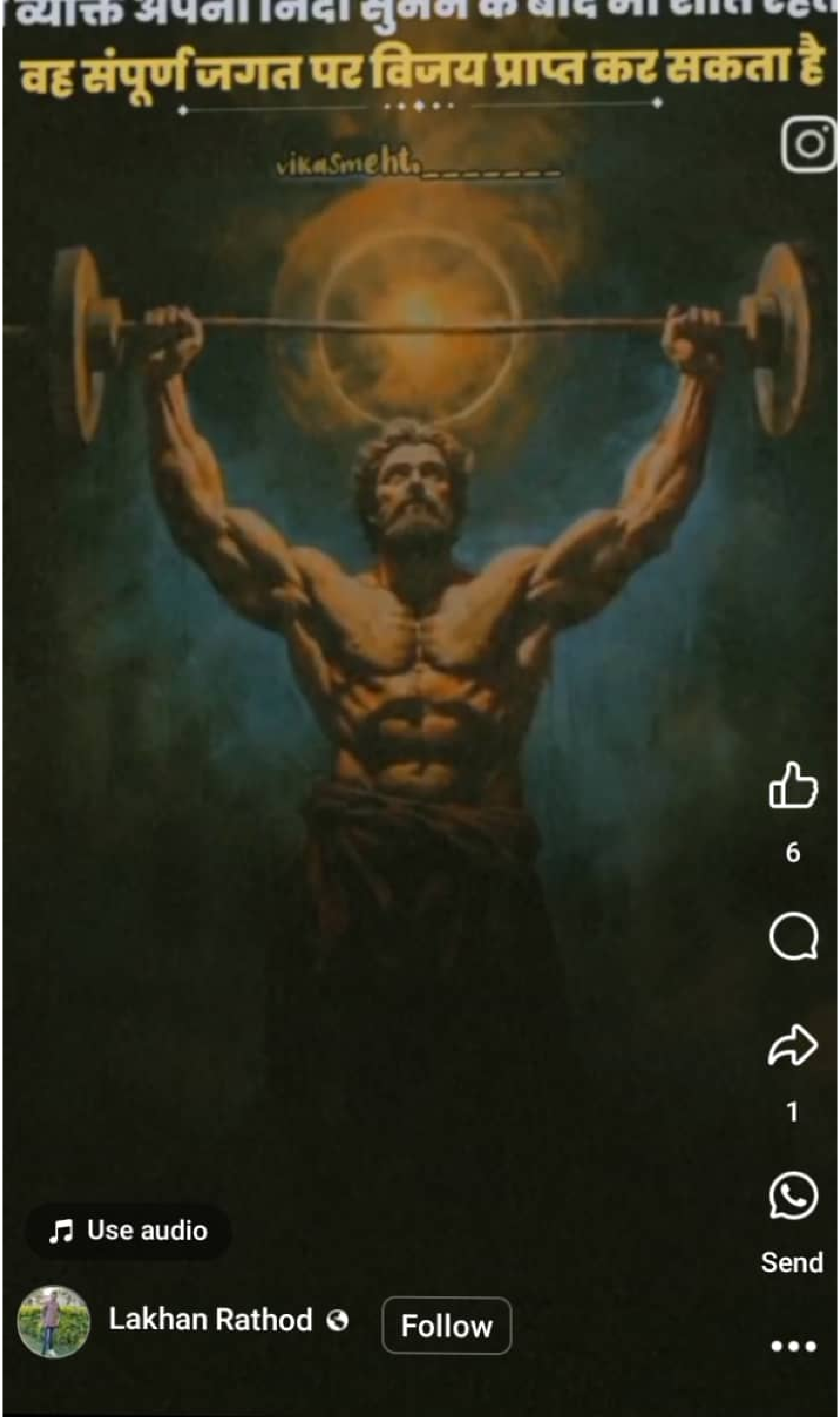
वह संपूर्ण जगत पर विजय प्राप्त कर सकता है
vikasmeht._______
6
1
Send
Use audio
Lakhan Rathod
Follow

CamScanner

12:11 pm
93%
WINEXCH
LINK IN BIO
6000+
LIVE CASINO
WINEXCH.COM
"मन्नत क्यों मांगते हो औरो के दरबार से"
ऐसा कौन सा काम है जो होता नही
तेरे परवरदिगार से।।
Give
68
1
10
Use audio
Sufi Ke Kisse
Mannat kyo mangte ho oro se... ... more
Add a comment...

CamScanner

12:10 pm
93%
आप
उतने साधारण नहीं
जितना
आप सोचते हैं।
यहां
हर किरदार
चुनिंदा है।
Give
1
Use audio
Rajneesh Gyan
ओशो नमन प्रेम.. ♥♥🌹... more
Add a comment...

CamScanner

यह अपूर्व सूत्र है...........

कि अगर तुम निश्चिंत होना चाहो, तो छोटा-सा काम है बस; जरा-सी तरकीब है; जरा-सी कला है--और कला यह है: ....

अपने को हटा लो और परमात्मा को करने दे जो कराए।
कराए तो ठीक, न कराए तो ठीक।
पहुंचाए कहीं तो ठीक, न पहुंचाए तो ठीक।
तुम सारी चिंता उस पर छोड़ दो।
जिस पर इतना विराट जीवन ठहरा हुआ है,
चांदत्तारे चलते हैं, ऋतुएं घूमती हैं, सूरज निकलता है, डूबता है; इतना विराट जीवन का सागर, इतनी लहर जो सम्हालना है, तुम्हारी भी छोटी लहर सम्हाल लेगा।
तुम अपनी लहर को अपना अहंकार मत बनाओ।
तुम अपनी लहर को उसके हाथ में समर्पित कर दो।
ओशो

CamScanner

12:42 pm
0 KB/s
87%
Reels
WINMATCH.COM
INSTANT
इस दौर के लोगो में वफ़ा ढूंढ रहे हो
बडे नादान हो साहिब ज़हर की शीशी मे दवा ढूंढ रहे हो
27K
33
1.9K
Send
Use audio
faraz_ka_safar_2.0
faraz_ka_safar faraz_ka_safar #sharab #... more
HD 4K by igaroto
Add a comment...

CamScanner

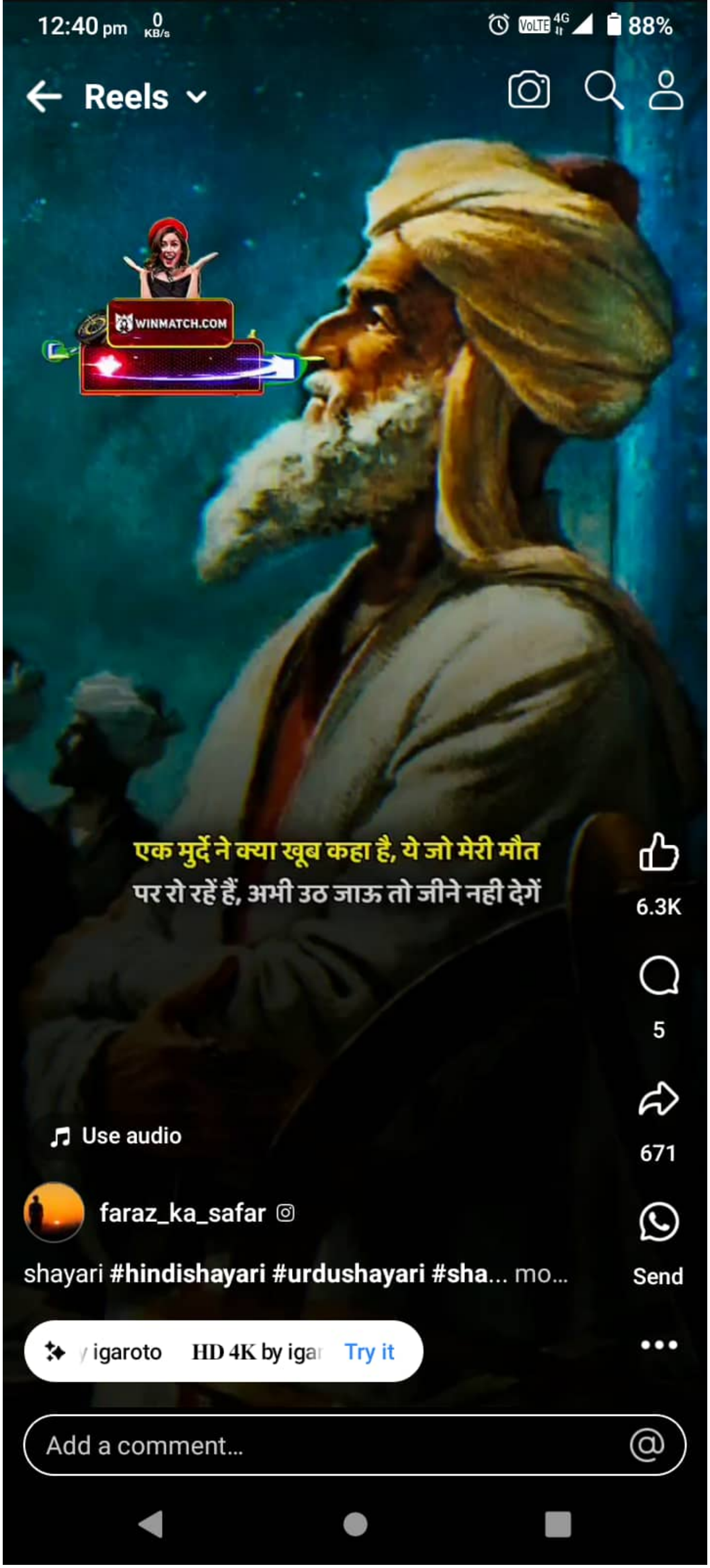
12:40 pm
88%
Reels
WINMATCH.COM
एक मुर्दे ने क्या खूब कहा है, ये जो मेरी मौत
पर रो रहें हैं, अभी उठ जाऊ तो जीने नही देगें
6.3K
5
671
Send
Use audio
faraz_ka_safar
shayari #hindishayari #urdushayari #sha... mo...
igaroto HD 4K by igar Try it
Add a comment...

CamScanner

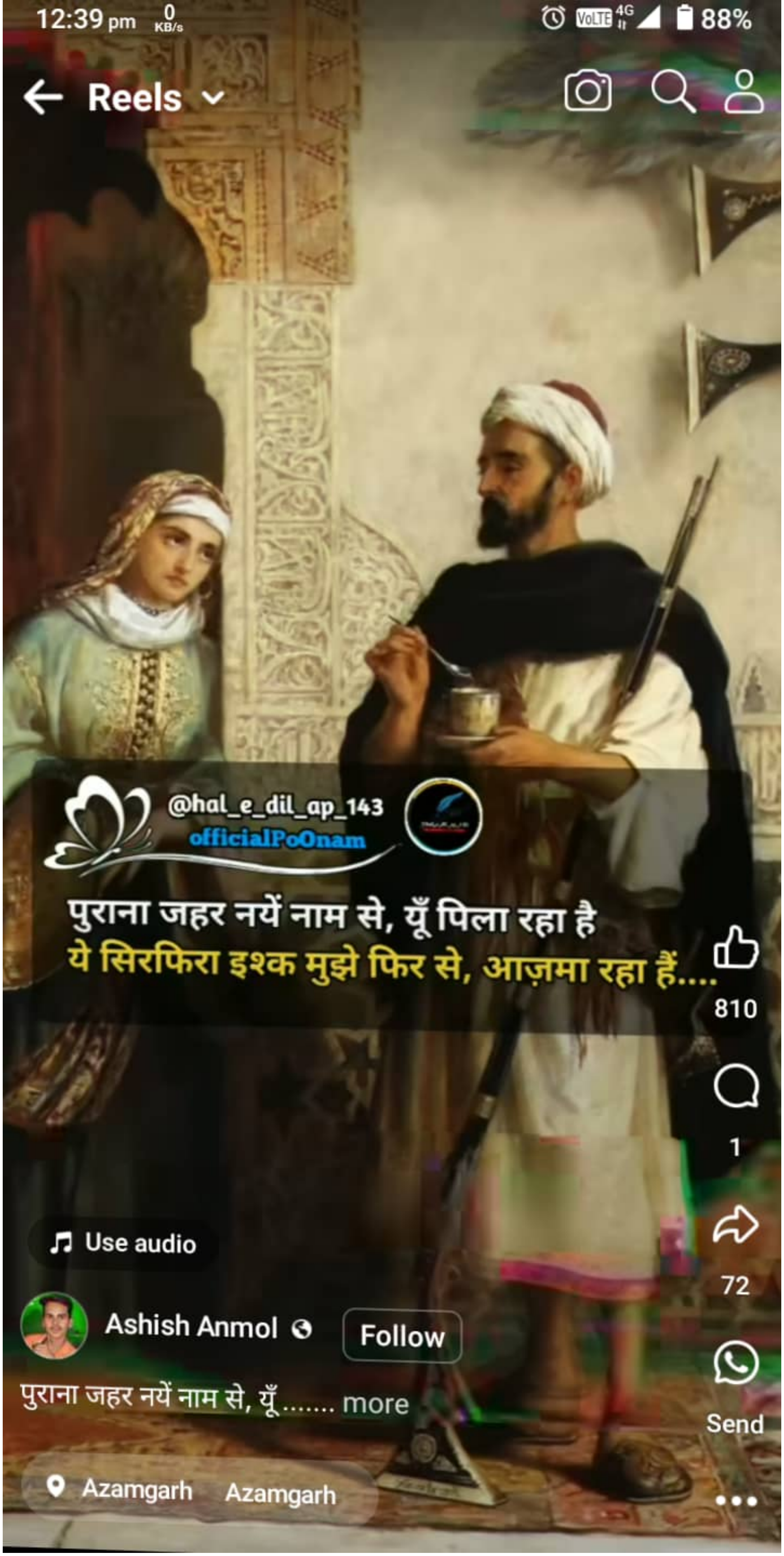
12:39 pm
0 KB/s
VoLTE 4G
88%
Reels
@hal_e_dil_ap_143
officialPoOnam
पुराना जहर नयें नाम से, यूँ पिला रहा है
ये सिरफिरा इश्क मुझे फिर से, आज़मा रहा हैं....
810
1
72
Send
Use audio
Ashish Anmol
Follow
पुराना जहर नयें नाम से, यूँ....... more
Azamgarh
Azamgarh

CamScanner

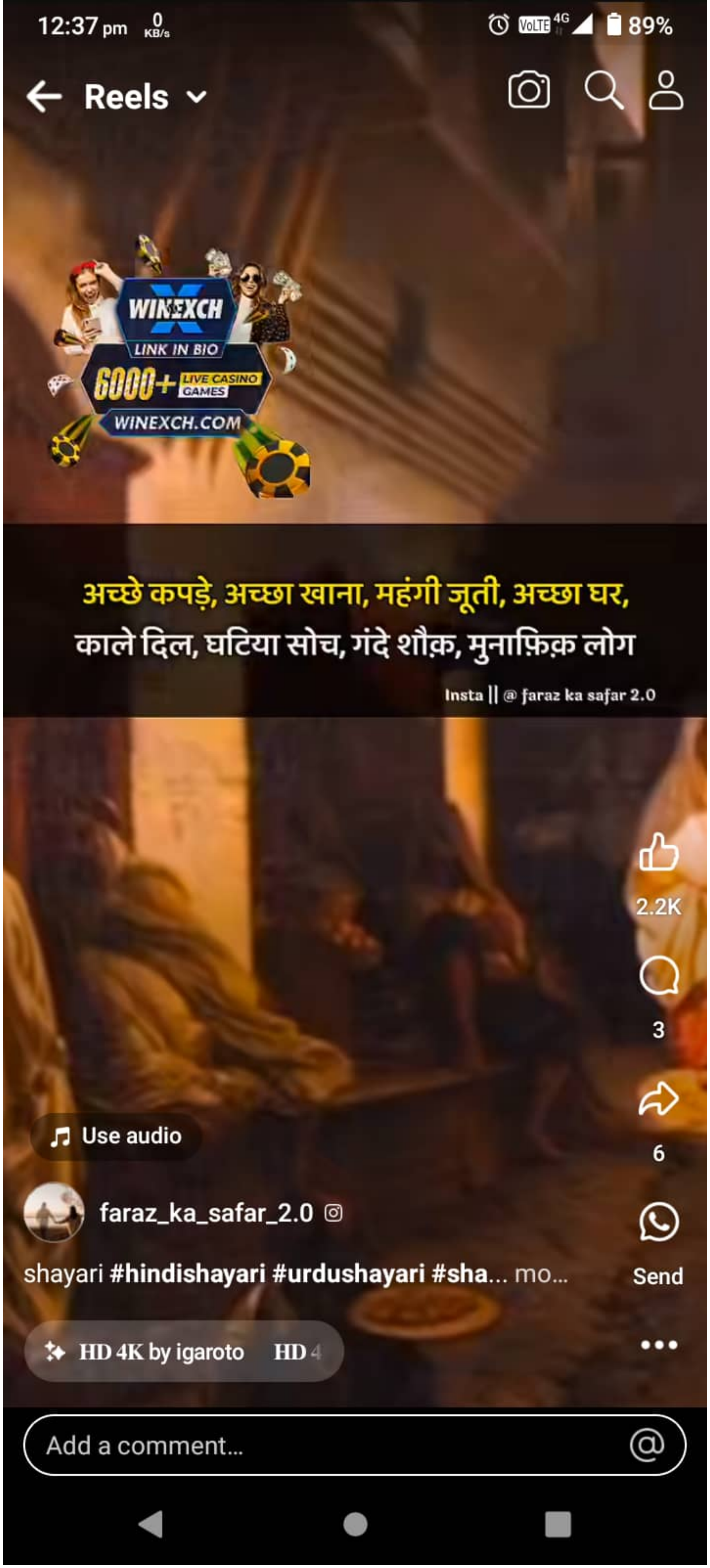
12:37 pm
89%
Reels
WINEXCH
LINK IN BIO
6000+ LIVE CASINO GAMES
WINEXCH.COM
अच्छे कपड़े, अच्छा खाना, महंगी जूती, अच्छा घर,
काले दिल, घटिया सोच, गंदे शौक़, मुनाफ़िक़ लोग
Insta || @ faraz ka safar 2.0
2.2K
3
6
Send
Use audio
faraz_ka_safar_2.0
shayari #hindishayari #urdushayari #sha... mo...
HD 4K by igaroto
Add a comment...

CamScanner

4:41 pm 0 KB/s 60%

Osho international
1h ·

जंगल में बुद्ध बैठे हैं ध्यान करने और एक सर्पराज सर्पों का राजा फन फैलाकर खड़ा हो गया। उसने झुककर बुद्ध के चरणों में प्रणाम किए। बुद्ध ने आंख खोली उन्होंने कहा महाराज क्योंकि देखा उसके माथे पर अदभुत मणि है जो सिर्फ नागों में सम्राटों के माथे पर होती है तो बुद्ध ने कहा महाराज क्या चाहते हैं? तो उस नाग ने कहा मैं जन्मों जन्मों से भटक रहा हूं। जो भी किया सब उलटा चला गया। कब तक सरकता रहूंगा जमीन पर? कब तक सरकता रहूंगा खाई खंदकों में अंधेरी गलियों में? कब तक सरकता रहूंगा? कब उठूंगा? कब उड़ सकूंगा? तुम्हें मैने उड़ते देखा। तुम्हारे प्राणों की ऊर्जा को कहीं जाते देखा। इसलिए पूछता हूं मुझे कुछ उपदेश है?
'सभी पापों का न करना, पुण्यों का संचय करना और अपने चित्त का शोधन करते रहना,यही बुद्धों का शासन है। '

'तितिक्षा और क्षांति परम तप हैं, बुद्ध निर्वाण को परम रहते हैं, दूसरों का घात करने वाला प्रवजित नहीं होता और दूसरों को सताने वाला श्रमण नहीं है। '
'निंदा न करना, घात न करना, पातिमोक्ष में सम्बर रखना, भोजन में मात्रा जानना, एकातवास करना और चित्त योग में लगाना यही बुद्धों का शासन है।' ये उस सर्पराज को कहे गए थे।
सोचना इसे थोड़ा। हम भी सब जमीन पर सरकते हुए सर्प हैं। अभी हमने सिर भी उठाकर कहां आकाश की तरफ देखा? अभी तो अंधी गलियो कूचों में, पोलों में, कोने कातते में हम सरकते फिरते हैं। फिर सर्प का प्रतीक ही क्यों चुना होगा? क्योंकि सर्प जन्म से ही दूसरे को चोट पहुंचाने का जहर लेकर आता है, इसलिए। उसके जहर की गांठ जन्म से ही उसके भीतर है। वह दूसरे को मारने में ही, दूसरे का घात करने में ही रस लेता है। यही तो गांठ हम भी लेकर आए हुए हैं। यह प्रतीक प्यारा है। और सर्प का प्रतीक सारे धर्मों ने चुना है। उसमें कुछ कारण है। ईसाई कहते हैं कि सर्प ने भटकाया आदमी को। ईव को समझाया कि खा ले यह फल जो भगवान ने वर्जित किया है। ईव को फुसलाया सर्प ने। बुद्ध की इस कथा में सर्प कहता है कि कब तक मैं सरकता रहूंगा जमीन पर? हिंदू कहते हैं, कुंडलिनी जो ऊर्जा है मनुष्य के भीतर, वह

CamScanner

4:41 pm 0 KB/s VoLTE 4G 60%

पहचान का जहर लेकर आता है, इसलिए। उसके जहर की गांठ जन्म से ही उसके भीतर है। वह दूसरे को मारने में ही, दूसरे का घात करने में ही रस लेता है। यही तो गांठ हम भी लेकर आए हुए हैं। यह प्रतीक प्यारा है। और सर्प का प्रतीक सारे धर्मों ने चुना है। उसमें कुछ कारण है। ईसाई कहते हैं कि सर्प ने भटकाया आदमी को। ईव को समझाया कि खा ले यह फल जो भगवान ने वर्जित किया है। ईव को फुसलाया सर्प ने। बुद्ध की इस कथा में सर्प कहता है कि कब तक मैं सरकता रहूंगा जमीन पर? हिंदू कहते हैं, कुंडलिनी जो ऊर्जा है मनुष्य के भीतर, वह सर्पाकार है। वह सर्प जैसी है। जब उठती है फन उठाकर तो उसका फन जब चोट करता है सहस्रार में तो सारे कमल खिल जाते हैं।

सर्प का प्रतीक आदमी के बहुत करीब है। उसमें कई खूबियां हैं। पहली बात, उसकी खूबी है कि सर्प बहुत चालाक। उस चालाकी के कारण ईसाइयों ने उसका प्रतीक बनाया कि उसने स्त्री को भरमाया, ईव को समझाया और अदम को ईश्वर की बगांवत में जाने का प्रोत्साहन दिया। सर्प बड़ा शैतान, क्योंकि बड़ा चालाक प्राणी है। बड़ा चालबाज। भरोसे का नहीं। उस प्रतीक का उपयोग किया।
बुद्ध की इस कथा में सर्प का प्रयोग हो रहा है इस अर्थ में कि सबकी दशा ऐसी है। कि हम जन्म से ही जहर की ग्रंथि लेकर पैदा हुए। दूसरे को चोट पहुंचाने में ही समाप्त हुए जा रहे हैं। दूसरे को मार डालने में ही हमने अपना जीवन समझा है। इसलिए। लेकिन एक दिन सर्प भी थक जाता है। तुम कब थकोगे? एक दिन सर्प भी बुद्ध से पूछता है कि मैं कब तक ऐसे ही सरकता रहूंगा! तुम कब पूछोगे? इसलिए प्रतीक चुना। हिंदुओं ने प्रतीक चुना है कि सर्प जब खड़ा हो जाता है. तो सर्प की बड़ी खूबियां हैं, उसमें हड्डी होती नहीं। उसके पास हड्डी बिलकुल नहीं है, लेकिन सर्प खड़ा हो जाता है बिना हड्डी के। होना नहीं चाहिए वैज्ञानिक ढंग से, लेकिन सर्प पूंछ के बल खड़ा हो जाता है, फन उठाकर। और उसके पास कोई हड्डी नहीं है। तो चमत्कार है। ऐसा ही चमत्कार मनुष्य के भीतर घटता कि जो ऊर्जा काम ग्रंथि में पड़ी है, बिना किसी सहारे के, बेसहारे, बिना माध्यम खड़ी हो जाती है, सर्प जैसी। फन जाकर चोट करता है ऊपर और आखिरी 'खुल जाता है। इसलिए हिंदुओं ने उसका वैसा प्रयोग कर लिया है। लेकिन सर्प का प्रयोग प्रतीकात्मक है। ये सूत्र बुद्ध ने सर्प को कहे थे। सभी सूत्र बुद्धों ने सर्पों को कहे हैं। क्योंकि

CamScanner

4:41 pm 0 KB/s VoLTE 4G 60%

दशा ऐसी है। कि हम जन्म से ही जहर की ग्रंथि लेकर पैदा हुए। दूसरे को चोट पहुंचाने में ही समाप्त हुए जा रहे हैं। दूसरे को मार डालने में ही हमने अपना जीवन समझा है। इसलिए। लेकिन एक दिन सर्प भी थक जाता है। तुम कब थकोगे? एक दिन सर्प भी बुद्ध से पूछता है कि मैं कब तक ऐसे ही सरकता रहूंगा! तुम कब पूछोगे? इसलिए प्रतीक चुना। हिंदुओं ने प्रतीक चुना है कि सर्प जब खड़ा हो जाता है. तो सर्प की बड़ी खूबियां हैं, उसमें हड्डी होती नहीं। उसके पास हड्डी बिलकुल नहीं है, लेकिन सर्प खड़ा हो जाता है बिना हड्डी के। होना नहीं चाहिए वैज्ञानिक ढंग से, लेकिन सर्प पूंछ के बल खड़ा हो जाता है, फन उठाकर। और उसके पास कोई हड्डी नहीं है। तो चमत्कार है। ऐसा ही चमत्कार मनुष्य के भीतर घटता कि जो ऊर्जा काम ग्रंथि में पड़ी है, बिना किसी सहारे के, बेसहारे, बिना माध्यम खड़ी हो जाती है, सर्प जैसी। फन जाकर चोट करता है ऊपर और आखिरी 'खुल जाता है। इसलिए हिंदुओं ने उसका वैसा प्रयोग कर लिया है। लेकिन सर्प का प्रयोग प्रतीकात्मक है। ये सूत्र बुद्ध ने सर्प को कहे थे। सभी सूत्र बुद्धों ने सर्पों को कहे हैं। क्योंकि मनुष्य अभी सर्प ही है। और इन सर्पों में भी कुछ कम, थोड़े से भाग्यवान सर्प पूछते हैं। नहीं तो पूछते ही नहीं। वे तो सोचते हैं, जैसा जी रहे हैं, वही ठीक है।

ऐसा जब तुम्हें दिखायी पड़ जाए कि सरकते सरकते वीरान रास्तों पर थक गए हो, तब तुम किसी बुद्ध के चरणों में सिर झुकाकर पूछते हो, अब क्या करें? क्या सर्प ही बने रहेंगे हम, या उठने का कोई उपाय है? उपाय है: सुख मत खोजो, दुख को देखो, दुख का कारण खोजो, दुख का कारण जानते दुख से मुक्त होने का उपाय मिल जाता, उपाय मिलते ही कौन नासमझ होगा जो उसका उपयोग न कर ले! उपयोग होते ही दुख निरोध हो जाता है। वही दशा निर्वाण की है।
ओशो

Osho Prem Naman 🙏💞
Osho international

CamScanner

6:06 pm 0 KB/s VoLTE 4G 57%
hi.m.wikipedia.org/wiki/

अकबर के समक्ष गायन

एक बार मुग़ल बादशाह अकबर की राजसभा में एक गायक ने कुम्भनदास का पद गाया। बादशाह ने उस पद से आकृष्ट होकर कुम्भनदास को फ़तेहपुर सीकरी बुलाया। पहले तो कुम्भनदास जाना नहीं चाहते थे, पर सैनिक और दूतों का विशेष आग्रह देखकर वे पैदल ही गये। श्रीनाथ जी के सभा सदस्य को अकबर का ऐश्वर्य दो कौड़ी का लगा। कुम्भनदास की पगड़ी फटी हुई थी, तनिया मैली थी, वे आत्मग्लानि में डूब रहे थे कि किस पाप के फलस्वरूप उन्हें इनके सामने उपस्थित होना पड़ा। बादशाह ने उनकी बड़ी आवभगत की, पर कुम्भनदास को तो ऐसा लगा कि किसी ने उनको नरक में लाकर खड़ा कर दिया है। वे सोचने लगे कि राजसभा से तो कहीं उत्तम ब्रज है, जिसमें स्वयं श्रीनाथ जी खेलते रहते हैं, अनेकों क्रीड़ाएं करते करते रहते हैं। अकबर ने पद गाने की प्रार्थना की। कुम्भनदास तो भगवान श्रीकृष्ण के ऐश्वर्य-माधुर्य के कवि थे, उन्होंने पद-गान किया-

भगत को कहा सीकरी काम।

आवत जात पन्हैयां टूटीं, बिसरि गयो हरिनाम।।

जाको मुख देखैं दुख लागै, ताको करनो पर्‌यो प्रनाम।

'कुंभनदास' लाल गिरिधर बिनु और सबै बेकाम।।

बादशाह सहृदय थे, उन्होंने आदरपूर्वक उनको घर भेज दिया।

मानसिंह द्वारा सराहना

संवत 1620 विक्रमी में महाराज मानसिंह ब्रज आये थे। उन्होंने वृन्दावन के दर्शन के बाद गोवर्धन की यात्रा की। श्रीनाथ जी के दर्शन किये। उस समय मृदंग और वीणा के साथ कुम्भनदास जी कीर्तन कर रहे थे। राजा मानसिंह उनकी पद-गान शैली से बहुत

CamScanner

कुम्भनदास(१४६८-१५८३) अष्टछाप के प्रसिद्ध कवि थे। ये परमानंददास जी के समकालीन थे। कुम्भनदास का चरित "चौरासी वैष्णवन की वार्ता" के अनुसार संकलित किया जाता है।

कुम्भनदास ब्रज में गोवर्धन पर्वत से कुछ दूर "जमुनावतौ" नामक गाँव में रहा करते थे। उनके घर में खेती-बाड़ी होती थी। अपने गाँव से वे पारसोली चन्द्रसरोवर होकर श्रीनाथ जी के मन्दिर में कीर्तन करने जाते थे। उनका जन्म गौरवा क्षत्रिय कुल में हुआ था। कुम्भनदास के सात पुत्र थे, जिनमें चतुर्भजदास को छोड़कर अन्य सभी कृषि कर्म में लगे रहते थे। उन्होंने १४९२ ई० में महाप्रभु वल्लभाचार्य से दीक्षा ली थी।

वे पूरी तरह से विरक्त और धन, मान, मर्यादा की इच्छा से कोसों दूर थे। एक बार अकबर बादशाह के बुलाने पर इन्हें फतेहपुर सीकरी जाना पड़ा जहाँ इनका बड़ा सम्मान हुआ। पर इसका इन्हें बराबर खेद ही रहा, जैसा कि इनके इस पद से व्यंजित होता है-

संतन को कहा सीकरी सों काम ?
आवत जात पनहियाँ टूटी, बिसरि गयो हरि नाम।।
जिनको मुख देखे दुख उपजत, तिनको करिबे परी सलाम।।
कुभंनदास लाल गिरिधर बिनु और सबै बेकाम।।

परिचय

अनुमानत: कुम्भनदास जी का जन्म गोवर्धन,मथुरा के सन्निकट जमुनावतो नामक ग्राम में संवत 1525 विक्रमी (1468 ई.) में चैत्र कृष्ण एकादशी को हुआ था। वे गोरवा क्षत्रिय थे। उनके पिता एक साधारण श्रेणी के व्यक्ति थे।खेती करके जीविका चलाते थे। कुम्भनदास ने भी पैतृक वृत्ति में ही आस्था रखी और किसानी

CamScanner

6:06 pm 0 KB/s VoLTE 4G 57%

का जीवन ही उन्हें अच्छा लगा। पारसोली में विशेष रूप से खेती का कार्य चलता था। उन्हें पैसे का अभाव आजीवन खटकता रहा पर उन्होंने किसी के सामने हाथ नहीं पसारा। भगवद्भक्ति ही उनकी सम्पत्ति थी। उनका कुटुम्ब बहुत बड़ा था, खेती की आय से उसका पालन करते थे। परिवार में इनकी पत्नी के अतिरिक्त सात पुत्र, सात पुत्र-वधुएँ और एक विधवा भतीजी थी।

दीक्षा

कुम्भनदास परम भगवद्भक्त, आदर्श गृहस्थ और महान विरक्त थे। वे नि:स्पृत, त्यागी और महासन्तोषी व्यक्ति थे। नके चरित्र की विशिष्ट, अलौकिकता यह थी कि भगवान साक्षात प्रकट होकर उनके साथ सखा भाव की क्रीड़ाएं करते थे। महाप्रभु वल्लभाचार्य जी उनके दीक्षा-गुरु थे। संवत 1550 विक्रमी (1493 ई.) में आचार्य की गोवर्धन यात्रा के समय उन्होंने ब्रह्मसम्बन्ध लिया था। उनके दीक्षा-काल के पंद्रह साल पूर्व श्रीनाथ जी की मूर्ति प्रकट हुई थी, आचार्य की आज्ञा से वे श्रीनाथ जी की सेवा करने लगे थे। 'पुष्टिमार्ग' में दीक्षित तथा श्रीनाथ जी के मन्दिर में कीर्तनकार के पद पर नियुक्त होने पर भी उन्होंने अपनी वृत्ति नहीं छोड़ी और अन्त तक निर्धनावस्था में अपने परिवार का भरण-पोषण करते रहे।

श्रीनाथ जी की सेवा व गायन

भगवान श्रीनाथ से स्नेह

अकबर के समक्ष गायन

एक बार मुग़ल बादशाह अकबर की राजसभा में एक गायक ने कुम्भनदास का पद गाया। बादशाह ने उस पद से आकृष्ट होकर कुम्भनदास को फ़तेहपुर सीकरी बुलाया। पहले तो कुम्भनदास जाना

CamScanner

10:44 am 2 KB/s VoLTE 4G 91%

Bhakti Vikasa Swami

Bhakti Vikasa Swami
1d ·

बेहतर है कि बेवकूफ बने रहो

आजाद आत्मा कभी नहीं कहती कि "मैं आजाद हूँ। " जैसे ही वह कहता है "मुक्त हो गया," वह एक दुष्ट है। एक आजाद आत्मा कभी नहीं कहेगी कि "मैं आजाद हूँ" "यह मुक्त हो गया है। चैतन्य महाप्रभु, वह भगवान हैं -- गुरु अधिक मुर्खा देखी 'करिला ससन [सी. आदि 7.71]. "मेरे गुरु महाराज ने मुझे एक मूर्ख नंबर देखा, और उन्होंने मुझे सताया है।" वह भगवान है। यह एक उदाहरण है। गुरु का सदा सेवक बने रहे तो मुक्ति मिल जाती है। और जैसे ही वह सोचता है कि वह आजाद हो गया है, वह एक बदमाश है। यही चैतन्य महाप्रभु की शिक्षा है। गुरु मोरे मुर्खा देखी'. चैतन्य महाप्रभु मुर्खा हैं? वह खुद को वह मुर्खा क्यों बना रहा है? "मैं मूर्ख नंबर एक हूँ। " इसका मतलब है कि मुक्ति है। गुरु द्वारा दंडित होने के लिए आपको हमेशा तैयार रहना चाहिए। फिर वह आजाद हो गया। और जैसे ही वह सोचता है कि "मैं इस यातना से परे हूँ, मैं आजाद हूँ," वह एक कमीने है। चैतन्य महाप्रभु क्यों कहते हैं गुरु अधिक मुर्खा देखी 'करिला ससन? ये है सहजिया-वडा। वो सोच रहा है अरे मैं आजाद हो गया मुझे गुरु की कोई दिशा नहीं चाहिए। मैं आजाद हो गया। "फिर वह बदमाश है। [...] तो बेहतर है कि हमेशा गुरु महाराज द्वारा निर्देशित होने के लिए एक मूर्ख व्यक्ति बने रहें। यह पूर्णता है।

श्रील प्रभुपाद
वार्तालाप, -- 16 अगस्त 1976, बॉम्बे

Rate this translation

Write a comment...

CamScanner

Osho - The Rebel
परमात्मा की शक्ति कहना ठीक नहीं है,
परमात्मा शक्ति ही है। वह आपके साथ
सोच - समझकर व्यवहार नहीं है उसका,
उसका अपना शाश्वत नियम है। उस शाश्वत
नियम का नाम ही धर्म है। धर्म का अर्थ है,
उस परमात्मा नाम की शक्ति के व्यवहार
का नियम। अगर आप उसके अनुकूल
करते हैं, समझपूर्वक करते हैं, विवेकपूर्वक
करते हैं, तो वह शक्ति आपके लिए कृपा
बन जाएगी - उसकी तरफ से नहीं, आपके
ही कारण। अगर आप उलटा करते हैं,
नियम के प्रतिकूल करते हैं, तो वह शक्ति
आपके लिए अकृपा बन जाएगी।
ओशो
जिन खोजा तिन पाइयां,
प्रवचन #12

CamScanner

Naye bharat ke khoj

10h ·

एक छोटा-सा प्रयोग आपको कहता हूं।

कभी जब चित्त बहुत प्रसन्न हो, कभी जब चित्त बहुत प्रसन्न हो, तो द्वार-दरवाजे बंद करके अपने कमरे में लेट जाएं नग्न होकर; आंख बंद कर लें। और एक मिनट तक अपने माथे पर हाथ रखकर दोनों आंखों के बीच में एक मिनट तक रगड़ते रहें। चित्त अगर प्रसन्न हो, तो माथे पर रगड़ते ही सारी प्रसन्नता माथे पर इकट्ठी हो जाएगी।

ध्यान रहे, जब आदमी उदास होता है, तो अक्सर माथे पर हाथ रखता है। माथे पर हाथ रखने से उदासी बिखरती है और प्रसन्नता इकट्ठी होती है। हालांकि प्रसन्नता में कोई नहीं रखता, उसका खयाल नहीं है।

जब आदमी उदास होता है, दुखी होता है, चिंतित होता है, तो माथे पर हाथ रखता है। उससे चिंता बिखर जाती है; उस जगह जो इकट्ठा है, वह बिखर जाता है। निगेटिव कुछ होगा, तो माथे पर हाथ रखने से बिखर जाता है। पाजिटिव कुछ होगा, तो माथे पर हाथ रखने से इकट्ठा हो जाता है।

आचार्य श्री रजनीश
Osho स्वभाव अध्यात्म है।
गीता दर्शन अ.8.प्र.1

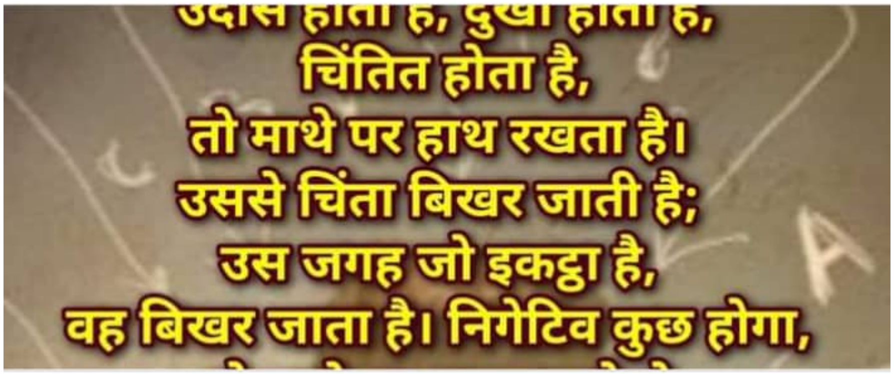

Write a comment...

CamScanner

9:01 pm 7 KB/s VoLTE 4G 21%

ली गई। और वह सदा सही साबित हुआ। तो कोई उसे मेहर बाबा के पास ले गया। वह बैठा और विफल रहा। और यह उसकी जिंदगी की पहली विफलता थी। और एक ही। और फिर हम यह भी कैसे कहें कि यह उसकी विफलता हुई।

वह आदमी घूरता रहा, घूरता रहा, और तब उसे पसीना आने लगा। लेकिन एक शब्द उसके हाथ नहीं लगा। हाथ में कलम लिए बैठा रहा और फिर बोला—किस किस्म के आदमी हैं । यह, मैं नहीं पढ़ पाता हूं, क्योंकि पढ़ने के लिए कुछ है ही नहीं। यह आदमी तो बिलकुल खाली है। मुझे यह भी याद नहीं रहता की यहां कोई बैठा है। आँख बंद करने के बाद मुझे बार-बार आँख खोल कर देखना पड़ता है कि यह व्यक्ति यहां है कि नहीं। या यहां से हट गया है। मेरे लिए एकाग्र होना भी कठिन हो गया है। क्योंकि ज्यों ही मैं आँख बंद करता हूं कि मुझे लगता है कि धोखा दिया जा रहा है। वह व्यक्ति यहां से हट जाता है। मेरे सामने कोई भी नहीं है। और जब मैं आँख खोलता हूं तो उसको सामने ही पाता हूं। वह तो कुछ भी नहीं सोच रहा है।

उस टकटकी ने, सतत टकटकी ने मेहर बाबा के मन को पूरी तरह विसर्जित कर दिया था।

- ओशो

CamScanner

9:01 pm 0 KB/s VoLTE 4G 21%

2d ·

अहमद नगर स्थित मेहर बाबा के आश्रम के साधना कक्ष में (जिसमें स्वयं मेहर बाबा रहा करते थे) ध्यान के कुछ अनमोल क्षण...

Osho - मेहर बाबा लगातार तीन वर्षों तक बिना कुछ किए छत को घूरते रहे थे। तुम सिर्फ तीन मिनट के लिए ऐसी टकटकी लगाओ और तुमको लगेगा कि तीन वर्ष गुजर गये। तीन मिनट भी बहुत लम्ब समय मालूम होगा। तुम्हें लगेगा की समय ठहर गया है। और घड़ी बंद हो गई है। लेकिन मेहर बाबा घूरते रहे, घूरते रह, धीरे-धीरे विचार मिट गए। और गति बंद हो गई। मेहर बाबा मात्र चेतना रह गए। वे मात्र घूरना बन गए। टकटकी बन गए। और तब वे आजीवन मौन रह गए। टकटकी के द्वारा वे अपने भीतर इतने शांत हो गए कि उनके लिए फिर शब्द रचना असंभव हो गई।

मेहर बाबा अमेरिका में थे। वहां एक आदमी था जो दूसरों के विचार को, मन को पढ़ना जानता था। और वास्तव में वह आदमी दुर्लभ था—मन के पाठक के रूप में। वह तुम्हारे सामने बैठता, आँख बंद कर लेता और कुछ ही क्षणों में वह तुम्हारे साथ ऐसा लयवद्ध हो जाता कि तुम जो भी मन में सोचते, वह उसे लिख डालता था। हजारों बार उसकी परीक्षा ली गई। और वह सदा सही साबित हुआ। तो कोई उसे मेहर बाबा के पास ले गया। वह बैठा और विफल रहा। और यह उसकी जिंदगी की पहली विफलता थी। और एक ही। और फिर हम यह भी कैसे कहें कि यह उसकी विफलता हुई।

वह आदमी घूरता रहा, घूरता रहा, और तब उसे पसीना आने लगा। लेकिन एक शब्द उसके हाथ नहीं लगा। हाथ में कलम लिए बैठा रहा और फिर बोला—किस किस्म के आदमी हैं । यह, मैं नहीं पढ़ पाता हूं, क्योंकि पढ़ने के लिए कुछ है ही नहीं। यह आदमी तो बिलकुल खाली है। मुझे यह भी याद नहीं रहता की यहां कोई बैठा है। आँख बंद करने के बाद मुझे बार-बार आँख खोल कर देखना पड़ता है कि यह व्यक्ति यहां है कि नहीं। या यहां से हट गया है। मेरे लिए एकाग्र होना भी कठिन हो गया है। क्योंकि ज्यों ही मैं आँख बंद करता हूं कि मुझे लगता है कि धोखा दिया जा रहा है। वह व्यक्ति यहां से हट जाता है। मेरे सामने कोई भी नहीं है। और जब मैं आँख खोलता हूं तो उसको सामने ही पाता हूं। वह तो कुछ भी नहीं सोच रहा है।

CamScanner

8:56 pm 0 KB/s 22%

facebook

Like Comment Send Share

(ओशो) के प्रेमी

Sarika Agarwal · 10h ·

सुख में समय छोटा हो जाता है; दुख में बड़ा हो जाता है; आनंद में शून्य हो जाता है—होता ही नहीं। अगर कभी तुमने आनंद का क्षण जाना है या कभी जानोगे, तो तुम एक बात पाओगे कि समय ठहर जाता है, घड़ी रुक जाती है। सब ठहर जाता है। अचानक सारा अस्तित्व ठहर जाता है। इधर म मन ठहरा कि वहां समय ठहरा।

मन और समय एक ही चीज के दो नाम हैं।

CamScanner

रोज तुम यह होते भी देखते हो। हर घड़ी कोई न कोई मर रहा है। हर घड़ी कोई न कोई फूल मुर्झा रहा है। हर घड़ी कोई न कोई वृक्ष सूखा जा रहा है। चारों तरफ मौत ने तुम्हें घेरा है। अर्थी निकल जाती है तुम्हारे सामने से, तुम दो आंसू भी रो लेते हो उसकी सहानुभूति में, पर तुम्हें याद नहीं आती कि यह तुम्हारी ही अर्थी की खबर है। यह मौत किसी और की नहीं, यह मौत तुम्हारे ही पते पर आई है। यह डाकिए ने किसी और के द्वार पर दस्तक नहीं दी, डाकिए ने तुम्हारे ही द्वार पर दस्तक दी है।

हर मरती हुई अवस्था में हर मृत्यु की घटना में, तुम अगर थोड़े जागकर देखो तो तुम पाओगे, तुम्हारे जीवन का सार–निचोड़ क्या है? यही कि थोड़ी देर–अबेर मर जाओगे। यही कि कदम चलते–चलते रेंगते–रेंगते मौत की मंजिल पर पहुंच जाओगे।

यह भी कोई पहुंचना हुआ? यह कोई बात हुई? यह जीवन तो बड़ा बेसार हुआ। यह जीवन तो बड़ा बेरंग हुआ। यह जीवन सच्चा नहीं हो सकता। इस जीवन को कहीं तुम चूक ही गए। तुम्हारे पास ठीक–ठीक को देखने की आख ही शायद नहीं थी। तुमने गलत देखा, वही गलत तुम्हें मृत्यु में ले आया। जिन्होंने ठीक देखा, वे अमृत में जाग गए।

CamScanner

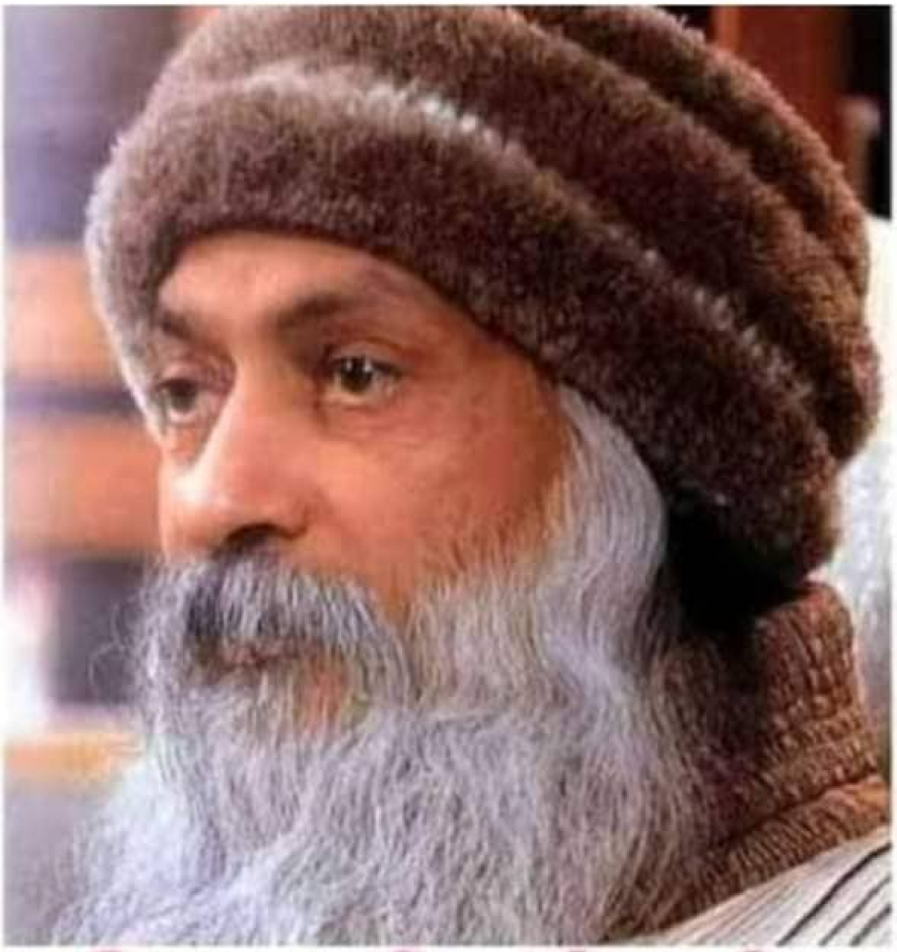

कितना ही अंधेरा हो,
घबड़ाना मत, अमावस की
रात भी निर्वाण घटा है!
और कितनी ही गंदी कीचड़
हो, घबड़ाना मत, कमल
खिले हैं!

R.Kart

II ओशो II

CamScanner

10:31 pm 0 KB/s VoLTE 4G 11%

जैसे ही घबड़ाते हुए, रोते हुए... आंखें आंसुओ से भरी हुई, और मिमिया रहा है, लेकिन अब मजबूरी थी, अब यह सिंह दबा रहा है तो देखना पड़ा... उसने देखा, बस देखते ही एक हुंकार निकल गई। एक क्षण में सब बदल गया।

वे तसव्वुर में यकायक आ गए।

हिज्र की सूरत बदल कर रह गई

एक क्षण में क्रांति हो गई। भेड़ गई। सिंह जो था, वही हो गया।

ऐसे ही तुम हो। तुम्हें भूल ही गया है तुम कौन हो। तुमने दोस्ती बगुलों से बना ली है। तुमने दोस्ती झूठ से कर ली है। तुमने झूठ के खूब घर बना लिए हैं। और झूठ के घर जब तक तुम्हें घर मालूम होते हैं, असली घर की तलाश नहीं हो सकती।

पिय मिले प्रेमानंद, तो हंस समाज है।

तब फिर एक—दूसरे ही जगत् में तुम्हारा प्रवेश होगा— —हंसों का समाज, सिद्धों का समाज। उसका नाम ही मोक्ष है। लेकिन सारी बात का सारसूत्र है— —मौन प्रेम।
ओशो

CamScanner

Osho Naman

तुमने सुनी है कहानी? — —एक सिंहनी छलांग लगाती थी एक पहाड़ से। गर्भवती थी, बीच में ही बच्चा हो गया। वह बच्चा नीचे गिर गया। नीचे से भेड़ों का एक झुंड निकल रहा था, वह बच्चा भेड़ों के साथ हो लिया। उसने बचपन से ही अपने को भेड़ों के बीच पाया, उसने अपने को भेड़ ही जाना। और तो जानने का उपाय क्या था?

वह सिंह का बच्चा भेड़ होकर रह गया। भेड़ों जैसा मिमियाता। भेड़ों के साथ घसर—पसर चलता। भेड़ों के साथ भागता। और भेड़ों ने भी उसे अपने बीच स्वीकार कर लिया। उन्हीं के बीच बड़ा हुआ। उन्हें कभी उससे भय भी नहीं लगा। कोई कारण भी नहीं था भय का। वह सिंह शाकाहारी रहा। जिनके साथ था, भेड़ें भागती तो वह भी भागता।

एक दिन ऐसा हुआ कि एक सिंह ने भेड़ों के इस झुंड पर हमला किया। वह सिंह तो चौंक गया। वह यह देख कर चकित हो गया कि यह हो क्या रहा है। उसे अपनी आंखों पर भरोसा न आया। सिंह भाग रहा है भेड़ों के बीच में! और भेड़ों को उससे भय भी नहीं है; घसर—पसर उसके साथ भागी जा रही हैं। और सिंह क्यों भाग रहा है? उस बूढ़े सिंह को तो कुछ समझ में नहीं आया। उसका तो जिंदगीभर का सारा ज्ञान गड़बड़ा गया। उसने कहा, यह हुआ क्या? ऐसा तो न देखा न सुना। न कानों सुना, न आंखों देखा। उसने पीछा किया। और भेड़ें तो और भागीं। और भेड़ों के बीच जो सिंह छिपा था, वह भी भागा। और बड़ा मिमियाना मचा और बड़ी घबड़ाहट फैली। मगर उस बूढ़े सिंह ने आखिर उस जवान सिंह को पकड़ ही लिया। वह तो मिमियाने लगा, रोने लगा। कहने लगा: छोड़ दो, मुझे छोड़ दो, मुझे जाने दो। मेरे सब संगी—साथी जा रहे हैं, मुझे जाने दो।

मगर वह बूढ़ा सिंह उसे घसीट कर उसे नदी के किनारे ले गया। उसने कहा, मूरख! तू पहले देख पानी में अपना चेहरा। मेरा चेहरा देख और पानी में अपना चेहरा देख, हम दोनों के चेहरे पानी में देख।

जैसे ही घबड़ाते हुए, रोते हुए... आंखें आंसुओ से भरी हुईं, और मिमिया रहा है, लेकिन अब मजबूरी थी, अब यह सिंह दबा रहा है तो देखना पड़ा... उसने देखा, बस देखते ही एक हुंकार निकल गई। एक क्षण में

CS CamScanner

महत्वाकांक्षा हीनता पैदा करवाती है कि मैं अभी कुछ भी नहीं। न सिकंदर बन पाया, न अशोक बन पाया, न अकबर बन पाया, न बुद्ध बन पाया, न महावीर बन पाया, कुछ भी नहीं। जिंदगी यूं ही चली जा रही है! अभी तक कोई अपनी छाप नहीं छोड़ पाया दुनिया पर। हस्ताक्षर नहीं कर पाया। तो हीनता पैदा होती है। महत्वाकांक्षा का जहर हीनता पैदा कर देता है। और हीनता बड़ी गांठ है। फिर आदमी धन से, पद से, प्रतिष्ठा से, किसी भी तरह से—अगर अच्छी तरह से न मिले तो गलत तरह से; चोरी से, बेईमानी से, गुंडागर्दी से—फिर साध्यों की फिक्र नहीं रह जाती कि वह शुभ साधन से ही मिलने चाहिए। मिलने चाहिए—साधन फिर शुभ हों कि अशुभ।

CamScanner

ओशो
प्रेम . . .
बूंद - बूंद से सागर बनता है। और क्षण - क्षण से जीवन। बूंद को जो पहचान ले , वह सागर को जान लेता है। और , क्षण को जो पा ले , वह जीवन पा लेता है।

CamScanner

जब प्रेम का कोई विद्यालय नहीं हो सकता तो धर्म का कैसे हो सकता है? धर्म तो प्रेम जैसा ही अनुभव है। जब हम एक व्यक्ति को प्रेम करते हैं, तो उसे हम प्रेम कहते हैं। और जब हम समस्त को प्रेम करते हैं, तो उसे हम धर्म कहते हैं। प्रेम का ही विराट रूप धर्म है। एक व्यक्ति और दूसरे व्यक्ति के बीच जो नाता है, वह प्रेम है। एक व्यक्ति और समष्टि के बीच जो नाता है, वह धर्म है।

ओशो : माटी कहे कुम्हार सूं

CamScanner

यह भी अहंकार है कि मैं दूसरों के दुख मिटाऊंगा। मैं कौन हूं? अगर परमात्मा नहीं मिटा पा रहा है तो मैं कैसे मिटाऊंगा? कितने अवतार, कितने तीर्थंकर, कितने पैगंबर आये और गये; अगर नहीं मिटा पाये हैं आदमी का दुख तो मैं कैसे मिटाऊंगा? छोड़ो यह पागलपन। छोड़ो ये व्यर्थ की बातें। कोई किसी का दुख नहीं मिटा सकता लेकिन प्रत्येक व्यक्ति अपना दुख जरूर मिटा सकता है। जो हो सकता है वही कर लो पहले, फिर जो नहीं हो सकता है वह भी होना शुरू हो जाता है। संभव को सम्भाल लो, असंभव भी सम्भालता है।

+91-9599268777 ओशो

CamScanner

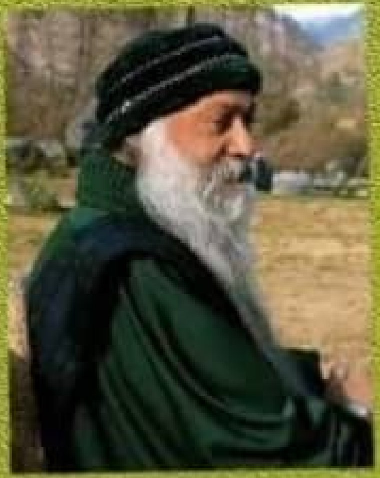

ओशो
गीता-दर्शन
ओशो निर्वाण समूह

इस जगत में किसी भी व्यक्ति के साथ कभी अन्याय नहीं होता।
ध्यान रहे, जो भी हम पर लौटता है, वह हमारा दिया हुआ ही लौटता है। हां, लौटने में वक्त लग जाता है। प्रतिध्वनि होने में समय गिर जाता है। उतने समय के फासले से पहचान मुश्किल हो जाती है।हम जब बीज बोते हैं, तब तो पता नहीं चलता; जब फल आते हैं, तब पता चलता है। और अगर फल विषाक्त आते हैं, जहरीले, तो हम रोते हैं और कोसते हैं। हमें पता नहीं कि यह फल हमारे बीजों का ही परिणाम है।

CamScanner

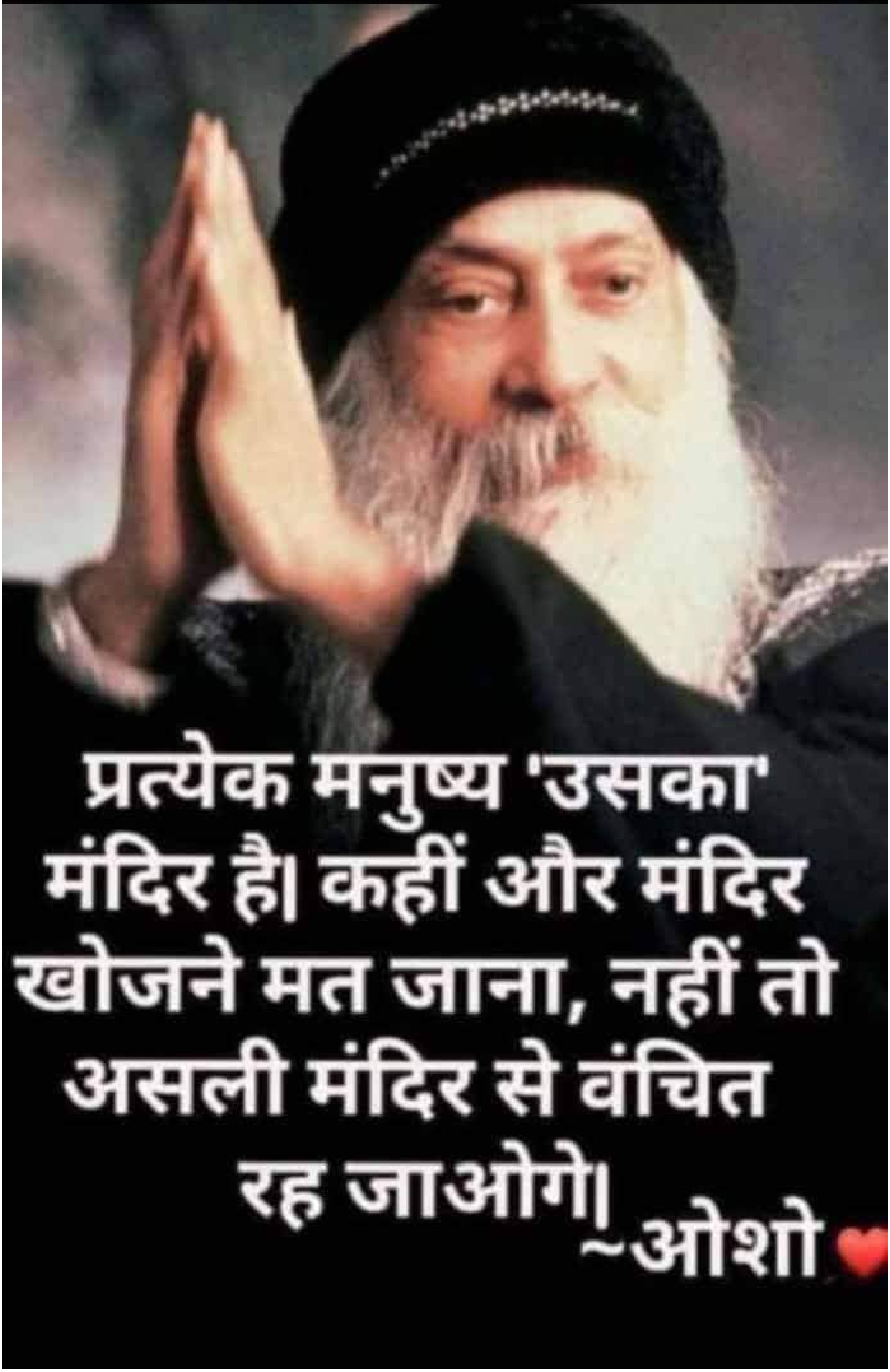
प्रत्येक मनुष्य 'उसका'
मंदिर है। कहीं और मंदिर
खोजने मत जाना, नहीं तो
असली मंदिर से वंचित
रह जाओगे।
~ओशो

CamScanner

Loving_osho
आत्मा भी अन्दर है,
परमात्मा भी अन्दर है,
और परमात्मा से मिलने का साधन
भी अन्दर हैं।
ओशो

CamScanner

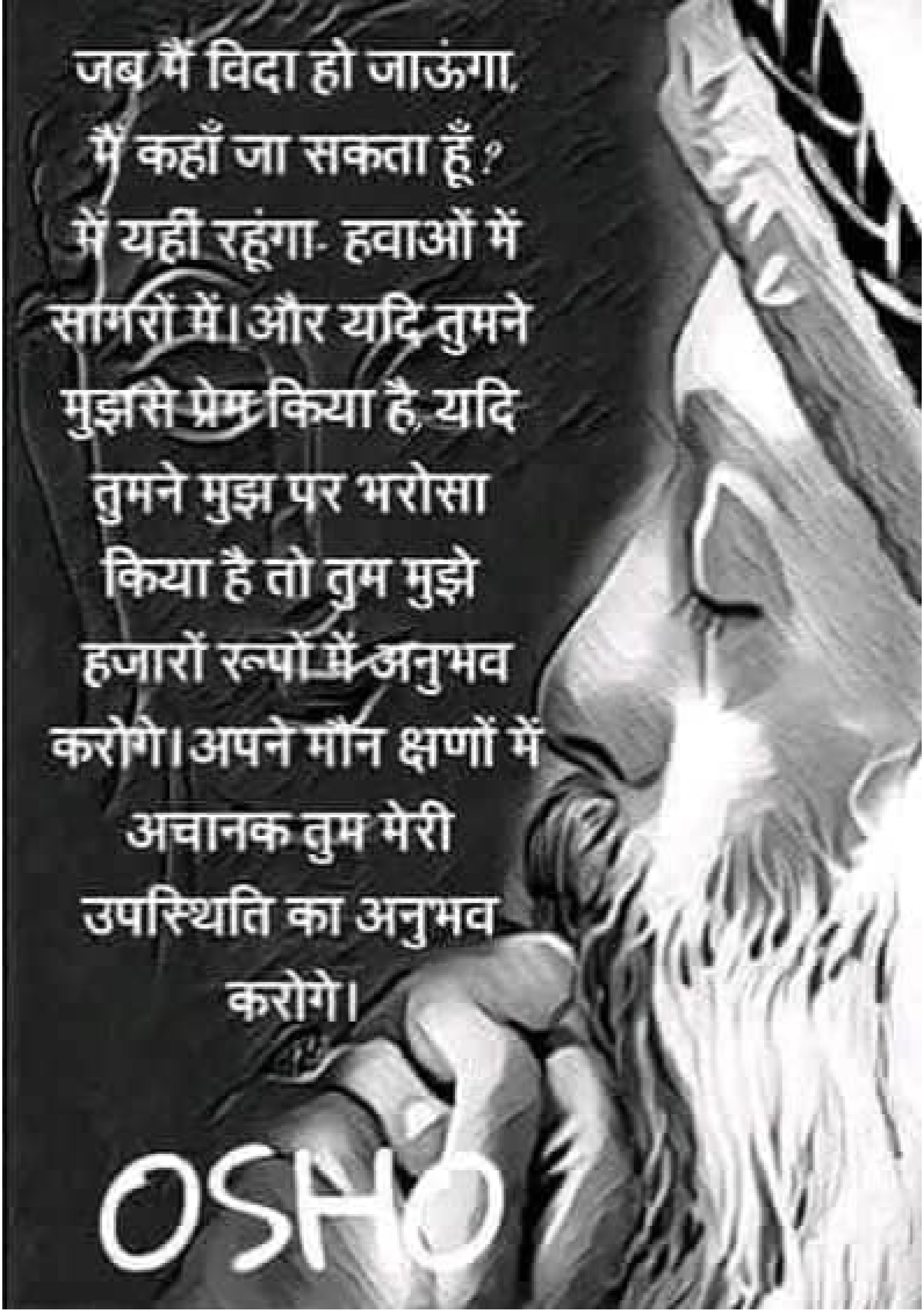

CS CamScanner

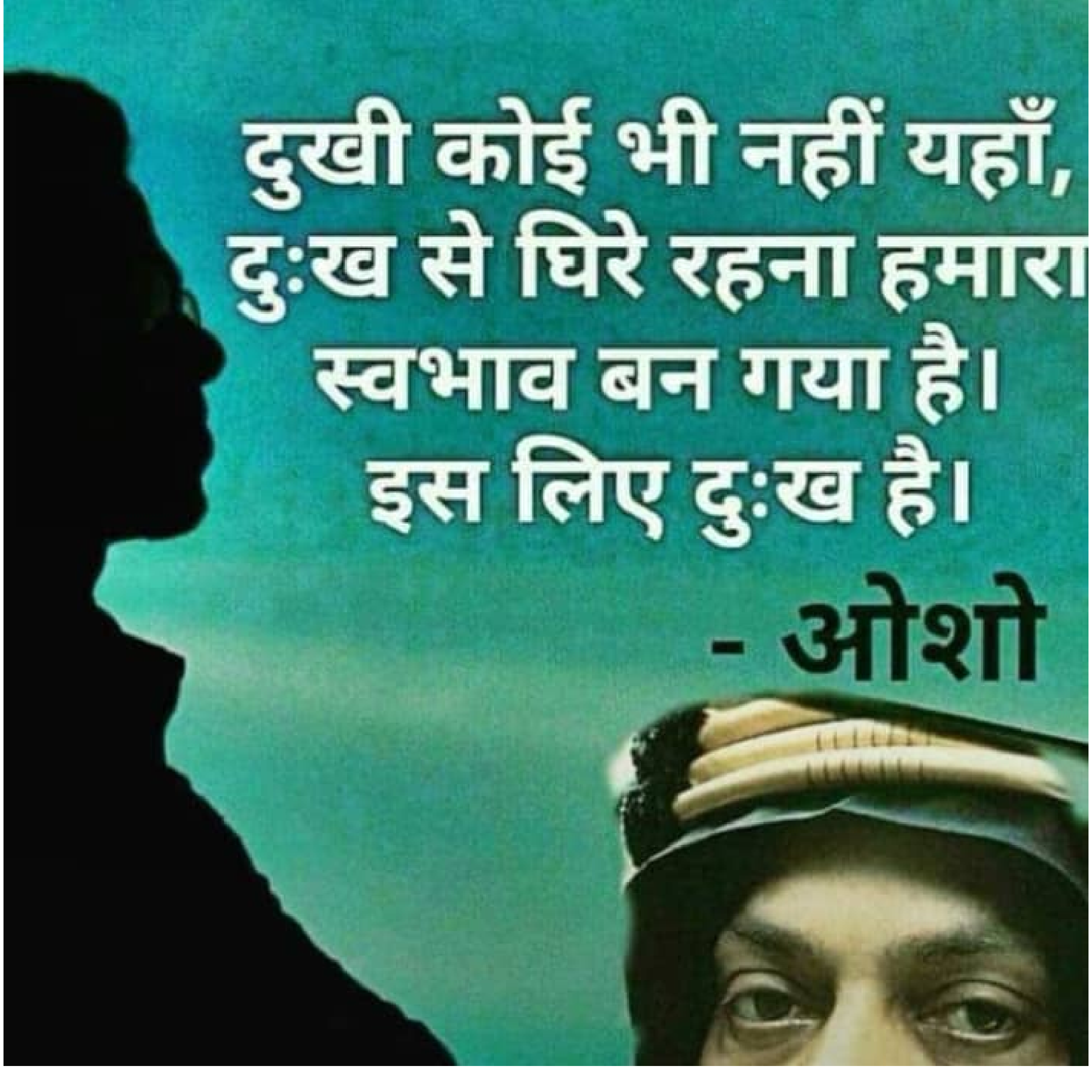

CamScanner

फलों का हिसाब ही छोड़ दिया, हाथ का हिसाब है।
जिस दिन तुम देख पाओगे कि परमात्मा के ही हाथ से दुख भी मिलता है, उस दिन तुम उसे दुख कैसे कहोगे? तुम उसे दुख कह पाते हो अभी, क्योंकि तुम हाथ को नहीं देख रहे हो। जिस दिन तुम देख पाओगे सुख भी उसका दुख भी उसका, सुख-दुख दोनों का रूप खो जाएगा। न सुख सुख जैसा लगेगा, न दुख दुख जैसा लगेगा। और जिस दिन सुख-दुख एक हो जाते हैं, उसी दिन आनंद की घटना घटती है। जब तुम्हें सुख-दुख का द्वैत नहीं रह जाता, तब अद्वैत उतरता है, तब आनंद उतरता है, तब तुम आनंदित हो जाओगे।

नहीं! किसी को, पड़ोस में, पति को, पत्नी को, मित्र को, भाई को, दोस्त को, दुश्मन को दोषी मत ठहराना। सब दोषों का मालिक वह है। और जब खुशी आए, सफलता मिले, तो अपने को, अपने अहंकार को मत भरना। सब सफलताओं, सब स्वादिष्ट फलों का मालिक भी वही है। अगर तुम सब उसी पर छोड़ दो, तो सब खो जाएगा। सिर्फ आनंद शेष रह जाता है।

ओशो; एक ओंकार सतनाम--प्रवचन--02

CS CamScanner

10:23 pm 3 KB/s 12%

ओशो का हिन्दी साहित्य
Sulaxna Dixit Rawat · 31 Jan ·

एक बादशाह हुआ। उसका एक गुलाम था। गुलाम से उसे बड़ा प्रेम था, बड़ा लगाव था। वह बड़ा स्वामिभक्त था। एक दिन दोनों जंगल से गुजरते थे। एक वृक्ष में एक ही फल लगा था। सम्राट ने फल तोड़ा। जैसी उसकी आदत थी, उसने एक कली काटी और गुलाम को दी। गुलाम ने चखी और उसने कहा, मालिक, एक कली और।

और गुलाम मांगता ही गया। फिर एक ही कली हाथ में बची। सम्राट ने कहा, इतना स्वादिष्ट है? गुलाम ने झपट्टा मार कर वह एक कली भी छीननी चाही।

सम्राट ने कहा, यह हद हो गई! मैंने तुझे पूरा फल दे दिया, और दूसरा फल भी नहीं है। और अगर इतना स्वादिष्ट है, तो कुछ मुझे भी चखने दे।

उस गुलाम ने कहा कि नहीं, स्वादिष्ट बहुत है और मुझे मेरे सुख से वंचित न करें, दे दें। लेकिन सम्राट ने चख ली। वह फल बिलकुल जहर था। मीठा होना तो दूर, उसके एक टुकड़े को लीलना मुश्किल था। सम्राट ने कहा, पागल! तू मुस्कुरा रहा है, और इस जहर को तू खा गया? तू ने कहा क्यों नहीं?

उस गुलाम ने कहा, जिन हाथों से इतने सुख मिले हों और जिन हाथों से इतने स्वादिष्ट फल चखे हों, एक कड़वे फल की शिकायत?

फलों का हिसाब ही छोड़ दिया, हाथ का हिसाब है।
जिस दिन तुम देख पाओगे कि परमात्मा के ही हाथ से दुख भी मिलता है, उस दिन तुम उसे दुख कैसे कहोगे? तुम उसे दुख कह पाते हो अभी, क्योंकि तुम हाथ को नहीं देख रहे हो। जिस दिन तुम देख पाओगे सुख भी उसका दुख भी उसका, सुख-दुख दोनों का रूप खो जाएगा। न सुख सुख जैसा लगेगा, न दुख दुख जैसा लगेगा। और जिस दिन सुख-दुख एक हो जाते हैं, उसी दिन आनंद की घटना घटती है। जब तुम्हें सुख-दुख का द्वैत नहीं रह जाता, तब अद्वैत उतरता है, तब आनंद उतरता है, तब तुम आनंदित हो जाओगे।

CamScanner

CamScanner

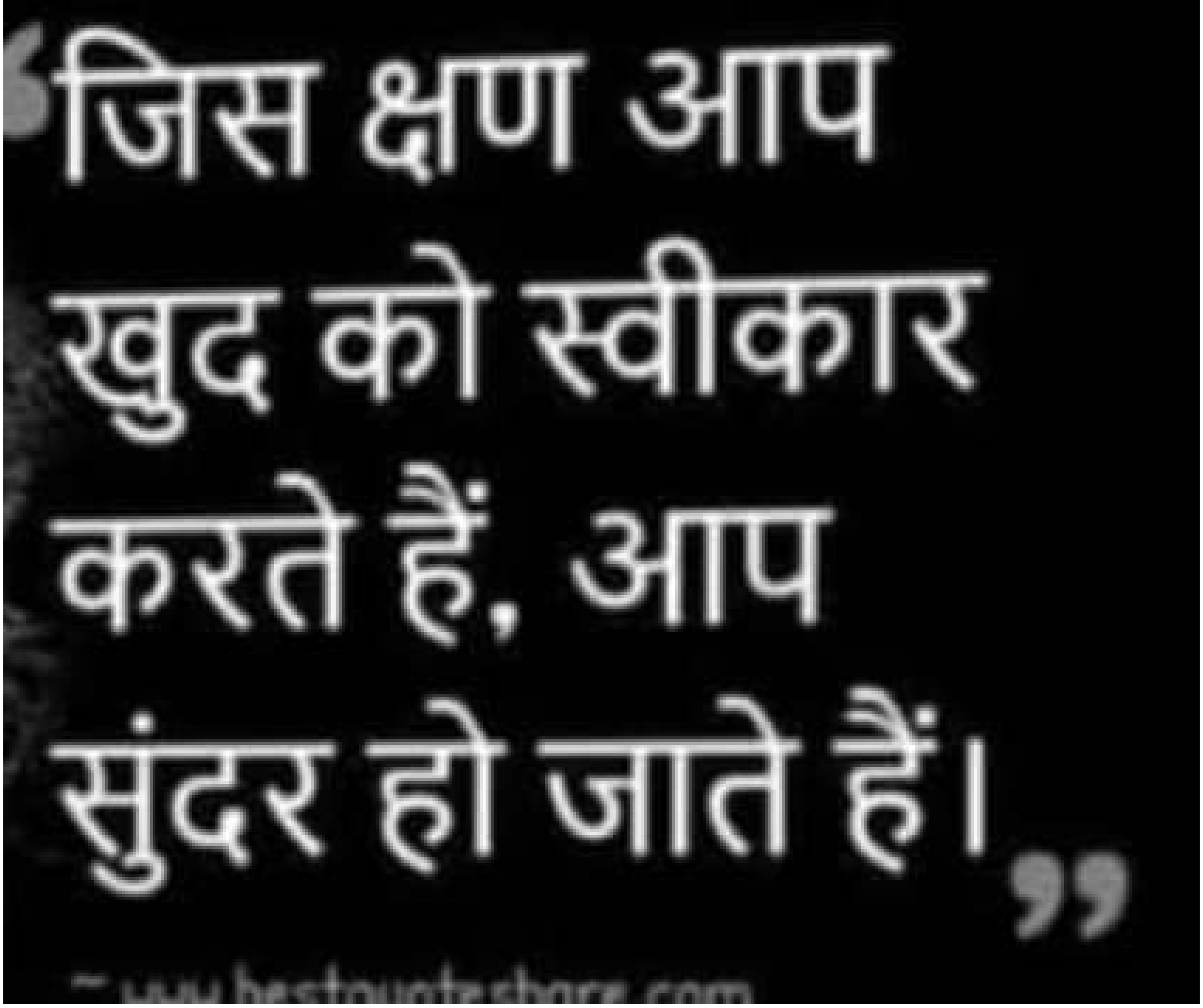

CamScanner

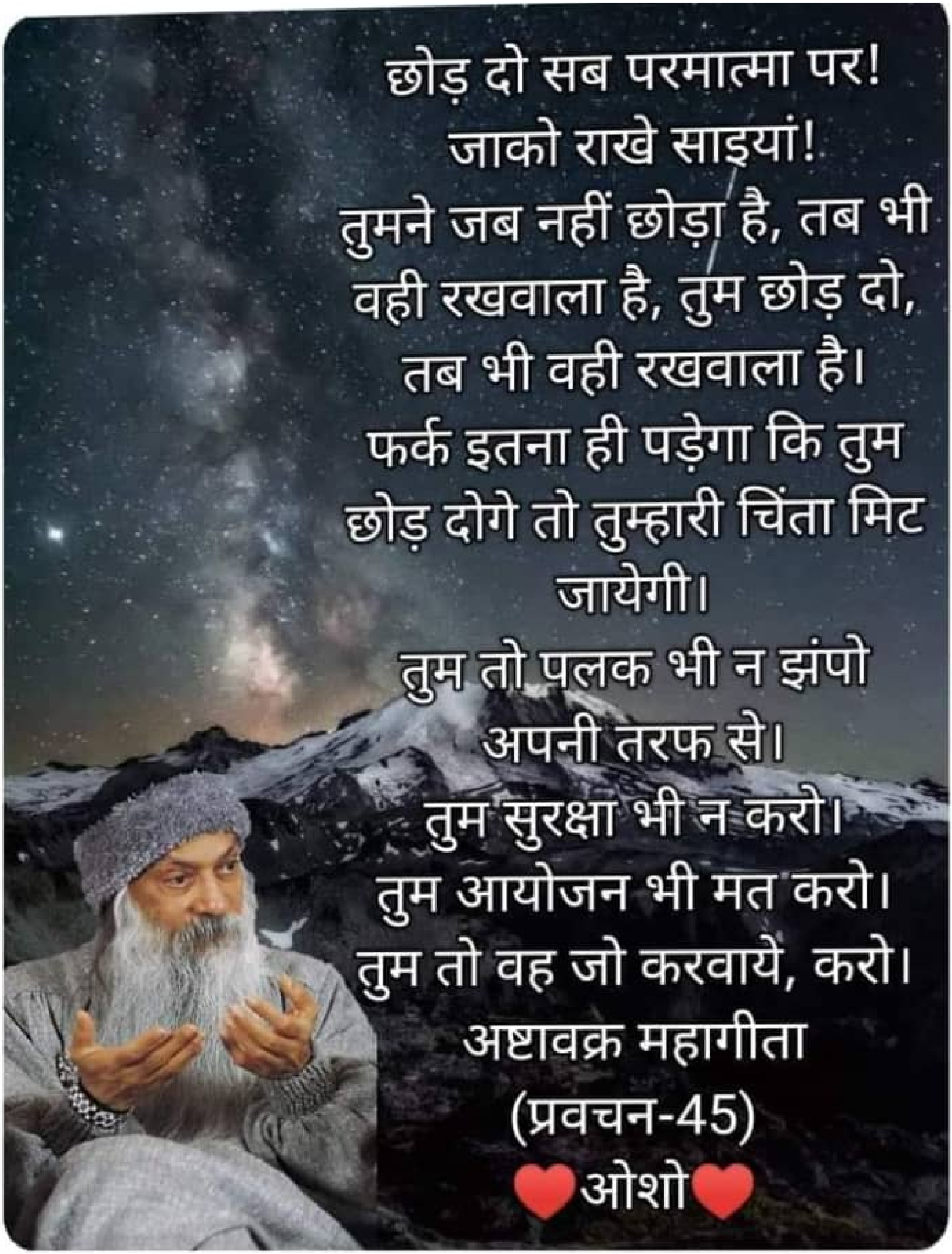
छोड़ दो सब परमात्मा पर!
जाको राखे साइयां!
तुमने जब नहीं छोड़ा है, तब भी
वही रखवाला है, तुम छोड़ दो,
तब भी वही रखवाला है।
फर्क इतना ही पड़ेगा कि तुम
छोड़ दोगे तो तुम्हारी चिंता मिट
जायेगी।
तुम तो पलक भी न झंपो
अपनी तरफ से।
तुम सुरक्षा भी न करो।
तुम आयोजन भी मत करो।
तुम तो वह जो करवाये, करो।
अष्टावक्र महागीता
(प्रवचन-45)
ओशो

CamScanner

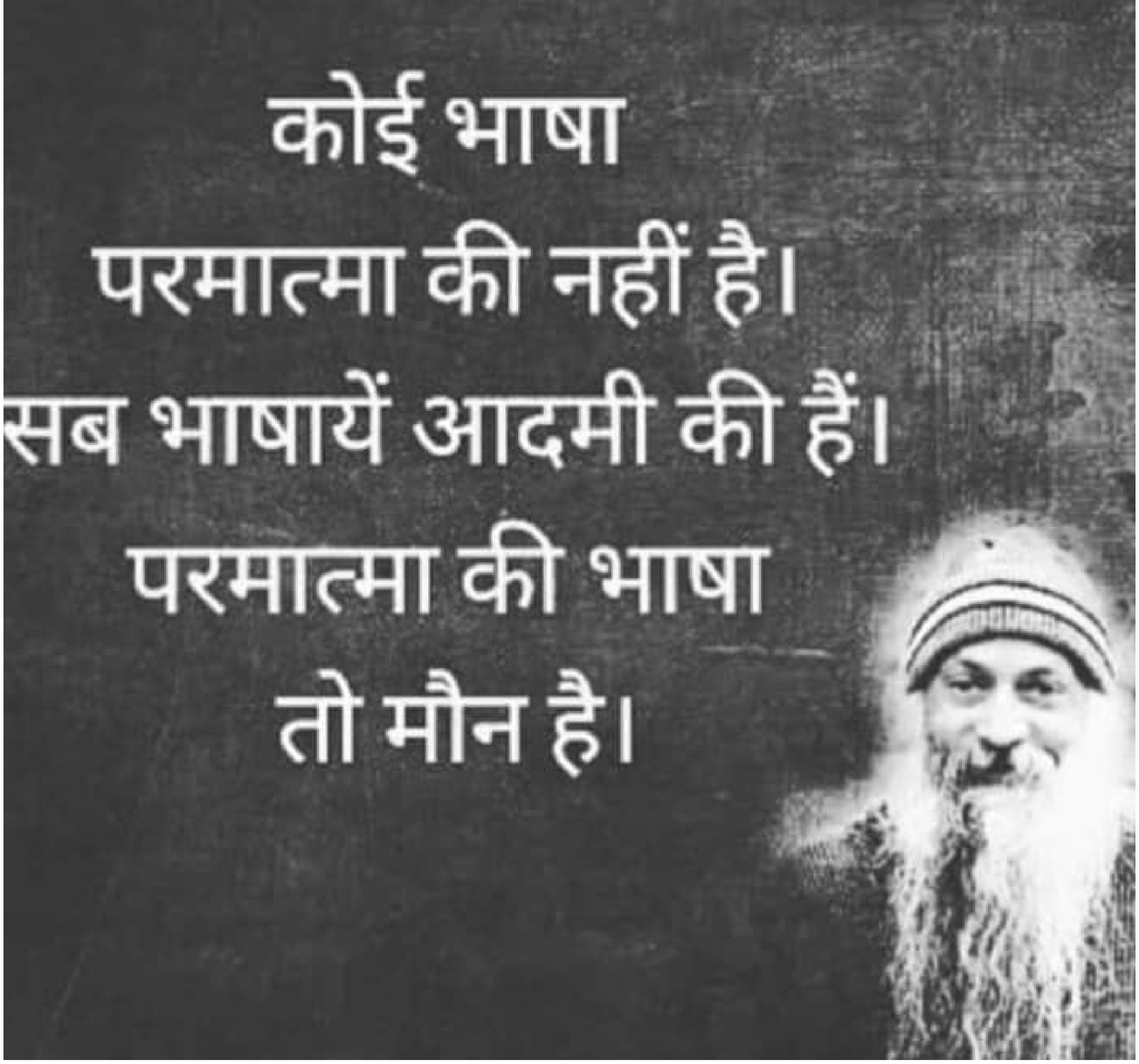

CamScanner

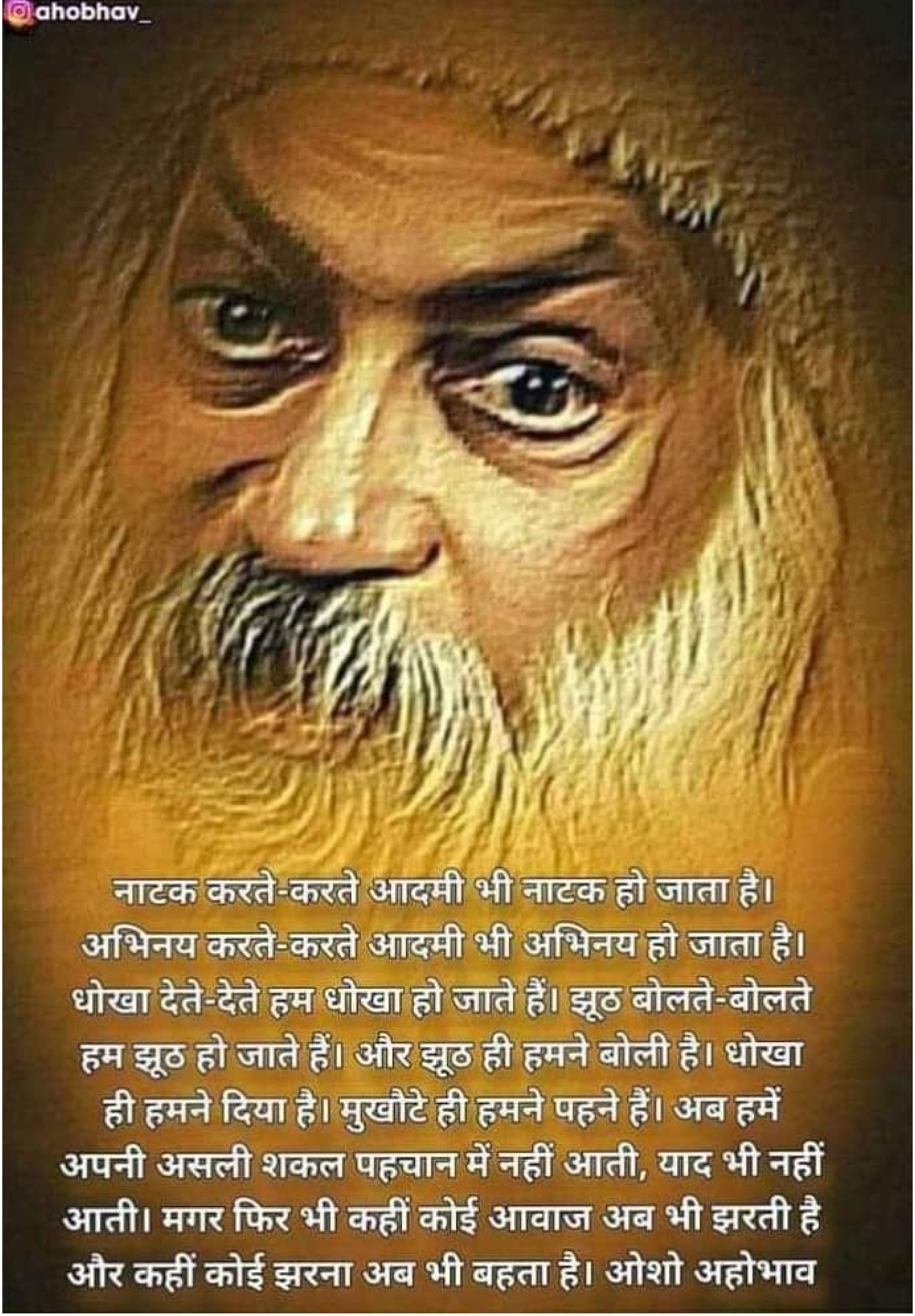
ahobhav_
नाटक करते-करते आदमी भी नाटक हो जाता है।
अभिनय करते-करते आदमी भी अभिनय हो जाता है।
धोखा देते-देते हम धोखा हो जाते हैं। झूठ बोलते-बोलते
हम झूठ हो जाते हैं। और झूठ ही हमने बोली है। धोखा
ही हमने दिया है। मुखौटे ही हमने पहने हैं। अब हमें
अपनी असली शकल पहचान में नहीं आती, याद भी नहीं
आती। मगर फिर भी कहीं कोई आवाज अब भी झरती है
और कहीं कोई झरना अब भी बहता है। ओशो अहोभाव

CamScanner

ओशो-Life with Osho

प्रत्येक व्यक्ति एक विशिष्ट भाग्य के साथ इस दुनिया में आता है – उसके पास जो कुछ है उसे परिपूर्ण करना पड़ता है, कुछ सन्देश दुनिया को देना होता है – कुछ कार्य जिन्हें पूरा करना पड़ता है. आप यहाँ संयोगवश नहीं हो – आपकी यहाँ सार्थकता है. आप के पीछे एक उद्देश्य है. सृष्टि आपके माध्यम से कुछ कराना चाहती है.

– ओशो.

CS CamScanner

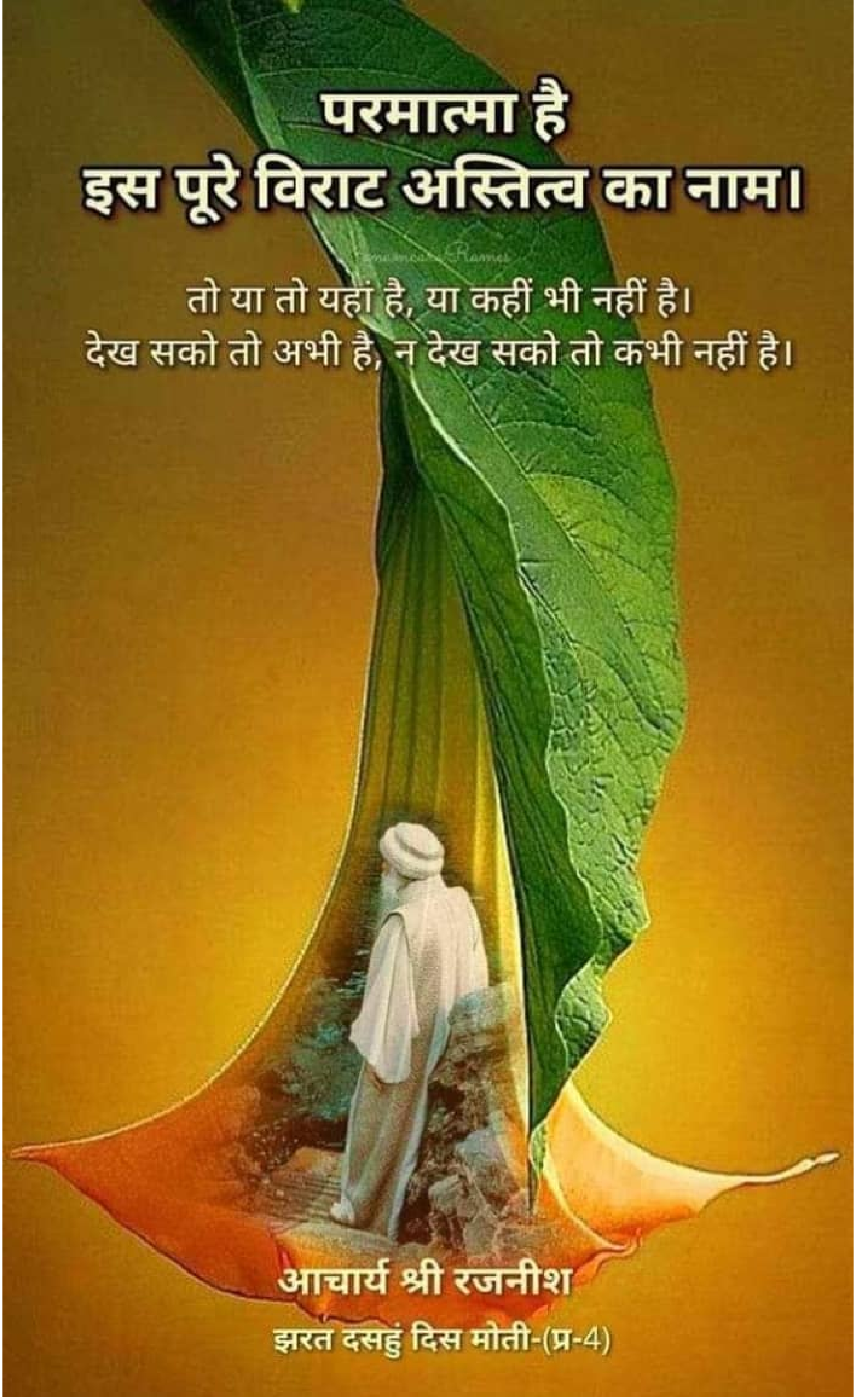
परमात्मा है
इस पूरे विराट अस्तित्व का नाम।
तो या तो यहां है, या कहीं भी नहीं है।
देख सको तो अभी है, न देख सको तो कभी नहीं है।
आचार्य श्री रजनीश
झरत दसहुं दिस मोती-(प्र-4)

CamScanner

10:18 pm 0 KB/s VoLTE 4G 13%

25 6 comments • 1 share

Like Comment Send Share

ओशो का हिन्दी साहित्य

Sulaxna Dixit Rawat · 1d ·

जीवन में जो भी सुंदर है वह अकेले में ही खिलता है, फूलता है, सुगंधित होता है। जीवन में जो भी श्रेष्ठ है वह सब अकेले में पैदा हुआ है। भीड़ ने कुछ भी महान को जन्म नहीं दिया--न कोई गीत, न कोई सौंदर्य, न कोई सत्य, न कोई समाधि। नहीं, भीड़ में कुछ भी पैदा नहीं हुआ। जो भी जन्मा है, एकांत में, अकेले में जन्मा है।

लेकिन हम अकेले होते ही नहीं। हम सदा भीड़ में घिरे हैं। या तो बाहर की भीड़ से घिरे हैं या भीतर की भी भीड़ से घिरे हैं। भीड़ से हम छूटते ही नहीं। क्षण भर को अकेले नहीं होते। इसलिए जो भी महत्वपूर्ण है जीवन में, वह चूक जाता है।

समाधि में तो केवल वे ही जा सकते हैं, जो बाहर की ही भीड़ से नहीं, भीतर की भीड़ से भी मुक्त हो जाते हैं, बस अकेले रह जाते हैं। निपट अकेले, टोटली अलोन, कुछ है ही नहीं, बस अकेला हूं, अकेला हूं, अकेला हूं। सत्य भी यही है। अकेले ही जन्मते हैं, अकेले ही मरते हैं, अकेले ही होते हैं, लेकिन भीड़ का भ्रम पैदा कर लेते हैं कि चारों तरफ भीड़ है। उस भीड़ के बीच इस भांति खो जाते हैं कि कभी पता ही नहीं चलता कि मैं कौन हूं।

🪷आचार्य रजनीश ओशो🪷

🙏🌷🙏

समाधि के द्वार पर

CamScanner

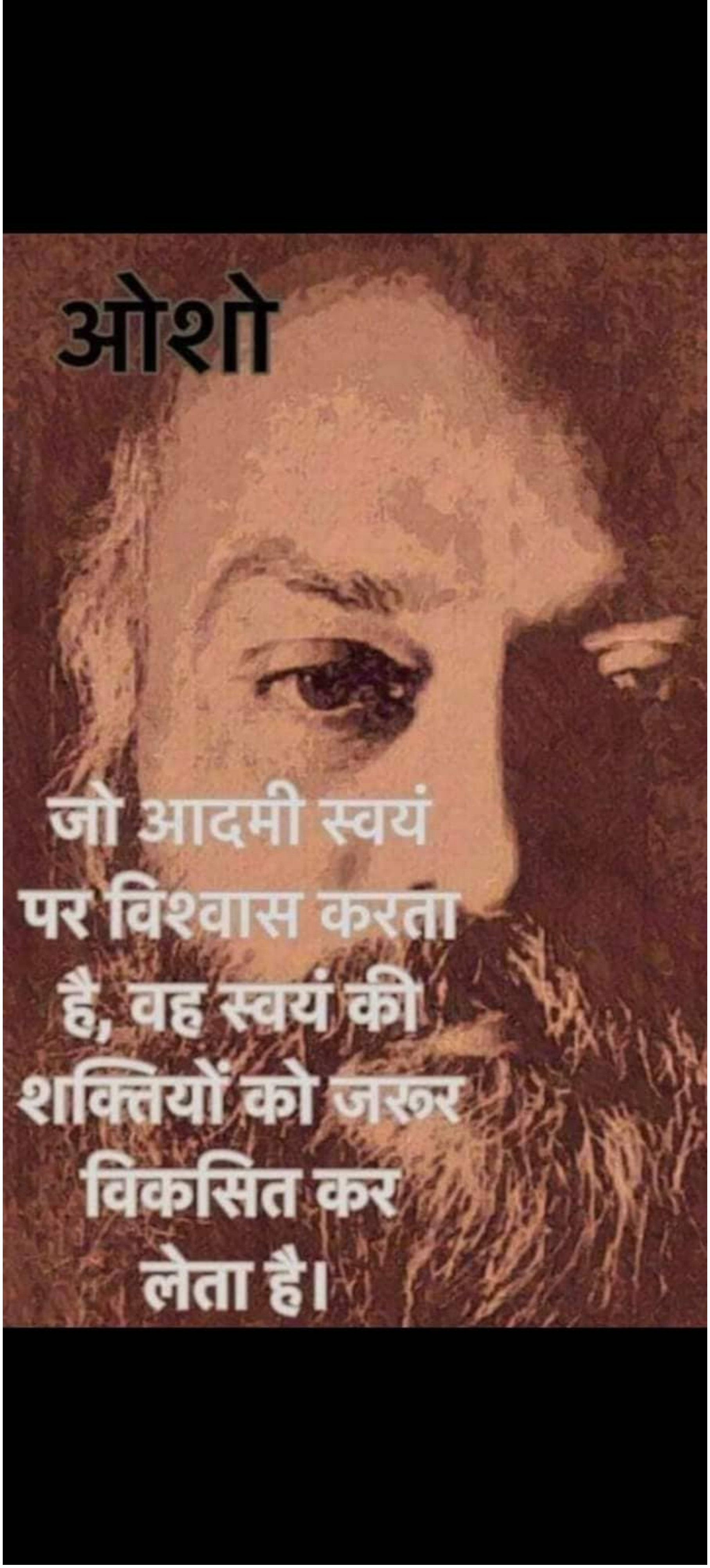

CamScanner

पुरोहित, ग्रंथी, मुल्ला, पादरी सब दलाल है, वह बीच में खड़े है। वह कहते है: तुम्हें जो कुछ कहना है मुझसे कहो, मैं परमात्मा से कहूंगा। तुम सीधे मत कहो। अगर तुम सीधे ही कह देते हो, तो उसका सारा होने का अर्थ ही खो गया। मैं यज्ञ करवाऊंगा, मैं परमात्मा की आहुति चढ़ाऊंगा, मैं वेद के पाठ पढ़ूंगा, मैं उसे पुकारूंगा; तुम पुकारने का जो खर्च हो वह मुझे दे देना। प्रार्थना मैं करूंगा, प्रार्थना के दाम तुम चुका देना। परमात्मा से मैं बोलूंगा, तुम मुझसे बोलो। तुम्हें क्या करना है, तुम्हें क्या चाहिए, मुझे कह दो। तुम सीधे प्रत्यक्ष परमात्मा से प्रार्थना मत करना। पुरोहित का मतलब है—बिचवइया।मैं तुमसे कह रहा हूं, कोई जरूरत नहीं है बिचवइए की। तुम सीधे ही पुकारो। प्रार्थनाएं नौकरों से नहीं करवाई जातीं। यह तो ऐसे ही हुआ कि तुम एक नौकर रख लो और कहो कि जाओ मेरी पत्नी को मेरी तरफ से प्रेम निवेदन कर दो!

CamScanner

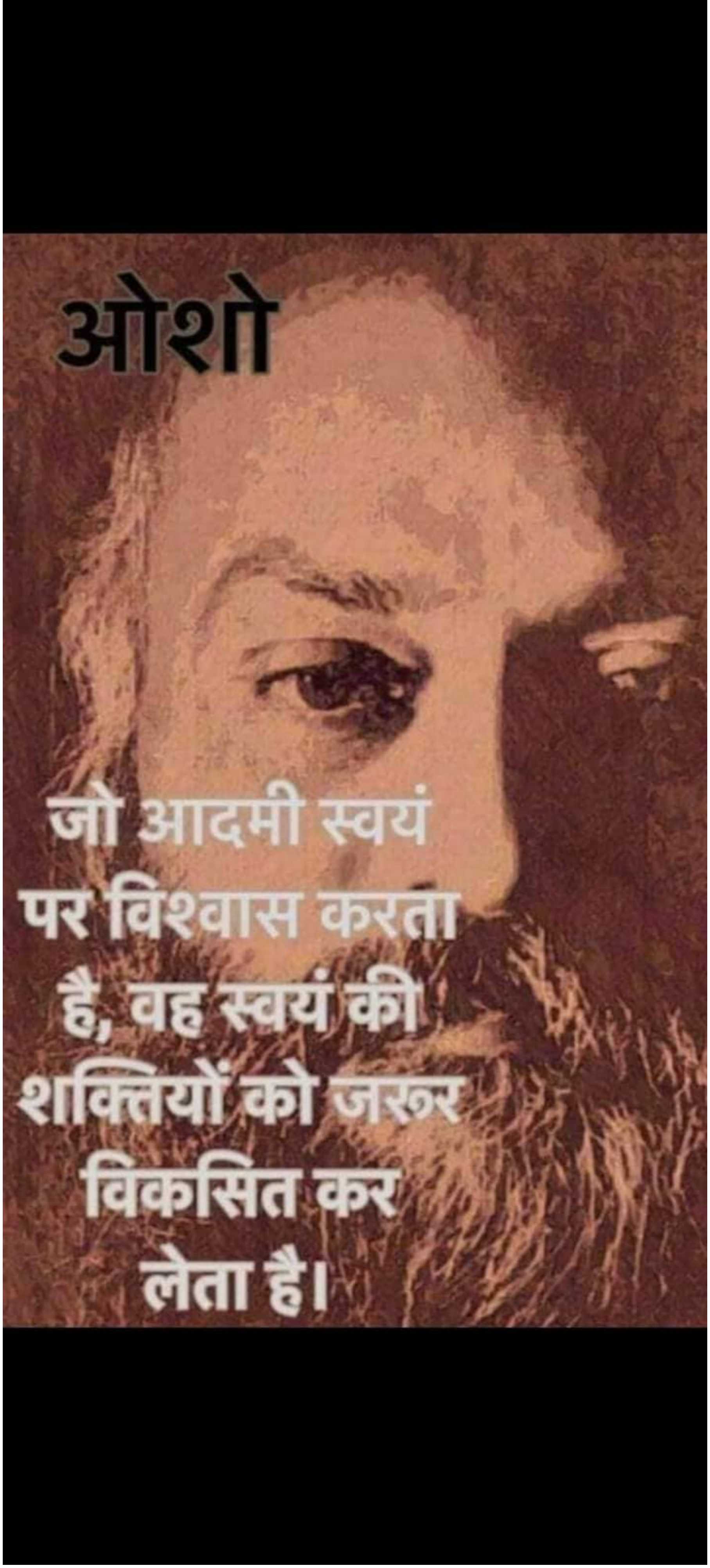

CamScanner

क्या परमात्मा को पाने के लिए साधना जरूरी है?

आप परमात्मा को साधना से नही पा सकते। वह तो मौजूद है। साधना से सिर्फ आप अपनी आंख खोलते है। साधना से सिर्फ आप अपने को तैयार करते है। परमात्मा तो मौजूद है, उसको पाने का कोई सवाल नही है।

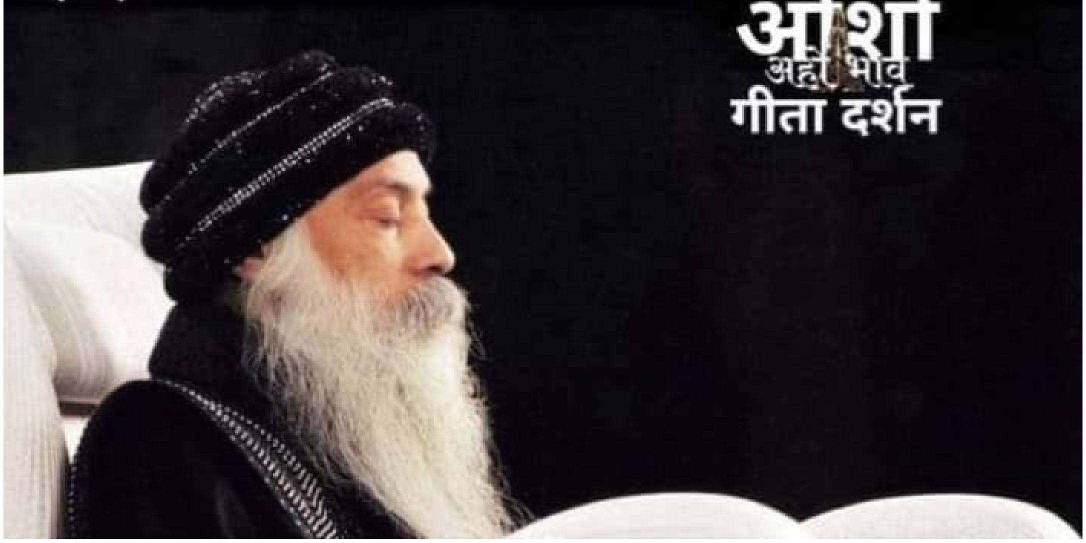

CamScanner

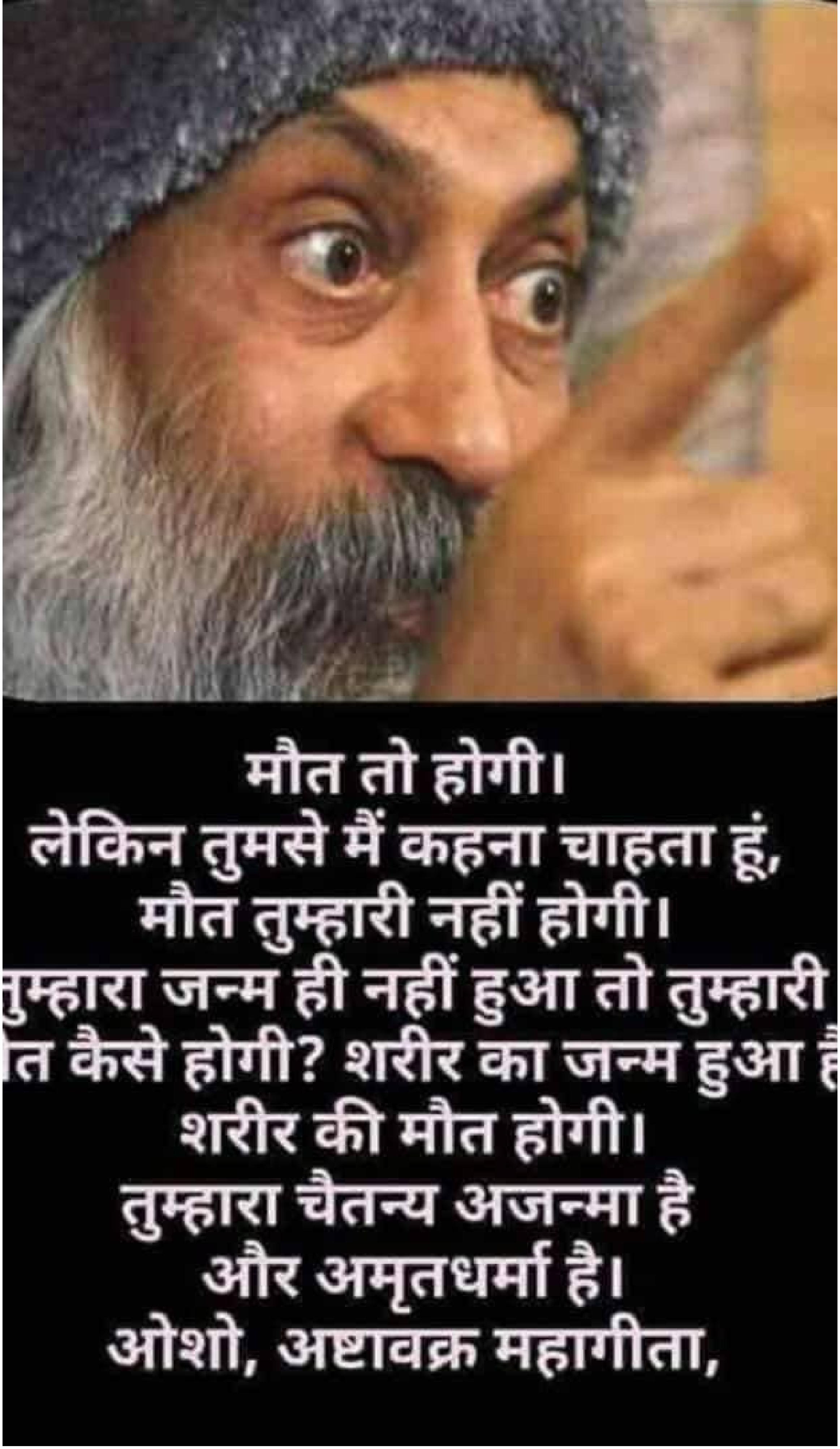
मौत तो होगी।
लेकिन तुमसे मैं कहना चाहता हूं,
मौत तुम्हारी नहीं होगी।
तुम्हारा जन्म ही नहीं हुआ तो तुम्हारी
त कैसे होगी? शरीर का जन्म हुआ है
शरीर की मौत होगी।
तुम्हारा चैतन्य अजन्मा है
और अमृतधर्मा है।
ओशो, अष्टावक्र महागीता,

CamScanner

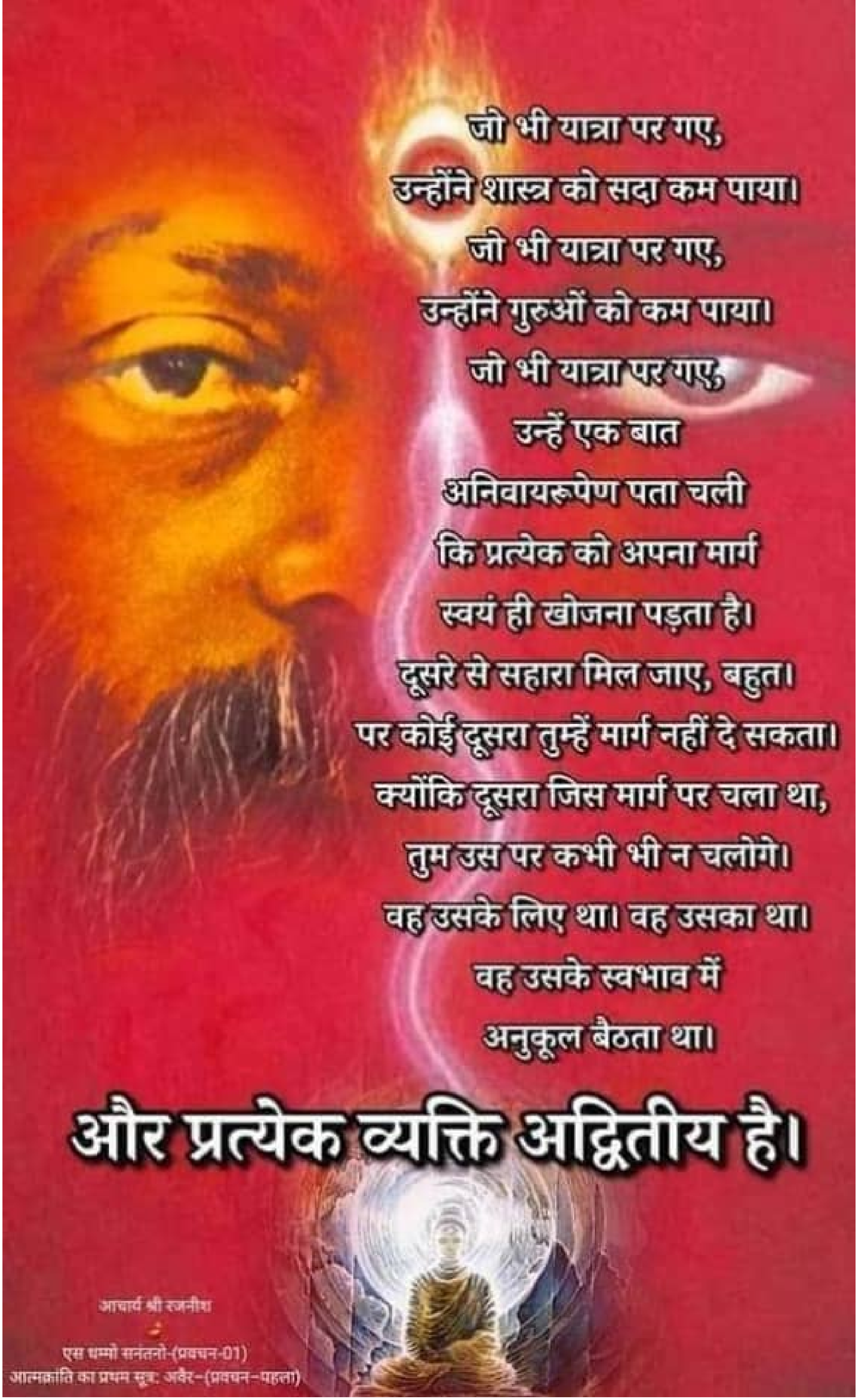
जो भी यात्रा पर गए,
उन्होंने शास्त्र को सदा कम पाया।
जो भी यात्रा पर गए,
उन्होंने गुरुओं को कम पाया।
जो भी यात्रा पर गए,
उन्हें एक बात
अनिवायरूपेण पता चली
कि प्रत्येक को अपना मार्ग
स्वयं ही खोजना पड़ता है।
दूसरे से सहारा मिल जाए, बहुत।
पर कोई दूसरा तुम्हें मार्ग नहीं दे सकता।
क्योंकि दूसरा जिस मार्ग पर चला था,
तुम उस पर कभी भी न चलोगे।
वह उसके लिए था। वह उसका था।
वह उसके स्वभाव में
अनुकूल बैठता था।
और प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय है।
आचार्य श्री रजनीश
एस धम्मो सनंतनो-(प्रवचन-01)
आत्मक्रांति का प्रथम सूत्र: अवैर-(प्रवचन-पहला)

CamScanner

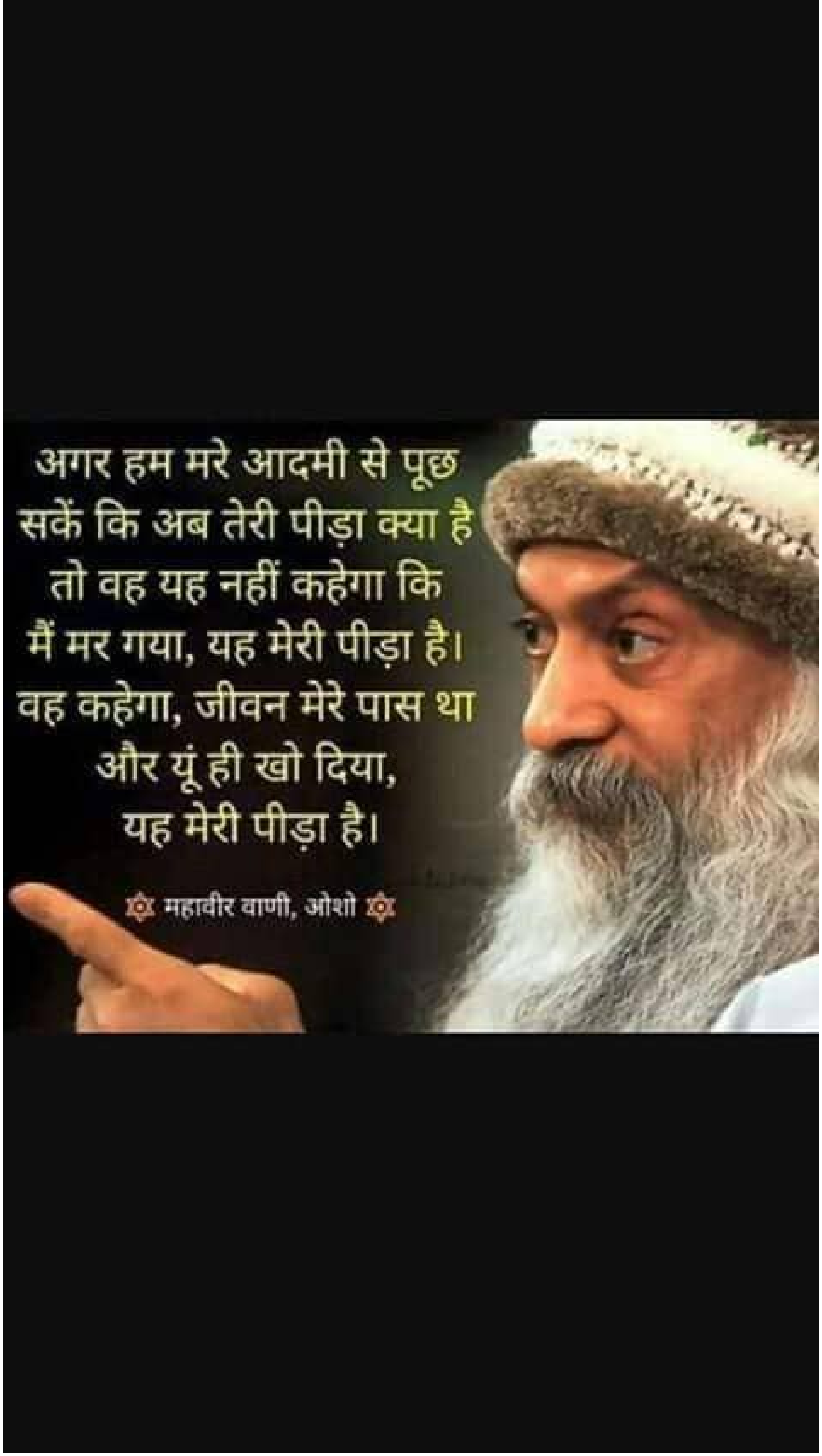
अगर हम मरे आदमी से पूछ
सकें कि अब तेरी पीड़ा क्या है
तो वह यह नहीं कहेगा कि
मैं मर गया, यह मेरी पीड़ा है।
वह कहेगा, जीवन मेरे पास था
और यूं ही खो दिया,
यह मेरी पीड़ा है।
महावीर वाणी, ओशो

CamScanner

ओशो

साक्षी का अर्थ है, निर्णय नहीं। साक्षी का अर्थ है. मैने फूल देखा तो बस देखता ही रहा-न मेरे मन में उठा कि सुंदर है, न मेरे मन में उठा कि असुंदर है; न मेरे मन में उठा कि गुलाब है, न मेरे मन में उठा कि चंपा है, न मेरे मन में उठा कि तोड़ लू न मेरे मन में उठा कि छोड़ दू- मन उठा ही नहीं; फूल रहा उधर, इधर रहा मैं बीच में कुछ उठा ही नहीं; बीच में कोई विचार की तले न रही; खाली हो गया, शून्य हो गया बीच में - उधर फूल, इधर मैं.. तो मैं फूल का साक्षी हुआ।

CamScanner

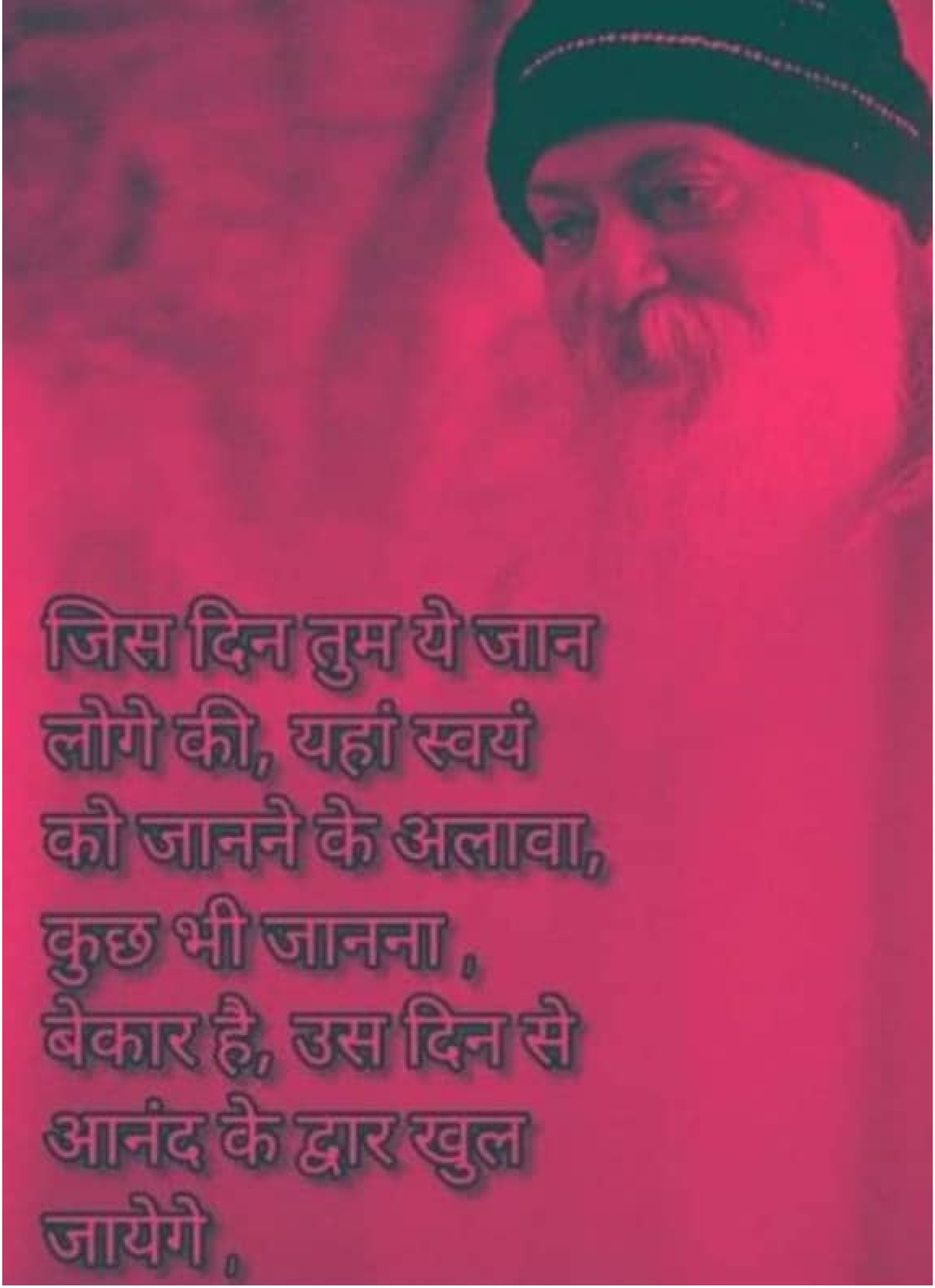
जिस दिन तुम ये जान
लोगे की, यहां स्वयं
को जानने के अलावा,
कुछ भी जानना ,
बेकार है, उस दिन से
आनंद के द्वार खुल
जायेगे ,

CamScanner

कोई आदमी
अपने अपराध को स्वीकार कर ले,
इससे बड़ी निर्दोषता,
इससे बड़ी इनोसेंस और कोई भी नहीं है।
परमात्मा के जगत में भी
केवल वे ही लोग संसार के बाहर जा पाते हैं,
जो अपनी वास्तविक स्थिति को
स्वीकार करने में समर्थ हैं।
अपने को जो धोखा देगा,देता रहे।
परमात्मा को धोखा नहीं दिया जा सकता है।
आचार्य श्री रजनीश
गीता दर्शन अ.5.काम-क्रोध से मुक्तिप्र.57/29

CamScanner

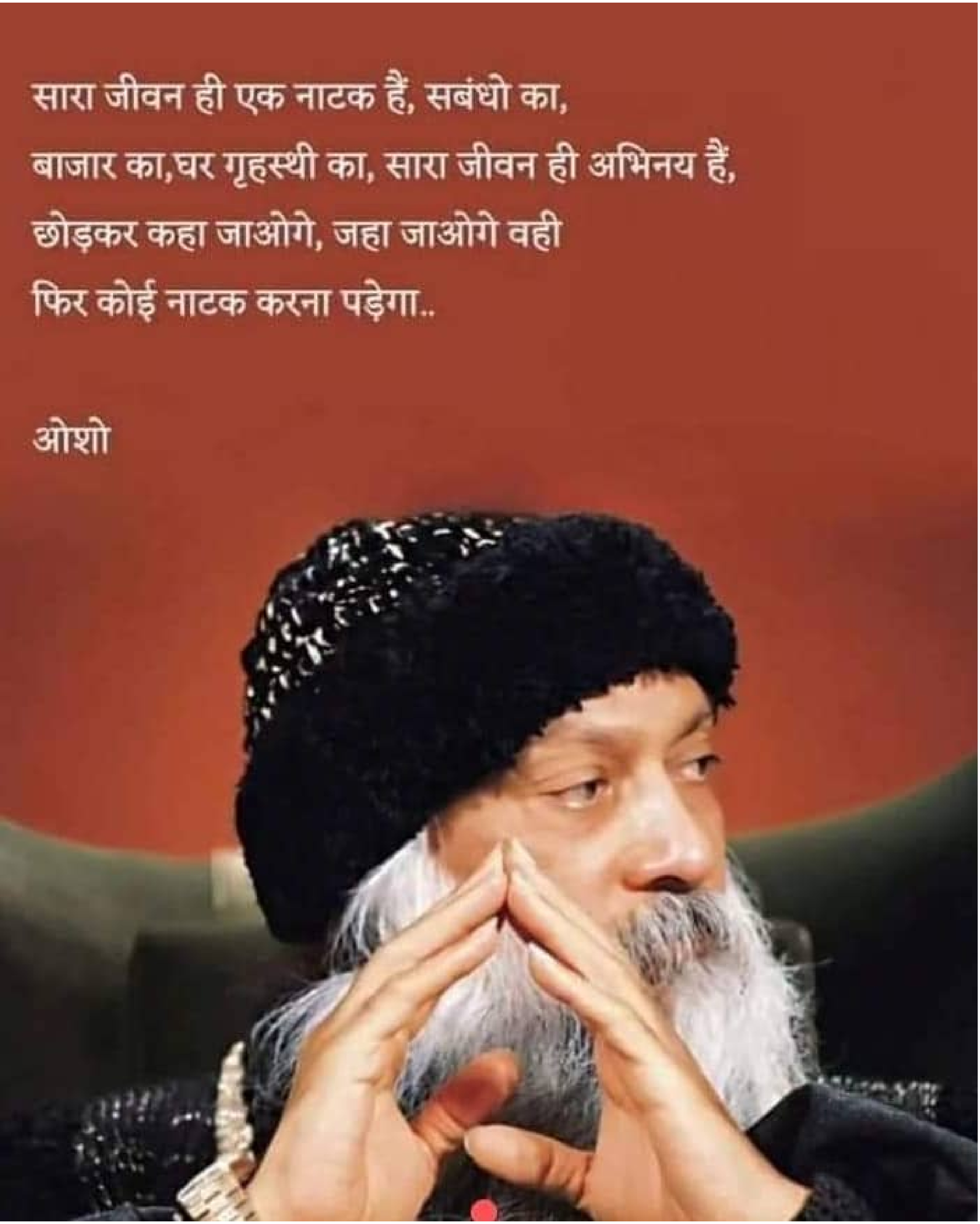
सारा जीवन ही एक नाटक हैं, सबंधो का,
बाजार का,घर गृहस्थी का, सारा जीवन ही अभिनय हैं,
छोड़कर कहा जाओगे, जहा जाओगे वही
फिर कोई नाटक करना पड़ेगा..
ओशो

CamScanner

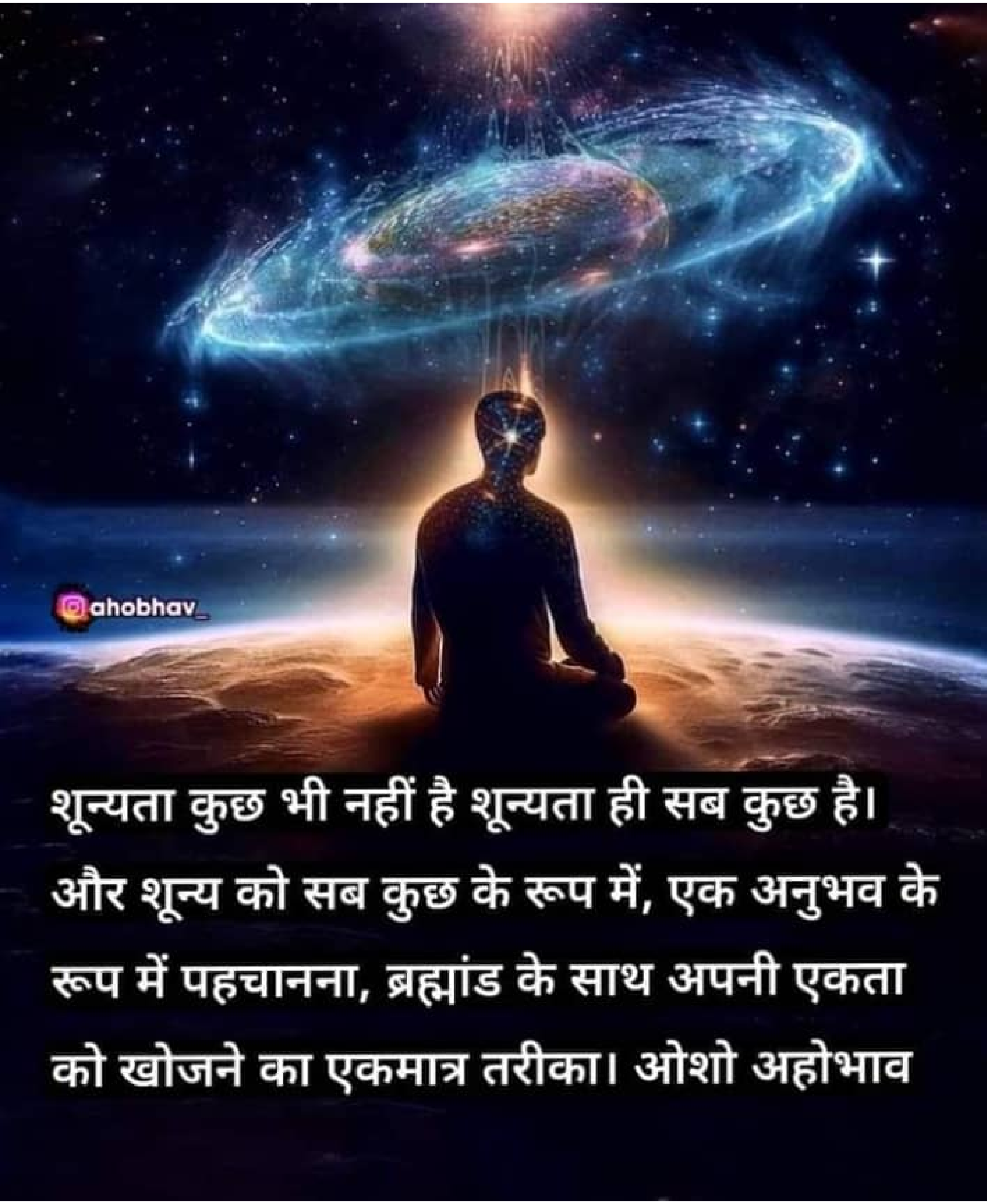
ahobhav_
शून्यता कुछ भी नहीं है शून्यता ही सब कुछ है।
और शून्य को सब कुछ के रूप में, एक अनुभव के
रूप में पहचानना, ब्रह्मांड के साथ अपनी एकता
को खोजने का एकमात्र तरीका। ओशो अहोभाव

CamScanner

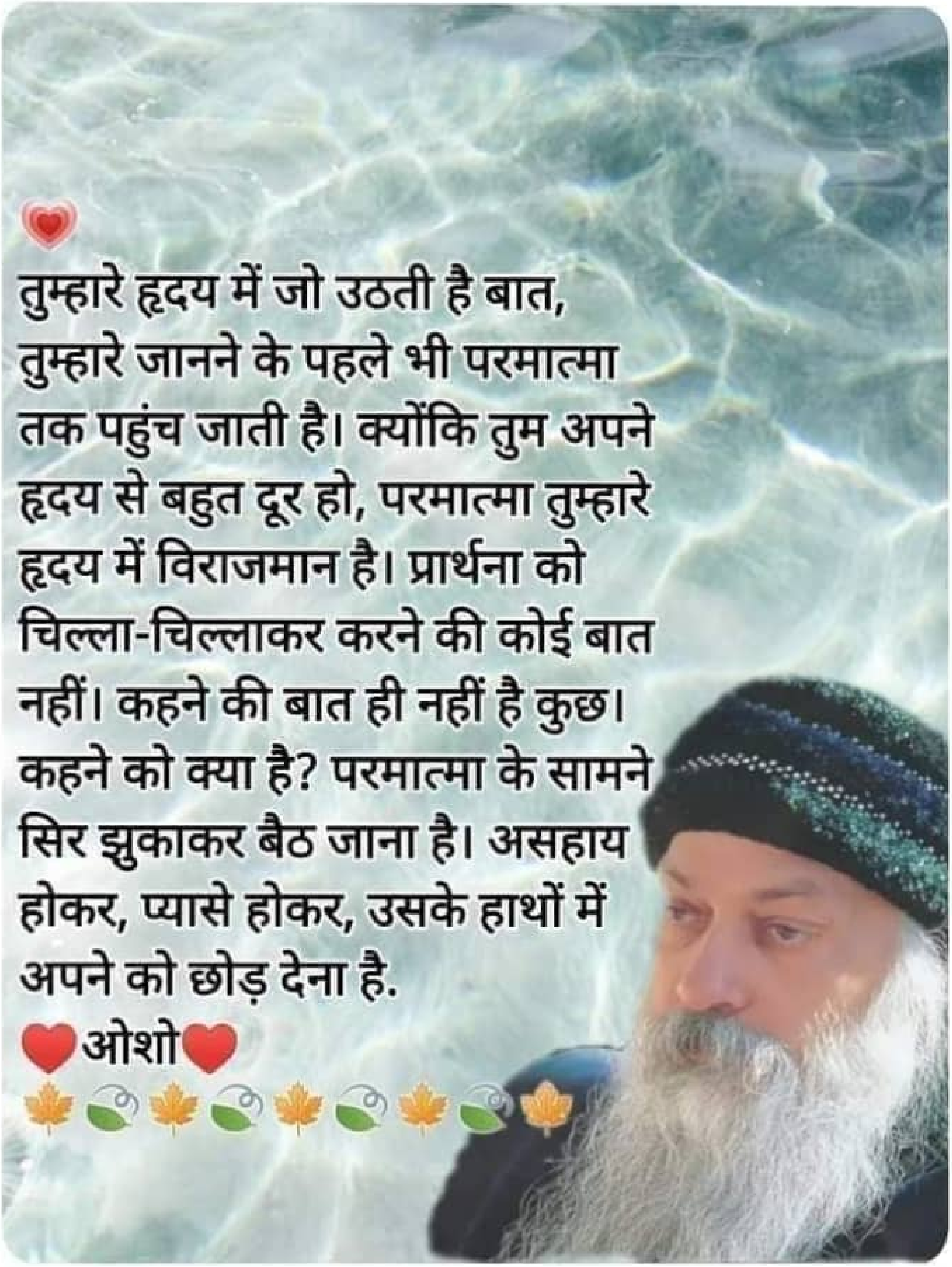
❤
तुम्हारे हृदय में जो उठती है बात,
तुम्हारे जानने के पहले भी परमात्मा
तक पहुंच जाती है। क्योंकि तुम अपने
हृदय से बहुत दूर हो, परमात्मा तुम्हारे
हृदय में विराजमान है। प्रार्थना को
चिल्ला-चिल्लाकर करने की कोई बात
नहीं। कहने की बात ही नहीं है कुछ।
कहने को क्या है? परमात्मा के सामने
सिर झुकाकर बैठ जाना है। असहाय
होकर, प्यासे होकर, उसके हाथों में
अपने को छोड़ देना है.
❤ओशो❤

CamScanner

8:41 pm 23 KB/s 50%

facebook

ता मुक्ति बिलकुल आसान है फिर मारने की कोई ज़रूरत नहीं उस युवक ने सब दाव पे लगा दिया वो तीन दिन ना भोजन किया ना सोया तीन दिन अहिरनेस उसने एक ही बात सोची की मैं भेश हूँ अब तीन दिन अगर कोई सोचता रहे भैंस है वो भैंस हो गया, हो गया नहीं कि हो गया, उसे प्रतीत होने लगा कि हो गया, एक प्रतीति पैदा हुई, एक भ्रम जाल खड़ा हुआ, जब तीसरे दिन सुबह उसने आंख खोल के देखा तो वो घबराया, वह भैंस हो गया था और भी घबराया, क्योंकि अब बाहर कैसे निकलेगा, गुफा का द्वार छोटा था, आए तब तो आदमी थे भैंस थे, उसके बड़े सींग थे, उसने कोशिश भी की तो सींग अटक गए, चिल्लाना चाहा तो आवाज तो ना निकली, भैंस का स्वर निकला, जब स्वर निकला तो नागार्जुन भागा हुआ पहुंचा, देखा युवक है, कहीं कोई सींग नहीं है, मगर सींग अटक रहे हैं, कहीं कोई सिंह नहीं है, वो आदमी जैसा आदमी है जैसा आया था वैसा ही है लेकिन तीन दिन का आत्म सम्मोहन, तीन दिन का सतत सुझाव, नागार्जुन द्वार पर खड़ा हंसने लगा, वो युवक बहुत शर्मिंदा भी हुआ और उसने कहा, लेकिन आप हंसे, यह बात जसती नहीं, तुम्हारे ही बताए उपाय को मानकर मैं फस गया हूँ अब मुझे निकालो, नागार्जुन उसके पास गया, उसे जोर से हिलाया हिलाया तो थोड़ा वो तंधरा से जागा, जागा तो उसने देखा सींग भी नदारत है भेस भी कहीं नहीं, वह भी हंसने लगा, नागार्जुन ने कहा, बस यही मुक्ति का सूत्र है संसार तेरा बनाया हुआ है, कल्पित है, संसार को छोड़ना नहीं है, जाग के देखना है, इसलिए जिन्होंने तुमसे कहा कि संसार छोड़ो, उन्होंने तुम्हें मोक्ष में उलझा दिया मैं तुम्हें संसार छोड़ने को इसलिए नहीं कह रहा हूं, छोड़ने की बात ही भ्रांत है, जो है ही नहीं उसे छोड़ोगे कैसे? छोड़ोगे तो भूल में पड़ोगे, जो नहीं है, उसे देख लेना, जान लेना कि वह नहीं है, मुक्त हो जाना है इसलिए बुद्ध ने कहा, असत्य को असत्य की तरह देख लेना, मोक्ष है, तुम अपने को जो चाहे समझ लो, मन शक्तिशाली है, तुम जो चाहोगे वही बन जाओगे और जिस दिन भी तुम देखना चाहोगे, उस दिन तुम दृष्टि बन जाओगे, दृष्टि मुक्ति है।

ओशो

CamScanner

8:41 pm 0 KB/s 4G 50%

Rahul Kumar Ojha · 1d ·

एक युवक भिक्षु नागार्जुन के पास आया और उसने कहा कि मुझे मुक्त होना है और उसने कहा कि जीवन लगा देने की मेरी तैयारी है मैं मरने को तैयार हूं लेकिन मुक्ति मुझे चाहिए कोई भी कीमत हो चुकाने को राजी हूं अपनी तरफ से तो वह बड़ी समझदारी की बातें कह रहा था अब तुम्हारे हाथ में सब बात है मुझसे ना कह सकोगे कि मैंने कुछ कमी की प्रयास में मैं सब करने को तैयार हूं अपनी तरफ से वह ईमानदार था उसकी ईमानदारी पर शक भी क्या करें? मरने को तैयार था और क्या आदमी से मांग सकते हो लेकिन ईमानदारी कितनी ही हो भ्रांत थी नागार्जुन ने कहा ठहर एक छोटा सा प्रयोग कर फिर अभी इतनी जल्दी नहीं मरने मारने की यह भाषा ही ना समझी की है 'यहां मरना मारना कैसा तू एक तीन दिन छोटा सा प्रयोग कर फिर देखेंगे और उससे कहा कि तू चला जा सामने की गुफा में अंदर बैठ जा और एक ही बात पर चित्त को एकाग्र कर कि तू एक भैंस हो गया है भैंस सामने खड़ी थी इसलिए नागार्जुन को ख्याल आ गया कि तू एक भैंस हो गया है ये सामने भैंस खड़ी है उस युवक ने कहा जरा चिंतित होके कि इससे मुक्ति का क्या संबंध? नागार्जुन ने कहा वो हम तीन दिन बाद सोचेंगे बस तू तीन दिन बिना खाए पिये बिना सोये एक ही बात सोचते रह की तू भेश हो गया तीन दिन बाद मैं हाज़िर हो जायूँगा अगर तू इसमें सफल हो गया तो मुक्ति बिलकुल आसान है फिर मारने की कोई ज़रूरत नहीं उस युवक ने सब दाव पे लगा दिया वो तीन दिन ना भोजन किया ना सोया तीन दिन अहिरनेस उसने एक ही बात सोची की मैं भेश हूँ अब तीन दिन अगर कोई सोचता रहे भैंस है वो भैंस हो गया, हो गया नहीं कि हो गया, उसे प्रतीत होने लगा कि हो गया, एक प्रतीति पैदा हुई, एक भ्रम जाल खड़ा हुआ, जब तीसरे दिन सुबह उसने आंख खोल के देखा तो वो घबराया, वह भैंस हो गया था और भी घबराया, क्योंकि अब बाहर कैसे निकलेगा, गुफा का द्वार छोटा था, आए तब तो आदमी थे भैंस थे, उसके बड़े सींग थे, उसने कोशिश भी की तो सींग अटक गए, चिल्लाना चाहा तो आवाज तो ना निकली, भैंस का स्वर निकला, जब स्वर निकला तो नागार्जुन भागा हुआ पहुंचा, देखा युवक है, कहीं कोई सींग नहीं है, मगर सींग अटक रहे हैं, कहीं कोई सिंह नहीं है, वो आदमी जैसा आदमी है जैसा आया था वैसा ही है लेकिन तीन दिन का आत्म सम्मोहन, तीन दिन का सतत सुझाव, नागार्जुन द्वार पर खड़ा हंसने

CamScanner

8:32 pm 0 KB/s VoLTE 4G 52%

Instagram

rani hai.

Add a comment...

17 hours ago • See translation

todaysuvichar_

Amritanshu Dutta, Utsav Shrey • Piku Theme

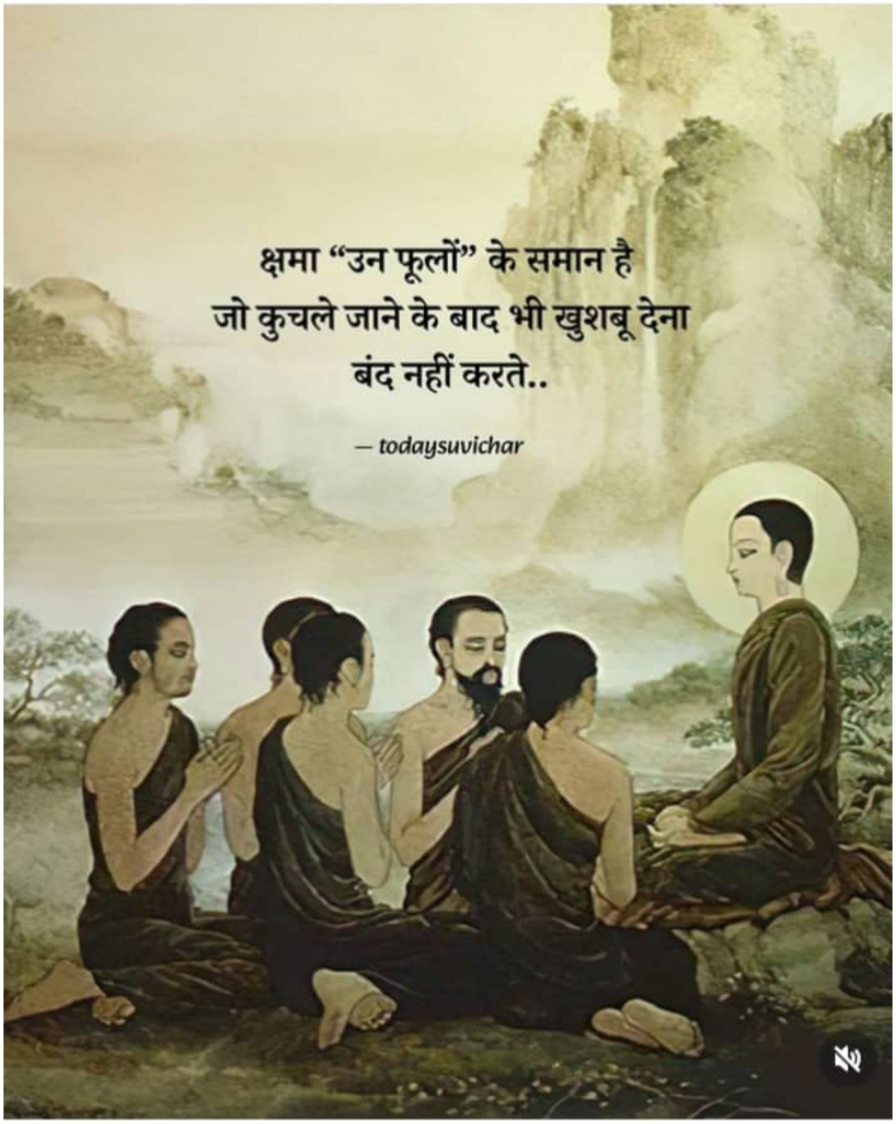

3,147 likes

todaysuvichar_ क्षमा "उन फूलों" के समान है
जो कुचले जाने के बाद भी खुशबू देना बंद नहीं करते..

CamScanner

10:41 am 27 KB/s 95%

Did you mean: ***meher*** baba osho

Osho News

Osho speaks on Meher Baba | Osh...

Osho - WordPress.com

Meher Baba – Osho

YouTube

अवतार मेहर बाबा । #spiritual #osho ...

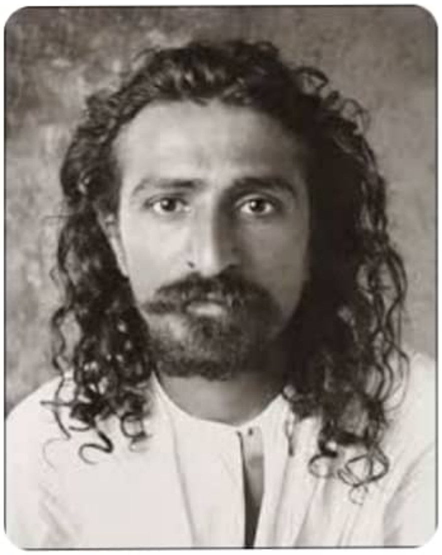

Sat Sangha Salon

From Meher Baba to Osho with Lo...

Sadguru Ki Dhara

गुरुदेव के संस्मरण ~ मेहर बाबा की ...

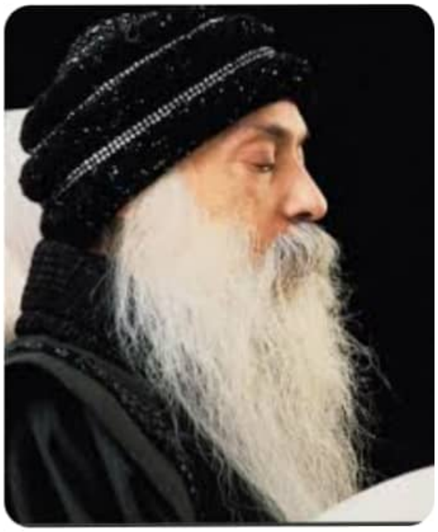

Osho World

Remembering your Godliness – Os...

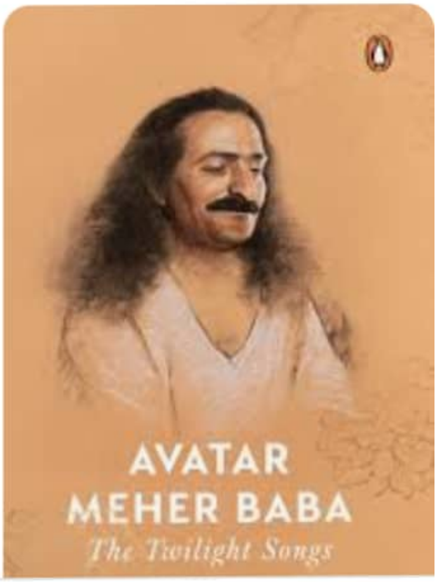

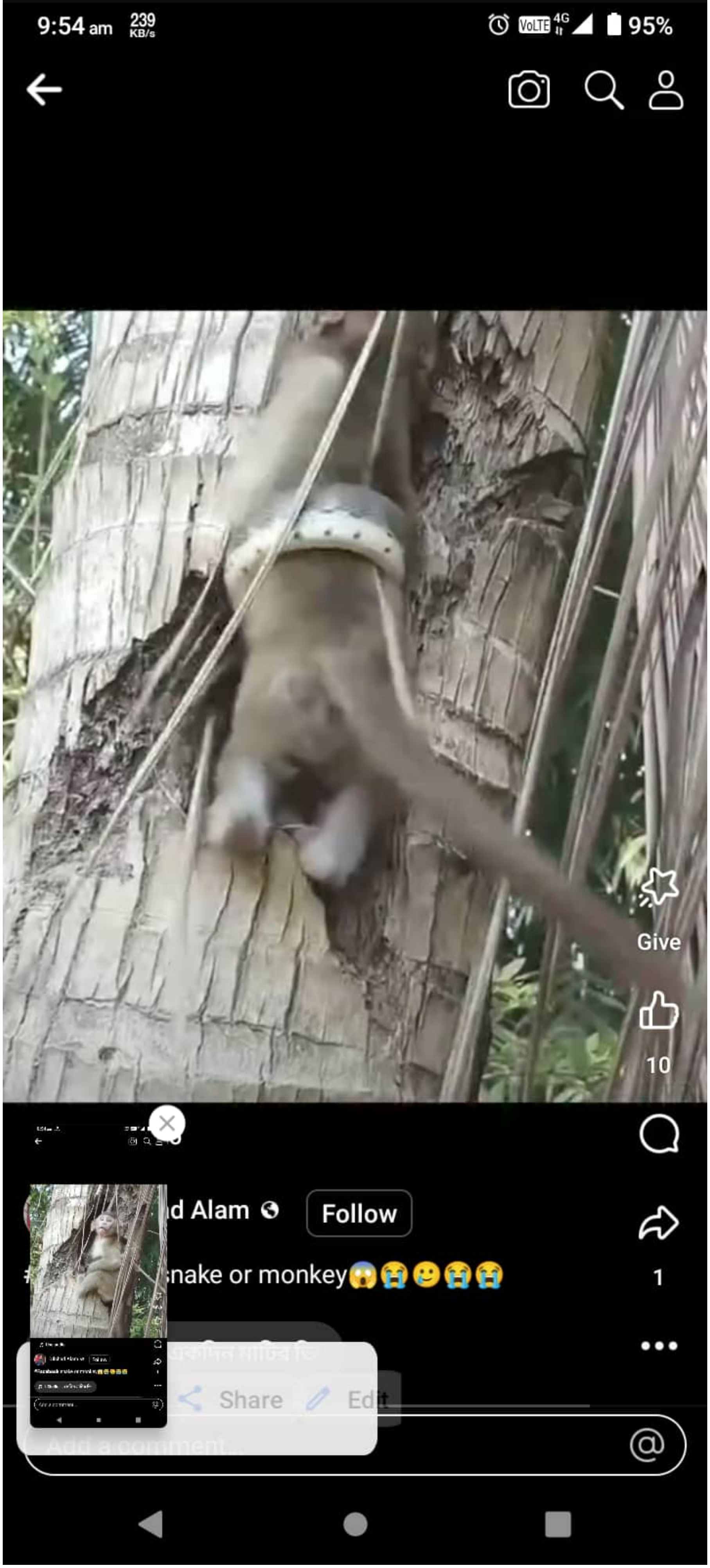

CamScanner

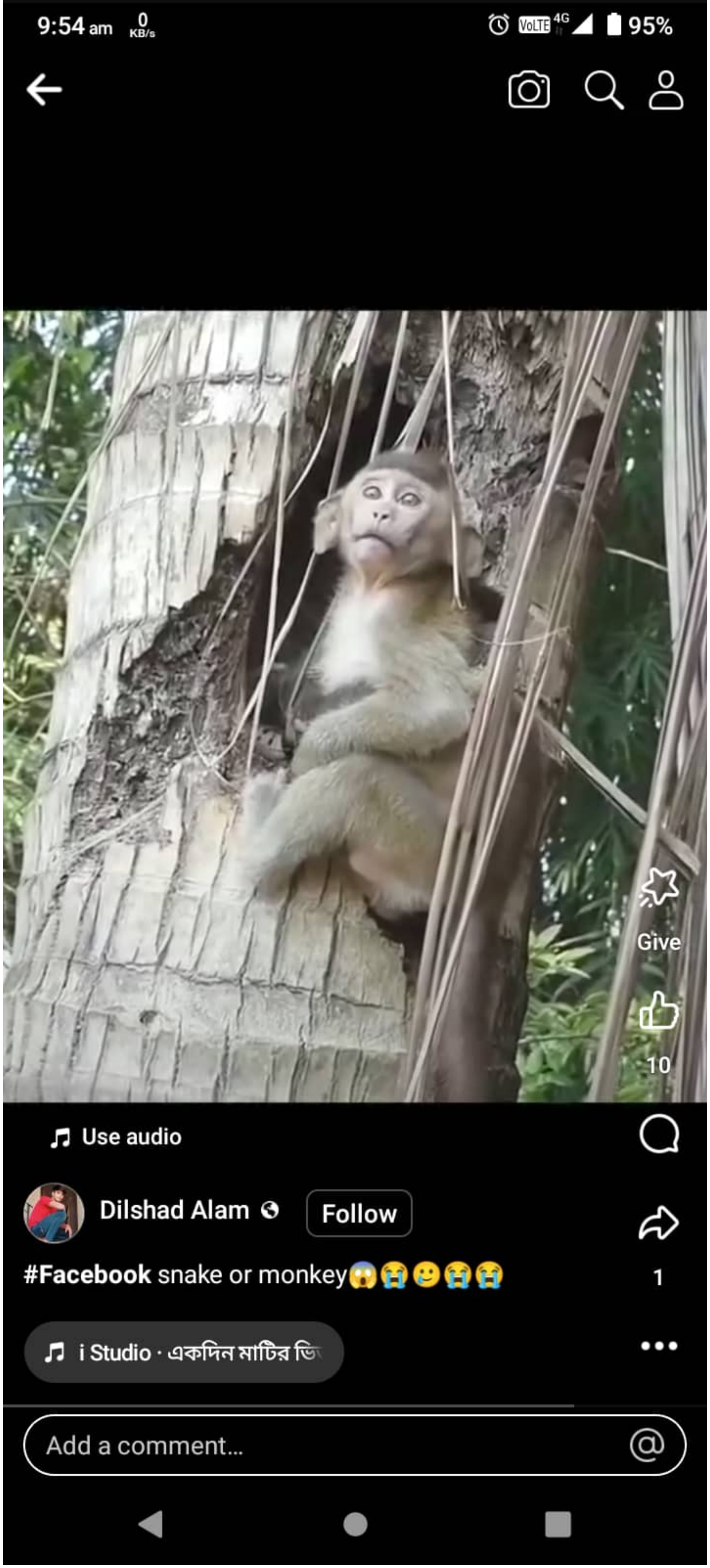

CS CamScanner

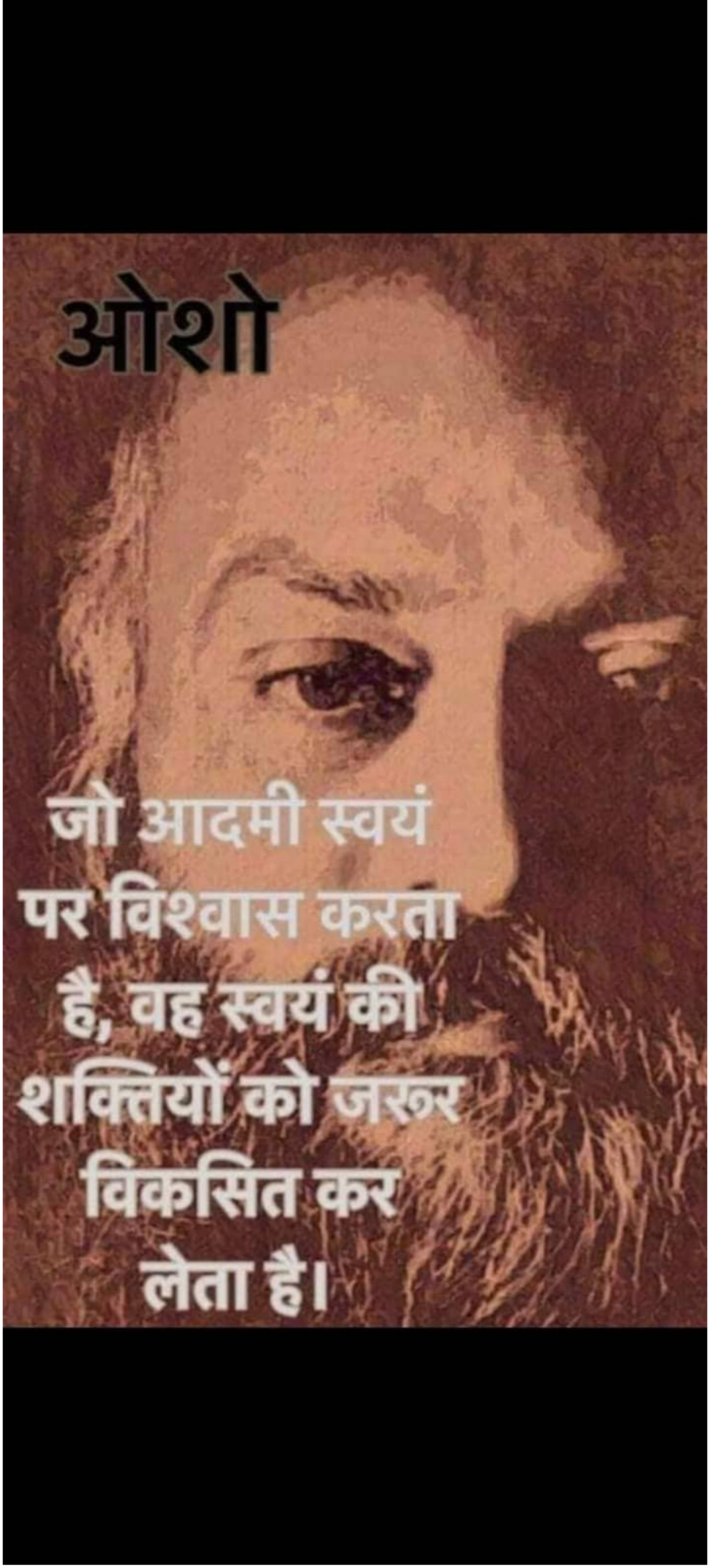

CamScanner

12:30 pm 398 KB/s 87%

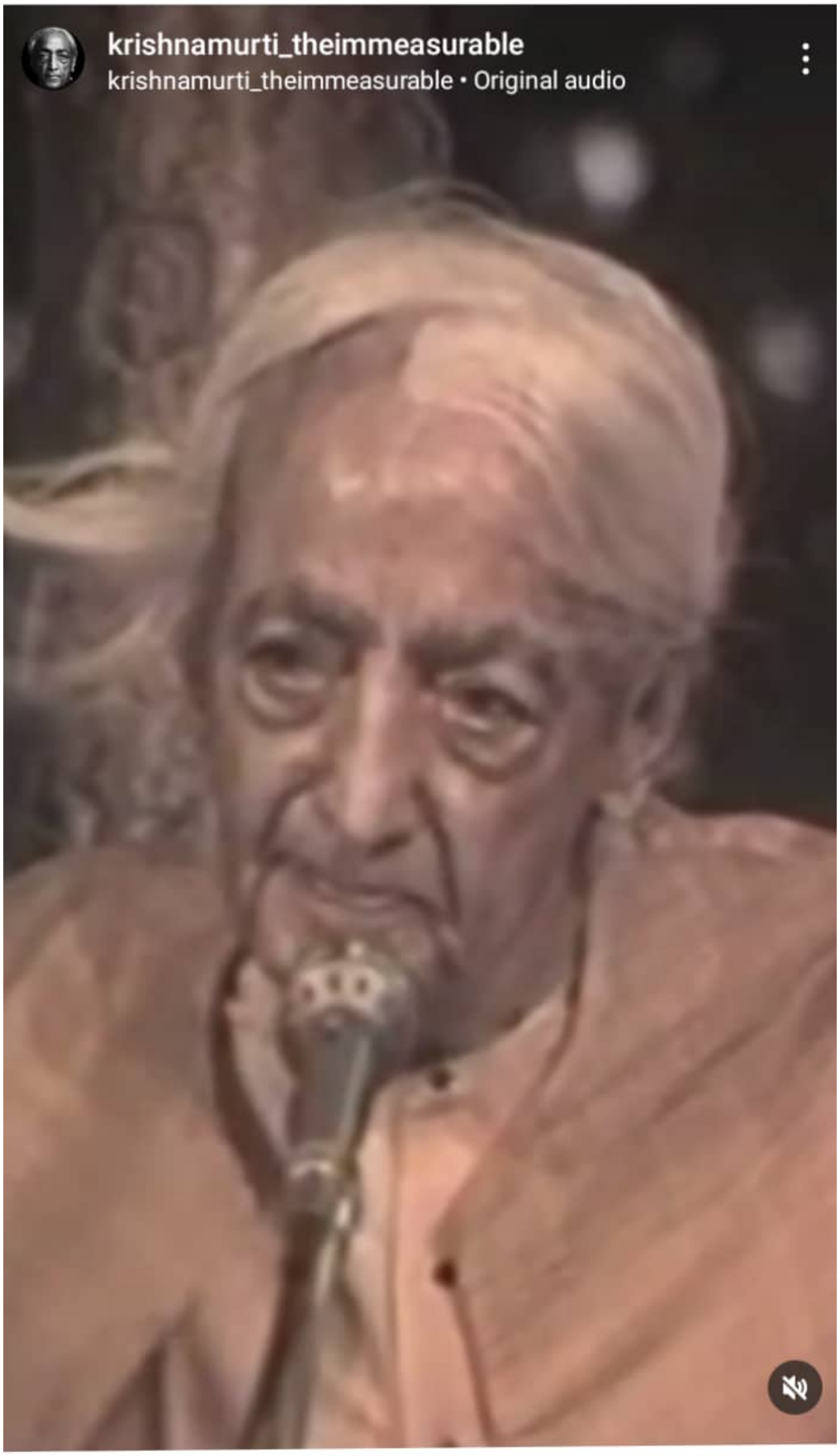

2,410 likes

CamScanner

Ashtanga (अष्टांग)

Eight Limbed Yoga Path

The term comes from the Yoga Sutras of Patanjali and refers to his eight-fold path of yoga. In his writings, the yogic sage outlined eight limbs of yoga- eight steps on the path of internal purification that lead to discovery of the Universal of Supreme Self.

1: YAMA (यम)	**Social Ethics**
a. Ahimsa (अहिंसा)	a. Non-violence
b. Satya (सत्य)	b. Truth
c. Asteya (अस्तेय)	c. Non-stealing
d. Aparigraha (अपरिग्रह)	d. Non-coveting
e. Brahmacharya (ब्रह्मचर्य)	e. Continence
2: NIYAMA (नियम)	**Personal Practices**
a. Saucha (शौच)	a. Cleanliness
b. Santosa (संतोष)	b. Contentment
c. Tapas (तप)	c. Austerity
d. Svadhyaya (स्वाध्याय)	d. Self-study
e. Ishvarapranidhana (ईश्वर - प्राणिधान)	e. Surrender to God
3: Asana (आसन)	**Physical Posture**
4 Pranayama (प्राणायम)	**Breathing Techniques**
5: Pratyahara (प्रत्याहार)	**Sense Withdrawal**
6: Dharana (धारणा)	**Concentration**
7: Dhyana (ध्यान)	**Meditation**
8: Samadhi (समाधि)	**Enlightenment**

ADI Yoga School

CamScanner

12:28 pm 0 KB/s 88%

Instagram

osho__quotes
Piano Peace • Save Me

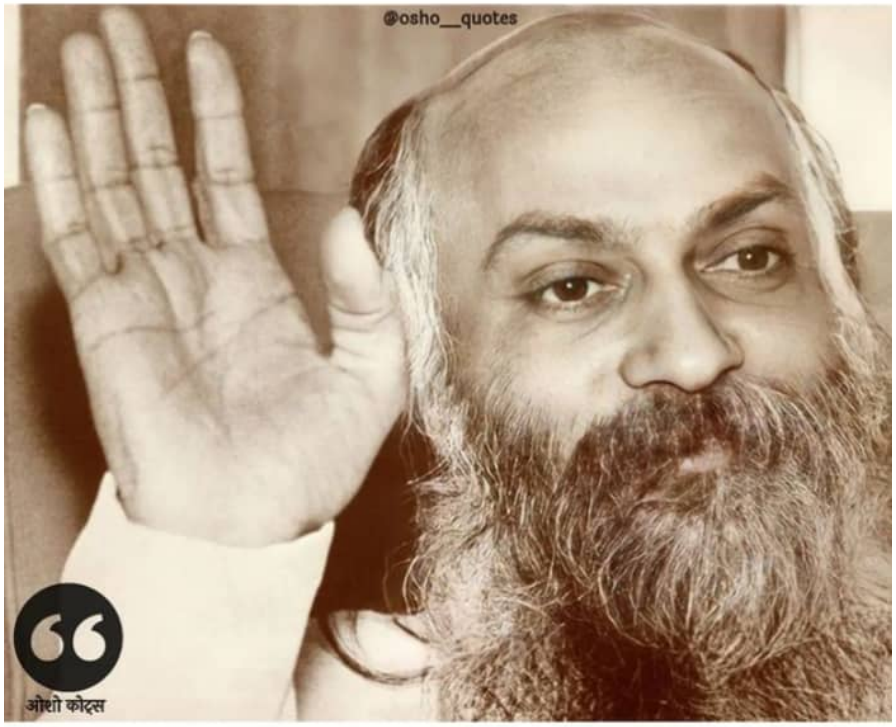

तुम्हारा मन तुम्हारी सुनता नहीं और
तुम दूसरे को आज्ञा देने में लगे हो !

• ओशो

9,919 likes

osho__quotes ❣️

View all 13 comments

1 day ago

oshoecstasy

CamScanner

12:27 pm 0 KB/s 88%

Instagram

View all 2 comments

Add a comment...

1 hour ago

osho.vichar
Bibas Music • Ayaan 2.0

ho.vichar @osho.vichar @osho.vichar @osho.vichar @osho.vichar @osho.vich

किसी दूसरे के बुरे व्यवहार में इतनी ताकत नहीं होनी चाहिए कि वो आपके मन की शांति को खत्म कर दें।🌼

- ओशो

8,103 likes

osho.vichar किसी दूसरे के बुरे व्यवहार में इतनी ताकत नहीं होनी चाहिए कि वो आपके मन की शांति को खत्म कर दें।🌼... more

View all 19 comments

Add a comment...

16 hours ago • **See translation**

CamScanner

Ashtanga (अष्टांग)

Eight Limbed Yoga Path

The term comes from the Yoga Sutras of Patanjali and refers to his eight-fold path of yoga. In his writings, the yogic sage outlined eight limbs of yoga- eight steps on the path of internal purification that lead to discovery of the Universal of Supreme Self.

1: YAMA (यम)	Social Ethics
a. Ahimsa (अहिंसा)	a. Non-violence
b. Satya (सत्य)	b. Truth
c. Asteya (अस्तेय)	c. Non-stealing
d. Aparigraha (अपरिग्रह)	d. Non-coveting
e. Brahmacharya (ब्रह्मचर्य)	e. Continence

2: NIYAMA (नियम)	Personal Practices
a. Saucha (शौच)	a. Cleanliness
b. Santosa (संतोष)	b. Contentment
c. Tapas (तप)	c. Austerity
d. Svadhyaya (स्वाध्याय)	d. Self-study
e. Ishvarapranidhana (ईश्वर - प्राणिधान)	e. Surrender to God

3: Asana (आसन)	Physical Posture
4 Pranayama (प्राणायम)	Breathing Techniques
5: Pratyahara (प्रत्याहार)	Sense Withdrawal
6: Dharana (धारणा)	Concentration
7: Dhyana (ध्यान)	Meditation
8: Samadhi (समाधि)	Enlightenment

HARE RAMA INSTITUTE

CS CamScanner

15.28 अभ्यर्थियों से प्रवेशपत्र व प्रयुक्त प्रश्न पुस्तिका को एकत्रित नहीं किया जायेगा ।

16. सहायक केन्द्र व्यवस्थापक

16.1 केन्द्र व्यवस्थापक परीक्षा केन्द्र में परीक्षा सकुशल सम्पन्न कराये जाने हेतु सभी व्यवस्थाओं के लिए उत्तरदायी होंगे।

17. अन्तरीक्षक

17.1 अन्तरीक्षकों का यह दायित्व होगा कि परीक्षा प्रारम्भ होने से पूर्व प्रश्न पुस्तिकाओं के वितरण के उपरान्त उनके आवरण पृष्ठ पर अंकित अनुदेशों (Instructions) के सम्बन्ध में परीक्षार्थियों को अवगत करा देंगे।

17.2 परीक्षा आरम्भ होने से 10 मिनट पूर्व ओ0एम0आर0 उत्तर पत्रक वितरित करने, परीक्षा प्रारम्भ होने पर प्रश्न पुस्तिका वितरित करने, समय से परीक्षा आरम्भ कराने एवं समाप्त कराने, कक्ष में परीक्षा के दौरान बाधा उत्पन्न करने वाले व विलम्ब से आने वाले परीक्षार्थियों के सम्बन्ध में बोर्ड द्वारा दिये गये निर्देशों का पालन करेंगे।

17.3 प्रश्न–पत्र का हल करने से पूर्व परीक्षार्थी एक बार सम्पूर्ण प्रश्न पत्र एवं ओ0एम0आर0 उत्तर पत्रक को अवश्य देख लेंगे और किसी प्रकार का कोई पृष्ठ गायब या छपे न होने की दशा में इसकी सूचना अन्तरीक्षक को देंगे। अन्तरीक्षक उस प्रश्न पुस्तिका एवं उत्तर–पत्रक को वापस लेते हुए दूसरी प्रश्न पुस्तिका एवं उत्तर–पत्रक उस परीक्षार्थी को उपलब्ध करा देंगे। प्रश्न पत्र एवं ओ0एम0आर0 उत्तर पत्रक वितरित करते समय इस आशय की जानकारी अन्तरीक्षकों को उद्घोषणा कर सभी परीक्षार्थियों को दे देनी चाहिए।

17.4 उत्तर पत्रक परीक्षा का एक महत्वपूर्ण अभिलेख है, अतः उत्तर पत्रक किसी प्रकार से कटा या फटा पाये जाने पर या गोल आकृतियॉं मुद्रित न होने पर उत्तर–पत्रक का दूसरा सेट अभ्यर्थी को प्रदान कर दिया जाये।

17.5 अन्तरीक्षक द्वारा यह सुनिश्चित किया जायेगा कि परीक्षार्थी द्वारा प्रश्न पत्र का कमांक उत्तर पत्रक के निर्धारित स्थान पर अंकित कर दिया गया है।

17.6 अन्तरीक्षक प्रश्न पत्र वितरित करने से पूर्व सभी परीक्षार्थियों के प्रवेश पत्र को स्वयं एक बार अवश्य चेक करेंगे। दूसरी बार प्रवेश पत्र की चेकिंग सहयोगी अन्तरीक्षक द्वारा उपस्थिति सूची पर हस्ताक्षर लेते वक्त की जायेगी।

CamScanner

11:06 am 2 KB/s 94%

Instagram

Add a comment...

16 hours ago

j_k_study_group

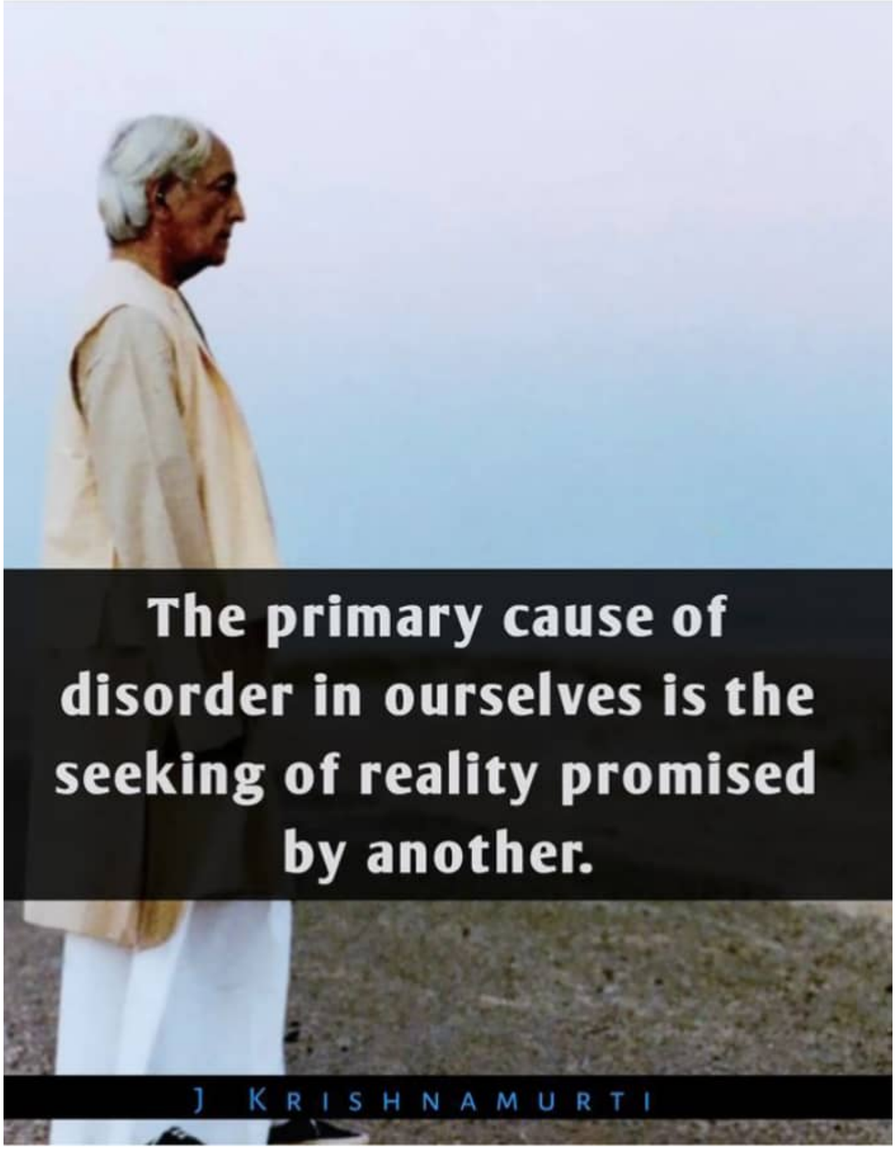

Liked by **vedanta.philosophy** and **682 others**

View 1 comment

Add a comment...

CamScanner

11:06 am 33 KB/s 94%

Instagram

5 days ago • See translation

osho_never_born_never_die
osho_never_born_never_die • Original audio

3,510 likes

osho_never_born_never_die 📌Whatsapp- 98765-67791 For... more

View all 39 comments

Add a comment

CamScanner

11:01 am 0 KB/s VoLTE 4G 95%

16 3 4

संबोधि बस स्वयं की सार्वभौम सत्ता की अनुभूति है। कोई भी इसे प्राप्त करे, इसका स्वाद, इसका अनुभव एक जैसा ही है--उसकी आंखों से वही आलोक झरता है, उसके हाव-भाव में वही प्रसाद, वही सौंदर्य होता है।

अगर तुम ग्रहणशील हो, तो एक संबुद्ध व्यक्ति से मिल कर तुम उन सभी संबुद्ध व्यक्तियों से मिल लिए जो मनुष्य के पूरे इतिहास में कभी भी हुए हैं; अतीत के ही नहीं,

बल्कि उन सबसे भी जो कभी भविष्य में होंगे।

संबुद्ध चेतना में अतीत, वर्तमान और भविष्य, ये सब एक ही क्षण में समाहित हो जाते हैं..✍️❤️💻🌎❤️ओशो ❤️ - अनंत से अनंत की ओर (दर्पण से मुलाकात)

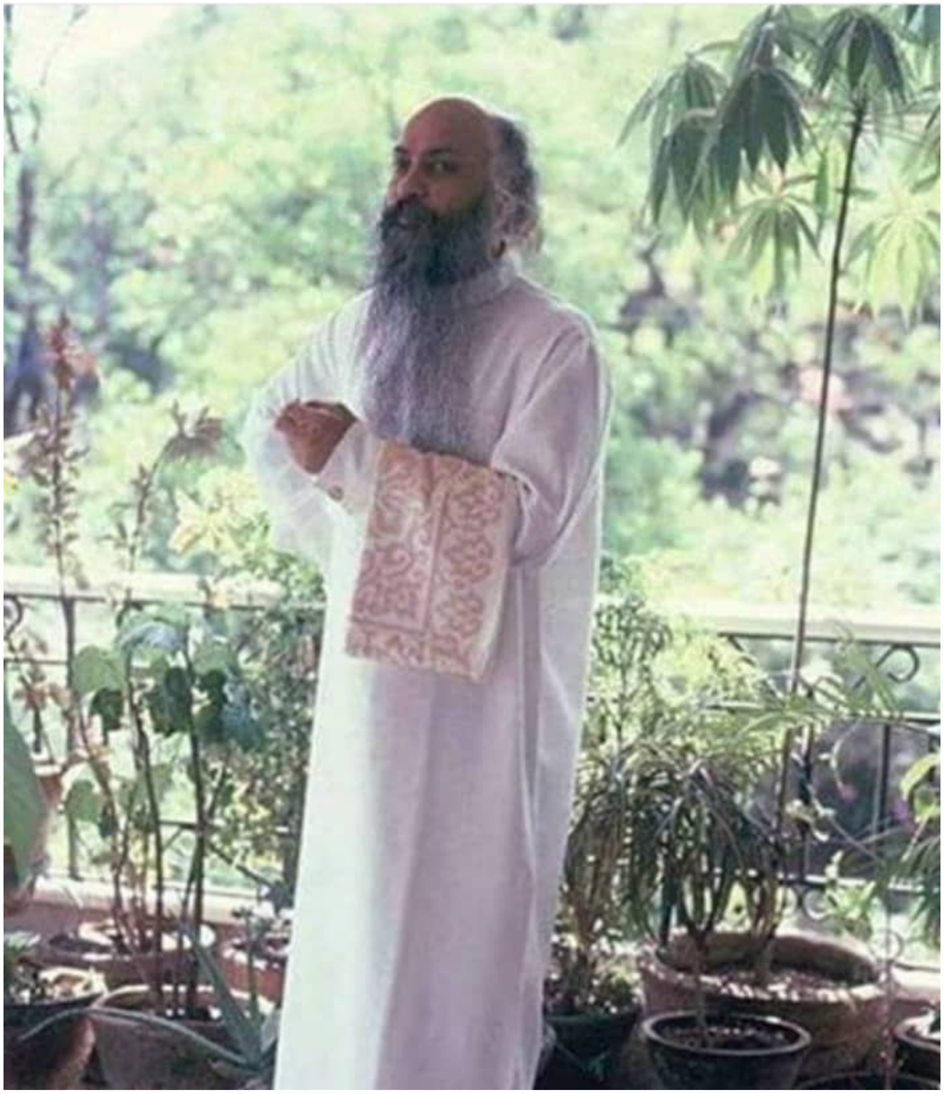

CamScanner

11:01 am 0 KB/s VoLTE 4G 95%

अब बुद्ध राजा शुद्धोधन के पुत्र थे। मैंने कहा: 'पहले तो तुम्हें शुद्धोधन को खोजना होगा, और शुद्धोधन के पिता को कहां से लाओगे? यह तो कठिनाई की बात है। तुम्हें यशोधरा को खोजना होगा। फिर यशोधरा के पिता के बारे में क्या करोगे?

'तुम्हें ऐसी व्यवस्था करनी होगी कि एक पुत्र पैदा हो, और जिस रात्रि को पुत्र पैदा हो, उस रात्रि बुद्ध को ठीक उनतीस वर्ष का होना पड़ेगा और उन्हें एक स्वार्णय रथ में बैठ कर घर छोड़ कर जाना रोग, लेकि बास्ताने तुम कहां से लाओगे? तुम एक नाटक में तो यह सब कर सकते हो, लेकिन वास्तविकता ये... मेरा भरोसा करम मैं बुद्ध ही हूं--इस बार एक दूसरे पिता से पैदा हुआ हूं, इस बार कोई यशोधरा नहीं, क्योंकि पिछली बार ही वह सब पर्याप्त सिद्ध हुआ। आखिर आदमी को अनुभव से सीखना होता है। इस बार कोई बच्चे नहीं, मैं उन्हें बरदाश्त नहीं कर सकता; वे दुनिया के सबसे ज्यादा उपद्रवी जीव हैं।'

उन्होंने कहा: 'हे भगवान! आप तो यह सब इस प्रकार बता रहे हैं कि यह मान लेने का दिल होता है कि शायद आप बुद्ध ही हैं।'

मैंने कहा: 'यह मान लेने का प्रश्न नहीं है। मैं आपके मान लेने पर निर्भर नहीं हूं। मैं बुद्ध हूं, आप इसे समझें या न समझें। आपकी तरह बहुत से मूढ़ बुद्ध के समय में भी थे जिन्होंने कभी उन्हें समाधिस्थ व्यक्ति की भांति, संबुद्ध की भांति, जाग्रत पुरुष की तरह से स्वीकार नहीं किया। अब तुम्हारे ऊपर निर्भर है कि बुद्धिमान बनो अथवा मूढ़।'

पूर्णा, तुम मेरे पास से कई बार गुजरे होगे--इस शरीर में तो नहीं, लेकिन इसी अनुभव से अवश्य गुजरे होगे। कभी कोई मुसलमान, फरीद; कोई जुलाहा, कबीर; कोई जूते सीने वाला, रैदास; कभी कोई राजकुमार, गौतम; कभी कोई व्यवसायी, तुलाधर; कभी कोई पुरुष, कभी कोई स्त्री, जैसे राबिया अल-अदाबिया।

संबोधि बस स्वयं की सार्वभौम सत्ता की अनुभूति है। कोई भी इसे प्राप्त करे, इसका स्वाद, इसका अनुभव एक जैसा ही है--उसकी आंखों से वही आलोक झरता है, उसके हाव-भाव में वही प्रसाद, वही सौंदर्य होता है।

CamScanner

11:01 am 0 KB/s VoLTE 4G 95%
16 3 4

मैंने कहा : 'बात तो सही है। मंच से नीचे उतर जाओ। तुम तो केवल एक बौद्ध हो। और मैं तो पच्चीस सदियों बाद बस यूं ही आ गया हूं, सिर्फ यह देखने कि दुनिया का क्या हालचाल है।'

लेकिन वे मेरे इस वक्तव्य के आघात को सहन नहीं कर सके कि मैं एक बुद्ध हूं। रात को वे मुझसे मिलने उन मित्र के घर आए जहां कि मैं ठहरा हुआ था। वह मित्र उनका भी मित्र था। उन्होंने कहा: 'मुझे आना ही पड़ा, क्योंकि सुबह से ही मैं यह विचार अपने मन से नहीं निकाल पा रहा हूं कि कोई व्यक्ति इतनी प्रामाणिकता से कैसे कह सकता है कि वह बुद्ध है। मैं पचास सालों से एक बौद्ध हूं, और मुझमें यह कहने की हिम्मत नहीं कि मैं एक बुद्ध हूं। मैं अभी भी एक बौद्ध हूं, बुद्ध के सिद्धांतों का पालन करने की चेष्टा करता हूं। और आप तो किसी भी सिद्धांत का पालन करते दिखाई नहीं पड़ते।'

मैंने कहा: 'वे सिद्धांत तो बौद्धों के लिए हैं। बुद्धपुरुष तो स्वयं सिद्धांत बनाते हैं, उनका पालन थोड़े ही करते हैं। और मैं यह अधिकारपूर्वक कह सकता हूं, क्योंकि गौतम बुद्ध ने स्वयं कहा था कि पच्चीस शताब्दियों के बाद वे वापस आएंगे। क्या तुम सोचते हो कि वे झूठ बोल रहे थे ?'

उन्होंने कहा: 'नहीं, ऐसा तो मैं सोच भी नहीं सकता।'

'क्या तुम सोचते हो कि वे ठीक उसी शरीर में वापस आएंगे? उस शरीर को तो तुम जला चुके हो। क्या तुम सोचते हो कि वे पुनः एक राजकुमार की भांति पैदा होंगे?--क्योंकि अब राजा वगैरह तो बचे ही नहीं। और उनसे विवाह करने के लिए यशोधरा जैसी सुंदरी कहां खोजोगे ?'

उन्होंने कहा: 'हे भगवान, यह सारे विवरण तो, स्वाभाविक है कि इन्हें दोहराया तो नहीं जा सकता, क्योंकि इन सारी बातों को दोहराने का अर्थ है कि उस पूरी शताब्दी को वापस लाना--वही राज्य, वही लोग-क्योंकि आदमी कोई एक अलग द्वीप तो है नहीं, वह तो समस्त घटनाओं से संबंधित है।'

अब बुद्ध राजा शुद्धोधन के पुत्र थे। मैंने कहा: 'पहले तो तुम्हें शुद्धोधन को खोजना होगा, और शुद्धोधन के पिता को कहां से लाओगे? यह तो

CamScanner

11:00 am 16 KB/s VoLTE 4G 95%

16 3 4

गौतम बुद्ध ने कहीं कहा है: 'तुम सागर को कहीं से भी चखो। वह हमेशा खारा है।' इससे कोई अंतर नहीं पड़ता कि वह अटलांटिक है या प्रशांत महासागर। बुद्धत्व के विषय में भी यही सच है: यह चैतन्य का सागर है, और इसका स्वाद बहुत मीठा, तृप्तिदायक, जीवन को प्रकाश से भर देने वाला है। और जो व्यक्ति तुम्हारे सामने है वह महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण तो वह अदृश्य अनुभव है जो वह अपने भीतर, अपने

साथ लिए हुए है। इसलिए अगर तुम किसी चौराहे पर किसी गौतम बुद्ध, या महावीर, या महाकाश्यप, या कबीर, या फरीद से कभी मिल चुके हो तब मुझसे मिल कर तुम्हारी चेतना पर पड़े वे क्षणिक प्रभाव पुनर्जीवित हो उठेंगे और ऐसा लगेगा जैसे कि तुम मुझे

पहले भी कई-कई जन्मों से बहुत बार जानते रहे हो।

परंतु जैसा आभास हो रहा है, वह सत्य नहीं है।

मैं इस जन्म के पूर्व संबुद्ध न था। इसलिए अगर तुम मुझसे मिले भी हो, तो तुम 'मुझसे' तो नहीं मिले होंगे--वह भी तुम्हारी ही तरह का एक मूर्च्छित व्यक्ति रहा होगा। और तुम हजारों व्यक्तियों से मिलते रहे हो। मैं भी उन हजारों मूर्च्छित व्यक्तियों में से एक रहा होऊंगा जिनसे कि तुम मिलते रहे--वह कोई महत्वपूर्ण बात नहीं है।

बुद्धत्व के साथ एक कठिनाई है कि तुम केवल एक जन्म में ही संबुद्ध हो सकते हो, क्योंकि वही तुम्हारा अंतिम जन्म हो जाता है। एक बार संबुद्ध हो गए कि फिर तुम पुनः मानव शरीर में नहीं आ सकते। फिर सदा के लिए उस कारागृह, उस दर्द, उस संताप, उस अर्थहीनता, उस दुखद अस्तित्व से तुम्हारा छुटकारा हो जाता है। अब तुम किसी सीमित आकार में बंधे हुए नहीं रहते, बल्कि निराकार और असीम में प्रवेश कर जाते हो। एक बार तुम संबुद्ध हुए नहीं कि तुम्हारी मृत्यु अंतिम मृत्यु बन जाती है। दूसरे शब्दों में, केवल संबुद्ध व्यक्ति ही मरते हैं। जो अभी जागे नहीं--उनके लिए यह बड़ा कठिन है--वे जाते हैं और वापस लौट-लौट आते हैं, वे कभी मरते ही नहीं। केवल संबुद्ध व्यक्ति ही मरना जान सकता है; असंबुद्ध व्यक्ति मरना जान ही नहीं सकता, वह अभी तैयार ही नहीं है। उन्होंने कहा: 'हे भगवान! तब तो सभापति आपको ही होना

CS CamScanner

11:00 am 0 KB/s VoLTE 4G 95%

जब मैंने संन्यास लिया और पहली बार आपसे मिला, तो वह किसी पुराने प्रेमी से मिलने जैसा लगा, जैसे कि मैं बहुत लंबे समय से आपको जानता रहा हूं। क्या सच में ऐसा ही है अथवा संबुद्ध व्यक्ति के साथ हर मुलाकात प्रत्येक को अपनी ही आंतरिक सत्ता का स्मरण दिलाने वाली होती है, इसलिए ऐसा महसूस होता है कि उससे पहले भी मिल चुके हैं।

पूर्णा, यह स्मरण, जैसे कि पिछले जन्मों में भी तुम मेरे साथ रह चुके हो, इस अनुभव के दो आयाम हैं-- एक, जिसका वर्णन तुम अपने प्रश्न में खुद ही कर रहे हो।

संबुद्ध व्यक्ति के साथ हर मुलाकात एक दर्पण से मुलाकात है। तुम स्वयं को--बिना किसी मुखौटे, बिना किसी व्यक्तित्व के, अपने असली चेहरे को, अपनी सार्वभौमिक सत्ता को--जैसे कि वास्तव में तुम हो-वैसा ही देखते हो। संबुद्ध व्यक्ति से मुलाकात एक प्रतिध्वनि, एक विशिष्ट तरह की तरंग निर्मित करती है, जो तुम्हारी आत्मा की अतल गहराई तक पहुंच जाती है।

क्योंकि तुम स्वयं को तो जानते नहीं हो, अतः ऐसा लगता है कि इस संबुद्ध व्यक्ति से पहले भी मिल चुके हो--क्योंकि तुम स्वयं के बुद्धत्व से अपरिचित हो। यह तुम्हारा असली स्वभाव है। यह तो एक पहलू है।

लेकिन एक दूसरा पहलू और भी है। तुम बहुत से जीवन जी चुके हो, और यह असंभव है कि तुम किन्हीं संबुद्ध, जागे हुए, आलोकित चेतना वाले व्यक्तियों के संपर्क में न आए हो--शायद कई बार आए होंगे। तुम इन अजनबियों से, इन परदेशियों से भिन्न-भिन्न मार्गों पर, अलग-अलग चौराहों पर मिल चुके हो--और सब बुद्धों का स्वाद, उनके बुद्धत्व का गुणधर्म तो वही का वही है। इसलिए अगर तुमने परिपूर्ण गहनता से मुझे प्रेम किया, तो वे सारे अनुभव--जो कि क्षणिक थे, क्योंकि तुम कभी एक संबुद्ध व्यक्ति के साथ ज्यादा समय तक नहीं रहे; कुछ पल ही उनके निकट गुजारे होंगे, वर्ना आज तुम यहां होते ही नहीं--लेकिन उनकी परछाइयां, उनकी प्रतिछवियां भी फिर से जीवंत हो उठती हैं, क्योंकि स्वाद तो वही है।

गौतम बुद्ध ने कहीं कहा है: 'तुम सागर को कहीं से भी चखो। वह हमेशा

CamScanner

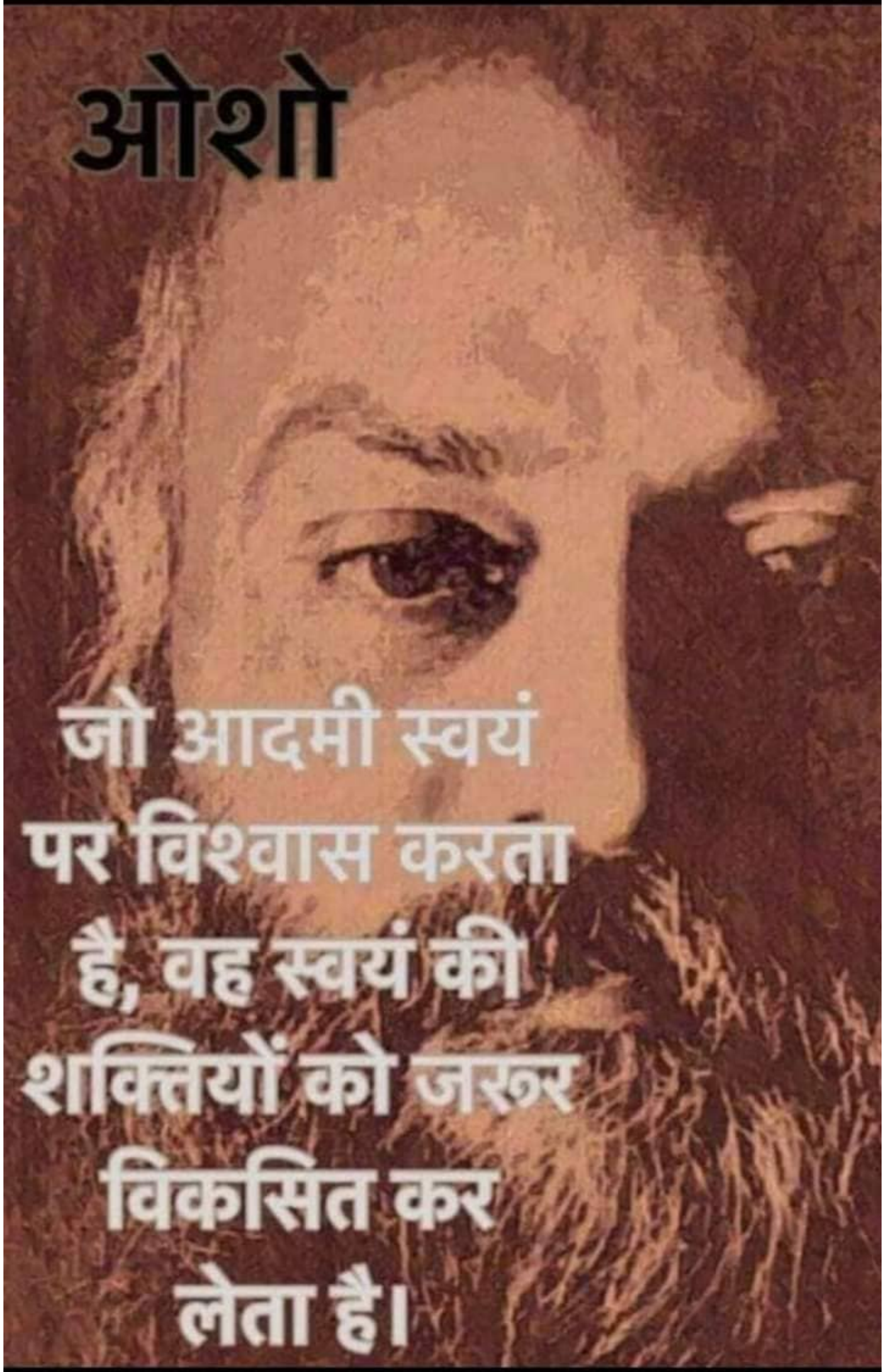

CamScanner

9:39 pm 21 KB/s VoLTE 4G 51%

OSHO RAJNEESH

Rajan Dahat · 14h ·

समस्त ओशो प्रेमियों को मेरा सु प्रभात.

#राज़न... See more

भीतर 'ध्यान' का दीया जला हो! तो तुम चाहे पहाड़ पर रहो या बाजार में कोई अंतर नही पड़ता

तुम्हारे पास ध्यान हो तो, कोई गाली तुम्हे छूती नही, ना अपमान ना सम्मान ना यश ना अपयश! कुछ भी नही छूता, अंगारा नदी में फेंक कर देखो, जब तक नदी को नही छूता जलता रहता है, नदी को छूते ही अपने आप बुझ जाता है। तुम्हारे ध्यान की नदी में सब गालियाँ, अपमान छूते ही मिट जाते है, तुम दूर अछूते खड़े रह जाते हो। मै इसी को परम स्वतंत्रता कहता हूँ, जब बाहर की कोई वस्तु, व्यक्ति, क्रिया तुम्हारे भीतर की शांति और शून्यता को डिगाने में अक्षम हो जाती है, तब जीवन आनंद बन जाता है !!

अहोभाव

1 · 1 comment

Like · Comment · Send · Share

Suggested Pages for you

Suggested Pages for you

CamScanner

9:36 pm 21 KB/s 51%

अहोभाव

1d ·

अहोभाव... See more

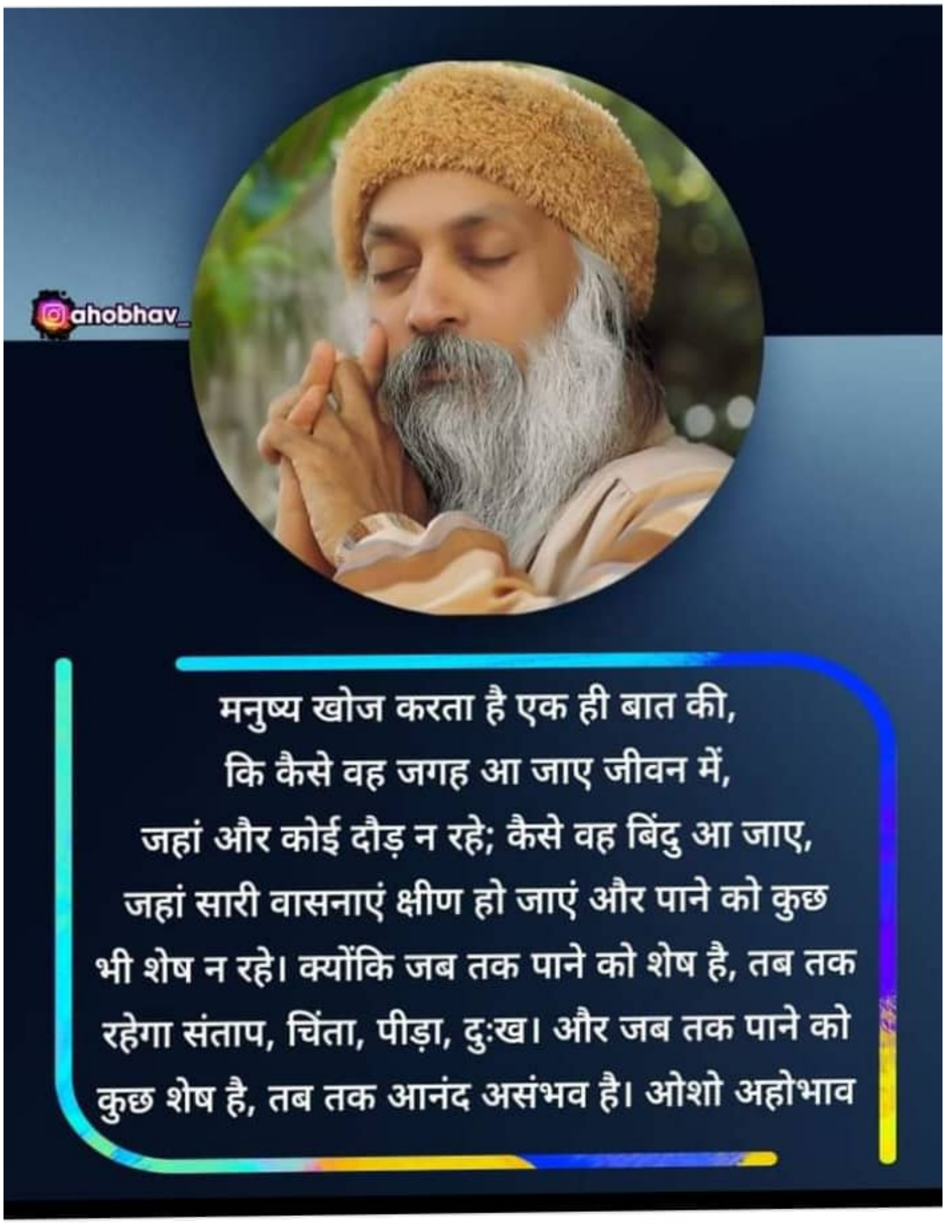

22 1 share

Like Send Share

Suggested Pages for you

Suggested Pages for you

CamScanner

9:35 pm 21 KB/s 51%

Shakhawoat + 9.3K 232 comments • 2 shares

Like Comment Share

प्रेम सरोवर

Sulaxna Dixit Rawat · 13h ·

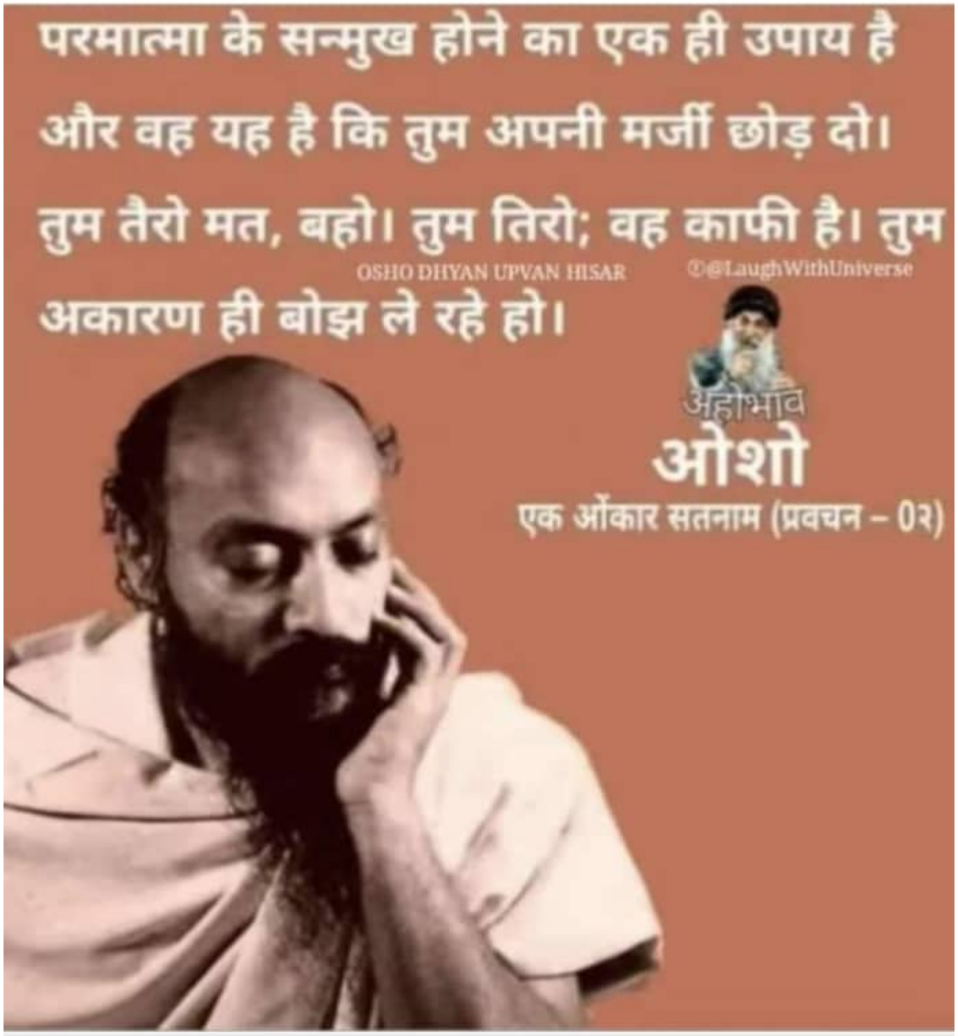

5 1 comment

Like Comment Send Share

RΛmט Roy YΛdΛv

Suggested for you · 1d ·

1890 के दशक में लाल किले का दिल्ली गेट।

CamScanner

9:33 pm 21 KB/s 51%

सत्य के साथ ओशो

Sulaxna Dixit Rawat · 13h ·

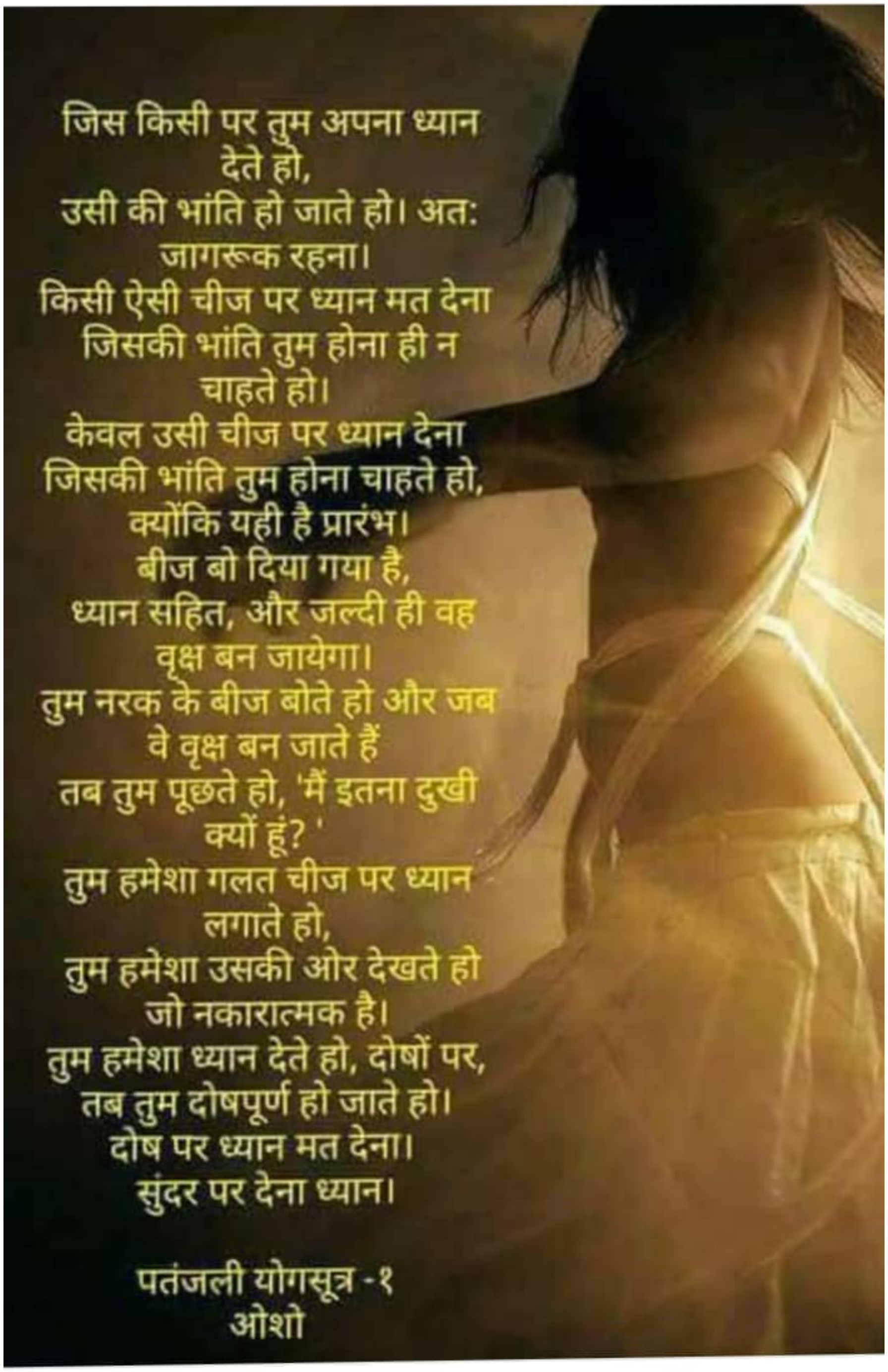

3 · 1 comment • 2 shares

Like Comment Send Share

CamScanner

9:32 pm 21 KB/s 51%

Like Send Share

Hema Jadon
Suggested for you · 9h ·

चरित्र दो कोड़ी के...

16 1 comment • 1 share

Like Comment Send Share

Sharma Cyber Cafe
Suggested for you · 3d ·

CamScanner

9:31 pm 21 KB/s VoLTE 4G 51%

3 4

Osho World unlearnsity
9h ·

हम माध्यम हैं --नियंता नहीं
ओशो ध्यान शिविरों में भारत में अथवा किसी भी देश में शिविरार्थी केवल 3 -5-7-21 दिन के लिए आते हैं, क्योंकि उतने दिन भी आ पाना अधिकांश लोगों के लिए कम संभव होता है--और हर शिविर में ओशो के प्रवचनों की कोई थीम होती है, जिसके अनुसार कोई संचालक प्रवचन चुन लेता है --कोई सूफी पर, कोई योग पर, कोई विपस्सना पर, कोई भक्ति पर, नृत्य उत्सव पर। ऐसी स्थिति में क्या यह संभव है कि आप शिविरार्थियों को ओशो के दस हज़ार प्रवचन सुना कर ओशो की पूरी दृष्टि को प्रस्तुत करें? इसे तो ओशो स्वयं भी कभी नहीं कर सकते थे, तो संचालक कैसे कर सकता है?

पुणे में ओशो के दस दिवसीय शिविर होते थे --उन दिनों स्वयं ओशो कभी कबीर पर, कभी शांडिल्य या नारद पर प्रवचन कर रहे होते थे तो कभी अष्टावक्र, बुद्ध और जिनसूत्र पर. इसलिए जो जिस समय आया वो वही ले गया। बहु-आयामी असीम जीवन दर्शन में से जिसे जो हीरे माणिक मिले वह ले गया। इसलिए हम अपनी चिंता का विषय नहीं बना सकते कि हमने आने वालों को ओशो का सब समग्र जीवन दर्शन नहीं दिया --क्योंकि जिसे सब समग्र चाहिए होगा उसे वह स्वयं खोजेगा और पायेगा। हम कोई किसी के नियंता नहीं हैं, न ओशो नियंता हैं --प्रत्येक व्यक्ति अपना स्वयं नियंता है. हम इतना ही कर सकते हैं कि ओशो से जुड़ने वाले व्यक्ति को पूरी जानकारी दें, शेष उस पर छोड़ दें.
एक समय था जब मैं ओशो के पास गया तो मुझे उस समय उनके समाजवाद, गांधीवाद, सम्भोग से समाधि की ओर पर प्रकशित प्रवचनों की ही जानकारी थी, लेकिन जब मैं ओशो के पास पहुंचा तो मुझे मिला कुछ और --पहले ही दिन --ओशो का नवसंन्यास और उनकी कीर्तन मण्डली में भ्रमण। ओशो से प्रेम हुआ, उनके प्रति समर्पण हुआ तो सब हो गया।
हम केवल माध्यम बन सकते हैं --नियंता नहीं। वह आयाम ईश्वरीय है --अस्तित्वगत है।
स्वामी चैतन्य कीर्ति

CamScanner

9:30 pm 21 KB/s VoLTE 4G 52%

3 4

Like Comment Send Share

OSHO FRAGRANCE FRIENDS

अहोभाव · 1d ·

अहोभाव

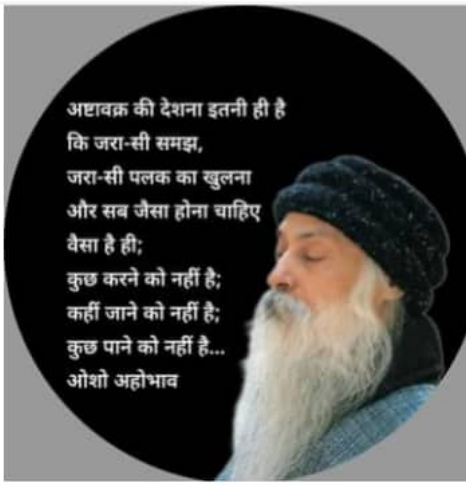

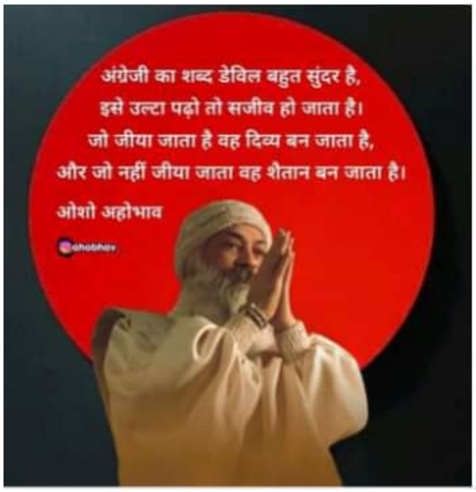

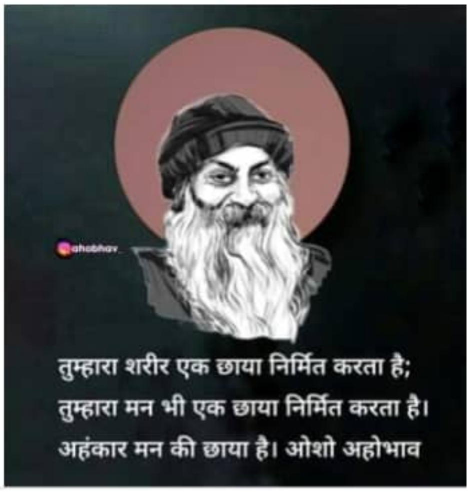

8 3 comments

Like Comment Send

Osho world unlearnsity

9h ·

हम माध्यम हैं --नियंता नहीं
ओशो ध्यान शिविरों में भारत में अथवा किसी भी देश में ... See more

CamScanner

सभी संत कहते हैं; परमात्मा प्रकाश है।
लेकिन तुमने कभी यह सोचा है कि अगर
परमात्मा प्रकाश है, तो मैं कौन हूं?
निश्चित ही तुम अंधकार हो।

ओशो अहोभाव
कहै कबीर मै पूरा पाया

तुम शून्य होओगे, तो ही परमात्मा तुम में प्रविष्ट हो सकेगा।
तुम अपने से भरे हो, यही तो अड़चन है।

ओशो अहोभाव
कहै कबीर मै पूरा पाया
प्रवचन 2

इस जगत में जो मिट जाते हैं, वे धन्यभागी हैं।
लेकिन मिटने में अड़चन तो आती ही है।
'मिटना' शब्द ही काटता-सा लगता है।

ओशो अहोभाव
कहै कबीर मै पूरा पाया

शून्यता में तो अस्मिता गल जाती है।
कोई मैं-भाव नहीं बचता।

ओशो अहोभाव
कहै कबीर मै पूरा पाया
प्रवचन 2

CamScanner

9:18 pm 21 KB/s VoLTE 4G 52%

Instagram

Add a comment...

3 days ago

oshoraviyog
Beast Inside Beats • Vibes

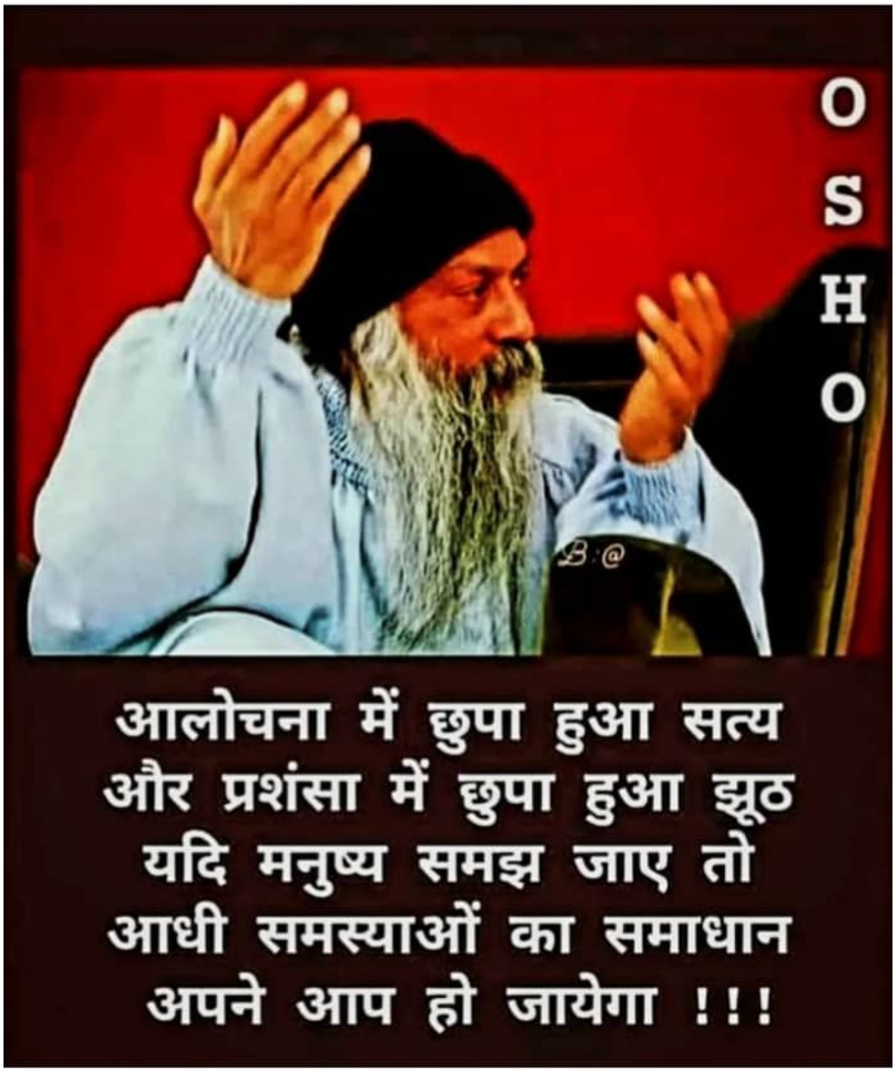

285 likes

oshoraviyog स्वयं की खोज स्वयं में!! 🧘

Add a comment...

2 days ago • See translation

CamScanner

9:17 pm 21 KB/s 52%

Instagram

Add a comment...

4 days ago • See translation

osho_meditation

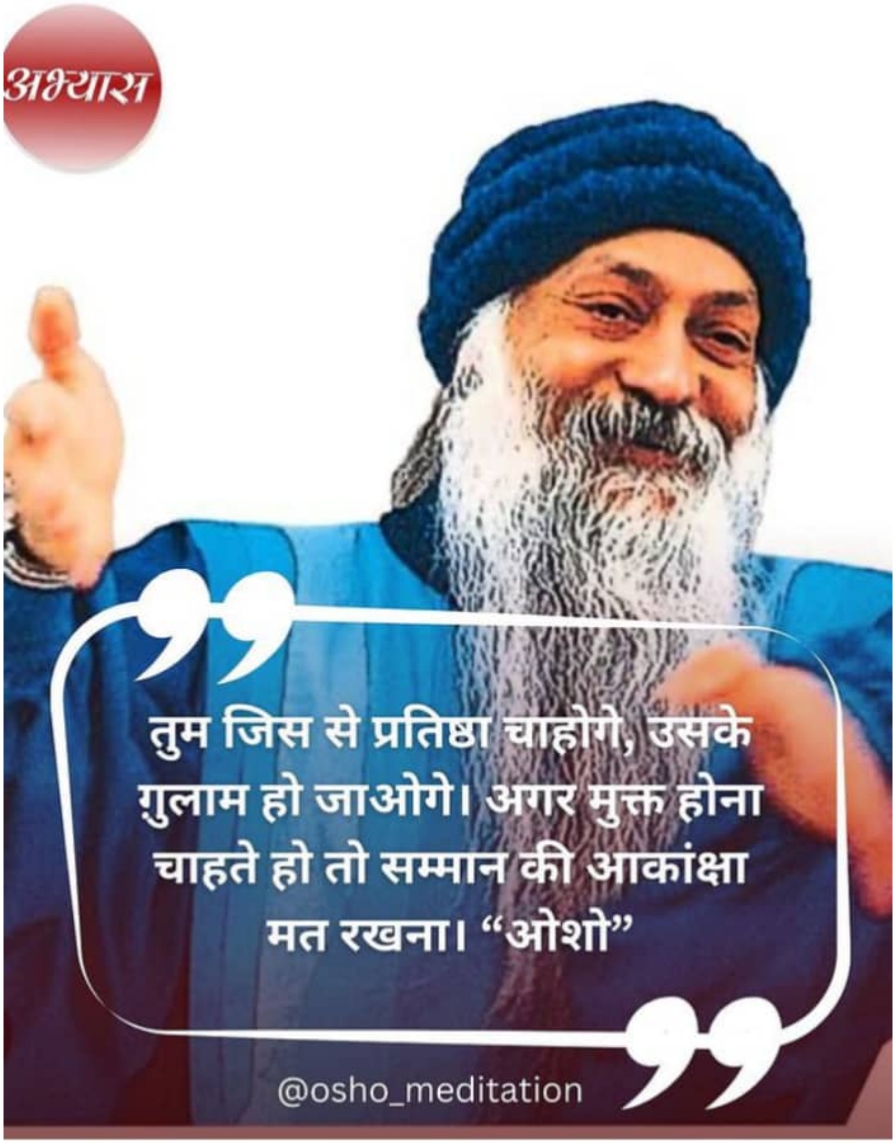

3,552 likes

View all 8 comments

Add a comment

CamScanner

6:24 am 0 KB/s 40%

मेरे पास बैठकर तुम्हें एक नई भाषा सीखनी है। एक नई अर्थव्यवस्था सीखनी है। एक नई भाव-भंगिमा, जीवन की एक नई मुद्रा! तुम्हारे ही शब्दों का उपयोग करूंगा, लेकिन उन पर अर्थों की नई कलम लगाऊंगा। इसलिए जब भी तुम्हें मेरे किसी शब्द से अड़चन हो तो खयाल रखना, अड़चन का कारण तुम्हारा अर्थ होगा, मेरा शब्द नहीं। तुम भी कोशिश करना कि मेरा अर्थ क्या है। तुम अपने अर्थों को एक तरफ सरकाकर रख दो। तुम तत्परता दिखाओ मेरे अर्थ को पकड़ने की। और तत्परता दिखाई तो घटना निश्चित घटने वाली है।

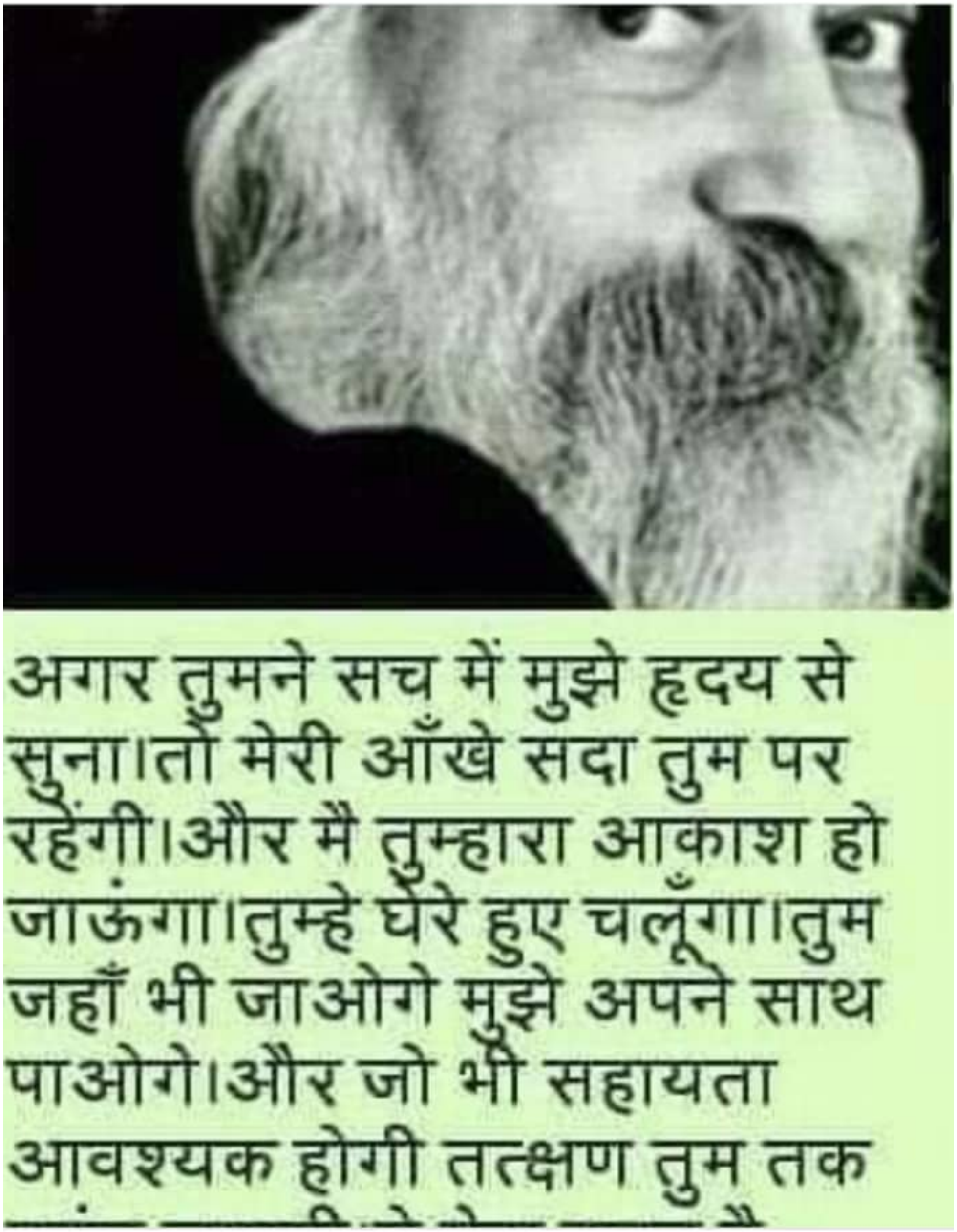

3

CamScanner

6:24 am 10 KB/s VoLTE 4G 40%

जरा रखो उसके चरणों में। जरा झुको। एक नजर उसकी पड़ जाए, एक किरण उसकी पड़ जाए, और तुम रूपांतरित हुए। लोहा सोना हुआ। मिट्टी में अमृत के फूल खिल जाते हैं।

आखिरी जाम में क्या बात थी
ऐसी साकी।
हो गया पी के जो खामोश
वो खामोश रहा।

यहां तुमने बहुत तरह के जाम पीए। आखिरी जाम - उसकी मैं बात कर रहा हूं।

आखिरी जाम में क्या बात थी
ऐसी साकी।
हो गया पी के जो खामोश
वो खामोश रहा।

उसको पी लोगे तो एक गहन सन्नाटा हो जाएगा। सब शांत, सब शून्य, सब मौन। भीतर कोई विचार की तरंग भी नहीं उठेगी। उसी निस्तरंग चित्त को समाधि कहा है। उसी निस्तरंग चित्त को बोध होता है, मैं कौन हूं।

मैं किसी और ही प्रेम की बात कर रहा हूं, तुम किसी और ही प्रेम की बात सुन रहे हो। मैं कुछ बोलता हूं, तुम कुछ सुनते हो। यह स्वाभाविक है शूरू-शुरू में। धीरे-धीरे बैठते-बैठते मेरे शब्द मेरे अर्थों में तुम्हें समझ में आने लगेंगे। सत्संग का यही प्रायोजन है। आज नहीं समझ में आया, कल समझ में आएगा, कल नहीं तो परसों।

सुनते-सुनते...। कब तक तुम जिद करोगे अपने ही अर्थ की? धीरे-धीरे एक नए अर्थ का आविर्भाव होने लगेगा।

मेरे पास बैठकर तुम्हें एक नई भाषा सीखनी है। एक नई अर्थव्यवस्था सीखनी है। एक नई भाव-भंगिमा, जीवन की एक नई मुद्रा! तुम्हारे ही शब्दों का उपयोग करूंगा, लेकिन उन पर अर्थों की नई कलम

CS CamScanner

6:24 am 0 KB/s VoLTE 4G 40%
7
2h ·

त्वदीयं वस्तु गोविंद तुभ्यमेव समर्पयेत्।' तेरी ही चीज है। तुझी को वापस लौटा रहा हूं। मेरा इसमें कुछ है भी नहीं। देने का सवाल भी नहीं है, देने की अकड़ भी नहीं है। मगर तुझे और तेरे चरणों में रखते ही इस हृदय को शांति मिलती है, आनंद मिलता है, रस मिलता है। जो खंड टूट गया था अपने मूल से, फिर जुड़ जाता है। जो वृक्ष उखड़ गया था जमीन से, उसको फिर जड़ें मिल जाती हैं; फिर हरा हो जाता है, फिर रसधार बहती है, फिर फूल खिलते हैं, फिर पक्षी गीत गाते है, फिर चांद-तारों से मिलन होता हैं।

परमात्मा से प्रेम का अर्थ है कि इस समग्र अस्तित्व के साथ मैं अपने को जोड़ता हूं। मैं इससे अलग-अलग नहीं जिऊंगा, अपने को भिन्न नहीं मानूंगा। अपने को पृथक मानकर नहीं अपनी जीवन-व्यवस्था बनाऊंगा। मैं इसके साथ एक हूं। इसकी जो नियति है वही मेरी नियति है। मैं इस धारा के साथ बहूंगा, तैरूंगा नहीं। यह जहां ले जाए! यह डुबा दे तो डूब जाऊंगा। ऐसा समर्पण परमात्म प्रेम का सूत्र है। खाली मत जाना।

मैकशों ने पीके तोड़े जाम-ए-मै
हाये वो सागर जो रक्खे रह गए।

ऐसे ही रक्खे मत रह जाना। पी लो जीवन का रस। तोड़ चलो ये प्यालियां। और उसकी नजर एक बार तुम पर पड़ जाए और तुम्हारा जीवन रूपांतरित हो जाएगा।

लाखों में
इंतिखाब के काबिल बना दिया।
जिस दिल को
तुमने देख लिया दिल बना दिया।।

जरा रखो उसके चरणों में। जरा झुको। एक नजर उसकी पड़ जाए, एक किरण उसकी पड़ जाए, और तुम रूपांतरित हुए। लोहा सोना हुआ। मिट्टी में अमृत के फूल खिल जाते हैं।

आखिरी जाम में क्या बात थी

CamScanner

धर्म की यात्रा का प्रारंभ धर्म की कामना से नहीं होता, संसार की कामना के असफल होने से होता है। इसे ठीक से गांठ बाँध लो। इसे सम्हाल कर रख लो। धर्म की यात्रा धर्म की कामना से शुरू नहीं होती, क्योंकि कामना से तो धर्म की यात्रा शुरू ही नहीं हो सकती। कामना तो संसार है।

धर्म संसार की असफलता से उठा हुआ फूल है, जीवन के विषाद से उठा हुआ फूल है, विफलता से खिला हुआ फूल है। कामना की मृत्यु पर धर्म का जन्म है। कामना की राख पर धर्म का अंकुर फूटता है।

CamScanner

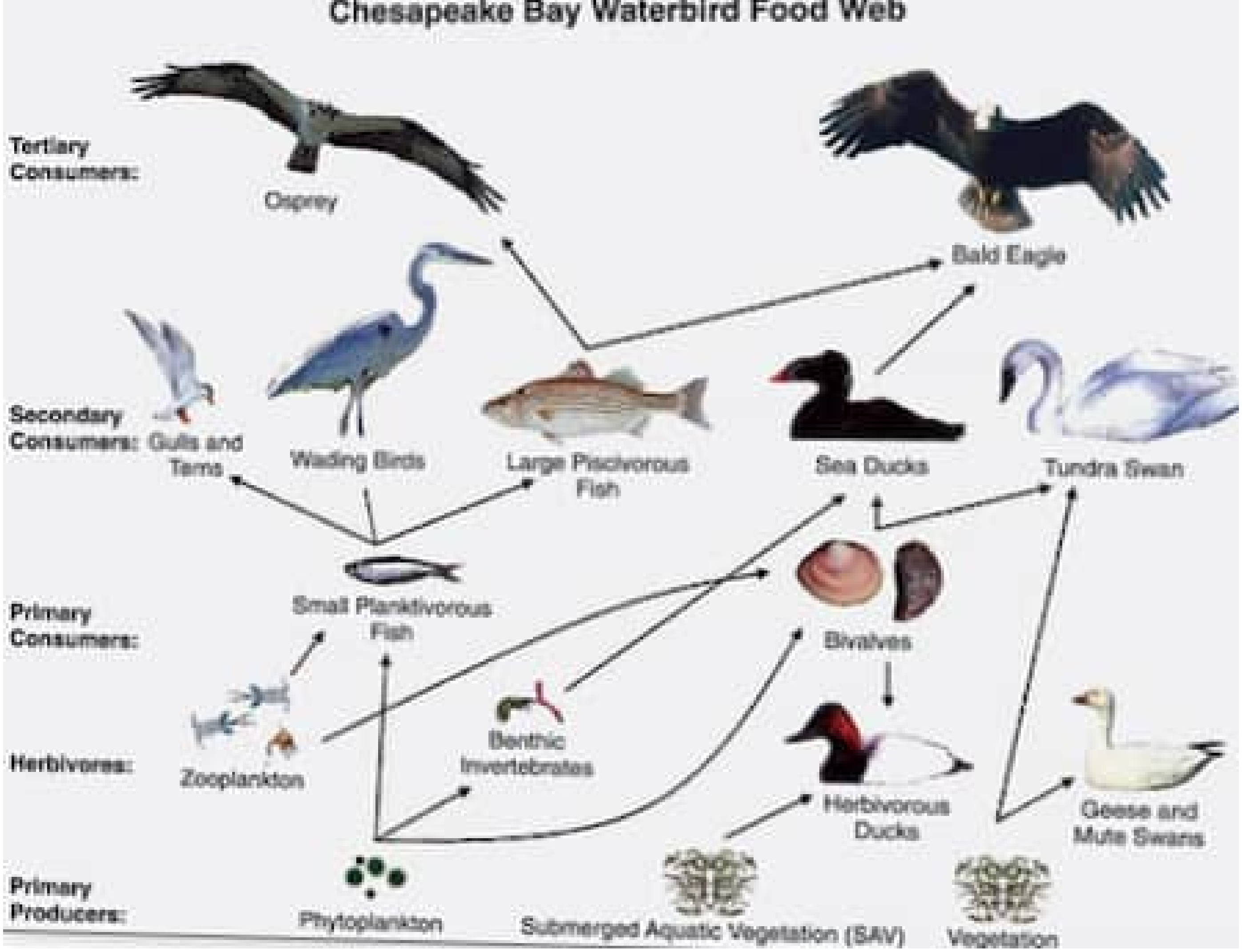

Chesapeake Bay Waterbird Food Web
Tertiary Consumers:
Osprey
Bald Eagle
Secondary Consumers:
Gulls and Terns
Wading Birds
Large Piscivorous Fish
Sea Ducks
Tundra Swan
Primary Consumers:
Small Planktivorous Fish
Bivalves
Herbivores:
Zooplankton
Benthic Invertebrates
Herbivorous Ducks
Geese and Mute Swans
Primary Producers:
Phytoplankton
Submerged Aquatic Vegetation (SAV)
Vegetation

CamScanner

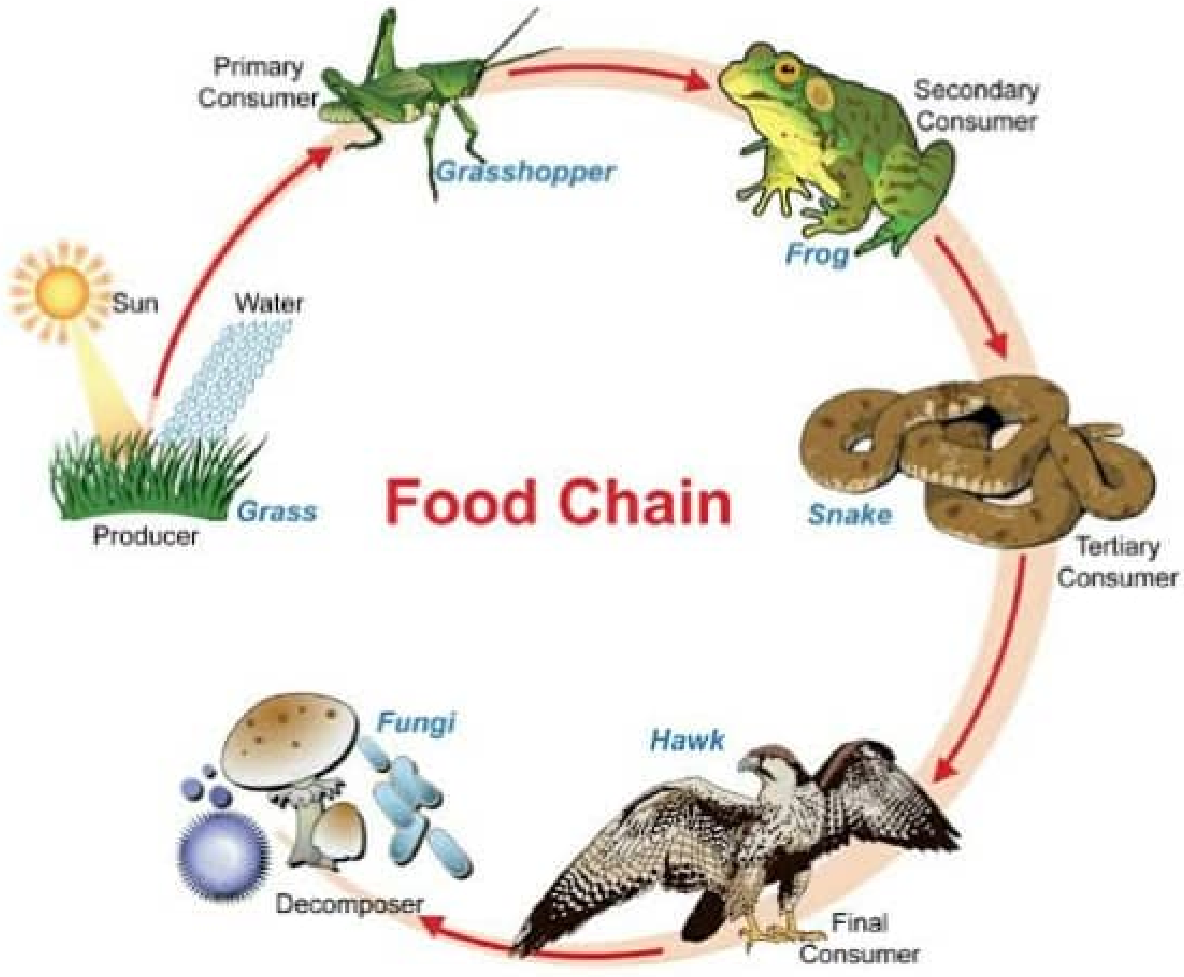
Primary
Consumer
Grasshopper
Secondary
Consumer
Frog
Sun
Water
Snake
Grass
Food Chain
Producer
Tertiary
Consumer
Fungi
Hawk
Decomposer
Final
Consumer

CamScanner

A Food Web

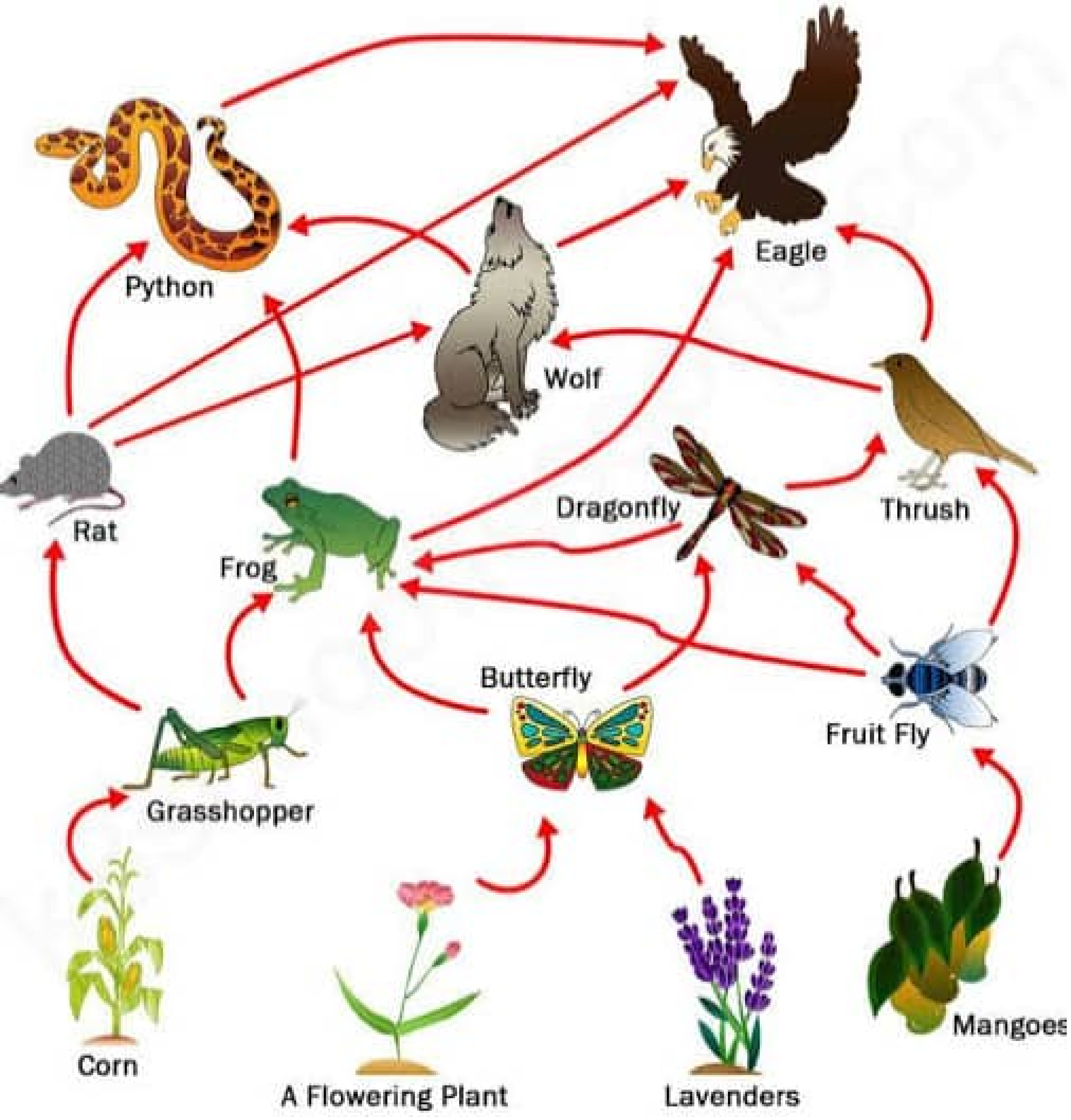

CamScanner

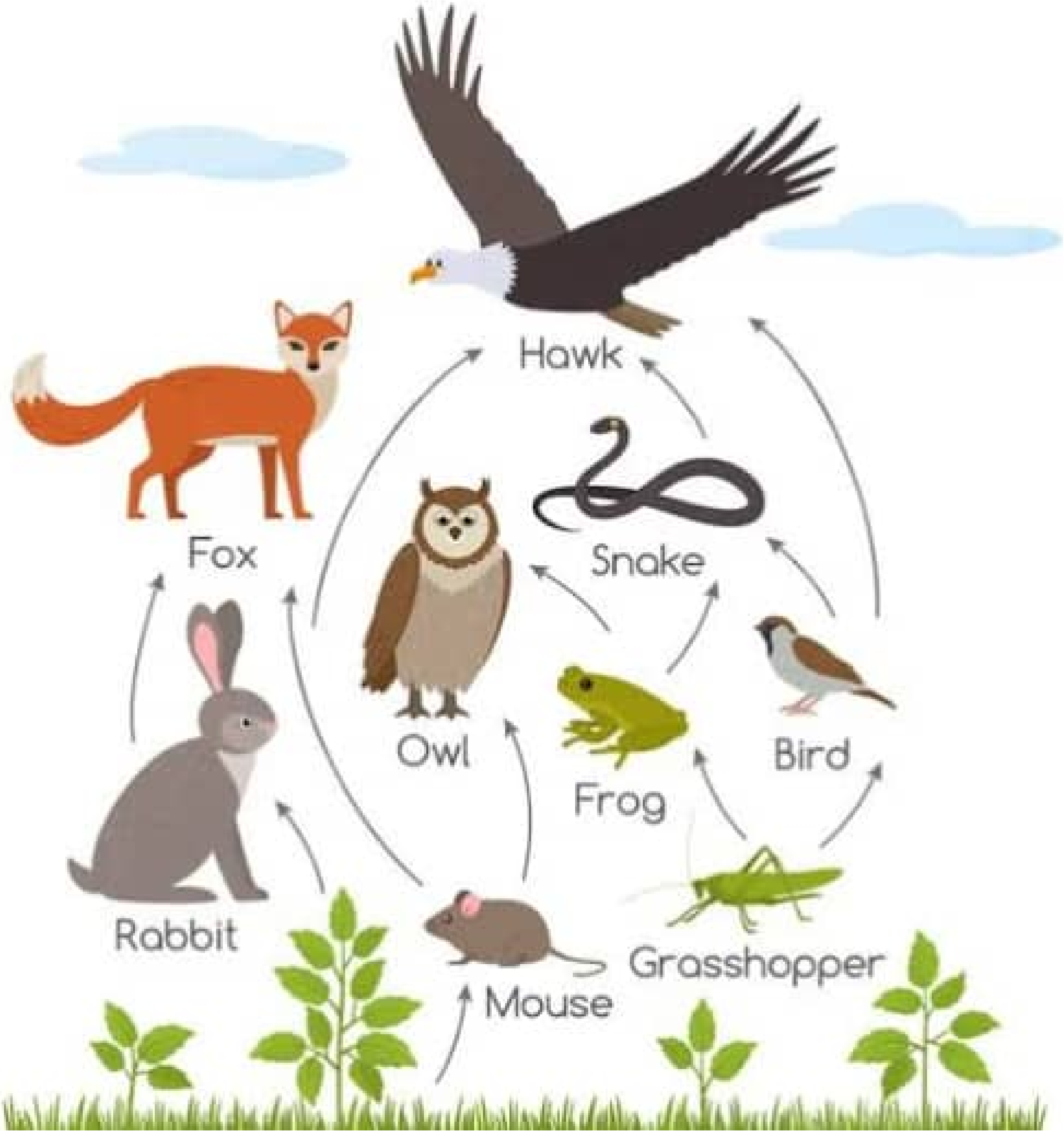

CamScanner

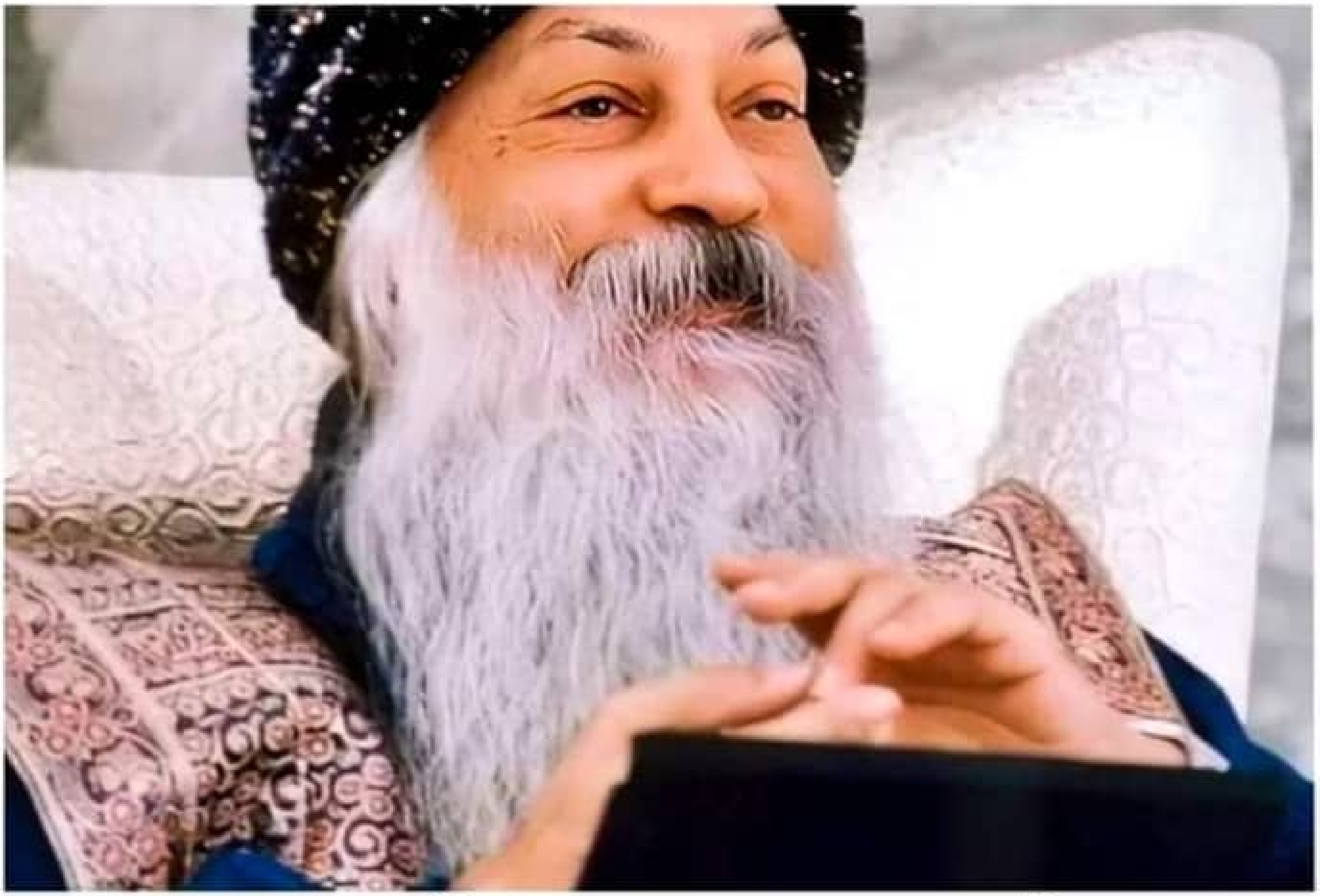

असली सवाल तुम्हारा है।
तुम अगर कारागृह में भी दृष्टा बने रहो,
तो तुम मुक्त हो।

- आचार्य रजनीश

CamScanner

3:36 pm
Reels
कमाई के ज्यादा साधन क्यो जरूरी हैं
इस टेबल का सिर्फ़ एक पैर है जिसकी वजह से ये खडा है अगर ये एक पैर टूट जाए तो ये पूरी तरह से गिर जाएगा।
इस टेबल के चार पैर हैं और अगर एक टूट भी जाए तो ये खडा रहेगा, और अगर तीन भी टूट गए तब भी ये पूरी तरह नही गिरेगा।
इसी तरह अगर आपके पास कमाई का सिर्फ़ एक सोर्स है तो आपको दूसरा भी बनाना चाहिए भले ही कुछ पैसे ही कमाओ लेकिन दूसरा सोर्स ज़रूर बनाए।
Follow :- @finance_minded_
19K
24
589
Send
finance_minded_
Make Resources Of Money ... more
irational Epic
Add a comment...

CamScanner

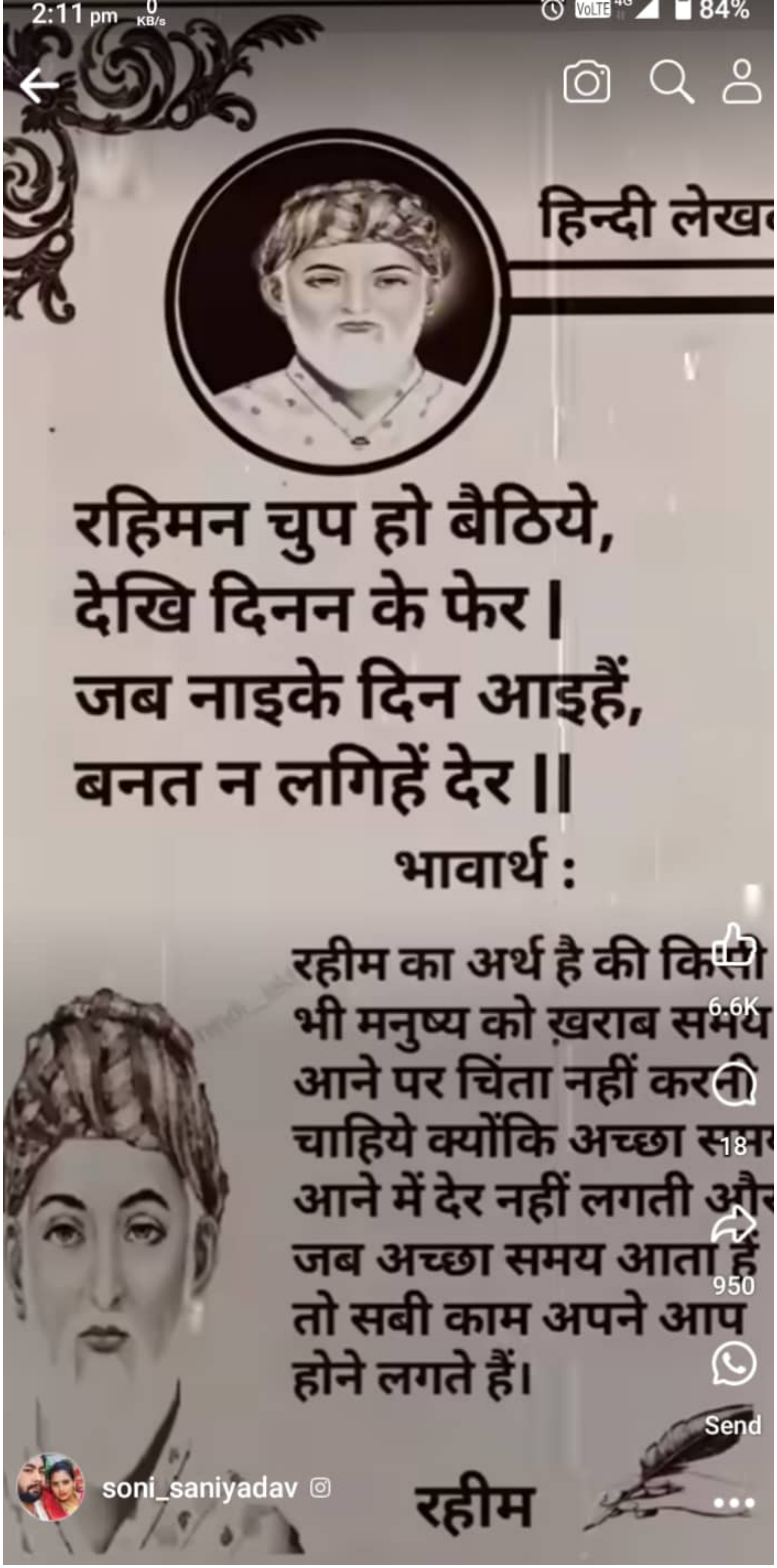
2:11 pm
84%
हिन्दी लेख
रहिमन चुप हो बैठिये,
देखि दिनन के फेर।
जब नाइके दिन आइहैं,
बनत न लगिहें देर ॥
भावार्थ :
रहीम का अर्थ है की किसी
भी मनुष्य को ख़राब समय
आने पर चिंता नहीं करनी
चाहिये क्योंकि अच्छा सम
आने में देर नहीं लगती और
जब अच्छा समय आता है
तो सबी काम अपने आप
होने लगते हैं।
6.6K
18
950
Send
soni_saniyadav
रहीम

CamScanner

2:14 pm
83%
जिसे चाहो
उससे कुछ मत चाहो !!
Great Osho
35
1
8
Send
anand_vh
Raj Maangal
Follow
anand_vh
#neha #osho

CamScanner

9:40 pm 49 KB/s 70%

Instagram

Desire Box, an ode to Mirza Ghalib with a delightful coll... more

View all 111 comments

bavafarook Thank you rekhta it was a beautiful gift 😍

osho_infinity
Delhi, India
Raahi, Kishore Kumar • Main Sharabi Hoon LoFi Flip

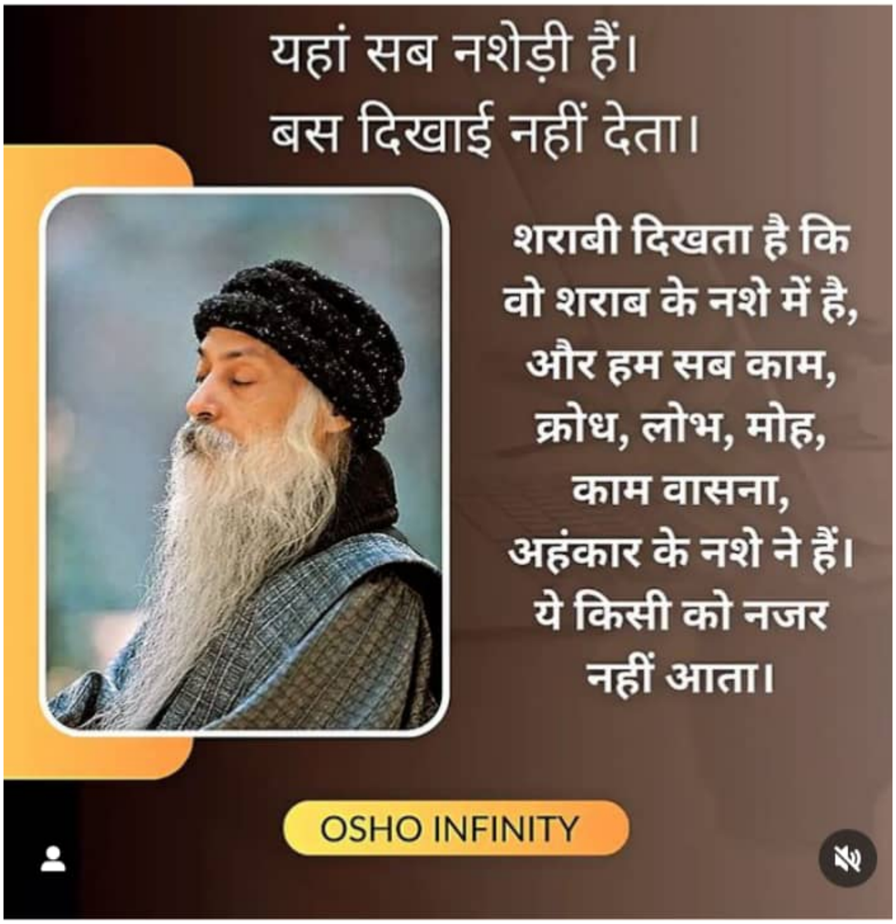

204 likes

osho_infinity यहां सब नशेड़ी हैं।
#OshoWisdom #oshoinfinity #dangdeepakk #motivation

View all 2 comments

Add a comment...

1 hour ago • See translation

CamScanner

9:41 pm 68 KB/s 70%

Instagram

View all 275 comments

only_osho_1968

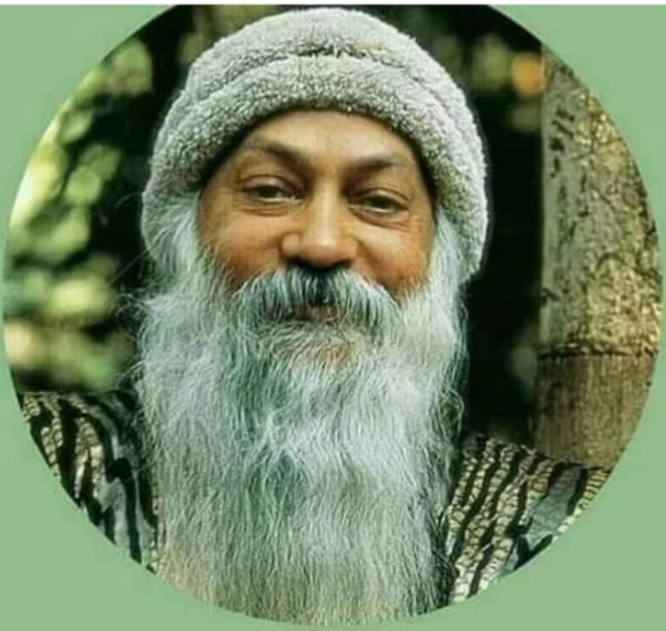

वही मिलेगा जो दोगे। जिंदगी दोगे, जिंदगी मिलेगी। जिंदगी लोगे, जिंदगी छिन जायेगी। जगत प्रतिध्वनि करता है। गीत गाओ, चारों तरफ से गीत तुम पर बरस जायेंगे। गालियां दो, चारों तरफ से गालियां तुम पर बरस जायेंगी। जो चाहो लो। मगर शर्त यही है कि वही दोगे तो मिलेगा। जगत प्रतिदान है। तुम दान करो। जगत प्रतिदान है। हजार गुना होकर लौट आता है सब।

255 likes

12 hours ago

lokeshanand_paramhans

CamScanner

11:12 pm 18 KB/s 62%

OS...
Swami Anand Sahaz · 4d

OSHO दर्शन DHARA
Leena Bodiwala · 5d

47

6 comments • 5 shares

CamScanner

11:09 pm 24 KB/s 63%

isha.sadhguru.org
Learn Classical Hatha Yoga
Learn more

241 6 comments • 6 shares

Like Comment Share

Osho Rishi Valley. Shimla
Reels · 1d ·

दूसरों का ज्ञान आपका नहीं हो सकता...
#viralpage2023 #ViralreelsFacebookpage #vir... See more

CamScanner

11:08 pm
63%
'परमात्मा प्रगट है,
निर्वस्त्र है, चारों तरफ
मौजूद है। झांको तो तुम्हा
भीतर मौजूद है और ऐसे
दौड़ते रहो काबा और
काशी और कैलाश
तुम्हारी मर्जी!'
Osho Universal
Dhaval Parmar
ओशो
गुरू प्रताप
साध की संगत

CamScanner

यहा पानी के बबूलो जैसा जीवन रोज बदलता जाता है। यहा कुछ भी थिर नही है। तो जब बुढ़ापा आएगा, और उसके पहले कदम तुम सुनोगे, दुख होगा कि हार गया। हारे इत्यादि कुछ भी नही। जीत की आकांक्षा के कारण हार का खयाल पैदा हो रहा है। यह भ्रांति इसलिए बन रही है, क्योकि तुम जवान रहना चाहते थे और प्रकृति किसी चीज को ठहरने नही देती। प्रकृति बहाव है। और तुमने प्रकृति के विपरित कुछ चाहा था, जो संभव नही है, संभव नही हो सकता है। न हुआ है, न कभी होगा।

जो संभव नही हो सकता, उसकी आकांक्षा में दुख है। फिर तुम बुढ़े हो जाओगे, तब भी नही समझोगे। अब तुम मरना नही चाहते!पहले जवानी पकड़ी थी, अब बुढ़ापे को पकड़ते हो। तो कुछ सीखे नही!देखा कि बचपन था, वह भी गया। जवानी थी, वह भी गयी। बुढ़ापा भी जाएगा। जीवन भी जाएगा, मौत भी आएगी। और जब जीवन ही चला गया, तो मौत भी जाएगी। घबड़ाओ मत। सब बह रहा है। यहा न जीवन रुकता है, न मौत रुकती है।

ओशो

CamScanner

CamScanner

10:02 am 0 KB/s VoLTE 4G 100%

google.com/search?q=hı

2

Sperm Tracked in 3-D—A First

Visit

Images may be subject to copyright. **Learn More**

Share

Save

National Geographic

Sperm Tracked in 3-D—A Fi...

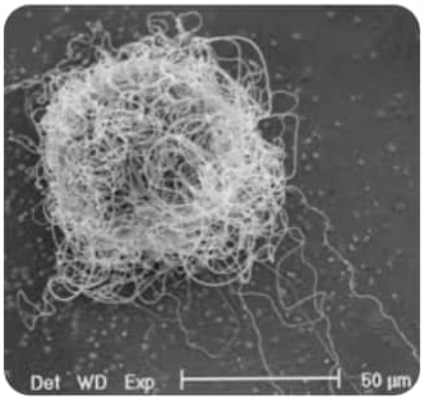

Smithsonian Magazine

The Long, Winding Tale of ...

ResearchGate

Live (no color) and dead (r...

Shutterstock

Human Sperm Microscope...

WSU Insider - Washington St...

Trapping sperm in semen's...

Getty Images

Deformed Sperm Cell Scan...

CamScanner

5:47 pm 0 KB/s 84%

836 likes

osholifestyle #osho

View all 7 comments

23 hours ago

oshoraviyog
Miracle Music • Chill Vibes

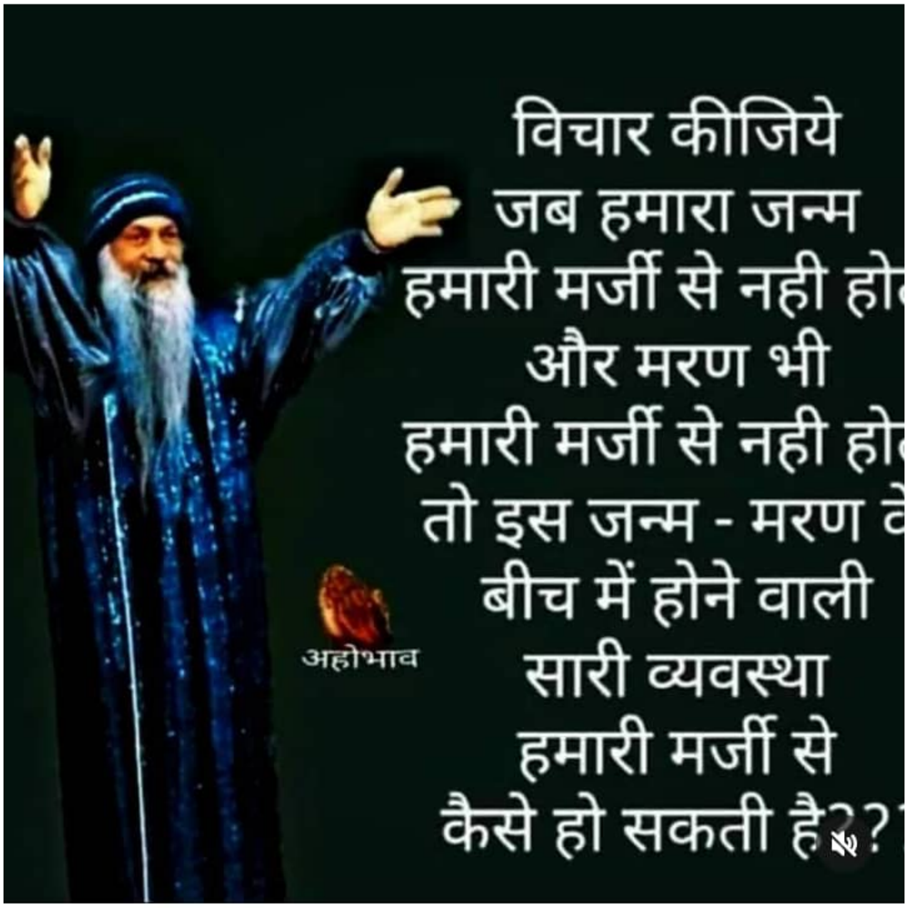

Liked by **only_osho_1968** and **1,356 others**

oshoraviyog स्वयं की खोज स्वयं में!! 🧘

View all 4 comments

Add a comment...

5 days ago • **See translation**

osho_quotes

CamScanner

5:47 pm 0 KB/s 84%

Instagram

Add a comment...

5 days ago • See translation

osho__quotes
Revathy Krishna • Satyam Shivam Sundaram - Part 1

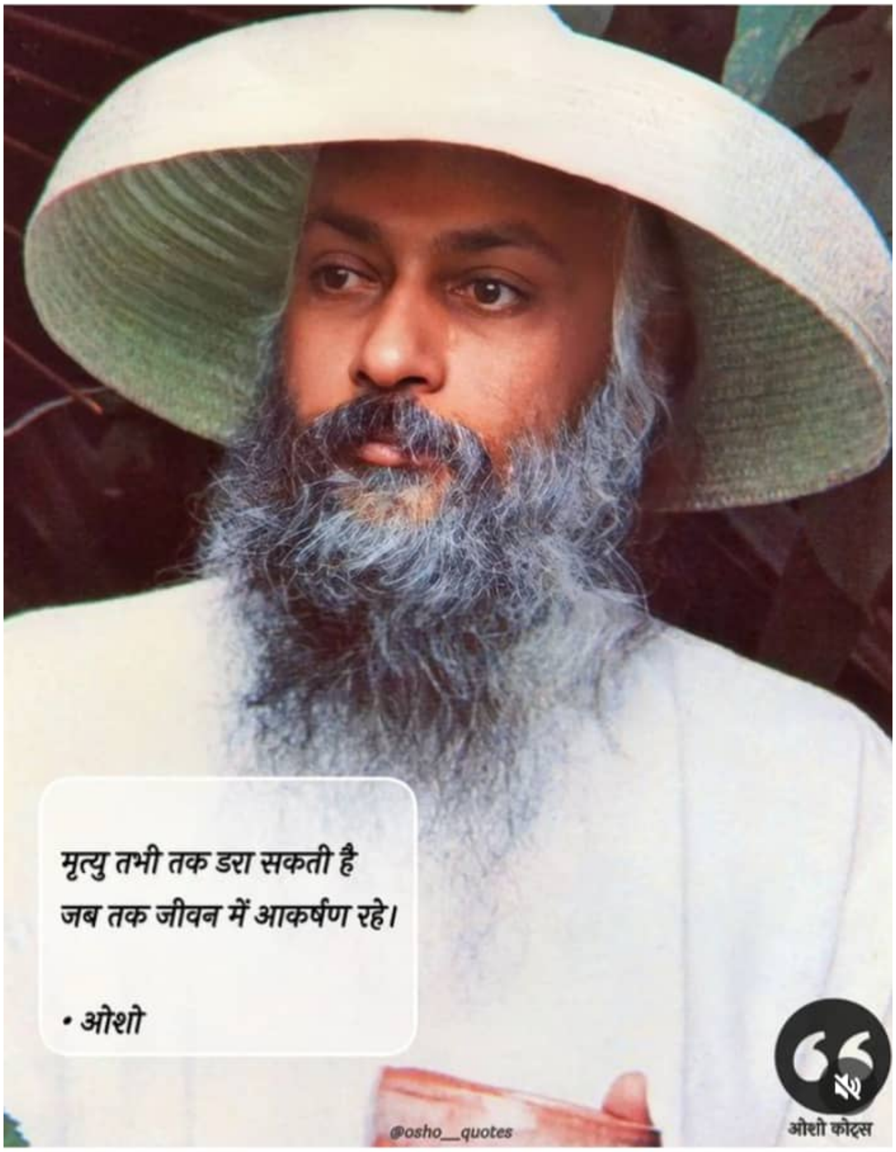

Liked by osho_infinity and 11,414 others

osho__quotes ❤️

View all 15 comments

5:47 pm 6 KB/s 84%

Liked by **osho_infinity** and **11,414 others**

osho__quotes ❣️

View all 15 comments

Add a comment...

3 days ago

philosophy_gyan

OP Dewangan • Bharthari (Flute Theme)

INSTA/ @PHILOSOPHY.GYAN

लोगो के सामने उतना ही झुको जितनी आवश्यकता हैं
गुलाम मत बनो,
हमेशा अपने भाग्य के स्वामी बने रहो...!!

_ ओशो

Liked by **osho.gyan__** and **2,519 others**

philosophy_gyan Osho 🙏

View all 3 comments

Add a comment...

1 day ago

CS CamScanner

5:47 pm 0 KB/s 84%

Liked by **osho.gyan__** and **2,519 others**

philosophy_gyan Osho 🙏

View all 3 comments

Add a comment...

1 day ago

only_osho_1968

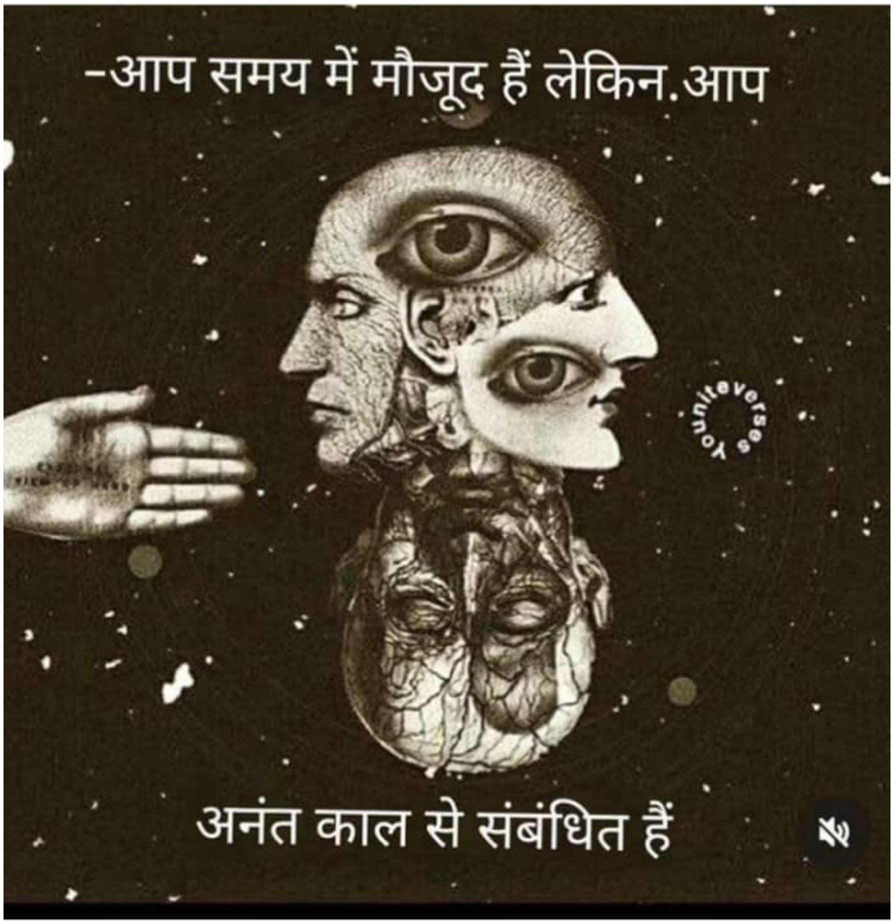

108 likes

1 day ago

osho_quotes_on_god

CamScanner

5:49 pm 1 KB/s 84%

Instagram

108 likes

1 day ago

osho_quotes_on_god

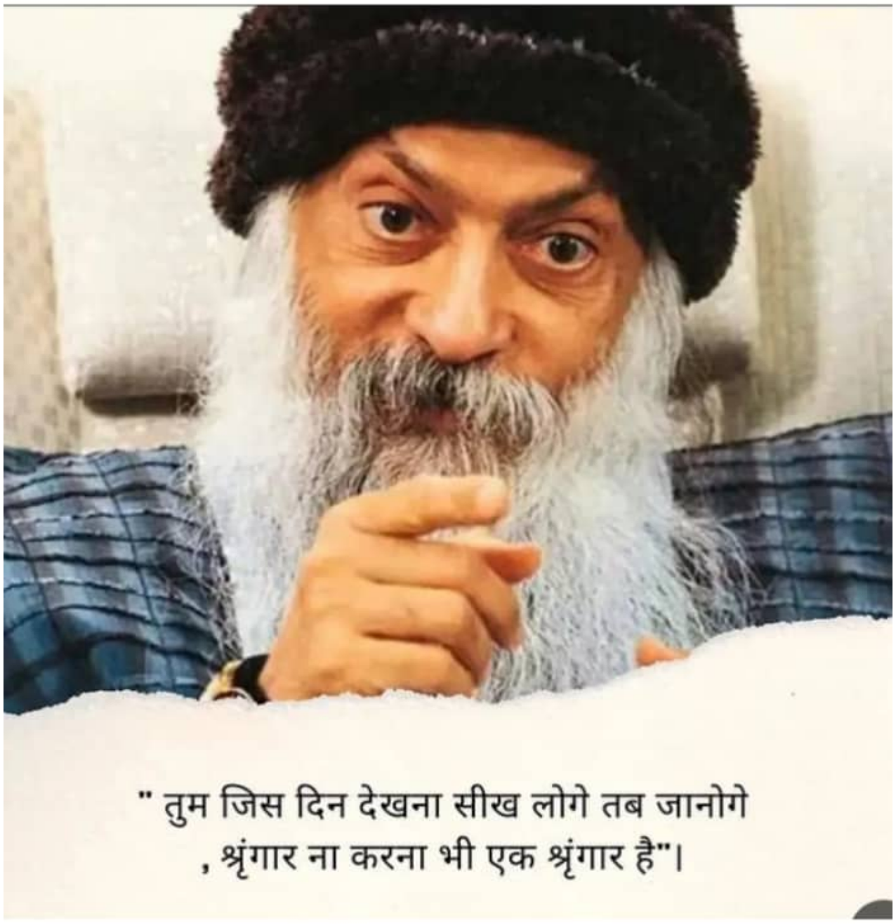

Liked by **osho_the_great_master** and **46 others**

View 1 comment

Add a comment...

1 day ago

CamScanner

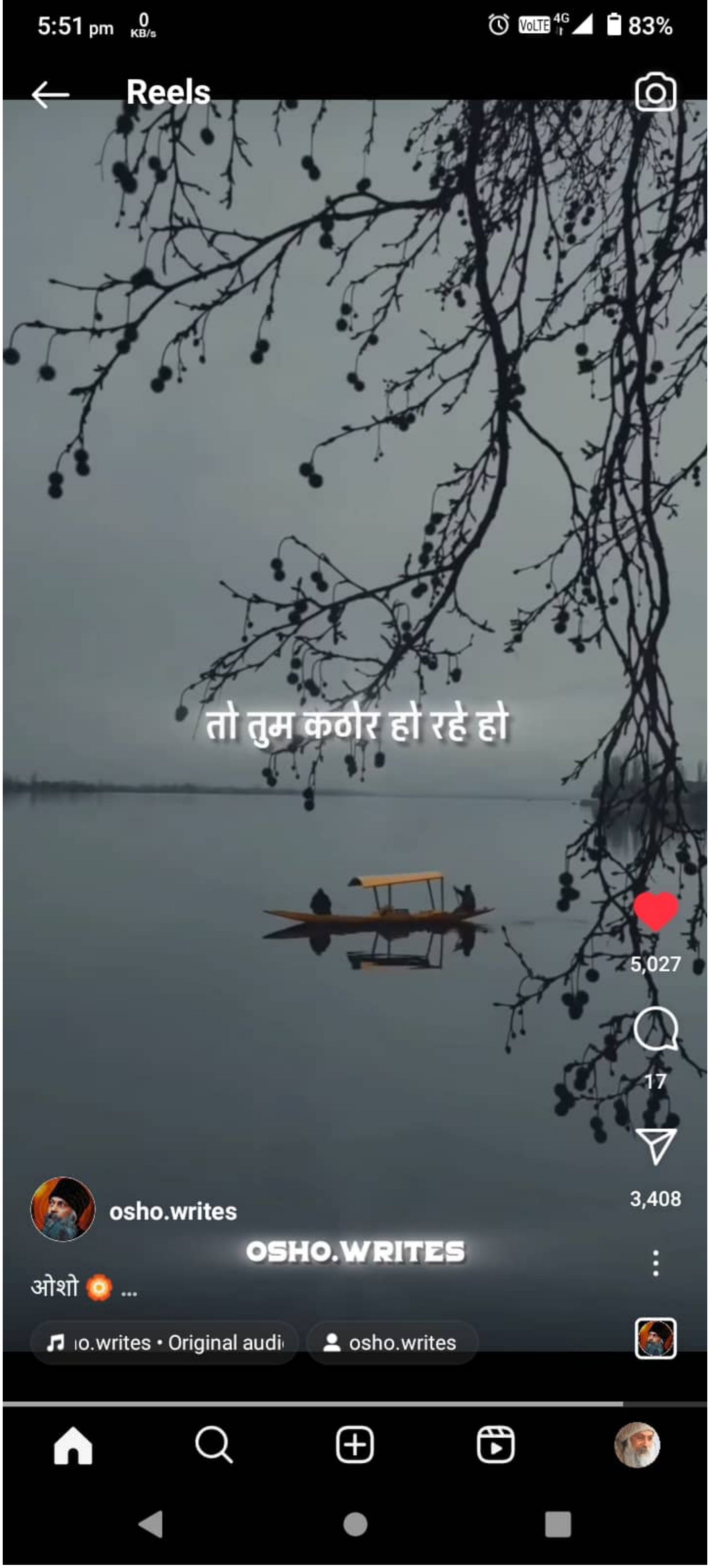
5:51 pm
83%
Reels
तो तुम कठोर हो रहे हो
5,027
17
3,408
osho.writes
OSHO.WRITES
ओशो ...
ıo.writes • Original audi
osho.writes

CamScanner

5:51 pm 10 KB/s 83%

5,027 likes

osho.writes ओशो

.... more

View all 17 comments

3 days ago

oshovichar27

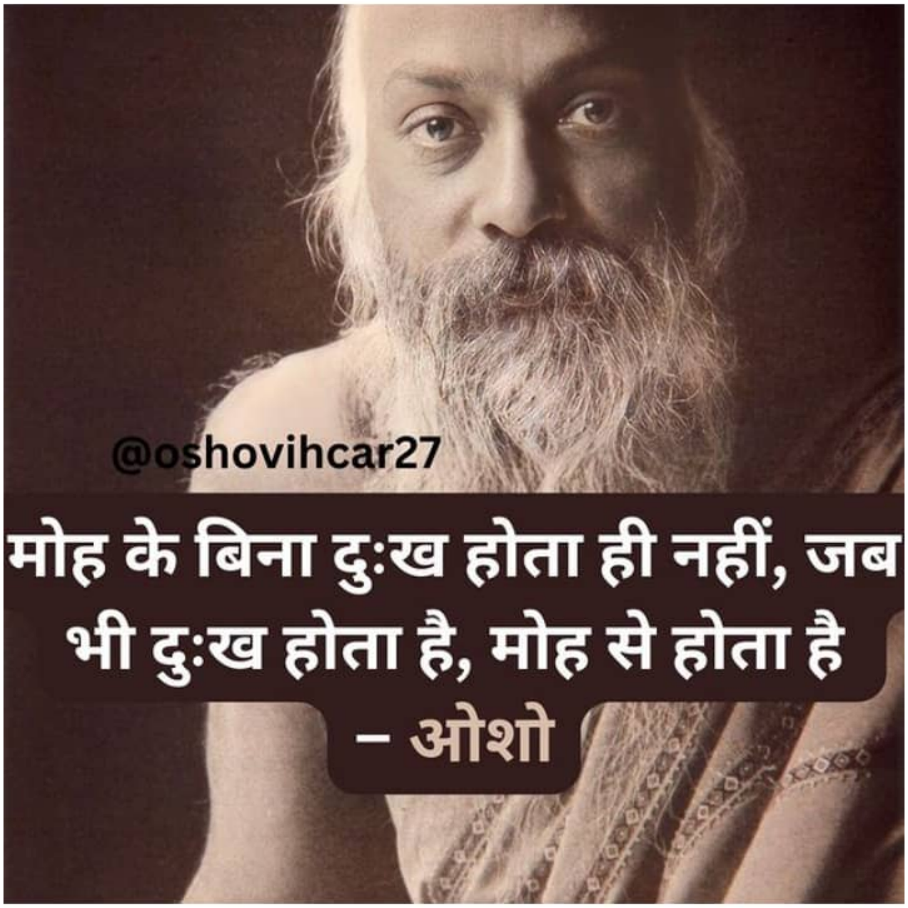

105 likes

oshovichar27 ओशो हिन्दी पुस्तक link in bio #osho #oshohindi #oshomeditation #oshovichar27 #osholovers... more

Add a comment...

3 days ago • See translation

CamScanner

5:51 pm 13 KB/s 83%

1,200 likes

sufinama Sufi Quotes/ Baba Farid... more

View all 3 comments

Add a comment...

5 days ago

osho_the_master
Morbi

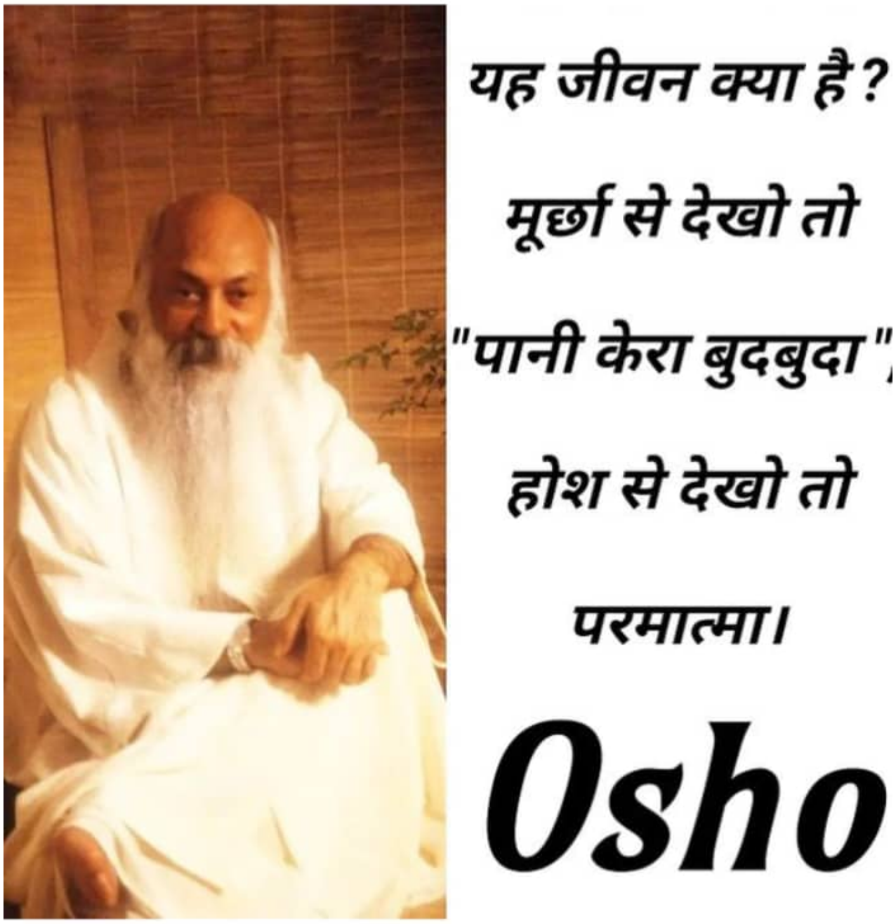

Liked by **osho_the_great_master** and **146 others**

osho_the_master #Osho #OshoHindi... more

osho_the_master From " ज्योति से ज्योति जले (Discousre No. 14 - एकांत मधुर है) "

Add a comment...

2 days ago

CamScanner

5:53 pm 0 KB/s 83%

Instagram

5 days ago

osho_hindi__

Liked by **osho_tree** and others

osho_hindi__ जब कोई स्त्री.. तुम्हारे साथ प्रेम में पड रही है तो यह मत समझना. कि तुम में कुछ अतिरिक्त हैं।... more

View 1 comment

Add a comment...

5 days ago · **See translation**

j_k_study_group

CamScanner

संसार एक पड़ाव है;
और पड़ाव पर कभी शांति नहीं
हो सकती। थोड़ी देर विश्राम हो
सकता है, लेकिन आनंद नहीं
हो सकता। और विश्राम का तो
इतना ही अर्थ है कि फिर हम
श्रम करने को तैयार हुए, फिर
यात्रा के लिये पैर तैयार हैं। यह
हमारा घर नहीं। जहां हम ठहरे
हैं, वह धर्मशाला हो सकती है,
अतिथि-गृह हो सकता है।
लेकिन यह घर हमारा नहीं है।
हम परदेस में है। और इसीलिये
हम बेचैन हैं। और जब तक घर
न मिल जाए पुनः तब तक
बेचैनी जारी रहेगी।
घर की खोज ही धर्म है।
ओशो : बिन बाती बिन तेल

CamScanner

11:08 pm 15 KB/s
51%
तुम्हें अगर स्वर्ग भी मिले तो तुम उसे
अपने नर्क में ही जोड़ लेना चाहोगे,
और तुम करोगे भी क्या? मैंने देखा है,
तुम्हें धन भी मिल जाए तो तुम उसे
अपनी गरीबी में जोड़ लेते हो,
और
तुम करोगे भी क्या?
तुम्हें आनंद का अवसर भी मिल जाए
तो तुम उसे भी अपने दुख में जोड़ लेते हो,
तुम और करोगे भी क्या?
तुम्हें अगर बार दिन जिंदगी के और मिल जाएं
तो तुम उन्हें इसी जिंदगी में जोड़ लोगे,
और तुम करोगे भी क्या?
आदमी सत्तर साल जीता है,
सात सौ साल जीए तो
तुम सोचते हो
कोई क्रांति हो जाएगी!
बस ऐसे ही जीएगा।
आचार्य श्री रजनीश
एस धम्मो सनंतनो-(प्र-14)
अनंत छिपा है क्षण में

CamScanner

चलो माना दुनिया बहुत बुरी है मगर . . .
तुम तो अच्छे बनो, तुम्हें किसने रोका है . .??

CamScanner

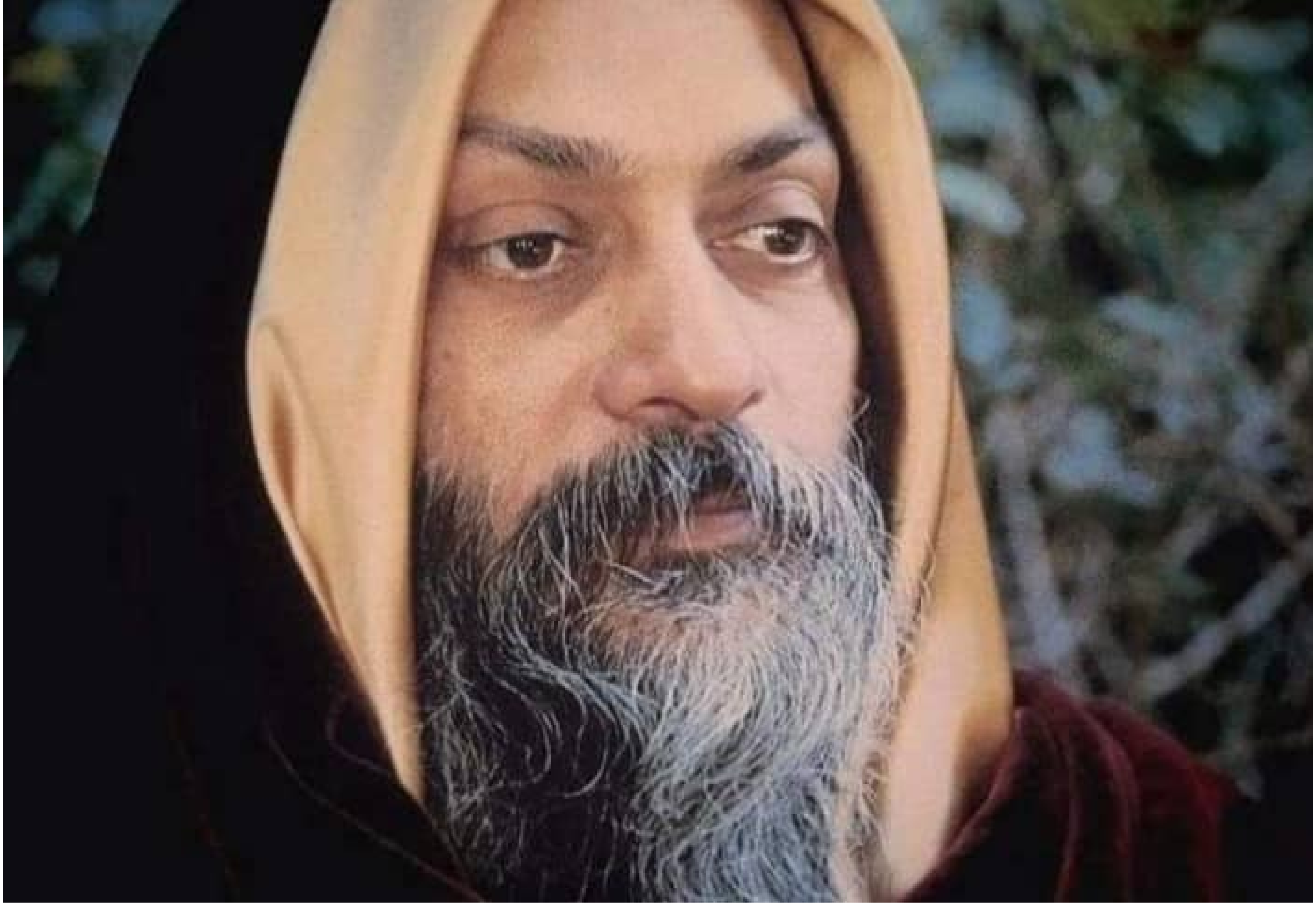

CamScanner

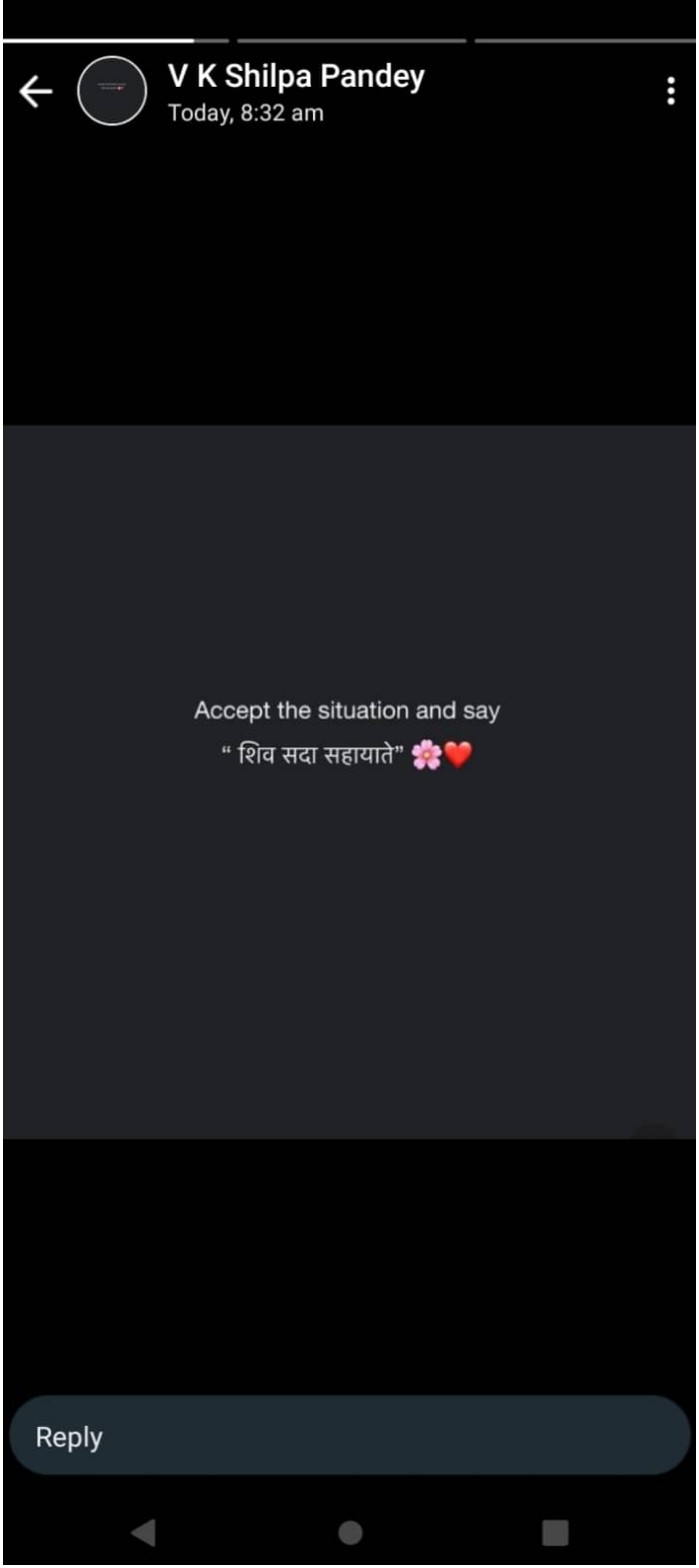
V K Shilpa Pandey
Today, 8:32 am
Accept the situation and say
“ शिव सदा सहायाते” 🌸❤️
Reply

CamScanner

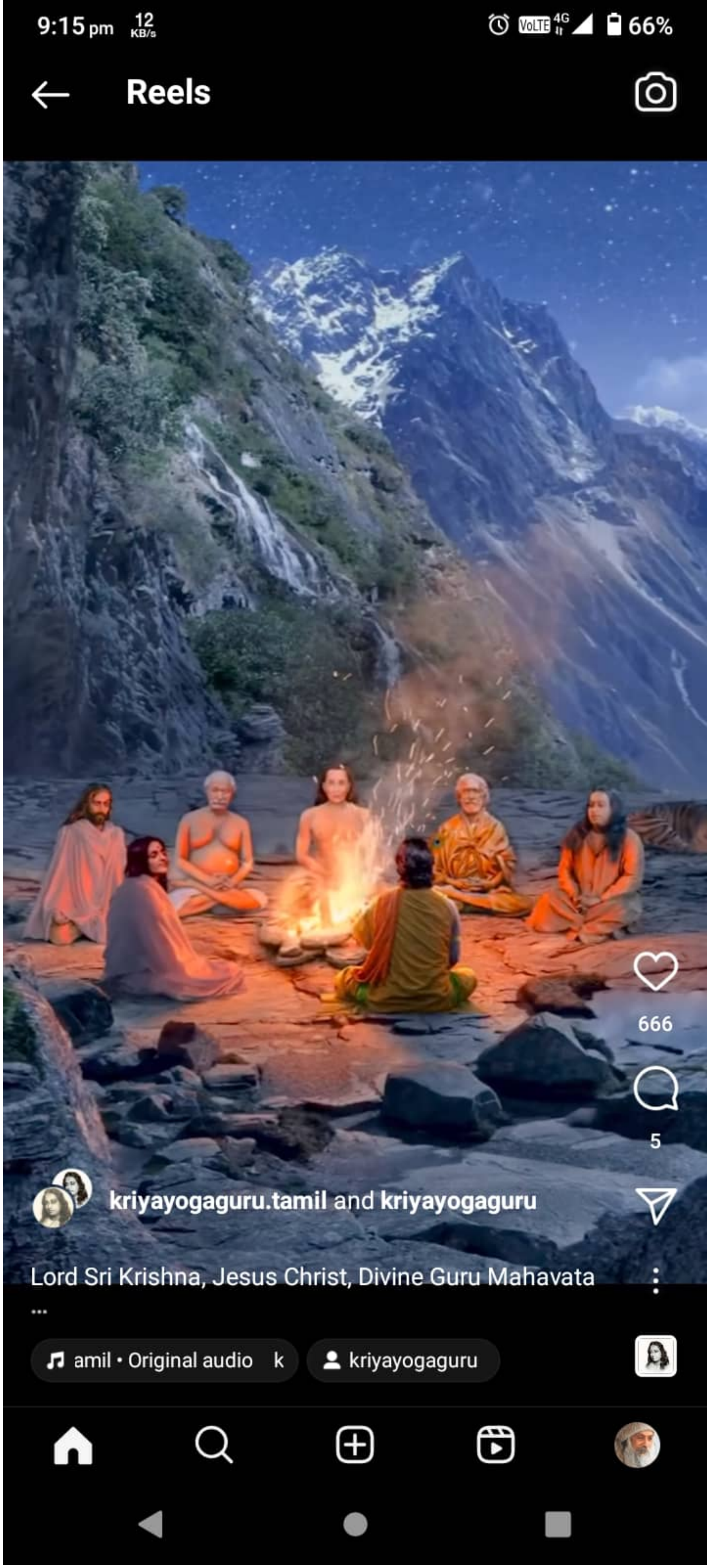
9:15 pm
12 KB/s
66%
Reels
666
5
kriyayogaguru.tamil and kriyayogaguru
Lord Sri Krishna, Jesus Christ, Divine Guru Mahavata
...
amil • Original audio k
kriyayogaguru

CamScanner

12:57 pm 5 KB/s 86%

1,59,671 likes

bliss_square_healing_academy •
#healingenergy #spiritual #healers #balance #dynamic... more

View all 814 comments

arvind.nakum308 Very very nice 🙏🙏🙏

osho_duniya
Bibas Music • Ayaan 2.0

895 likes

osho_duniya 💌... more

View all 4 comments

Add a comment...

1 day ago

osho__quotes
Veena Priyah • Aga Naga

CamScanner

12:57 pm 0 KB/s 86%

Instagram

77 likes

osho.in.hindi Osho❤️

Add a comment...

3 hours ago

osho.vichar

Music From The World Of OSHO • Celebration

ho.vichar @osho.vichar @osho.vichar @osho.vichar @osho.vichar @osho.vicha

बिना अहंकार के क्रोध आ ही नहीं सकता।🌼

- ओशो

Liked by **oshovichar27** and **11,463 others**

osho.vichar OSHO ❤️... more

View all 24 comments

3 days ago

CamScanner

12:57 pm 0 KB/s 87%

Instagram

osho.in.hindi

हमारा इंतजाम चींटी जैसा इंतजाम है। मैं नहीं कहता, इंतजाम न करें। न लाओत्से कहता है, इंतजाम न करें। यह नहीं कहता कि वर्षा के लिए घर में दो दाने न रखें; जरूर रख लें। लेकिन जान लें भलीभांति कि हमारा सब इंतजाम चींटी जैसा इंतजाम है। और जिंदगी के विराट नियम का जो पहिया घूम रहा है, उस पर हमारा कोई वश नहीं है।

Tao Upnishad #13, OSHO

77 likes

osho.in.hindi Osho❤️

Add a comment...

3 hours ago

osho.vichar

♫ Music From The World Of OSHO • Celebration

12:55 pm 212 KB/s 87%

6 likes

gaalib.ki.shaayari Follow @gaalib.ki.shaayari... more

Add a comment...

1 hour ago

lokeshanand_paramhans

4 likes

lokeshanand_paramhans एक बार समय से पहले ही गाँव के एकमात्र विद्यालय की, पूरी छुट्टी वाली घंटी बजा दी गई। सब बच्चे बड़ी हैरानी, रा... more

Add a comment...

1 day ago • **See translation**

mindfulnessliving_with_kritika
Sponsored

CamScanner

12:55 pm 0 KB/s VoLTE 4G 87%

Instagram

vedanta.philosophy

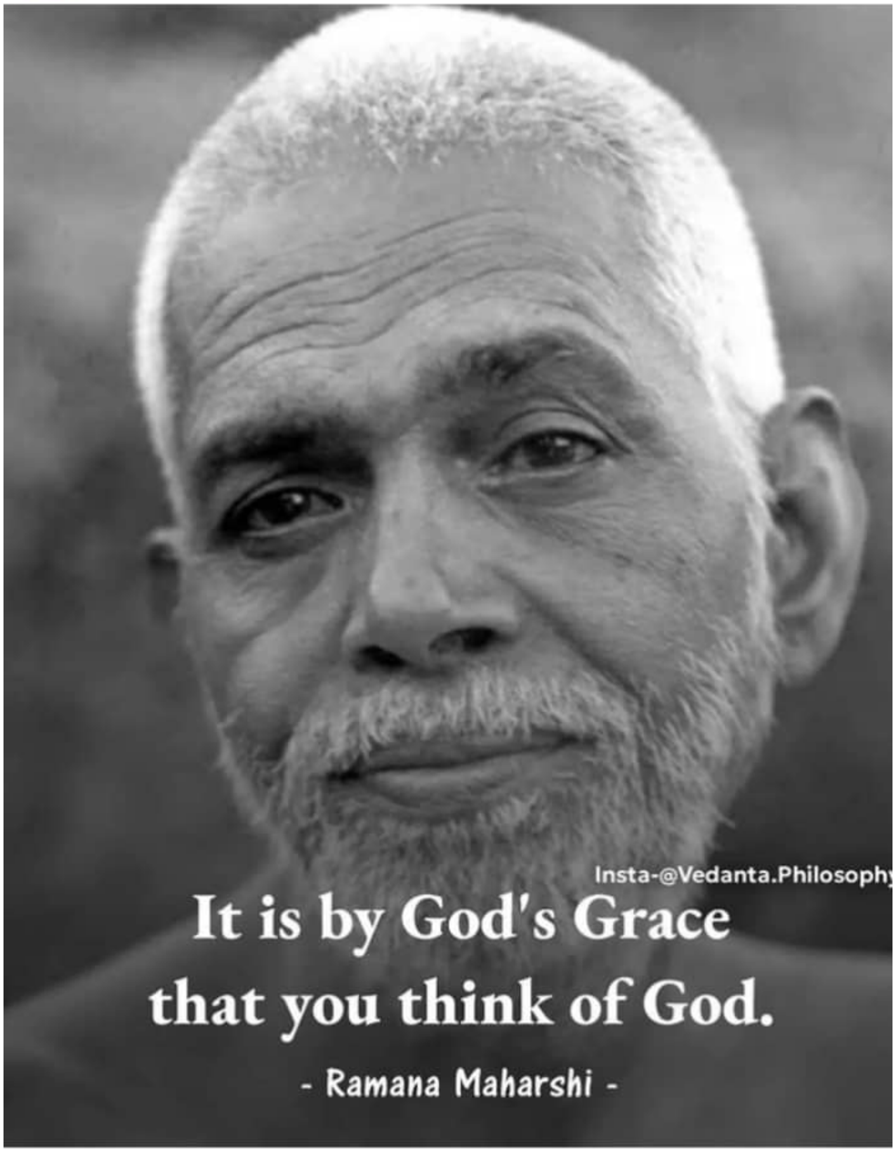

1,699 likes

vedanta.philosophy It is by God's Grace that you think of God.... more

View all 37 comments

Add a comment...

CamScanner

1:32 pm 412 KB/s 83%

Instagram

View all 337 comments

oshoraviyog
Beast Inside Beats • Rise Up

आखिर तुम पूरी जिंदगी में करते क्या हो
वस्तुएं इकट्ठी करते हो,
बड़ा मकान बना लेते हो, तिजोरी भर लेते हो
और खुद को खोते चले जाते हो

—ओशो

305 likes

oshoraviyog स्वयं की खोज स्वयं में!! 🧘

View 1 comment

Add a comment...

3 days ago • See translation

shar.ma2026

CamScanner

1:32 pm 2 KB/s 83%

trainedbyyvs Bulletproof guide to starting meditation, stick with it and changing your life.... more

View all 480 comments

thefeathersnow Thanks buddy❤️❤️

oshospirituality
Bhadohi : The Carpet City

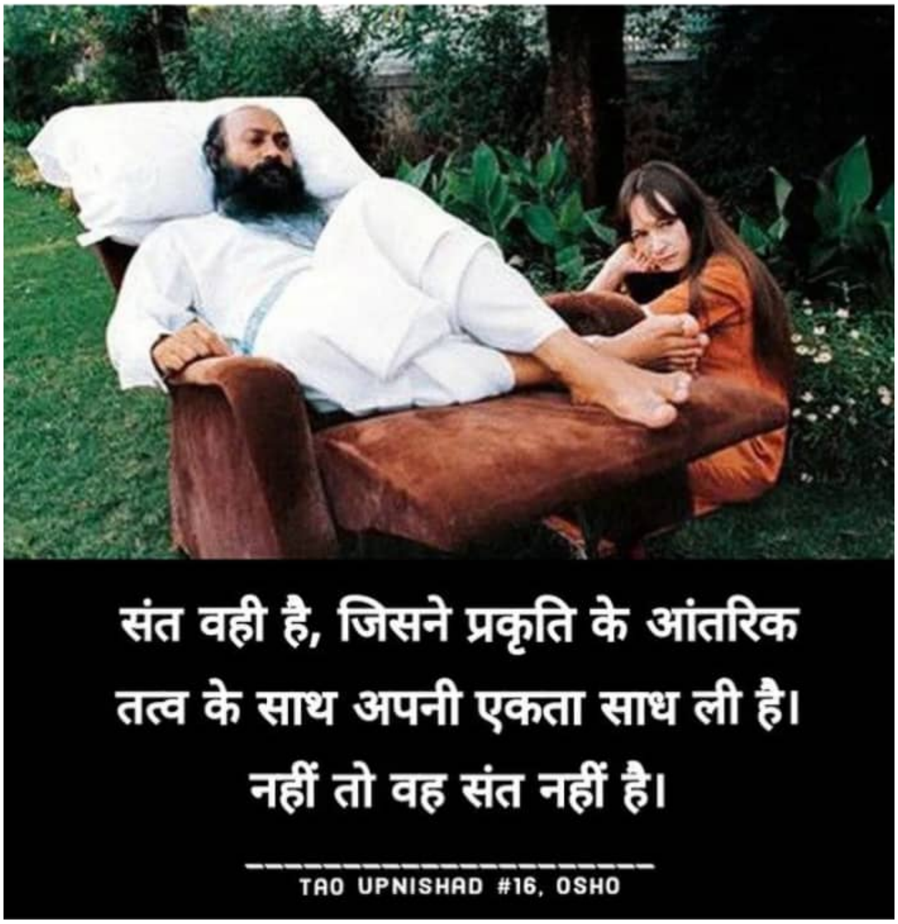

Liked by **osho_mania** and **295 others**

oshospirituality 🌹 Tao Upnishad #16, OSHO 🌹 ... more

View all 2 comments

osho_mania ❤️❤️❤️

Add a comment...

2 days ago

CamScanner

1:32 pm 0 KB/s 83%

Instagram

View 1 comment

Add a comment...

17 hours ago

smiling_buddha_
चित्रकूट धाम

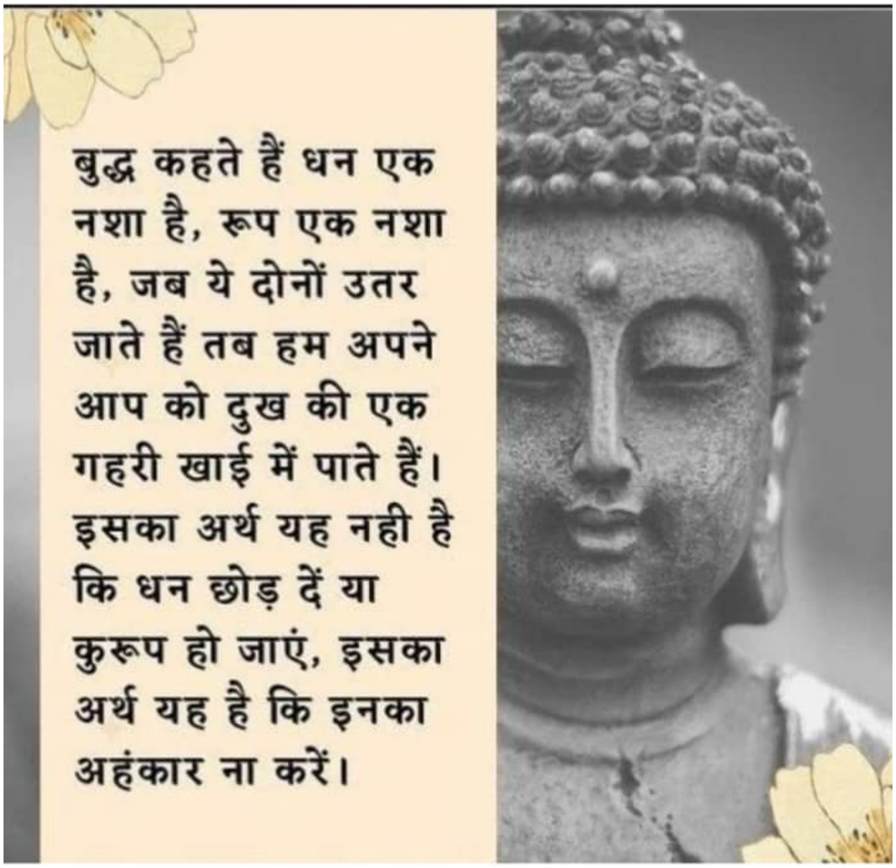

295 likes

smiling_buddha_ Smiling_Buddha ❤️❤️❤️
.@smiling_buddha_... more

View all 2 comments

Add a comment...

3 days ago • **See translation**

trainedbyvvs

CamScanner

जो जिससे दोस्ती करेगा वो
वैसा ही हो जाता है।
तुमने देखा रुपए पैसे का
दीवाना धीरे धीरे रुपए पैसे
जैसा ही हो जाता है

CamScanner

1:23 pm 295 KB/s 85%

Instagram

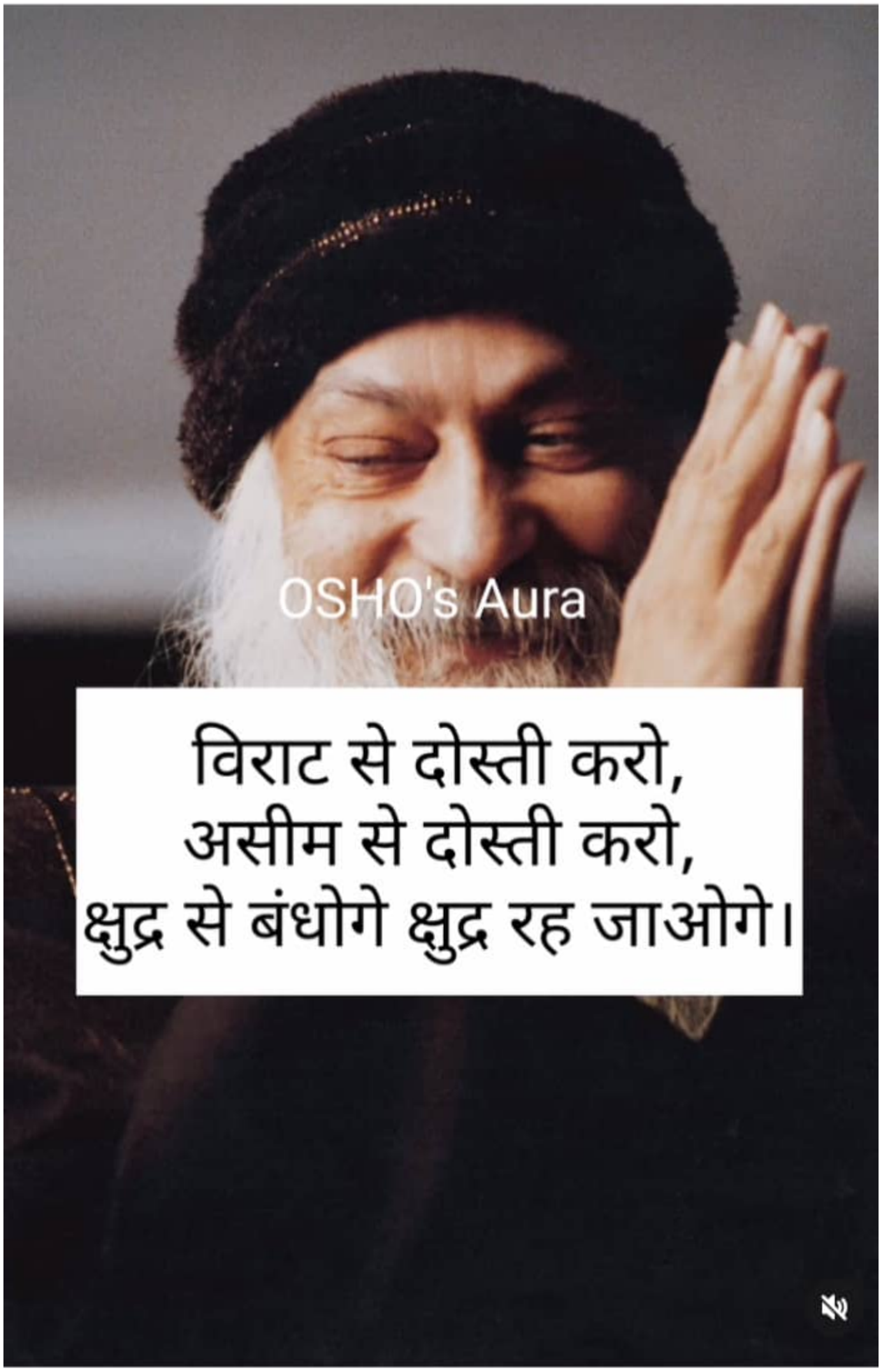

1,005 likes

oshosaura — ओशो 🪷... more

View all 3 comments

CamScanner

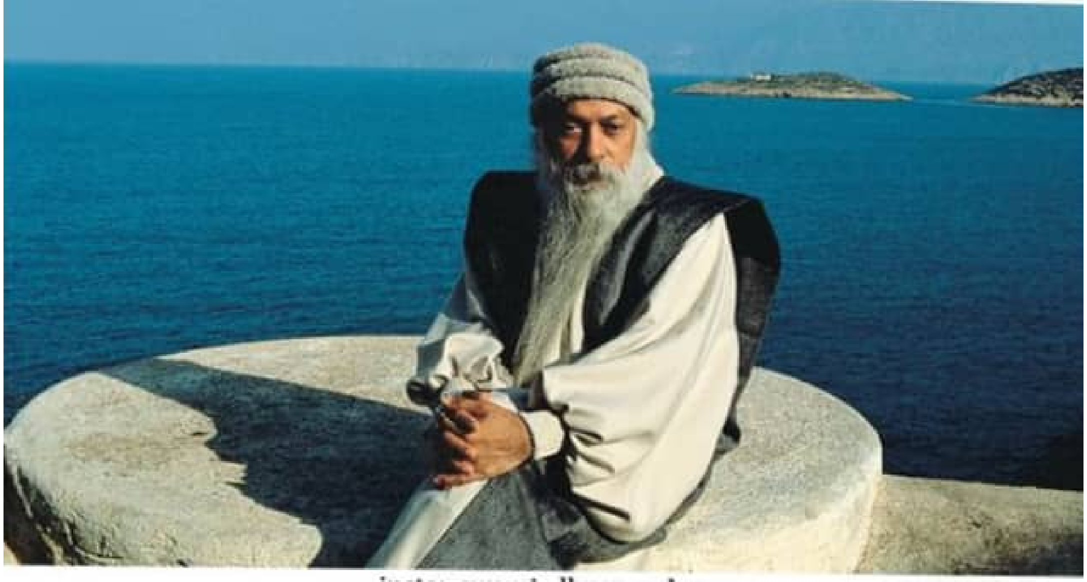

insta:- swami_dhyan_rohan

ख्याल रखना जो जहां है जैसा है अगर वही सुखी नही है फिर कही भी सुखी नही हो सकता!!

~ आचार्य रजनीश

CamScanner

2:36 pm 0 KB/s 76%

Instagram

View all 4 comments

2 days ago • See translation

oshoraviyog
Beast Inside Beats • Rise Up

Liked by **only_osho_1968** and **261 others**

oshoraviyog स्वयं की खोज स्वयं में!! 🧘

View all 2 comments

Add a comment...

2 days ago • **See translation**

Suggested businesses • See all

CamScanner

2:30 pm 0 KB/s 77%

Instagram

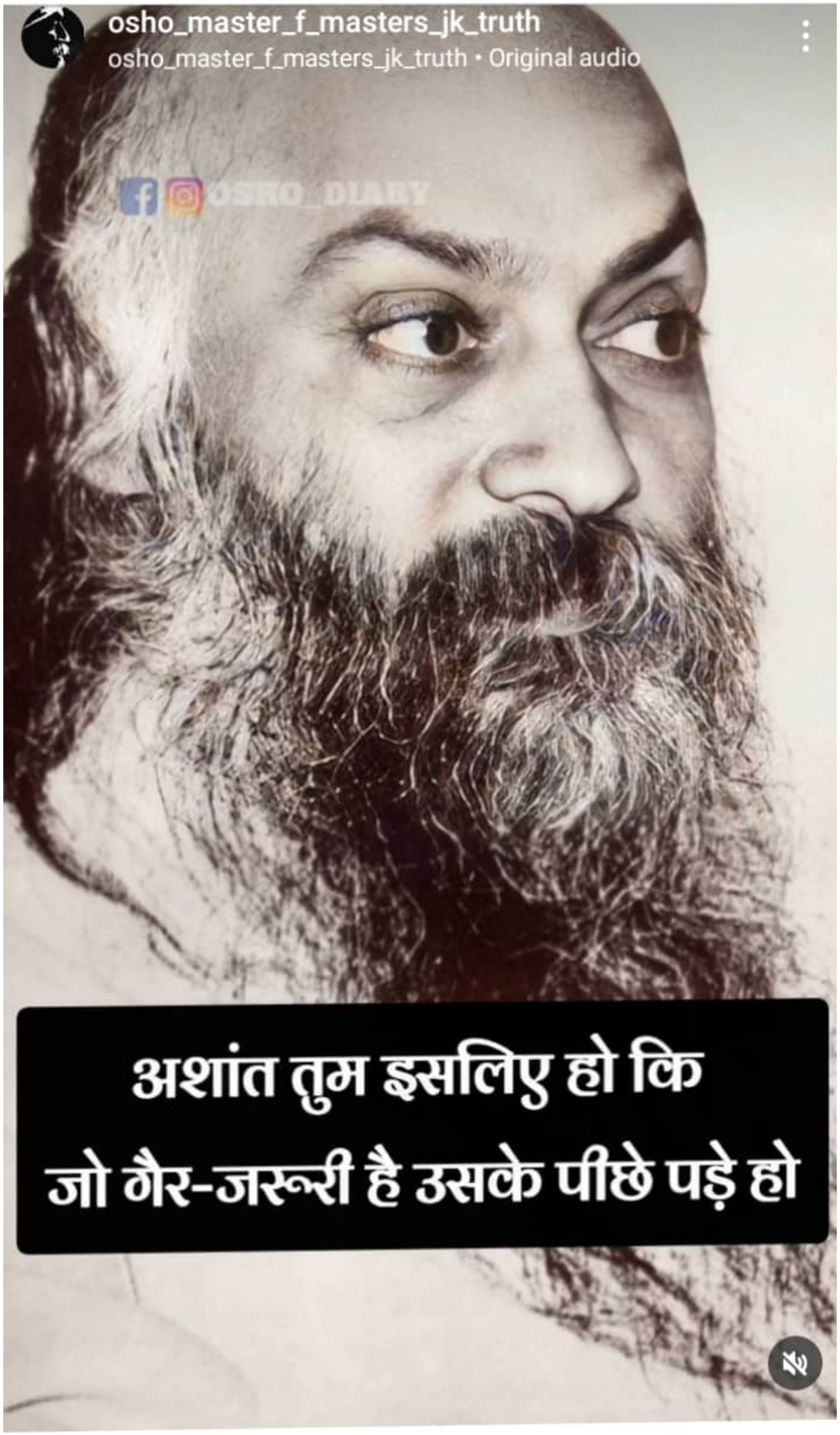

33 likes

CamScanner

4:13 pm 0 KB/s 63%

अहोभाव
39m ·

अहोभाव

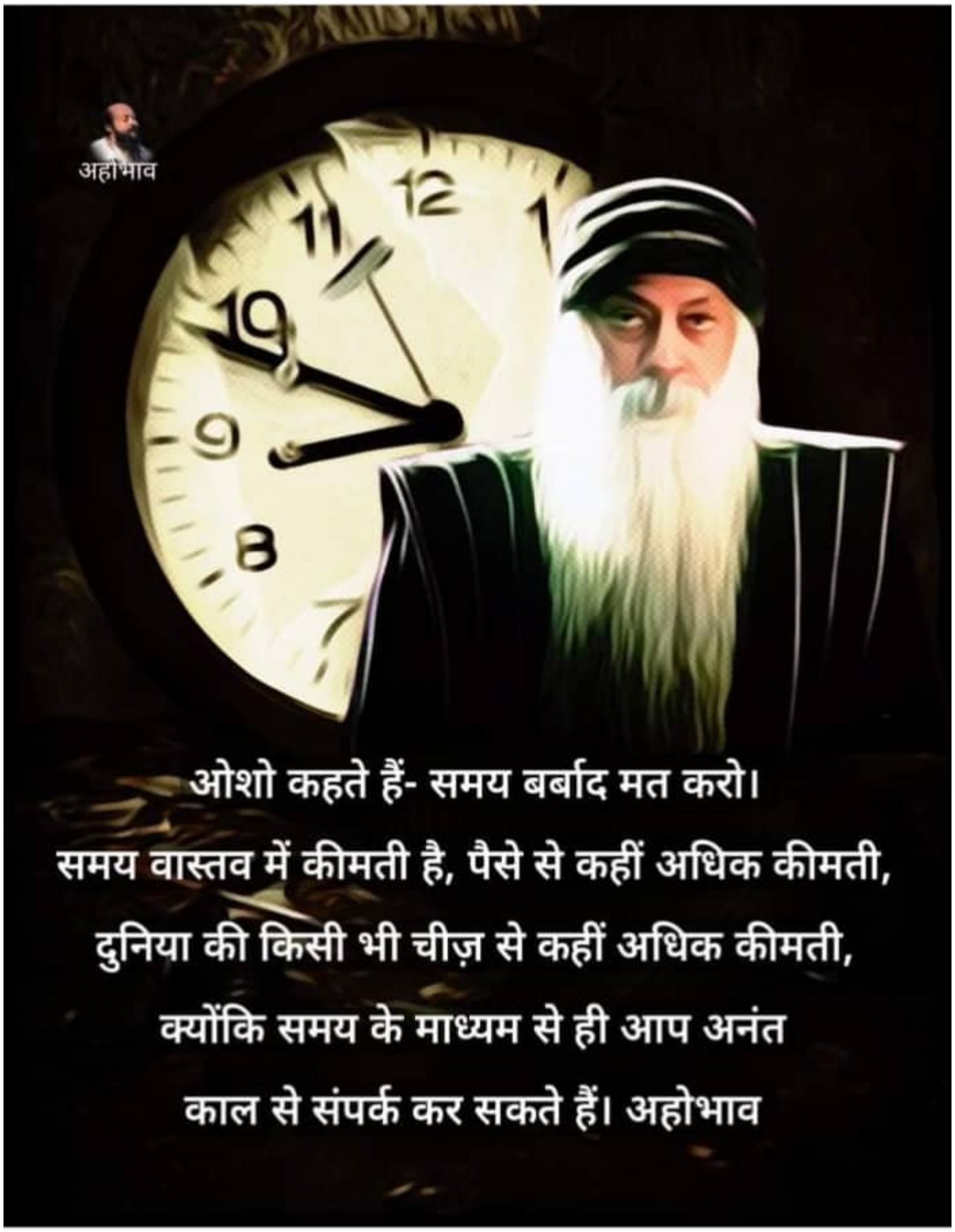

16

Like Send Share

Dlape Bauer
Sponsored ·

🚀Potential 200% Growth in Just Three Da... See more

CamScanner

5:35 pm 0 KB/s VoWiFi 53%

Instagram

#like #mahadev #kashivishwanathtemple #instalike... more

View all 702 comments

6 February

satya_gyan_vichar

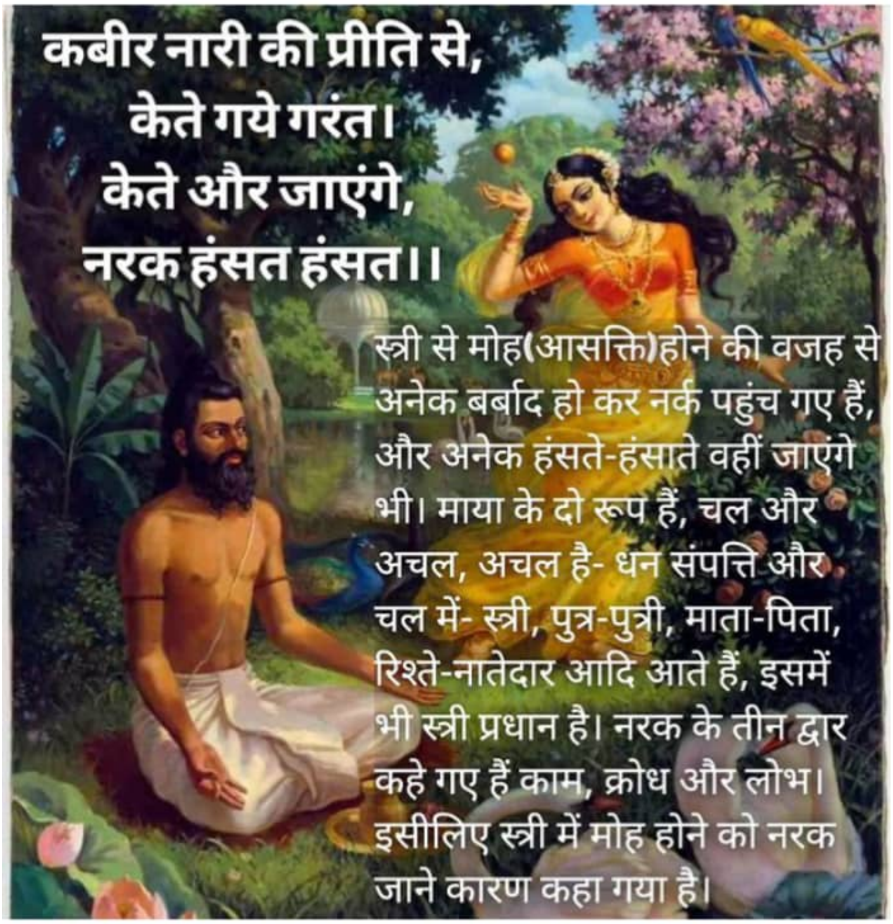

Liked by **ahobhav_** and **372 others**

View all 8 comments

Add a comment...

4 days ago

Recent stories ▶ **Watch all**

CamScanner

CamScanner

मैं तुमसे कहना चाहता हूं, स्मरण रखना:
पाखंड इस जगत में सब से बड़ी दुर्गति है।
उससे और ज्यादा नीचे गिरने का
कोई उपाय नहीं है।
अगर हंस हो सको तो अच्छा—
बाहर-भीतर एक शुभ्र रंग।
अगर हंस न हो सको तो कम से कम
कौआ बेहतर बाहर-भीतर एक रंग,
कम से कम एक बात में तो हंस जैसा है;
यद्यपि रंग काला है,
मगर बाहर भीतर की एकता तो है।
मगर **बगुला** भगत मत होना।
वह सबसे बदतर अवस्था है।

अमी झरत बिगसत कंवल, ओशो

CS CamScanner

5:07 pm 2 KB/s VoLTE 4G 46%

(श्रद्धांजलि गीत)

मन प्रवाहित चेतना के आधार हो
गुरुवर आप धर्म अवतार हो।

धर्म अध्यात्म तेज संवाहित सरल।
योग निष्ठित नियम सामर्थ्य बल।
नयनों में नेह सबके लिए।
भेद सब आपने विस्मृत किए।

आपके ही नाम से भव पार हो
गुरुवर आप धर्म अवतार हो।

महावीर पथ नित कर्मठ चले।
ब्रह्म विद्या योग विद्या साथ ले।
मनस की सामर्थ्य का कर निर्वहन।
उच्च सद्गुण वृतियों का संचरण।

आत्मबल के शुद्धतम विस्तार हो
गुरुवर आप धर्म अवतार हो।

आज संलेखना में आप स्थित हो गए।
ब्रह्ममय आप निर्गत संवाहित हो गए।
अश्रुपूरित हम सभी करते नमन।
युगयुगान्तर याद हो यह जिन गमन।

आप स्वर्ग वाणी वाग्दत्ता सार हो
गुरुवर आप धर्म अवतार हो।

आचार्य श्री विद्यासागर महाराज की निर्वाण संलेखना समाधि पर
अश्रुपूरित श्रद्धा सुमन।
सुशील शर्मा

CamScanner

5:07 pm 0 KB/s 46%

Post hidden

You won't see this post in your News Feed.

Undo

मृत्यु बोध

सुशील शर्मा · 3d ·

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज
(श्रद्धांजलि गीत)... See more

CamScanner

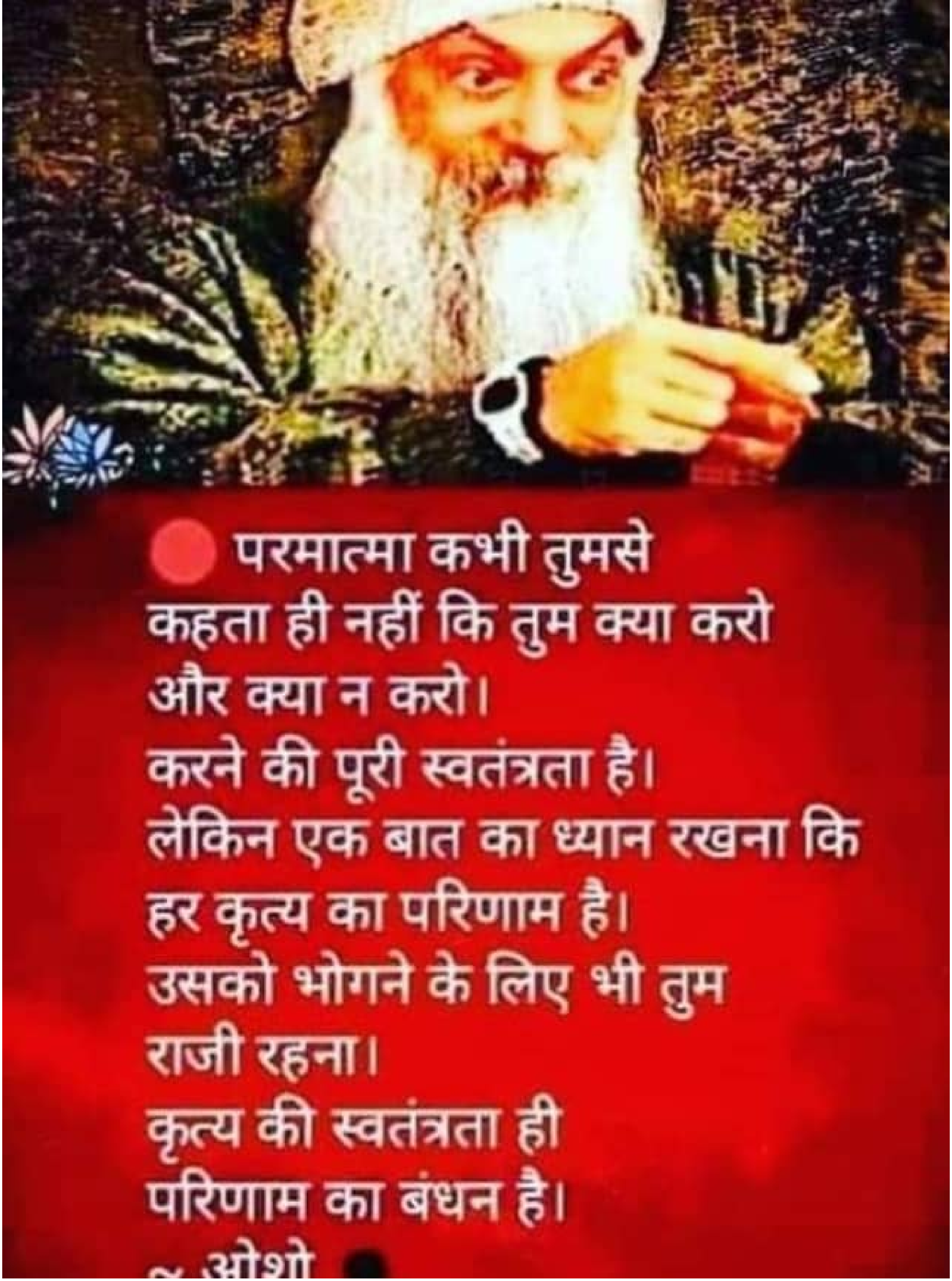

CS CamScanner

5:06 pm 0 KB/s 4G 46%

लेकिन महमूद ने अपने वजीरों से कहा कि तैयारी की जाए, उस आश्रम में जाना पड़ेगा। महमूद खुद आया। द्वार पर खड़ा हुआ। गुरु लड़के को हाथ से पकड़कर दरवाजे पर लाया और महमूद से उसने कहा कि अब तुम्हारे यह योग्य है; क्योंकि पहले तो यह तुम्हारे पास जाता था, अब तुम इसके पास आए।

बाप की दृष्टि में यह निकम्मा हो गया, किसी काम न रहा! अब यह परमात्मा की दुनिया में काम का हो गया है। अगर यह राजी हो, और तुम ले जा सको, तो तुम्हारा दरबार शोभायमान होगा। यह तुम्हारे दरबार की ज्योति हो जाएगा। कहते हैं, महमूद ने बहुत हाथ-पैर जोड़े, पर उस युवक ने कहा कि अब इन चरणों को छोड़कर कहीं जाना नहीं है। दरबार मिल गया!

ठीक पूछते हो तुम कि 'वरना आदमी थे हम भी कुछ काम के।'

जरूर किसी न किसी काम के रहे ही होओगे। संसार में सभी काम के आदमी हैं! और मेरे पास आकर तुम मेरे प्रेम में निकम्मे भी हो गए हो, वह भी सच है। लेकिन, एक ऐसा निकम्मापन भी है जहां राम में प्रवेश शुरू होता है।

और ध्यान रखना, काम के आदमी तो भिखारी हैं; भिक्षापात्र ही हाथ में रहता है, कभी भरता नहीं। राम के आदमी ही भर जाते हैं।

आचार्य रजनीश "ओशो"

*एस धम्मो सनंतनो :प्रवचन--10
जेड*

CS CamScanner

5:06 pm 0 KB/s 46%

यह आपका सूफी सलाहकार होगा। रहस्य धर्म का कोई न कोई जानने वाला दरबार में होना चाहिए, नहीं तो दरबार की शोभा नहीं है। सब हैं आपके दरबार में--बड़े कवि हैं, बड़े पंडित हैं, बड़े भाषाविद हैं, कोई सूफी नहीं। महमूद ने कहा, ठीक है। एक साल बाद लाओ।

एक साल बाद फिर लेकर उपस्थित हुआ। अब तो बाप भी थोड़ा डरने लगा कि यह तो हर बार एक साल...!
महमूद ने कहा कि ऐसा करो, तुम्हारी निष्ठा है, तुम सतत पीछे लगे हो, इसलिए मुझे भी लगता है कुछ करना जरूरी है। तुम हार नहीं गए हो, हताश नहीं हो गए हो! अब ऐसा करो--इस युवक को उसने कहा--कि तुम जाओ और किसी सूफी को अपना गुरु मान लो, और किसी सूफी को खोज लो जो तुम्हें अपना शिष्य मानने को तैयार हो। तुम्हारा गुरु मान लेना काफी नहीं है। कोई गुरु तुम्हें शिष्य भी मानने को तैयार हो। फिर सालभर बाद आ जाना।

वह युवक गया। एक गुरु के चरणों में बैठा। सालभर बाद बाप उसको लेने आया। वह गुरु के चरणों में बैठा था, उसने बाप की तरफ देखा ही नहीं।

बाप ने उसे हिलाया कि नासमझ, क्या कर रहा है? उठ, साल बीत गया, फिर दरबार चलना है। उसने बाप को कोई जवाब भी न दिया। वह अपने गुरु के पैर दबा रहा था, वह पैर ही दबाता रहा। बाप ने कहा कि व्यर्थ गया; काम से गया, निकम्मा सिद्ध हो गया।

इसीलिए हमने तुझे पहले किसी सूफी फकीर के पास नहीं भेजा था। हम सूफी पंडितों के पास भेजते रहे; यह महमूद ने कहां की झंझट बता दी कि कोई गुरु खोज, और फिर कोई गुरु जो तुझे शिष्य की तरह स्वीकार करे! तू सुनता क्यों नहीं?

क्या तू पागल हो गया है, कि बहरा हो गया है? मगर वह युवक चुप ही रहा। साल बीत गया, बाप दुखी होकर घर लौट गया। महमूद ने पुछवाया कि लड़का आया क्यों नहीं? बाप ने कहा कि व्यर्थ हो गया, निकम्मा साबित हो गया। क्षमा करें, मेरी भूल थी, मैंने पत्थर को हीरा समझा।

CamScanner

5:06 pm 0 KB/s VoLTE 4G 46%

🛑एक सूफी कथा है🛑

गजनी के महमूद के दरबार में एक आदमी आया।
वह अपने बेटे को साथ लाया था। उसने बेटे को बड़े ढंग से बड़ा किया था, बड़े संस्कारों में ढाला था, बड़ा परिष्कृत किया था। सदा से उसकी यही आकांक्षा थी कि उसका एक बेटा कम से कम महमूद के दरबार में हिस्सा हो जाए। उसने उसके लिए ही उसे बड़ी मेहनत से तैयार किया था। उसे पक्का भरोसा था, क्योंकि उसने सभी परीक्षाएं भी उत्तीर्ण कर ली थीं और जहां-जहां, जहां-जहां उसे पढ़ने-लिखने भेजा था, गुरुओं ने बड़े प्रमाण-पत्र दिए थे और उसकी बड़ी प्रशंसा की थी। वह बड़ा बुद्धिमान युवक था। सुंदर था, दरबार के योग्य था।

आशा थी बाप को कि कभी न कभी वह बड़ा वजीर भी हो जाएगा।

महमूद से आकर उसने कहा कि मेरे पांच बेटों में यह सबसे ज्यादा सुंदर, सबसे ज्यादा स्वस्थ, सबसे ज्यादा बुद्धिमान है। यह आपके दरबार में शोभा पा सकता है, आप इसे एक मौका दें। और जो भी जाना जा सकता है, इसने जान लिया। महमूद ने सिर भी ऊपर न उठाया। उसने कहा, एक साल बाद लाओ।

सोचा बाप ने, शायद अभी कुछ कमी है, क्योंकि सम्राट ने चेहरा भी उठाकर न देखा। उसे एक साल के लिए और अध्ययन के लिए भेज दिया। सालभर के बाद जब वह और अध्ययन करके लौट आया--अब अध्ययन को भी कुछ न बचा, वह आखिरी डिग्री ले आया--फिर लेकर पहुंचा।

महमूद ने उसकी तरफ देखा; लेकिन कहा, ठीक है, लेकिन इसकी क्या विशेषता है? किसलिए तुम चाहते हो कि यह दरबार में रहे? तो उसके बाप ने कहा, इसे मैंने सूफियों के सत्संग में बड़ा किया है। सूफी-मत के संबंध में जितना बड़ा अब यह जानकार है, दूसरा खोजना मुश्किल है।

यह आपका सूफी सलाहकार होगा। रहस्य धर्म का कोई न कोई जानने वाला दरबार में होना चाहिए, नहीं तो दरबार की शोभा नहीं है। सब हैं

CamScanner

जिसने तुम्हारा अपमान किया है,
वह उसकी मौज है। उसे जो ठीक लगा,
उसने किया। जिसने तुम्हारा सम्मान
किया है, उसकी मौज। उसे जो
ठीक लगा उसने किया।
जो उसके पास था, उसने दिया।
तुम अपमान और सम्मान दोनों को
एक ही धन्यवाद के भाव से स्वीकार
कर लेना, दोनों का आभार प्रगट कर
देना और आंख मूंदकर भीतर
डुबकी लगा लेना। "ओशो"

CS CamScanner

तुम्हारे भीतर मस्तिष्क
और हृदय का मेल होना चाहिए।
मस्तिष्क–पुरुष; हृदय–स्त्री।
तुम्हारे भीतर अनुभूति और विचार का
मेल होना चाहिए।
तर्क और भाव का मेल होना चाहिए।
तुम्हारे भीतर इनका विवाद
चलता रहे तो तनाव होगा।
तुम दो खंडों में बंटे रहोगे।
और जब तक तुम दो खंडों में बंटे रहोगे,
तब तक तुम्हारे भीतर एक तरह की
कलह चलती रहेगी,
चैन नहीं होगी।

* अजहूं चेत गंवार प्रवचन-२९, ओशो *

CamScanner

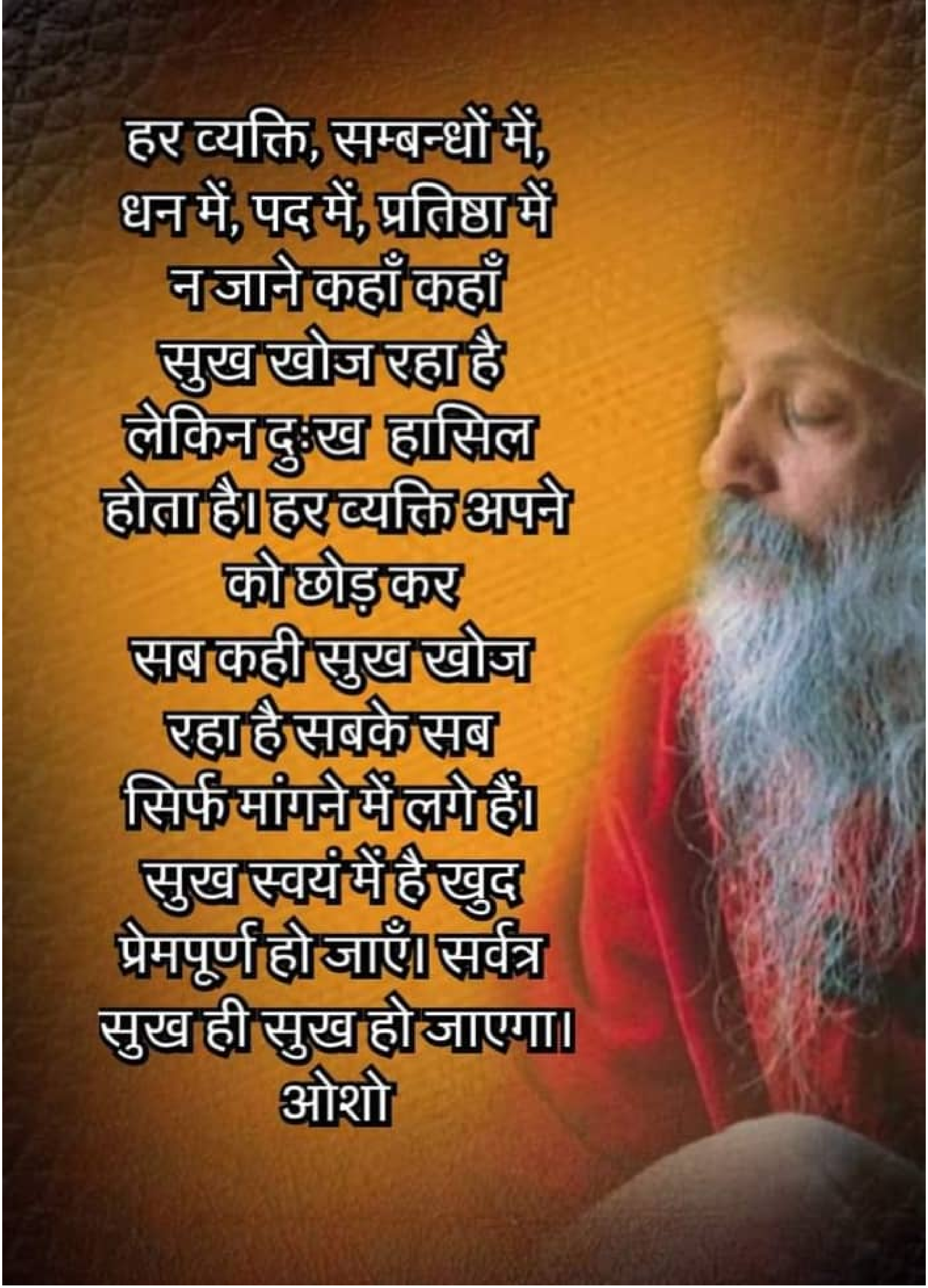

CS CamScanner

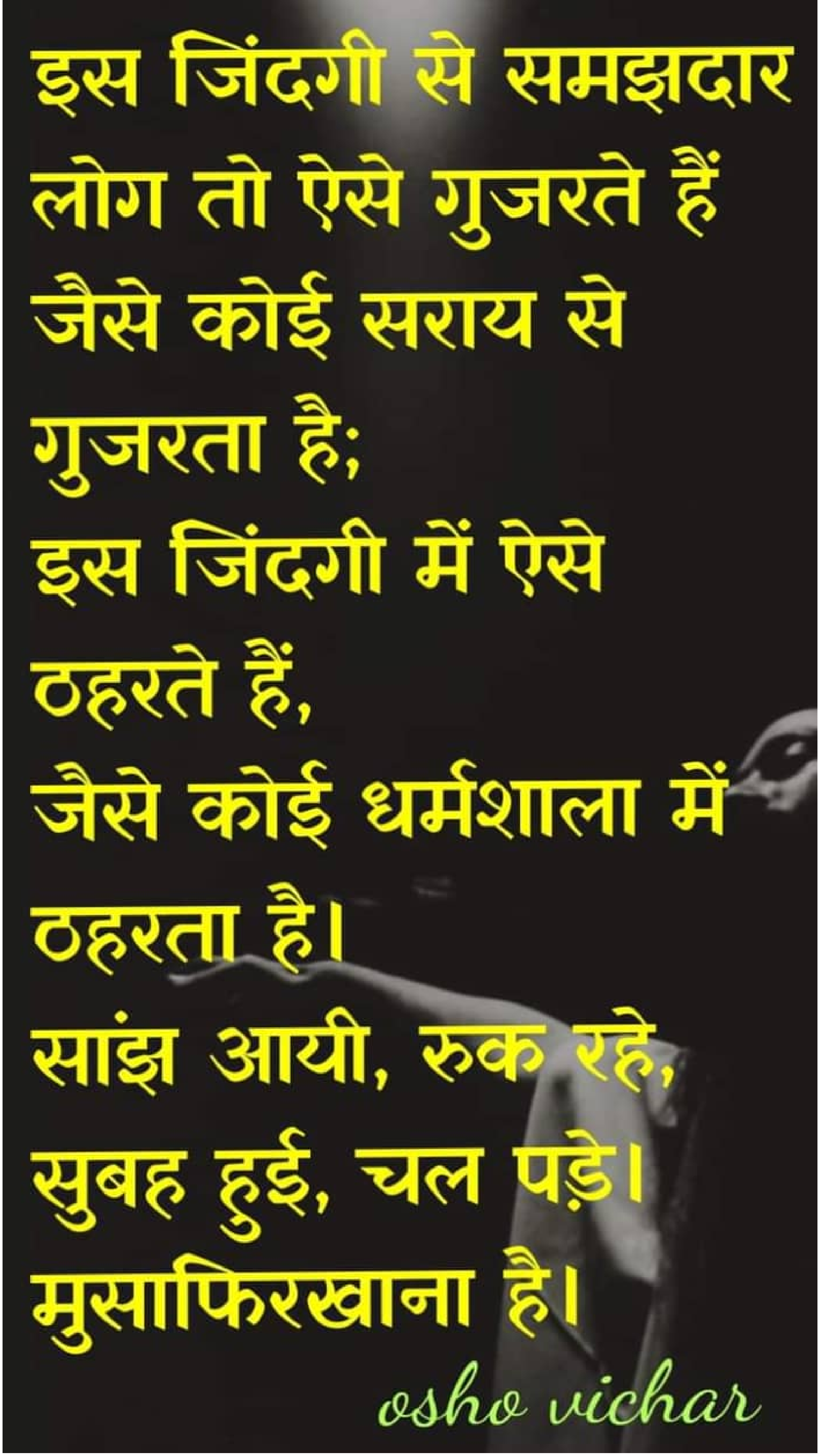
इस जिंदगी से समझदार
लोग तो ऐसे गुजरते हैं
जैसे कोई सराय से
गुजरता है;
इस जिंदगी में ऐसे
ठहरते हैं,
जैसे कोई धर्मशाला में
ठहरता है।
सांझ आयी, रुक रहे,
सुबह हुई, चल पड़े।
मुसाफिरखाना है।
osho vichar

CamScanner

यह अपूर्व सूत्र है........
कि अगर तुम निश्चिंत होना चाहो,
तो छोटा-सा काम बस;
जरा-सी तरकीब है;
जरा-सी कला है --
और कला यह है: ......
अपने को हटा लो
और परमात्मा को करने दे जो कराए।
कराए तो ठीक, न कराए तो ठीक।
पहुंचाए कहीं तो ठीक, न पहुंचाए तो ठीक।
तुम सारी चिंता उसपर छोड़ दो।
जिस पर इतना विराट जीवन ठहरा हुआ है,
चांद तारे चलते हैं,
ऋतुएं घुमती हैं,
सूरज निकलता डूबता है,
इतना विराट जीवन का सागर,
इतनी लहरों को जो संभालता है,
तुम्हारी भी छोटी लहर संभाल लेगा।
तुम अपनी लहर को अपना अहंकार मत बनाओ।
तुम अपनी लहर को उसके हाथ में समर्पित कर दो।

अहोभाव

ओशो- भक्ति सूत्र

CamScanner

6:50 pm 10 KB/s VoLTE 4G 30%

Create story मेरी ग़ज़ल Osho Ravi Yog सत्य

Naye bharat ke khoj

1d ·

अगर तुम गलतफहमी को टालना चाहते हो तो तुम्हें अनिवार्य रूप से मौन सीखना होगा।
अगर तुम मौन सीखते हो तो पहली चीज यह होगी कि तुम कभी किसी को गलत नहीं समझोगे।
और यह बहुत बड़ा आनंद है ! किसी को भी गलत नहीं समझना! तब तुम अच्छे श्रोता हो गए, तुम सम्यक श्रवण जानोगे।
और हर चीज तुम्हारे लिए स्पष्ट और साफ-सुथरी होगी। यह स्पष्टता तर्क से नहीं आएगी, बौद्धिकता से नहीं आएगी, विश्लेषण से नहीं आएगी -- यह स्पष्टता मौन के द्वारा आती है। अगर तुम्हारे मौन में किसी के शब्द उतरते हैं तो तुम गलत अर्थ नहीं लगाओगे क्योंकि वहां कोई दखल देने वाला नहीं है; या तो तुम समझते हो या तुम नहीं समझते, लेकिन वहां गलत समझने का कोई कारण नहीं है।

मौन सीखो!
और कम से कम अपने मित्र के साथ, अपने प्रेमी के साथ, अपने परिवार के साथ, या यहां पर, कभी-कभी मौन में बैठो। गपशप मत करते रहो, बातचीत मत करते रहो। बातचीत बंद करो, और सिर्फ बाहर ही नहीं, भीतरी बातचीत भी बंद करो। अंतराल में बने रहो। बस बैठ जाओ, कुछ नहीं करो, सिर्फ एक-दूसरे के लिए उपस्थित रहो। और जल्दी ही तुम संवाद का एक नया ढंग पा लोगे, और वही सही ढंग है!

CamScanner

તથાગત બુદ્ધ . કર્મે એ જ ધર્મ.
February 12, 2022 at 11:11 AM ·

28 बुद्धो की लिस्ट

बुद्धिजम में अवतारवाद नही है माना जाता है कि भगवान गौतम बुद्ध से पहले भी 27 बौद्ध हुए थे उनके नाम कुछ इस प्रकार है

28 बुद्धों के नाम
1) Tanhankara Buddha (तण्हन्कर बुद्ध)
2) Medhankara Buddha (मेधन्कर बुद्ध)
3) Sarankara Buddha (सरणंकर बुद्ध)
4) Dipankara Buddha (दीपंकर बुद्ध)
5) Kondanna Buddha (कोण्डिन्य बुद्ध)
6) Mangala Buddha (मङ्गल बुद्ध)
7) Sumana Buddha (सुमन बुद्ध)
8) Revata Buddha (रेवत बुद्ध)
9) Sobhita Buddha (सोभित बुद्ध)
10) Anomadassi Buddha (अनोमदस्सी बुद्ध)
11) Paduma Buddha (पदुम बुद्ध)
12) Narada Buddha (नारद बुद्ध)
13) Padumuttara Buddha (पदमुत्तर बुद्ध)
14) Sumedha Buddha (सुमेध बुद्ध)
15) Sujata Buddha (सुजात बुद्ध)
16) Piyadassi Buddha (पियदस्सी बुद्ध)
17) Atthadassi Buddha (अत्थदस्सी बुद्ध))
18) Dhammadassi Buddha (धम्मदस्सी बुद्ध)
19) Siddhattha Buddha (सिद्धत्थ बुद्ध)
20) Tissa Buddha (तिस्स बुद्ध)
21) Phussa Buddha (फुस्स बुद्ध)
22) Vipassi Buddha (विपस्सी बुद्ध)
23) Sikhi Buddha (सिखी बुद्ध)
24) Vessabhu Buddha (वेस्सभू बुद्ध)
25) Kakusandha Buddha (ककुसंध बुद्ध)
26) Konagamana Buddha (कोणागमन बुद्ध)
27) Kassapa Buddha (कस्सप बुद्ध))
28) Gotama Buddha (गोतम बुद्ध)

Copied :- गोविंद मौर्या

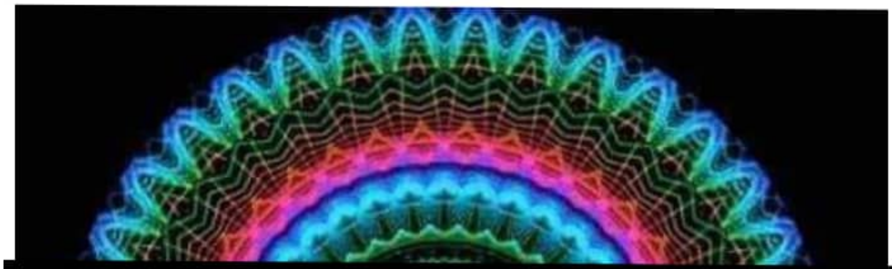

CamScanner

6:44 pm 0 KB/s 32%

Wiki Loves FOLKLORE

अपनी स्थानीय संस्कृति की फोटोग्राफी करके विकिपीडिया की मदद करें और जीतें!

उद्दक रामपुत्त

उद्दक रामपुत् गौतम बुद्ध के समाकालीन एक योगी थे।

गृहत्याग करने के बाद सत्य की खोज में घूमते हुए बोधिसत्व सिद्धार्थ गौतम विख्यात योगी **उद्दक रामपुत्त** के आश्रम में पहुँचे। उद्दक रामपुत्त रूपावचर भूमि से ऊपर उठ, अपने समकालीन योगी आलार-कालाम की भाँति, अरूपाचर भूमि की समापत्ति प्राप्त कर विहार करते थे। सिद्धार्थ गौतम ने उस योग प्रक्रिया में शीघ्र ही सिद्धि का लाभ कर लिया और उसके ऊपर की बातें जाननी चाहीं। जब उद्दक और कुछ न बता सके तब सिद्धार्थ ने उनका साथ छोड़ दिया। बुद्धत्व लाभ करने के बाद भगवान बुद्ध ने सर्वप्रथम उद्दक रामपुत्त और आलारकालाम को उपदेश देने का संकल्प किया; किंतु तब वे जीवित न थे।

CamScanner

6:42 pm 0 KB/s VoLTE 4G 33%

आलार कालाम गौतम बुद्ध के समकालीन एक दार्शनिक एवं योगी थे। वे सांख्य दर्शन के विशेषज्ञ थे। पालि ग्रन्थों के अनुसार, वे गौतम बुद्ध के प्रथम गुरु थे।

गौतम बुद्ध के समय समाज में सांख्य दर्शन का काफी प्रभाव था और इससे गौतम बुद्ध भी काफी प्रभावित थे। उनकी भी इच्छा थी कि सांख्य दर्शन का अध्ययन करें और इसलिए वे वैशाली के आश्रम में जा पहुंचे जहाँ (गोंड़ी) धर्म के (आदिवासियों) के पहले धर्म गुरु (पारी कूपार लिंगो संस्थापक) के बारहवें गोंड़ी धर्म गुरु (उत्तराधिकारी) आलार कालाम लिंगो रहते थे। आलार कालाम ने गौतमबुद्ध को न सिर्फ सांख्य-दर्शन की शिक्षा दी बल्कि उने ध्यान मार्ग के सिद्धान्त तथा समाधि मार्ग का ज्ञान भी प्रदान किया | स्वयं आलार कालाम भी ध्यानाचार्य के रूप में कौशल जनपद में प्रसिद्ध थे | छ:वर्षों तक उनके पास रहकर गौतमबुद्ध ने सांख्य-मार्ग तथा समाधि-मार्ग का उचित अध्ययन किया और इनपर दक्षता और प्रवीणता हासिल की।

पारी कूपार लिंगो गोंड धर्म के संस्थापक थे और लिंगो वाद (कोया पुणेम) दर्शन के संस्थापक थे। गोंड़ी धर्म के बारहवे धर्मगुरू आलार -कालाम ने लिंगो वाद (कोया पुणेम) के तत्वज्ञान को सांख्य-दर्शन के रूप में सबके सम्मुख प्रस्तुत किया | लिंगो दर्शन के तत्वज्ञान को आर्यों ने प्राय: नष्ट कर दिया था परन्तु यह आलार कालाम के ही अटूट प्रयासों का नतीजा है कि लिंगो तत्वज्ञान को न सिर्फ नष्ट होने से बचाया है उन्होनें तत्पश्चात उसमें एक नई जान भी फूक दी थी। कपिलमुनि ने सांख्यदर्शन (लिंगो वाद (कोया पुणेम) पर आधारित " सांख्यसूत्र " की रचना की।

सांख्य सूत्र की खासियत ये है कि इस पूरे ग्रंथ में ईश्वर या ईश्वरीय शक्ति का जिक्र कहीं नहीं होता है ; पर संपूर्णत: दर्शन शास्त्र (Philosophy) पर आधारित इस ग्रंथ को पूरे विश्व में एक महान एवं पवित्र ग्रंथ का दर्जा दिया जाता है और ये ग्रंथ पूर्णता पारी कूपार लिंगो के लिंगो वाद (कोया पुणेम) दर्शन पर आधारित है पूर्णत:।गौरतलब है कि कोयापुनेम दर्शन भारतीय दर्शन में अभी तक नजरअंदाज रहा है जो प्रकृति आधारित दर्शन है।जिसके अंतर्गत जनजातीय सामुदायिक व्यवस्था को प्राकृतिक नियमों के अनुरूप व्यवस्थित किया गया है। उदाहरण स्वरूप टोटम व्यवस्था को लिया जा सकता है। वर्तमान भारतीय दर्शन के अंतर्गत कोयापुनेम दर्शन व्यापक अनुसंधान का

CamScanner

6:38 pm 13 KB/s 34%

chat.openai.com/c/2ef6

ChatGPT 3.5

You

बुद्ध के गुरु कौन थे?

ChatGPT

गौतम बुद्ध के प्रमुख गुरु थे अलार कलाम, उद्दक रामपुत्र, अलार उपन्दक और रामपुत्र यक्कशी.

Message ChatGPT...

ChatGPT can make mistakes. Consider checking important information.

CamScanner

प्रेम तुम्हारी भूमि को नरम बनाता है,
उस नरम भूमि में प्राणों का बीज पड़ता है,
तो परमात्मा का अंकुरण होता है।
- आचार्य रजनीश

CamScanner

6:36 pm 34%

Osho Rishi Valley. Shimla

Reels · 19h

महान व्यक्तियों के गुरु नहीं होते...
#viralpage2023 #ViralreelsFacebookpage #vi... See more

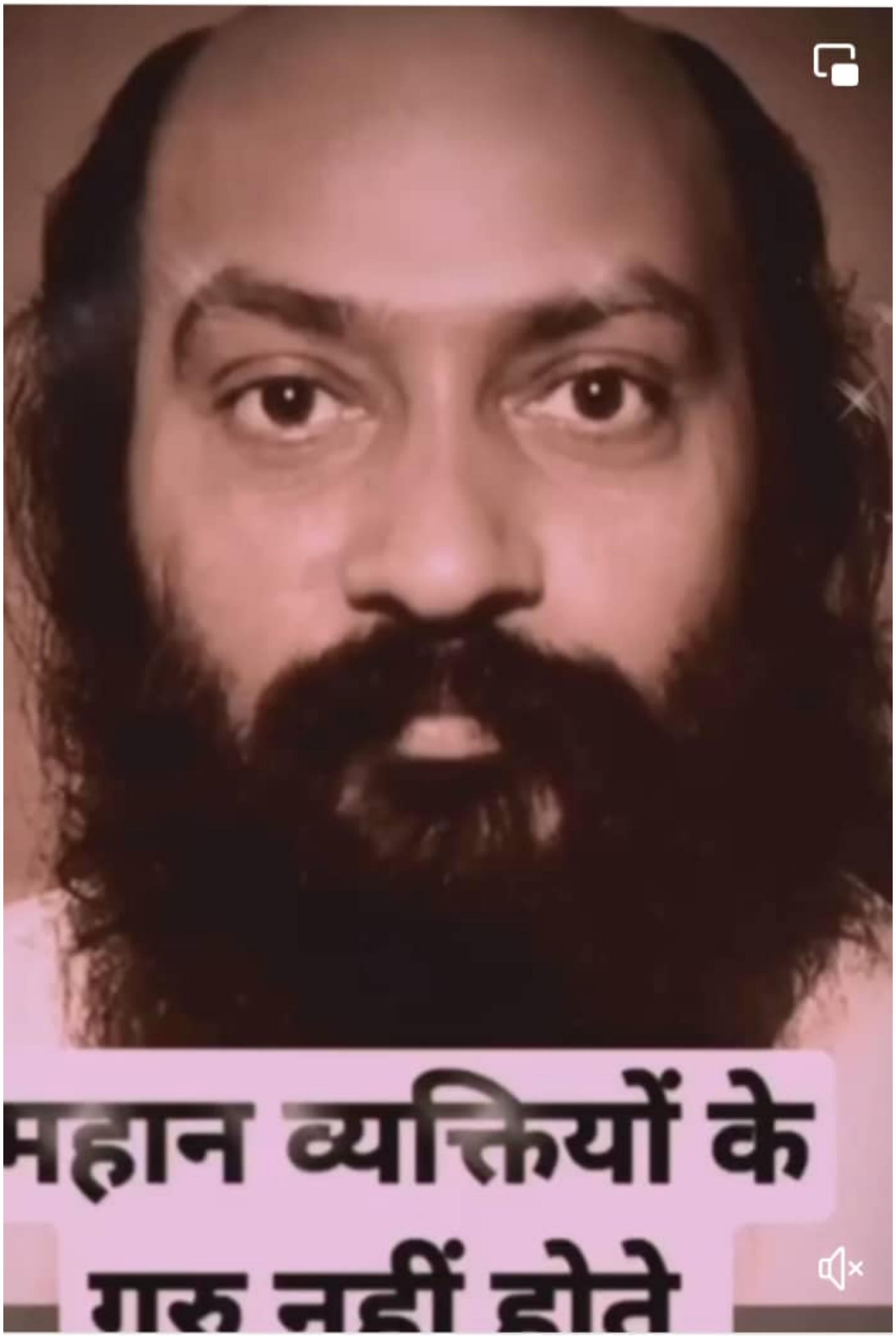

325 6 comments • 39 shares • 5.9K views

Like Comment Send Share

CamScanner

12:33 pm 1 KB/s 85%

Naye bharat ke khoj
8h ·

मांगो परमात्मा को मिलता गुरू है!

उन्नीस वर्ष की उम्र में चरणदास चले गए जंगलों में रोते, चीखते, पुकारते। सब कुछ दांव पर लगा दिया।और एक अपूर्व घटना घटती है। जब तुम परमात्मा को खोजने निकलते हो, तब गुरु मिलता है। निकलते तुम परमात्मा को खोजने, मिलता गुरु है। क्योंकि परमात्मा का सीधा साक्षात नहीं हो सकता। तुम्हारे बीच और परमात्मा के बीच भूमिका का बड़ा अंतर है।कहां तुम,कहां परमात्मा?तुम बाहर-बाहर, कहां परमात्मा भीतर-भीतर!इन दोनों के बीच कोई सेतु नहीं, कोई संबंध नहीं!

जो भी परमात्मा को खोजने गया है, उसे गुरु मिला है। वह परमात्मा तुम्हारे प्रति सदय हुआ, तुम्हारे भाग्य खुले इसकी खबर है, इसकी सूचना है।

मांगो परमात्मा को मिलता गुरू है।और गुरु मिल जाए तो समझो कि तुम्हारी प्रार्थना सुनी गई; पहुंची। अब तुम अकेले नहीं हो। सेतु फैला; दोनों किनारे जुड़े।

तुम इस किनारे हो, परमात्मा उस किनारे है; गुरु सेतु है जो दोनों किनारों को जोड़ देता है। गुरु कुछ तुम जैसा, कुछ परमात्मा जैसा। एक हाथ तुम्हारे हाथ में, एक हाथ परमात्मा के हाथ में। अब इस सहारे तुम जा सकोगे। अब यह जो झूलता सा पुल है, यह जो लक्ष्मण झूला है इससे तुम जा सकोगे।

दूसरा किनारा तो शायद अभी दिखाई भी नहीं पड़ता, दूसरा किनारा बहुत दूर है और दूसरे किनारे को देखनेवाली आंखें भी अभी तुम्हारी जन्मी नहीं। तुम्हारी आंखे बहुत धुंधली हैं इस संसार की धूल से।

यह जो राख ही राख है,यह राख सब तरफ उड़ रही है; इसने तुम्हारी आंखों को भी धूमिल किया है और तुम्हारा दर्पण भी राख से दब गया है। और जन्मों-जन्मों से राख पड़ रही है। तुम भूल ही गए कि तुम्हारे भीतर कहीं दर्पण भी है। ऐसी अवस्था में तुम पुकारोगे परमात्मा को, मिलेगा

CamScanner

12:33 pm 0 KB/s 85%

दूसरा किनारा तो शायद अभी दिखाई भी नहीं पड़ता, दूसरा किनारा बहुत दूर है और दूसरे किनारे को देखनेवाली आंखें भी अभी तुम्हारी जन्मी नहीं। तुम्हारी आंखे बहुत धुंधली हैं इस संसार की धूल से।

यह जो राख ही राख है,यह राख सब तरफ उड़ रही है; इसने तुम्हारी आंखों को भी धूमिल किया है और तुम्हारा दर्पण भी राख से दब गया है। और जन्मों-जन्मों से राख पड़ रही है। तुम भूल ही गए कि तुम्हारे भीतर कहीं दर्पण भी है। ऐसी अवस्था में तुम पुकारोगे परमात्मा को, मिलेगा गुरु। वास्तविक खोजी परमात्मा को खोजने जाता है और गुरु के चरण मिलते हैं। अगर गुरु के चरण मिल जायें, तो समझ लेना: तुम्हारी अरजी स्वीकार हो गई!तुम्हारी खबर पहुंच गई! उस किनारे से जुड़ा हुआ कोई मिल गया!
🙏🙇🌹

(नहीं सांझ नहीं भोर)
ओशो

CamScanner

4:19 pm 0 KB/s 61%

Instagram

Add a comment...

1 day ago

osholifestyle

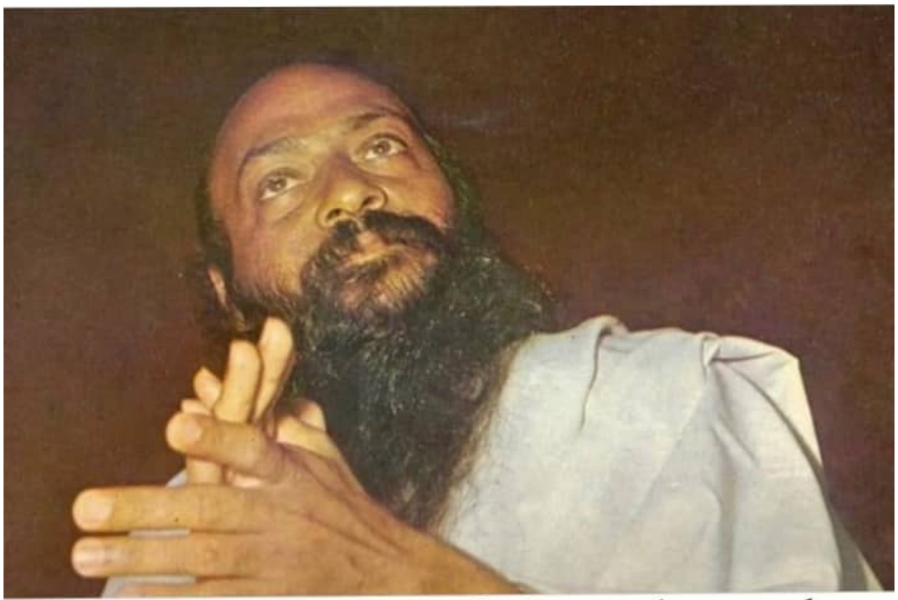

"Don't ask for attention. Live in such a way that nobody becomes aware of you.
Live in such a way that it is as if you never existed.
Move in such a way that nobody comes to hear your movement, nobody even knows that you were here.
Then only will you attain to the explosion which is spirituality
OSHO

3,110 likes

osholifestyle #osho

View all 6 comments

Add a comment...

3 days ago

CS CamScanner

4:19 pm 2 KB/s 61%

Instagram

jinda_mind_osho 😅❤️😅
View all 24 comments
8 hours ago

osho.vichar
Bibas Music • Magna

@osho.vichar @osho.vichar @osho.vichar @osho.vichar @osho.vichar @osho.vic

जो चीज तुम्हें रूलाती हैं वही तुम्हारा मोह हैं।🌼

- ओशो

11,134 likes
osho.vichar OSHO ❤️... more
View all 40 comments
Add a comment...
22 hours ago • **See translation**

CamScanner

सेक्स ने कभी किसी को संतुष्ट नहीं किया है। इससे और भी अधिक असंतोष पैदा होता है। सेक्स ने कभी किसी को तृप्ति नहीं दी यह कोई तृप्ति नहीं जानता। यौन संबंध तभी बनाएं जब आपके बीच प्यार भरा रिश्ता हो। और प्रेम एक बड़ा केंद्र है, एक उच्चतर केंद्र है। एक बार जब सेक्स प्रेम से जुड़ जाता है, तो यह ऊपर की ओर बढ़ने लगता है। ओशो अहोभाव

3

Send

Rajneesh Gyan

ओशो नमन प्रेम.. ❤️❤️🌹... more

Add a comment...

CamScanner

5:44 pm
Reels
@EKKADAMSAFALTAKIORR
गुर्जिएफ ने अपनी बेटी से कहा था"
कभी किसी प्रसिद्ध व्यक्ति के साथ,फोटो मत खिचवाना।
कभी किसी प्रसिद्ध व्यक्ति से,प्रभावित मत होना।
क्योंकि वो कौन है तुम्हें प्रभावित करने वाला?
आपके मन का सबसे कमजोर हिस्सा दूसरों से प्रभावित
होता है और उस कमजोर हिस्से के जिवित रहते
आप कुछ बेहतरीन नहीं कर सकते.!
एक कदम सफलता की ओर
6.7K
21
800
Send
abhayverma6397
Add a comment...

CamScanner

7:58 pm 14 KB/s 27%

42 likes

oshopsyche आचार्य श्री रजनीश कुमार /ओशो ❤️

.... more

2 days ago • See translation

_osho_status_

Shomu Seal, Paras Nath • Saagar Kinare (Unwind Ins...

8 likes

_osho_status_ ❤️❤️❤️

Add a comment...

2 days ago

CamScanner

7:57 pm 14 KB/s 27%

Instagram

2 days ago • See translation

osho_meditation
Chandigarh - The City Beautiful

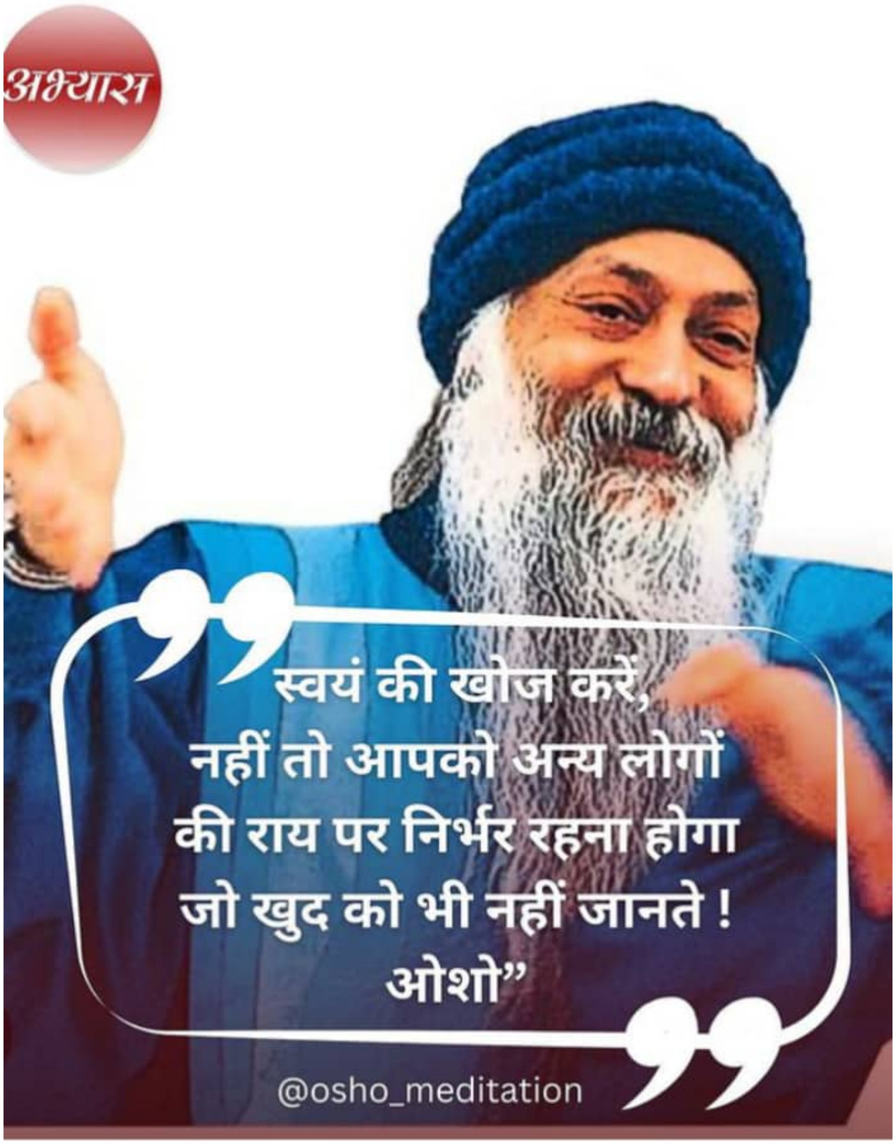

Liked by **osho_hindi_official** and **3,343 others**

View all 8 comments

Add a comment...

CamScanner

insta:- swami_dhyan_rohan

एक दिन आप पीछे मुड़कर देखेंगे और महसूस करेंगे कि..आप उन चीजों के बारे में बहुत ज्यादा चिंतित थे, जो वास्तव में मायने रखती ही नहीं थीं...!!

~ आचार्य रजनीश

CamScanner

7:56 pm 14 KB/s 28%

2,868 likes

rekhta_foundation Remembering Josh Malihabadi on his death anniversary... more

View all 6 comments

3 hours ago

only_osho_1968

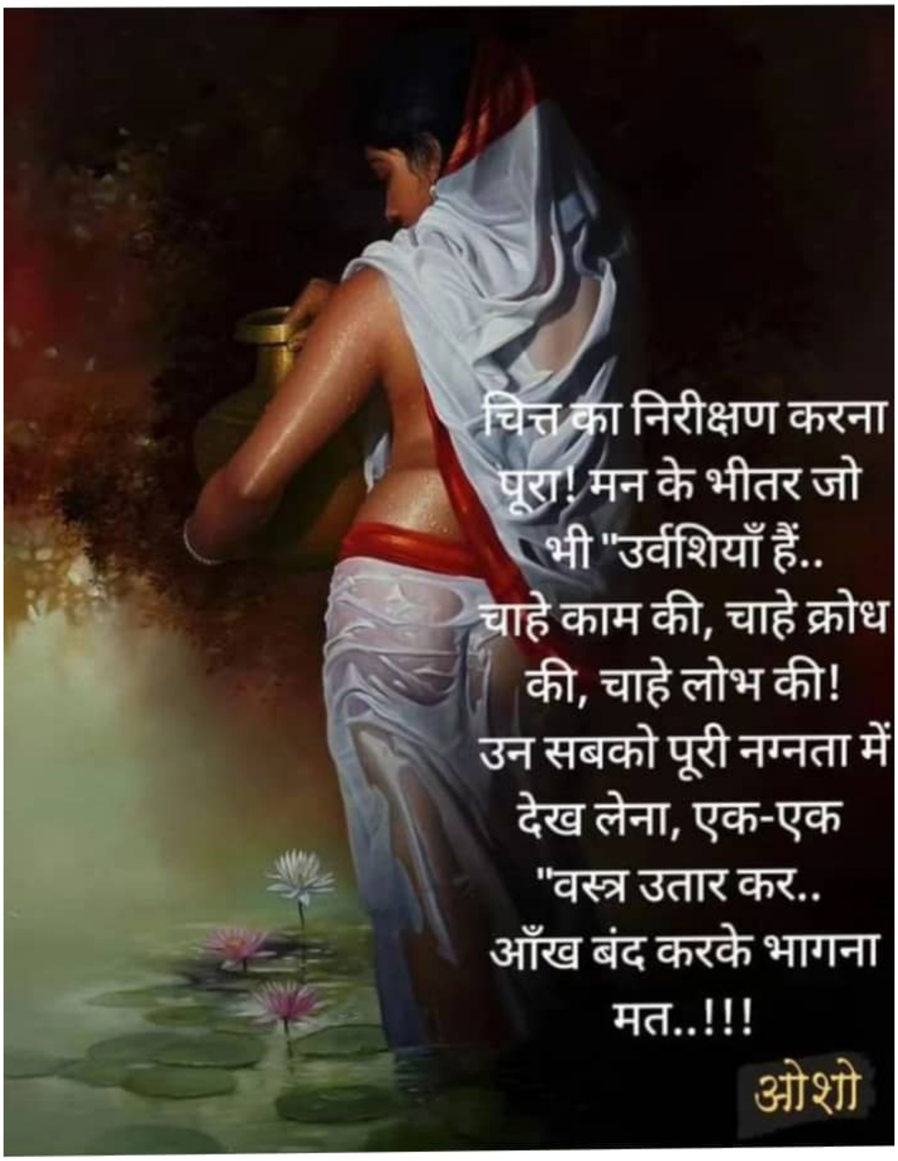

119 likes

2 days ago

CamScanner

7:55 pm 14 KB/s 28%

करना मत भूलना 👉🧘 Follow👉@swami_dhyan_rohan... more

View all 3 comments

Add a comment...

2 hours ago · **See translation**

j_k_study_group

When one loses the deep intimate relationship with nature, then temples, mosques and churches become important.

J Krishnamurti, Beginnings Of Learning

Liked by **vedanta.philosophy** and **737 others**

View all 2 comments

Add a comment...

2 days ago

milinkaradisic

CamScanner

insta:- swami_dhyan_rohan

असली बात श्रद्धा का पैदा होना है, जिस
गुरु में भी रुचि लगे पूरे डूब जाओ
तो तुम पहुंच जाओगे।

CamScanner

सत्य तो प्रत्येक की निजी खोज है।
कोई दूसरा किसी को सत्य नहीं दे सकता।
मैं भी नहीं दे सकता हूँ,
कोई दूसरा भी नहीं दे सकता है।
सत्य दिया नहीं जा सकता,
पाया ज़रूर जा सकता है।

– ओशो ।

CamScanner

10:53 pm 305 KB/s
39%
बच्चे को देखो; उसकी आँखों में देखो।
किसी भी बड़े व्यक्ति की आँख से उसकी
ाँख ज्यादा बुद्ध जैसी है।उसके बैठने का
चलने का ढंग, उसका सौन्दर्य, उसका
उसका क्षण-क्षण जीना, उसका क्रोध तक
ब कुछ कितना सुन्दर है ! वह इतना समग्र
।और जब भी कोई चीज समग्र होती है,
वह सुन्दर होती है। तंत्र-सूत्र # 3 osho
Give
22
4
OSHO Acharya Rajneesh Real Mystic
ओशो ध्यान नमन ... more
uddha Sacred Flute · B
Add a comment...

CamScanner

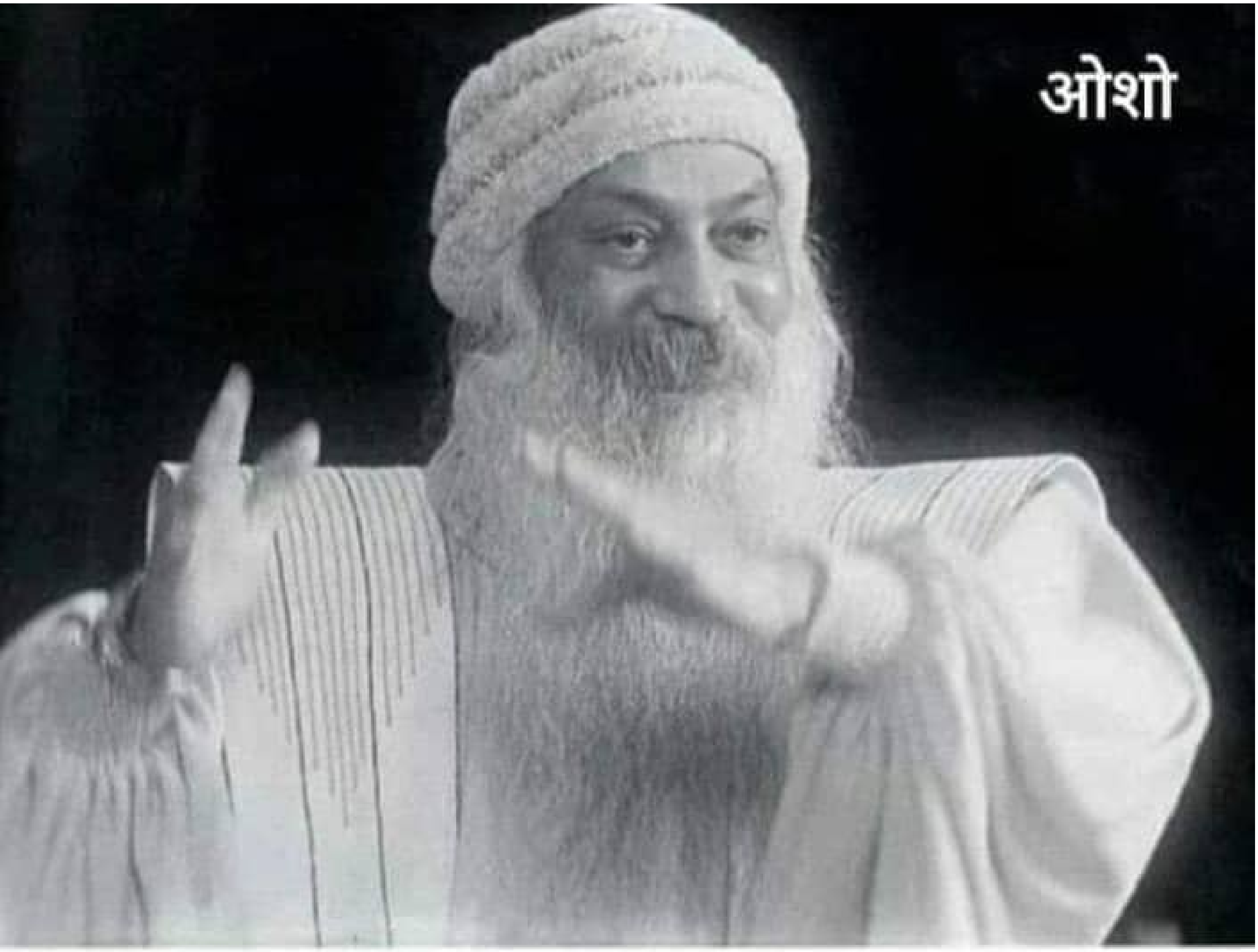

एक बार भी कोई पूर्ण हृदय से कह पाए
" जो तेरी मर्ज़ी "
उसके जीवन से दुःख विदा हो जाता है।
मेरी मर्ज़ी में चिंता है, भय है।
उसकी मर्ज़ी शांति है, आनंद है।

CamScanner

10:52 pm 72 KB/s 39%

Osho Osho

Reels · 3d ·

#Osho #love #oshoosho #india #oshobooks #oshohindi z

Vipul + 224 4 comments • 44 shares • 3.3K views

Like Comment Send Share

CamScanner

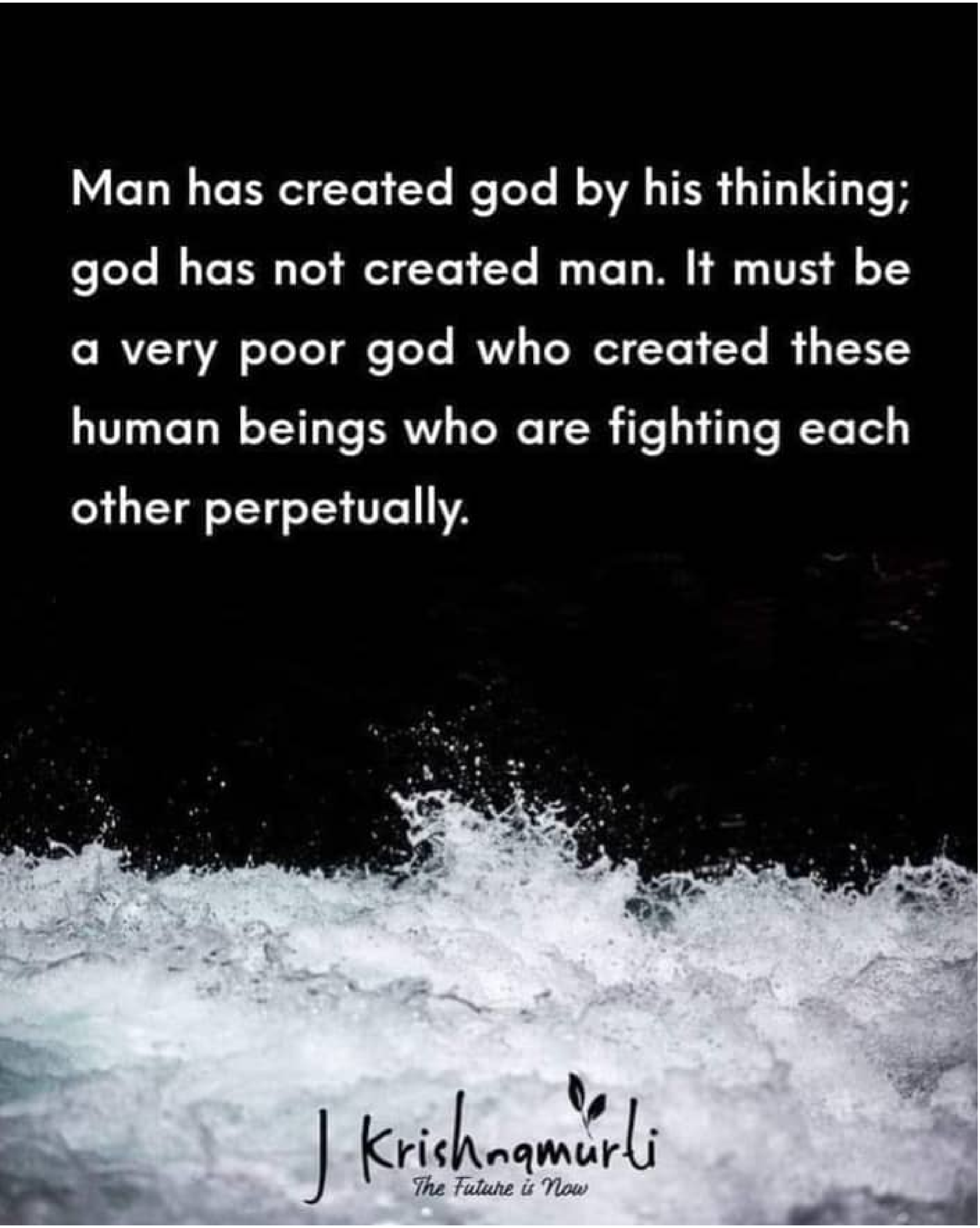
Man has created god by his thinking; god has not created man. It must be a very poor god who created these human beings who are fighting each other perpetually.
J Krishnamurti
The Future is Now

CamScanner

10:51 pm 0 KB/s VoLTE 4G 39%

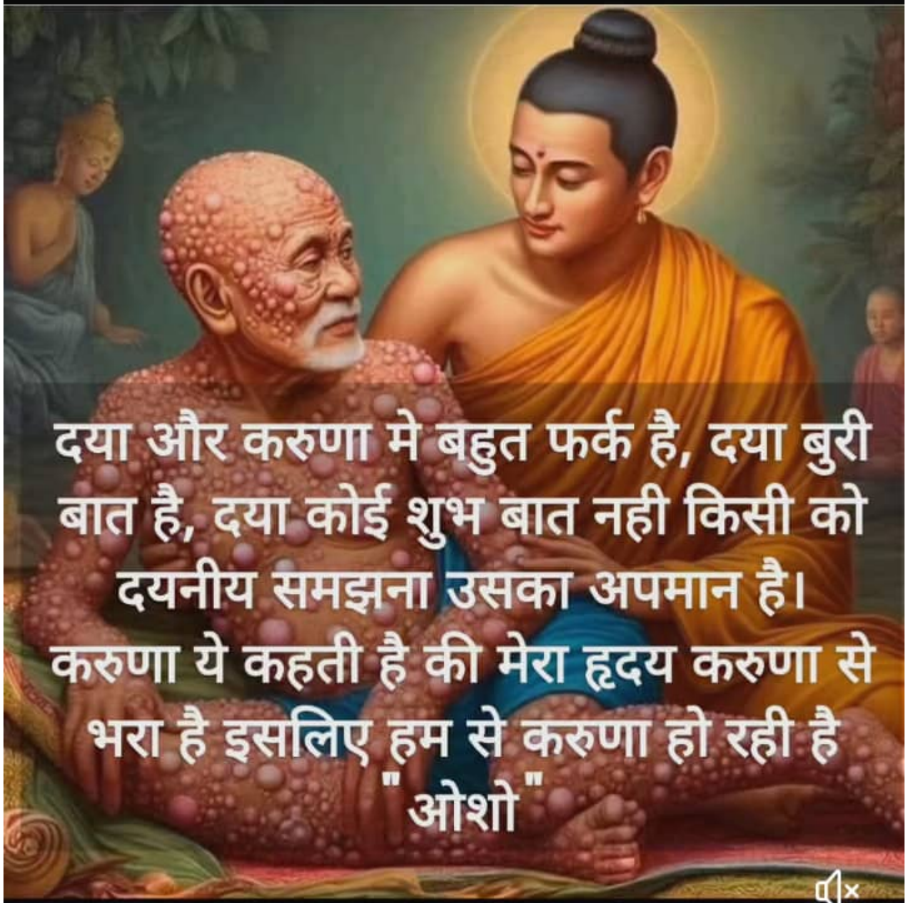

36 24 shares • 2.9K views

Like Comment Send Share

Osho Love
RM Savaliya · 21h ·

Osho Ravi Yog 🧘
Osho Ravi Yog · 3d ·

CamScanner

जहा पापी पहुंच जाते हैं, वही नर्क है।
पापी नर्क जाते हैं, ऐसा नहीं।
पापी अपना नर्क अपने साथ लेकर चलते हैं।
और पुण्यात्मा स्वर्ग जाते हैं,
ऐसा नहीं। पुण्यात्मा
अपना स्वर्ग अपने
साथ लेकर चलते हैं।

ओशो, एस धम्मो सनंतनो, भाग -1

CamScanner

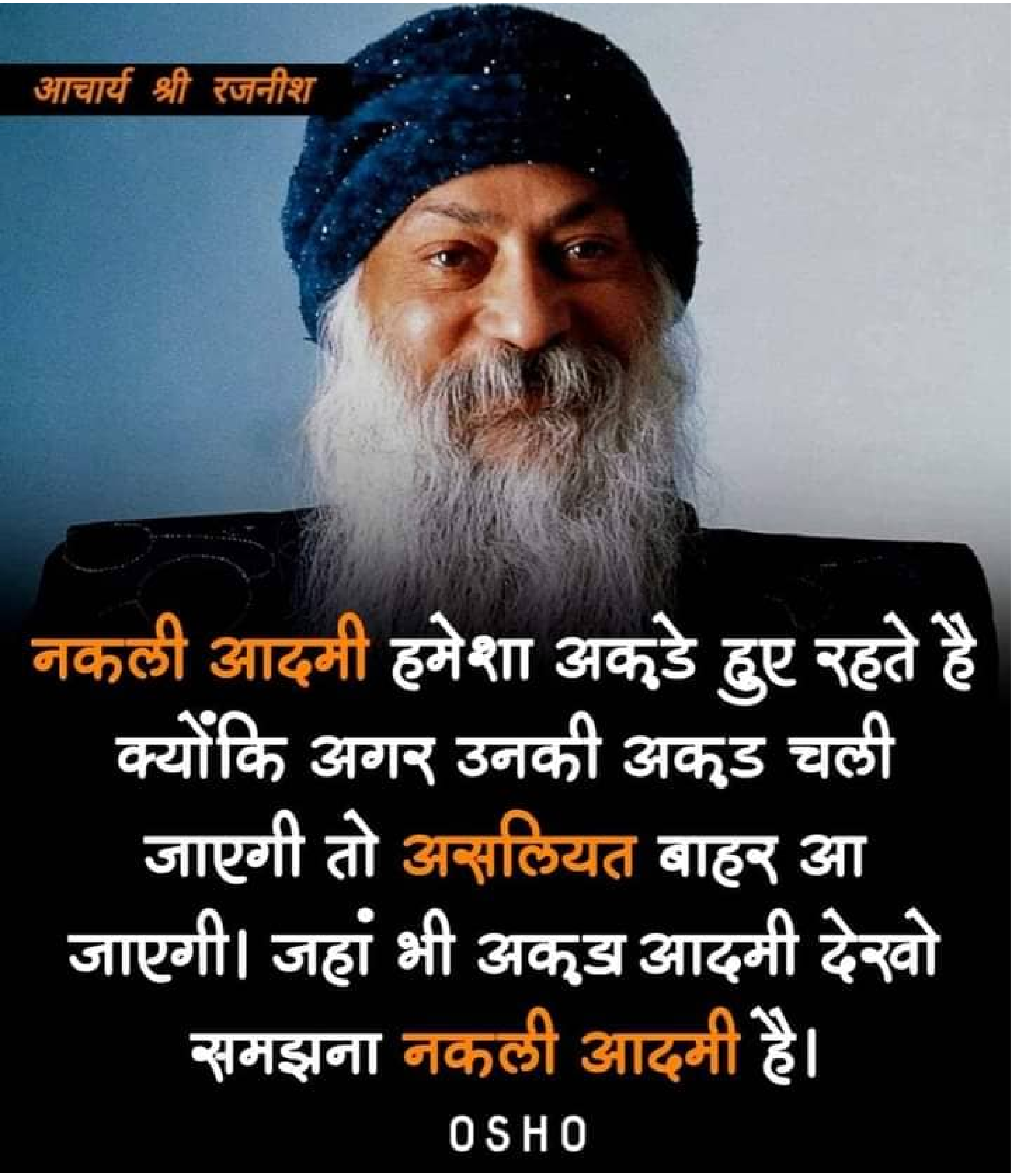
आचार्य श्री रजनीश
नकली आदमी हमेशा अकड़े हुए रहते है
क्योंकि अगर उनकी अकड़ चली
जाएगी तो असलियत बाहर आ
जाएगी। जहां भी अकड़ा आदमी देखो
समझना नकली आदमी है।
OSHO

CamScanner

CamScanner

10:49 pm 0 KB/s 39%

136 8 comments

Like Comment Send

Anamcara Rames
33m ·

इंद्रियों के द्वार बहुत आटोमैटिक हैं, बहुत स्वचालित हैं। जब तक चेतना भीतर से धक्का देती है उन्हें बाहर की तरफ, तभी तक वे खुले रहते हैं। और जब भीतर की चेतना धक्का नहीं देती बाहर की तरफ, वे द्वार अपने से बंद हो जाते हैं।

ऐसा समझें, आंख प्रतीक है, आंख से समझें तो सारी इंद्रियों का खयाल आ जाए। और आंख सूक्ष्मतम और सबसे ज्यादा नाजुक, डेलिकेट, बारीक इंद्रिय है। और जो आंख पर होता है, वही सब इंद्रियों पर होता है।

जब तक आपके भीतर चेतना जागना चाहती है, तब तक पलकें खुली रहती हैं। और जब चेतना सोना चाहती है, पलकें झप जाती हैं और बंद हो जाती हैं। चेतना का धक्का ही पलकों को खोले रखता है।

🏹🏹
आचार्य श्री रजनीशOsho
गीता दर्शन अ.8.प्र.5/93योगयुक्त मरण के सूत्र

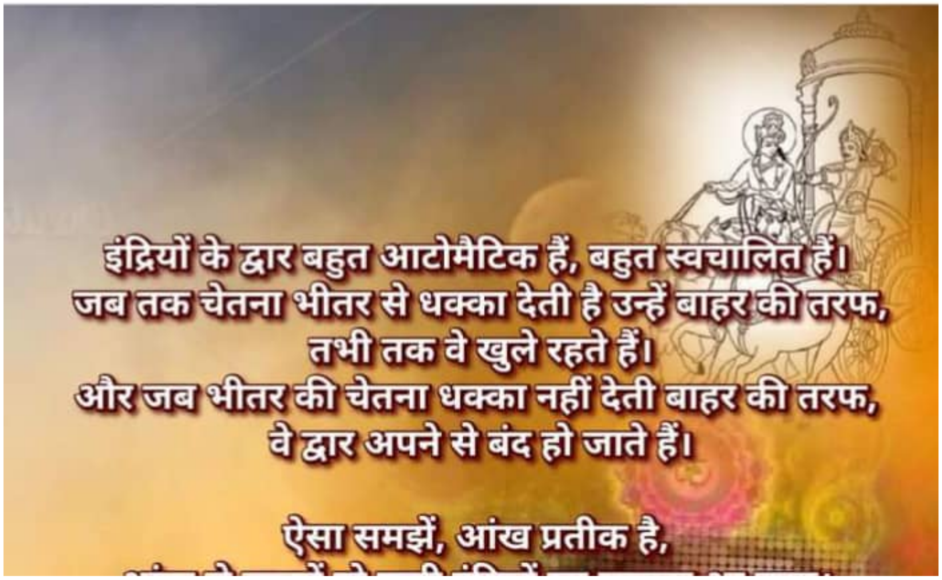

CamScanner

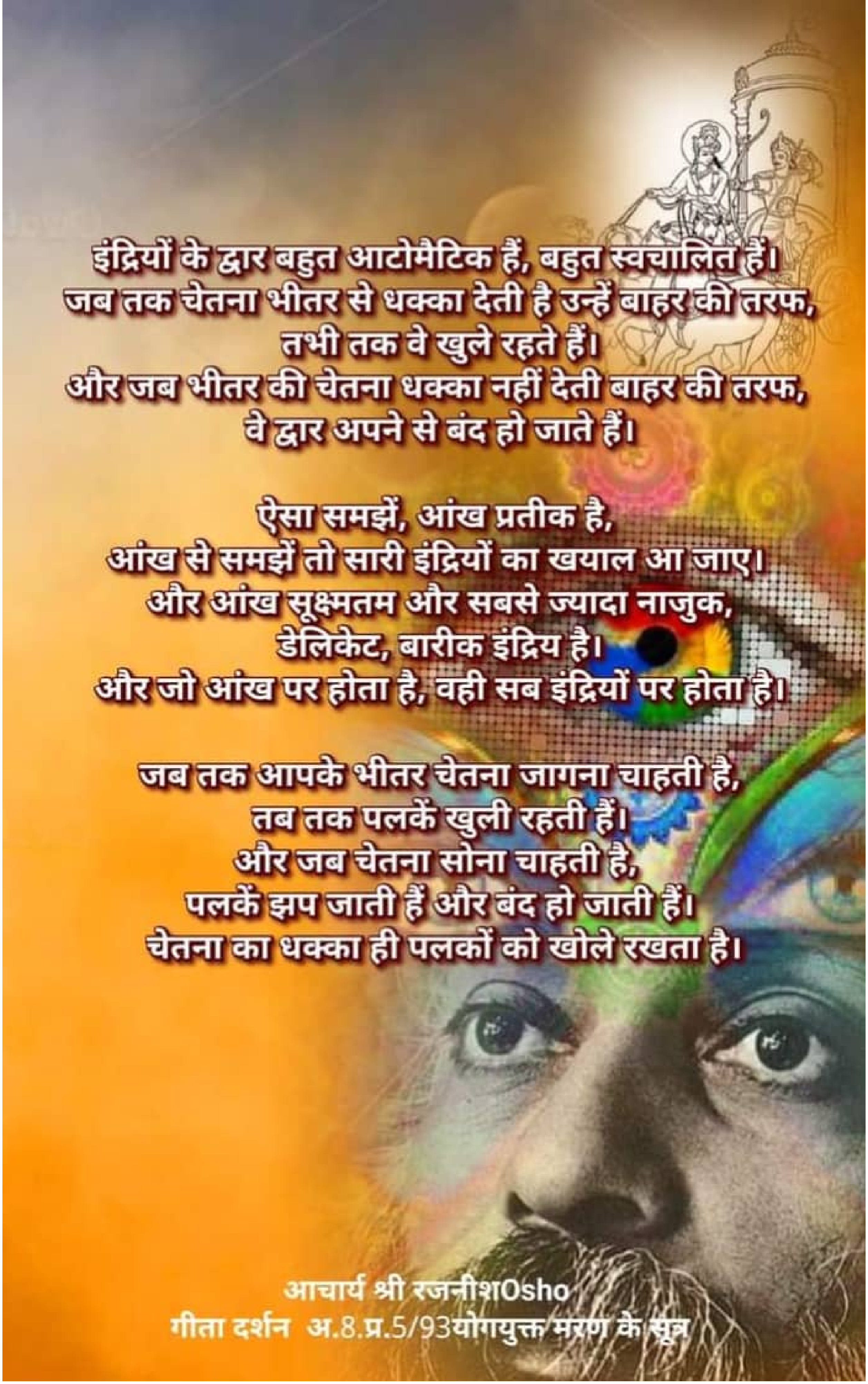

CS CamScanner

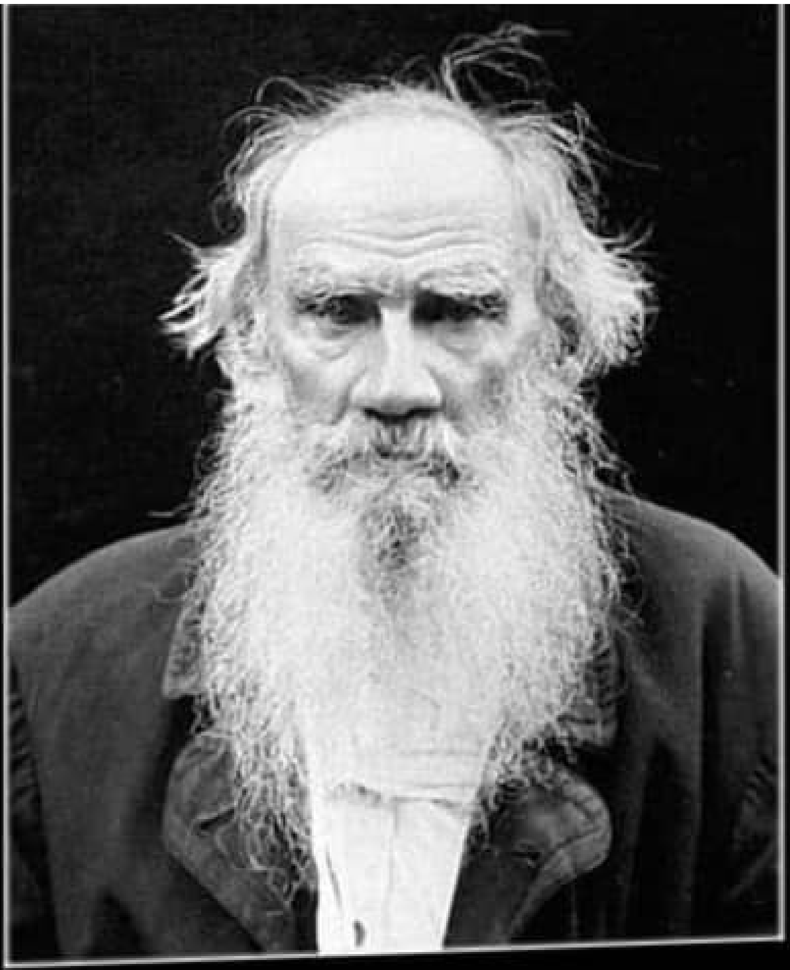

"Everything comes in time to him who knows how to wait."

— Lev Tolstoy

CS CamScanner

कबीर ते नर अंध है, गुरु को कहते और ।

हरि के रूठे ठौर है, गुरु रूठे नहीं ठौर ॥

अर्थ :- सद्गुरु कबीर साहब कहते हैं कि जो मनुष्य
गुरु में परमात्म दृष्टि नहीं रखते और गुरु की महत्ता
को नहीं समझते वे अंधे हैं अर्थात् ज्ञान चक्षु से वंचित हैं।
यदि परमात्मा भी रूठ जाये तो गुरु रक्षा करते हैं।
लेकिन यदि गुरु रूठ जाये, तो ऐसे शिष्य को कहीं आश्रय नहीं मिलता।

CamScanner

10:47 pm 482 KB/s 40%

क वृद्ध ऋषि से किसी ने पूछा : " संसार की वस्तुओं
बसे बड़ी वस्तु क्या है ? "
षि ने कहा : " आकाश। क्योंकि जो भी है , आकाश
और स्वयं आकाश किसी में नहीं है। "
सने पूछा : " और श्रेष्ठतम ? "
षि ने कहा : " शील। क्योंकि शील पर सब कु
ौछावर है, लेकिन शील किसी के लिए भी न
ाया जा सकता है । "
सने पूछा : "और सबसे गतिवान?
षि ने कहा : " विचार। "
सने पूछा : " और सबसे सरल ? '
षि ने कहा : " उपदेश। "
सने पूछा : " और सबसे कठिन ?
षि ने कहा : " आत्मज्ञान। "

श्चय ही स्वयं को जानना सर्वाधिक कठिन प्रत
ता है, क्योंकि उसे जानने के लिए शेष सब ज्ञान
ड़ना पड़ता है। ज्ञान से शून्य हुए बिना स्वयं का ज्ञ
हीं हो सकता है। अज्ञान आत्मज्ञान में बाधा है। ज्ञ
ी आत्मज्ञान में बाधा है। लेकिन एक ऐसी अवस्था
, जब न ज्ञान है, न अज्ञान है। उस अंतराल में ही स्व
ा ज्ञान आविर्भूत होता है। मैं उस अवस्था को ही समा
हता हूं। ओशो

Give 16 2

Osho dhyan.

Add a comment...

CamScanner

तुम्हे होश है ,
क्या कर रहे हो ?
यह सारा समय व्यर्थ गया ।
पादुका यहीँ पडी रह जाएगी,
भिक्षापात्र यहीं पडे रह जाऐंगे ।
जैसे महल पडे रह जाऐंगे,
वैसे ही झोपडियां भी पडी रह जाएंगी,
सब यहीं पडा रह जाएगा ।
कुछ ऐसा कमाओ जो मौत के पार
तुम्हारे साथ जा सके ।

~ओशो
अनंत के यात्री

CamScanner

🌸 🌸 🌸

● सत्यवचन ●

देख कबीरा दंग रह गया ,
मिला ना कोई मीत ।
मंदिर मस्जिद के चक्कर मे
खत्म हो गई प्रीत ॥

••• सद्‌गुरु कबीर साहेब

CamScanner

CS CamScanner

We are caught in psychological time as the memory of the past and the hope for the future. We don't know what it is to live totally now. Now is life, not behind or ahead.

~ J Krishnamurti, Public Talk 3 in Ojai, California, 19 April 1975.

© KFA / KFT

JKCentre

CamScanner

I've no problem because I don't mind what happens. I don't mind if I fail or succeed. I have no problem, because I don't demand anything from anybody or from life. I wonder if you understand this.

- Krishnamurti

CamScanner

#- कहै वाजिद पुकार-प्र-7, ओशो
अर्थशास्त्र का एक गणित है-पकड़ो तो बचेगा,
छोड़ा कि गया। अध्यात्म का गणित बिलकुल
उलटा है-पकड़ा कि गंवाया, छोड़ा कि पाया।
उपनिषद कहते हैं: तेन त्यक्तेन भुंजीथा:।
जिन्होंने छोड़ा, उन्होंने पाया।
तेन त्यक्तेन भुंजीथा:।
यह पूरा अध्यात्म का गणित इसमें समाविष्ट है,
इस छोटे-से सूत्र में!

CamScanner

लाओत्से कहता हे , दुःख को भी स्वीकार
कर लो और तुम आनंदित हो जाओगे क्युंकि स्वीकार दुख
जानता ही नही है। स्वीकार को दुख का कोई पता ही नही
है। स्वीकार के साथ ही परिणाम आने शरू हो जाते है

CamScanner

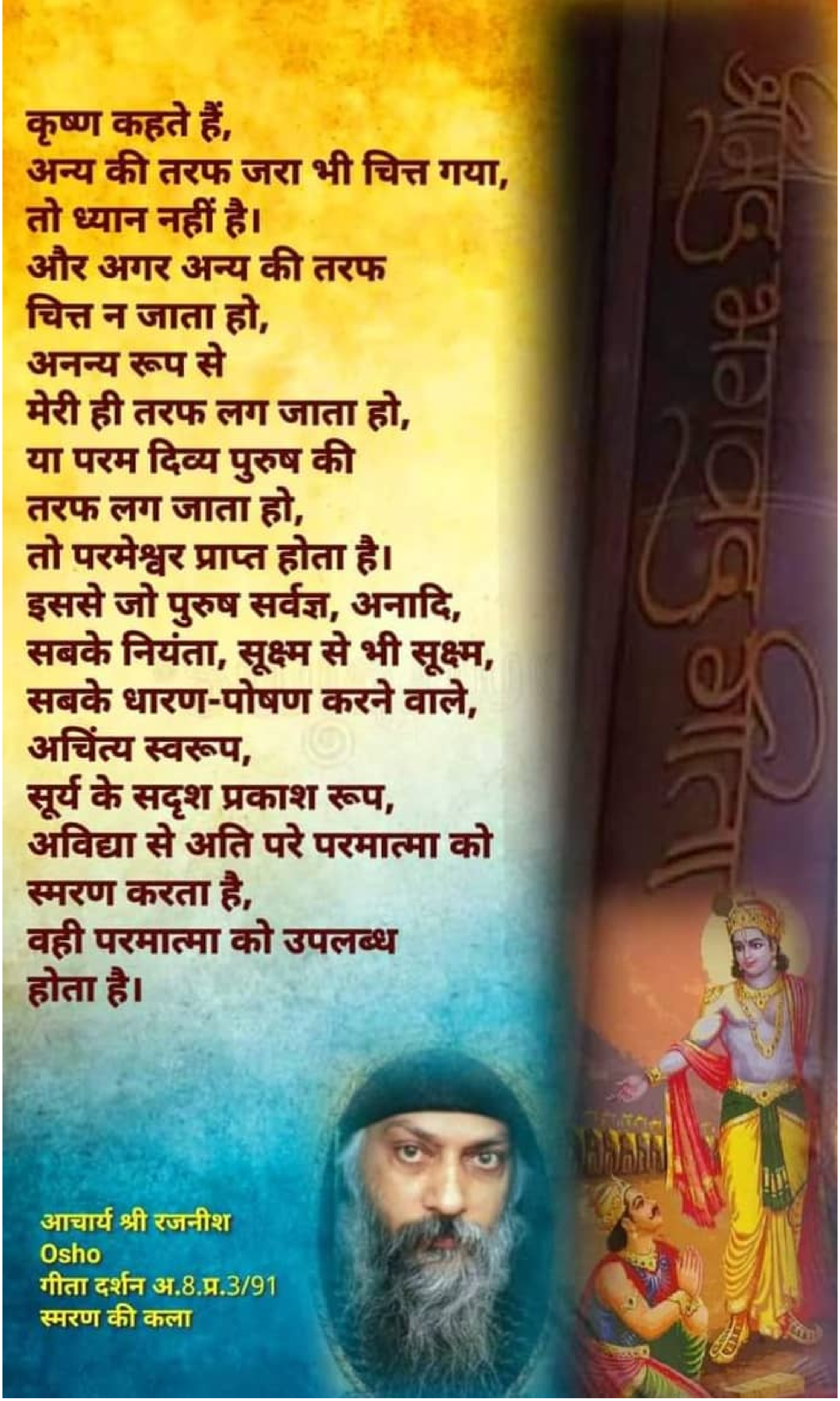
कृष्ण कहते हैं,
अन्य की तरफ जरा भी चित्त गया,
तो ध्यान नहीं है।
और अगर अन्य की तरफ
चित्त न जाता हो,
अनन्य रूप से
मेरी ही तरफ लग जाता हो,
या परम दिव्य पुरुष की
तरफ लग जाता हो,
तो परमेश्वर प्राप्त होता है।
इससे जो पुरुष सर्वज्ञ, अनादि,
सबके नियंता, सूक्ष्म से भी सूक्ष्म,
सबके धारण-पोषण करने वाले,
अचिंत्य स्वरूप,
सूर्य के सदृश प्रकाश रूप,
अविद्या से अति परे परमात्मा को
स्मरण करता है,
वही परमात्मा को उपलब्ध
होता है।
आचार्य श्री रजनीश
Osho
गीता दर्शन अ.8.प्र.3/91
स्मरण की कला

CamScanner

10:44 pm 0 KB/s 40%

लेकिन परमात्मा तो तुम्हारी अंतर-अवस्था है, तुम्हारी आंतरित्ता है। तुम कभी परमात्मा से भिन्न न रहे हो, न हो, न हो सकते हो। सिर्फ सो गए हो। परमात्मा इतना तुम्हें मिला हुआ है कि भूल गए हो। जब कोई चीज बहुत मिल जाती है तो भूल जाती है। तुम परमात्मा में ही जीए हो, इसलिए भूल गए हो। परमात्मा इतना निकट है, निकट से भी निकटतर, परमात्मा तुम्हारे प्राणों का प्राण है, इसलिए विस्मरण हो गया है।

परमात्मा को इसलिए नहीं भूल गए हो कि परमात्मा बहुत दूर है, परमात्मा को इसलिए भूल गए हो क्योंकि परमात्मा दूर नहीं है।

दूर के तारे तो दिखाई पड़ते रहते हैं।
असल में पास जो है, वह भूल जाता है।

पास जो है, वह दिखाई ही नहीं पड़ता।

अगर दर्पण में अपनी तस्वीर देखनी हो, तो दर्पण के बहुत पास मत चले जाना। दर्पण से बिल्कुल मुंह लगा कर मत खड़े हो जाना, नहीं तो कुछ भी न दिखाई पड़ेगा। जरा दूरी चाहिए, थोड़ा परिप्रेक्ष्य चाहिए, फासला चाहिए, तो ही देख सकोगे।

ओशो
झरत दसहुं दिस मोती-(प्रवचन-02)
#osho @followers

CamScanner

10:43 pm 0 KB/s VoLTE 4G 40%

चारों तरफ लोगों के जीवन को देखता तो है!

इसलिए जब तुम कहते हो धन पाना है, तो मन को वैसी चुनौती नहीं मिलती।
क्योंकि चारों तरफ जिनके पास धन है, उनको देख कर ही मन स्वयं ही अधमरी हालत में हो जाता है।

पाकर भी क्या करेंगे???

गौर से देखना, यह लोभ का बड़ा रूप है बड़ा सूक्ष्म।

मन बड़ा चालबाज है! मन कहता है, यह बात करने जैसी है।
इसलिए आध्यात्मिक यात्रा की बात मन को जंच जाती है।

मैं भी तुमसे आध्यात्मिक यात्रा की बात करता हूं। मगर मेरे हिसाब में वह सिर्फ आटा है।

एक बार तुम फंस गए, फिर असली बात कहनी ही होगी। और असली बात कठिनाई में डालेगी। असली बात बड़े द्वंद्व से भर देगी। आज नहीं कल, जब मैं देखूंगा अब तुम उस जगह आ गए जहां असली बात कही जा सकती है, फिर भी तुम लौट न सकोगे; तुम उस बिंदु पर आ गए जहां से लौटना असंभव है;

तब मैं तुमसे कहूंगा ही..कोई यात्रा नहीं है। परमात्मा गंतव्य नहीं है, तुम्हारा अस्तित्व है। परमात्मा को पाना नहीं है, तुमने कभी खोया ही नहीं। परमात्मा को पाने के लिए कोई उपाय, विधियां, साधनाएं नहीं करनी हैं।

उपाय, विधियां, साधनाएं तो उसे पाने को करनी होती हैं, जो हमारा स्वभाव न हो; जो हमसे विजातीय हो।
हां, धन को पाने के लिए विधि चाहिए, उपाय चाहिए, तरकीबें चाहिएं, मार्ग चाहिए।

लेकिन परमात्मा तो तुम्हारी अंतर-अवस्था है, तुम्हारी आंतरित्ता है। तुम

CamScanner

10:43 pm 112 KB/s VoLTE 4G 40%

करने में मन का बचाव है, सुरक्षा है। करने में मन का पोषण है।
इसलिए मैं भी तुम जब शुरू-शुरू मेरे पास आते हो, तो अनिवार्यरूपेण मुझे तुम्हारी भाषा बोलनी पड़ती है।

पाना है परमात्मा,
पाना है आनंद,
पाना है मोक्ष, निर्वाण।

मगर सच पूछो तो वह केवल तुम्हें टिकाए रखने का उपाय है। वह ऐसा है जैसे कांटे पर आटा लगा देते हैं, मछली को पकड़ रखने को। मछली कांटा तो न लीलेगी, आटे को लील जाएगी; आटे के साथ कांटा भी भीतर पहुंच जाएगा।

और कांटा भीतर पहुंच गया तो मछली फंसी।

तुम्हारे मन को जरूरत है आटे की।
तो सच्चिदानंद की बात करनी होती है; परम निर्वाण की बात करनी होती है;

उस अलौकिक महासुख की, जो तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है;
उस सत्य की जो बहुत दूर है..चांद-तारों की भांति।

और तुम्हारा मन राजी हो जाता है।
तुम्हारा मन कहता है: चलेंगे, इस यात्रा को करेंगे। तुम्हारा मन इस चुनौती को स्वीकार कर लेता है।

क्योंकि मन चारों तरफ तो देखता है: बहुतों को पद मिल गया है, क्या खाक मिला!
और बहुतों ने धन पा लिया है, पाया क्या है? आखिर मन अंधा तो नहीं है????

चारों तरफ लोगों के जीवन को देखता तो है!

इसलिए जब तुम कहते हो धन पाना है, तो मन को वैसी चुनौती नहीं

CamScanner

10:43 pm 9 KB/s VoLTE 4G 40%

ओशो मेरी दृष्टि में.....

चेतन विस्तार · 57m ·

"सब यात्राएं झूठी हैं.........अंतर्यात्रा भी"

सत्य तो यही है कि तुम जो हो, वह पर्याप्त है, वह पूर्णता है। तुम जहां हो, उससे कहीं अन्यथा नहीं होना है। जैसे हो, वैसे ही होने में निर्वाण है। लेकिन इस सत्य को अंगीकार करना निश्चित ही कठिन।

कठिन ही नहीं, असंभव ही है।
क्योंकि हमारी सारी शिक्षा-दीक्षा यात्राओं के लिए है।

हमारी सारी शिक्षा-दीक्षा का आधार है: आकांक्षा, अभीप्सा, कुछ पाने की दौड़।

फिर पाने की दौड़ धन की हो
या ध्यान की..भेद नहीं पड़ता।

फिर पाने की दौड़ पद की हो
या परमात्मा की..भेद नहीं पड़ता।

हमारे मन को अड़चन नहीं आती।
मन कहता है: कोई फिक्र नहीं, पद नहीं पाना है, परमात्मा तो पाना है!

पाने की भाषा कायम रखो और मन राजी है।
पाने की भाषा मन को जंचती है; क्योंकि मन पाने की भाषा के सहारे ही जीता है।

मन इस तक के लिए राजी है कि तुम अ-मन की साधना करो।
मन से मुक्त होने की साधना करो, मन इसके लिए भी राजी है।

मन कहता है: कुछ करो; कुछ किए चलो!
क्योंकि मन जानता है, तुम कुछ भी करोगे तो मन बचेगा।

करने में मन का बचाव है, सुरक्षा है। करने में मन का पोषण है।

CamScanner

जब किसी से प्रेम हो जाये त

उससे केवल प्रेम करना,

उसे पाने या उसे

जान ने का प्रयास मत करन

जितना उसे पाने या

जान लेने का प्रयास करोगे

उतना ही तुम दुख़ पा ओगे.

प्रेम हुआ है तो प्रेम करो

बस और कुछ मत करो..!

Osho

CS CamScanner

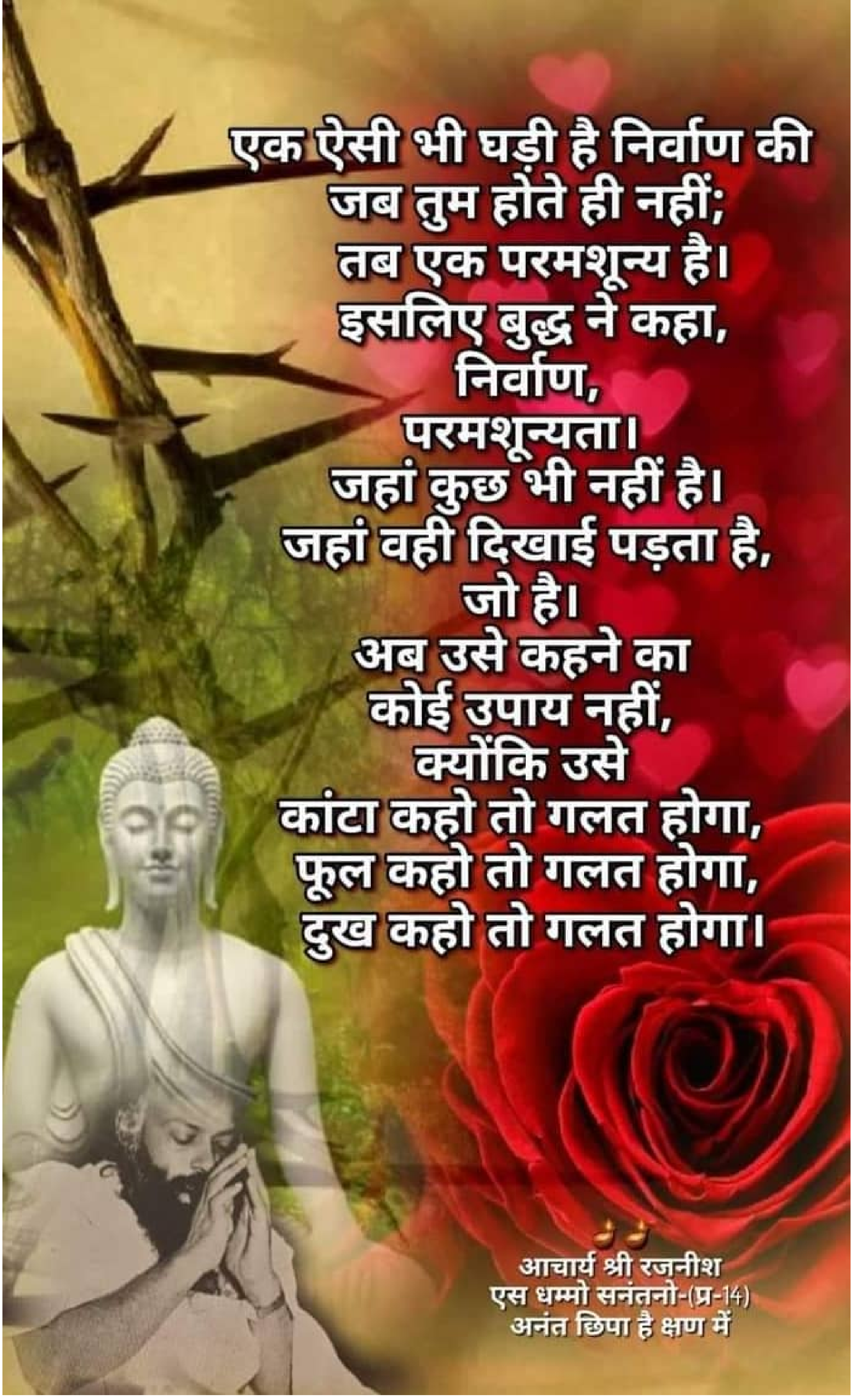
एक ऐसी भी घड़ी है निर्वाण की
जब तुम होते ही नहीं;
तब एक परमशून्य है।
इसलिए बुद्ध ने कहा,
निर्वाण,
परमशून्यता।
जहां कुछ भी नहीं है।
जहां वही दिखाई पड़ता है,
जो है।
अब उसे कहने का
कोई उपाय नहीं,
क्योंकि उसे
कांटा कहो तो गलत होगा,
फूल कहो तो गलत होगा,
दुख कहो तो गलत होगा।
आचार्य श्री रजनीश
एस धम्मो सनंतनो-(प्र-14)
अनंत छिपा है क्षण में

CamScanner

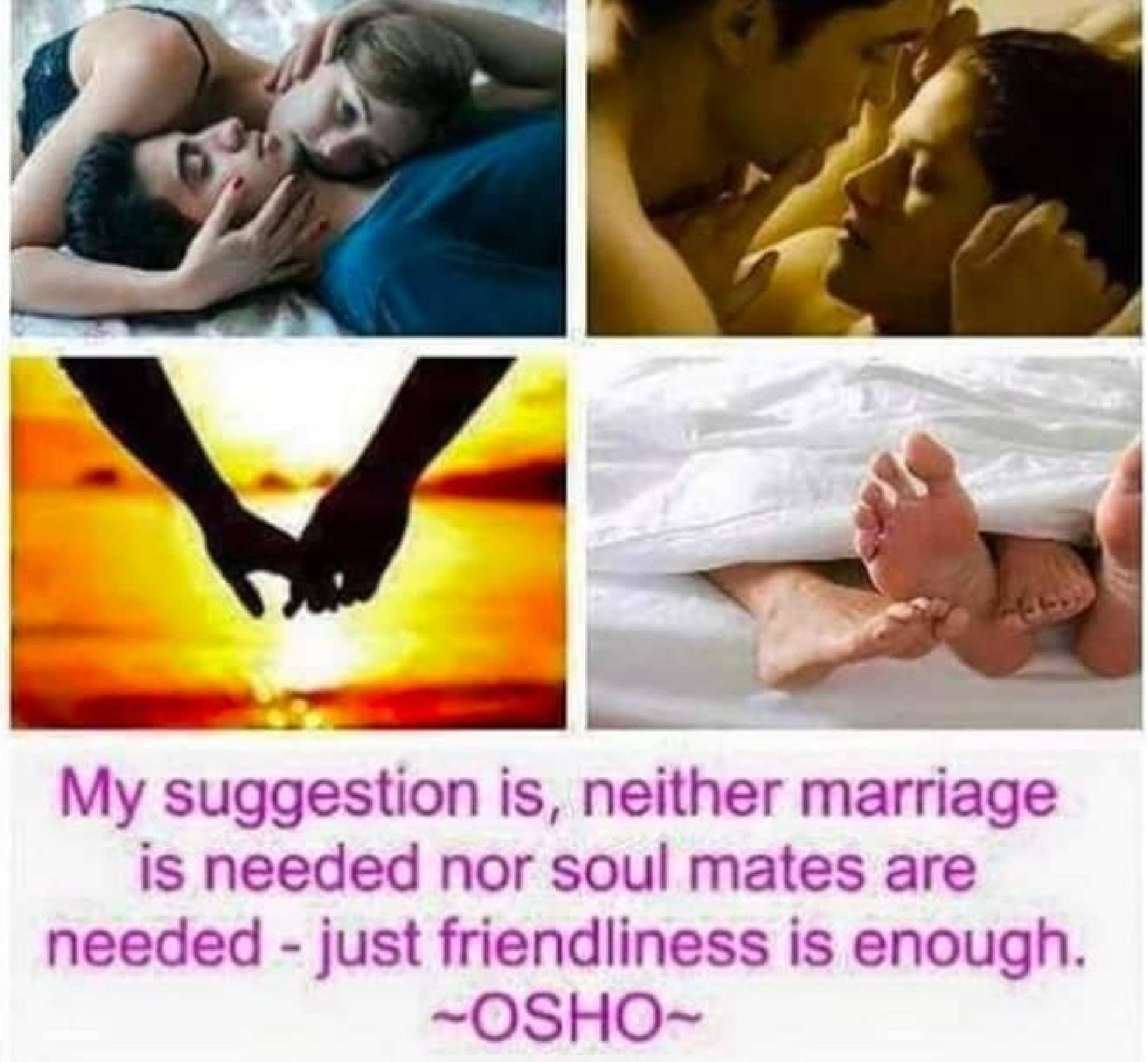
My suggestion is, neither marriage is needed nor soul mates are needed - just friendliness is enough.
~OSHO~

CamScanner

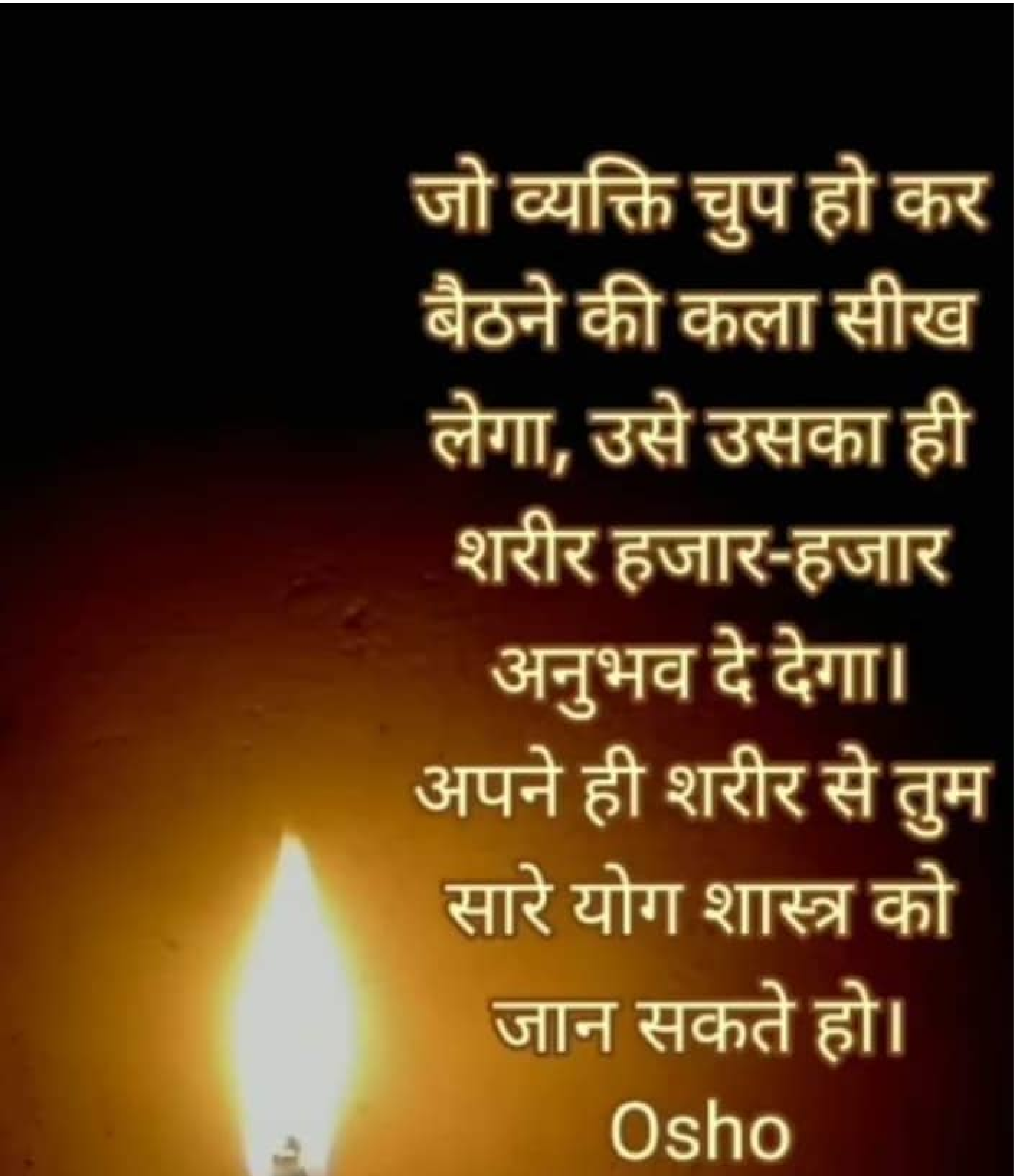

CS CamScanner

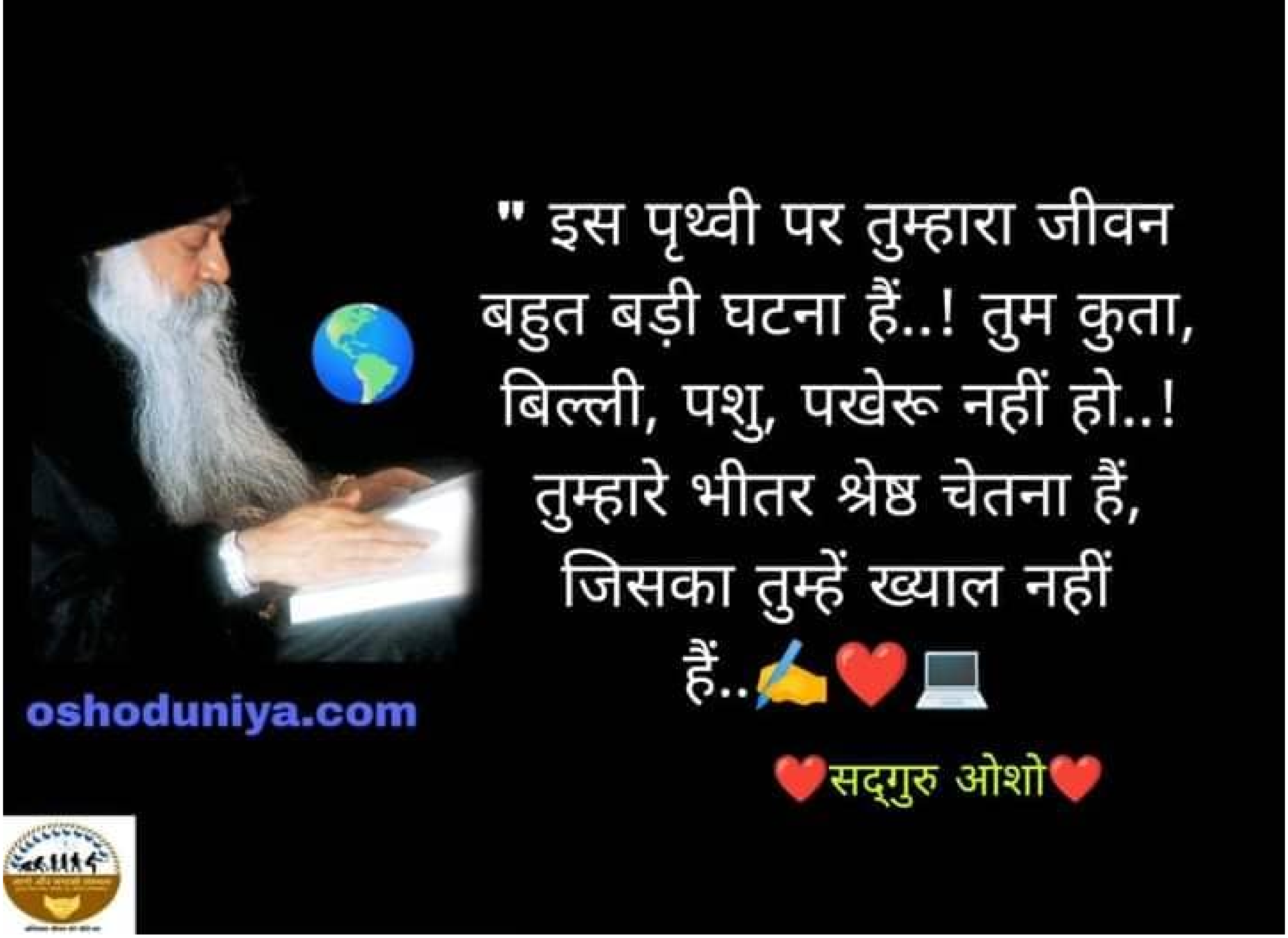
" इस पृथ्वी पर तुम्हारा जीवन
बहुत बड़ी घटना हैं..! तुम कुता,
बिल्ली, पशु, पखेरू नहीं हो..!
तुम्हारे भीतर श्रेष्ठ चेतना हैं,
जिसका तुम्हें ख्याल नहीं
हैं..
oshoduniya.com
सद्गुरु ओशो

CamScanner

ओशो कहते हैं- संसार में इस बात का

विचार किए बिना रहो कि क्या होने वाला है।

चाहे आप विजेता बनने जा रहे हों या हारने वाले,

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मौत सब कुछ छीन लेती है।

एकमात्र चीज जो मायने रखती है और हमेशा से रही है,

वह यह है कि आपने खेल कैसे खेला। अहोभाव

CamScanner

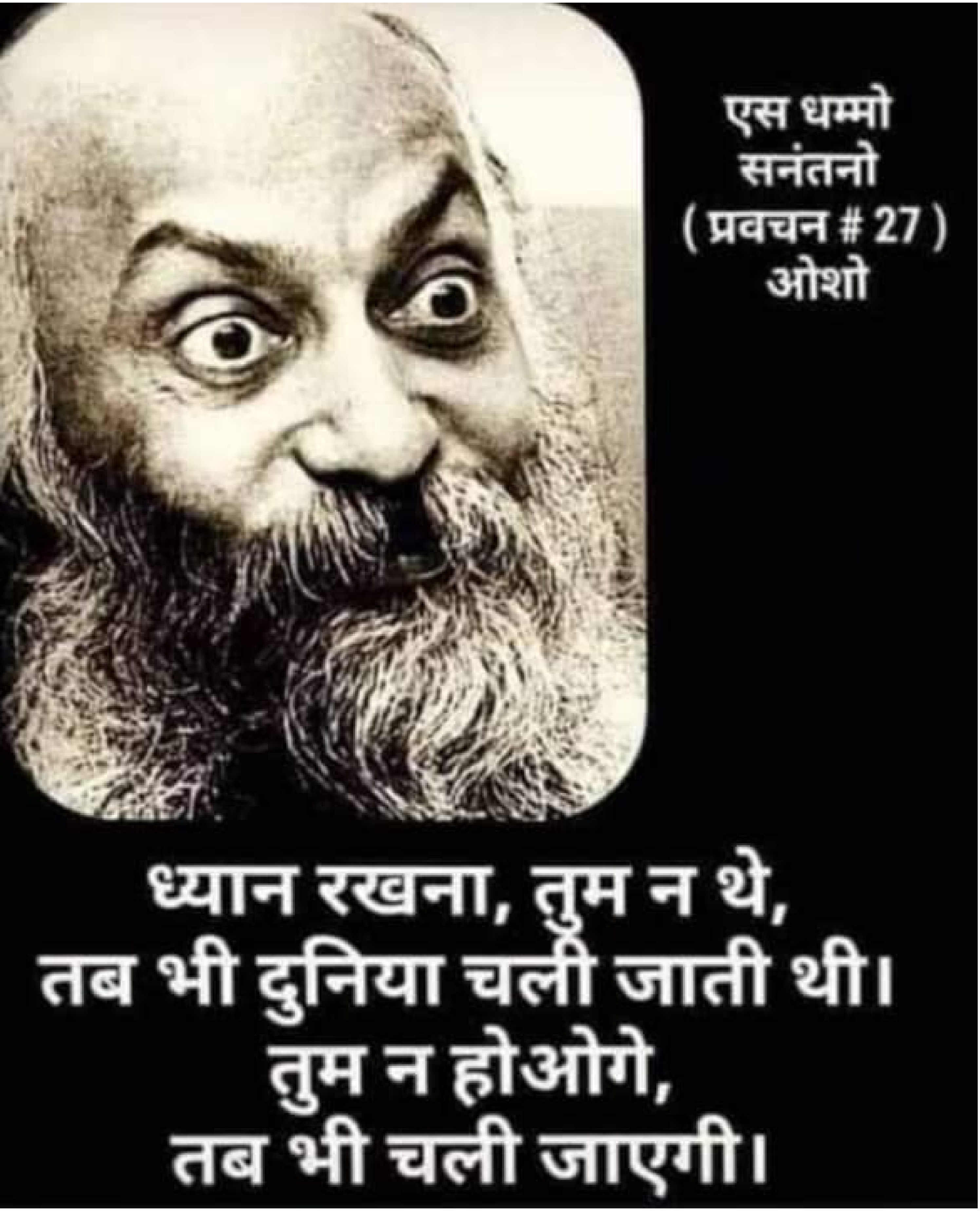
एस धम्मो
सनंतनो
(प्रवचन # 27)
ओशो
ध्यान रखना, तुम न थे,
तब भी दुनिया चली जाती थी।
तुम न होओगे,
तब भी चली जाएगी।

CamScanner

10:41 pm 0 KB/s VoLTE 4G 40%

Bal Dia · 8h ·

"नारी के रूप की तुलना प्रकृति से क्यों की जाती है..
"जुल्फों" को सावन के बादलों से-
"आंखों" को नीली झील से-
"भौंहें" को इंद्रधनुष से-
"पलकों" को चिलमन से-
"होठों" को गुलाब से-
"गालों" को सेब से "गर्दन" को सुराही से
"स्तनों" को फलों से-
"बाहों" को मुलायम डालियों से..
"रंग को धूप से-
कभी चांदी से और कभी ताजमहल के संगमरमर से...
"दांतों को अनार के दानों से
"नाभि" को कमल से..
"पिंडलियों" को मुलायम तकिए से...
"जांघों" को मखमल से..." पैरों" को कमल से...
और संपूर्ण रूप सौंदर्य को कभी परी से..
कभी अप्सरा से.. कभी ताजमहल से..
"चेहरे को पूनम के चांद से
और यौवन को महकते ताजा गुलाब से..." कवि करते हैं अक्सर तुलना स्त्री के अंग अंग की...
"यौवन के रूप निखार की...
"शमा" और "पतंगे" का अभिसार कराते हैं...
"पुष्प और भंवरे का प्यार कराते हैं...
"कवि न जाने क्या-क्या कल्पना करते हैं...
"कन्या को कविता की सुंदरता में रचते हैं..
"सौंदर्य को शबाब में- नशा को शराब में...डाला जाता है...
"पर कवि आंखों में सुरूर का दम भरते हैं...
"अंग अंग को हीरा मोती में पिरोते हैं...
"कवि सौंदर्य की न जाने क्या-क्या कल्पना करते हैं...
"किस-किस से कितनी बार तुलना करते हैं....

CamScanner

10:41 pm 2 KB/s 40%
3d ·

यह अपूर्व सूत्र है..............

कि अगर तुम निश्चिंत होना चाहो, तो
छोटा-सा काम है बस; जरा-सी
तरकीब है; जरा-सी कला है--
और कला यह है: ....

अपने को हटा लो और परमात्मा
को करने दे जो कराए।
कराए तो ठीक, न कराए तो ठीक।
पहुंचाए कहीं तो ठीक, न पहुंचाए
तो ठीक।
तुम सारी चिंता उस पर छोड़ दो।
जिस पर इतना विराट जीवन ठहरा
हुआ है,

चांदत्तारे चलते हैं, ऋतुएं घूमती हैं,
सूरज निकलता है, डूबता है; इतना
विराट जीवन का सागर, इतनी लहर
जो सम्हालना है, तुम्हारी भी छोटी
लहर सम्हाल लेगा।

तुम अपनी लहर को अपना अहंकार मत
बनाओ।
तुम अपनी लहर को उसके हाथ में
समर्पित कर दो।

CamScanner

गुरु पूरा मिला नहीं,

सुनी अधूरी सीख ।

भगवा वस्त्र पहनकर,

घर-घर मांगे भीख ।।

CamScanner

जितनी ज्यादा भीड़ होती जाती है उतनी अशांति सघन होती जाती है, क्योंकि उतने ही कलह में पड़ जाते हैं।
जिस दिन तुम इस सत्य को देख पाओगे कि तुम्हारा संसार तुम्हारे भीतर है, और तुम उसी संसार के आधार पर बाहर की खूंटियों पर संसार निर्मित कर रहे हो, इसलिए सवाल बाहर के संसार को छोड़कर भाग जाने का नहीं है; भीतर के संसार को छोड़ देने का है तब तुम कहीं भी रहो, तुम जहां भी होओगे, तुम वहीं संन्यस्थ हो। तुम कैसे भी रहो महल में या झोपड़ी में, बाजार में या आश्रम में, कोई फर्क न पड़ेगा। तुम्हारे भीतर से जो भ्रांति का सूत्र था, वह हट गया।
ओशो

Osho Prem Naman 🙏💞
Osho international

CamScanner

10:40 pm 0 KB/s VoLTE 4G 40%

वह रोटी बना रही थी, अपना बेलन लिए बाहर निकल आई। उसे बेलन लिए देखकर मुल्ला ने अपना डंडा उठा लिया। उस छोटे बच्चे ने कहा, “पापा रुको, मैं समझ गया कि युद्ध कैसे शुरू करते हैं। अब कुछ और समझाने की जरूरत नहीं है।’

जहां दो व्यक्ति हैं, जैसे ही उनका करीब आना शुरू हुआ कि युद्ध की संभावना शुरू हो गई। दो संसार हैं; उनके अलग अलग सोचने के ढंग हैं; अलग अलग देखने के ढंग हैं; अलग उनकी धारणाएं हैं; अलग परिवेश में वे पले हैं; अलग अलग लोगों ने उन्हें निर्मित किया है; अलग अलग उनके धर्म हैं, अलग अलग राजनीति है; अलग अलग मन हैं सारसंक्षिप्त। और जहां अलग अलग मन हैं, वहां प्रेम संभव नहीं वहां कलह ही संभव है।

इसलिए तो संसार में इतनी कठिनाई है प्रेमी खोजने में। मित्र खोजना असंभव मालूम होता है। मित्र में भी छिपे हुए शत्रु मिलते हैं। और प्रेमी में भी कलह की ही शुरूआत होती है।

दो संसार कभी भी शांति से नहीं रह सकते।

उसका कारण?

एक संसार भी अपने भीतर कभी शांति से नहीं रह सकता; दो मिलकर अशांति दुगुनी हो जाती है।

तुम अकेले भी कहां शांत हो? तुम्हारा मन वहां भी अशांति पैदा किए हुए है। फिर जब दोनों मिलते हैं तो अशांति दुगुनी हो जाती है।

जितनी ज्यादा भीड़ होती जाती है उतनी अशांति सघन होती जाती है, क्योंकि उतने ही कलह में पड़ जाते हैं।
जिस दिन तुम इस सत्य को देख पाओगे कि तुम्हारा संसार तुम्हारे भीतर है, और तुम उसी संसार के आधार पर बाहर की खूंटियों पर संसार निर्मित कर रहे हो, इसलिए सवाल बाहर के संसार को छोड़कर भाग जाने का नहीं है; भीतर के संसार को छोड़ देने का है तब तुम कहीं भी रहो, तुम जहां भी होओगे, तुम वहीं संन्यस्थ हो। तुम कैसे भी रहो महल

CamScanner

10:40 pm 0 KB/s VoLTE 4G 40%

मन कलह का सूत्र है

दो दुनियाएं हैं। जहां दो व्यक्ति मिलते हैं, वहां दो संसार मिलते हैं। और जब दो संसार करीब आते हैं, तो उपद्रव होता है; क्योंकि दोनों भिन्न हैं।

ऐसा हुआ, मैं मुल्ला नसरुद्दीन के घर बैठा था। उसका छोटा बच्चा रमजान उसका नाम है, घर के लोग उसे रमजू कहते हैं वह इतिहास की किताब पढ़ रहा था। अचानक उसने आंख उठाई और अपने पिता से कहा, "पापा, युद्धों का वर्णन है इतिहास में...युद्ध शुरू कैसे होते हैं?'

पिता ने कहा, "समझो कि पाकिस्तान हिंदुस्तान पर हमला कर दे। मान लो...'

इतना बोलना था कि चौके से पत्नी ने कहा, "यह बात गलत है। पाकिस्तान कभी हिंदुस्तान पर हमला नहीं कर सकता और न कभी पाकिस्तान ने हिंदुस्तान पर हमला करना चाहा है। पाकिस्तान तो एक शांत इस्लामी देश है। तुम बात गलत कह रहे हो।'

मुल्ला थोड़ा चौंका। उसने कहा कि मैं कह रहा हूं, सिर्फ समझ लो। सपोज...। मैं कोई यह नहीं कह रहा हूं कि युद्ध हो रहा है और पाकिस्तान ने हमला कर दिया है; मैं तो सिर्फ समझाने के लिए कह रहा हूं कि मान लो..

पत्नी ने कहा, "जो बात हो ही नहीं सकती, उसे मानो क्यों? तुम गलत राजनीति बच्चे के मन में डाल रहे हो। तुम पहले से ही पाकिस्तान विरोधी हो, और इस्लाम से ही तुम्हारा मन तालमेल नहीं खाता। तुम ठीक मुसलमान नहीं हो। और तुम लड़के के मन में राजनीति डाल रहे हो, और गलत राजनीति डाल रहे हो। यह मैं न होने दूंगी।'

वह रोटी बना रही थी, अपना बेलन लिए बाहर निकल आई। उसे बेलन लिए देखकर मुल्ला ने अपना डंडा उठा लिया। उस छोटे बच्चे ने कहा, "पापा रुको, मैं समझ गया कि युद्ध कैसे शुरू करते हैं। अब कुछ और

CamScanner

10:37 pm 0 KB/s VoLTE 4G 41%

4

Like Comment Send Share

O'SHO NAMAN (प्रभु की पगडंडियां)
Osho international · 5h

जिंदगी के बड़े अदभुत नियम हैं।

जिस चीज को जितना भुलाओ, उतनी ही याद आती है। चाह कर इस जगत में कुछ भी भुलाया नहीं जा सकता। भुलाएं! और जितना भुलाएंगे, उतना ही पाएंगे, याद आता है।

असल में, भुलाने की कोशिश में भी याद तो करना ही पड़ता है। जब एक आदमी अपने भीतर के खालीपन को डुबाने को, भुलाने को शराब पी रहा है, तब भी वह गहन रूप से याद कर रहा है। होश में आएगा, तब भी गहन रूप से याद करेगा कि शराब व्यर्थ हो गई, शरीर को खराब कर गई; वह जो घाव था, वह अपनी जगह फिर खड़ा है--और भी गहरा होकर, और भी रिक्त होकर दिखाई पड़ रहा है। न तो कोई भर सकता है और न कोई भुला सकता है।

लाओत्से कहता है, संत वे हैं जो दोनों ही काम नहीं करते। वे खाली होने को राजी हो जाते हैं। वे कहते हैं, हम खाली हैं; बात समाप्त हो गई। न हम भरेंगे, न हम भुलाएंगे। और बड़ा आश्चर्य और बड़ा चमत्कार जो इस जगत में घटता है, वह यह है कि जो अपने खालीपन से राजी हो जाता है, उसका खालीपन मिट जाता है।
ओशो

Osho Prem Naman 🙏💞
Osho international

CamScanner

कहे कबीर दीवाना--(ओशो) प्रवचन--01

मैं ही इक बौराना—(प्रवचन—पहला)

11 मई, 1975 प्रात;
श्री ओशो आश्रम पूना

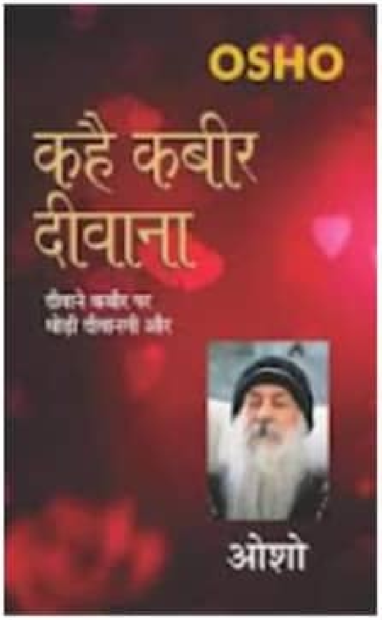

सूत्रसार :

जब मैं
भूला रे
भाई, मेरे सत
गुरु जुगत
लखाई।
किरि
या करम अचार मैं छाड़ा, छाड़ा तीरथ नहाना।
सगरी दुनिया भई सुनायी, मैं ही इक
बौराना।।
ना मैं जानूं सेवा बंदगी ना मैं
घंट बजाई।
ना मैं मूरत धरि सिंहासन ना मैं
पुहुप चढ़ाई।।
ना हरि रीझै जब तप कीन्हे ना काया
के जारे।
ना हरि रीझै धोति छाड़े ना पांचों के
मारे।।
दाया रखि धरम को
पाले जगसूं रहै उदासी।
अपना सा जिव सबको
जाने ताहि मिले अनिवासी।।

CamScanner

अहोभाव

हम इस दुनिया में जरूर हैं,

मगर हम इस दुनिया के नहीं हैं।

हमें आगे जाना है।

हमें पार जाना है।

पार का बुलावा प्रतिपल

आ रहा है। ओशो अहोभाव

CS CamScanner

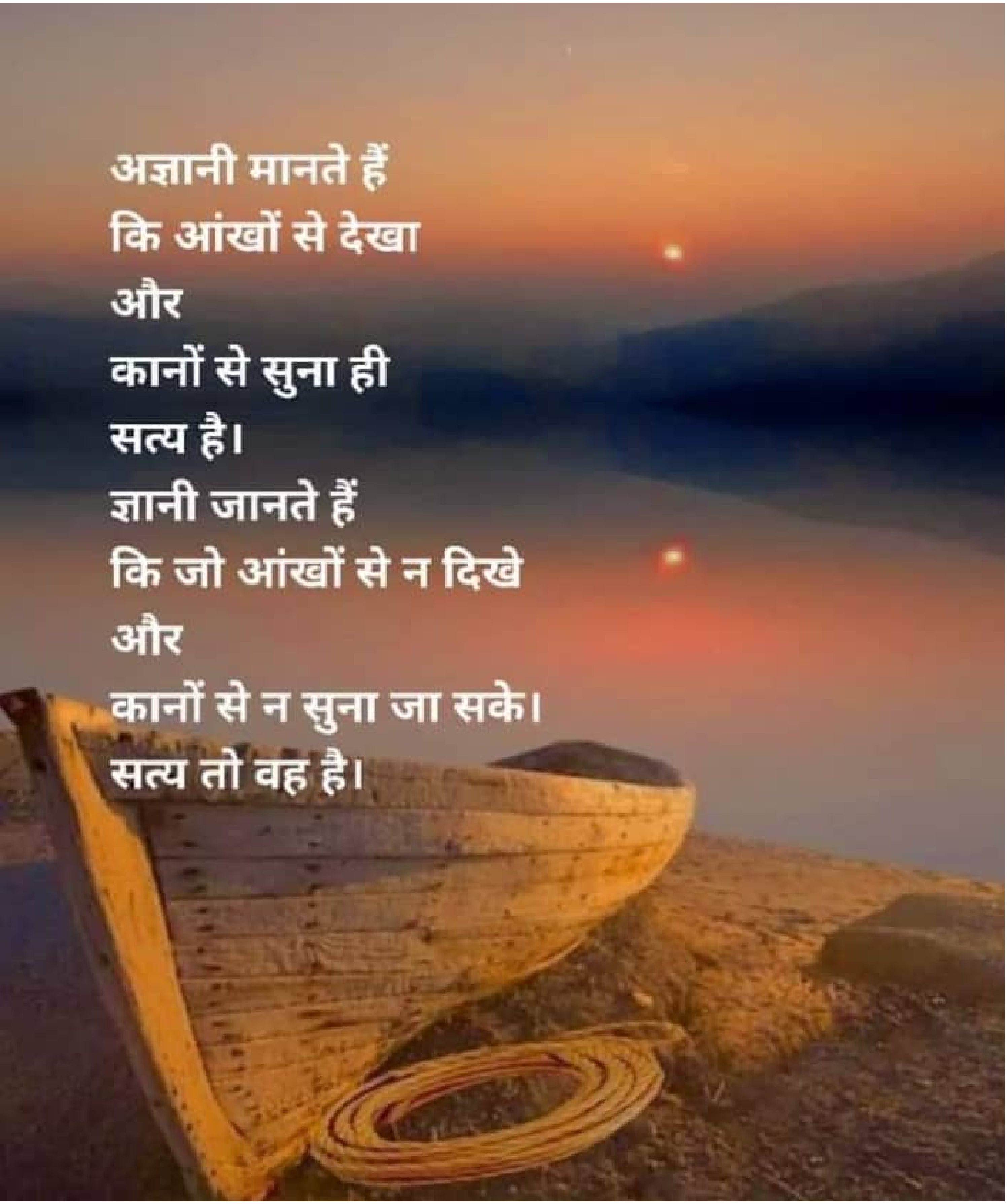
अज्ञानी मानते हैं
कि आंखों से देखा
और
कानों से सुना ही
सत्य है।
ज्ञानी जानते हैं
कि जो आंखों से न दिखे
और
कानों से न सुना जा सके।
सत्य तो वह है।

CamScanner

कभी सोचा है तुम्हारा ईस धरा पर आने का उद्देश्य क्या है।

अगर यह समझ आ गया तो तुमहारा जीवन सार्थक हुआ। अगर नहीं तो यह जीवन और व्यर्थ गया।।

CS CamScanner

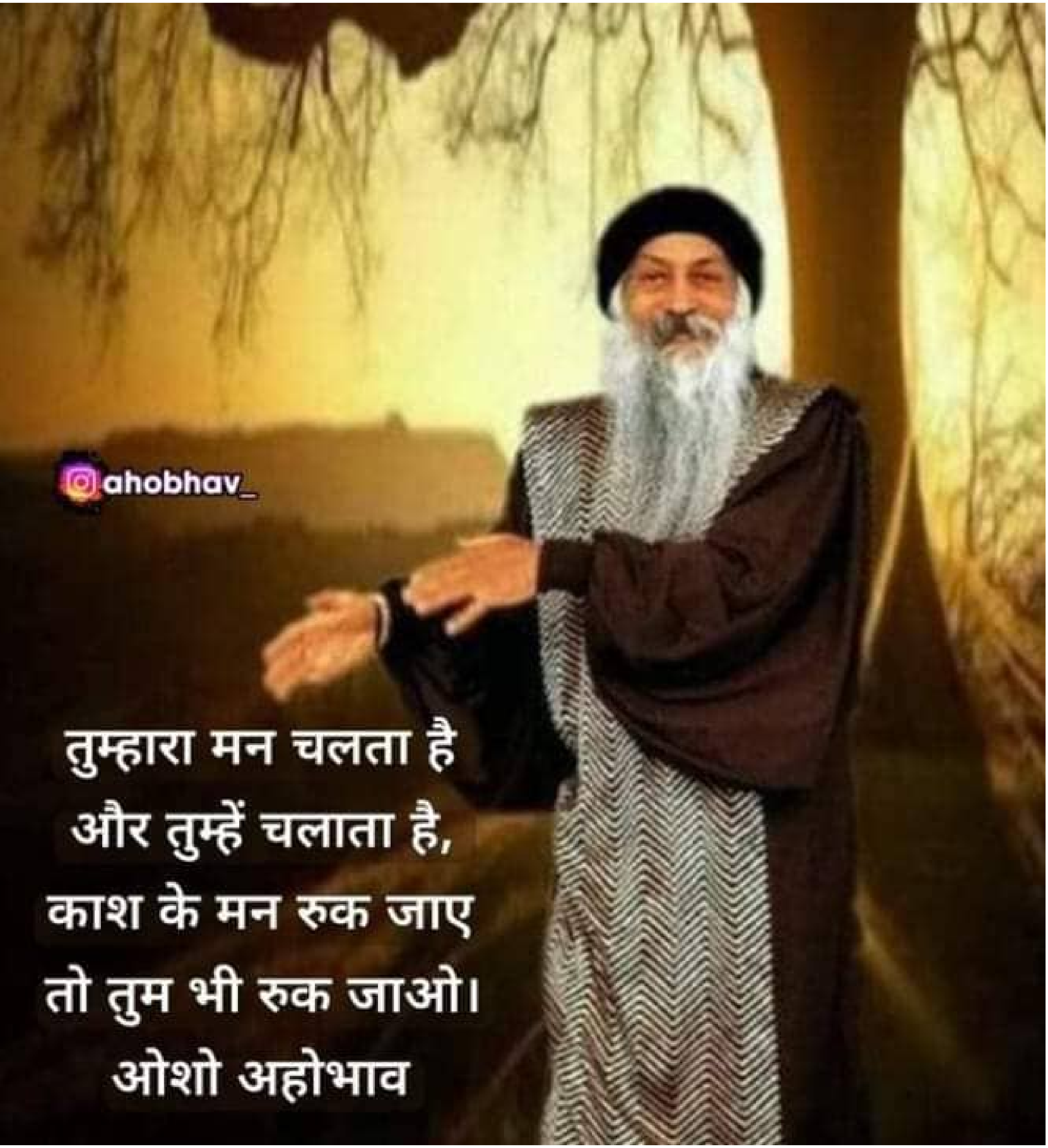

CamScanner

अहोभाव
दुनियाँ में जितने भी बड़े सन्यासी हुए हैं,
वह सब जवानी में ही हुए हैं क्योंकि
बुढ़ापे में वो ऊर्जा नहीं रह जाती। ओशो

CamScanner

CS CamScanner

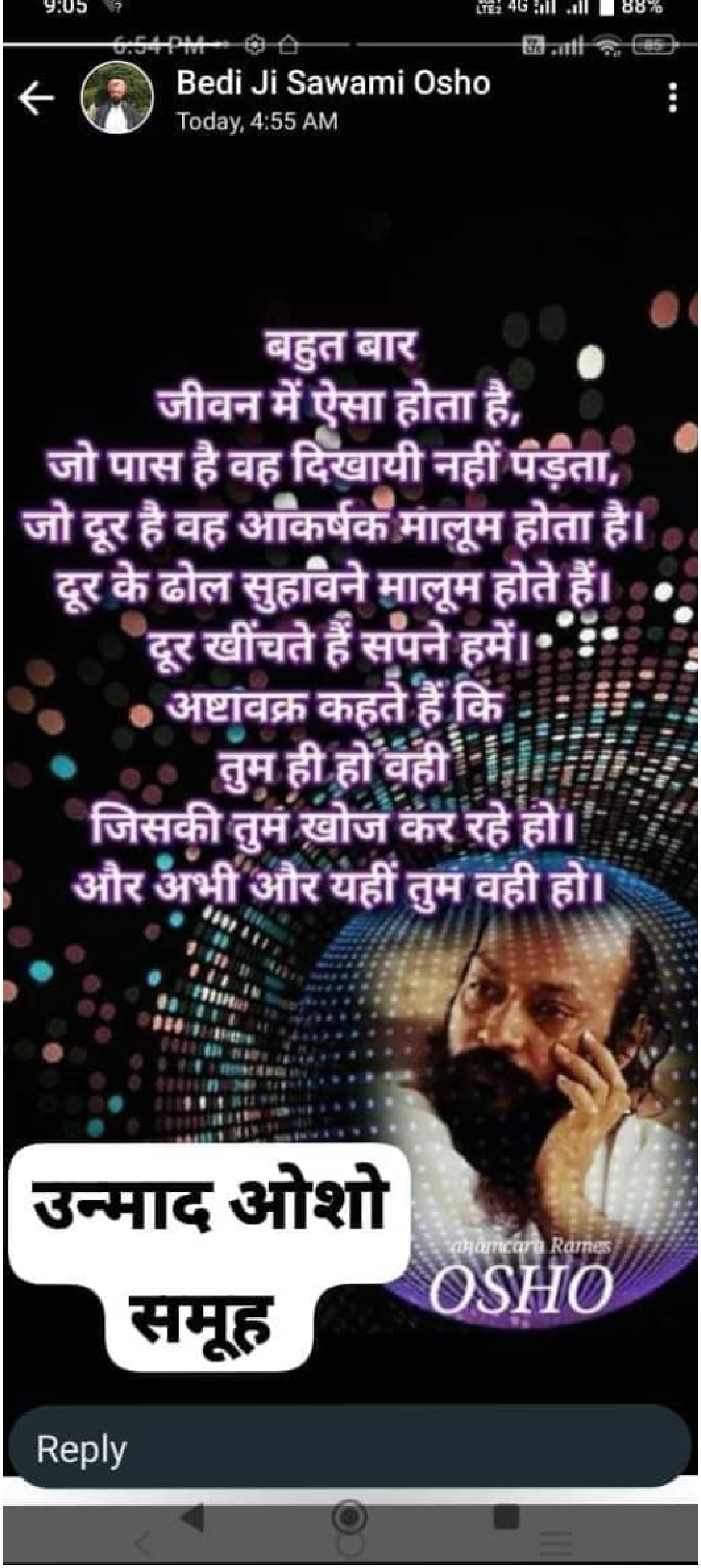
9:05
88%
6:54 PM
Bedi Ji Sawami Osho
Today, 4:55 AM
बहुत बार
जीवन में ऐसा होता है,
जो पास है वह दिखायी नहीं पड़ता,
जो दूर है वह आकर्षक मालूम होता है।
दूर के ढोल सुहावने मालूम होते हैं।
दूर खींचते हैं सपने हमें।
अष्टावक्र कहते हैं कि
तुम ही हो वही
जिसकी तुम खोज कर रहे हो।
और अभी और यहीं तुम वही हो।
उन्माद ओशो
समूह
OSHO
Reply

CamScanner

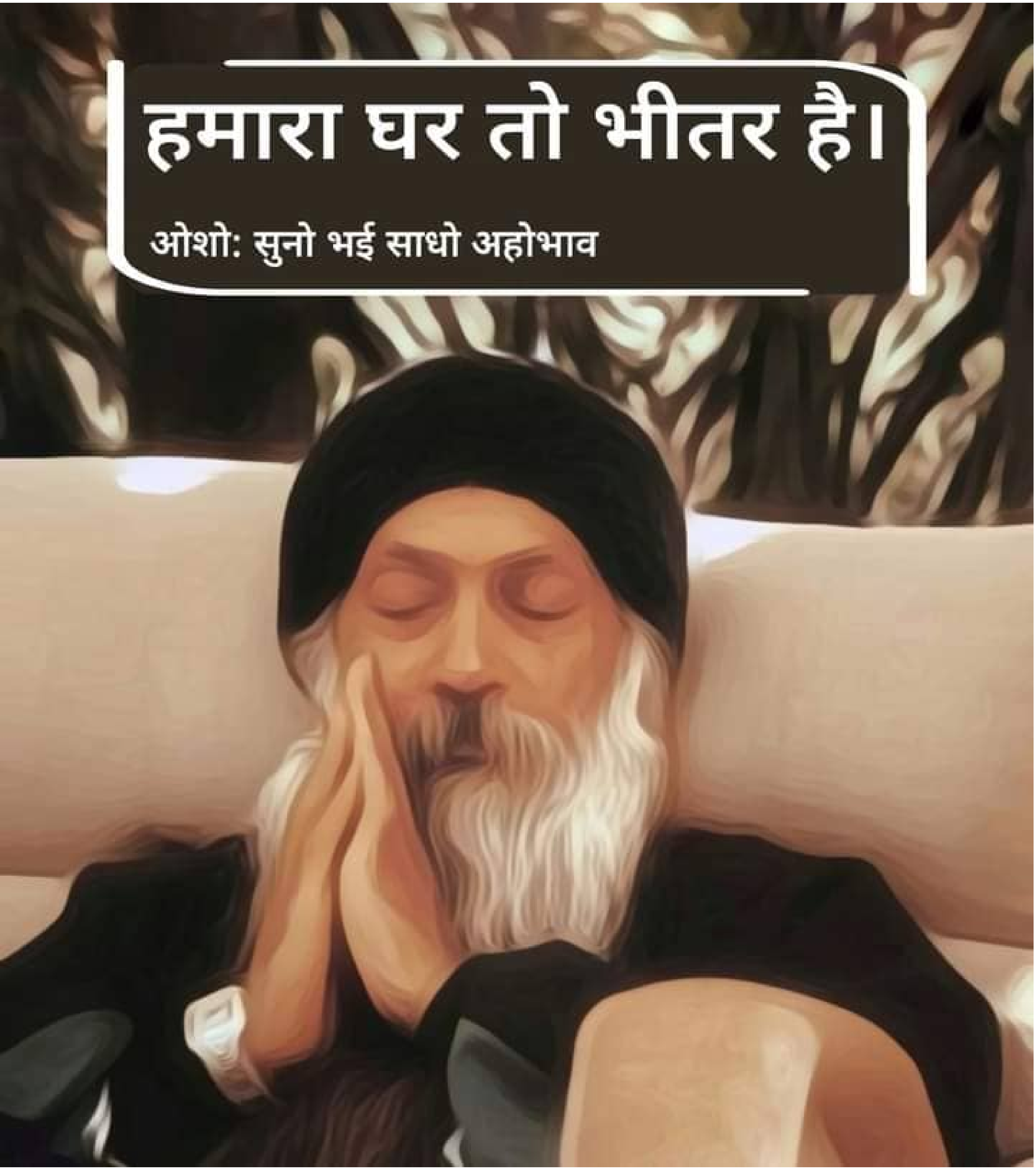

CamScanner

वह जो बंद आंख है
ध्यान करते बुद्ध की, या महावीर की,
वह इस बात की खबर है केवल कि
अब बाहर देखने योग्य कुछ भी न रहा।
जब पाने योग्य न रहा, तो देखने योग्य क्या रहा न:
देखते थे, क्योंकि पाना था। पाने का रस लगा था,
तो गौर से देखते थे। जो पाना हो, वही आदमी देखता है।
जब पाने की भ्रांति ही टूट गई तो आदमी आंख बंद कर लेता है।
बंद कर लेता है कहना ठीक नहीं, आंख बंद हो जाती है।
पलक अपने आप बंद हो जाती है।
फिर आंख को व्यर्थ ही दुखाना क्या फिर आंख को
व्यर्थ ही खोलकर परेशान क्या करना; और
यह जो दृष्टि पर
पलक का गिर जाना है,
यही भीतर दृष्टि का
पैदा हो जाना है।
आचार्य श्री रजनीश
एस धम्मो सनंतनो-(प्र-13)
अंतर्बाती को उकसाना ही ध्यान

CamScanner

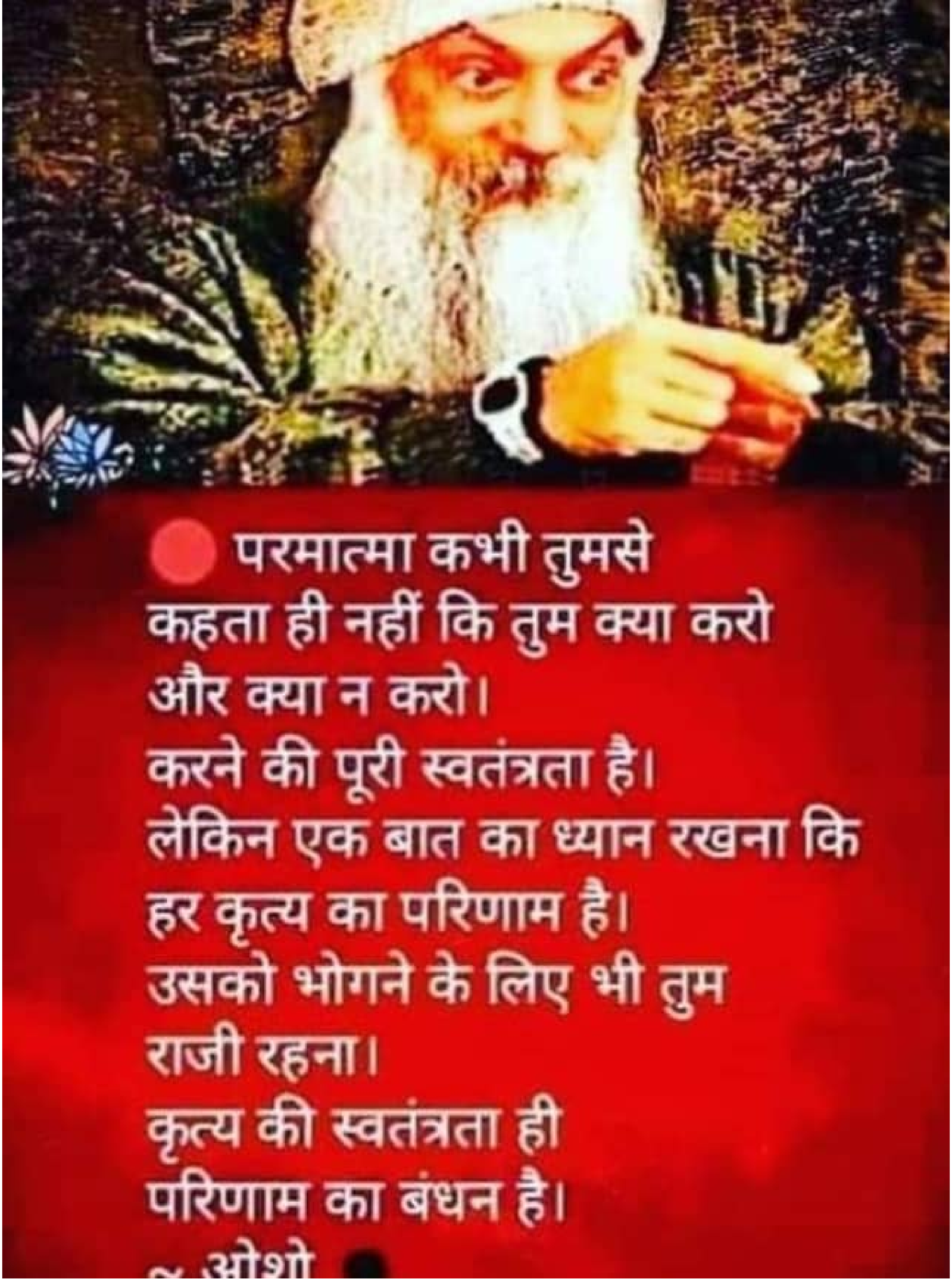
परमात्मा कभी तुमसे
कहता ही नहीं कि तुम क्या करो
और क्या न करो।
करने की पूरी स्वतंत्रता है।
लेकिन एक बात का ध्यान रखना कि
हर कृत्य का परिणाम है।
उसको भोगने के लिए भी तुम
राजी रहना।
कृत्य की स्वतंत्रता ही
परिणाम का बंधन है।
~ ओशो

CamScanner

Why is old considered useless? Because in old age the emphasis shifts from doing to Being, & our civilization, which is lost in doing, knows nothing of Being. It asks: Being? What do you do with it?

CamScanner

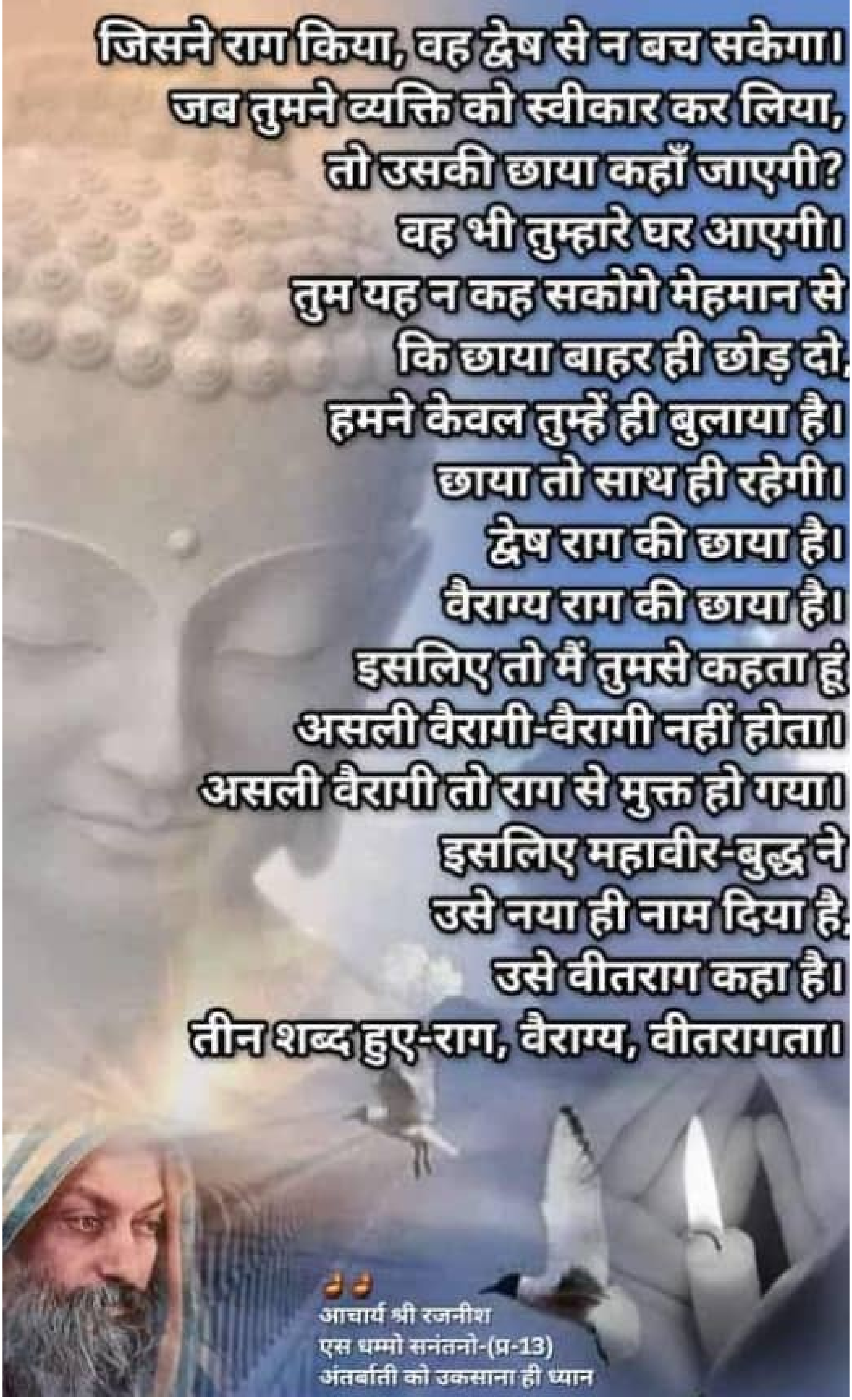
जिसने राग किया, वह द्वेष से न बच सकेगा।
जब तुमने व्यक्ति को स्वीकार कर लिया,
तो उसकी छाया कहाँ जाएगी?
वह भी तुम्हारे घर आएगी।
तुम यह न कह सकोगे मेहमान से
कि छाया बाहर ही छोड़ दो,
हमने केवल तुम्हें ही बुलाया है।
छाया तो साथ ही रहेगी।
द्वेष राग की छाया है।
वैराग्य राग की छाया है।
इसलिए तो मैं तुमसे कहता हूं
असली वैरागी-वैरागी नहीं होता।
असली वैरागी तो राग से मुक्त हो गया।
इसलिए महावीर-बुद्ध ने
उसे नया ही नाम दिया है,
उसे वीतराग कहा है।
तीन शब्द हुए-राग, वैराग्य, वीतरागता।
आचार्य श्री रजनीश
एस धम्मो सनंतनो-(प्र-13)
अंतर्बाती को उकसाना ही ध्यान

CamScanner

परमात्मा भविष्य नहीं है| परमात्मा
वर्तमान है| हवा का झोंका आए, तो
वही आता है| और सूरज की किरण
आए, तो वही आता है| और पक्षियों
के गीत हों, तो वही गाता है|
उसके अतिरिक्त तो यहां
कुछ है ही नहीं|

CamScanner

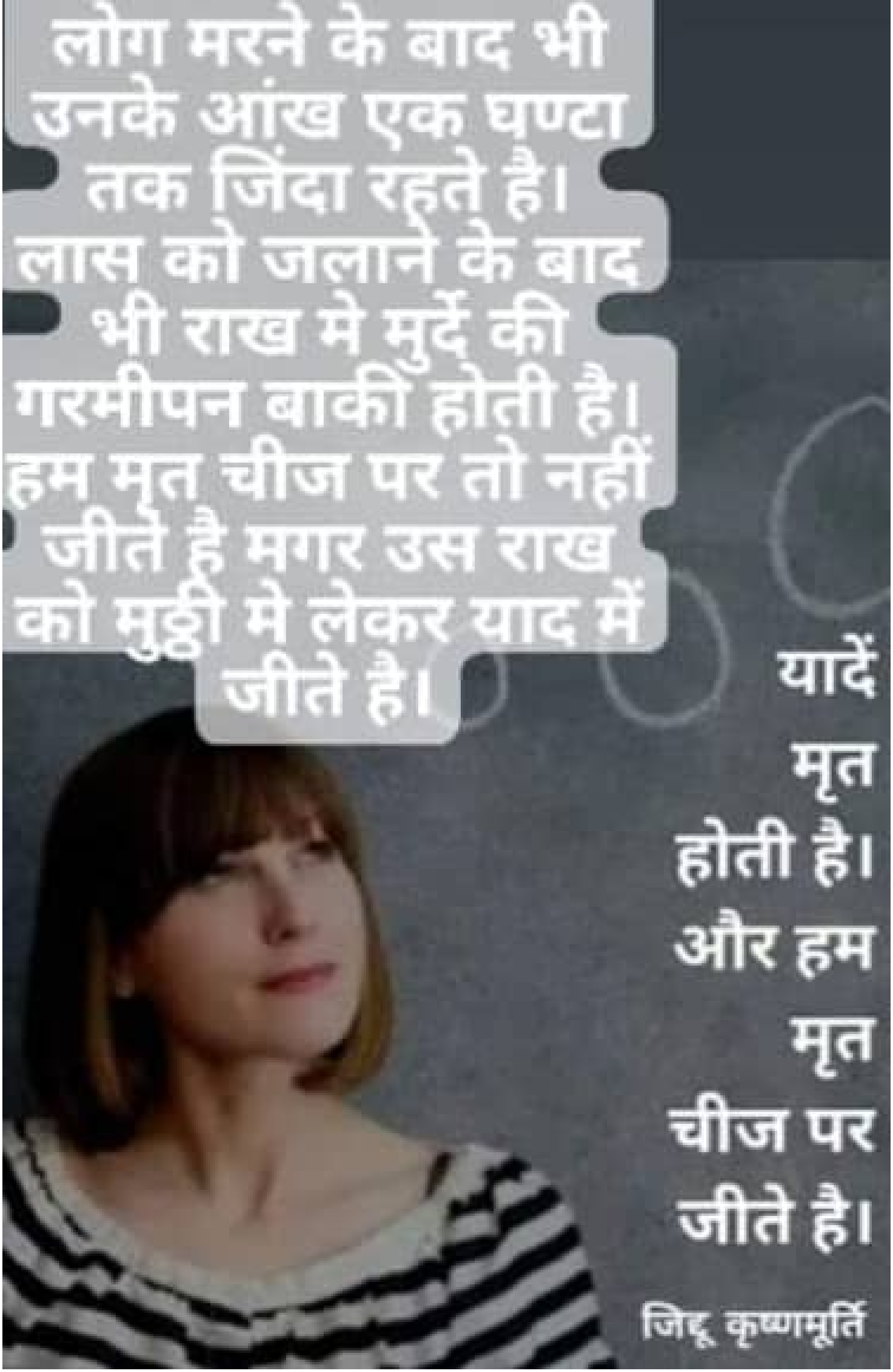

लोग मरने के बाद भी
उनके आंख एक घण्टा
तक जिंदा रहते है।
लास को जलाने के बाद
भी राख मे मुर्दे की
गरमीपन बाकी होती है।
हम मृत चीज पर तो नहीं
जीते है मगर उस राख
को मुठ्ठी मे लेकर याद में
जीते है।
यादें
मृत
होती है।
और हम
मृत
चीज पर
जीते है।
जिद्दू कृष्णमूर्ति

CamScanner

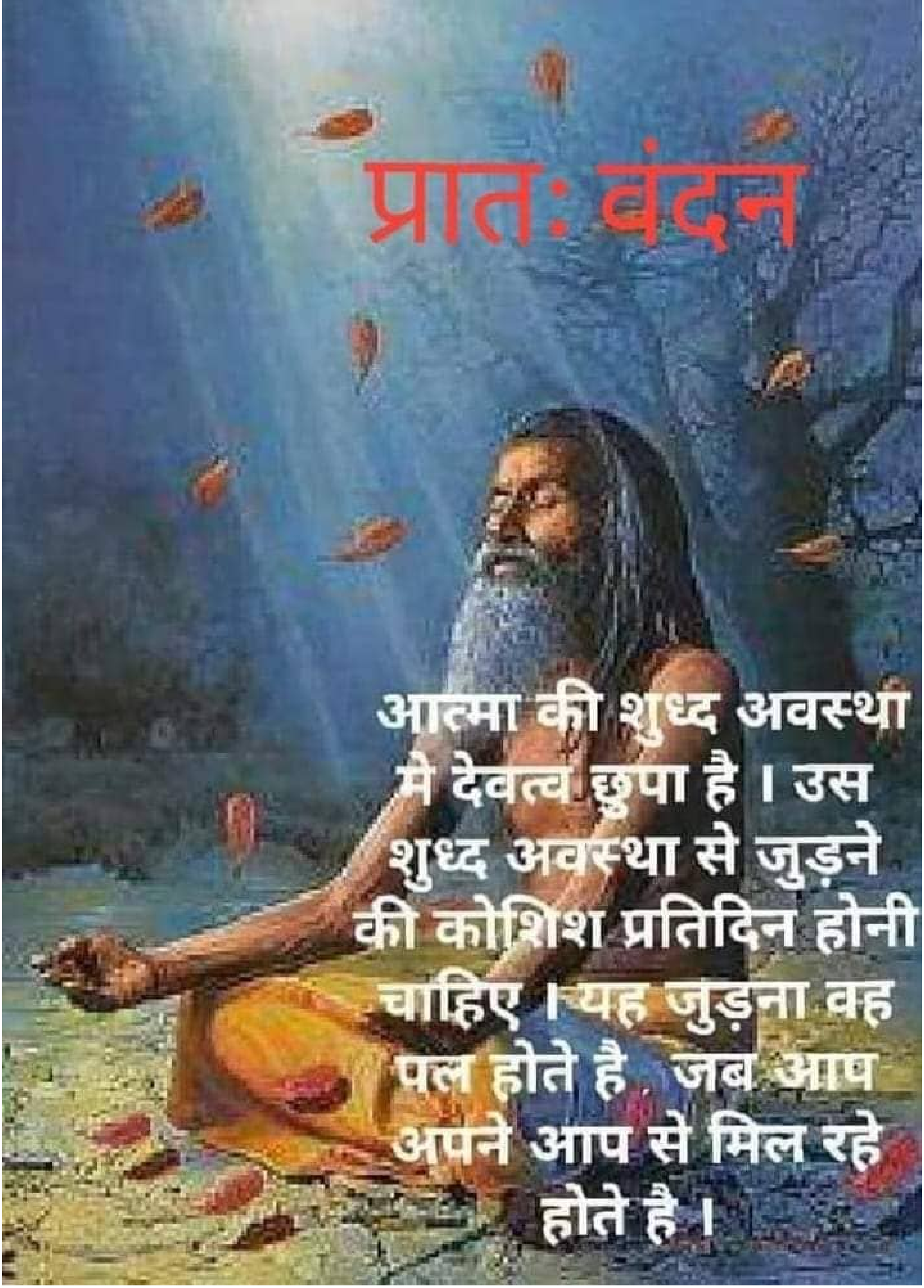
प्रातः वंदन
आत्मा की शुध्द अवस्था
मे देवत्व छुपा है । उस
शुध्द अवस्था से जुड़ने
की कोशिश प्रतिदिन होनी
चाहिए । यह जुड़ना वह
पल होते है जब आप
अपने आप से मिल रहे
होते है ।

CamScanner

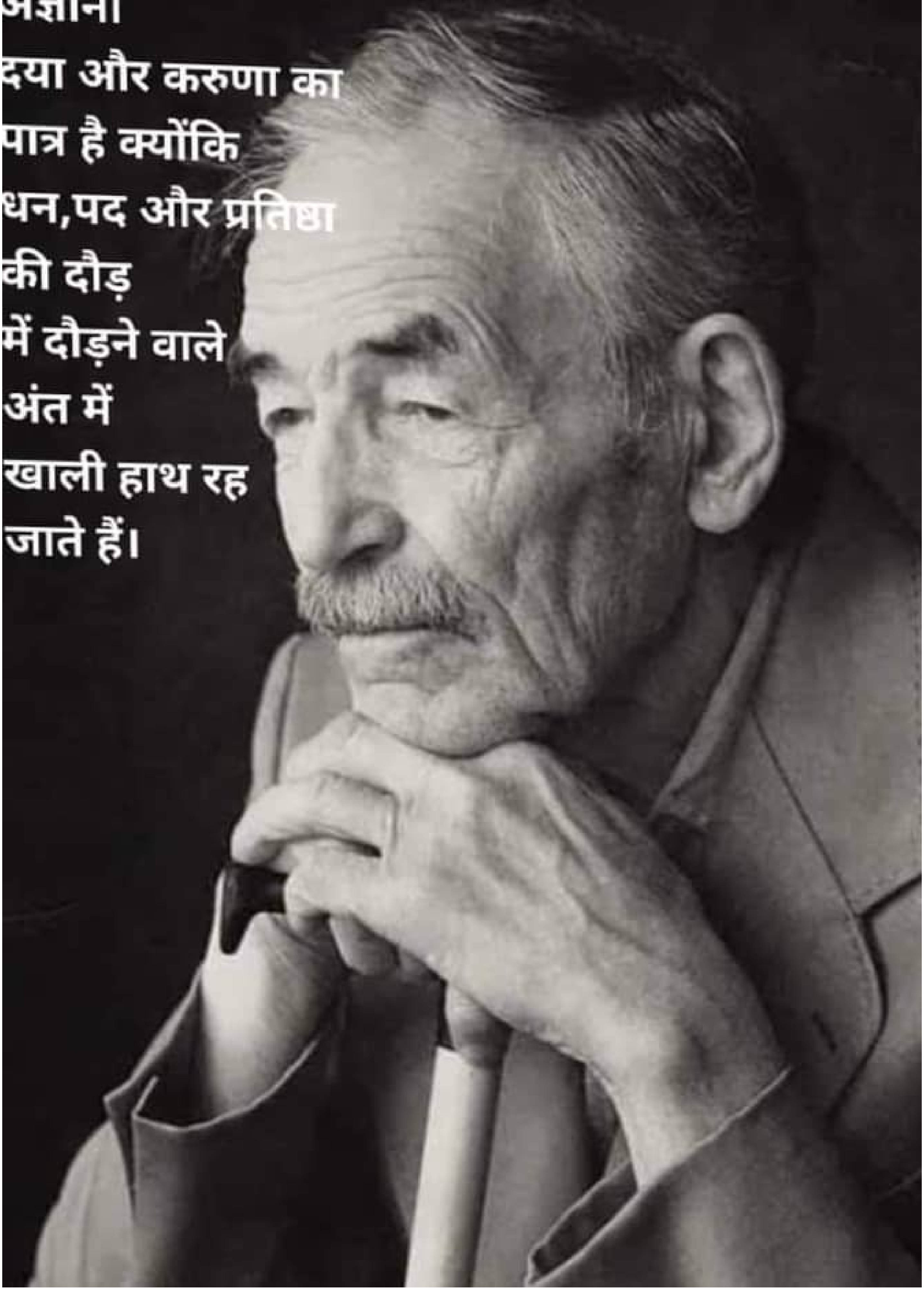
अज्ञानी
दया और करुणा का
पात्र है क्योंकि
धन,पद और प्रतिष्ठा
की दौड़
में दौड़ने वाले
अंत में
खाली हाथ रह
जाते हैं।

CamScanner

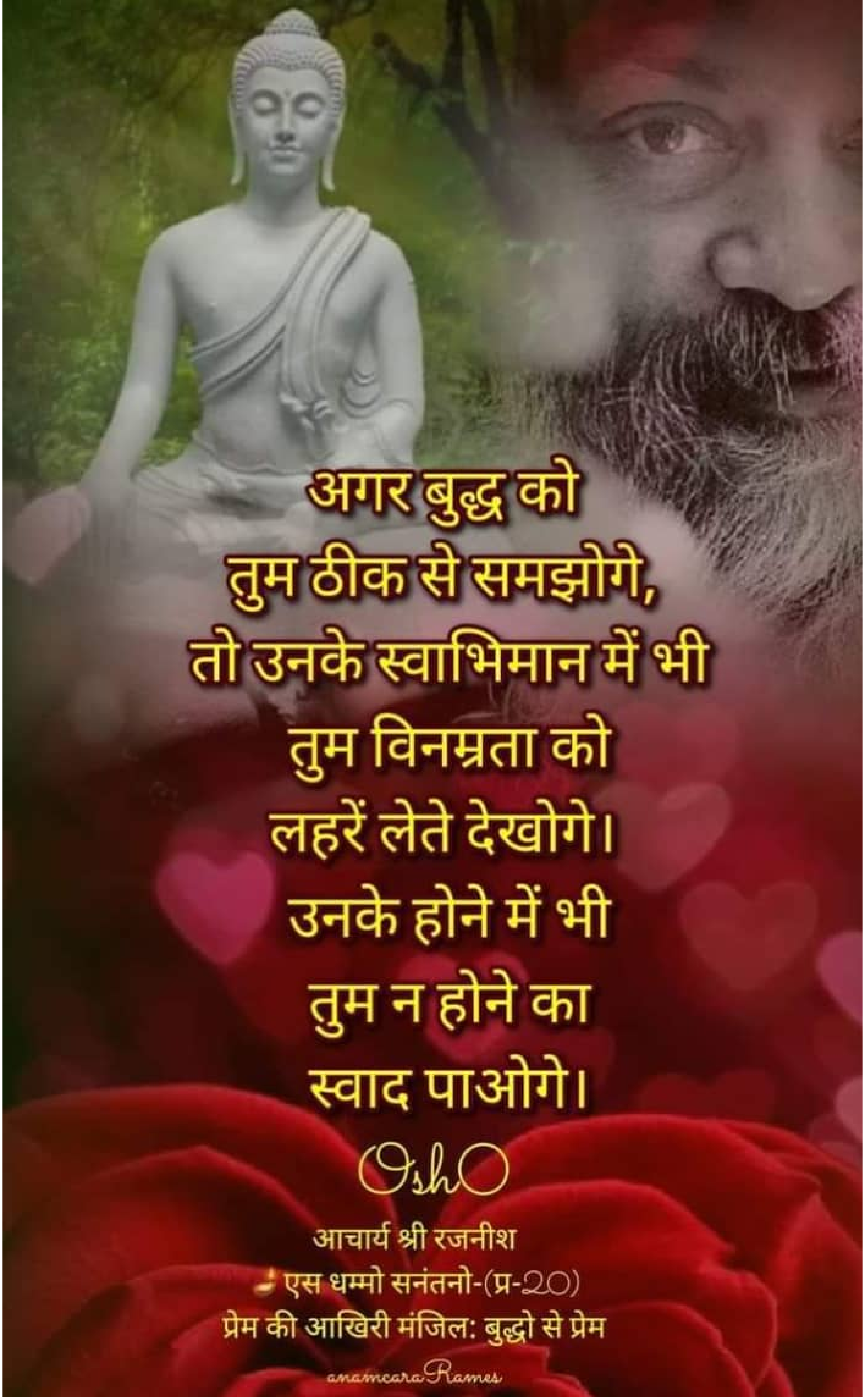
अगर बुद्ध को
तुम ठीक से समझोगे,
तो उनके स्वाभिमान में भी
तुम विनम्रता को
लहरें लेते देखोगे।
उनके होने में भी
तुम न होने का
स्वाद पाओगे।
OshO
आचार्य श्री रजनीश
एस धम्मो सनंतनो-(प्र-20)
प्रेम की आखिरी मंजिल: बुद्धो से प्रेम
anamcara Rames

CamScanner

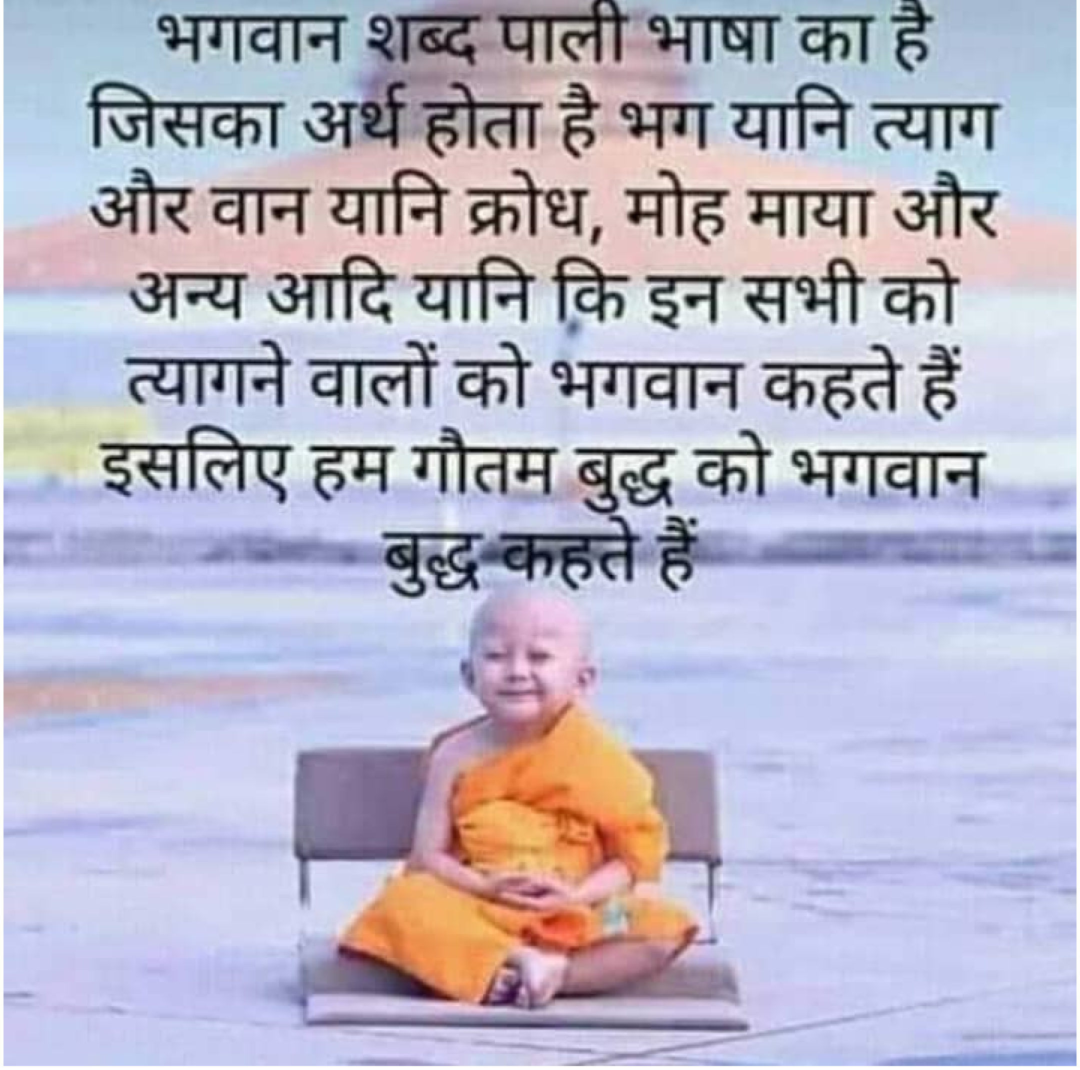
भगवान शब्द पाली भाषा का है
जिसका अर्थ होता है भग यानि त्याग
और वान यानि क्रोध, मोह माया और
अन्य आदि यानि कि इन सभी को
त्यागने वालों को भगवान कहते हैं
इसलिए हम गौतम बुद्ध को भगवान
बुद्ध कहते हैं

CamScanner

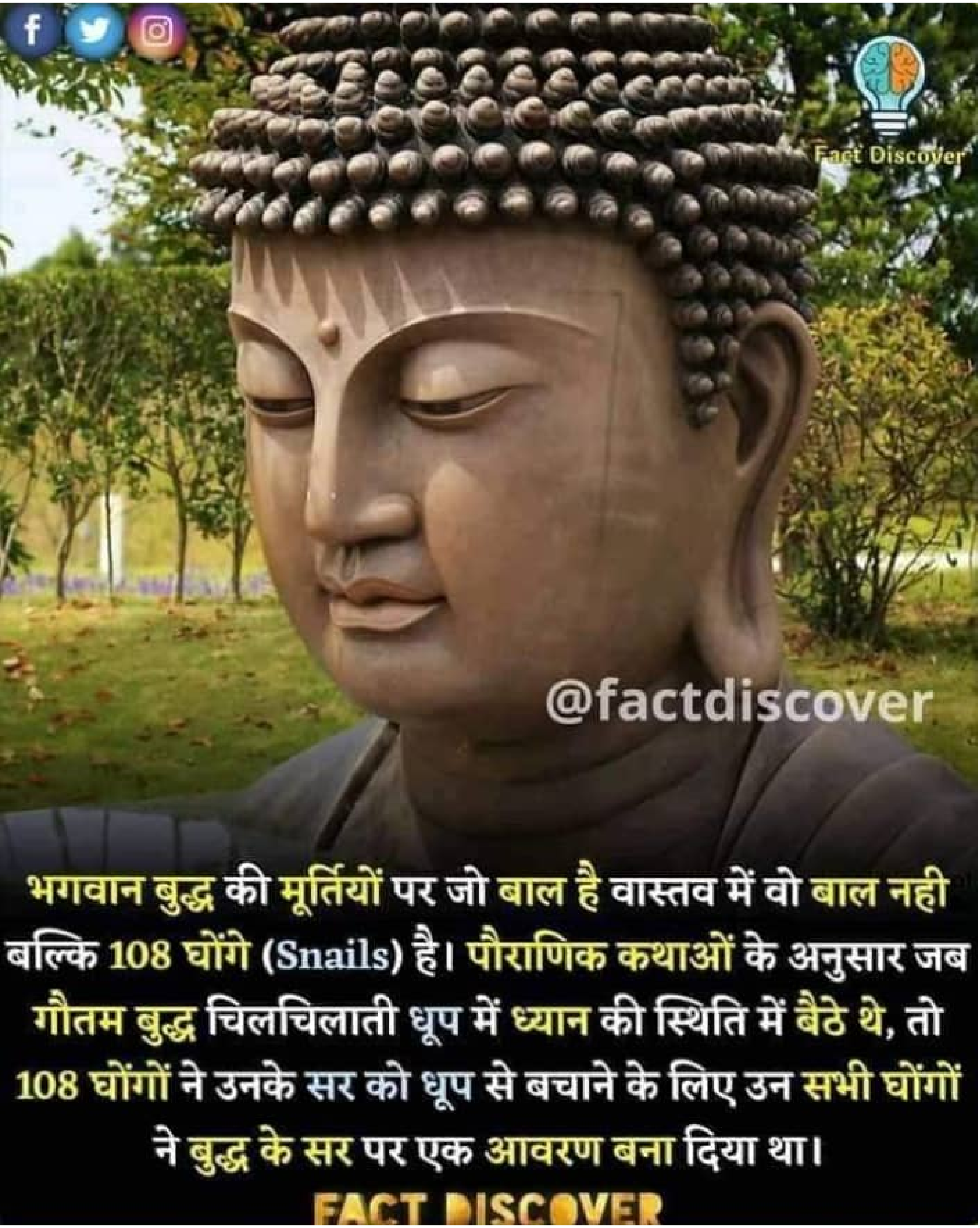
Fact Discover
@factdiscover
भगवान बुद्ध की मूर्तियों पर जो बाल है वास्तव में वो बाल नही
बल्कि 108 घोंगे (Snails) है। पौराणिक कथाओं के अनुसार जब
गौतम बुद्ध चिलचिलाती धूप में ध्यान की स्थिति में बैठे थे, तो
108 घोंगों ने उनके सर को धूप से बचाने के लिए उन सभी घोंगों
ने बुद्ध के सर पर एक आवरण बना दिया था।
FACT DISCOVER

CamScanner

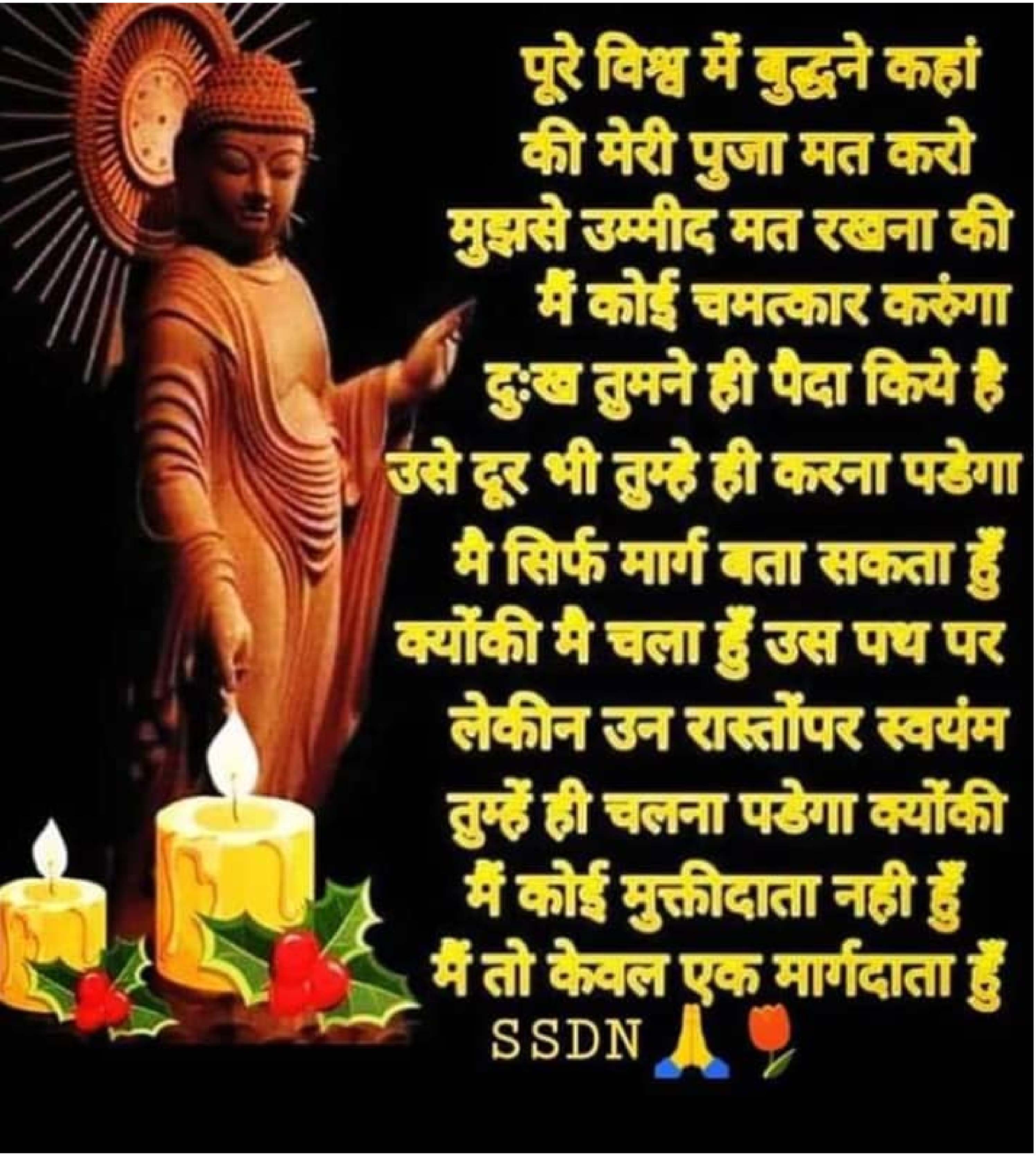
पूरे विश्व में बुद्धने कहां
की मेरी पुजा मत करो
मुझसे उम्मीद मत रखना की
मैं कोई चमत्कार करूंगा
दुःख तुमने ही पैदा किये है
उसे दूर भी तुम्हे ही करना पडेगा
मै सिर्फ मार्ग बता सकता हुं
क्योंकी मै चला हुँ उस पथ पर
लेकीन उन रास्तोंपर स्वयंम
तुम्हें ही चलना पडेगा क्योंकी
मैं कोई मुक्तीदाता नही हुँ
मैं तो केवल एक मार्गदाता हुँ
SSDN 🙏🌷

CamScanner

10:22 pm 64 KB/s 42%

more

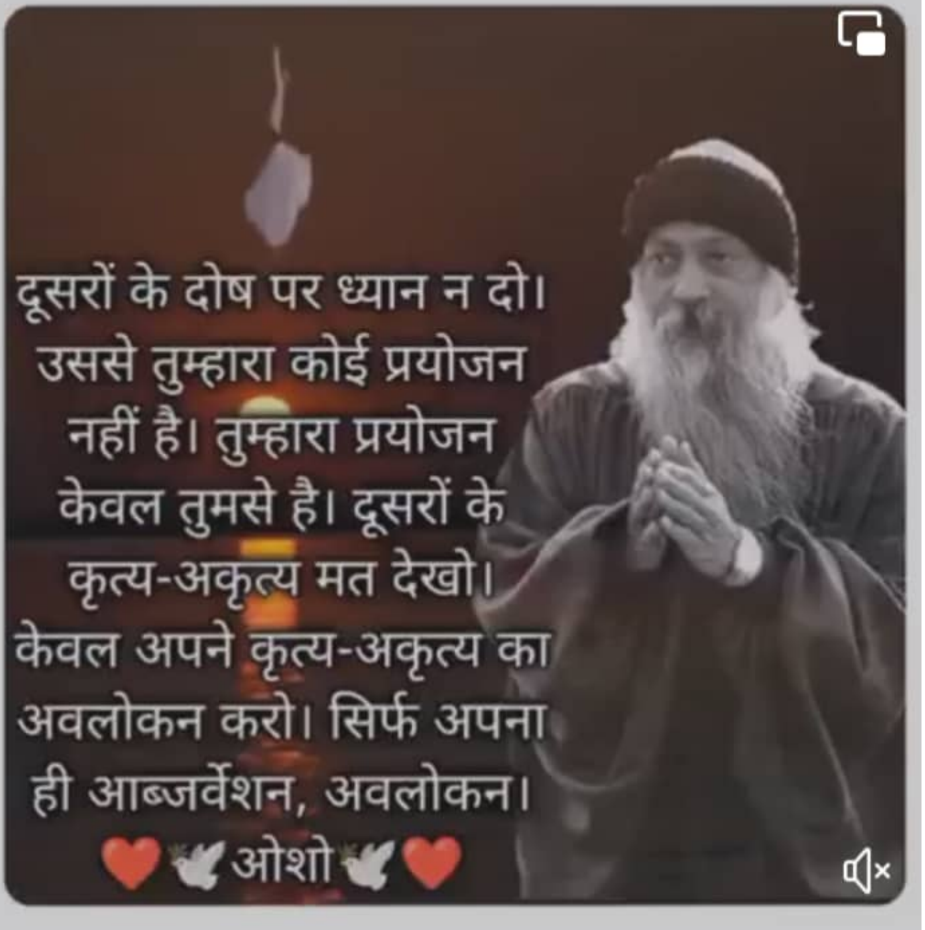

313 8 comments • 40 shares • 5.5K views

Like Comment Send Share

Suggested Pages for you

Suggested Pages for you

CamScanner

CamScanner

10:22 pm 136 KB/s VoLTE 4G 42%

35 23 comments

Like Comment Send Share

OSHO FRAGRANCE FRIENDS

Osho Ravi Yog · 1d · Mbrascatu ·

।।ओशो नमन।।

स्वयं की खोज स्वयं में!!🧘... See more

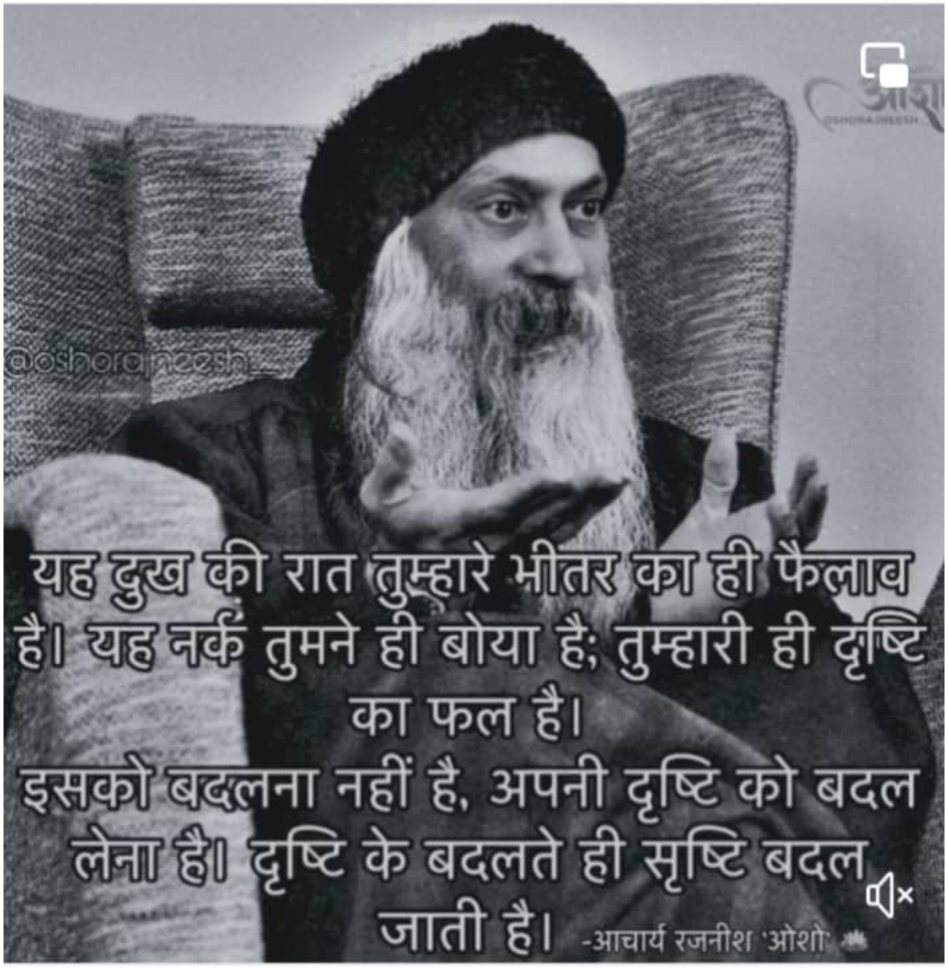

15 2 comments • 329 views

Like Comment Send

Suggested Pages for you

Suggested Pages for you

CamScanner

10:22 pm 1 KB/s 42%

blessed.
3d ·

मैं एक यात्रा में था।
गर्मी के दिन थे और उस वर्ष वर्षा नहीं हुई थी,
उस इलाके में। स्टेशन पर गाड़ी रुकी थी,
एक आदमी दस दस पैसे में एक गिलास पानी बेच रहा था।
दस पैसे में एक गिलास ठंडा पानी,
कहता हुआ वह बढ़ता जाता, पैसे इकट्ठे करता जाता।
एक आदमी जो मेरे पास ही बैठा था, डिब्बे में,
उसने कहा, आठ पैसे में न दोगे?
वह पानी बेचने वाला रुका ही नहीं,
उसने कहा, फिर तुम्हें प्यास ही नहीं लगी।
जब प्यास लगी हो, तो कोई दस पैसे,
आठ पैसे की बात करता है!
यह तो प्यास न लगे हुए लोगों की बातें हैं।
वह मुझे जंच गई बात;
उसने ठीक कहा कि दो पैसे की फिक्र करोगे तुम,
जब प्यास लगी हो?
तब आदमी सब देने को तैयार हो सकता है।
हिसाब किताब तभी तक चलता है,
जब तक प्यास न लगी हो।

तुम कहते हो तुम हिंदू हो, मुसलमान हो, ईसाई हो।
ये सब प्यास न लगे होने की बातें हैं।
जब प्यास लगती है,
तो कौन हिंदू, कौन मुसलमान, कौन ईसाई?
जब प्यास लगती है तो तुम परमात्मा को माँगते हो,
मंदिर मस्जिद गुरूद्वारे से कोई लेना-देना नहीं रह जाता।
इनसे कहीं प्यास बुझी है?
*और जब प्यास लगती है तो तुम हिसाब-किताब नहीं लगाते।

CamScanner

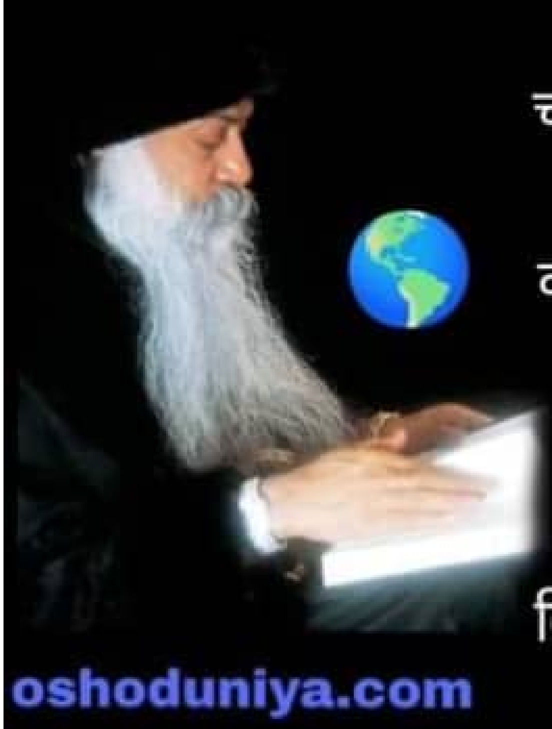

तुम अपेक्षा रखते होओगे कि एक बुद्धत्व को उपलब्ध व्यक्ति को सर्वज्ञ होना चाहिए, और मैं तो एक कप चाय भी नहीं बना सकता! “मैं पूरे इतिहास में पहला व्यक्ति हूं जो प्रामाणिकता और ईमानदारी से स्वीकार करता है कि चाहे वह आत्म-बोध हो,या जागरण हो, या एनलाइटनमेंट हो, या बुद्धत्व, यह सब किसी निश्चित क्षेत्र तक ही सीमित है। यह स्वयं की चेतना तक सीमित है..✍️❤️💻

❤️सदगुरू ओशो❤️

CamScanner

यह तुम्हारा ही चुनाव है।
अगर परमात्मा तुम्हें नहीं मिलता,
तो इसमें परमात्मा को दोष मत देना,
तुमने उसे अभी चुना ही नहीं; क्योंकि जिन्होंने भी,
जब भी उसे चुना है, तत्क्षण वह मिल गया है-
-एक क्षण की भी वहां देरी नहीं है।
लेकिन अगर तुम्हीं न चाहो तो परमात्मा
तुम्हारे ऊपर जबरदस्ती नहीं करता;
सत्य तुम्हारे ऊपर जबरदस्ती आरूढ़ नहीं होता।
तुम्हें जन्मों-जन्मों तक सत्य को इंकार करने की
स्वतंत्रता है।
यही मनुष्य की गरिमा है,
यही मनुष्य का दुर्भाग्य भी।

ओशो

CamScanner

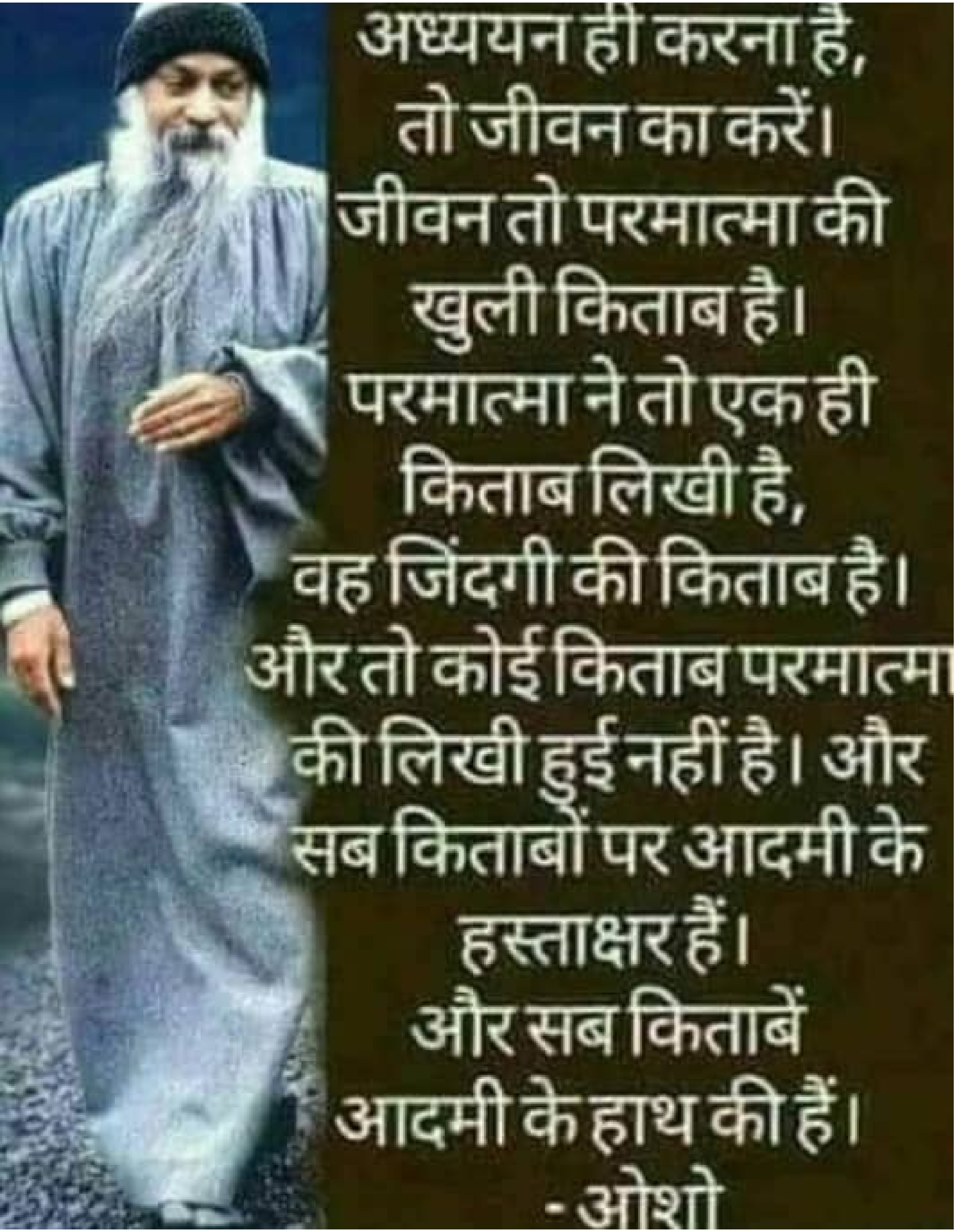
अध्ययन ही करना है,
तो जीवन का करें।
जीवन तो परमात्मा की
खुली किताब है।
परमात्मा ने तो एक ही
किताब लिखी है,
वह जिंदगी की किताब है।
और तो कोई किताब परमात्मा
की लिखी हुई नहीं है। और
सब किताबों पर आदमी के
हस्ताक्षर हैं।
और सब किताबें
आदमी के हाथ की हैं।
- ओशो

CamScanner

जिस दिन मां के पेट में गर्भाधान होता है तो पहला एक्सपोजर होता है,जिस दिन बच्चा जन्म लेताहै,उसदिन दूसरा एक्सपोजर होता है. और यह दोनों एक्सपोजर संवेदनशील चित्त पर फिल्म की भांति अंकित हो जाते हैं.पूरा जगत उसक्षण में बच्चा अपनेभीतर अंकित करलेता है.और उसकी एम्पेथीज,समानुभूतियां निर्मित हो जाती हैं जानकर आप हैरान होंगे कि70 से 90%बच्चे रात में पैदा होते हैं!यह थोड़ा हैरानी काहै.आमतौर से 50% होनेचाहिए.कभी भूल चूक दो चार प्रतिशत इधरउधर हो,लेकिन 90% तक बच्चे रातमें जन्म लेतेहै 10% तक बच्चे मुश्किल से दिन में जन्म लेते हैं.अकारण नहीं होसकती यहबात,अगर हम बुद्ध,महावीर से पूछें तो वहकहेंगे कि अधिकबच्चे इसलिए रातमें जन्मलेते हैं क्योंकि अधिकआत्माएं सोयी हुई हैं.दिनको वे नहीं चुनसकते, दिनको चुनना कठिन है.और हजार कारण हैं-वैज्ञानिकलारेंज का कहना है,फर्स्टमूमेंट ऑफ एक्सपोजर बड़ा महत्वपूर्ण है-ओशो,**ज्योतिष अर्थात अध्यात्म**

CamScanner

10:16 pm 92 KB/s 43%

Osho Naman 🙏❤️

2.5K 29 comments • 454 shares

Like Comment Send Share

ओशो-संसार

Yashodanandan Sharma · 2h ·

CamScanner

मैं
तुम्हारे सारे गुरुओं से सावधान रहा.....
तुम
मेरे सारे शिष्यों से
सावधान रहना ।
--ओशो

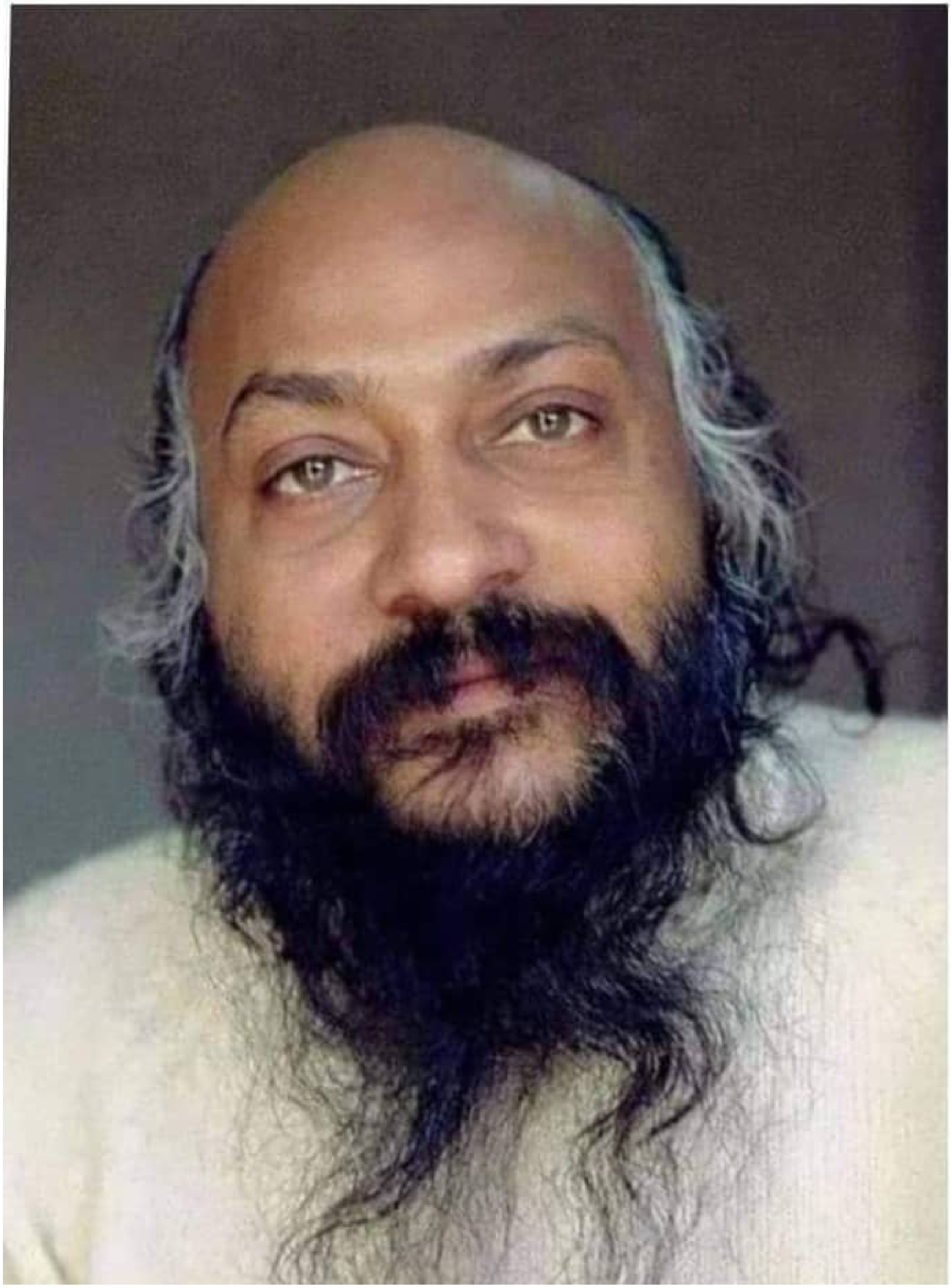

CamScanner

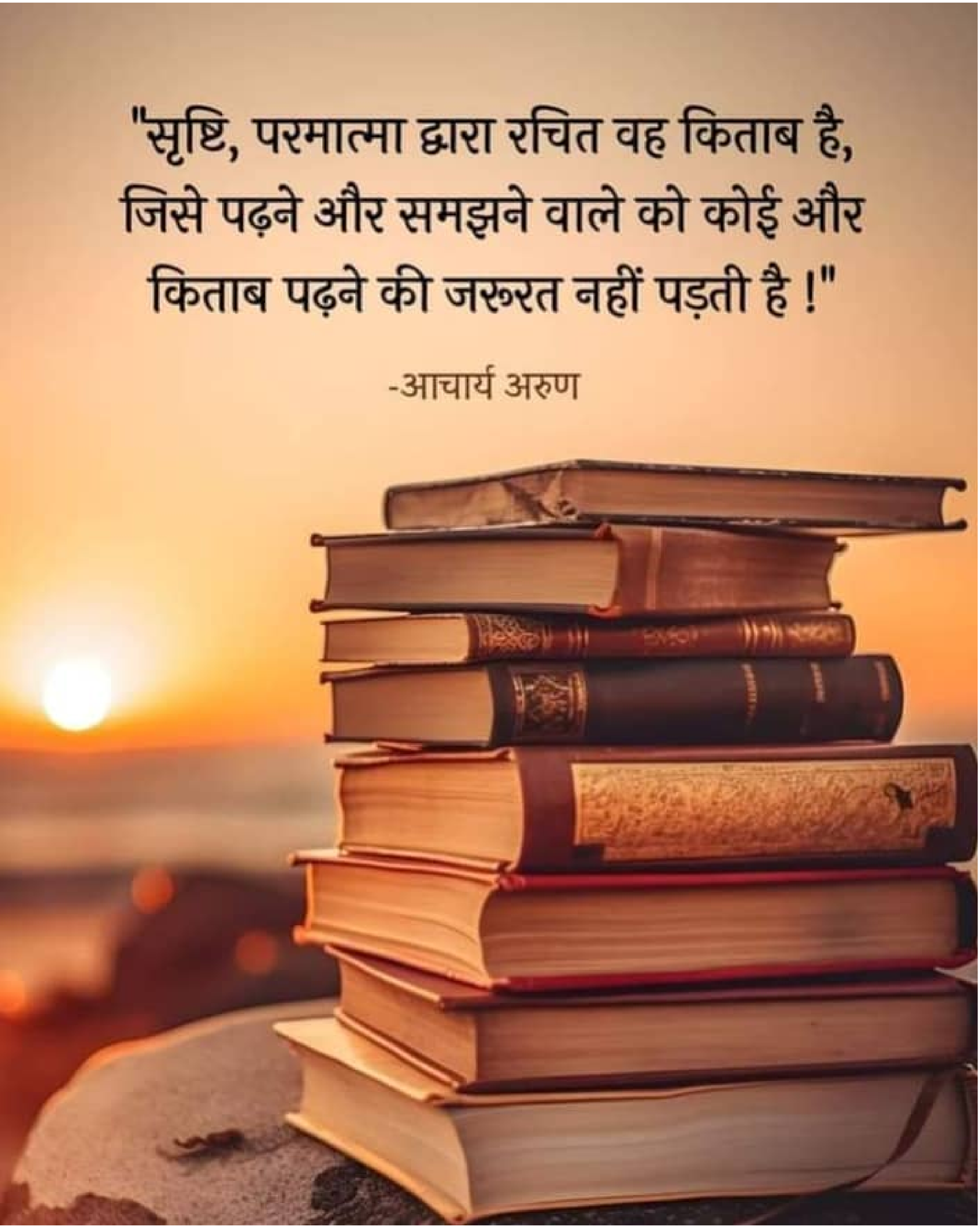
"सृष्टि, परमात्मा द्वारा रचित वह किताब है,
जिसे पढ़ने और समझने वाले को कोई और
किताब पढ़ने की जरूरत नहीं पड़ती है !"
-आचार्य अरुण

CamScanner

ध्यान के सारे प्रयोग मौलिक रूप से एक ही काम करते हैं--विधियां कितनी ही भिन्न हों मगर मौलिक प्रयोजन एक है--कि कैसे तुम्हारे चित्त के पर्दे पर चलते हुए चित्रों को विदा किया जाये। धीरे-धीरे धीरे-धीरे सारे चित्र विदा हो जाते हैं, खाली एक शून्य रह जाता है तुम्हें घेरे हुए। उसी शून्य में आत्मस्मरण होता है। स्मरण कहना ठीक होगा, दर्शन कहना ठीक नहीं होगा; ज्ञान कहना ठीक नहीं होगा, बोध कहना ठीक होगा। एक बोध जग उठता है: मैं साक्षी हूं।

सहज योग-12 ,ओशो

CamScanner

CamScanner

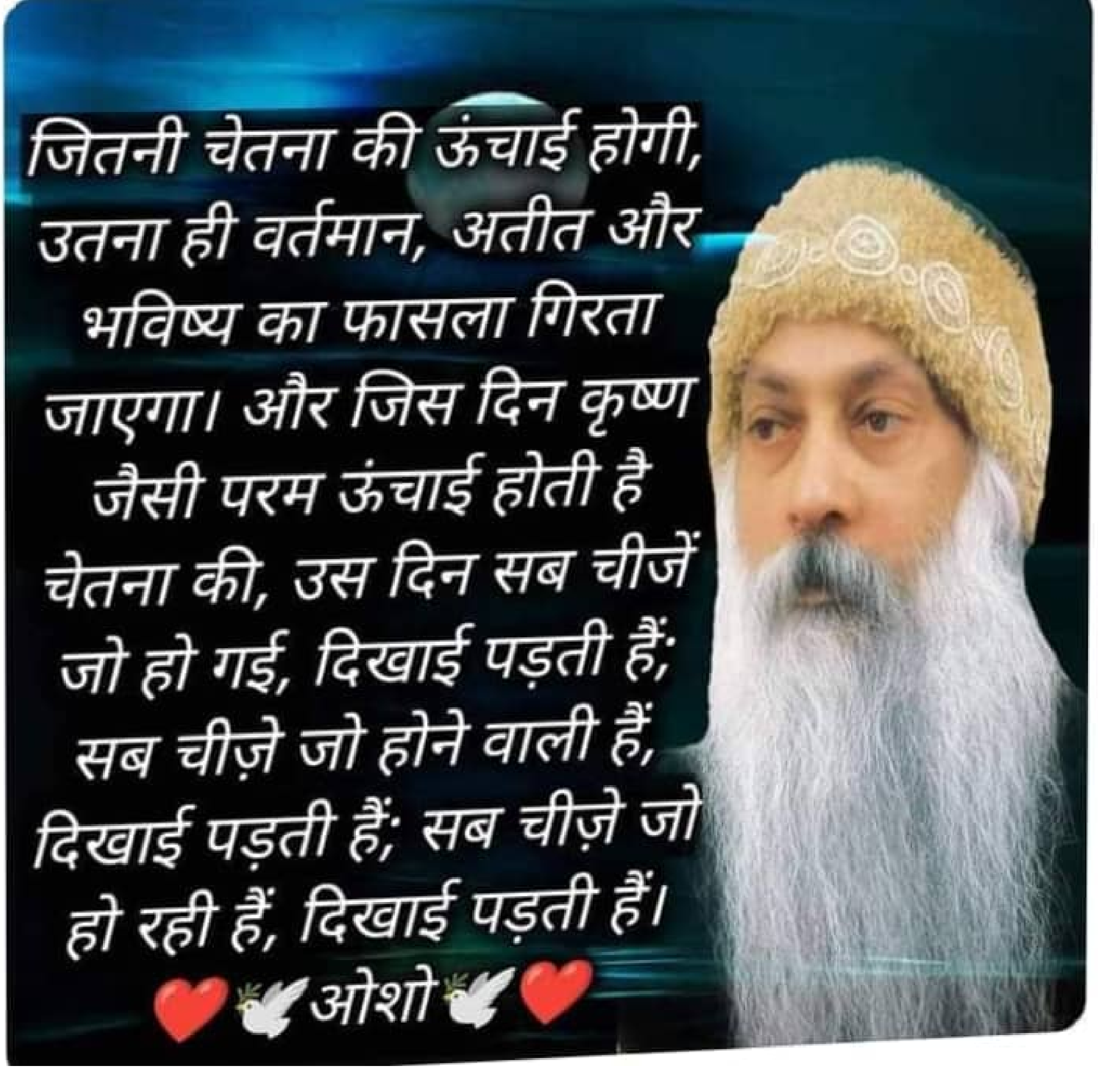
जितनी चेतना की ऊंचाई होगी, उतना ही वर्तमान, अतीत और भविष्य का फासला गिरता जाएगा। और जिस दिन कृष्ण जैसी परम ऊंचाई होती है चेतना की, उस दिन सब चीजें जो हो गईं, दिखाई पड़ती हैं; सब चीज़े जो होने वाली हैं, दिखाई पड़ती हैं; सब चीज़े जो हो रही हैं, दिखाई पड़ती हैं।
❤️🕊️ओशो🕊️❤️

CamScanner

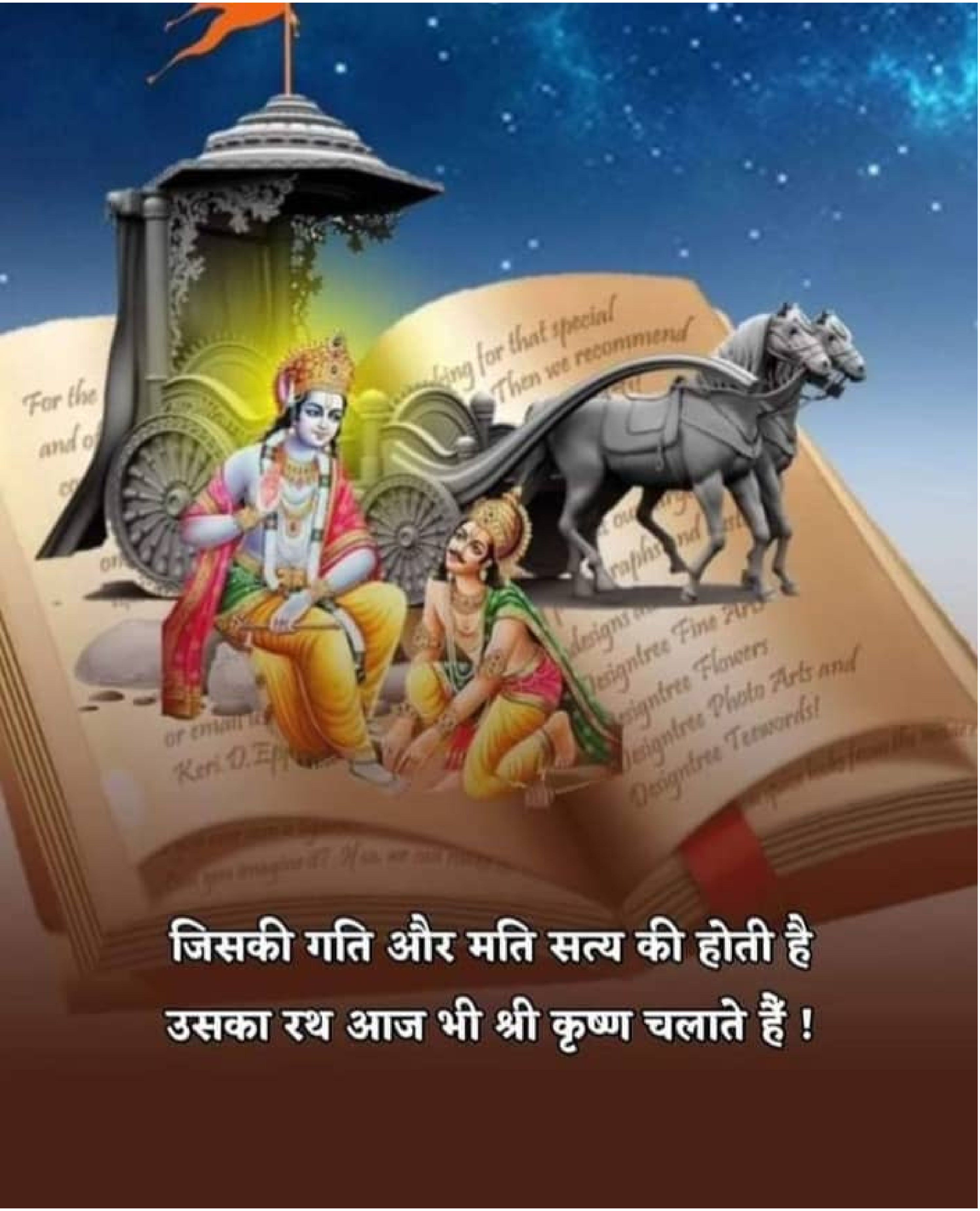

CamScanner

थोड़ा प्रयोग करके देखो, चौबीस घंटे, ज्यादा नहीं। आप जन्म से ही लड़ाई का प्रयोग करते आ रहे हैं। चौबीस घंटे तय कर लें कि आज सुबह छह बजे से कल सुबह छह बजे तक, जो भी होगा, मैं स्वीकार करूंगा। मैं कोई विवाद और विरोध नहीं खड़ा करूंगा. देखना, चौबीस घंटे में आपके जीवन में एक नयी हवा आ जायेगी। जैसे एक खिड़की अचानक खुल गई और ताजी हवा आपके जीवन में आने लगी। फिर ये चौबीस घंटे कभी ख़त्म नहीं होंगे. एक बार जब आप इसका अनुभव कर लेंगे, तो आप इसमें गहराई से उतरना शुरू कर देंगे।

ओशो

CS CamScanner

जो दिखाई पड़ रहा है, वह संसार है; लेकिन हर दिखाई पड़ने वाले के भीतर जो अद्रश्य छिपा है, वही गोविंद है वही परमात्मा है।

- आचार्य रजनीश

CamScanner

सत्यं एव जयते नानृतम्।

निश्चित ही सत्य जीतता है, असत्य नहीं।
मगर सत्य लाओगे कहां से?
ध्यान के अतिरिक्त न कभी सत्य आया है, न आ सकता है।
शास्त्र से नहीं आता, सिध्दांतो से नहीं आता,
सिर्फ अपने भीतर परम मौन, पूर्ण शून्यता में उतरता है।
निर्विचार अवस्था में सत्य का बोध होता है।
लेकिन लोग अजीब हैं!
लोग सत्य के संबंध में विचार करने में लगे हैं कि सत्य क्या है!
यूं वे दर्शन शास्त्र में भटक जाते हैं।

दीपक बारा नाम का, ओशो

CamScanner

*बुद्धिमान आदमी वही है
जो कर्म करते हुए जाग्रत है। जो कर रहा है
उसे परिपूर्ण जागरण से कर रहा है।
इसीलिए बुद्धिमान आदमी कभी
पश्चात्ताप नहीं करता,
पश्चात्ताप कर नहीं सकता।
क्योंकि जो किया था, जागकर किया था।
करना चाहा था तो किया था,
इसलिए पश्चात्ताप का कोई कारण नहीं।
न करना चाहा था तो नहीं किया था,
इसलिए पश्चात्ताप का कोई कारण नहीं।
पश्चात्ताप मूढ़ता का हिस्सा है।*

~ ओशो

CamScanner

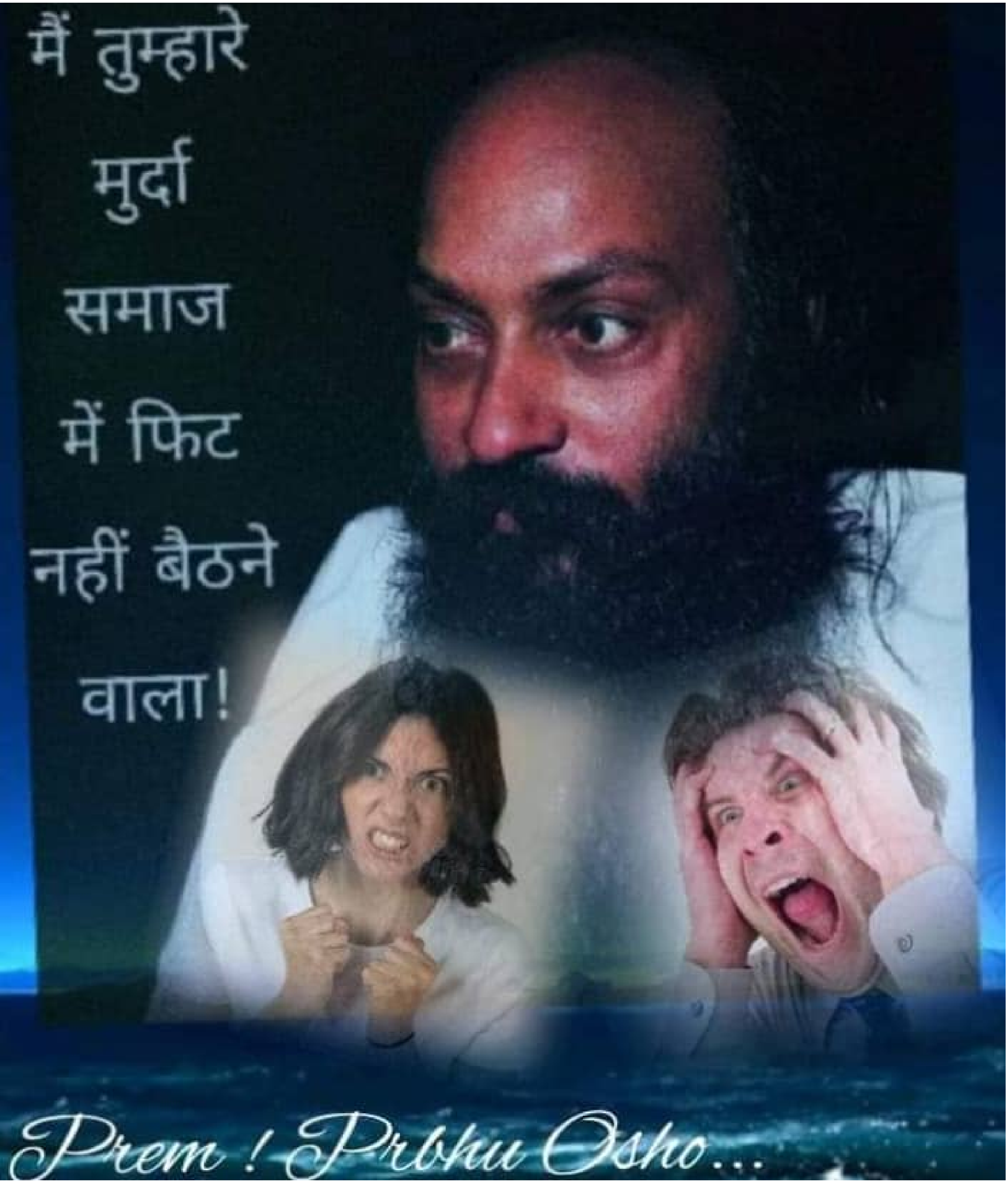

CamScanner

रस्किन ने कहा है कि धनी आदमी तब होता है, जब वह धन को दान कर पाता है। नहीं तो गरीब ही होता है। रस्किन का मतलब यह है कि आप धनी उसी दिन हैं, जिस दिन आप धन को छोड़ पाते हैं। अगर नहीं छोड़ पाते तो आप गरीब ही हैं। पकड़ गरीबी का लक्षण है, छोड़ना मालकियत का लक्षण है। अगर किसी चीज को आप छोड़ पाते है, तो समझना कि आप उसके मालिक हैं; और अगर किसी चीज को आप केवल पकड़ ही पाते हैं तो आप भूल कर मत समझना कि आप उसके मालिक हैं। इसका तो बड़ा अजीब मतलब हुआ। इसका मतलब हुआ कि जो चीजें आप किसी को बांट देते हैं, उनके आप मालिक हैं। और जो चीजें आप पकड़कर बैठे रहते है, उनके आप मालिक नहीं हैं।

दान मालकियत है; क्योंकि जो आदमी दे सकता है, वह यह बता रहा है कि वस्तु मुझ से नीची है, मुझसे ऊपर नहीं। मैं दे सकता हूं। देना मेरे हाथ में है। और जो व्यक्ति देकर प्रसन्न हो सकता है, उसकी मूर्छा टूट गयी। जो व्यक्ति केवल लेकर ही प्रसन्न होता है और देकर दुखी हो जाता है , वह मुर्छित है। त्याग का ऐसा है अर्थ।

त्याग का अर्थ है - दान की अनंत क्षमता, देने की क्षमता। जितना बड़ा हम दे पाते हैं, जितना ज्यादा हम दे पाते है, उतने ही हम मालिक होते चले जाते हैं।

~ ओशो

महावीर वाणी, भाग-1, प्रवचन-24,

CamScanner

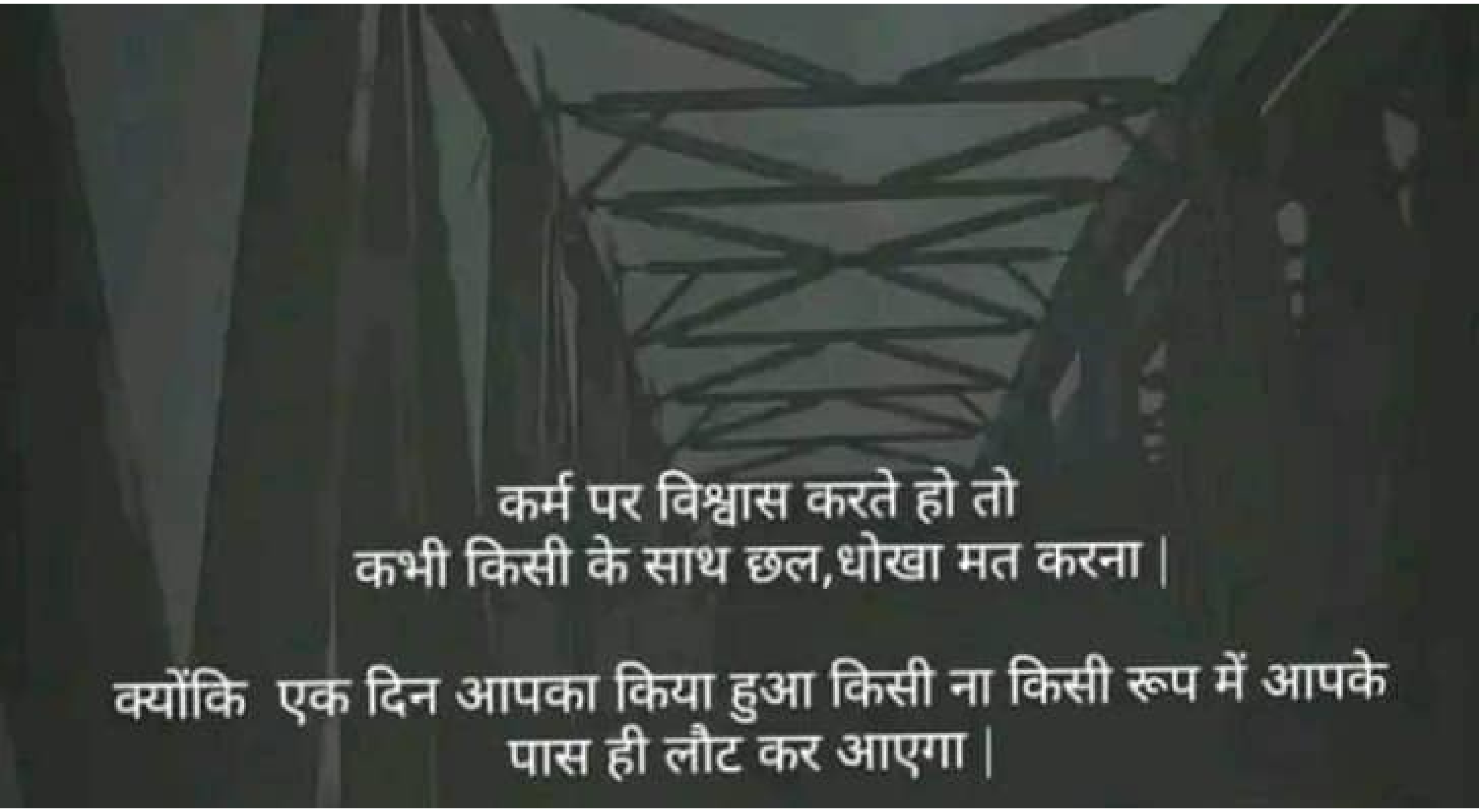
कर्म पर विश्वास करते हो तो
कभी किसी के साथ छल,धोखा मत करना |
क्योंकि एक दिन आपका किया हुआ किसी ना किसी रूप में आपके
पास ही लौट कर आएगा |

CamScanner

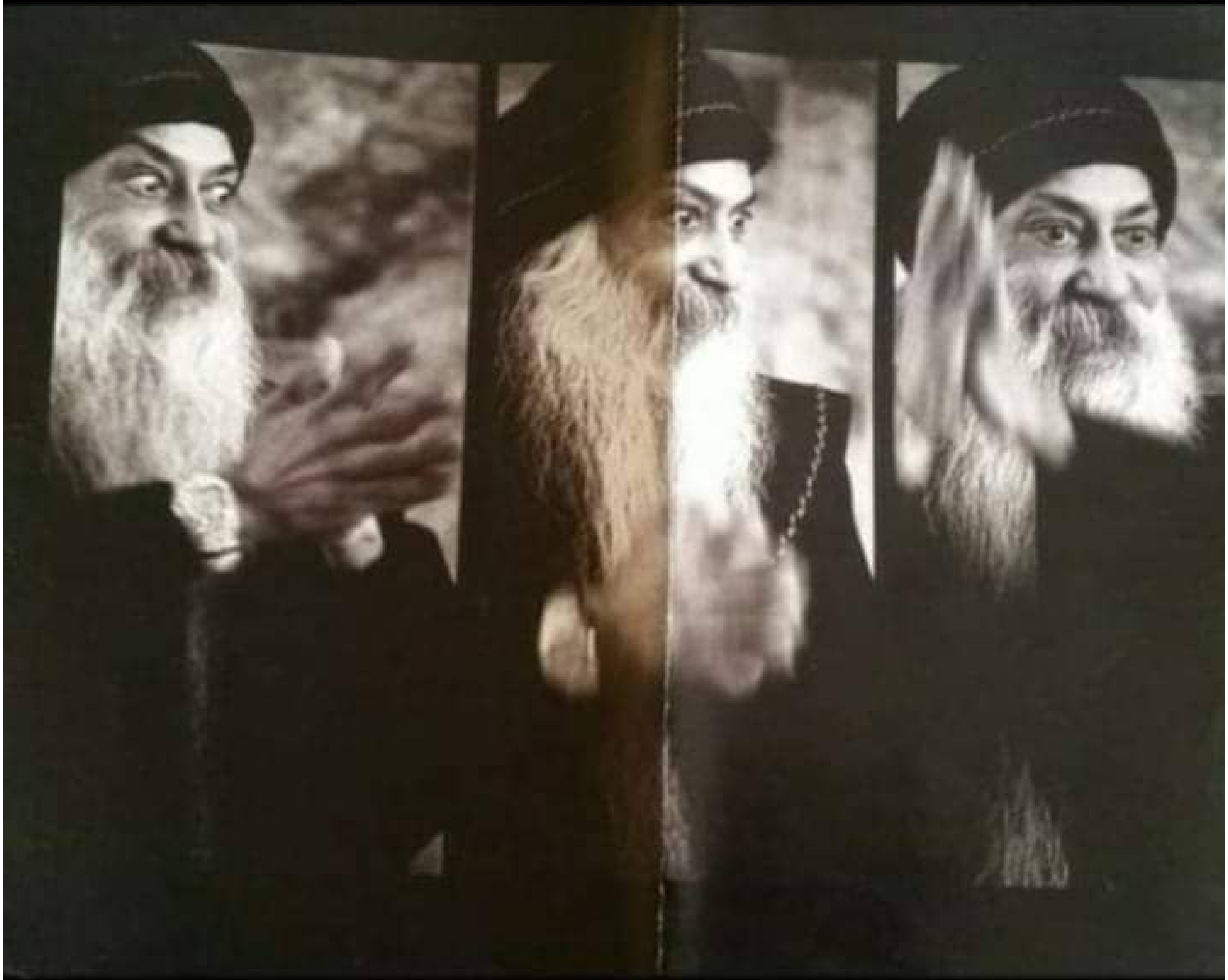

भय का अर्थ है, तुम्हारा आधा भाग नये की ओर जाना चाहता है और आधा नहीं। आधा अज्ञात से आकर्षित है, उसने पुकार सुन लिया है, और आधा अज्ञात से भयभीत है ज्ञात से चिपका है। क्योंकि ज्ञात तो ज्ञात है, उसमें भय की कोई बात नहीं है।

ओशो

प्रेम को प्रार्थना बनाओ

CamScanner

शरीर मे जीने वाला
पशु है,
मन मे जीने वाला
मनुष्य है,
बुद्धि मे जीने वाला
विद्वान है,
जबकि
आत्मा मे जीने वाला
ज्ञानी है,
जीव का विकास
इन
चार अवस्थाओं मे
पूर्ण होता है।

CamScanner

OSHO

जिस व्यक्ति के मन में भीतर गहरे में सब तरफ परमात्मा की स्वीकृति आ जाती है, उसे सारे जगत की सारी शक्तियां सहयोगी हो जाती हैं। क्योंकि जब तक मैं जगत से लड़ रहा हूं, तब तक जगत मुझसे भी लड़ता रहेगा। जिस दिन मैं ही लड़ना बंद कर देता हूं जगत से, उस दिन जगत भी मुझसे लड़ना बंद कर देता है।

CamScanner

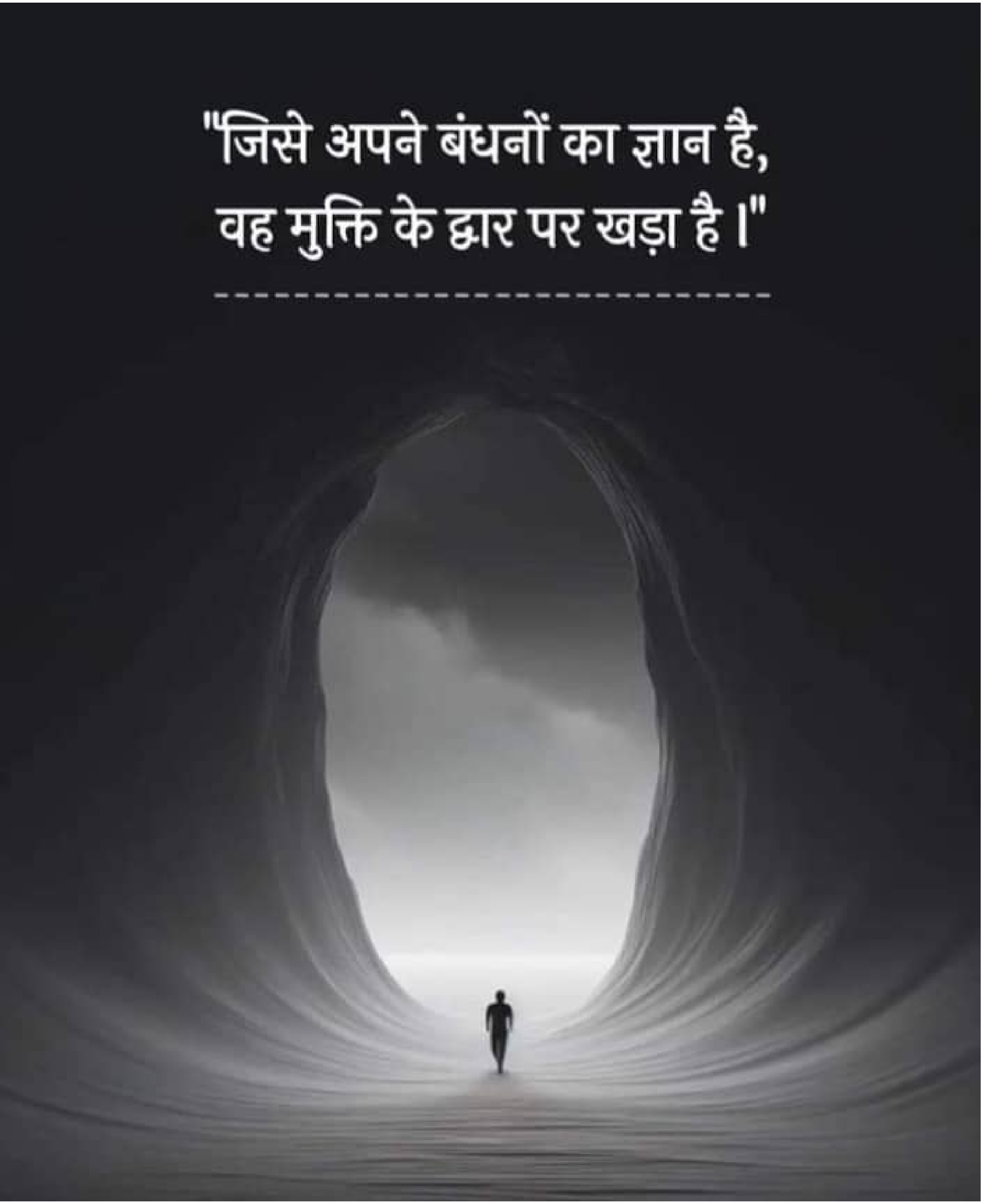

CamScanner

CS CamScanner

Osho

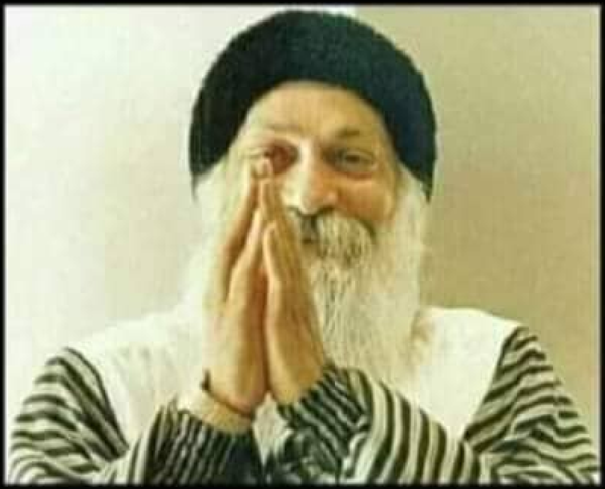

Madhushala

ध्यान क्या है?
ध्यान है, वासना का अभाव।
ध्यान है, आकांक्षा का अभाव।
ध्यान है, दौड़ से मुक्ति।
ध्यान का अर्थ हुआ, अब मैं कुछ भी नहीं चाहता हूं। मैं जैसा हूं, तृप्त हूं। मैं जो भी हूं, राजी हूं। जहां हूं, वहीं मेरी मंजिल है। वहां से कहीं और मुझे नहीं जाना।

पिव पिव लागि प्यास -3
ओशो

CS CamScanner

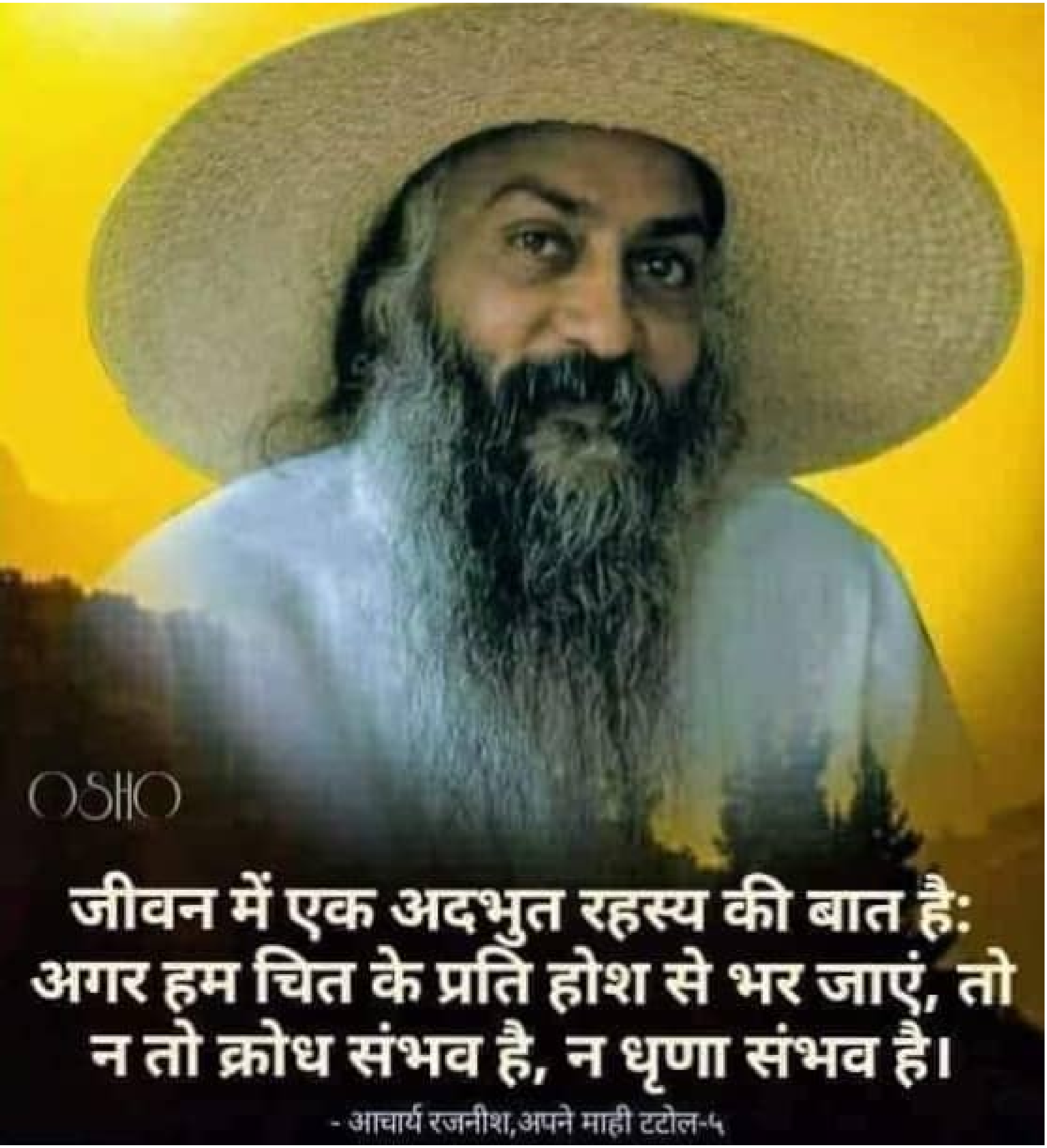
OSHO
जीवन में एक अदभुत रहस्य की बात है:
अगर हम चित के प्रति होश से भर जाएं, तो
न तो क्रोध संभव है, न धृणा संभव है।
- आचार्य रजनीश,अपने माही टटोल-५

CamScanner

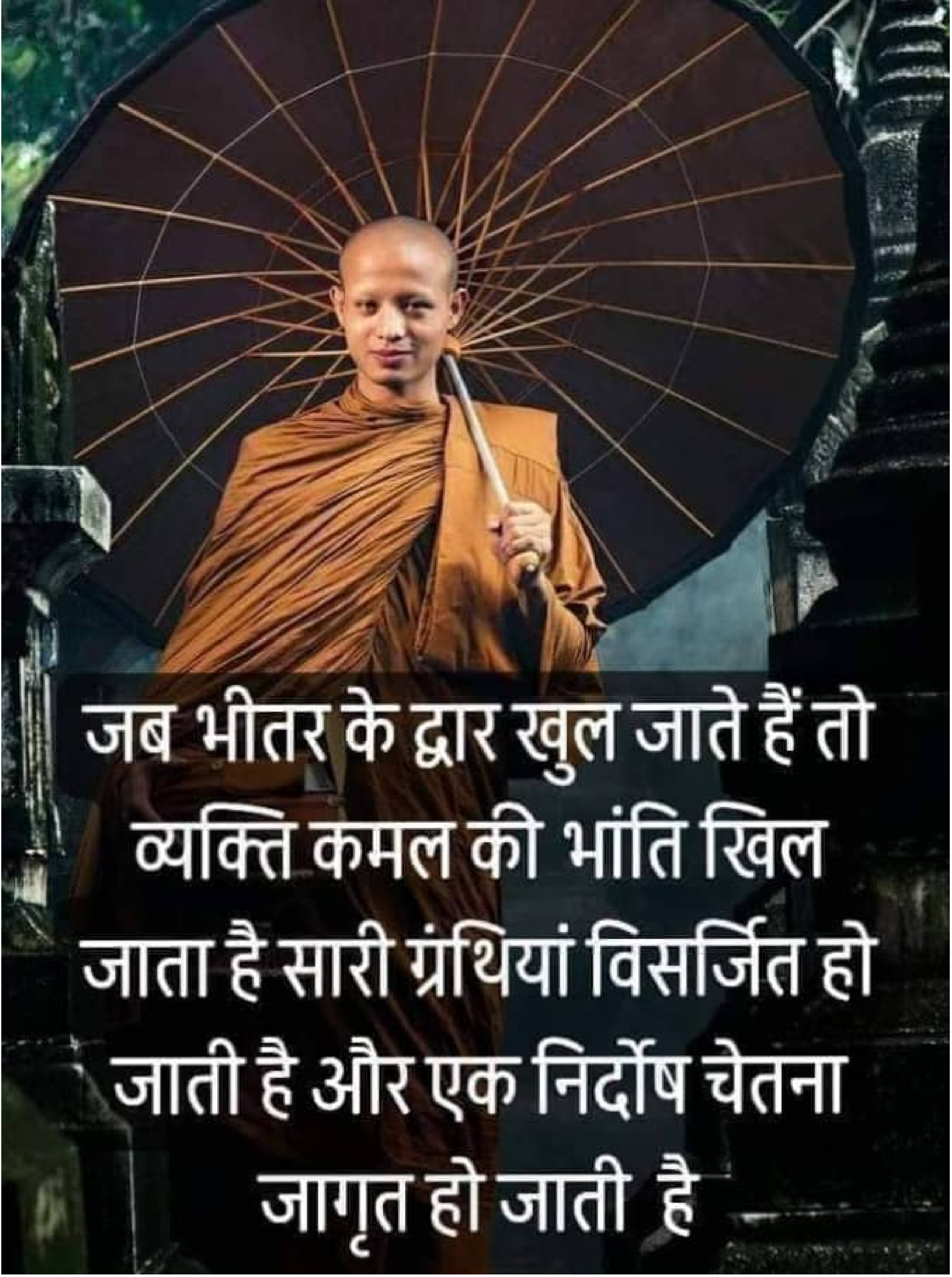
जब भीतर के द्वार खुल जाते हैं तो
व्यक्ति कमल की भांति खिल
जाता है सारी ग्रंथियां विसर्जित हो
जाती है और एक निर्दोष चेतना
जागृत हो जाती है

CamScanner

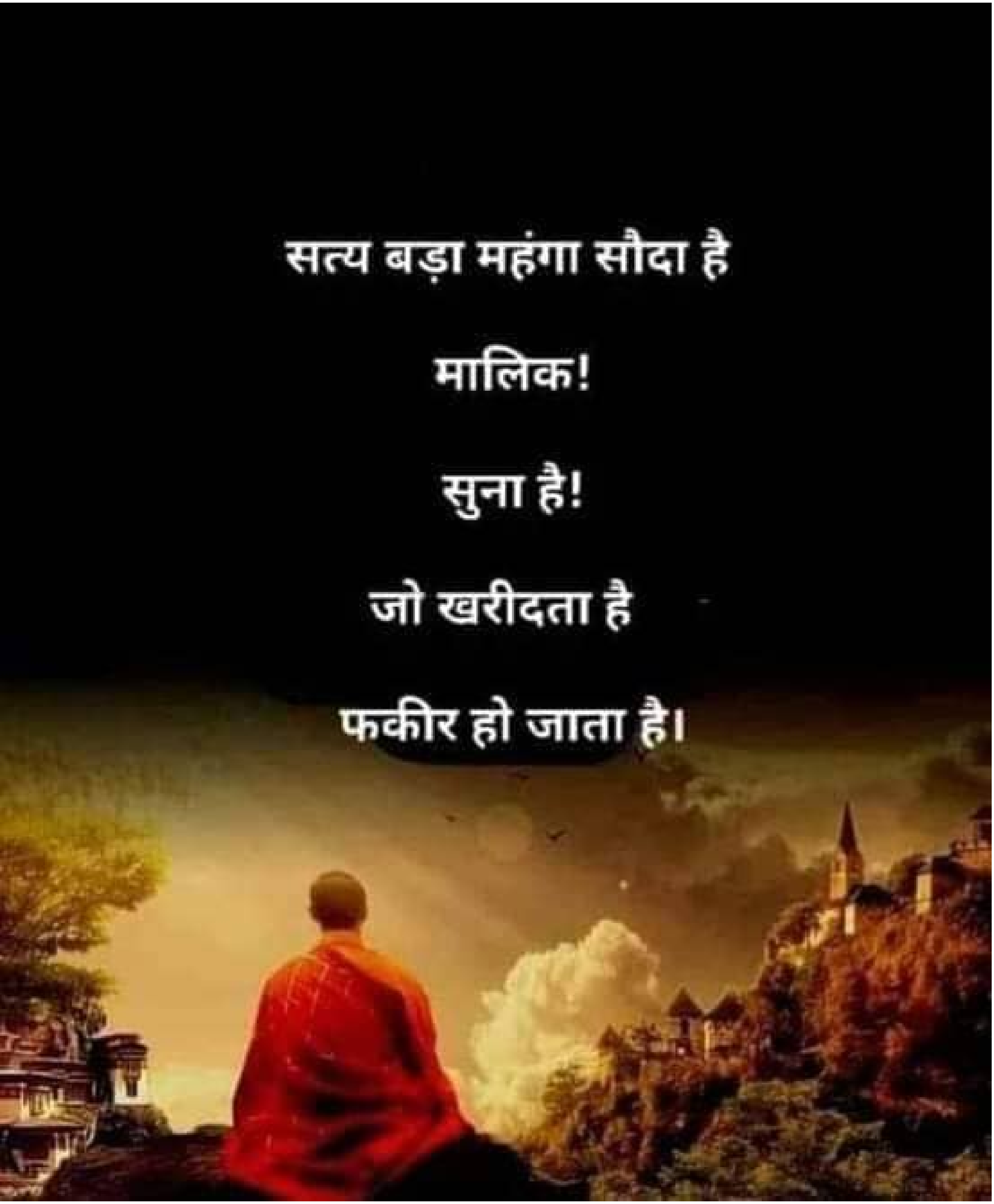

CamScanner

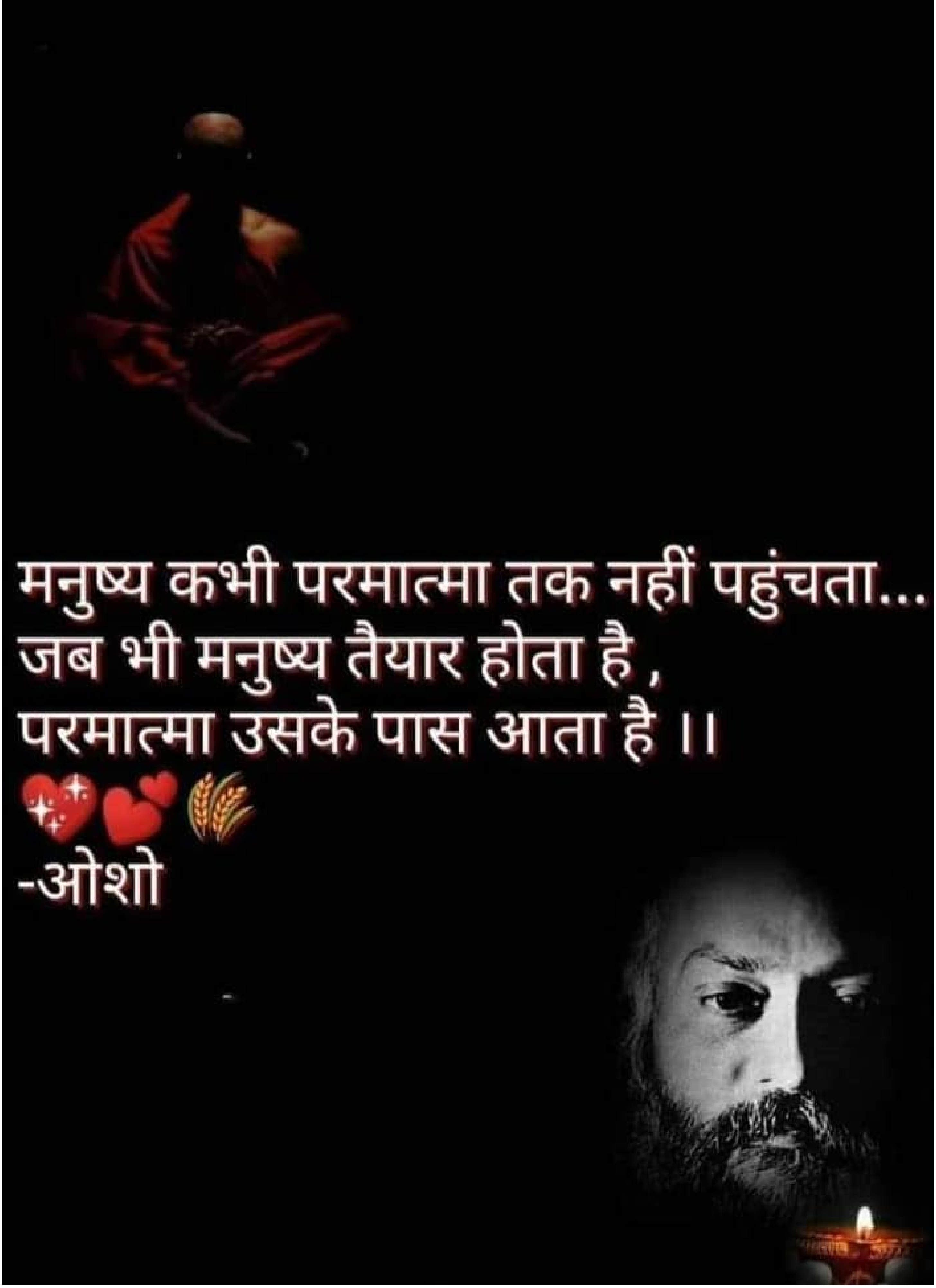

CS CamScanner

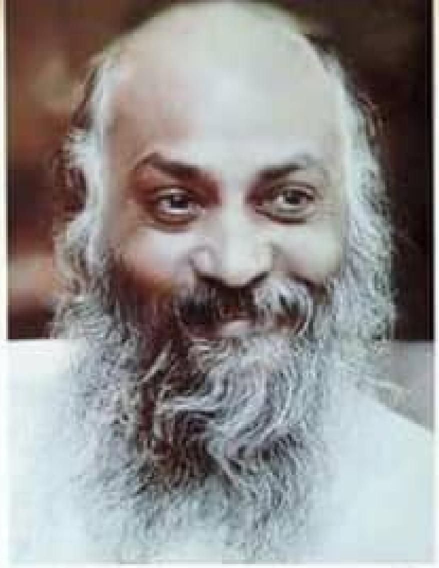

ब्राह्मणों की एक खास जाति है—शर्मा!
शर्मा का मतलब होता है—गर्दन काटने वाले,
शर्मन करने वाले। अगर शर्मा यहां कोई हो छोड़
दे नाम वह। वह नाम अच्छा नहीं है। वह हत्यारा
है। उसके भीतर हत्या छिपी है। शर्मा ब्राह्मणों
का वह वर्ग जो यज्ञों में गर्दन काटे। अब आज
तो हालत ऐसी है, कई लोग जो ब्राह्मण नहीं हैं
वह भी शर्मा लिखते हैं। सोचते हैं कुछ शानदार
शब्द मालूम होता है—शर्मा। मेरे एक मित्र वर्मा
थे, वह शर्मा लिखने लगे। मैंने कहा: यह तुम
क्या करते हो! वर्मा भले थे। शर्मा?
नरक में पड़ोगे!

OshO

CamScanner

मैं तुमसे कहता हूं, कठिनाई का
मुकाबला करने से ही मनुष्य निर्मित
होता है। जितनी चोट पड़ती है,
उतनी जाग आती है। जितने तार
तुम्हारे छेड़े जाएंगे, उतना संगीत
निखरेगा। जितनी छेनी तुम पर
पड़ेगी, उतना ही रूप प्रगट होगा।
ओशो

CamScanner

oshoduniya.com

आत्मवान होने का एक ही अर्थ होता है कि तुम अपने मालिक हुए। अब तुम जो चाहो, वही होगा। तुम हवा में कंपते हुए पत्ते नहीं हो कि जब झोंका आएगा तब कंपोगे और जब झोंका नहीं आएगा तो लाख चाहो, तो न कंप सकोगे। अब तुम यंत्रवत नहीं हो। तुम मनुष्य हो। मनुष्य का अर्थ है कि अब तुम्हारे भीतर से निकलेंगे तुम्हारे कृत्य। बाहर की घटनाओं से पैदा न होंगे। परिस्थितियां नहीं, अब तुम मूल्यवान हो। तभी तो तुम आत्मवान होओगे। अन्यथा आत्मा है, यह केवल सिद्धांत है..✍️❤️💻

- कहे कबीर दिवाना प्र.#4

❤️सदगुरू ओशो❤️

CamScanner

अपो दीपो भव

Reels · 2h

🙏 आनंदित होने का एक ही उपाय है- ध्यान🙏

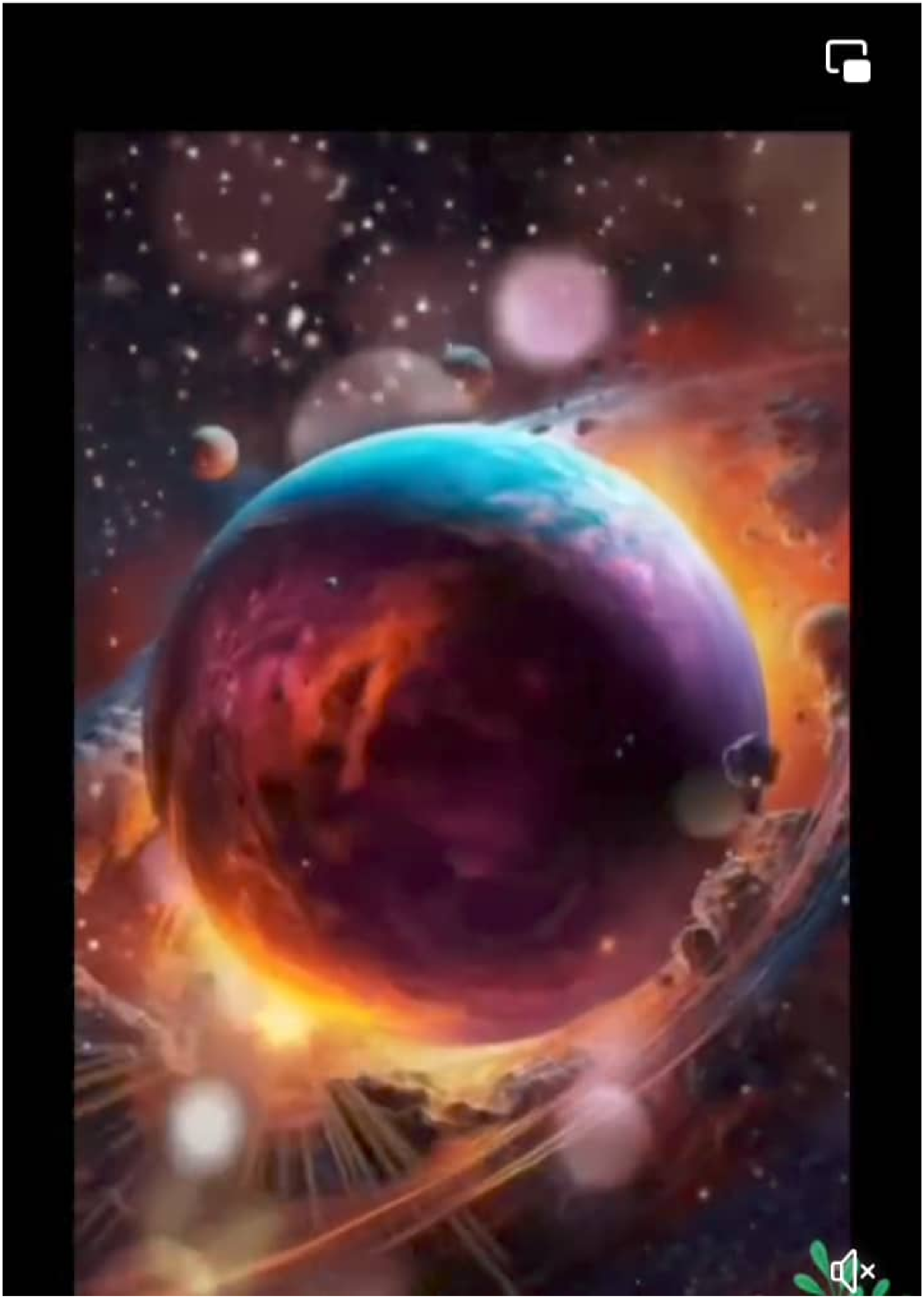

CamScanner

वही मिलेगा जो दोगे। जिंदगी दोगे, जिंदगी मिलेगी। जिंदगी लोगे, जिंदगी छिन जायेगी। जगत प्रतिध्वनि करता है। गीत गाओ, चारों तरफ से गीत तुम पर बरस जायेंगे। गालियां दो, चारों तरफ से गालियां तुम पर बरस जायेंगी। जो चाहो लो। मगर शर्त यही है कि वही दोगे तो मिलेगा। जगत प्रतिदान है। तुम दान करो। जगत प्रतिदान है। हजार गुना होकर लौट आता है सब।

CamScanner

प्रेम का अर्थ होता है :
मैं अलग नहीं।
मैं भिन्न नहीं, पृथक नहीं।
मैं सब से जुड़ा हूं।
तो अगर कहीं कोई पीड़ा में है, तो मैं दौड़ता हूं,
क्योंकि मैं ही पीड़ा में हूं।
अगर वृक्ष सूख रहा है जल के बिना, और मैं जल
देता हूं तो इसीलिए कि वृक्ष में मैं ही सूख रहा हूं।
अगर कोई रो रहा है, और मैं आंसू पोंछता हूं, तो
सिर्फ इसीलिए कि वे आंसू मेरे ही आंसू हैं; वे
आंखें मेरी ही आंखें हैं।
ओशो
इस भाव का नाम प्रेम है।

CamScanner

CamScanner

CamScanner

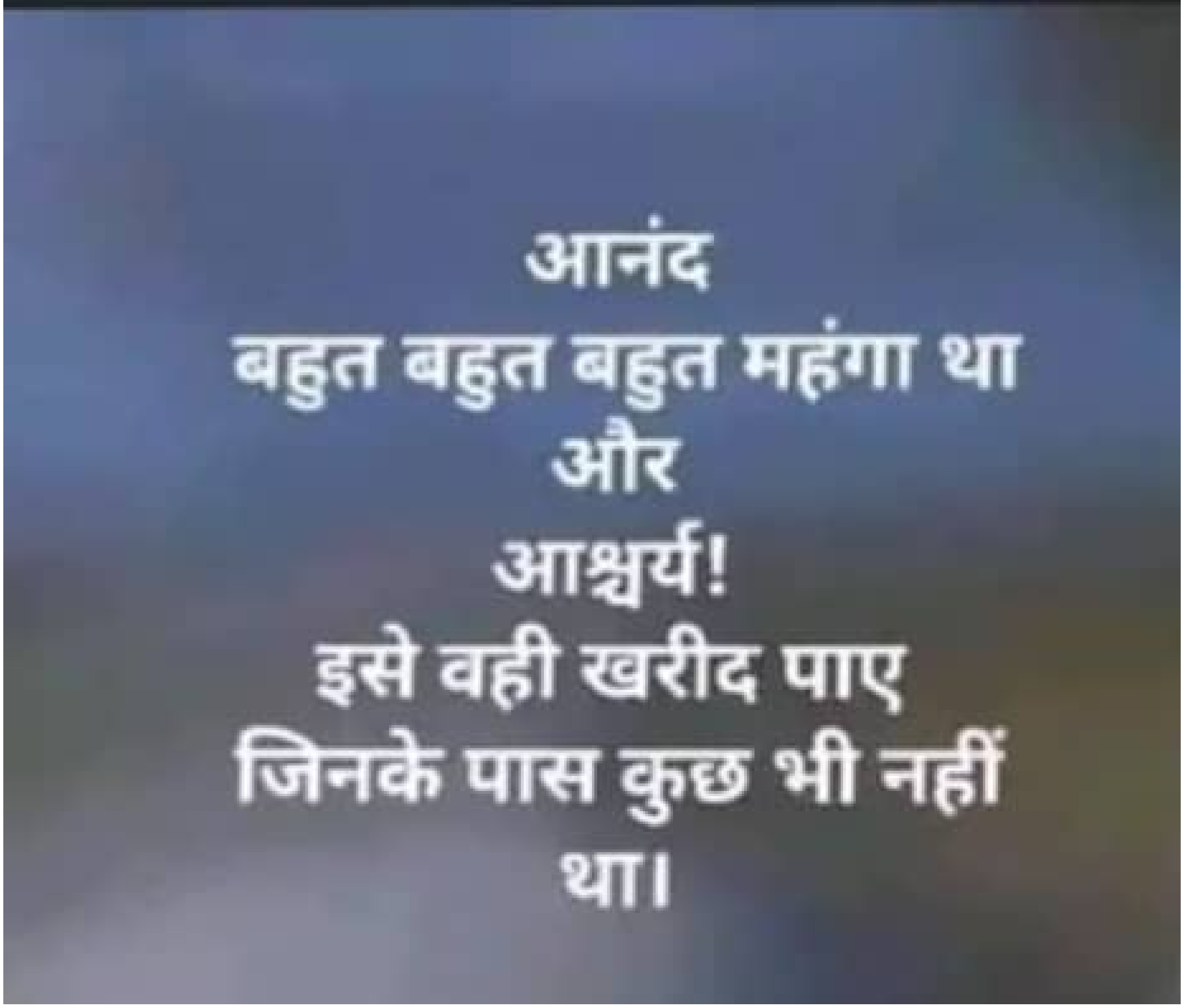

CamScanner

भगवान कृष्ण के मुकुट में हमेशा
मोर का ही पंख क्यों लगाया जाता है?
मोर ही अकेला एक ऐसा प्राणी है,
जो ब्रह्मचर्य को धारण करता है,
जब मोर प्रसन्न होता है तो वह
अपने पंखो को फैला कर नाचता है.
और जब नाचते-नाचते मस्तहो जाता है,
तो उसकि आँखों से आँसू गिरते है
और मोरनी इन आँसू को पीती है
और इससे ही गर्भ धारण करती है,
मोर में कही भी वासना का लेश भी नही है,
और जिसके जीवन में वासना नहीं,
भगवान उसे अपने शीश पर धारण कर लेते है..

CamScanner

प्रेमिकाएं, पत्नियां होना चाहती रही ओर
पत्नियां, प्रेमिकाएं..

कोई पुरुष किसी स्त्री को शायद पूरा
मिला ही नही..

osho

CamScanner

हम जो है

वह न होने में ही

तनाव है।

ओशो

CS CamScanner

सम्मान के लिए संघर्ष करें पर अधर्म का साथ ना दे, अधिकार के लिए अवश्य लड़े किंतु जिस पर अधिकार नही उसका मोह ना करे।

CamScanner

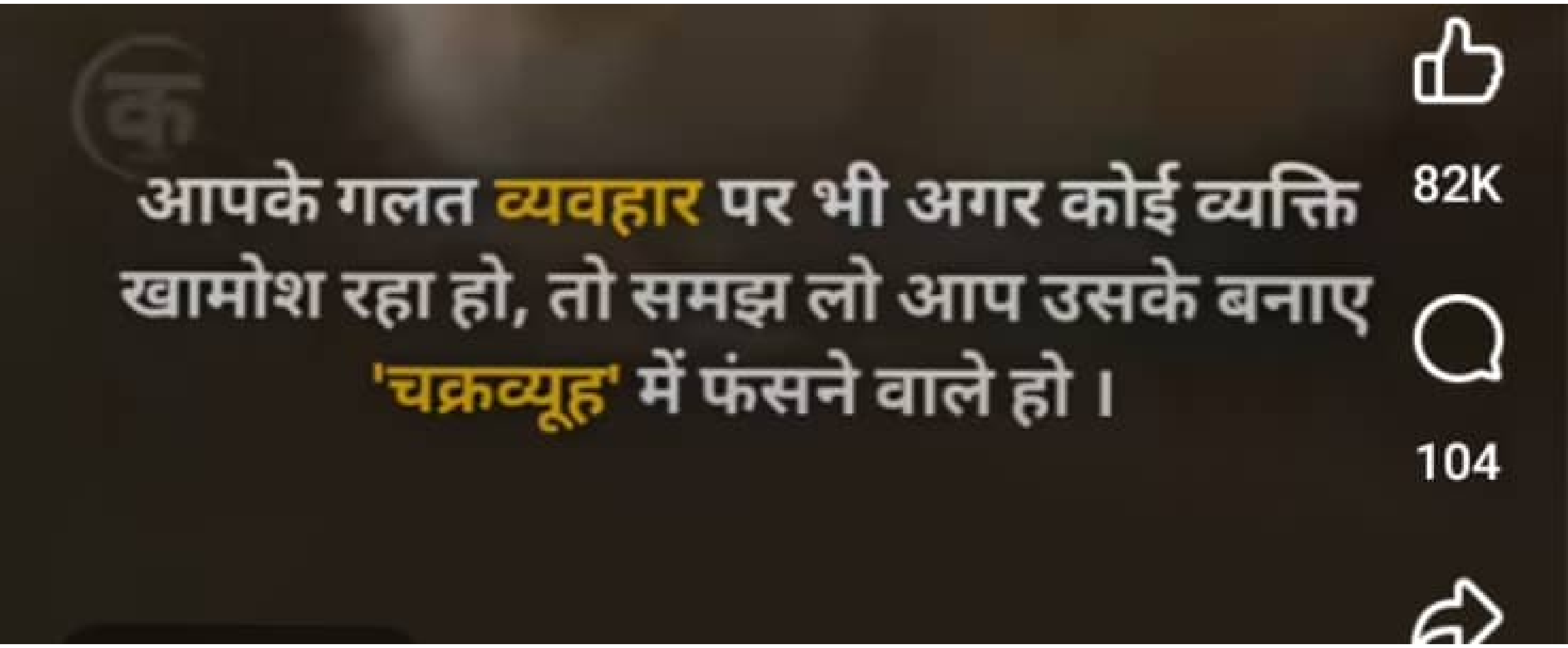
आपके गलत व्यवहार पर भी अगर कोई व्यक्ति
खामोश रहा हो, तो समझ लो आप उसके बनाए
'चक्रव्यूह' में फंसने वाले हो ।
82K
104

CamScanner

Reels

दुनिया का सबसे सुखी इंसान वही है
जिसने अकेला जीना सीख लिया

🥹👌🐶

CS CamScanner

तुम्हारे हिस्से में शिव आएंगे तो,तुम्हारे हिस्से में विष भी तो आएगा,
तुम यू ही मुस्कुराते रहो हर परिस्तिथियों में भी ,
तुम्हारा कोई कुछ भी न बिगाड़ पाएगा..

हर हर महादेव 🔱

20K

CamScanner

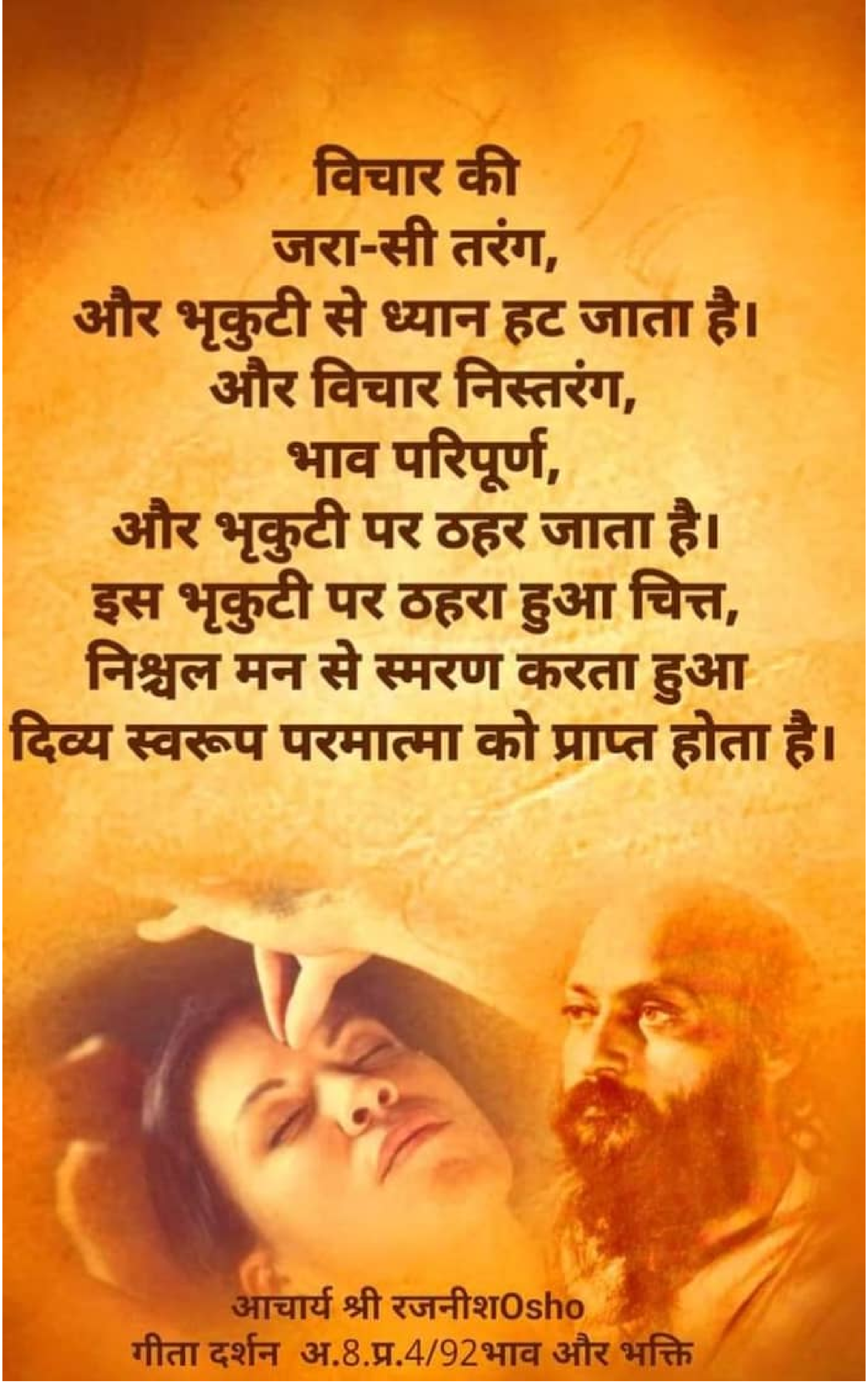
विचार की
जरा-सी तरंग,
और भृकुटी से ध्यान हट जाता है।
और विचार निस्तरंग,
भाव परिपूर्ण,
और भृकुटी पर ठहर जाता है।
इस भृकुटी पर ठहरा हुआ चित्त,
निश्चल मन से स्मरण करता हुआ
दिव्य स्वरूप परमात्मा को प्राप्त होता है।
आचार्य श्री रजनीशOsho
गीता दर्शन अ.8.प्र.4/92भाव और भक्ति

CamScanner

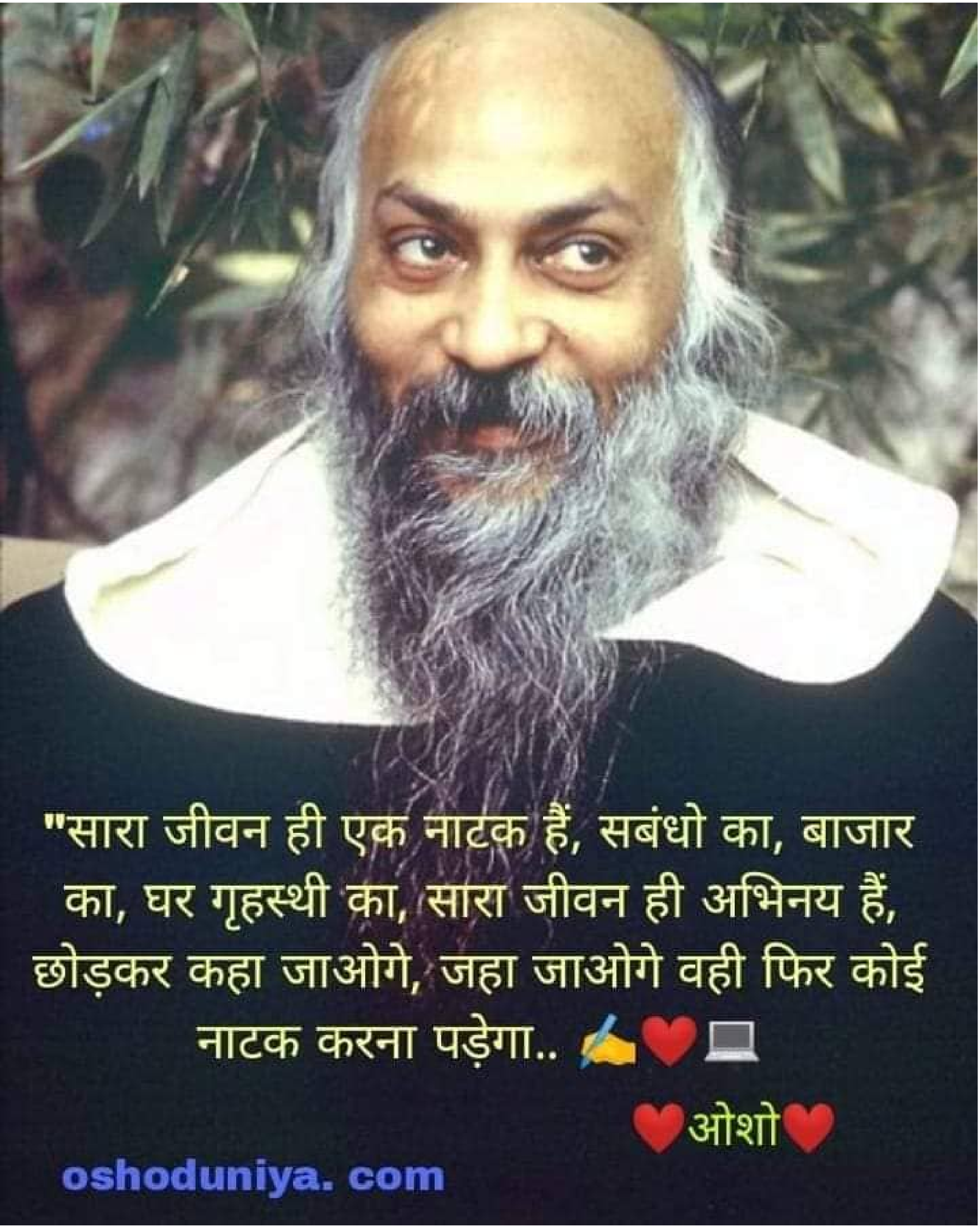

CS CamScanner

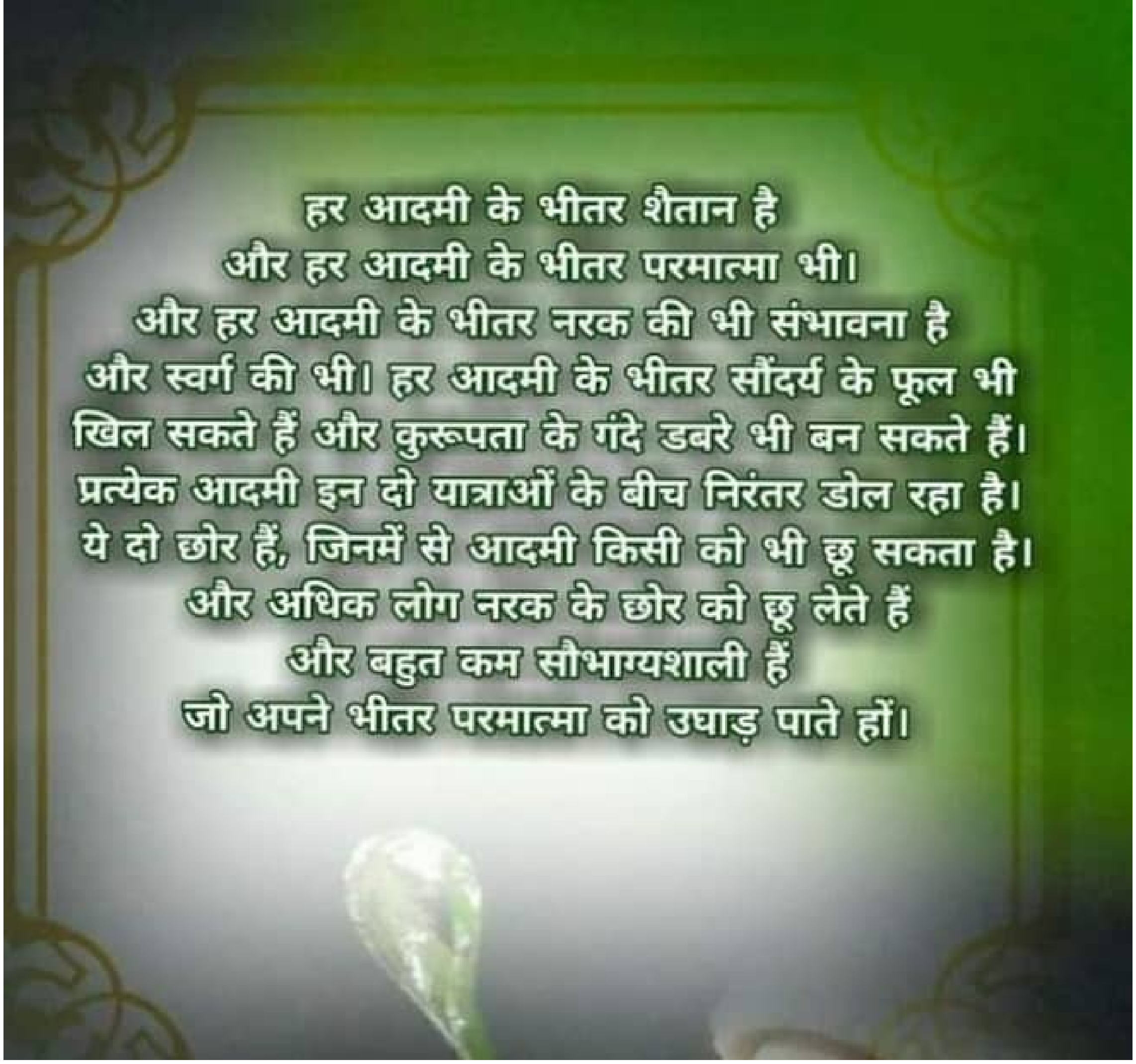
हर आदमी के भीतर शैतान है
और हर आदमी के भीतर परमात्मा भी।
और हर आदमी के भीतर नरक की भी संभावना है
और स्वर्ग की भी। हर आदमी के भीतर सौंदर्य के फूल भि
खिल सकते हैं और कुरूपता के गंदे डबरे भी बन सकते हैं।
प्रत्येक आदमी इन दो यात्राओं के बीच निरंतर डोल रहा है।
ये दो छोर हैं, जिनमें से आदमी किसी को भी छू सकता है।
और अधिक लोग नरक के छोर को छू लेते हैं
और बहुत कम सौभाग्यशाली हैं
जो अपने भीतर परमात्मा को उघाड़ पाते हों।

CamScanner

मैं बहुत चमत्कृत हो जाता हूं यह देखकर कि लोग जाकर मंदिरों में झुक जाते है, जो आकाश को तारों से भरा देखकर नहीं झुकते। इनका मंदिर में झुकना झूठा होगा, निश्चित झूठा होगा। यह सच नहीं हो सकता। इसमें हार्दिकता नहीं हो सकती। आदमी की बनाई हुई मूर्ति में इन्हें क्या दिखाई पड़ सकता है? अगर परमात्मा की बनाई हुई मूर्तियों में इन्हें कुछ भी दिखाई नही पड़ रहा है। इतने अंधे! ये संगमरमर की एक बनी प्रतिमा के सामने झुकते हैं, उसमें हृदय होगा? आदतवश झुक जाते होंगे। बचपन से झुकाए गए होंगे इसलिए झुक जाते होंगे मां--बाप ने कहा होगा, झुको, इसलिए झुक जाते होंगे, भय के कारण झुक जाते होंगे, डर के कारण---कि कहीं नरक न हो, कहीं दंड न मिले। या लोभ के कारण झुक जाते होंगे कि झुकने से स्वर्ग मिलेगा, पुरस्कार मिलेगा। कि क्या बिगड़ता है, थोड़ी खुशामद कर ली। परमात्मा को भी राजी रखना उचित है। फिर जो करना है करते रहो लेकिन उसे भी राजी रखते रहो। नाम सुमिर मन बावरे-(जगजीवन)-प्रवचन-9

पुकारें हृदय से कोई पुकार खाली नही जाती...

CamScanner

कितने तरह के क्रियाकांडों में लोग लगे हैं। आचरण साध रहे हैं; ऐसा करना, वैसा करना, यह खाना, वह खाना, यह छोड़ना। कोई नमक छोड़े बैठा है, कोई घी छोड़े बैठा है। किसी ने कुछ, किसी ने कुछ। इतनी छोटी-छोटी बातें तुम जो कर रहे हो, इनसे क्या सार है? यह देह जिसमें घी जाता है, जल जाएगी; फिर चाहे घी डालो और चाहे न डालो। यह देह जिसमें नमक जाता है, मिट्टी में मिल जाएगी; फिर नमक डालो कि न डालो। तुम्हारे आचरण देह से भीतर जाते नहीं। और जाना है देह के भीतर। पाना है देह के भीतर। खोजना है उसे जो देहातीत है। आचरण तो देह का ही होता है। स्नान कर लिया, रामनाम चदरिया ओढ़ ली। बैठ गए, उपवास कर लिया एक दिन। कभी घी छोड़ दिया, कभी नमक छोड़ दिया।माला भी डाल ली तो कुछ होगा नहीं; जब तक कि तुम उसकी माला के मनके न बन जाओ। और क्या हुआ अगर तिलक भी लगा लिया! ये सब बाहर के प्रतीक हैं, इन पर रुक मत जाना।

CamScanner

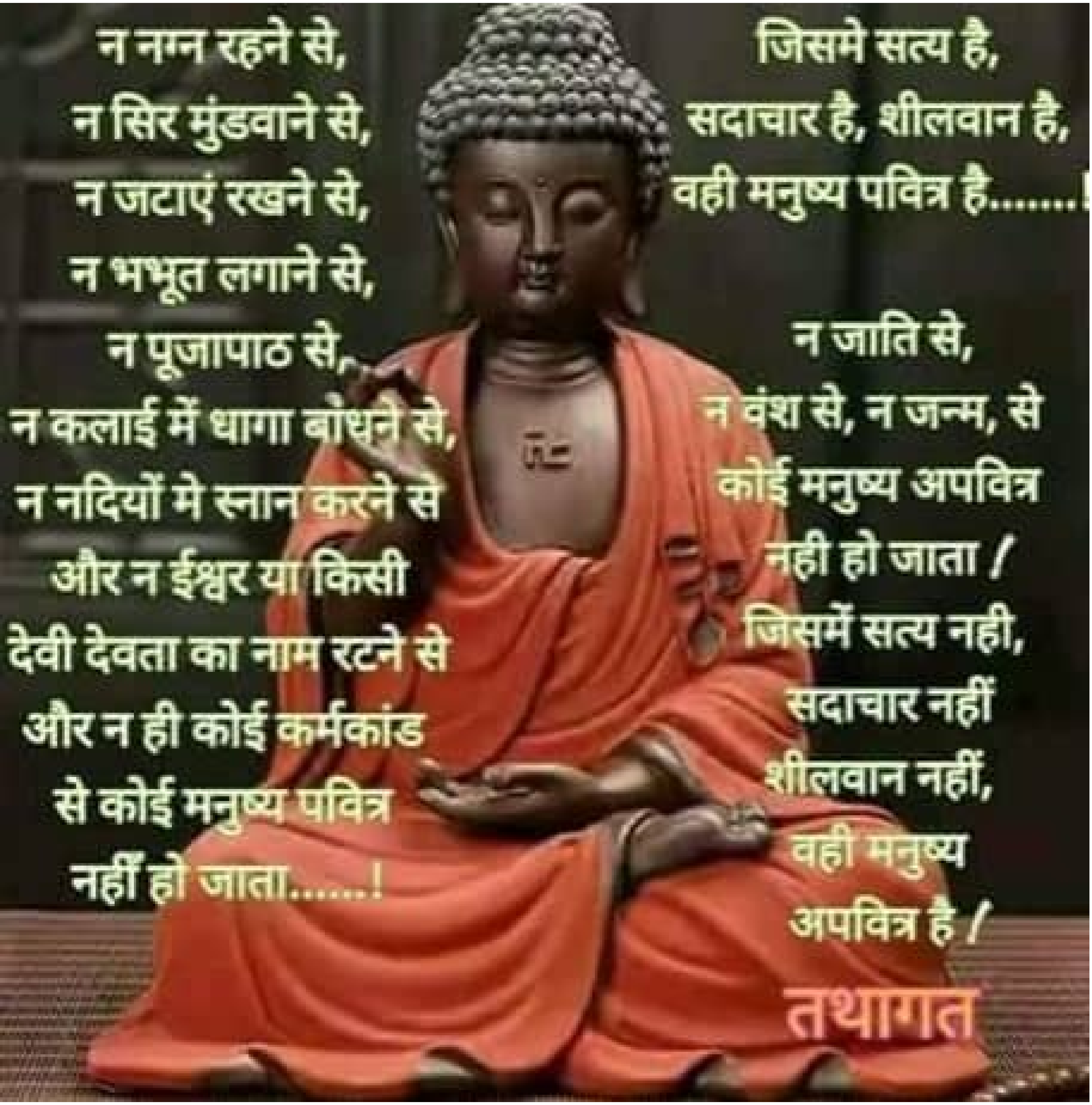
न नग्न रहने से,
न सिर मुंडवाने से,
न जटाएं रखने से,
न भभूत लगाने से,
न पूजापाठ से,
न कलाई में धागा बांधने से,
न नदियों मे स्नान करने से
और न ईश्वर या किसी
देवी देवता का नाम रटने से
और न ही कोई कर्मकांड
से कोई मनुष्य पवित्र
नहीं हो जाता......!
जिसमे सत्य है,
सदाचार है, शीलवान है,
वही मनुष्य पवित्र है.......!
न जाति से,
न वंश से, न जन्म, से
कोई मनुष्य अपवित्र
नही हो जाता /
जिसमें सत्य नही,
सदाचार नहीं
शीलवान नहीं,
वही मनुष्य
अपवित्र है /
तथागत

CamScanner

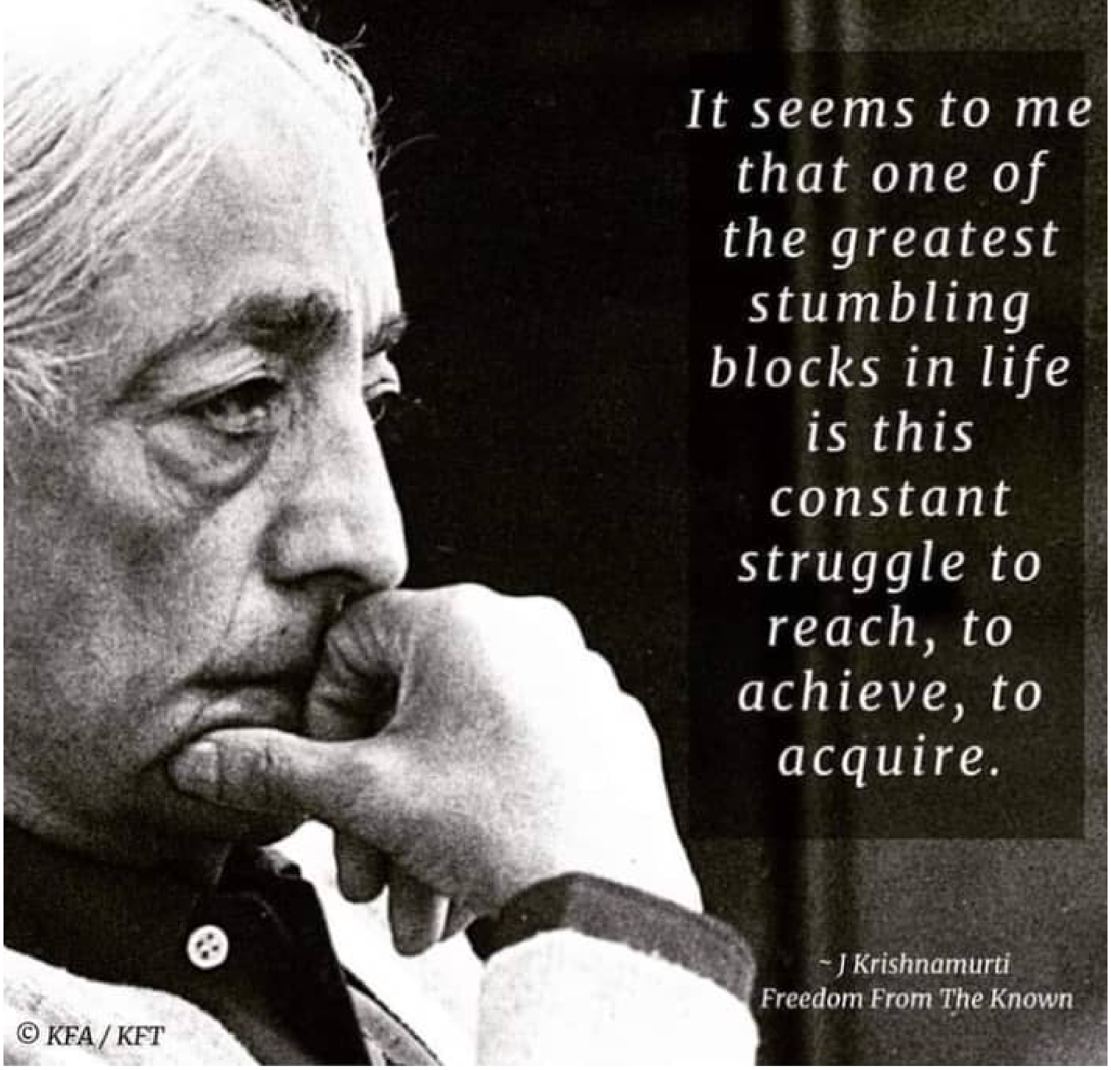
It seems to me that one of the greatest stumbling blocks in life is this constant struggle to reach, to achieve, to acquire.
~ J Krishnamurti
Freedom From The Known
© KFA / KFT

CamScanner

जिस दिन किसी व्यक्ति को यह साफ हो जाता है कि मैं ही जिम्मेवार हूं, मेरे जीवन का स्रष्टा मैं हूं, उसी क्षण धर्म का निर्माण होता है। जिस क्षण तुम दूसरे को जिम्मेवार ठहराना बंद कर देते हो, उसी क्षण क्रांति शुरू हो जाती है।

क्योंकि अब पलायन नहीं किया जा सकता। दुख है तो मेरा, सुख है तो मेरा। मेरे अतिरिक्त कोई भी नहीं है, जो रत्ती भर भी सुख दुख दे रहा हो।

ओशो

CS CamScanner

आनन्द साधन से नहीं साधना से प्राप्त होता है। आंनद भीतर का विषय है, तृप्ति आत्मा का विषय है। मन को तो कितना भी मिल जाए , यह अपूर्णता का बार - बार अनुभव कराता रहेगा। जो अपने भीतर तृप्त हो गया उसे बाहर के अभाव कभी परेशान नहीं करते।

केवल मानव जन्म मिल जाना ही पर्याप्त नहीं है अपितु हमें जीवन जीने की कला भी आना जरुरी है। पशु-पक्षी तो बिलकुल भी संग्रह नहीं करते फिर भी भी उन्हें जीवनोपयोगी सब कुछ प्राप्त होता है।

जीवन तो बड़ा आनंदमय है लेकिन हम अपनी इच्छाओं के कारण, वासनाओं के कारण इसे कष्टप्रद और क्लेशमय बनाते हैं। प्रारब्ध में जितना लिखा है और जब मिलना लिखा है, उतना ही मिलेगा और उसी समय पर मिलेगा। कर्म जरूर करते रहें पर चिन्तित कदापि ना हों। जीवन के लिए जो जरुरी है उतना प्रकृति कारण से नहीं, करुणा से अपने आप दे देती है।

CS CamScanner

पाप है क्या?
अंधकार से भरे हुए आदमी के
कृत्य का नाम पाप है।
अज्ञान से पैदा हुए कृत्य का नाम पाप है।
ज्ञान से पैदा हुए कृत्य का नाम पुण्य है।
इसीलिए मैं तुमसे नहीं कहता कि
पाप मत करो, पुण्य करो;
मैं कहता हूं: अज्ञान को तोड़ो
और ज्ञान को जगाओ।
नींद हटाओ, होश को जगाओ।
और होश के बाद तुम जो करोगे, वह पुण्य है।
और बेहोशी में तुम जो करोगे, वह पाप है।
मेरी व्याख्या सीधी—साफ है।

मेरा स्वर्णिम भारत, प्रवचन-२६, ओशो

CS CamScanner

1:13 pm 1 KB/s 4G 85%

13 1 5

18 2 comments • 6 shares

Like Comment Send Share

आध्यात्मिक मार्ग Aadhyaatmik Marg

Parshotam Rai · 2h

हरि ॐ 🙏

13 1 comment

Like Comment Send Share

ओशो का हिन्दी साहित्य

Rahul Kumar Ojha · 6h

बोध कथा

दो फकीर आमने सामने रहते हैं।एक फकीर का शिष्य है... See more

CamScanner

1:13 pm 0 KB/s 4G 85%

13 1 5

You and 21 others 3 comments

Like Comment Send

Shashi Shubhangee
1d ·

13 1 comment • 1 share

Like Send Share

OshO AMRAT (ओशो अमृत)
Prem Vishwas · 2h ·

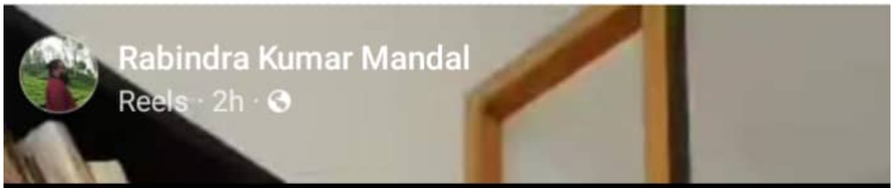

CamScanner

भक्ति कोई शास्त्र नहीं है--यात्रा है।
भक्ति कोई सिद्धांत नहीं है--जीवन-रस है।

भक्त का अर्थ है: जो रोना जानता है। भक्त का अर्थ है: जो असहाय होना जानता है। भक्त का अर्थ है: जो अपने ना-कुछ होने को अनुभव करता है।

अहंकार से भक्ति बिलकुल विपरीत है। इसलिए जो अहंकार की खोज पर चले हैं, वे कभी भक्ति को उपलब्ध न हो सकेंगे। परमात्मा को पाना हो तो स्वयं को खोना ही पड़ेगा।

यह खोने की यात्रा थी। यह राह बड़ी मधुभरी थी, बड़े फूल खिले थे! क्योंकि भक्ति के मार्ग पर कोई मरुस्थल नहीं है। तुम पैर भर रखो, पहला कदम ही आखिरी कदम बन जाता है। तुम पैर भर बढ़ाओ कि सौंदर्य अपने अनंत रूपों को खोलने लगता है।

परमात्मा को खोजना नहीं, अपने को खोलना है, ताकि परमात्मा तुम्हें खोज सके। इस भ्रांति में तो तुम रहना ही मत कि तुम परमात्मा को खोज लोगे। भक्त्ति का मूल आधारा यही है कि परमात्मा तुम्हें खोज रहा है, तुम छुप क्यों रहे हो, तुम बचाए क्यों फिरते हो अपने को? तुम उसे न खोज सकोगे, क्योंकि तुम्हें न उसका पता मालूम, न ठिकाना मालूम। और हाथ कितने छोटे हैं और आकाश कितना बड़ा है! तुम मुट्ठियों में आकाश को बांध पाओगे..??

ओशो

CamScanner

1:11 pm 0 KB/s VoLTE 4G 85%

13 1 5

osho for love
Ashu Osho Premi · 4m ·

Dimple Sharma
2d ·

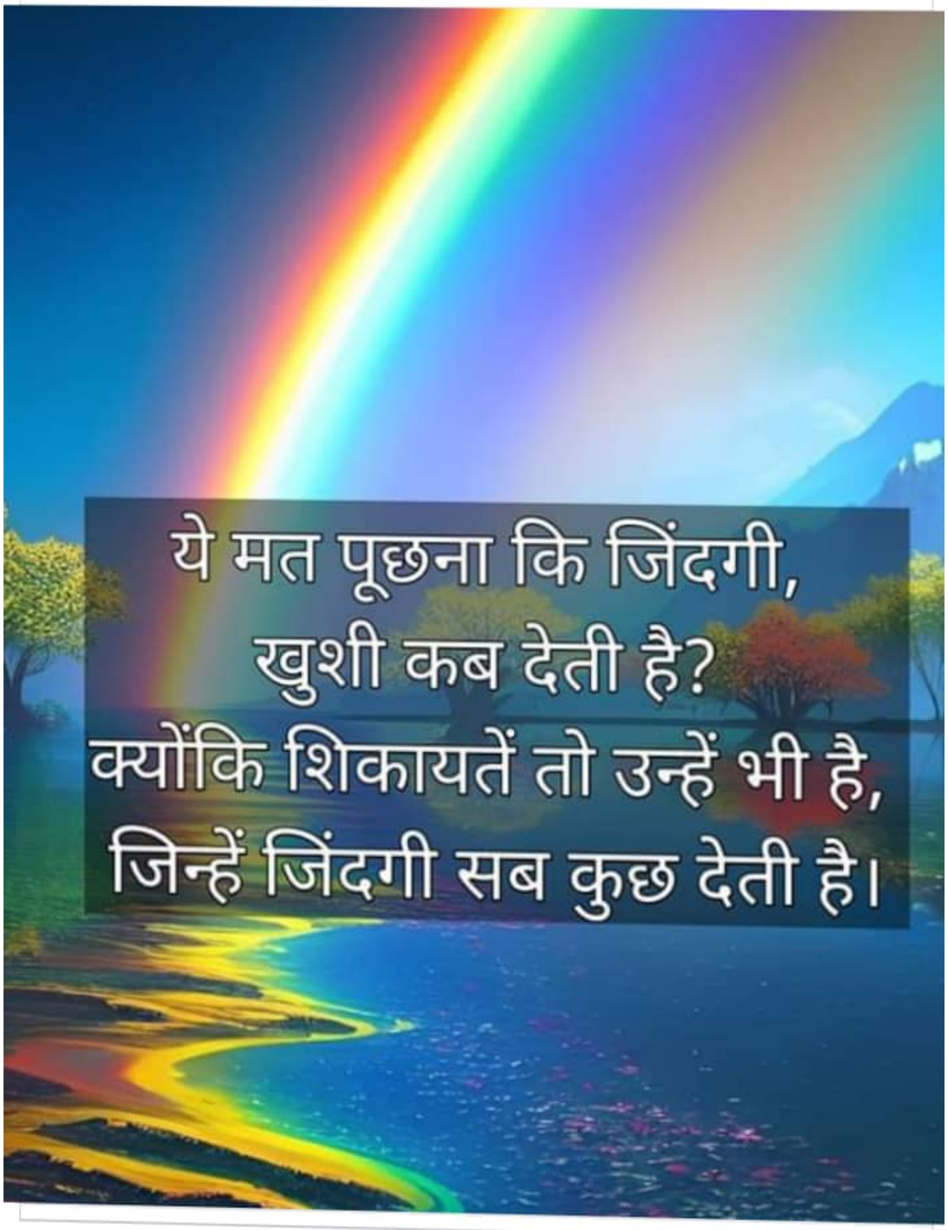

Like Comment Send Share

Bhakti Vikasa Swami
43m ·

यह कृष्ण आपसे बात करेगा

CamScanner

1:10 pm
किरदार शिद्दत से निभाइये जिन्दगी में
कहानी तो एक दिन सभी को बनना है.।
insta:@sufi_ke_kisse
Give
15
4
Sufi Ke Kisse
Kahani to ek din banna hi he...💔🥀😔... more

CamScanner

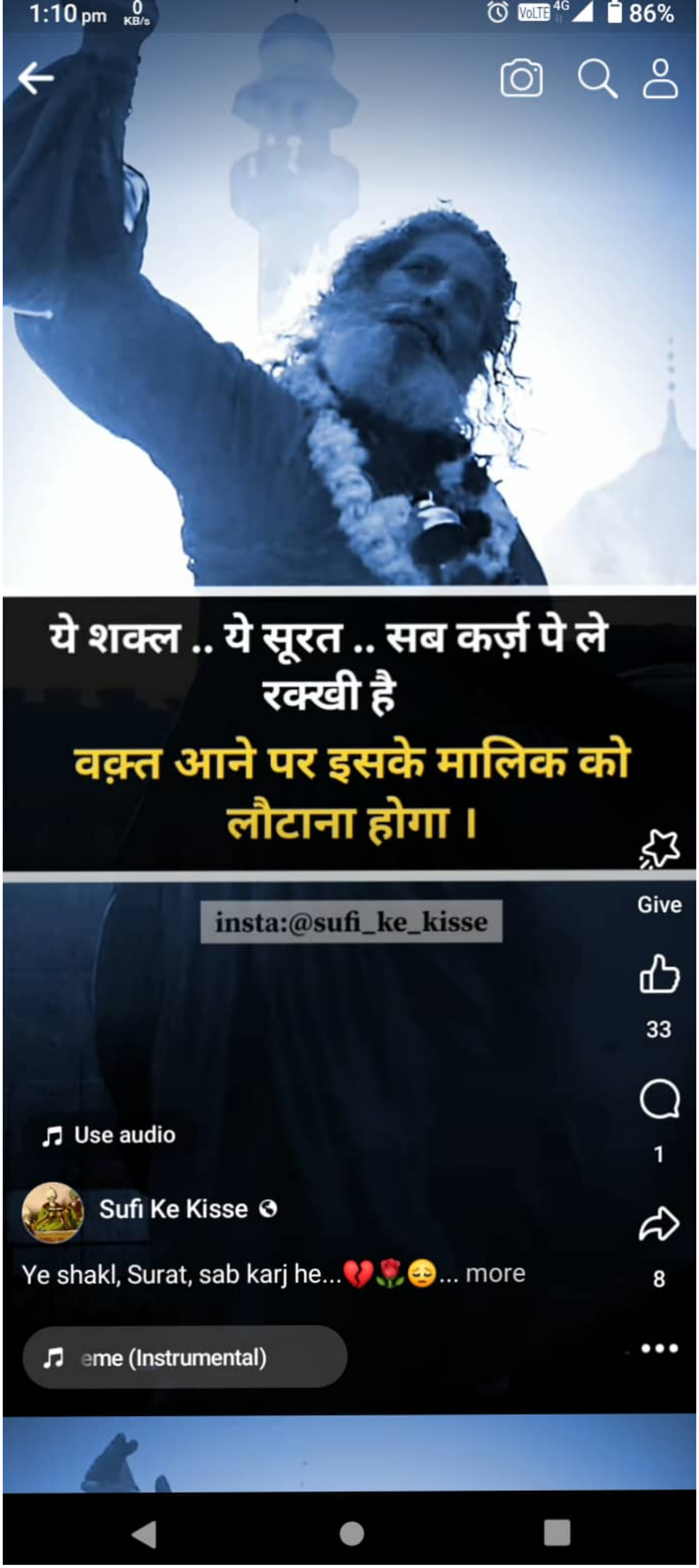

1:10 pm
86%
ये शक्ल .. ये सूरत .. सब कर्ज़ पे ले रक्खी है
वक़्त आने पर इसके मालिक को लौटाना होगा ।
insta:@sufi_ke_kisse
Give
33
1
8
Use audio
Sufi Ke Kisse
Ye shakl, Surat, sab karj he...💔🌹😔... more
eme (Instrumental)

CamScanner

1:10 pm
86%
Reels
कल तो कहते थे की हम बिस्तर
से उठ सकते नहीं
आज दुनियाँ से उठे, ताक़त
कहाँ से आ गयी ।
insta:@sufi_ke_kisse
Give
69
Use audio
16
Sufi Ke Kisse
Taqat kha se aayi...😥💔😔... more
Add a comment...

CamScanner

2:48 pm 0 KB/s 72%

ओशो जीवन सार
Pushpa · 3d ·

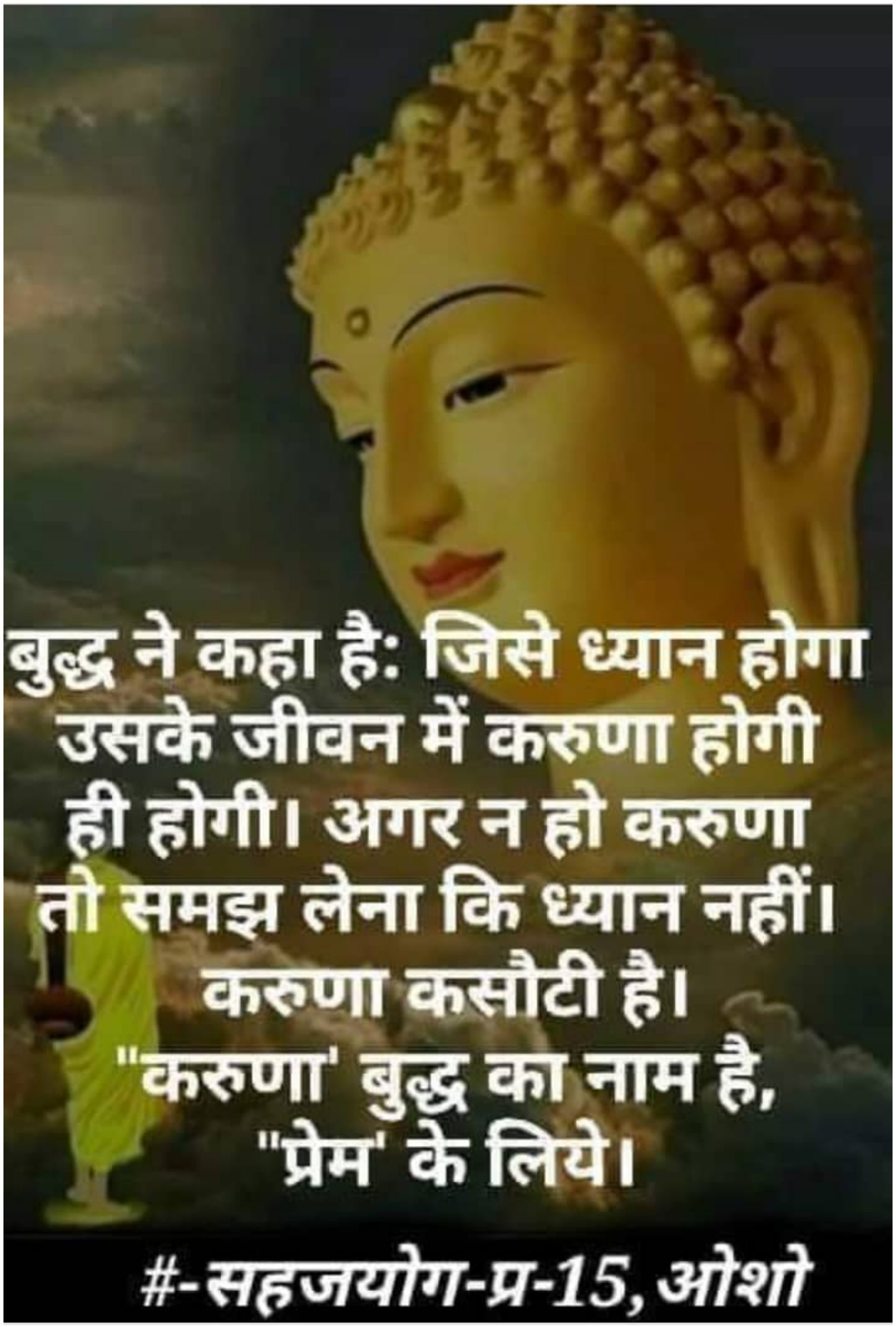

19 6 comments • 2 shares

Like Comment Send Share

CamScanner

2:47 pm
72%
ओर सब अनिश्चित हो
मृत्यु अनिश्चित नही है
77
19
Send
Osho Ravi Yog
Shiv Shiva
Osho Naman
Add a comment...

CamScanner

2:47 pm
72%
मृत्यु बिल्कुल सुनिश्चित है
मृत्यु
77
19
Send
Osho Ravi Yog 🧘
Shiv Shiva
Osho Naman 🙏❤️
Add a comment...

CamScanner

2:47 pm 0 KB/s 72%

24 3 comments

Like Comment Send

J. Krishnamurti Quotes
Sita D · 19h ·

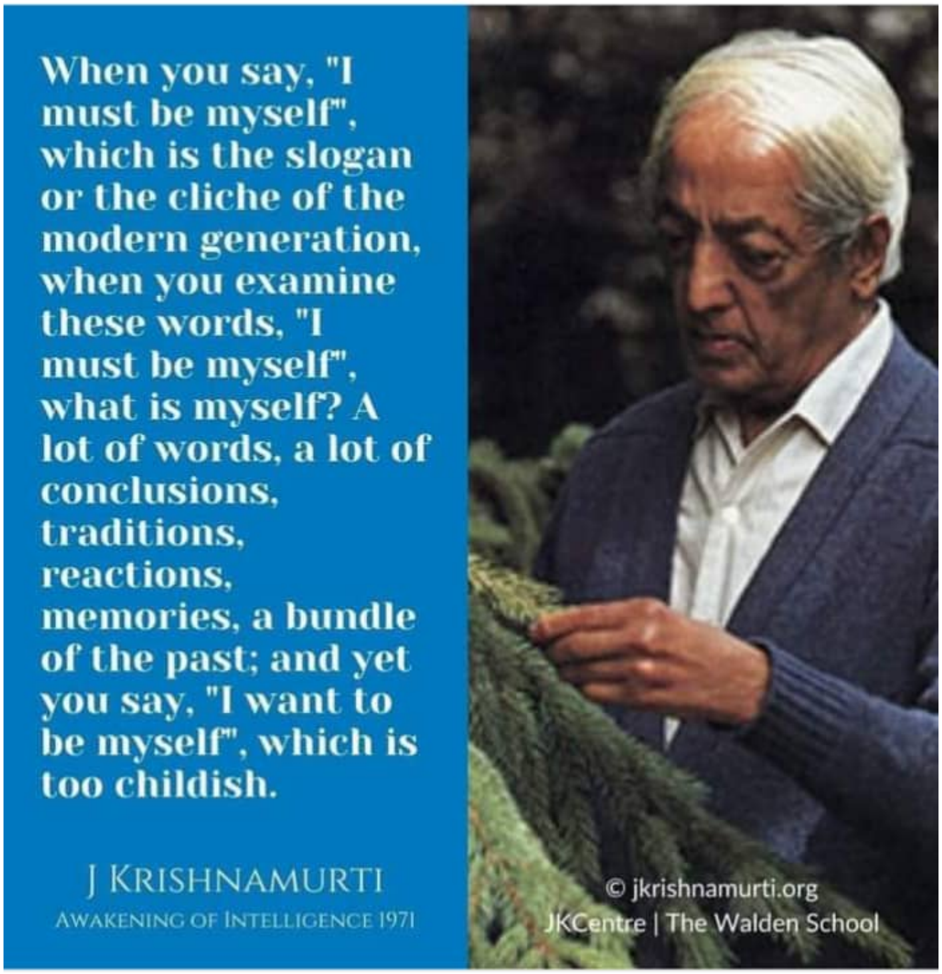

30 12 shares

Like Comment Send Share

कबीर दास जी महाराज
Reels · Mahendra Bankar · 9 Feb ·

CamScanner

2:46 pm 0 KB/s 72%

ओशो के सच्चे भक्त
Rajendra Patidar · 1d

एक बात स्मरण रहे : जब भी तुम्हें लगे कि कोई चीज गलत है तो पहले उसका कारण अपने भीतर खोजो, और कहीं मत जाओ। सौ में निन्यानबे मौकों पर तुम्हें अपने भीतर ही कारण मिल जाएगा। और जब सौ में निन्यानबे कारण तुम्हारे भीतर होंगे तो सौवां कारण अपने आप ही विदा हो जाएगा। तुम्हें जो कुछ होता है उसका कारण तुम स्वयं हो। तुम कारण हो; संसार तो बस दर्पण है।

14 · 1 comment • 3 shares

Like · Comment · Send · Share

ओशो के विचार - O'sho friends
ओशो फ्रेंडशिप · 15h

O'SHO FRIENDS INTERNATIONAL

CamScanner

Like Comment Send

ओशो मेरा प्यार

Lovely Time's · 18h ·

Naman shree

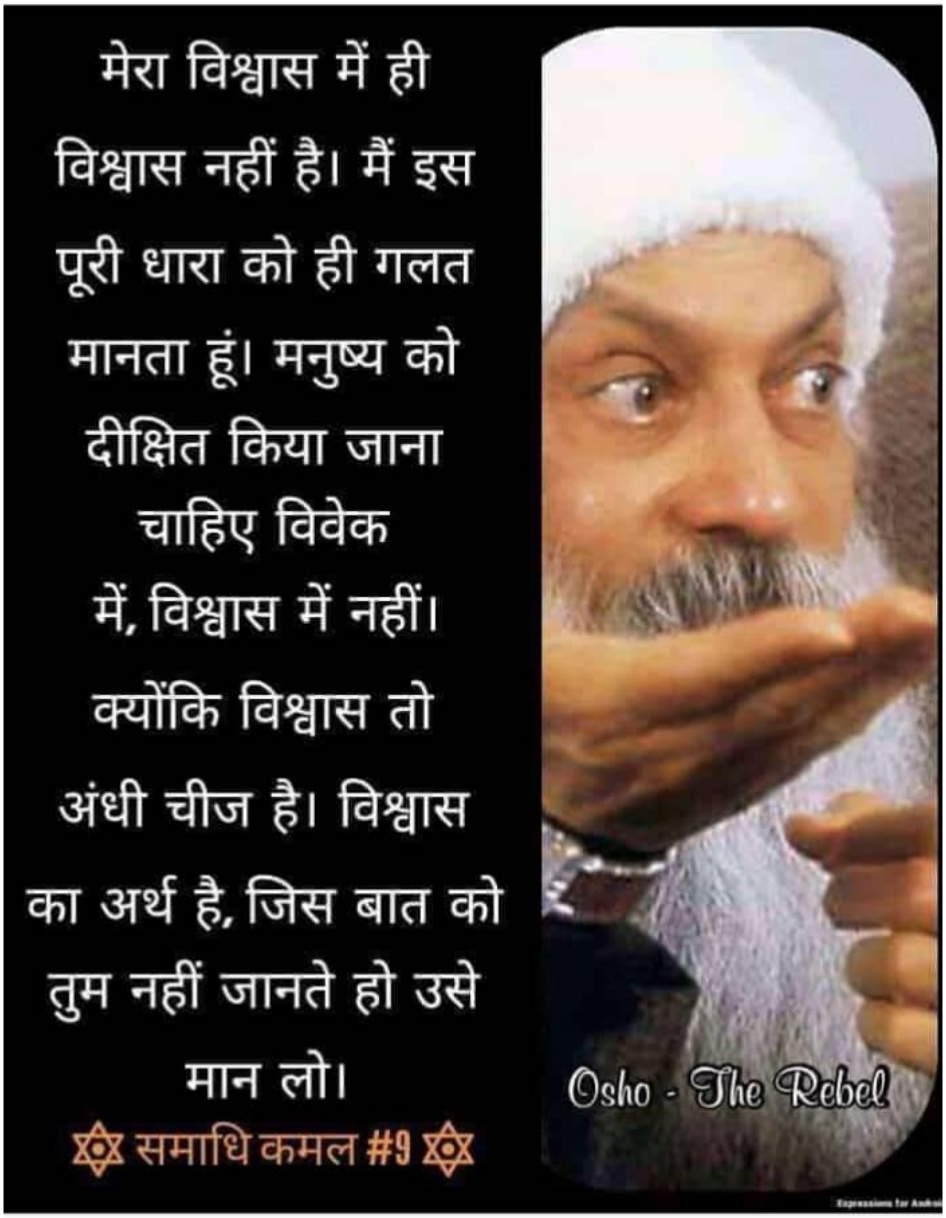

6 · 1 comment • 1 share

Like Comment Send Share

J. Krishnamurti - Words of Wisdom

Prasanta Kumar Sahoo · 15h ·

CamScanner

2:44 pm 0 KB/s 72%

Swami Antar Rajat Rajat

2d ·

तेरे जैसा कोई मिला ही नहीं,
कैसे मिलता कहीं पे था ही नहीं।
तू जहां तक दिखाई देता है,
उसके आगे मैं देखता ही नहीं।
मुझपे होकर गुजर गयी दुनियां,
मैं तेरी राह से हटा ही नहीं।
तेरे बारे में सोचने वाला,
अपने बारे में सोचता ही नहीं।।

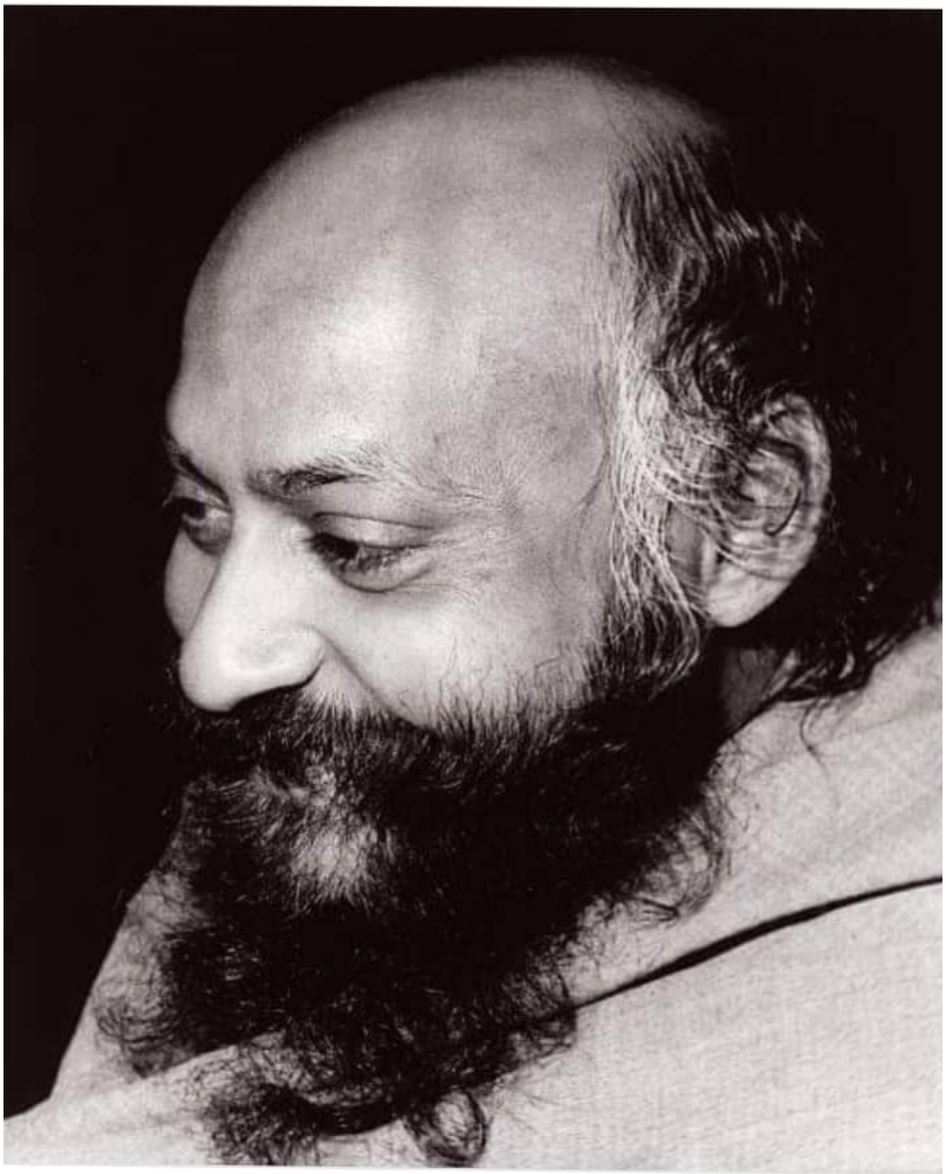

DrVikas + 14 2 comments • 1 share

CamScanner

2:44 pm 0 KB/s 73%

Ashok Kumar · 15h ·

❤️ Osho Naman ❤️
****

🌹🙏🕉️🙏🌹... See more

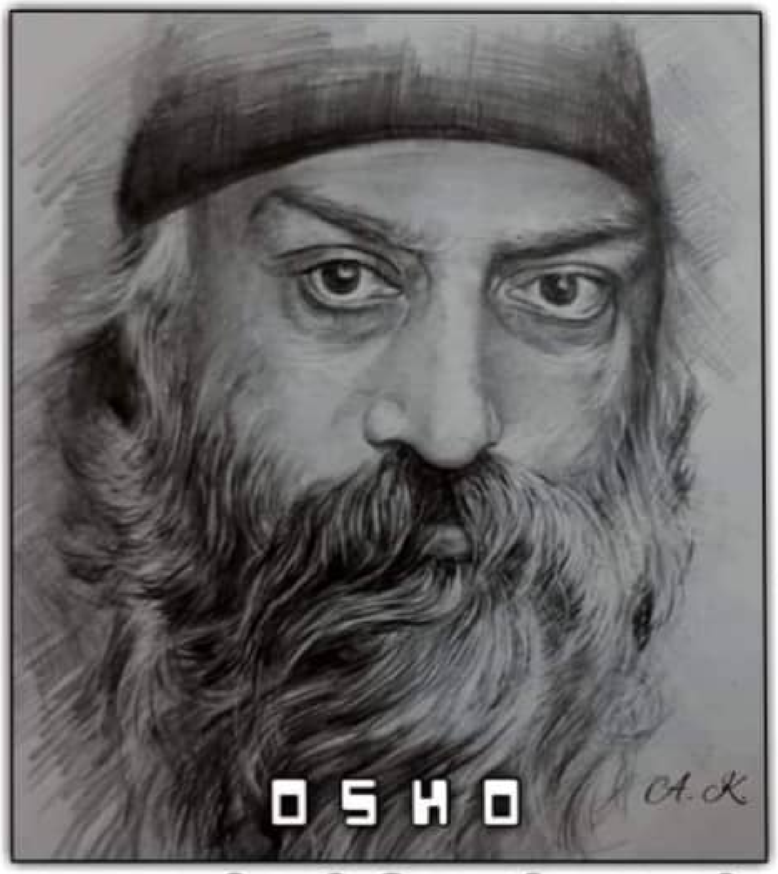

मनुष्य का मार्ग उसी दिन खो जाता है, जिस दिन वह स्वयं को खोजने से भी अधिक मूल्यवान..किन्हीं और खोजों को मान लेता है। और एक बार जितना ज़्यादा वह गलत रास्ता चुन लेता है, उसकी लौटने की, प्रक्रिया उतनी ही लम्बी और कठिन हो जाती है।

CamScanner

2:44 pm 0 KB/s 73%

Sevan Manikpuri · 7h ·

kabir dharmdas vanshavali damakhedha sat guru kabir saheb ki charno me koti koti pranam saheb bandgi saheb

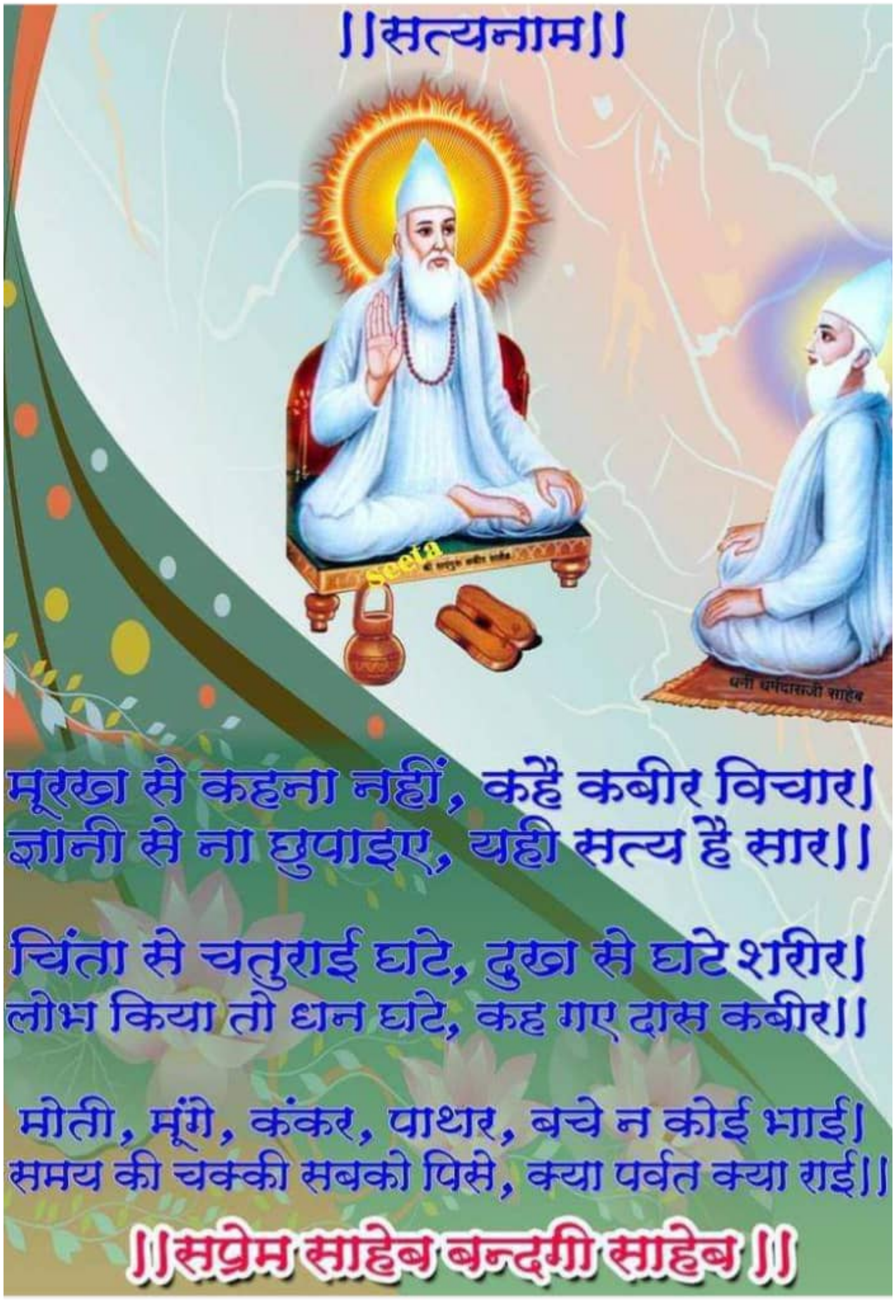

9 · 1 comment • 1 share

Like Comment Send Share

OSHO LOVERS GROUP

CamScanner

2:43 pm 0 KB/s 73%

Like Comment Send

***ओशो अर्थात एक युगांतरकारी चेतना ***

Sareen Siwach · 4d ·

🙏🙏🌹

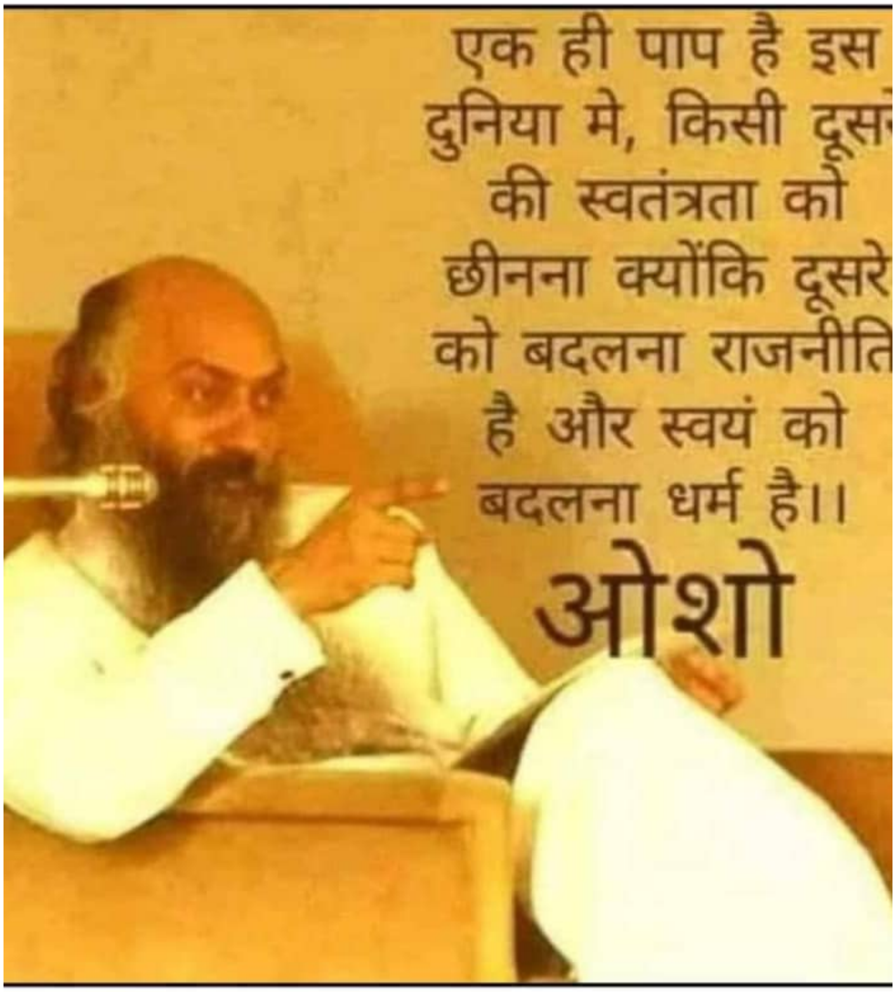

113 38 comments • 16 shares

Like Comment Send Share

भक्ति आंदोलन Bhakti Andolan

Sevan Manikpuri · 7h ·

kabir dharmdas vanshavali damakhedha sat guru kabir saheb ki charno me koti koti pranam saheb bandgi

CamScanner

2:42 pm 0 KB/s 73%

Like Comment Send

🎉🌹 रिश्तो की अहमियत🌹🎉

Munna Dalai · 7h

पांच तत्त्व का कोड है

भगवान

जिन्से यह भ्रमांड बना तथा जीवन की स्थापना हुई।

भ + ग + व + आ + न

भ : भूमि (**धरती**)

ग : गगन (आकाश)

व : वायु (हवा)

आ : आग (अग्नि)

न : नीर (पानी)

क्या अभी भी कोई ऐसा है जिसने भगवान को नही देखा?

अपने अंदर झाँक कर देखा, वह नज़र भी आएंगे

और

52 2 comments

Like Comment Send

***ओशो अर्थात एक युगांतरकारी चेतना ***

CamScanner

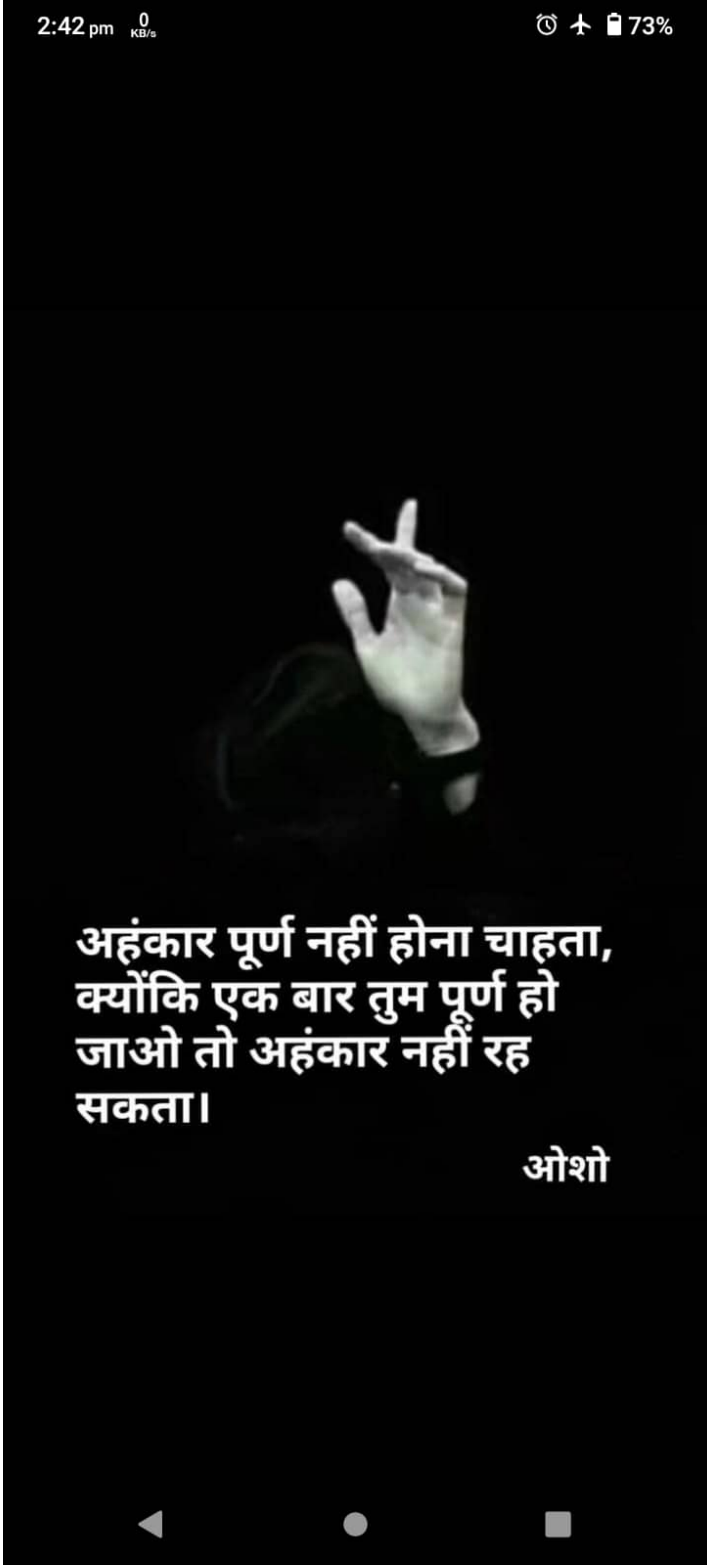
2:42 pm
0 KB/s
73%
अहंकार पूर्ण नहीं होना चाहता,
क्योंकि एक बार तुम पूर्ण हो
जाओ तो अहंकार नहीं रह
सकता।
ओशो

CamScanner

कृष्ण अगर कुछ हैं, तो अभिनेता हैं। और उनसे कुशल अभिनेता पृथ्वी पर नहीं हुआ है। उन्होंने इस पूरे जगत को मंच बना लिया है। बाकी अभिनेता एक छोटे से मंच को मंच मानते हैं उन्होंने पूरी पृथ्वी को मंच बना लिया। इससे क्या फर्क पड़ता है? दस-पांच तख्त रखकर हम मंच बना दें, फिर उस पर अभिनय चलता है। यह पूरी पृथ्वी मंच क्यों नहीं हो सकती? इस पूरी पृथ्वी पर अभिनय क्यों नहीं चल सकता? और अभिनेता जो है उसे न तो आंसू बांधते हैं, न उसे मुस्कुराहट बांधती है। जब वह रोता है, तब भी रोता नहीं; जब हंसता है, तब भी हंसता नहीं; जब प्रेम करता है तब भी प्रेम करता नहीं, जब लड़ता है तब भी लड़ता नहीं; उसकी मित्रता मित्रता नहीं, उसकी शत्रुता शत्रुता नहीं।

OSHO

CS CamScanner

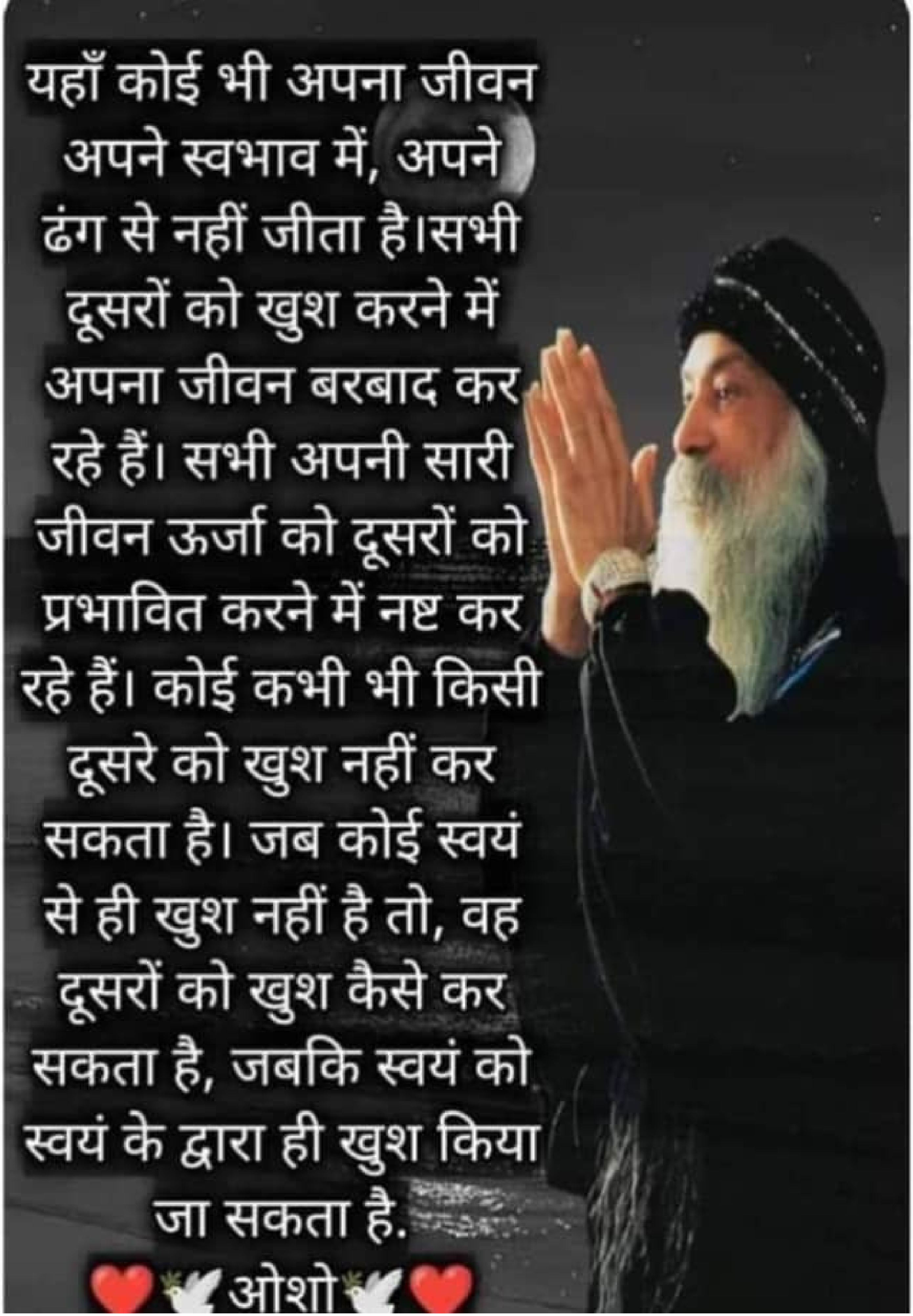
यहाँ कोई भी अपना जीवन
अपने स्वभाव में, अपने
ढंग से नहीं जीता है।सभी
दूसरों को खुश करने में
अपना जीवन बरबाद कर
रहे हैं। सभी अपनी सारी
जीवन ऊर्जा को दूसरों को
प्रभावित करने में नष्ट कर
रहे हैं। कोई कभी भी किसी
दूसरे को खुश नहीं कर
सकता है। जब कोई स्वयं
से ही खुश नहीं है तो, वह
दूसरों को खुश कैसे कर
सकता है, जबकि स्वयं को
स्वयं के द्वारा ही खुश किया
जा सकता है.
❤️🕊️ओशो🕊️❤️

CamScanner

UPC Stat Upendra
Today, 7:32 am

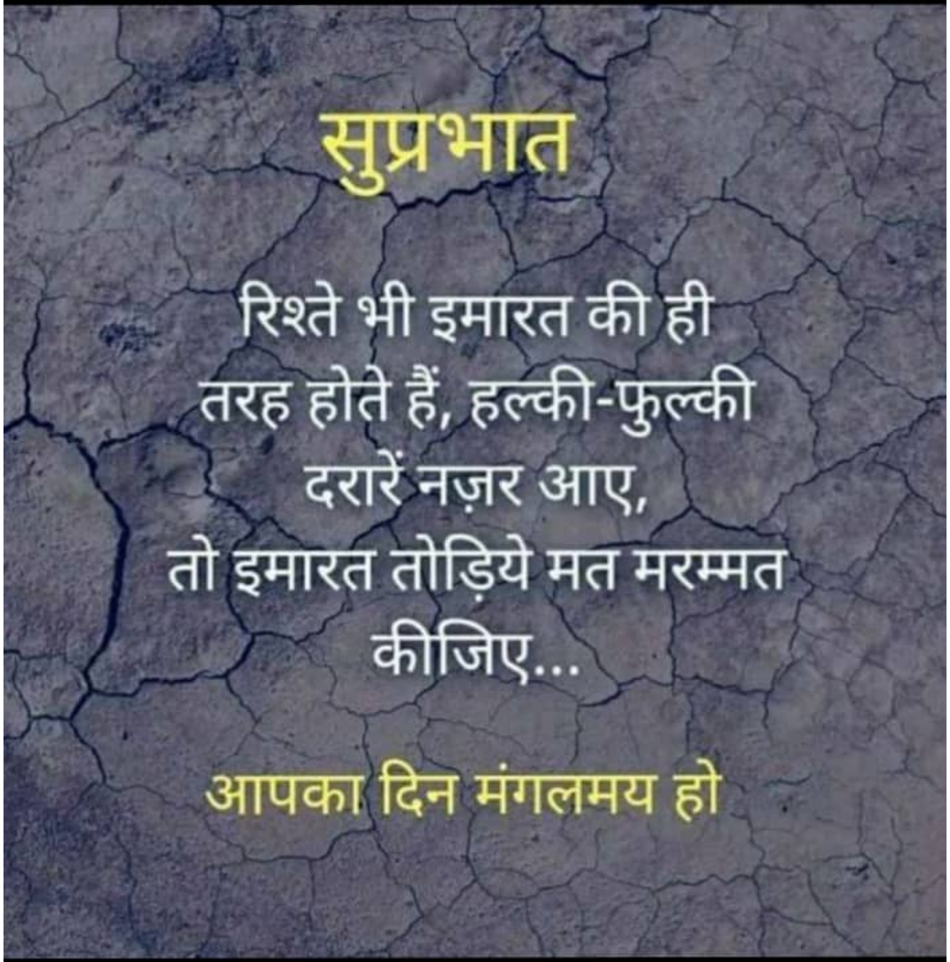

Good morning 🙏

Reply

CamScanner

6:58 pm 0 KB/s VoLTE 4G 57%
13 7

OSHO ❤️
Swami Dhyan Punit · 11m ·

आनंद को कसौटी समझो, अन्यथा तुम धोखा खाओगे। शब्दों के धनी बहुत हैं, आनंद का धनी खोजो। जिसके जीवन में सब शांत और परिपूर्ण हो गया हो। जिसे कुछ पाने को न बचा हो, वही तुम्हें कुछ दे सकेगा। वही गुरु हो सकता है। पंडित तो तुम्हारे ही साथ है। तुमसे थोड़ा ज्यादा जानता है, तुम थोड़ा कम जानते हो। तुम भी थोड़ी मेहनत करो, तो थोड़ा ज्यादा जान लोगे। पंडित में और तुम में कोई गुणात्मक भेद नहीं है। मात्रा का भले हो, गुण का नहीं है। ज्ञानी और तुम में गुणात्मक भेद है।

जैसे दो आदमी सोते हों, एक आदमी सपना देखता हो कि चोर है; और एक आदमी सपना देखता हो कि साधु है। क्या तुम सोचते हो, उन दोनों में कोई गुणात्मक भेद है? दोनों सो रहे हैं। दोनों सपना देख रहे हैं। दोनों के हाथ में सत्य नहीं है। और एक तीसरा आदमी जागा हुआ पास ही बैठा है। जागा हुआ है, सपना नहीं देख रहा है। इस आदमी में और उन दो सोए आदमियों में गुणात्मक भेद है। इसकी चेतन-दशा ही अलग है। यह जागा हुआ है।

सपने इसे नहीं सताते हैं। क्योंकि सपने तो गहन तंद्रा में ही आते हैं। जब तुम बेहोश होते हो, तभी सपने तुम्हें आते हैं।

जागे हुए व्यक्ति को वासना नहीं सताती, क्योंकि वासना एक स्वप्न है। जागे हुए व्यक्ति को लोभ नहीं सताता, क्योंकि लोभ एक स्वप्न है। जागे हुए व्यक्ति को पाप नहीं सताता, क्योंकि पाप एक स्वप्न है। और मैं तुमसे कहता हूं, जागे हुए व्यक्ति को पुण्य भी नहीं सताता, क्योंकि पुण्य भी एक स्वप्न है। अशुभ तो सताता ही नहीं, शुभ भी नहीं सताता। न तो जागा हुआ आदमी शैतान होने की कामना करता है, और न साधु होने की कामना करता है।

ओशो..."कहे कबीर दीवाना 3"

CamScanner

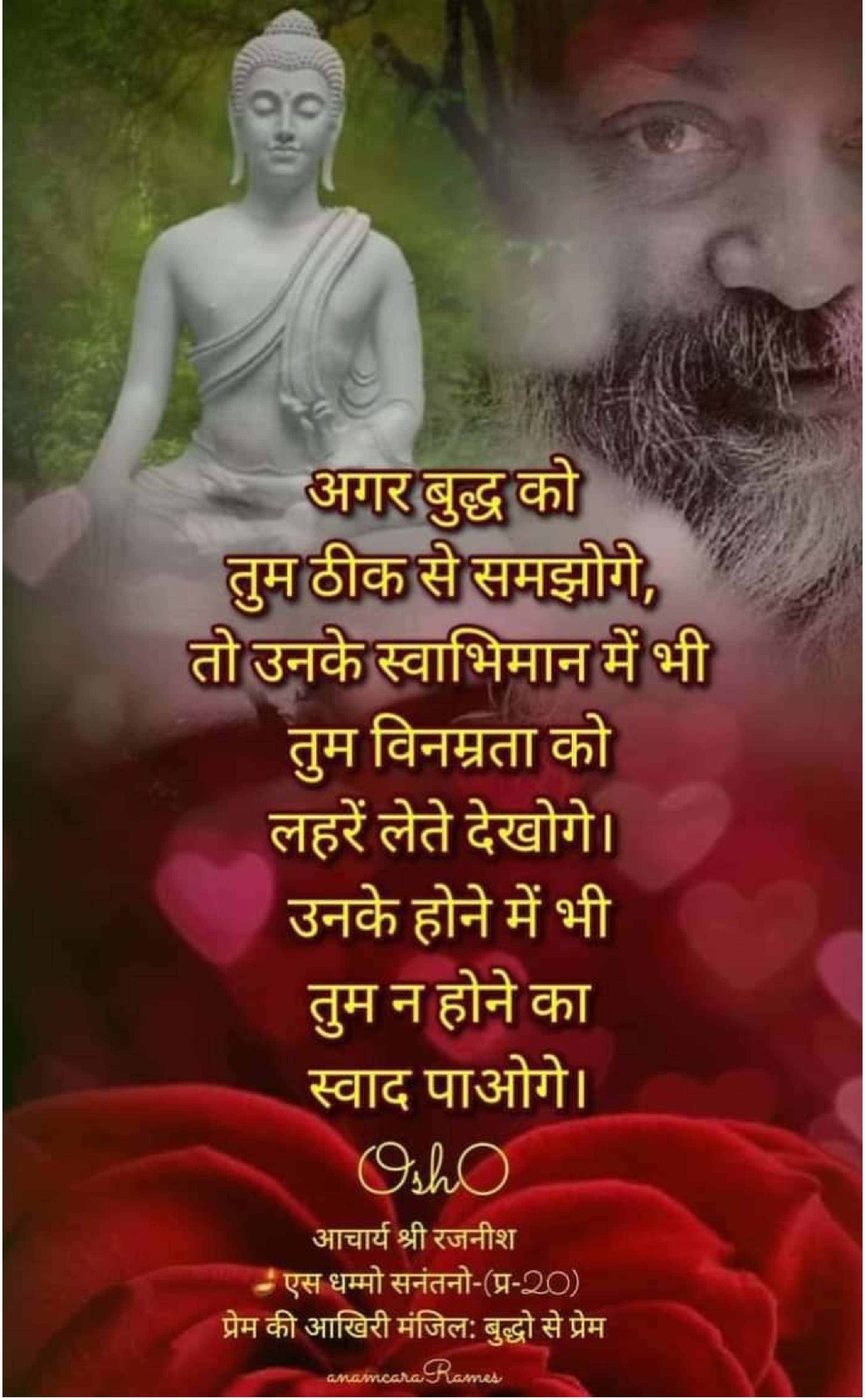
अगर बुद्ध को
तुम ठीक से समझोगे,
तो उनके स्वाभिमान में भी
तुम विनम्रता को
लहरें लेते देखोगे।
उनके होने में भी
तुम न होने का
स्वाद पाओगे।
OshO
आचार्य श्री रजनीश
एस धम्मो सनंतनो-(प्र-20)
प्रेम की आखिरी मंजिल: बुद्धो से प्रेम
anamcara Rames

CamScanner

6:57 pm 0 KB/s VoLTE 4G 57%

जब मौत ने द्वार पर दस्तक दी, तो वह अपनी ही ग्यारह मूर्तियों में छिपकर खड़ा हो गया। श्वास उसने साध ली। उतना ही फर्क था कि वह श्वास लेता, मूर्तियां श्वास न लेतीं। उसने श्वास रोक ली। मौत भीतर आई और बड़े भ्रम में पड़ गई। एक को लेने आई थी, यहां बारह एक जैसे लोग थे। लेकिन मौत को धोखा देना इतना आसान तो नहीं। मौत ने जोर से कहा, और सब तो ठीक है, एक जरा सी भूल रह गई। वह चित्रकार बोला, कौन सी भूल? मौत ने कहा, यही कि तुम अपने को न भूल पाओगे।

लेकिन अगर बुद्ध खड़े होते वहां, तो उतनी भूल भी न रह गई थी। उतनी भी भूल न रह गई थी, अपनी याद भी न रह गई थी। अपना होना भी न रह गया था। अगर बुद्ध को तुम ठीक से समझोगे, तो उनके स्वाभिमान में भी तुम विनम्रता को लहरें लेते देखोगे। उनके होने में भी तुम न होने का स्वाद पाओगे।

🪷आचार्य श्री रजनीश🪷
🪔एस धम्मो सनंतनो-(प्र-20)🪔
प्रेम की आखिरी मंजिल: बुद्धो से प्रेम

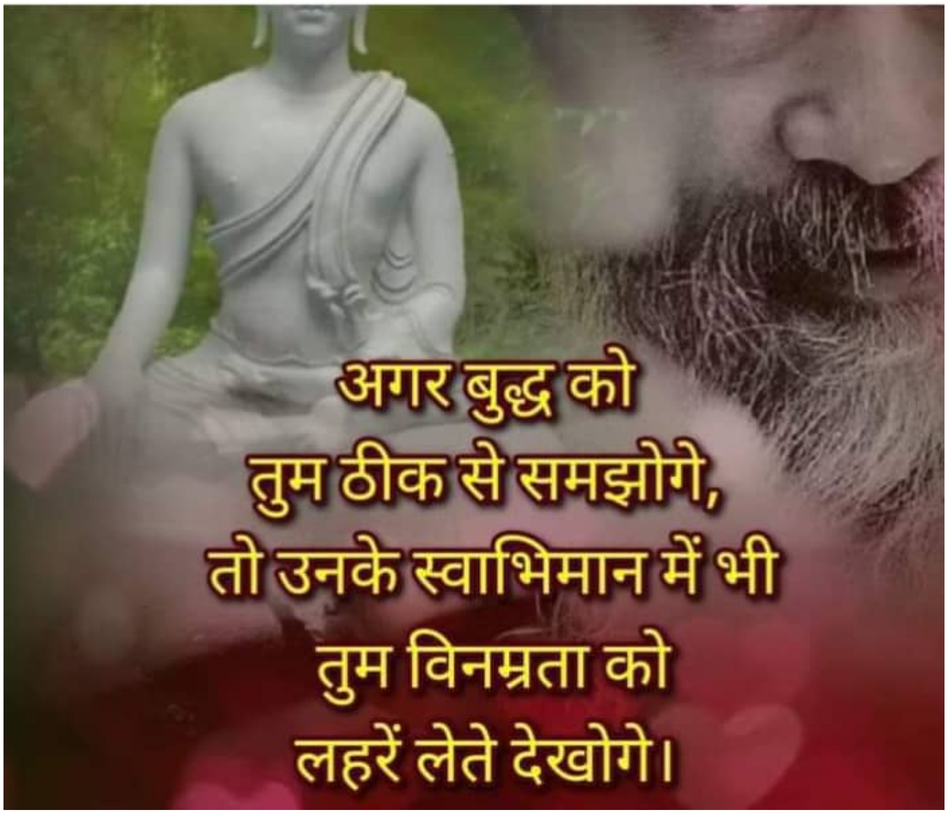

CamScanner

6:56 pm 0 KB/s 57%
13 7

तो तुम पूछते हो, 'जिन्होंने बुद्ध की मूर्तियां बनायीं क्या उन्होंने आज्ञा का उल्लंघन किया?'

निश्चित ही आज्ञा का उल्लंघन किया, करने योग्य था। अगर कहीं कोई अदालत हो, तो मैं उनके पक्ष में खड़ा होऊं। मैं बुद्ध के खिलाफ उनके पक्ष में खड़ा होऊं जिन्होंने मूर्तियां बनायीं। उन्होंने संगमरमर के नाक-नक्श से थोड़ी सी खबर हम तक पहुंचा दी।

बुद्ध की मूर्ति बनानी असंभव है। क्योंकि बुद्धत्व अरूप है, निराकार है। बुद्ध की तुम क्या प्रतिमा बनाओगे? कैसे बनाओगे? कोई उपाय नहीं है। लेकिन फिर भी अदभुत मूर्तियां बनीं। उन मूर्तियों को अगर कोई गौर से देखे, तो मूर्तियां कुंजियां हैं। तुम्हारे भीतर कोई ताले खुल जाएंगे, गौर से देखते-देखते। तुम्हारे भीतर कोई चाबी लग जाएगी, कोई द्वार अचानक खुल जाएगा।

हमने संगमरमर में मूर्तियां बनायीं, क्योंकि संगमरमर पत्थर भी है और कोमल भी। बुद्ध पत्थर जैसे कठोर हैं और फूल जैसे कोमल। तो हमने संगमरमर चुना। संगमरमर कठोर है, पर शीतल। बुद्ध पत्थर जैसे कठोर हैं, पर उन जैसा शीतल, उन जैसा शांत तुम कहां पाओगे? हमने संगमरमर की मूर्तियां चुनीं। क्योंकि बुद्ध जब जीवित थे तब भी वे ऐसे ही शांत बैठ जाते थे, कि दूर से देखकर शक होता कि आदमी है या मूर्ति?

मैंने एक बड़ी पुरानी कहानी सुनी है। एक बहुत बड़ा मूर्तिकार हुआ। उस मूर्तिकार को एक ही भय था सदा, मौत का। जब उसकी मौत करीब आने लगी, तो उसने अपनी ही ग्यारह मूर्तियां बना लीं। वह इतना बड़ा कलाकार था कि लोग कहते थे, अगर वह किसी की मूर्ति बनाए तो पहचानना मुश्किल है कि मूल कौन है, मूर्ति कौन है। मूर्ति इतनी जीवंत होती थी।

जब मौत ने द्वार पर दस्तक दी, तो वह अपनी ही ग्यारह मूर्तियों में छिपकर खड़ा हो गया। श्वास उसने साध ली। उतना ही फर्क था कि वह श्वास लेता, मूर्तियां श्वास न लेतीं। उसने श्वास रोक ली। मौत भीतर आई और बडे भ्रम में पड गई। एक को लेने आई थी, यहां बारह एक जैसे

CamScanner

6:55 pm 0 KB/s VoLTE 4G 57%

अज्ञानियों ने कहा, हमने सुना तो था, लेकिन समझा नहीं। सुना तो था, लेकिन बात इतनी बड़ी थी कि हम सम्हाल न सके। सुना तो था, लेकिन हम से बड़ी थी घटना, हमारी स्मृति में न समाई, हम अवाक और चौंके रह गये। घड़ी आई और बीत गई, और हम खाली हाथ के खाली हाथ रहे। तो कुछ हम दोहरा तो सकते हैं, लेकिन हम पक्का नहीं कह सकते कि बुद्ध ने ऐसा ही कहा था। बहुत कुछ छूट गया होगा। और जो हमने समझा था, वही हम कहेंगे। जो उन्होंने कहा था, वह हम कैसे कहेंगे?

तो बड़ी कठिनाई खड़ी हो गई। अज्ञानी कह नहीं सकते, क्योंकि उन्हें भरोसा नहीं। ज्ञानियों को भरोसा है, लेकिन सीमा-रेखाएं खो गई हैं।

फिर किसी ने सुझाया, किसी ऐसे आदमी को खोजो जो दोनों के बीच में हो। बुद्ध के साथ बुद्ध का निकटतम शिष्य आनंद चालीस वर्षों तक रहा था। लोगों ने कहा, आनंद को पूछो! क्योंकि न तो वह अभी बुद्धत्व को उपलब्ध हुआ है और न वह अज्ञानी है। वह द्वार पर खड़ा है। इस पार संसार, उस पार बुद्धत्व, चौखट पर खड़ा है, देहलीज पर खड़ा है। और जल्दी करो, अगर वह देहलीज के पार हो गया, तो उसकी भी सीमा-रेखाएं खो जाएंगी।

आनंद ने जो दोहराया, वही संगृहीत हुआ। आनंद की बड़ी करुणा है जगत पर। अगर आनंद न होता, बुद्ध के वचन खो गये होते। और बुद्ध के वचन खो गये होते, तो बुद्ध का नाम भी खो गया होता।

नहीं कि तुम बुद्ध के नाम या वचन से मुक्त हो जाओगे। आग शब्द से कभी कोई जला? जल शब्द से कभी किसी की तृप्ति हुई? लेकिन सुराग मिलता है, राह खुलती है। शायद तुममें से कोई चल पड़े। सरोवर की बात सुनकर किसी की प्यास साफ हो जाए, कोई चल पड़े। हजार सुनें, कोई एक चल पड़े। लाख सुनें, कोई एक पहुंच जाए। उतना भी क्या कम है!

तो तुम पूछते हो, 'जिन्होंने बुद्ध की मूर्तियां बनायीं क्या उन्होंने आज्ञा का उल्लंघन किया?'

CamScanner

6:54 pm 0 KB/s VoLTE 4G 57%
13 7

Naye bharat ke khoj
14h ·

एक संन्यासी मेरे पास आया और उसने कहा, मैंने पत्नी-बच्चे सबका त्याग कर दिया। मैंने उससे पूछा, वे तेरे थे कब? त्याग तो उसका होता है जो अपना हो। पत्नी तेरी थी? सात चक्कर लगा लिए थे आग के आसपास, उससे तेरी हो गई थी? बच्चे तेरे थे? पहली तो भूल वहीं हो गई कि तूने उन्हें अपना माना। और फिर दूसरी भूल यह हो गई कि उनको छोड़कर भागा। छोड़ा वही जा सकता है जो अपना मान लिया गया हो। बात कुल इतनी है, इतना ही जान लेना है कि अपना कोई भी नहीं है, छोड़कर क्या भागना है! छोड़कर भागना तो भूल की ही पुनरुक्ति है।

जिन्होंने जाना, उन्होंने कुछ भी छोड़ा नहीं। जिन्होंने जाना, उन्होंने कुछ भी पकड़ा नहीं। जिन्होंने जाना, उन्हें छोड़ना नहीं पड़ता, छूट जाता है। क्योंकि जब दिखाई पड़ता है कि पकड़ने को यहां कुछ भी नहीं है, तो मुट्ठी खुल जाती है।

बुद्ध की मृत्यु हुई-तब तक तो किसी ने बुद्ध का शास्त्र लिखा न था, ये धम्मपद के वचन तब तक लिखे न गये थे-तो बौद्ध भिक्षुओं का संघ इकट्ठा हुआ। जिनको याद हो, वे उसे दोहरा दें, ताकि लिख लिया जाए। बड़े ज्ञानी भिक्षु थे, समाधिस्थ भिक्षु थे। लेकिन उन्होंने तो कुछ भी याद न रखा था। जरूरत ही न थी। समझ लिया, बात पूरी हो गई थी। जो समझ लिया, उसको याद थोड़े ही रखना पड़ता है। तो उन्होंने कहा कि हम कुछ कह तो सकते हैं, लेकिन वह बड़ी दूर की ध्वनि होगी। वे ठीक-ठीक वही शब्द न होंगे जो बुद्ध के थे। उसमें हम भी मिल गये हैं। वह हमारे साथ इतना एक हो गया है कि कहां हम, कहां बुद्ध, फासला करना मुश्किल है।

तो अज्ञानियों से पूछा कि तुम कुछ कहो, इतनी तो कहते हैं कि मुश्किल है तय करना। हमारी समाधि के सागर में बुद्ध के वचन खो गये। अब हमने सुना, हमने कहा कि उन्होंने कहा, इसकी भेद-रेखा नहीं रही। जब कोई स्वयं ही बुद्ध हो जाता है, तो भेद-रेखा मुश्किल हो जाती है। क्या अपना, क्या बुद्ध का ' अज्ञानियों से पूछो।

CamScanner

6:40 pm
59%
Reels
रूह छूकर कोई गुजरे तब मोहब्बत समझना,
जिस्म छूकर तो हवाएं भी गुजरती है
71K
272
IG | @ASIFWRITES_08
Use audio
830
asifwrites_08
Send
MENTION YOUR STORY 🤭... more
Amaal Mallik · O Khuda
Add a comment...

CamScanner

6:37 pm 0 KB/s 60%

13 7

Celinne Da Costa
2h ·

Say it with me: My inner world creates my external world, and any dream that has not yet materialized in my life is simply a reflection of the changes I have not yet made.

See translation

Olivier + 12 2 comments

Like Comment Send Share

CS CamScanner

सुमिरन ऐसा कीजिए ,दूसरा लखै न कोय।
ओठ न फरकत देखिए, प्रेम राखिए गोय।।

अर्थात -

मलूक कहते हैं कि , भगवान के प्रति प्रेम दिखावे की चीज़ नहीं ,प्रर्दशन की वस्तु या क्रिया नहीं है ,बल्कि उसे गुप्त रखिये , लोगों से छिपाकर रखिए, तभी उसका महत्व है। वह निहायत निजी व्यापार है । आत्मा और परमात्मा के मध्य का संवाद है। पहचान है। योग है। यह किसी को दिखाया-समझाया नहीं जा सकता । यह गूंगे का गुड़ है। यह अजपा-जाप है। हर श्वास में राम ही का जाप चलता है।

-सन्त बाबा मलूक दास

© आध्यात्मिक साधना संघ , नारायणा

CamScanner

10:44 pm 0 KB/s 30%

during the late 1960s and became known as "the sex guru".[1][8][9]

Bhagwan Shree Rajneesh

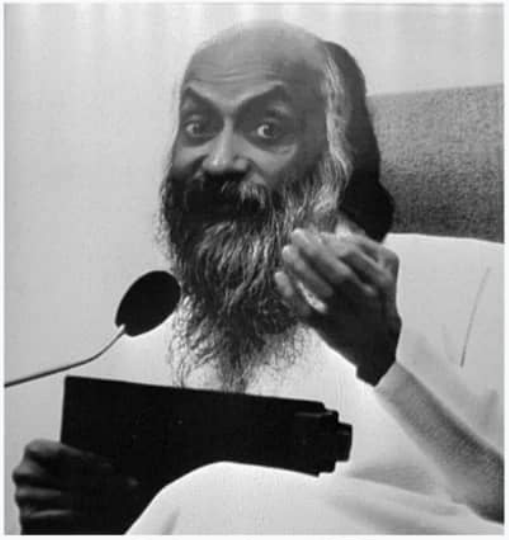

Rajneesh c. 1977

Born	Chandra Mohan Jain 11 December 1931 Kuchwada, Bhopal State, British India
Died	19 January 1990 (aged 58) Pune, Maharashtra, India
Nationality	Indian
Education	Dr. Hari Singh Gour University (MA)
Known for	Spirituality, mysticism, anti-religion[1]
Movement	Neo-sannyasins[1]
Memorial(s)	Osho International Meditation Resort, Pune

CS CamScanner

10:44 pm 39 KB/s 30%

hi.m.wikipedia.org/wiki/र

रवि शंकर

श्री श्री रवि शंकर

जन्म	रविशंकर 13 मई 1956 (आयु 67) पापनाशम, तमिलनाडु, भारत
गुरु/शिक्षक	महर्षि महेश योगी[1][2]
खिताब/सम्मान	श्री श्री
कथन	मैं एक तनाव और हिंसा मुक्त समाज चाहता हूँ।[3][4]
धर्म	हिन्दू
राष्ट्रीयता	भारत

CamScanner

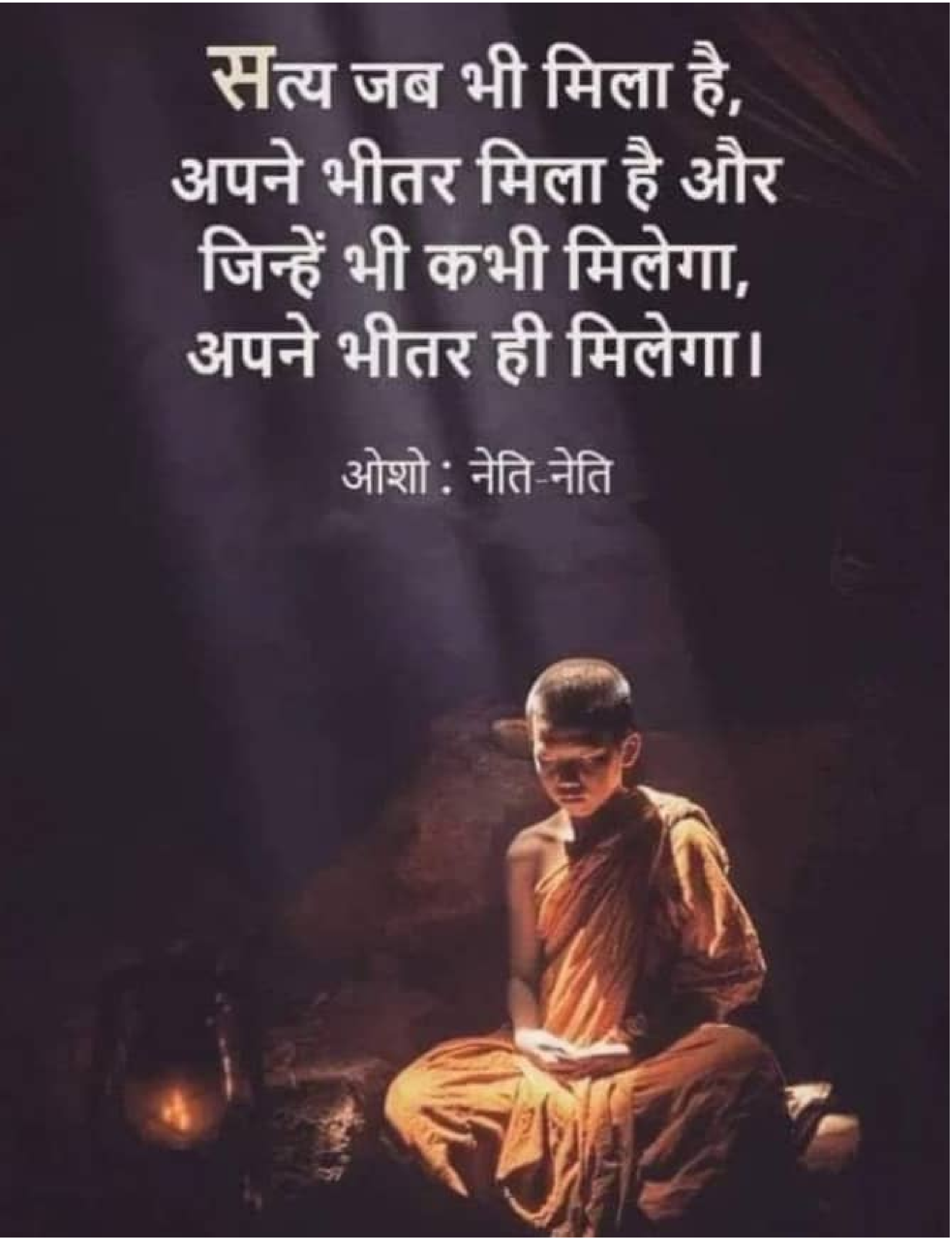

CamScanner

संघर्ष प्रकृति का आमंत्रण है,

जो स्वीकार करता है वही आगे बढ़ता है।

– अज्ञात

@MIZAAJ POETRY

CS CamScanner

CamScanner

11:17 pm 5 KB/s 25%

Osho janaki dhyan kendra
4h ·

आनंद को कसौटी समझो, अन्यथा तुम धोखा खाओगे। शब्दों के धनी बहुत हैं, आनंद का धनी खोजो। जिसके जीवन में सब शांत और परिपूर्ण हो गया हो। जिसे कुछ पाने को न बचा हो, वही तुम्हें कुछ दे सकेगा। वही गुरु हो सकता है। पंडित तो तुम्हारे ही साथ है। तुमसे थोड़ा ज्यादा जानता है, तुम थोड़ा कम जानते हो। तुम भी थोड़ी मेहनत करो, तो थोड़ा ज्यादा जान लोगे। पंडित में और तुम में कोई गुणात्मक भेद नहीं है। मात्रा का भले हो, गुण का नहीं है। ज्ञानी और तुम में गुणात्मक भेद है।

जैसे दो आदमी सोते हों, एक आदमी सपना देखता हो कि चोर है; और एक आदमी सपना देखता हो कि साधु है। क्या तुम सोचते हो, उन दोनों में कोई गुणात्मक भेद है? दोनों सो रहे हैं। दोनों सपना देख रहे हैं। दोनों के हाथ में सत्य नहीं है। और एक तीसरा आदमी जागा हुआ पास ही बैठा है। जागा हुआ है, सपना नहीं देख रहा है। इस आदमी में और उन दो सोए आदमियों में गुणात्मक भेद है। इसकी चेतन-दशा ही अलग है। यह जागा हुआ है।

सपने इसे नहीं सताते हैं। क्योंकि सपने तो गहन तंद्रा में ही आते हैं। जब तुम बेहोश होते हो, तभी सपने तुम्हें आते हैं।

जागे हुए व्यक्ति को वासना नहीं सताती, क्योंकि वासना एक स्वप्न है। जागे हुए व्यक्ति को लोभ नहीं सताता, क्योंकि लोभ एक स्वप्न है। जागे हुए व्यक्ति को पाप नहीं सताता, क्योंकि पाप एक स्वप्न है। और मैं तुमसे कहता हूं, जागे हुए व्यक्ति को पुण्य भी नहीं सताता, क्योंकि पुण्य भी एक स्वप्न है। अशुभ तो सताता ही नहीं, शुभ भी नहीं सताता। न तो जागा हुआ आदमी शैतान होने की कामना करता है, और न साधु होने की कामना करता है।

ओशो..."कहे कबीर दीवाना 3”

CamScanner

प्रश्न :- शास्त्र कहते हैं स्त्री नरक का द्वार है। आप क्या कहते हैं?

शोभना, एक छोटी सी कहानी कहता हूं।

ढब्बू जी की पत्नी धन्नो एक दिन उदास स्वर में अपनी सहेली गुलाबो से कह रही थी, बहन मैं तो परेशान हो गई हूं अपने पति से, वे मुझे हमेशा ही रामायण की यह चौपाई कि--ढोल गंवार शूद्र पशु नारी, ये सब ताडन के अधिकारी। कह-कह कर प्रताड़ित करते रहते हैं। मैं तो तंग आ गई यह सुन-सुन कर।

गुलाबो बोली : अरे, इसमें इतना परेशान होने की क्या बात है! मैंने कुछ ही दिन पहले एक नई चौपाई बनाई है, तू इसे गाया कर--ढोल गंवार पुरुष और घोड़ा, जितना पीटो उतना थोड़ा।

इसमें क्या चिंता लेनी है! स्त्रियों को अपनी चौपाइयां बना लेनी चाहिए। अपने शास्त्र बनाओ। शास्त्रों पर किसी की बपौती है? किसी का ठेका है? चौपाई लिखने की कला कोई बाबा तुलसीदास पर खत्म हो गई है? याद कर लो इस चौपाई को--ढोल गंवार पुरुष और घोड़ा, जितना पीटो उतना थोड़ा।

आज इतना ही।

ओशो; मन ही पूजा मन ही धूप, प्रवचन--08

CamScanner

11:15 pm 8 KB/s VoLTE 4G 25%

facebook

Naye bharat ke khoj
18h ·

एक बुद्ध के शिष्य सुभूति के सम्बन्ध में कहा जाता है कि, एक दिन वह एक "वृक्ष के नीचे बैठा हुआ था!
जब अचानक बिना फूलों के मौसम के उस वृक्ष से फूल झरने लगे! इसलिए उसने अपनी आंखें खोलीं। आखिर मामला क्या है? वृक्ष में कलियां भी नहीं आई थीं और न उसके पुष्पित होने का वह मौसम ही था, तब अचानक कहां से लाखों पुष्प झरने लगे? उसने देखा कि वृक्ष के ऊपर आकाश में चारों ओर से बहुत से देवता उस पर पुष्पों की वर्षा कर रहे थे। उसने देवताओं से यह भी नहीं पूछा! कि आप लोग ऐसा क्यों कर रहे हैं और उसने अपनी आंखें पुन: बंद कर लीं।

तब उन देवताओं ने कहा-" सुभूति हम लोग आपको धन्यवाद देने और अहोभाव प्रकट करने के लिए ही आए हैं कि आपने शून्यता पर इतना सुन्दर प्रवचन दिया। " -
और सुभूति ने कहा-" लेकिन मैंने तो एक शब्द भी नहीं कहा, फिर आप लोग मुझे शून्यता पर दिए प्रवचन के लिए धन्यवाद क्यों दे रहे हैं? "
देवताओं ने कहा-" न आपने कुछ कहा और न हम लोगों ने कुछ सुना- और शून्यता पर यही परिपूर्ण प्रवचन है। "
वह इतना अधिक खाली और शून्य हो गया था कि पूरे ब्रह्माण्ड ने उस शून्यता का अनुभव किया और देवताओं को उस पर पुष्प बरसाने आना पड़ा.!!

ओशो. 🍁

CamScanner

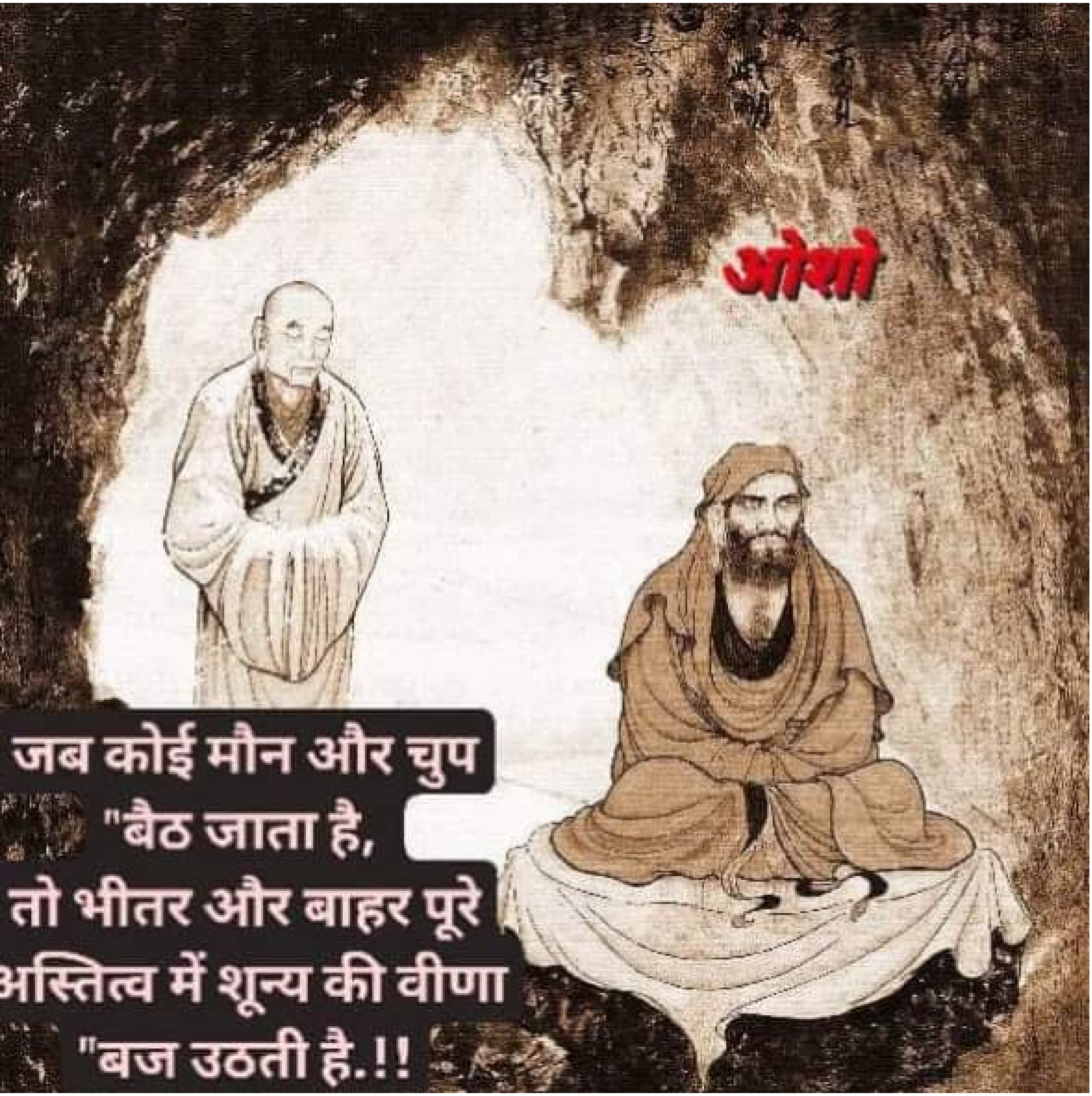

CamScanner

CamScanner

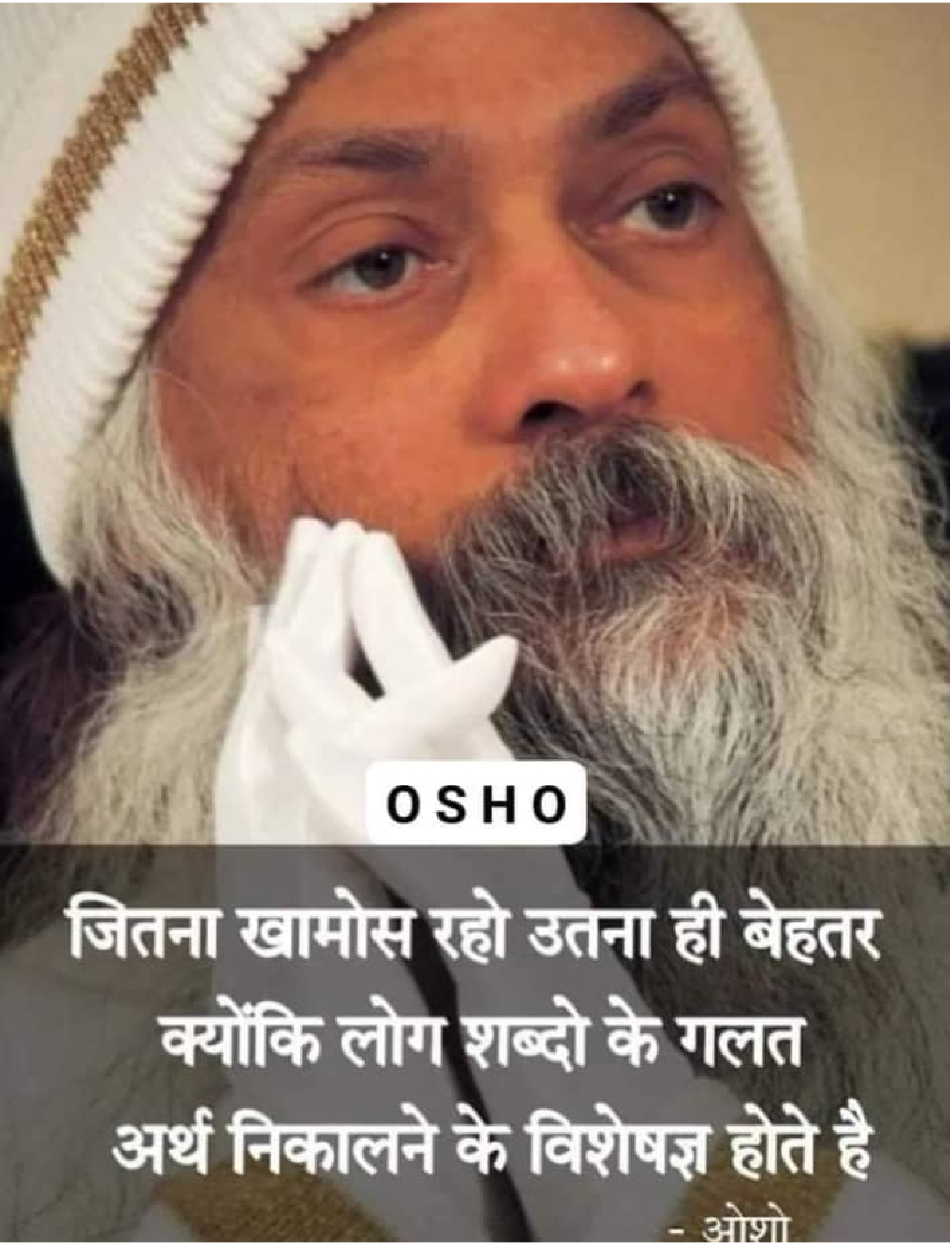
OSHO
जितना खामोस रहो उतना ही बेहतर
क्योंकि लोग शब्दो के गलत
अर्थ निकालने के विशेषज्ञ होते है
- ओशो

CamScanner

11:12 pm 14 KB/s 26%

facebook

7

Rumi, Gibran, Hafiz, Kabir, Khayya...

Salwa Mueen · 11h

Salwa Mueen

1d

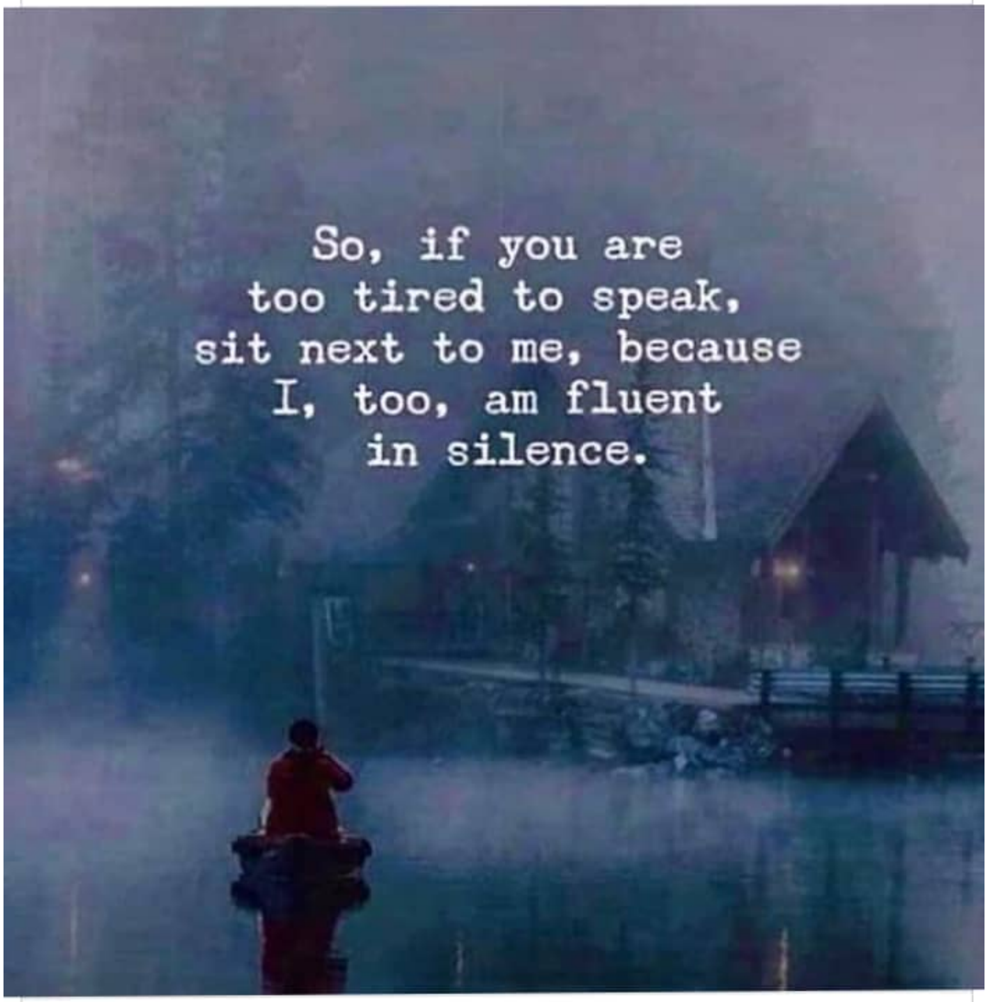

82 3 comments

Like Comment Send

OSHO FRAGRANCE FRIENDS

अहोभाव · 9m

अहोभाव

CamScanner

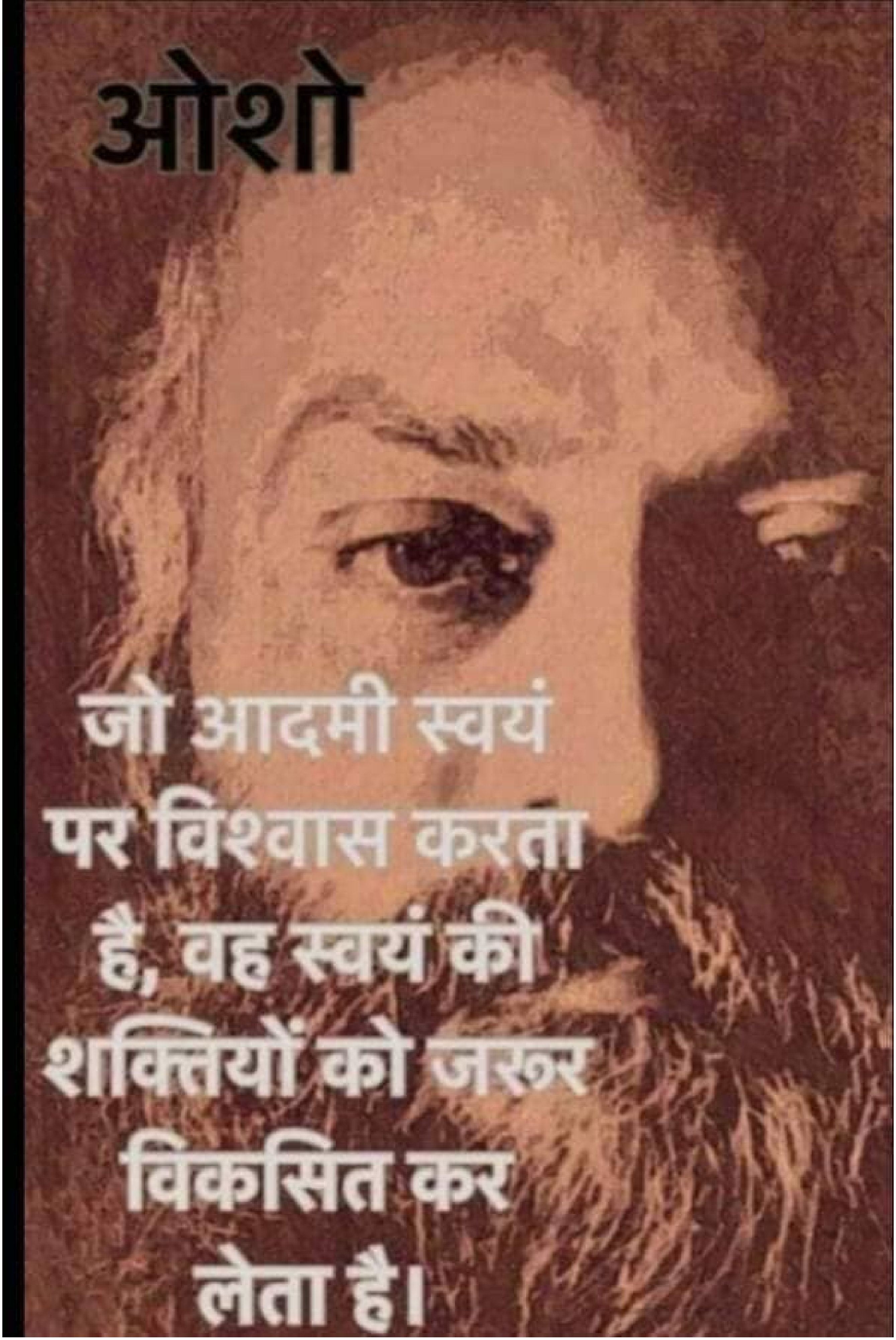

CS CamScanner

11:11 pm 6 KB/s 26%

फिर दो पंक्तियां। और हर पंक्ति का एक ही मतलब है, दो के बीच ठहर जा।

हर पंक्ति का एक ही अर्थ है, दो के बीच ठहर जा।

बाहर जाती श्वास, अंदर जाती श्वास।

जन्म और मृत्यु, यह रहा जन्म यह रही मृत्यु। दोनों के बीच ठहर जा।

पार्वती कहती है, समझ में कुछ आता नहीं। कुछ और कहे।

एक सौ बारह बार। पर एक ही बात

दो विरोधों के बीच में ठहर जा।

प्रतिकार-आसक्ति–विरकति,

ठहर जा-अमृत की उपलब्धि।

दो के बीच दो विपरीत के बीच जो ठहर जाए वह गोल्डन मीन, स्वर्ण सेतु को उपलब्ध हो जाता है।

यह तीसरा सूत्र भी वहीं है।

और आप भी अपने-अपने सूत्र खोज सकते है। कोई कठिनाई नहीं है।

एक ही नियम है कि दो विपरीत के बीच ठहर जाना, तटस्थ हो जाना।

सम्मान-अपमान,

ठहर जाओ–मुक्ति।

दुख-सुख, रूक जाओ..

प्रभु में प्रवेश।

मित्र-शत्रु, ठहर जाओ

सच्चिदानंद में गति।

कहीं से भी दो विपरीत को खोज लेना

ओर दो के बीच में तटस्थ हो जाना।

न इस तरफ झुकना, न उस तरफ।

समस्त योग का सार इतना ही है।

दो के बीच में जो ठहर जाता,

वह जो दो के बाहर है, उसको उपलब्ध हो जाता है। द्वैत में जो तटस्थ हो जाता, अद्वैत में गति कर जाता है।

द्वैत में ठहरी हुई चेतना अद्वैत में प्रतिष्ठित हो जाती है। द्वैत में भटकती चेतना, अद्वैत में च्युत हो जाती है।

~ ओशो 🙏

4 1 comment

CamScanner

11:11 pm 7 KB/s VoLTE 4G 26%

FRIENDS OF OSHO
Rajeev Bhanjana · 13h ·

🙏एक अद्भुत ग्रंथ है भारत मैं। और मैं समझता हूं, उस ग्रंथ से अद्भुत ग्रंथ पृथ्वी पर दूसरा नहीं है। उस ग्रंथ का नाम है, विज्ञान भैरव तंत्र। छोटी सी किताब है।
इससे छोटी किताब भी दुनियां में खोजनी मुश्किल है।
कुछ एक सौ बारह सूत्र है। हर सुत्र में एक ही बात है। पहले सूत्र में जो बात कह दी है, वहीं एक सौ बारह बार दोहराई गई है..
एक ही बात, और हर दो सूत्र में एक विधि हो जाती है।
पार्वती पूछ रहीं है शिव से,
शांत कैसे हो जाऊँ?
आनंद को कैसे उपलब्ध हो जाऊँ?
अमृत कैसे मिलेगा?
और दो-दो पंक्तियों में शिव उत्तर देते है।
दो पंक्तियों में वे कहते है,
बाहर जाती है श्वास, भीतर जाती है श्वास। दोनों के बीच में ठहर जा, अमृत को उपलब्ध हो जाएगी।
एक सूत्र पूरा हुआ।
बाहर जाती है श्वास, भीतर आती है श्वास, दोनों के बीच ठहरकर देख ले, अमृत को उपलब्ध हो जाएगा।
पार्वती कहती है।
समझ में नहीं आया। कुछ और कहें।
शिव दो-दो में कहते चले जाते है।
हर बार पार्वती कहती है। नहीं समझ में आया। कुछ और कहें।
फिर दो पंक्तियां। और हर पंक्ति का एक ही मतलब है, दो के बीच ठहर जा।
हर पंक्ति का एक ही अर्थ है, दो के बीच ठहर जा।
बाहर जाती श्वास, अंदर जाती श्वास।
जन्म और मृत्यु, यह रहा जन्म यह रही मृत्यु। दोनों के बीच ठहर जा।
पार्वती कहती है, समझ में कुछ आता नहीं। कुछ और कहे।
एक सौ बारह बार। पर एक ही बात
दो विरोधों के बीच में ठहर जा।
प्रतिकार-आसक्ति–विरकति,

CamScanner

१-ओङ्कार सति नामु करता पुरखु निरभउ
निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

एक 'ओङ्कार' ही है, जिसका नाम सत् है (अर्थात् वह सत्स्वरूप
है), जो कर्तापुरुष है, जो निर्भय, निर्वैर, अकालमूर्ति, अयोनि तथ
स्वभान है ; गुरु-कृपा द्वारा उसका बोध होता है।

~ श्रीगुरु नानक

CamScanner

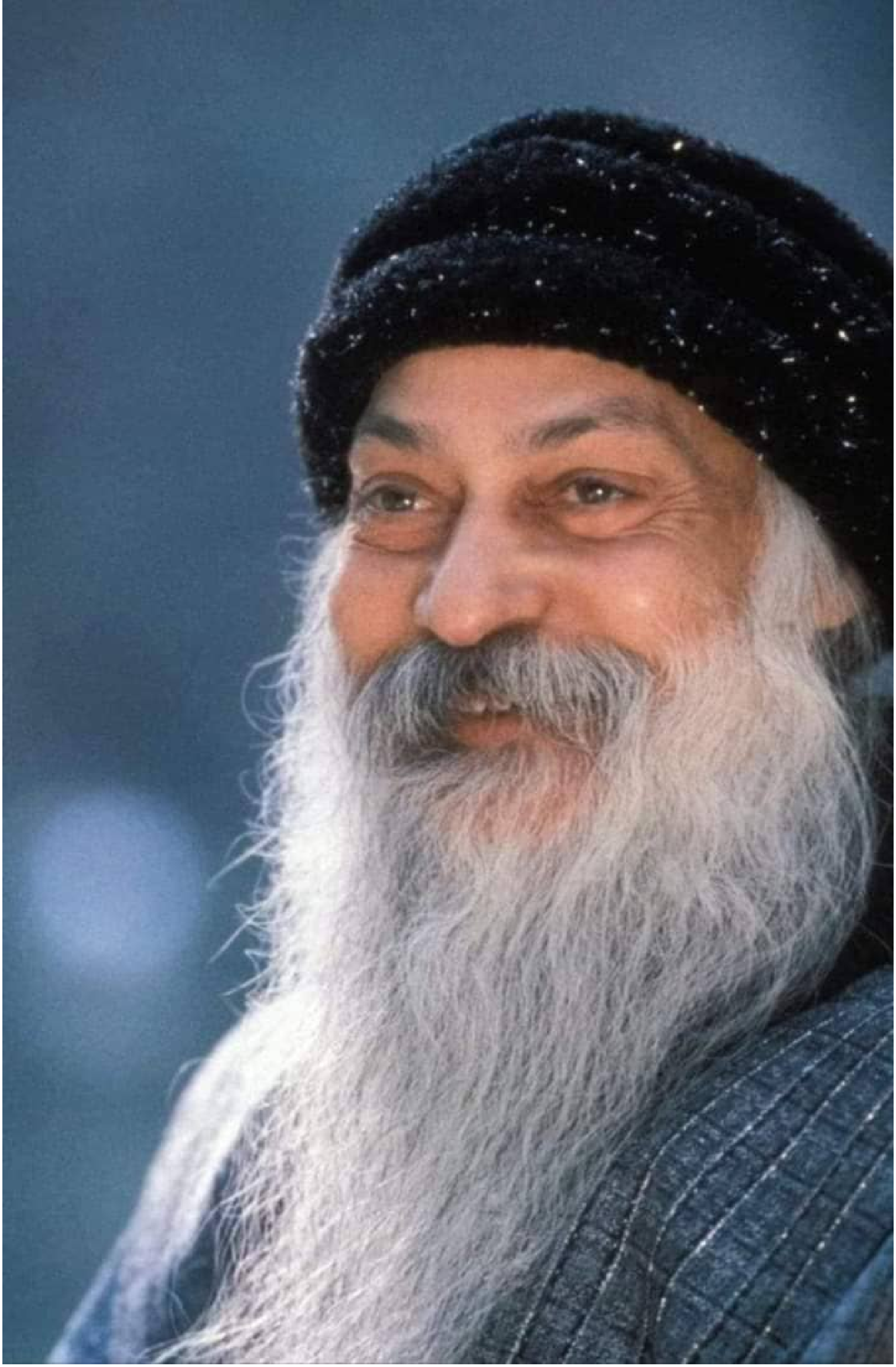

CamScanner

11:07 pm 6 KB/s 27%

6

Like Comment Send Share

रजनीशपुरम

Munabai Makvana · 1d

कितने लोग इस जमीन पर रह चुके हैं, तुमसे पहले, जर उनकी याद करो। वैज्ञानिक कहते हैं: जिस जगह तुम बैठे हो वहां कम से कम दस आदमियों की लाशें गड़ी हैं। इतने लोग जमीन पर रह चुके हैं कि अब तो हर जगह मरघट है! बस्तियां कई बार बस चुकीं और उजड़ चुकीं। कई बार मरघट बस्तियां बन गए और बस्तियां मरघट बन गईं।

मोहनजोदड़ो की खुदाई में सात पर्तें मिलीं। मोहनजोदड़ो सात बार बसा और सात बार उजड़ा। हजारों साल में ऐसा हुआ होगा। मगर कितनी बार मरघट बन गया और कितनी बार फिर बस गया! तुम मरघट जाने से डरते हो, डरने की कोई जरूरत नहीं है; जहां तुम रह रहे हो वहां कई दफा मरघट रह चुका है। छोड़ो भय।

सारी पृथ्वी लाशों से भरी है। फिर भी खेल नहीं छूटते। खेल छूटेंगे भी नहीं, जब तक कि राम नाम का स्मरण न आ जाए; जब तक प्रभु की तलाश तुम्हारे प्राणों को न पकड़ ले। जब तक उसकी प्यास ही एकमात्र प्यास न हो जाए तब तक खेल छूटेंगे भी नहीं। हां, उसकी प्यास पकड़े कि खेल अपने—आप छूट जाते हैं। फिर खयाल करना फर्क।

दरिया यह नहीं कह रहे हैं: खेल छोड़ दो। दरिया कह रहे हैं:। राम याद कर लो, खेल अपने से छूट जाते हैं। छूट जाएं ठीक, न छूटें ठीक। मगर इतना पक्का हो जाता है कि खेल खेल हैं, इतना मालूम हो जाता है। इतना मालूम हो गया, बात खत्म हो गई।

ओशो

CamScanner

11:05 pm 7 KB/s 27%

Like Comment Send Share

ओशो एक मसीहा

52m ·

Osho

इच्छा के कारण आप कहीं और भटकते थे। और मोक्ष है यहीं और परमात्मा है यहां निकट, और इच्छा है दूर। इसलिए इच्छा और परमात्मा का मिलन नहीं हो पाता।

8

Like Comment Send Share

OshO AMRAT (ओशो अमृत)

Prem Vishwas · 2h ·

CamScanner

अहोभाव

जिसके भीतर अंधेरा मिट जाता है... See more

Vishwadeep + 50 2 comments • 4 shares

Like Send Share

🎉🌹 रिश्तो की अहमियत 🌹🎉

Munna Dalai · 2d · 😂😂😂😂

CamScanner

11:01 pm 11 KB/s 28%

13 7

You won't see this post in your News Feed. Undo

OSHO MUMBAI

Raju Dhanjani · 2d ·

5 1 comment

Like Comment Send Share

कबीर दास जी महाराज

CamScanner

11:00 pm 11 KB/s 28%

13 7

Feed.

Bhagwan Shree Rajneeh

17h ·

Osho Naman ..✍❤💻 🔥🌱🪷🌎🪐

.

#viral #trending #travelphotography #reels... See more

Kewal + 57 5 comments • 3 shares

Like Comment Send Share

Bhakti Vikasa Swami

Reels · 4d ·

कृष्ण की हमेशा बढ़ती महिमा

पूरा व्याख्यान लिंक:
https://youtu.be/j9A1VvNnNOY?si=wxt8vBw9OtO5RMeS
... See more

Rate this translation

CamScanner

11:00 am 0 KB/s VoLTE 4G 97%
13 7

Positive Inspiration · 35m

Positive Inspiration
5h

भारतीय संतों ने पाँच विकारों की अवधारणा को प्रतिपादित किया है, जिन्हें प्रायः "पंच महाभूत" या "पंच क्लेश" कहा जाता है, जो आध्यात्मिक विकास और आंतरिक शांति के लिए मूलभूत बाधाएँ हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार को प्राथमिक बुराइयों के रूप में पहचाना जाता है जो आत्मा को पीड़ा और अज्ञान के चक्र में उलझा देते हैं। संत सिखाते हैं कि ये विकार अस्तित्व के क्षणिक और भ्रामक पहलुओं के साथ अहंकार की पहचान से उत्पन्न होते हैं, जो व्यक्तियों को उनके वास्तविक दिव्य स्वभाव से दूर ले जाते हैं। वासना मन के विवेक को धूमिल कर देती है, क्रोध निर्णय को विकृत कर देता है, लालच अतृप्त इच्छाओं को बढ़ावा देता है, आसक्ति निर्भरता को जन्म देती है, और अभिमान व्यक्ति को विनम्रता और करुणा के प्रति अंधा कर देता है। भारतीय संत इन बुराइयों पर काबू पाने, पवित्रता, क्षमा, संतोष, वैराग्य और विनम्रता जैसे गुणों को विकसित करने के लिए आत्म-जागरूकता, आत्म-अनुशासन और आध्यात्मिक अभ्यास के महत्व पर जोर देते हैं। आत्मनिरीक्षण और सचेतनता के माध्यम से, साधक पांच बुराइयों की पकड़ को पार कर सकते हैं, उच्च चेतना के साथ जुड़ सकते हैं और संतों के कालातीत ज्ञान को अनुभव कर सकते हैं।

#Lust
#Kama
#Desire
#Anger
#Krodha
#Greed
#Lobha
#Attachment
#Moh
#Pride

CS CamScanner

अष्टावक्र गीता

अष्टावक्र कहते हैं कि मोक्ष कोई वस्तु नहीं है जिसे प्राप्त किया जाये, न कोई स्थान है जहाँ पहुँचा जाये, न कोई भोग है जिसे भोगा जा सके, न रस है, न इसकी कोई साधना है, न सिद्धि है, न ये स्वर्ग में है, न सिद्धशिला पर। विषयों में विरसता ही मोक्ष है। विषयों में रस आता है तो संसार है।

जब मन विषयों से विरस हो जाता है तब मुक्ति है। संसार में रहना, खाना-पीना व कर्म करना बन्ध नहीं है; इसमें अनासक्त हो जाना ही मुक्ति है। इतना ही मोक्ष विज्ञान का सार है।

संन्यासी बनने से, धूनी रमाने से, संसार को गालियाँ देने से, शरीर को सताने से, उपवास करने से, भोजन के साथ नीम की चटनी खाने से विषयों के प्रति विरसता नहीं आ सकती। इन सबका मोक्ष से कोई सम्बन्ध नहीं है।

(अष्टावक्र गीता १५/२)

11:56 am 2 KB/s 92%

एकाग्रता का अर्थ होता है: सब तरफ से ध्यान को खींच लो और एक जगह लगा दो। एकाग्रता का अर्थ होता है: चित्त को संकीर्ण कर लो। ध्यान का अर्थ होता है: चित्त को विस्तीर्ण करो! ध्यान का अर्थ होता है: सब द्वार-दरवाजे खोल दो। कोयल ने गीत गाया है, वह भी आए; और यह ट्रेन की आवाज, वह भी समाहित हो; और मैं जो बोल रहा हूं, वह भी। इन सब में विरोध करने की कोई जरूरत नहीं है। ये सब एक साथ आत्मसात कर लेने हैं।

ओशो

CamScanner

11:55 am 2 KB/s 92%
7

प्रगाढ़ का मतलब यह है कि वह आपके अचेतन, अनकांशस माइंड तक प्रविष्ट हो जाएगा।इसे हम रोज ध्यान के पहले भी करेंगे। रात्रि में सोते समय भी आप इसे करके सोएंगे। इसे करेंगे, फिर सो जाएंगे। जब आप सोने लगेंगे, तब भी आपके मन में यह सतत ध्वनि बनी रहे कि मैं ध्यान में प्रविष्ट होकर रहूंगा। यह मेरा संकल्प है कि मुझे ध्यान में प्रवेश करना है। यह वचन आपके मन में गूंजता रहे और गूंजता रहे, और आप कब सो जाएं, आपको पता न पड़े।

सोते समय चेतन मन तो बेहोश हो जाता है और अचेतन मन के द्वार खुलते हैं। अगर उस वक्त आपके मन में यह बात गूंजती रही, गूंजती रही, तो यह अचेतन पर्तों में प्रविष्ट हो जाएगी। और आप इसका परिणाम देखेंगे। इन तीन दिनों में ही परिणाम देखेंगे।

संकल्प को प्रगाढ़ करने का उपाय आप समझें। उपाय है, सबसे पहले धीमे-धीमे पूरी श्वास भर लेना, पूरे प्राणों में, पूरे फेफड़ों में श्वास भर जाए, जितनी भर सकें। जब श्वास पूरी भर जाए, तब भी मन में यह भाव गूंजता रहे कि मैं संकल्प करता हूं कि ध्यान में प्रविष्ट होकर रहूंगा। यह वाक्य गूंजता ही रहे।

फिर श्वास बाहर फेंकी जाए, तब भी यह वाक्य गूंजता रहे कि मैं संकल्प करता हूं कि मैं ध्यान में प्रवेश करके रहूंगा। यह वाक्य दोहरता रहे। फिर श्वास फेंकते जाएं बाहर। एक घड़ी आएगी, आपको लगेगा, अब श्वास भीतर बिलकुल नहीं है, तब भी थोड़ी है, उसे भी फेंकें और वाक्य को दोहराते रहें। आपको लगेगा, अब बिलकुल नहीं है, तब भी है, आप उसे भी फेंकें।

आप घबराएं न। आप पूरी श्वास कभी नहीं फेंक सकते हैं। यानि इसमें घबराने का कोई कारण नहीं है। आप पूरी श्वास कभी फेंक ही नहीं सकते हैं। इसलिए जितना आपको लगे कि अब बिलकुल नहीं है, उस वक्त भी थोड़ी है, उसको भी फेंकें। जब तक आपसे बने, उसे फेंकते जाएं और मन में यह गूंजता रहे कि मैं संकल्प करता हूं कि मैं ध्यान में प्रवेश करके रहूंगा।

यह अदभुत प्रक्रिया है। इसके माध्यम से आपके अचेतन पर्तों में विचार

CS CamScanner

11:55 am 2 KB/s 92%

Naye bharat ke khoj

3h ·

संकल्प की प्रगाढ़ता कैसे पैदा हो, वह मैं छोटा-सा प्रयोग आपको कहता हूं। वह हम अभी यहां करेंगे और फिर उसे हम रात्रि में नियमित करके सोएंगे।

अगर आप अपनी सारी श्वास को बाहर फेंक दें और फिर श्वास को अंदर ले जाने से रुक जाएं, क्या होगा? अगर मैं अपनी सारी श्वास बाहर फेंक दूं और फिर नाक को बंद कर लूं और श्वास को भीतर न जाने दूं, तो क्या होगा? क्या थोड़ी देर में मेरे सारे प्राण उस श्वास को लेने को तड़फने नहीं लगेंगे? क्या मेरा रोआं-रोआं और मेरे शरीर के जो लाखों कोष्ठ हैं, वे मांग नहीं करने लगेंगे कि हवा चाहिए, हवा चाहिए! जितनी देर मैं रोकूंगा, उतना ही मेरे गहरे अचेतन का हिस्सा पुकारने लगेगा, हवा चाहिए! जितनी देर मैं रोके रहूंगा, उतने ही मेरे प्राण के नीचे के हिस्से भी चिल्लाने लगेंगे, हवा चाहिए! अगर मैं आखिरी क्षण तक रोके रहूं, तो मेरा पूरा प्राण मांग करने लगेगा, हवा चाहिए! यह सवाल आसान नहीं है कि ऊपर का हिस्सा ही कहे। अब यह जीवन और मृत्यु का सवाल है, तो नीचे के हिस्से भी पुकारेंगे कि हवा चाहिए!

इस क्षण की स्थिति में, जब कि पूरे प्राण हवा को मांगते हों, तब आप अपने मन में यह संकल्प सतत दोहराएं कि मैं ध्यान में प्रवेश करके रहूंगा। उन क्षणों में, जब आपके पूरे प्राण श्वास मांगते हों, तब आप अपने मन में यह भाव दोहराते रहें कि मैं ध्यान में प्रवेश करके रहूंगा। यह मेरा संकल्प है कि मैं ध्यान में प्रवेश करके रहूंगा।

उस वक्त आपका मन यह दोहराता रहे। उस वक्त आपके प्राण श्वास मांग रहे होंगे और आपका मन यह दोहराएगा। जितनी गहराई तक प्राण कंपित होंगे, उतनी गहराई तक आपका यह संकल्प प्रविष्ट हो जाएगा। और अगर आपने पूरे प्राण-कंपित हालत में इस वाक्य को दोहराया, तो यह संकल्प प्रगाढ़ हो जाएगा।

प्रगाढ़ का मतलब यह है कि वह आपके अचेतन, अनकांशस माइंड तक प्रविष्ट हो जाएगा।इसे हम रोज ध्यान के पहले भी करेंगे। रात्रि में सोते

CS CamScanner

11:52 am 2 KB/s 92%

तुम्हें एक और बहुत ऊँचे नियम का पता नहीं कि
"अस्तित्व उनकी सुरक्षा करता है,
जो सत्य की खोज में है। "

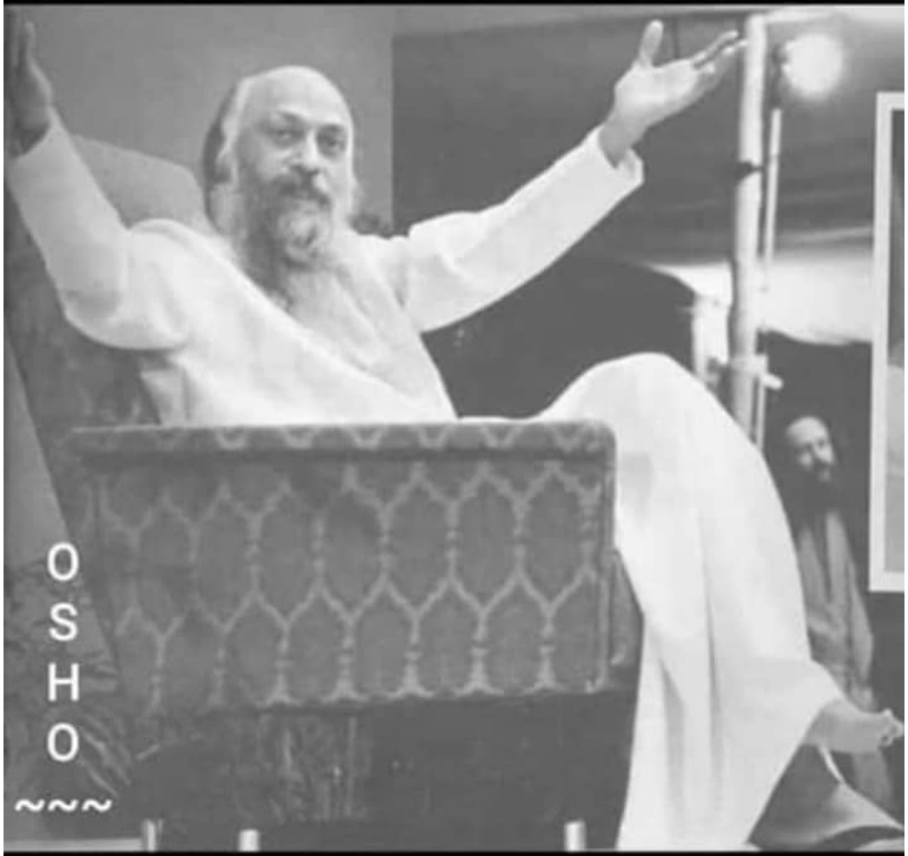

धीरे-धीरे तुम्हें दिखेगा कि तुम गिर नहीं सकते,अस्तित्व उसकी अनुमति नहीं देगा

You are currently offline.

CamScanner

जब भी तुम शांत होते हो तब तुम्हारे और परमात्मा के बीच कलह टल गई, अन्यथा तुम चैबीस घंटे संघर्ष में हो। जितने तुम संघर्ष में हो, उतने ही तुम बेचैन रहोगे। क्योंकि कोई भी वृक्ष पृथ्वी से लड़ कर कैसे शांत हो सकता है? जड़े तो पृथ्वी मे हैं; तुम पृथ्वी से लड़ रहे हो, अपनी ही जड़ो से लड़ रहे हो?

अशांति स्वाभाविक है। बेचैनी रहेगी ही। तुम विक्षिप्त होओगे ही। वृक्ष पागल हो जायेंगे, अगर जमीन से लड़ेंगे, क्योंकि जमीन तो गर्भ है, और जैसे वृक्षों की जड़े जमीन में हैं, वैसे ही तुम्हारी जड़े परमात्मा में हैं। तुम परमात्मा से लड़ोगे?

चैबीस घंटे तुम लड़ रहे हो। परमात्मा कुछ चाहता है, तुम कुछ और चाहते हो। तुम उससे राजी नहीं हो।

ओशो

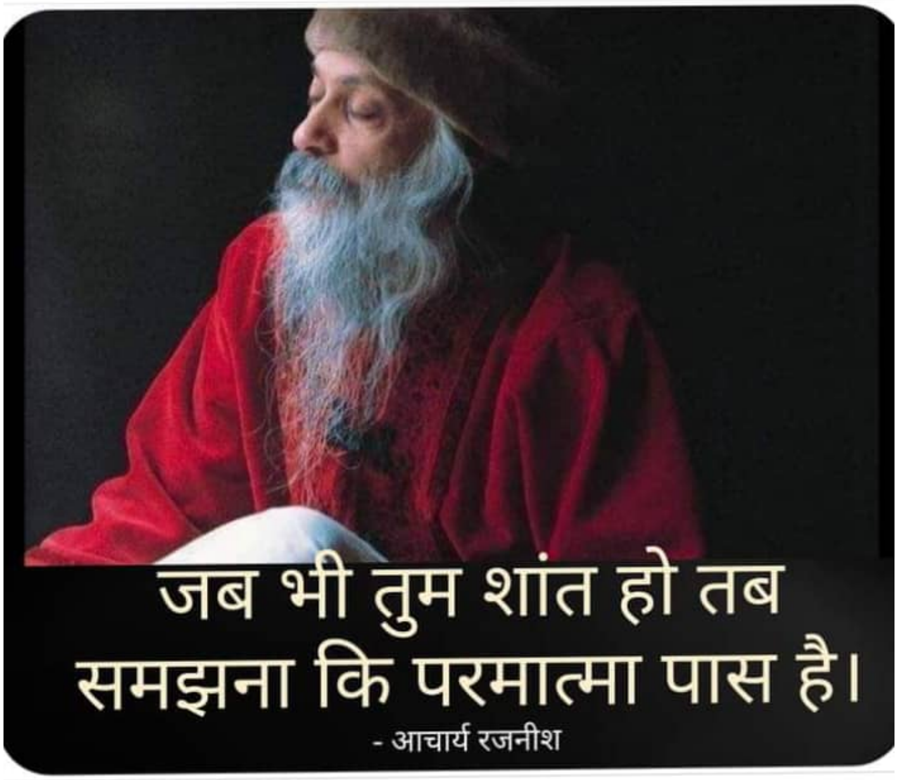

6 4 shares

Punjabhai Bharadiya · 22h ·

अमरीका का एक बहुत अनूठा विचारक हुआ..हेनरी थारो।

जब वह मरने लगा तो उसकी एक बूढी चाची जो बहुत धार्मिक थी, और उसे हमेशा से शक था कि यह हेनरी थारो धार्मिक नहीं है, क्योंकि न तो कभी मंदिर गया, न कभी इसके हाथ में बाइबल देखी, न कभी परमात्मा का शब्द इसके मुंह से सुना गया।

तो वह चाची दयावश आई और उसने हेनरी थारो से कहा कि परमात्मा और तुम्हारे बीच तुमने कलह निपटा ली न? हैव यू मेड पीस बिटविन यू एंड योर गॉड! क्या तुमने शांति बना ली अपने और परमात्मा के बीच?

हेनरी थारो मर रहा था। उसने आंखे खोली और उसने कहा: आई डोंट नो दैट वी ऐवर क्वैरल्ड। मुझे पता ही नहीं कि हमारे बीच कभी कोई झगड़ा हुआ। शांति कैसी?

और हेनरी थारो ऐसा आदमी था कि झगड़ा नहीं हुआ। मंदिर नहीं गया, जरूरत न थी। झगड़ा ही न हो तो अदालत जाने की जरूरत क्या है? कभी नाम नहीं लिया परमात्मा का, जरूरत ही न थी; क्योंकि अहर्निश उसकी ही धुन बज रही थी।

हेनरी थारो मनुष्य-जाति के थोड़े-से बड़े अप्रतिम फूलों में से एक है। शांत रहा ही, कोई झगड़ा ही नहीं हुआ तो प्रार्थना कैसी करनी? पूजा किसकी करनी? अर्चना किसकी करनी?

जब भी तुम शांत होते हो तब तुम्हारे और परमात्मा के बीच कलह टल गई, अन्यथा तुम चैबीस घंटे संघर्ष में हो। जितने तुम संघर्ष में हो, उतने ही तुम बेचैन रहोगे। क्योंकि कोई भी वृक्ष पृथ्वी से लड़ कर कैसे शांत हो सकता है? जड़े तो पृथ्वी मे हैं; तुम पृथ्वी से लड़ रहे हो, अपनी ही जड़ो से लड़ रहे हो?

अशांति स्वाभाविक है। बेचैनी रहेगी ही। तुम विक्षिप्त होओगे ही। वृक्ष पागल हो जायेंगे, अगर जमीन से लड़ेंगे, क्योंकि जमीन तो गर्भ है, और जैसे वृक्षों की जड़े जमीन में हैं, वैसे ही तुम्हारी जड़े परमात्मा में हैं। तुम

CamScanner

12:21 pm 2 KB/s 90%

तुम आकाश में पक्षियों को, बड़े-बड़े पक्षियों को उड़ते हुए देखते हो। अभी भी वैज्ञानिकों के लिए यह एक रहस्य ही बना हुआ है कि पक्षी इतनी भार के साथ कैसे उड़ते है। ये पक्षी प्रकृति की और से ही उदना के बारे में जानते है। इसलिए उनके लिए उड़ना सहज और स्वभाविक होता है। वह एक विशेष ढंग विशेष श्वास लेते है। अगर तुम भी उसी ढंग से श्वास को ले सको तो तुम पाओगे कि तुम्हारा संबंध गुरुत्वाकर्षण से टूट गया है। गुरुत्वाकर्षण के साथ जो व्यक्ति का संबंध है। वह उसके अंतर-अस्तित्व से ही है। वह उसके भीतर से ही है। इसलिए इसे तोड़ा भी नहीं जा सकता है।

और पांचवी है, व्यान, समन्वय और संघटन।

पांचवी व्यक्ति को संघटित रखती है। जब पाँचवीं शरीर को छोड़ देती है। तो व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है। तब शरीर विघटित होना शुरू हो जाता है। अगर पांचवी मौजूद रहता है। तो चाहे पूरी की पूरी श्वास प्रक्रिया क्यों न रूक जाए, व्यक्ति जीवित रहेगा।

यही तो योगी कर रहे है। जब योगी जनता के सामने प्रदर्शन करके यह दिखाते है कि वे अपनी ह्रदय गति को रोक सकते है। तो वह पहले के चार प्राणों को रोक देते है। पहले के चार प्राणों को—वे पांचवें पर ठहर जाते है। लेकिन पाँचवीं प्राण ऊर्जा इतनी सूक्ष्म है कि आज तक कोई ऐसा यंत्र नहीं बना है जो उसका पता लगा सके। तो दस मिनट तक सभी तरह से डाक्टर या कोई भी व्यक्ति निरीक्षण कर सकता है और उन्हें लगेगा कि योगी मर गया है। और डाक्टर उसका प्रमाण पत्र भी दे देंगे। कि वह मर गया है। और योगी फिर से जीवित हो जाएगा। फिर सक उसकी श्वास प्रारंभ हो जाएगी, फिर से उसका ह्रदय धड़कना प्रारंभ कर देगा।

पांचवी प्रक्रिया सर्वाधिक सूक्ष्म है और यही वह धागा है जो व्यक्ति को एक जैविक एका में ऑर्गेनिक यूनिटी में बांधकर रखता है।

अगर पांचवें को जान लिया जाये तो परमात्मा को जाना जा सकता है। उसे पहले परमात्मा को नहीं जाना जा सकता। क्योंकि हमारे भी पांचवें का वही कार्य है जो कि परमात्मा का उसकी समग्रता में कार्य है। परमात्मा व्यान है। वह संपूर्ण अस्तित्व को एकसाथ जोड़े हुए है—चाँद-तारें, सूरज, संपूर्ण ब्रह्मांड को, सब को एक दूसरे के साथ जोड़े हुए है।

पतंजलि: योग-सूत्र,
भाग 4, प्रवचन 10

CamScanner

12:20 pm 2 KB/s 90%

तिब्बत में वे चिकित्सक को सिखाते है कि जब रोगी के हाथ या नाड़ी को पकड़ो, तो एक खास ढंग से श्वास लो; केवल तभी चिकित्सक रोगी की श्वास प्रक्रिया को ठीक से जान सकेगा। और जब एक बार रोगी की श्वास-प्रक्रिया को चिकित्सक ठीक से जान लेता है तो वह रोगी की पूरी बीमारी को जान लेता है। और अब चिकित्सक को पता होता है कि क्या करना चाहिए। साधारण तो डाक्टर मरीज के लक्षणों की जांच करते समय स्वय उस स्थिति में नहीं जाते जिसमे रोगी है। लेकिन तिब्बत में—और उनकी पूरी विधि पतंजलि के योग पर आधारित है। पहले तो डाक्टर को उसके विशेष आयामों में आन होता है। ताकि वह रोगी के रोग का अनुभव कर सके। रोगी की श्वास प्रक्रिया में कहां पर बाधा है। कहां पर उसकी श्वास अवरूद्ध हो रही है।

चौथा है उदान, वाणी और संप्रेषण। जब तुम बोलते हो, तो चौथे प्रकार के प्राण का उपयोग करते हो। और इस प्राण को प्रशिक्षित किया जा सकता है। अगर यह प्राण प्रशिक्षित कर लिया जाए तो व्यक्ति के बोलने में, भाषण देने में, गीत गाने में एक तरह का सम्मोहन होगा। तब वाणी में एक तरह सम्मोहन होगा। तब बस, आवाज को सून कर ही चुंबक की तरह खींचे चले आते है।

और ठीक ऐसा ही संप्रेषण के साथ भी होता है। जिन लोगों को संप्रेषण करना कठिन होता है—और बहुत से लोग है जो इसी कठिनाई में है कि दूसरे व्यक्ति के साथ कैसे संबंधित हों, दूसरे के साथ कैसे खुल सकें। बंद न रहें। कैसे बात चीत करें, कैसे प्रेम करे, कैसे मैत्री बनाए, कैसे दूसरे के साथ कम्यूनिकेट करें, उन सभी की उदान को लेकिर ही कोई न कोई कठिनाई है। वे नहीं जानते कि इस प्राण ऊर्जा का उपयोग कैसे करना है। जो कि व्यक्ति को प्रवाह मान बनाती है। और ऊर्जा को खोल देती है, तब आसानी से दूसरे के साथ संप्रेषण हो सकता है। दूसरे तक पहुंचना हो सकता है। और तब फिर कहीं कोई अवरोध नहीं रहता।

उदना उर्जा-प्रवाहिनी को सिद्ध करने से योगी पृथ्वी से ऊपर उठ पाता है। और किसी आधार किसी संपर्क के बिना पानी, कीचड़, कांटों को पार कर लेता है।

अगर व्यक्ति स्वयं के साथ समस्वरता पा लेता है और उदना के नाम से पहचाने जाने वाले प्राण को सिद्ध कर लेता है तो वह हवा में ऊपर उठ सकता है। क्योंकि यह उदना ही है जो व्यक्ति को गुरुत्वाकर्षण के साथ जोड़ कर रखती है।

CamScanner

12:20 pm 2 KB/s 90%

और तीसरे, समान के द्वारा ही शरीर को ऊष्मा भी मिलती है। तिब्बत में समान के आधार पर ही पूरी पद्धति ही शरीर ऊष्मा की विकसित कर ली है। वे एक सुनिश्चित ढंग से एक सुनिश्चित लयबद्धता में श्वास लेते है। जिससे समान की ऊष्मा निर्मित कर लेते है। वे अपने भीतर एक विशेष ढंग से कार्य कर सकें। और उससे वे काफी ऊष्मा निर्मित कर लेते है। वे अपने शरीर में इतनी ऊष्मा निर्मित कर लेते है कि चारों और बर्फ गिर रही हो और तिब्बती लामा पसीने से भीगा खुले आकाश के नीचे नंगा खड़ा रह सकता है। अगर चारों और बर्फ ही बर्फ हो, तो साधारण आदमी तो ठंड के मारे जमने ही लगेगा। इतनी बर्फ में घर से बाहर भी निकलना संभव नहीं है। और तिब्बती लामा है कि पसीने से तर बतर गिरती हुई बर्फ के नीचे खड़ा रहेगा।

तिब्बत में चिकित्सक को जो परीक्षा जी जाती है, उसमें से यह भी एक परीक्षा का ढंग है। जब तिब्बत में कोई चिकित्सक बनता है तो पहले उसे एक परीक्षा देनी होती है। जिसमें उसे अपनी शरीर अग्नि को निर्मित करना पड़ता है। अगर वह निर्मित नहीं कर सकता है तो उसे डाक्टर बनने का सर्टिफिकेट नहीं दिया जाता। वह बहुत कठिन कार्य है। संसार में कोई भी दूसरी चिकित्सा प्रणाली चिकित्सक से इतनी बड़ी उपेक्षा नहीं रखती है। यह कोई मौखिक परीक्षा ही नहीं है। यह कुछ ऐसा नहीं है कि जिसे किसी तरह से रट लिया और परीक्षा में जाकर लिख दिया। व्यक्ति को सिद्ध करना होता है कि सच में उसने अपनी शरीर ऊष्मा पर काबू पा लिया है। क्योंकि फिर जीवन भर उसे अपने मरीजों की ऊष्मा ऊर्जा पर कार्य करना होता है। अगर उस ऊष्मा पर तुम्हारा ही पूरा अधिकार नहीं है, तो कैसे तुम दूसरों पर काम कर सकते हो?

इसलिए पूरी रात गिरती हुई बर्फ में परीक्षार्थी को बाहर खड़े रहना पड़ता है। परी रात में नौ बार परीक्षक आता है और हर बार शरीर को छूकर देखता है कि उसे पसीना आ रहा है या नहीं। अगर वह उतनी शरीर ऊष्मा निर्मित कर लेता है तो उस सम्मान का मालिक हो जाता है। वह चिकित्सक बन सकता है। अब उसके स्पर्श से रोगी को चमत्कारिक ढंग से ठीक कर देगा।

तिब्बत में वे चिकित्सक को सिखाते है कि जब रोगी के हाथ या नाड़ी को पकड़ो, तो एक खास ढंग से श्वास लो; केवल तभी चिकित्सक रोगी की श्वास प्रक्रिया को ठीक से जान सकेगा। और जब एक बार रोगी की श्वास-प्रक्रिया को चिकित्सक ठीक से जान लेता है तो वह रोगी की पूरी बीमारी को जान लेता है। और अब चिकित्सक को पता होता है कि

CamScanner

12:20 pm 2 KB/s 90%

साधारणतया तो अंतड़ियों में बहुत सा कचरा और मल भरा रहता है —जीवन भर मल कि पर्तों पर पर्तें चढ़ती चली जाती है। अंतड़ियों की भीतरी दीवारों पर मल इकट्ठा होता जाता है। यह सूखता जाता है और अति कठोर होता जाता है। जो भीतर जहर बनता रहता है, उस से हमें भारी पन आता है। अगर अंतड़ियों की सफाई हो तो वह पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के प्रति तुम्हें ज्यादा खोद देगी। योग ने पेट की सफाई पर बहुत जोर दिया है। ताकि भीतर कोई विषैला पदार्थ न बच पाए वरना वे खून में चक्कर काटते रहते है। और वे मस्तिष्क में घूमते रहते है। और वह व्यक्ति के आसपास एक विशेष तरह का ऊर्जा क्षेत्र निर्मित कर देते है। जो कि बोझिल, उदास और कालिमा लिए होता है।

जब अंतड़ियां पूरी तरह से स्वच्छ और साफ हो जाती है। तो व्यक्ति के सिर के चारों और एक प्रकार का आभा मंडल निर्मित हो जाता है। और जिन लोगों के पास भी आंखें है, वे इसे बड़ी आसानी से देख सकते है। और जब अंतड़ियां पूरी तरह से स्वच्छ और साफ हो जाती है, तो व्यक्ति को ऐसा लगता है जैसे उसको पंख लग गए हो।

तीसरा है समान, वह पाचन शक्ति और शरीर को ऊष्मा प्रदान करता है। अगर तीसरे की क्रियाशीलता का ज्ञान हो जाए, और इसके प्रति सजगता आ जाए कि वह कहां प्रतिष्ठित है, तो पाचन-क्रिया एकदम ठीक हो जाती है।

साधारणतया भोजन तो हम अधिक कर लेते है। लेकिन उसे पचा नहीं पाते। कुछ लोग है कि खाए चले जाते है। और फिर भी संतुष्ट नहीं होते। भोजन पचे या न पचे, लेकिन कुछ लोग है कि ठूस-ठूस कर खोते चले जाते है। अगर व्यक्ति समान का उपयोग करना जानता हो, तो भोजन की थोड़ी सी मात्रा भी भोजन की अधिक मात्रा की उपेक्षा अधिक ऊर्जा देगी।

इसीलिए योगी बिना अपने शरीर को कोई क्षति पहुँचाए कई दिन तक उपवास कर पाते है। कभी-कभी वे थोड़ा सा भोजन ले लेते है, और उस भोजन को पूरी तरह सक पचा लेते है। उसे आत्मसात कर लेते है। तुम्हारा भोजन तो पूरी तरह पच नहीं पाता है। इसीलिए आदमी का मल दूसरे जानवरों के लिए भोजन बन जाता है। और वे उसे पचा सकते है। उस मल में बहुत सा भोज्य-पदार्थ अभी भी शेष रह जाता है।

और तीसरे, समान के द्वारा ही शरीर को ऊष्मा भी मिलती है। तिब्बत में समान के आधार पर ही पूरी पद्धति ही शरीर ऊष्मा की

CamScanner

12:20 pm 2 KB/s 90%

Ten thousand Buddha's Osho

19h ·

योगियों ने कहा है, प्राण उर्जा के पाँच भिन्न-भिन्न रूप, क्रियाएं और उर्जा क्षेत्र होते है। हम तो यहीं कहेंगे कि श्वास कहना पर्याप्त है। हम तो केवल रो ही बातें जानते है—श्वास को बाहर छोड़ना, श्वास को भी तर लेना—इतना ही। लेकिन योगी तो प्राण के संसार में जीते है। और वे इसके सूक्ष्म भेद को समझते है। इसलिए उन्होंने इसको पाँच भागों में विभक्त किया है। उन पांचों भागों को समझ लेना, वे बहुत महत्वपूर्ण है।

पहला है प्राण,
दूसरा है अपान,
तीसरा है समान,
चौथा उदान,
पाँचवाँ है व्यान।

यह व्यक्ति के भीतर के पाँच विस्तार है। और प्रत्येक भीतर अलग-अलग काम करता है।

प्राण है पहला श्वसन। दूसरा है अपान, वह मलोत्सर्ग में मदद देता है। वह मल आदि शरीर से निकालने में मदद करता है। अंतड़ियों की सफाई अपान से होती है। और अगर तुम जान लो कि कैसे इस पर काम करना है, तो तुम इस ढंग से अंतड़ियों की सफाई कर सकते हो जैसे कि कोई नहीं कर सकता। योगियों की आंतें सर्वाधिक साफ होती है। और वह बहुत ही महत्वपूर्ण है, क्योंकि एक बार जब आंतें पूरी तरह साफ हो जाती है, जब अंतड़ियां एक दम साफ हो जाती है, तो पूरा शरीर एक दम हल्का, भार विहीन हो जाता है, जैसे कि उड़ रहे हो। शरीर का भार समाप्त हो जाता है।

साधारणतया तो अंतड़ियों में बहुत सा कचरा और मल भरा रहता है—जीवन भर मल कि पर्तों पर पर्तें चढ़ती चली जाती है। अंतड़ियों की भीतरी दीवारों पर मल इकट्ठा होता जाता है। यह सूखता जाता है और अति कठोर होता जाता है। जो भीतर जहर बनता रहता है, उस से हमें भारी पन आता है। अगर अंतड़ियों की सफाई हो तो वह पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के प्रति तुम्हें ज्यादा खोद देगी। योग ने पेट की सफाई पर बहुत जोर दिया है। ताकि भीतर कोई विषैला पदार्थ न बच पाए वरना वे

CamScanner

12:16 pm 2 KB/s 90%

Jiddu Krishnamurti
Tamar Rothstein · 13h ·

"यहाँ मेरा रहस्य है: मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता कि क्या होता है। " - जिद्दू कृष्णमूर्ति

Rate this translation

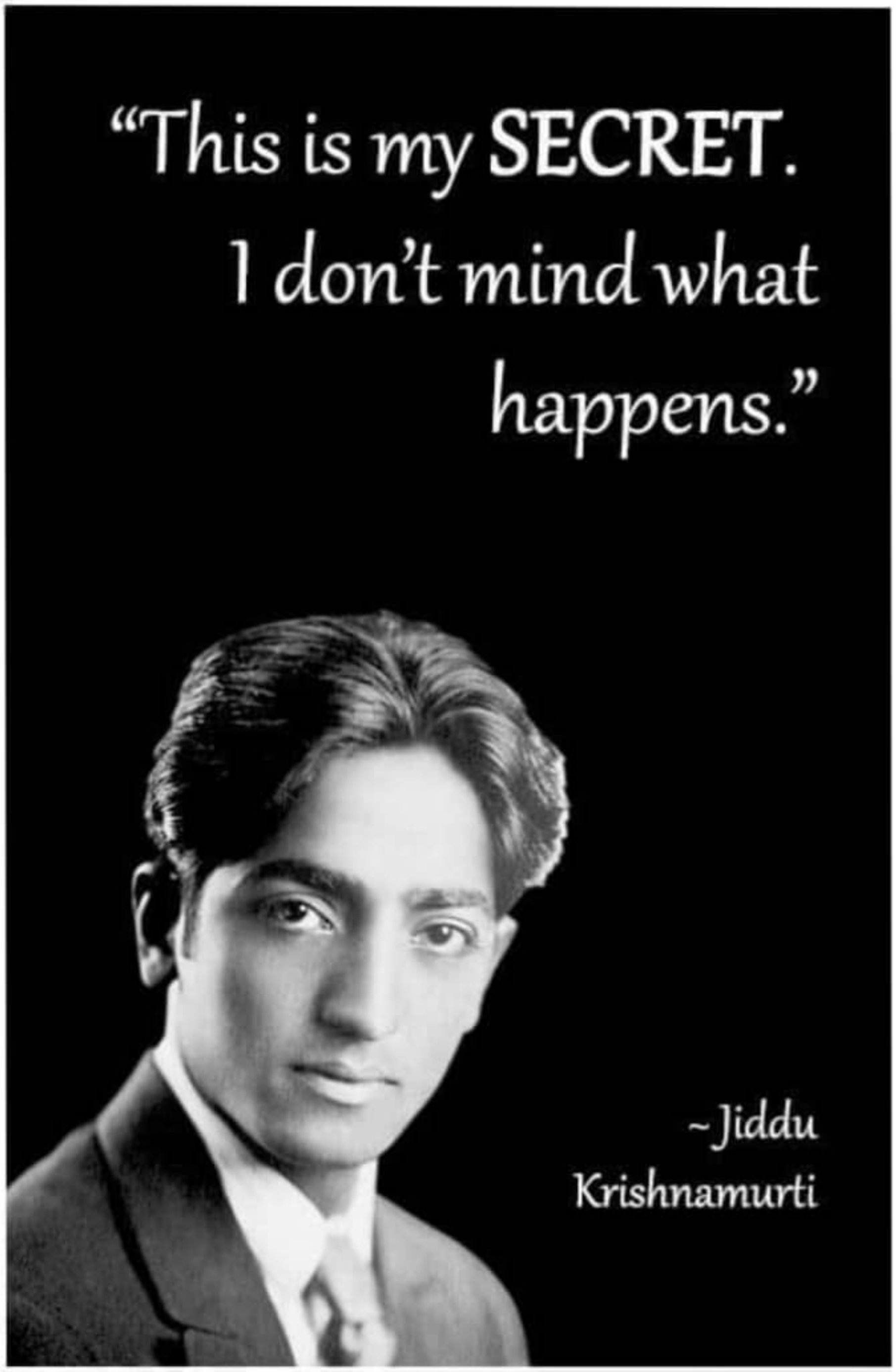

7 1 comment

CamScanner

12:15 pm 2 KB/s 90%

J. Krishnamurti Quotes

Sita D · 21h ·

💜💜💜

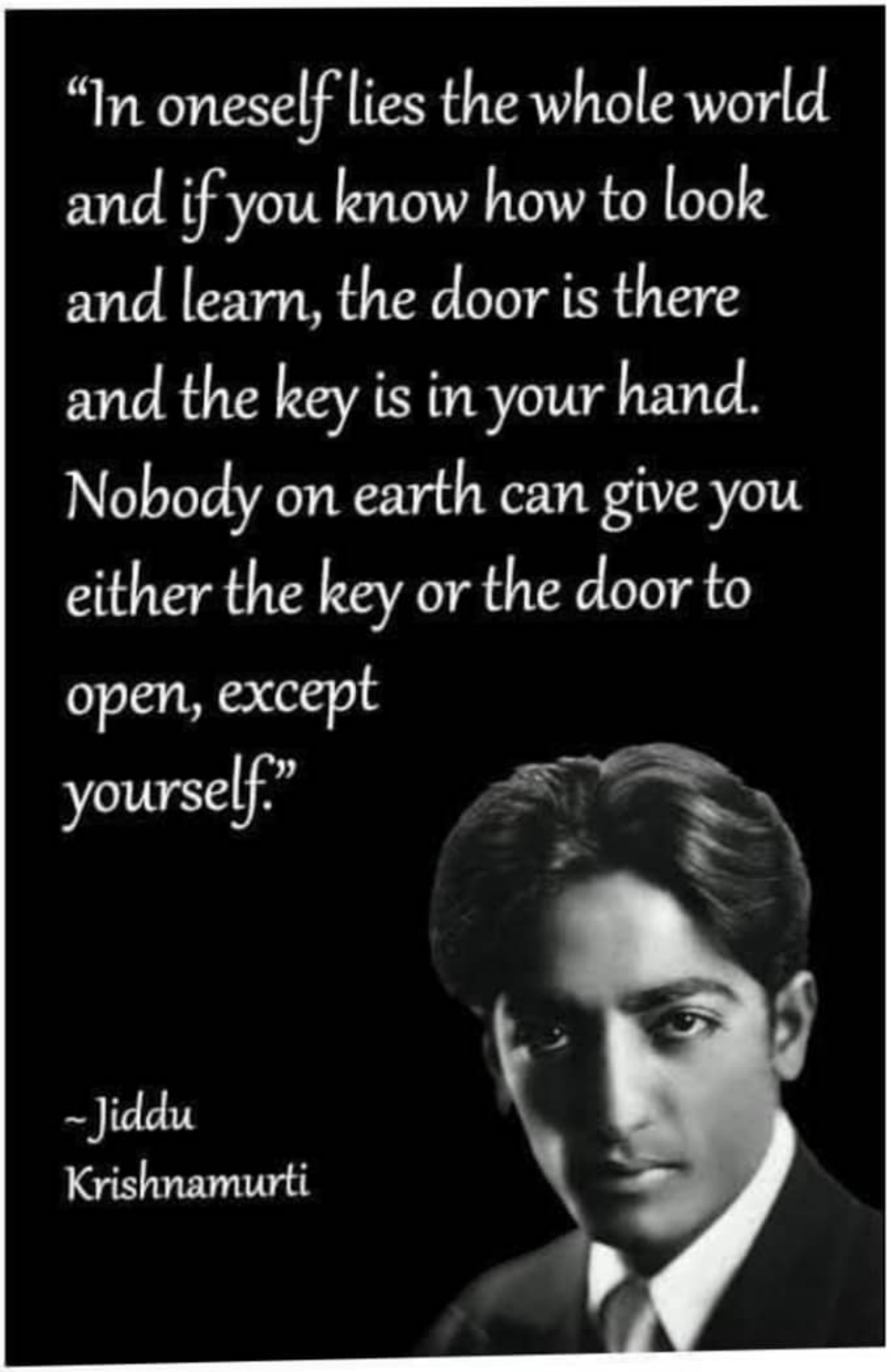

75 · 4 comments • 9 shares

Like · Comment · Send · Share

CamScanner

12:14 pm 2 KB/s 90%

ओशो मेरा प्यार

Osho Book Centre · 13h ·

Osho Book Centre

16h ·

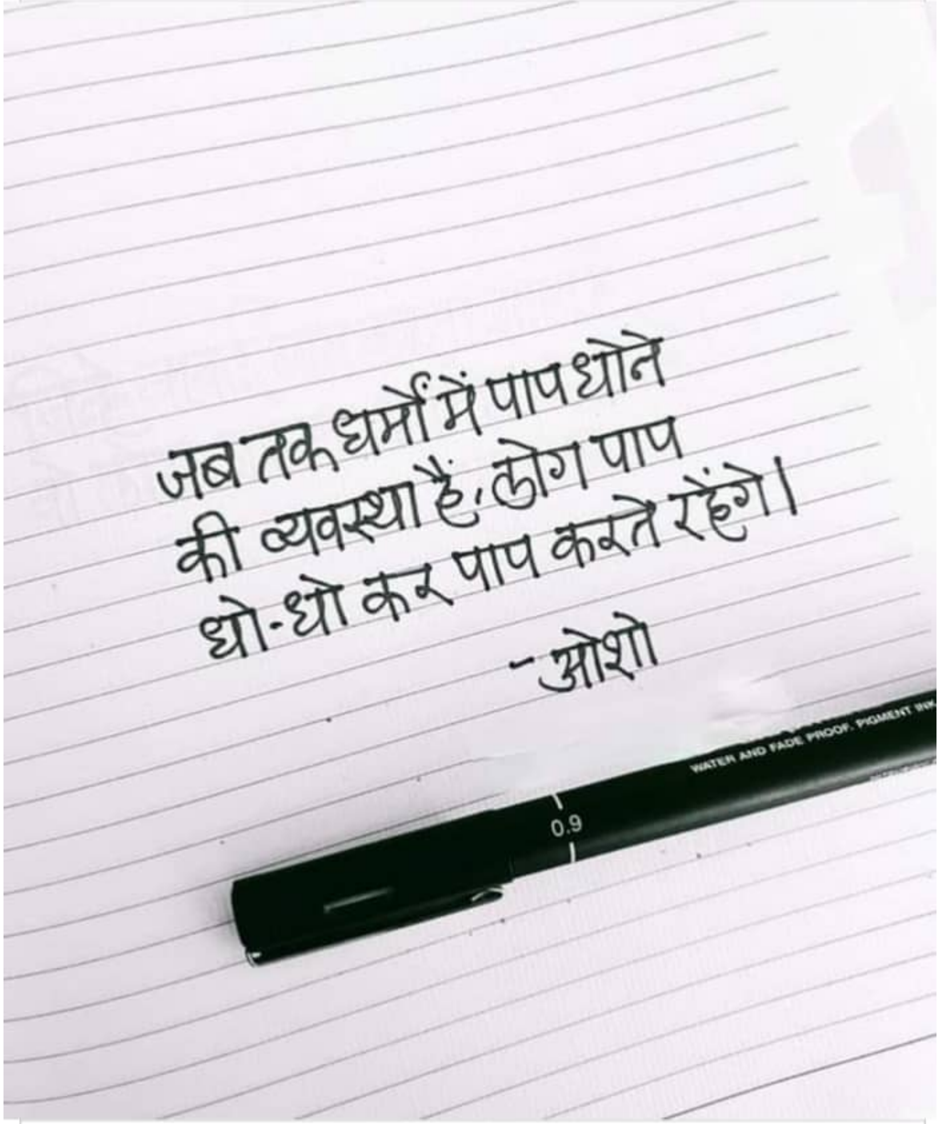

1

Like Comment Send Share

Suggested Pages for you

Suggested Pages for you

CamScanner

12:14 pm 2 KB/s 90%

4 2 comments

Like Comment Send

Osho विचार धारा
Subhash Hooda · 17h

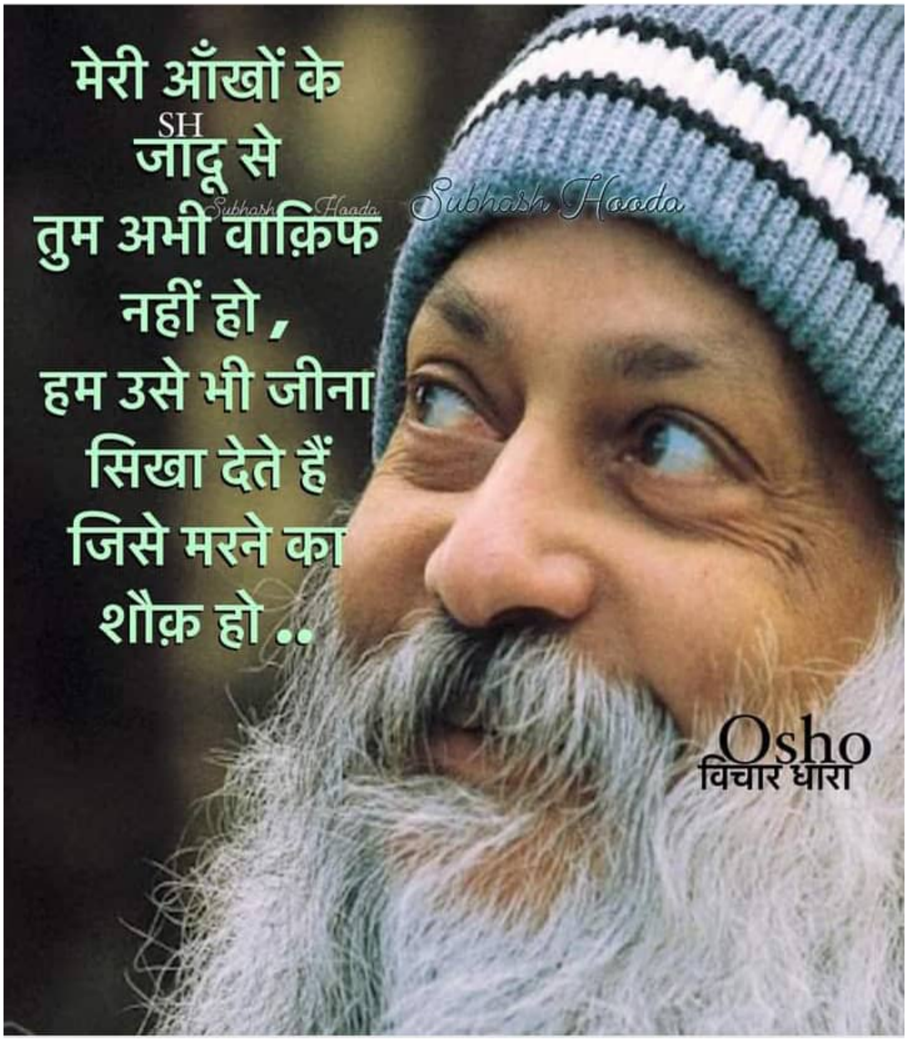

70 13 comments • 13 shares

Like Comment Send Share

ओशो मेरा प्यार
Osho Book Centre · 13h

CamScanner

12:13 pm 2 KB/s 90%

मंत्र कभी कच्चा मत तोडना, नहीं तो बुरे फंस जाओगे। जूते को तो कोई फेंक दे, मंत्र को फेंकना बहुत मुश्किल है। क्योंकि जूता तो बाहर है, मंत्र भीतर होता है। और अगर गलती से मंत्र में फंस गये तो निकालना बहुत मुश्किल हो जाता है। बहुत–से धार्मिक लोग पागल हो जाते हैं। उसका कारण है कि मंत्र में फंस गये, कुछ जल्दी कर ली तोड्ने की; फल पक नहीं पाया था, कच्चा ले गये। पके तो फल बहुत मीठा हो जाता है; कच्चा बहुत तिक्त होगा, बहुत क्क्वा होगा, जहरीला होगा।

आचार्य रजनीश"ओशो

शिव सूत्र

3

Like Comment Send Share

"कल्याण" - गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशि...

Yash Khandelwal · 13h

CamScanner

12:12 pm 2 KB/s 90%

तुम वैसे ही विक्षिप्त दशा में हो। मंत्र से विक्षिप्तता टूट भी सकती है, बढ़ भी सकती है। वैसे ही तुम बोझ से भरे हो और नया मंत्र और एक बोझ ले आयेगा। इसलिए एक अनहोनी घटना रोज घटती है, कि जिनको तुम साधारणतया धार्मिक आदमी कहते हो, वे साधारण सांसारिक आदमी से ज्यादा परेशान हो जाते हैं; क्योंकि संसारी को संसार की परेशानी है, उनको संसार की तो बनी ही रहती है, धर्म की और जुड़ जाती है। वह प्लस है। उससे कुछ घटता नहीं, बढ़ता है। मन पुराने सब धंधे तो जारी रखता है, यह एक नया धंधा और पकड़ लिया है; व्यस्तता और बढ गयी।

तो मंत्र के साथ अत्यंत धैर्य चाहिए, अन्यथा उस झंझट में मत पडना। जैसे दवा को मात्रा में लेना होता है—यह मत सोचना कि पूरी बोतल इकट्ठी पी गये तो बीमारी अभी ठीक हो जायेगी; उससे बीमार मर सकता है, बीमारी न मरेगी—उसे मात्रा में ही लेना। और मंत्र की मात्राएं बड़ी होमियोपौथिक हैं, बड़ी सूक्ष्म हैं। तो बहुत धैर्य की जरूरत है, वह पहली जरूरत है। फल की बहुत जल्दी आकांक्षा मत करना; वह जल्दी आयेगा भी नहीं। क्योंकि यह परम फल है। यह कोई मौसमी फूल नहीं है कि बोया और पन्द्रह दिन के भीतर आ गया। जन्म—जन। लग जाते हैं। और एक कठिन बात जो समझ लेने की है, वह यह है कि जितना धैर्य हो उतना जल्दी फल आ जायेगा। और जितना अधैर्य हो, उतनी ज्यादा देर लग जायेगी।

एक आदमी जा रहा था रास्ते से। उसका जूता उसे काट रहा था; जूता छोटा था। वह जूते को गालियां दे रहा था और परेशान था। नसरुद्दीन ने उससे पूछा कि मेरे भाई, इतना तंग जूता कहां से खरीदा। वह आदमी वैसे ही जला— भुना था, वैसे ही क्रोध में था, उसने कहा, 'जूता कहां से खरीदा! झाड से तोड़ा है! 'नसरुद्दीन ने कहा, 'मेरे भाई, थोड़ी देर रुक जाते तो पैर के नाप का तो हो जाता। कच्चा तोड़ लिया!'

मंत्र कभी कच्चा मत तोडना, नहीं तो बुरे फंस जाओगे। जूते को तो कोई फेंक दे, मंत्र को फेंकना बहुत मुश्किल है। क्योंकि जूता तो बाहर है, मंत्र भीतर होता है। और अगर गलती से मंत्र में फंस गये तो निकालना बहुत मुश्किल हो जाता है। बहुत—से धार्मिक लोग पागल हो जाते हैं। उसका

CS CamScanner

12:12 pm 2 KB/s 90%

मित्र को भरोसा न आया। उसने कहा, ' क्षमा करना; विश्वास करना कठिन है। और बुरा मत मानना, तुम भी जानते हो कि बेटी तुम्हारी सुंदर तो थी ही नहीं; निश्चित रूप से कुरूप थी। मिलिट्री के टेंट जैसी उसकी देह थी। तो मैं भरोसा नहीं कर सकता कि उसकी शादी हो गयी, और वह भी फिर डाक्टर से! बड़े डाक्टर से! बड़े रहस्य की घटना है! कैसे फांस लिया उसने एक डाक्टर को?'

नसरुद्दीन ने कहा, ' अच्छा—अच्छा! तो न ही सही बडा डाक्टर, न सही डाक्टर। लेकिन एक बात मैं तुमसे कहूंगा। मेरे सिर का दर्द उसने दूर किया। मेरे लिए वह डाक्टर है।'

जो सिर का दर्द दूर करे, वह डाक्टर; और जो सिर को ही दूर कर दे, वह मंत्र है। न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी! सिर जब तक है, तब तक दर्द होता ही रहेगा; ऐसी भी विधि है, जिससे सिर दूर हो जाये। तुम्हारी सारी तकलीफ तुम्हारा सिर है, तुम्हारे विचार हैं, विचारों का ऊहापोह है, चितना है। अगर विचार खो जायें तो सिर खो गया! तब तुम तो रहोगे, लेकिन मन न रहेगा। मन को जो मार दे वह मंत्र है। मन की जिससे मृत्यु घटित हो जाये, वह मंत्र है। और मन जब नहीं रह जाता तो तुम्हारे और शरीर के बीच जो सेतु है वह टूट जाता है। मन ही जोड़े हुए है तुम्हें शरीर से। अगर बीच का सेतु, बीच का संबंध टूट जाये तो शरीर अलग, तुम अलग हो जाते हो। और जिसने जान लिया अपने को शरीर से अलग और मन से शून्य, वह शिवत्व को उपलब्ध हो जाता है। वह परम केवली है।

इसलिए मंत्र को समझ लें। मंत्र की परिभाषा है—जिससे सिर ही खो जाये, मन न बचे। और ये जो पर्तें हैं शरीर की, मन की, इनको काटने की विधि है। एक—एक कदम बढ़ना जरूरी है। और धैर्य रखना होगा। क्योंकि मंत्र बहुत धीरज का प्रयोग है। अधैर्य जिनके मन में बहुत ज्यादा है, उन्हें मंत्र से लाभ न होगा, नुकसान हो सकता है। इसे पहले समझ लें। क्योंकि वैसे ही तुम काफी परेशान हो और मंत्र एक नई परेशानी बन जायेगी अगर अधैर्य हुआ।

तुम वैसे ही विक्षिप्त दशा में हो। मंत्र से विक्षिप्तता टूट भी सकती है, बढ़ भी सकती है। वैसे ही तुम बोझ से भरे हो और नया मंत्र और एक बोझ

CamScanner

12:12 pm 2 KB/s 90%

7

प्रेम सरोवर

Virendra Kumar · 13h ·

🔴मंत्र का प्रयोग🔴

सूत्र में प्रवेश के पहले पीछे मैंने आपको कहा था कि मंत्र के संबंध में कुछ कहूंगा। आज शिविर का अंतिम दिन है; मंत्र के पर्त संबंध में कुछ समझ लें। उसका प्रयोग जीवन में क्रांति ला सकता है।

पहली बात जैसा मैंने कल कहा, पर्त पर्त तुम्हारे व्यक्तित्व में है; जैसे प्याज में होती है। एक एक पर्त को उघाड़ना है, ताकि भीतर छिपे केंद्र को तुम खोज पाओ। हीरा छिपा है, खोया तुमने नहीं है। खो सकते भी नहीं हो; क्योंकि वह हीरा तुम ही हो। दब सकते हो; हीरा भी मिट्टी में दब जाता है। हीरे पर भी पर्त जम जाती है। हीरा भी पत्थर जैसा दिखाई पड़ने लगता है। पर भीतर कुछ भी नष्ट नहीं होता।

तुम्हें शायद खयाल न हो कि हीरे का इतना मूल्य क्यों है? हीरे के मूल्य के पीछे, मनुष्य की शाश्वत की खोज है। इस जगत में हीरा सबसे थिर है। सब चीजें बदल जाती हैं; हीरा बिना बदला हुआ बना रहता है। करोड़ों—करोड़ों वर्ष में भी, वह क्षीण नहीं होता। इस बदलते हुए संसार में हीरा न बदलते हुए अस्तित्व का प्रतीक है। इसलिए हीरे का इतना मूल्य है। अन्यथा वह पत्थर है। मूल्य है उसकी शाश्वतता का, उसके ठहराव का। हीरा होना तुम्हारा शाश्वत स्वभाव है। और सारी साधना तुम्हारी मिट्टी की जम गयी पर्तों को अलग करने की है। पर्तें मिट्टी की हैं; इसलिए अलग करना बहुत कठिन न होगा। और पर्तें हीरे पर हैं और मिट्टी की है, शाश्वत पर है, परिवर्तनशील की हैं, इसलिए बहुत कठिन बात नहीं होगी। मंत्र इन पर्तों को खोदने की विधि है।

एक छोटी घटना तुमसे कहूं।

मुल्ला नसरुद्दीन का एक मित्र बहुत वर्षों बाद मिला। तो उसने घर के समाचार पूछे और फिर पूछा कि तुम्हारी बेटी का क्या हुआ। नसरुद्दीन ने कहा, 'तुम भरोसा करो या न करो, बेटी की शादी हो गयी और साधारण आदमी से नहीं, एक बड़े डाक्टर से।'

CamScanner

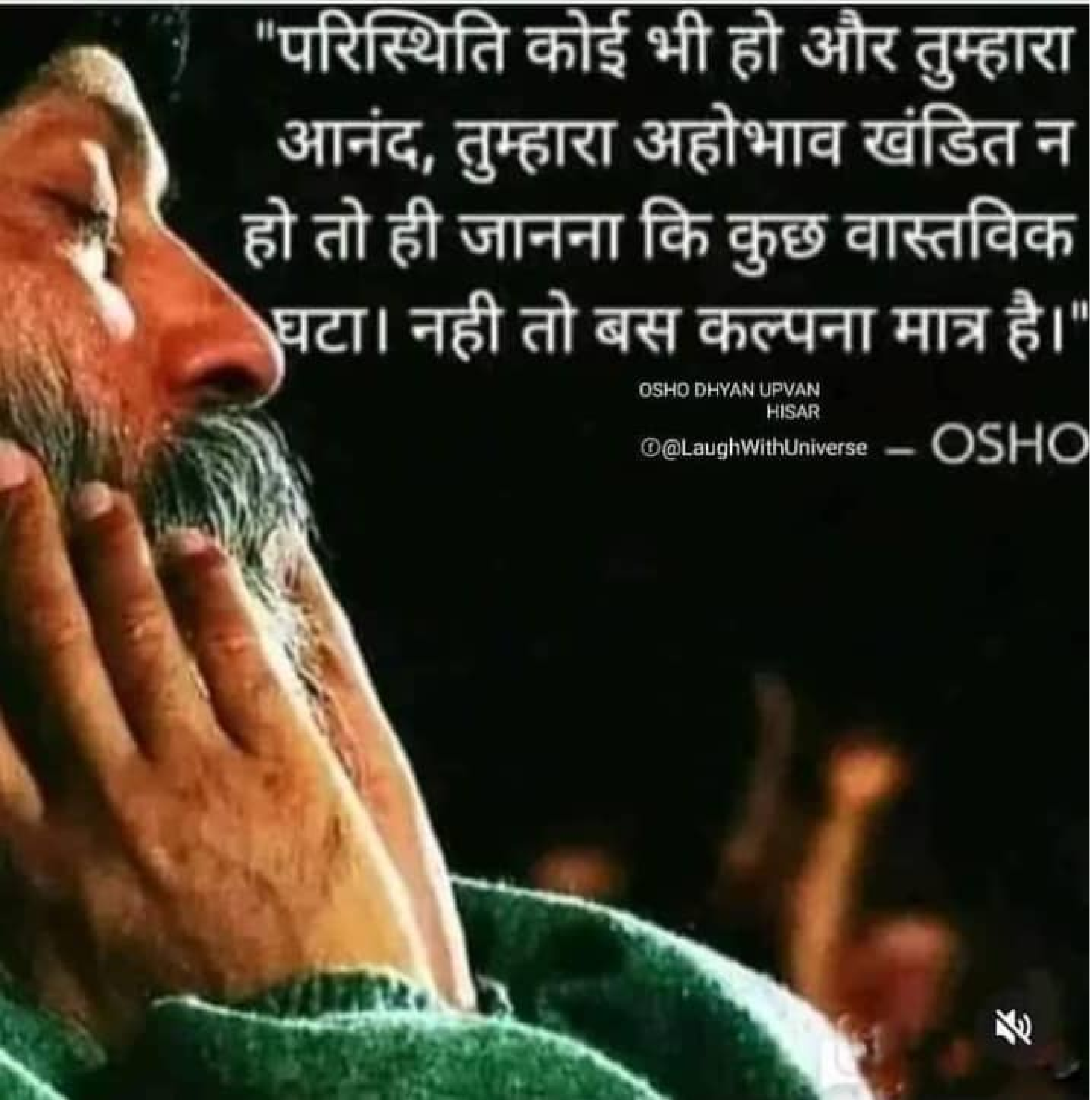
"परिस्थिति कोई भी हो और तुम्हारा आनंद, तुम्हारा अहोभाव खंडित न हो तो ही जानना कि कुछ वास्तविक घटा। नही तो बस कल्पना मात्र है।"
OSHO DHYAN UPVAN HISAR
@LaughWithUniverse
– OSHO

CamScanner

12:06 pm 2 KB/s 91%

7

मृत्यु बोध

अहोभाव · 1h ·

अहोभाव

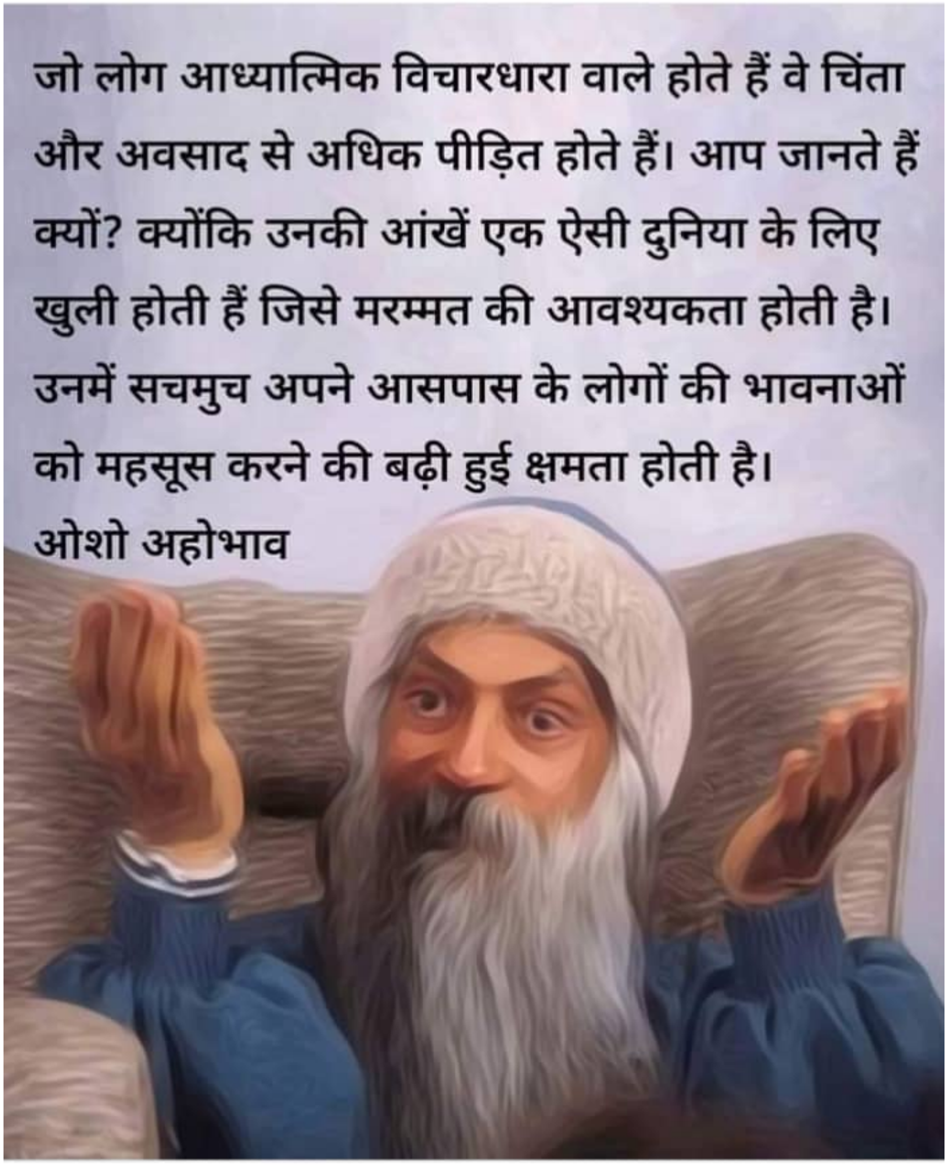

5

Like Comment Send

Suggested Pages for you

Suggested Pages for you

CamScanner

Positive Inspiration

22h ·

जैसे-जैसे मानव समाज विकसित हो रहा है और अधिक जटिल होता जा रहा है, मानव मन की पेचीदगियों को समझना कभी भी इतना महत्वपूर्ण नहीं रहा है। मनोविज्ञान हमें यह समझने में म...
See more

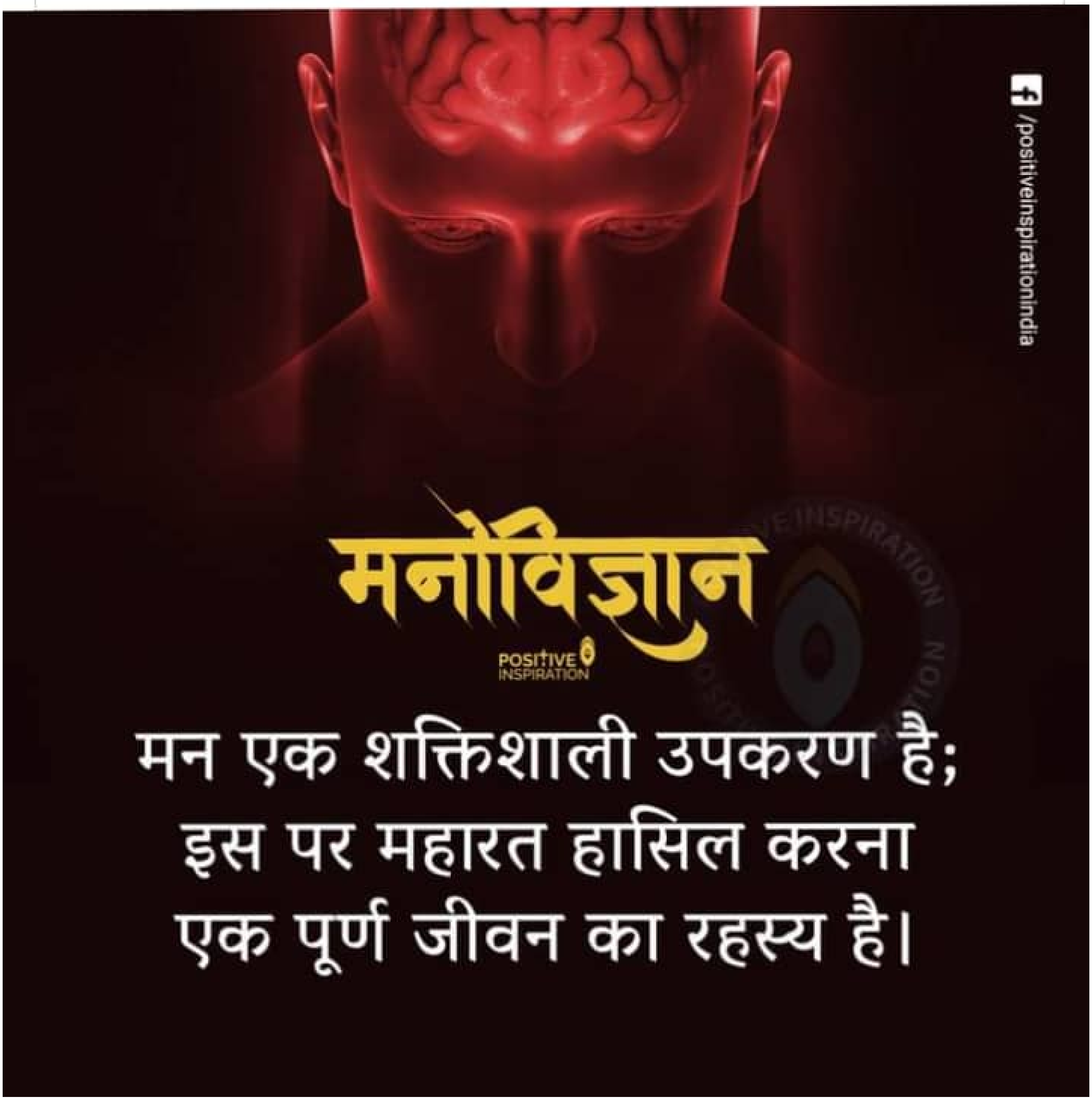

CamScanner

/positiveinspirationindia
POSITIVE INSPIRATION
संत रविदास जी
की अमृतवाणी
जिस हृदय में
किसी के प्रति बैर भाव न हो,
लोभ या द्वेष न हो,
उस हृदय में ही
ईश्वर का वास होता है।
POSITIVE INSPIRATION

CamScanner

POSITIVE INSPIRATION
/positiveinspirationindia
संत रविदास जी
की अमृतवाणी
जिसके हृदय में राम दिन-रात
समाये रहते हैं, ऐसा भक्त
राम के समान है, उस पर
न तो क्रोध और न ही वासना
प्रभावी हो सकती है।
POSITIVE INSPIRATION

CamScanner

/positiveinspirationindia

POSITIVE INSPIRATION

संत रविदास जी की अमृतवाणी

**जीव को भ्रम होता है कि
यह जगत् ही सत्य है,
परन्तु जैसा वह समझ रहा है
वैसा नहीं है,
वस्तुतः जगत् एक मिथ्या है।**

CamScanner

CS CamScanner

3:18 pm 24 KB/s 72%

Like Comment Send

Positive Inspiration

1h ·

संत रविदास जयंती भारत में 15वीं शताब्दी के दौरान रहने वाले एक श्रद्धेय संत, कवि और समाज सुधारक संत रविदास की जयंती का स्मरण कराती है। श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाई जाने वाली संत रविदास जयंती भक्ति आंदोलन के अनुयायियों और सामाजिक समानता और आध्यात्मिक उत्थान की वकालत करने वालों के बीच गहरा महत्व रखती है। संत रविदास ने जाति, पंथ और सामाजिक स्थिति की बाधाओं से ऊपर उठकर प्रेम, समानता और ईश्वर के प्रति समर्पण का संदेश दिया। उनकी शिक्षाओं में आंतरिक शुद्धता, करुणा और मानवता की सेवा के महत्व पर जोर दिया गया। इस शुभ अवसर पर, भक्त उनके छंदों को पढ़ने, प्रार्थनाओं में शामिल होने और उनके कालातीत ज्ञान पर विचार करने के लिए इकट्ठा होते हैं, जो अपनी गहन आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि और एकता और भाईचारे के सार्वभौमिक संदेश के साथ पीढ़ियों को प्रेरित करता रहता है। संत रविदास जयंती एक ऐसे संत की स्थायी विरासत की मार्मिक याद दिलाती है जिनकी शिक्षाएँ मानव आत्मा के साथ गहराई से गूंजती हैं और धार्मिकता और आध्यात्मिक ज्ञान के मार्ग पर मार्गदर्शन प्रदान करती हैं।

#RavidasJayanti
#SantRavidas
#BhaktiMovement
#EqualityForAll
#DivineWisdom
#SpiritualLeader
#SantRavidasJayanti
#SantsOfIndia
#SocialReformer
#RavidasTeachings

CamScanner

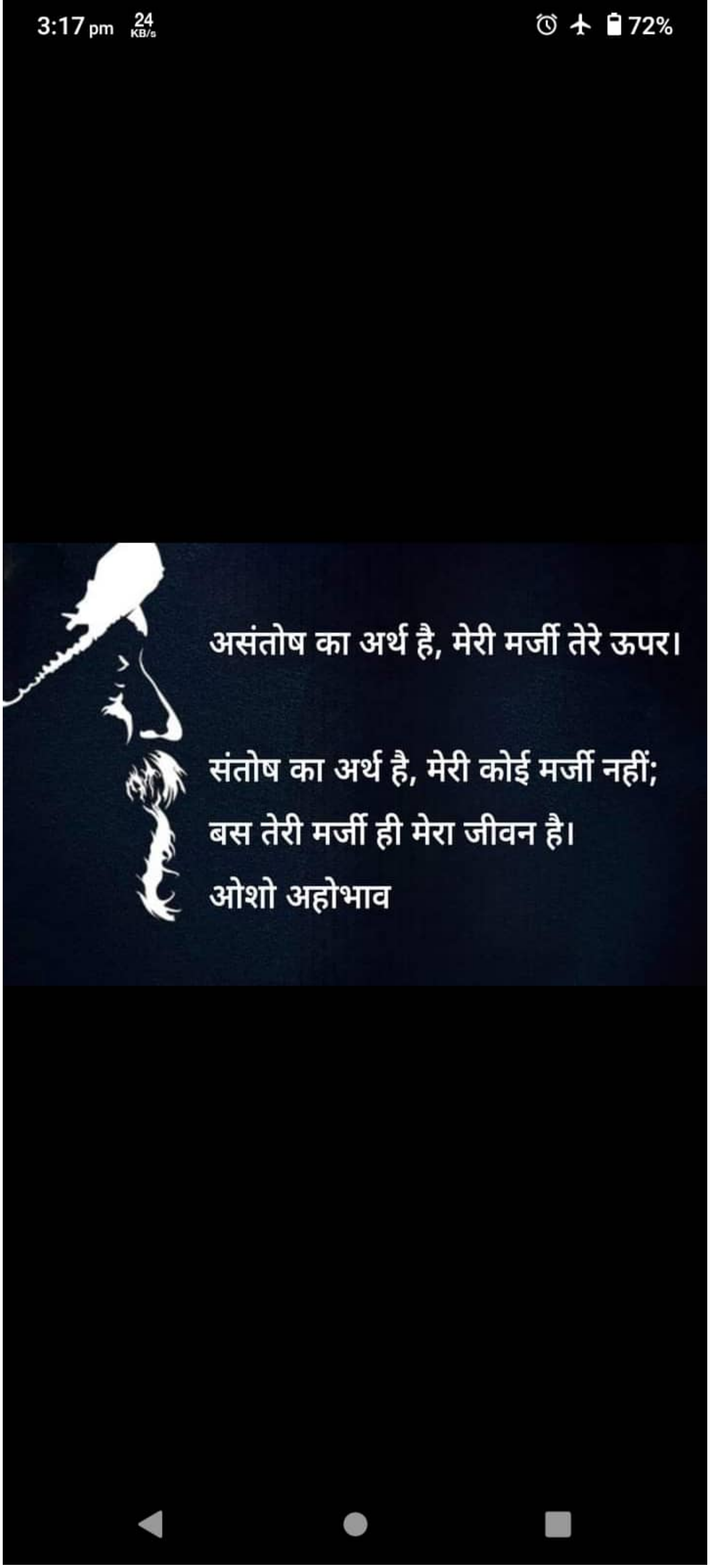
3:17 pm 24 KB/s
72%
असंतोष का अर्थ है, मेरी मर्जी तेरे ऊपर।
संतोष का अर्थ है, मेरी कोई मर्जी नहीं;
बस तेरी मर्जी ही मेरा जीवन है।
ओशो अहोभाव

CamScanner

Like Comment Send Share

ओशो का हिन्दी साहित्य

Ma Dhyaan Upasna Pawar · 37m ·

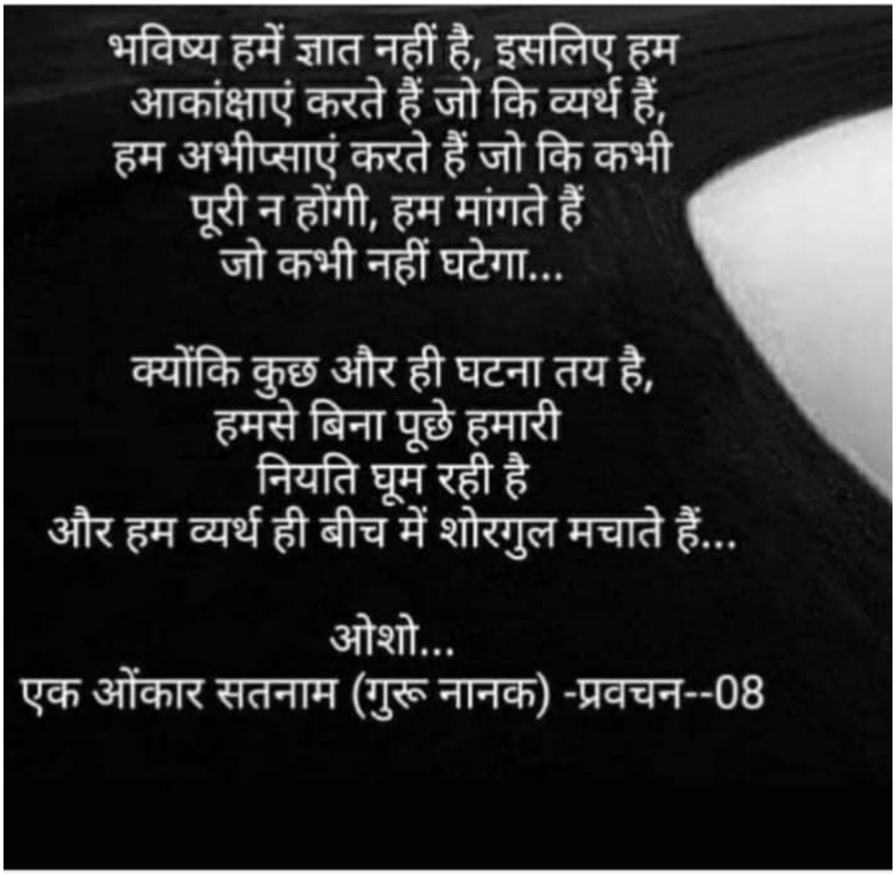

4 2 comments • 1 share

Like Comment Send Share

Suggested Pages for you

Suggested Pages for you

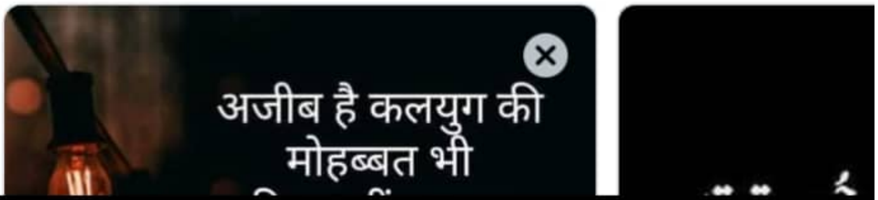

CamScanner

3:14 pm 0 KB/s 72%

यह तुमने कभी सोचा? हिंदू हैं, जैन हैं, बौद्ध हैं,
भारत में ये तीन महाधर्म पैदा हुए।
तीनों के विचारों में बड़ा भेद है,
जमीन-आसमान का भेद है।
तीनों की सैद्धांतिक धारणाएं भिन्न हैं।
तीनों के ढांचे अलग हैं, मार्ग अलग हैं, पथ अलग हैं।
कोई समर्पण का मार्ग है, कोई संकल्प का।
कोई संघर्ष का मार्ग है, कोई शरणागति का -
कोई पूजा-प्रार्थना, भक्ति का, कोई ध्यान-समाधि का।
लेकिन एक बात इन तीनों धर्मों ने
स्वीकार की है - वह है ओंकार।
वह है ओम् का नाद।
उसे इनकार करने का उपाय नहीं।
क्योंकि जब भी कोई भीतर गया है,
तो उस नाद को सुना है।
जब भी कोई भीतर गया है तो ऐसा कभी हुआ
ही नहीं, कोई अपवाद नहीं कि वह नाद न सुना हो।
वह जीवन-नाद है, ब्रह्म-नाद है।

जिन सूत्र, भाग-१, प्रवचन#२, ओशो

f ओशो-दर्शन समूह

CamScanner

9:37 pm 0 KB/s VoLTE 4G 54%

3 12

5d ·

अहोभाव

वृक्षों पर जितने भी फूल खिले है, ये सब परमात्मा के ही चरणों में चढ़े है, ये उसी ने खिलाये है। नाहक इन्हें तोड़कर, इनकी हत्या करके, इन्हें अपनी ही बनाई हुई मूर्तियों पर चढ़ा कर, ये समझ लेना कि हो गयी परमात्मा की पूजा, तो हम बहुत बड़ी भूल में है, ये झूठी पूजा है, कुछ सार नहीं है इसका!

स्वयं के फूल खिले, स्वयं के फूल यानि ध्यान, प्रज्ञा, चैतन्य बस ये ही फूल है, जिन्हें चढ़ाने से परमात्मा की पूजा होती है! बाक़ी तो सारी पूजाएँ मात्र दिखावा, सब धोखा है, परन्तु परमात्मा को धोखा नहीं दिया जा सकता, बस अपने साथ साथ औरों को भी धोखा दे रहे है!

इसीलिए इतनी पूजा करने पर भी आज तक चित्त शांत नही हो पाया। यही कसौटी है कि पूजा सच्ची है या झूठी। परमात्मा को स्वयं का ही भोग लगाना पड़ता है, किसी मिष्ठान का नहीं, तभी उसकी पूजा संभव होती है..!!

ओशो

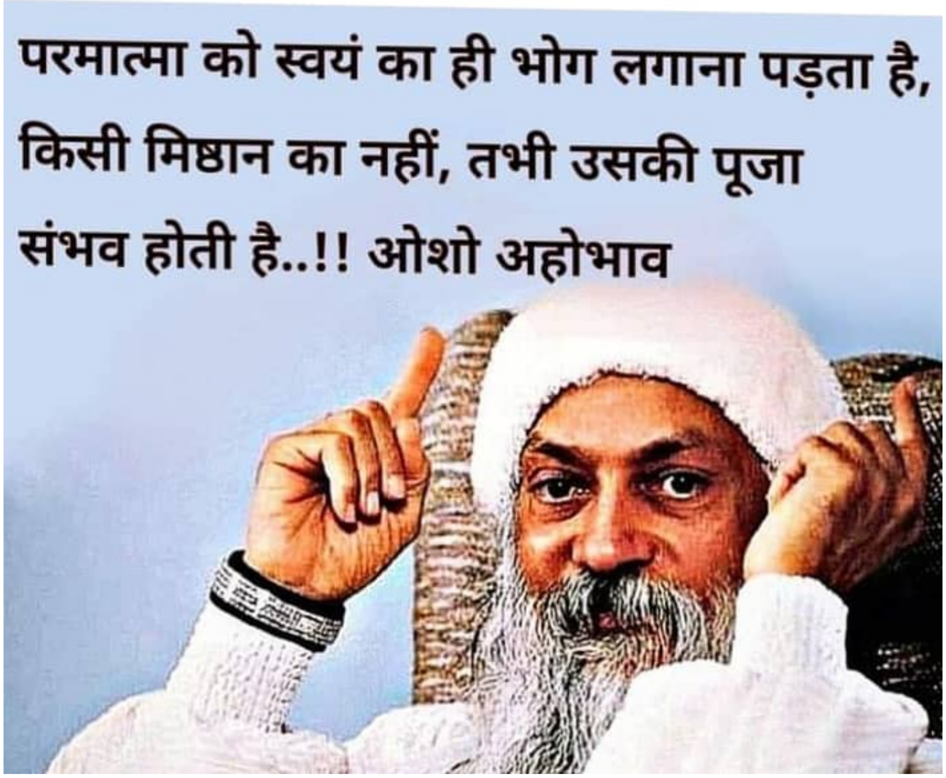

CamScanner

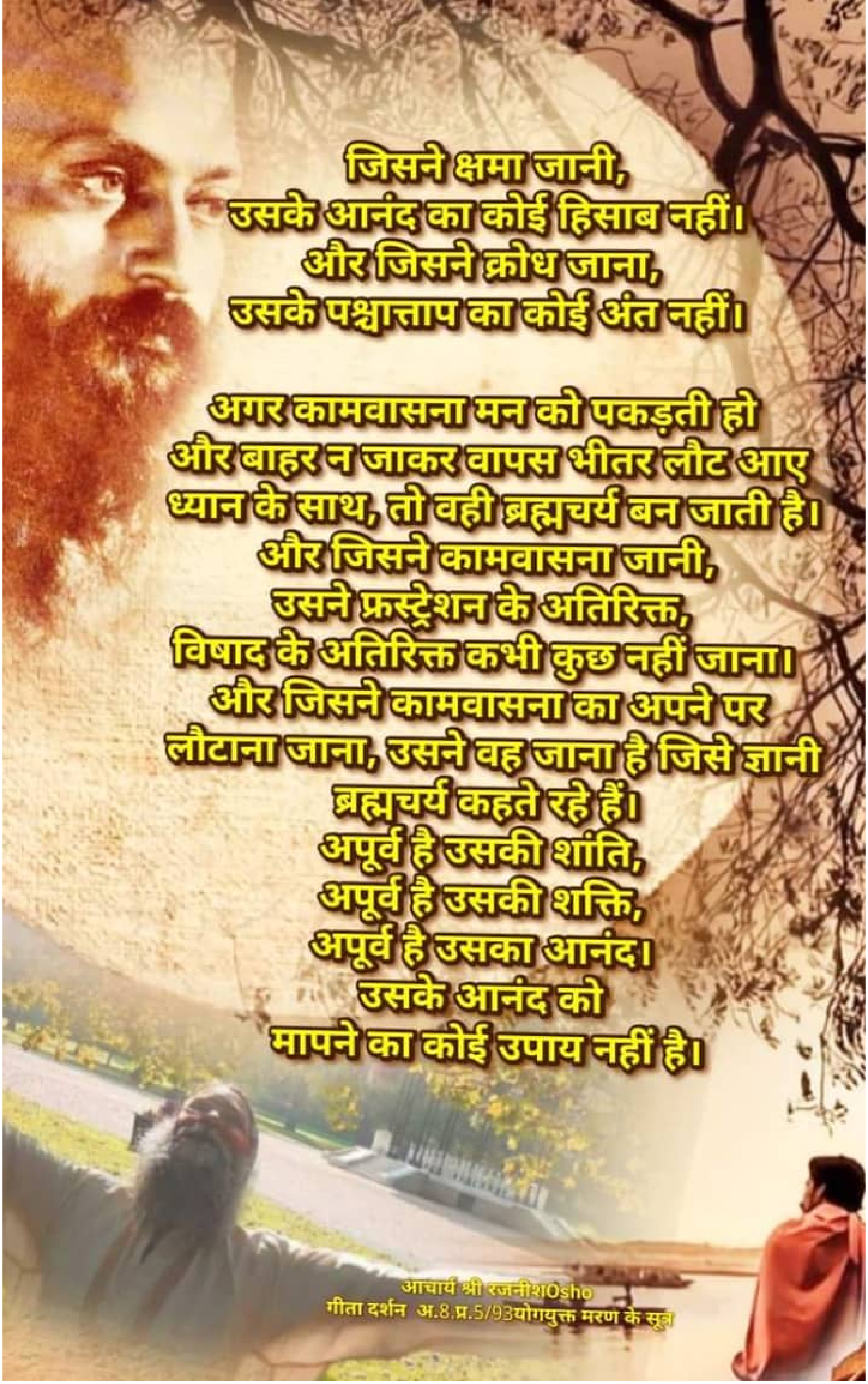
जिसने क्षमा जानी,
उसके आनंद का कोई हिसाब नहीं।
और जिसने क्रोध जाना,
उसके पश्चात्ताप का कोई अंत नहीं।

अगर कामवासना मन को पकड़ती हो
और बाहर न जाकर वापस भीतर लौट आए
ध्यान के साथ, तो वही ब्रह्मचर्य बन जाती है।
और जिसने कामवासना जानी,
उसने फ्रस्ट्रेशन के अतिरिक्त,
विषाद के अतिरिक्त कभी कुछ नहीं जाना।
और जिसने कामवासना का अपने पर
लौटाना जाना, उसने वह जाना है जिसे ज्ञानी
ब्रह्मचर्य कहते रहे हैं।
अपूर्व है उसकी शांति,
अपूर्व है उसकी शक्ति,
अपूर्व है उसका आनंद।
उसके आनंद को
मापने का कोई उपाय नहीं है।
आचार्य श्री रजनीशOsho
गीता दर्शन अ.8.प्र.5/93योगयुक्त मरण के सूत्र

CamScanner

9:30 pm 0 KB/s VoLTE 4G 54%

3 12

बालक को दिया।

उस बालक ने मोमबत्ती को जलाकर कहा, "राजन ! आप बताये, इस मोमबत्ती की रोशनी किस ओर है ?" राजा ने कहा, "इसकी रोशनी चारों दिशा में एक समान है।" तब उस बालक ने कहा, "हे राजन ! यही आपके दूसरे सवाल का जवाब है। क्योंकि परमात्मा सर्वदृष्टा हैं और उनकी नजर सभी प्राणियों के कर्मों की ओर परस्पर रहती है।" राजा उस बालक को जवाब से अत्यधिक प्रसन्न हो गये। अब तो वे अन्तिम प्रश्न के उत्तर दे लिये और भी उत्सुक हो उठे।

राजा ने कहा, "मेरे अन्तिम सवाल का जवाब दो कि भगवान क्या कर सकते हैं ?" बालक ने कहा, 'हे राजन ! मैं इस सवाल का उत्तर अवश्य दूँगा परन्तु इसके लिये मुझे आपकी जगह पर और आपको मेरी जगह पर आना होगा।"

राजा को तो उत्तर जाने की उत्सुकता थी वो अपनी सहमति दे दिये। वह बालक राजा के सिहासन पर जा बैठा और कहा, "राजन ! आपके अन्तिम सवाल का जवाब यह है, आपने कहा था कि भगवान क्या कर सकते हैं तो भगवान यह कर सकते कि मुझ जैसे रंक को राज सिहासन पर बैठा सकते हैं और आप जैसे राजा को मुझ जैसे सवाली के स्थान पर, अर्थात राजा को रंक और रंक को राजा बना सकते हैं यह आपके अन्तिम सवाल का जवाब है।"

राजा उस ब्राह्मण पुत्र के जवाब से अत्यधिक प्रसन्न हुए और उसे अपना सलाहकार बना लिया। भगवान हर एक जीव के ह्रदय में निवास करते हैं। परमात्मा के साथ प्रेम करेंगे तो वह आपको सही मार्ग दिखाएंगे। इसलिए हर जीव को पूजा-पाठ, भजन-कीर्तन करना चाहिए। जिससे आप अपने अन्दर की उस शक्ति से जुड़ सकें जो आपके भीतर ही मौजूद है लेकिन आप उसे पहचान नहीं पा रहे।

----------:::×:::----------

"जय जय श्री राधे"

****

CamScanner

9:30 pm 0 KB/s 54%

एक माह पूरा हुआ तब ब्राह्मण अपने पुत्र को लेकर राजमहल गया और राजा से कहा, "हे राजन ! आपके सवाल का जवाब मेरा पुत्र देगा।" राजा ने ब्राह्मण के पुत्र से वही सवाल पूछा बताओ भगवान कहाँ रहते हैं, भगवान की नजर किस ओर है तथा भगवान क्या कर सकते हैं ?

उस ब्राह्मण पुत्र ने राजा से कहा, "हे राजन ! क्या आपके राज्य मे पहले अतिथि का आदर सम्मान नही किया जाता।" यह सुन राजा को थोड़ा लज्जित महसूस हुआ। पहले उस बालक को आदर सत्कार के साथ स्थान दिया गया फिर पीने हेतु सेवक दूध का गिलास लाया गया। वह बालक दूध के गिलास पकड़कर दूध में अंगुली डालकर घुमाकर बार-बार दूध को बाहर निकालकर देखने लगा। यह देख राजा ने पूछा, "ये क्या कर रहे हो ?"

बालक ने कहा, "सुना है दूध में मक्खन होता है। मैं वही देख रहा हूँ कि दूध में मक्खन कहाँ है ? आपके राज्य के दूध से तो मक्खन ही गायब है।"

राजा ने कहा, "दूध में मक्खन होता है, परन्तु वह ऐसे दिखाई नहीं देता। जब दूध को जमाकर दही बनाया जाता है, और फिर दही को मथा जाता हैं तब जाकर मक्खन प्राप्त होता है।"

ब्राह्मण के पुत्र ने कहा, "महाराज ! यह आपके पहले सवाल का जवाब है। जिस तरह दूध से दही और फिर दही को मथने से मक्खन प्राप्त होता है, उसी प्रकार परमात्मा प्रत्येक जीव के अन्दर विद्यमान होते है। परन्तु उन्हें पाने के लिये सच्ची भक्ति की आवश्यकता होती है। मन से ध्यानपूर्वक भक्ति करने पर आत्मा में छुपे हुए परमात्मा का आभास होता है।"

राजा ब्राह्मण के पुत्र के जवाब से खुश हुआ और कहा अब मेरे दूसरे सवाल का जवाब दो, भगवान किस ओर देखते हैं ? उस बालक ने कहा, "राजन ! इसका जवाब मैं दूँगा परन्तु मुझे इसके लिये एक मोमबत्ती की आवश्यकता है।" राजा ने तुरन्त मोमबत्ती मंगाई और उस बालक को दिया।

उस बालक ने मोमबत्ती को जलाकर कहा, "राजन ! आप बताये, इस मोमबत्ती की रोशनी किस ओर है ?" राजा ने कहा, "इसकी रोशनी चारों दिशा में एक समान है।" तब उस बालक ने कहा, "हे राजन ! यही आपके दूसरे सवाल का जवाब है। क्योंकि परमात्मा सर्वदृष्टा हैं और

CamScanner

9:30 pm 0 KB/s 54%

आध्यात्मिक और प्रेरणादायक कहानियां
Arvind Gyani · 10h ·

भगवान कहाँ रहते हैं? पढिये कथा...

एक ब्राह्मण था, वह घरों पर जाकर पूजा पाठ कर अपना जीवन यापन किया करता था। एक बार उस ब्राह्मण को नगर के राजा के महल से पूजा के लिये बुलावा आया। वह ब्राह्मण राजमहल का बुलावा पाकर खुशी-खुशी पूजा करने गया। पूजा सम्पन्न कराकर जब ब्राह्मण घर को आने लगा, तब राजा ने ब्राह्मण से एक सवाल किया, "हे ब्राह्मण देव ! आप भगवान की पूजा करते हैं तो यह बताये की भगवान कहाँ रहते हैं ? उनकी नजर किस ओर है, और भगवान क्या कर सकते हैं ?"

राजा के प्रश्न सुन ब्राह्मण अचंभित हो गया और कुछ समय विचार करने के बाद राजा से कहा, "हे राजन ! इस सवाल के जवाब के लिए मुझे समय दीजिए।"

राजा ने ब्राह्मण को एक माह का समय दिया। ब्राह्मण प्रतिदिन इसी सोच में उलझा रहता कि इसका जवाब क्या होगा। ऐसा करते-करते समय बीतता गया और कुछ ही दिन शेष रह गये। समय बीतने के साथ ब्राह्मण की चिंता भी बढ़ने लगी और जवाब नही मिलने के कारण ब्राह्मण उदास रहने लगा।

एक दिन ब्राह्मण को चिंतित देख ब्राह्मण के पुत्र ने कहा पिता जी आप इतने उदास क्यों हैं। तब ब्राह्मण ने कहा, "बेटा ! कुछ दिनों पहले में पूजा कराने राजमहल गया हुआ था, पूजा सम्पन्न कराकर जब मैं वापस आ रहा था तब राजा ने मुझसे एक सवाल पूछा था। राजा ने कहा था कि भगवान कहाँ रहते हैं ? भगवान क्या कर सकते हैं और भगवान की नजर किस ओर है। राजा के सवाल का जवाब मुझे उस समय नही सुझा तो मैने उनसे कुछ समय मांगा था, जिसके जवाब के लिये राजा ने मुझे एक माह की समय दिया था और वह एक माह बीतने वाला है लेकिन इसका जवाब मेरे पास नही है, इसलिए मैं चिंतित हूँ।" ब्राह्मण की बात सुनकर उनका पुत्र बोला, "पिताजी ! इसका जवाब मैं राजा को दूँगा। आप मुझे साथ ले चलिये।"

एक माह पूरा हुआ तब ब्राह्मण अपने पुत्र को लेकर राजमहल गया और राजा से कहा, "हे राजन ! आपके सवाल का जवाब मेरा पुत्र देगा।" राजा ने ब्राह्मण के पुत्र से वही सवाल पूछा बताओ भगवान कहाँ

CamScanner

9:27 pm 0 KB/s VoLTE 4G 55%
3 12

capacity and virility. Given that Shiva didn't have to fight fierce battles or travel quickly between the worlds (h... See more

See translation

376 7 comments • 25 shares • 793 views
Like Comment Send Share
CamScanner

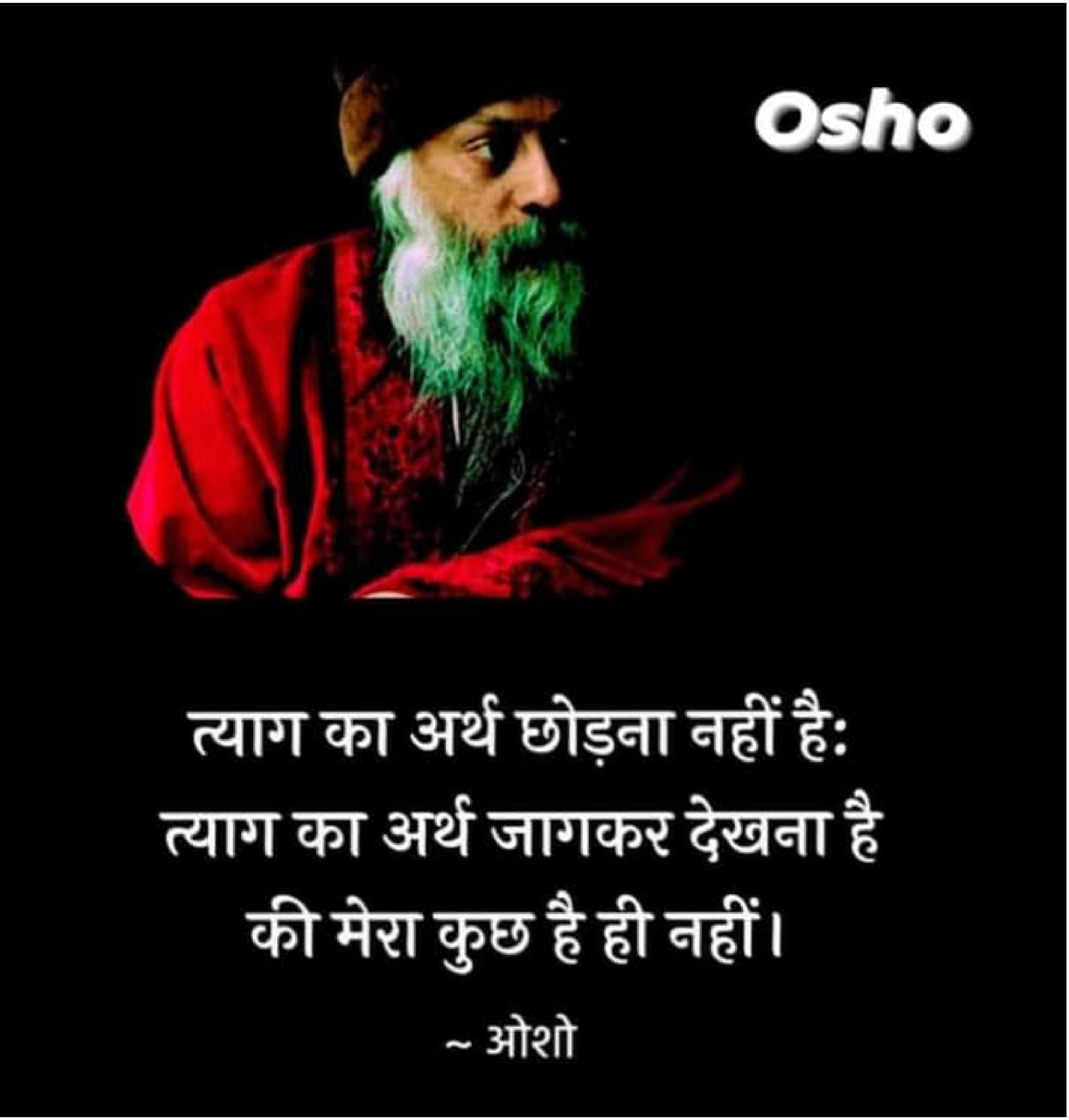

CS CamScanner

9:26 pm 0 KB/s 55%

.

#viral #trending #travelphotography #reelsins... See more

70 2 comments • 8 shares • 268 views

Like Comment Send Share

ओशो - जीवन-मृत्यु

CamScanner

जो व्यक्ति जीवन भर अपनी चेतना के जागरण में संलग्न होता है, उसकी शांति के लिए सतत प्रयासशील होता है, जहां भी है, जैसा भी है, वहीं अपनी चेतना को जागरूक, प्रबुद्ध करने में संलग्न होता है, जैसी भी घड़ियों में है, वहीं अपने मन को शांति और शून्य में ले जाने के लिए सतत ध्यानपूर्ण होता है, वही व्यक्ति धीरे - धीरे अपनी चेतना धारा को बदल लेता है। फिर वह चाहे सोता हो, चाहे जगता हो, चाहे मंदिर में बैठा हो और चाहे मधुशाला में बैठा हो, इससे कोई फर्क नही पड़ता। उसकी चेतना, उसकी सतत चेतना एक क्रांति से परिवर्तित होती रहती हैं, गुजरती रहती है। वैसा व्यक्ति जीवन में आनंद को उपलब्ध होता है, जीवन में परमात्मा को उपलब्ध होता है, वैसा ही व्यक्ति मृत्यु के क्षण में भी परमात्मा को उपलब्ध होता है और पाता है। जो जीवन मे नहीं पाया गया, वह मृत्यु के क्षण में नहीं पाया जा सकता है।जो जीवन में पाया गया, उसे मृत्यु के क्षण में खोया नहीं जा सकता है। ओशो संकलन: Dr Sohan Lal Narang

CamScanner

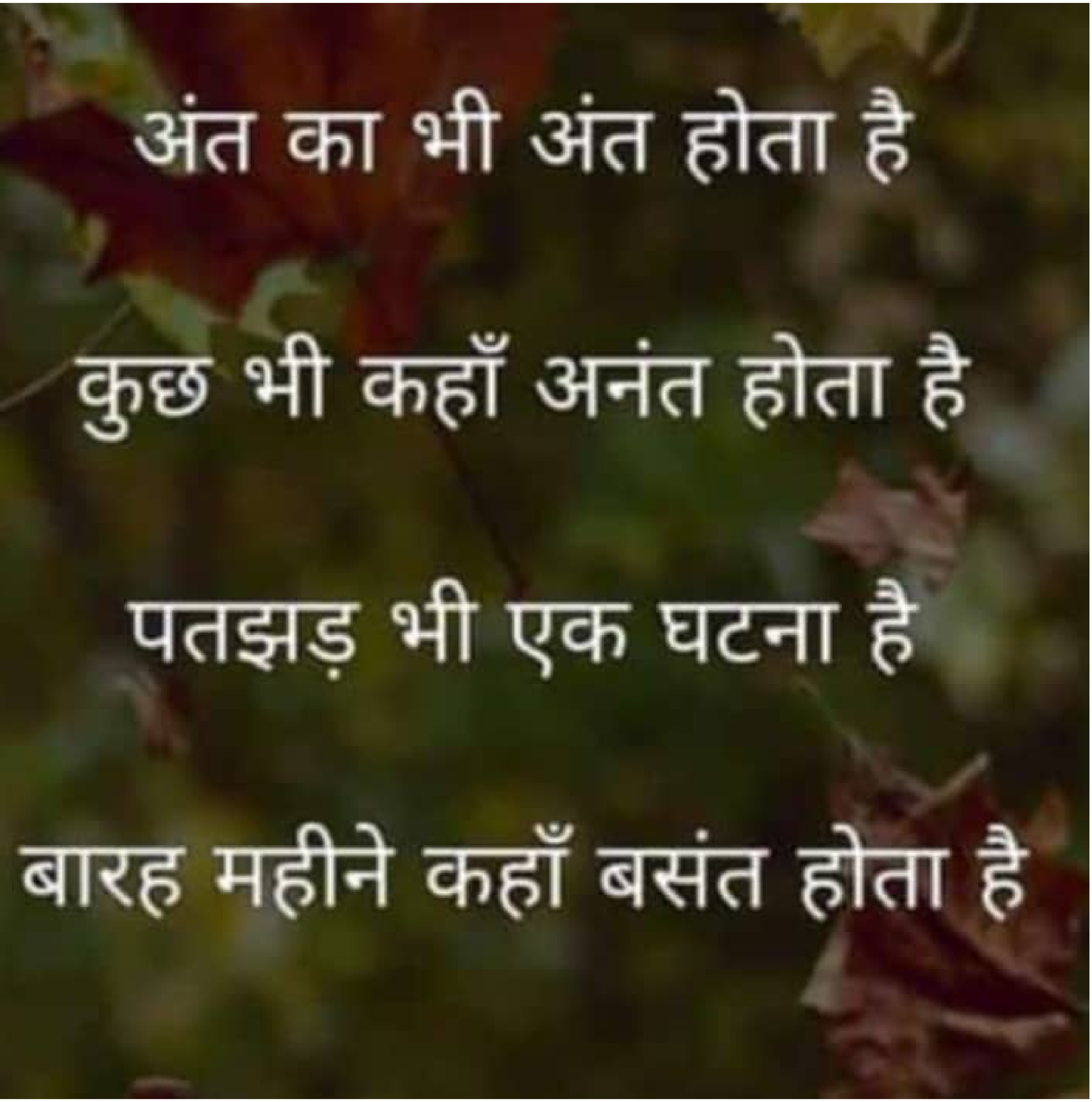

CamScanner

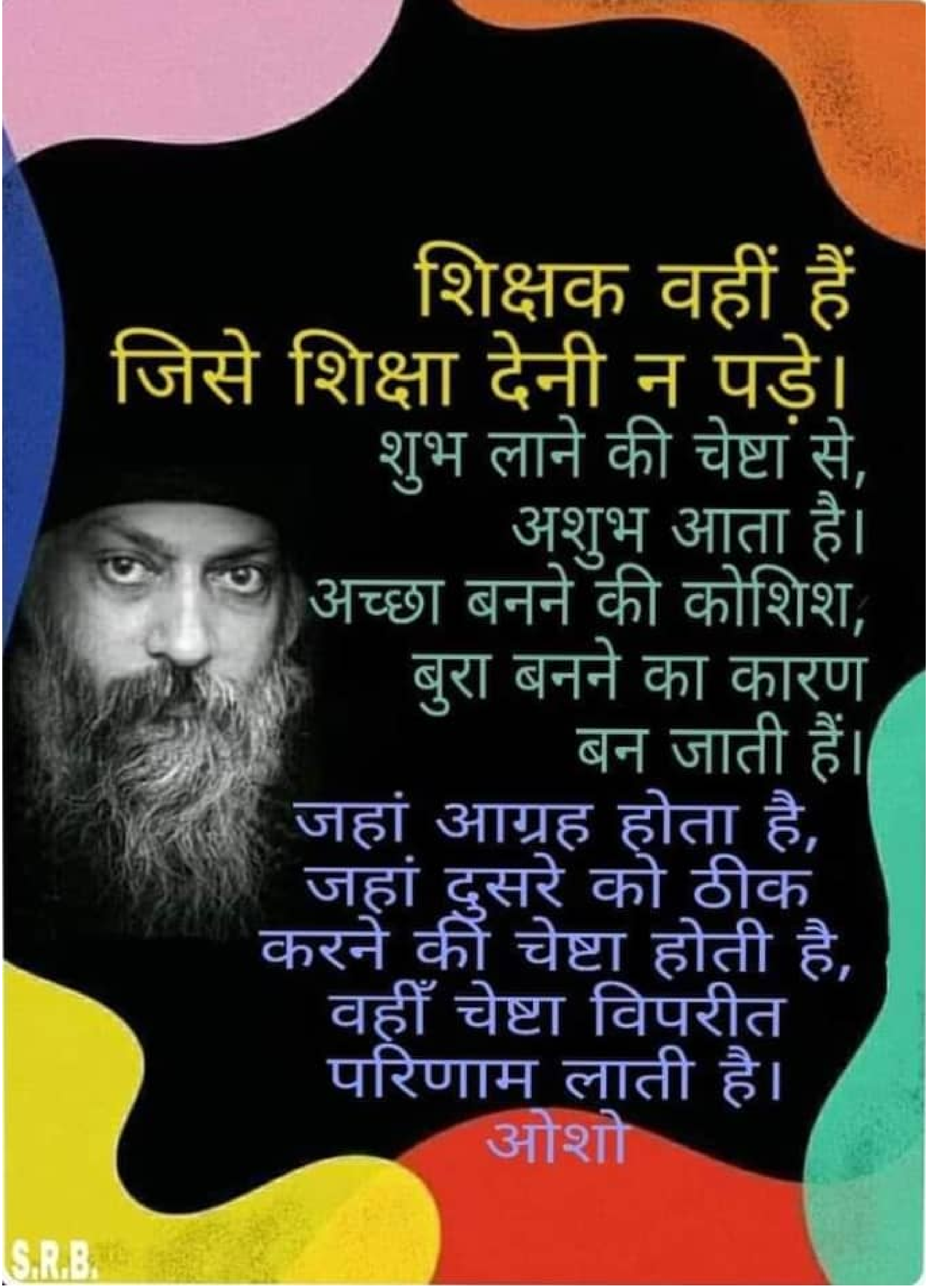
शिक्षक वहीं हैं
जिसे शिक्षा देनी न पड़े।
शुभ लाने की चेष्टा से,
अशुभ आता है।
अच्छा बनने की कोशिश,
बुरा बनने का कारण
बन जाती हैं।
जहां आग्रह होता है,
जहां दुसरे को ठीक
करने की चेष्टा होती है,
वहीँ चेष्टा विपरीत
परिणाम लाती है।
ओशो
S.R.B.

CamScanner

9:00 pm 3 KB/s 59%

facebook

3 12

72 18 comments • 2 shares

Like Comment Send Share

Post hidden

You won't see this post in your News Feed.

Undo

अहोभाव

18h ·

अहोभाव

जब आप चुपचाप सुनते हैं तो पूरा अस्तित्व आपसे बोलना शुरू कर देता है। जब आप बिल्कुल शांत होते हैं, तो वह सीखने का सबसे बड़ा क्षण होता है। जब आप चुप होते हैं तो जिंदगी अपने रहस्य खोलती है। ओशो

CamScanner

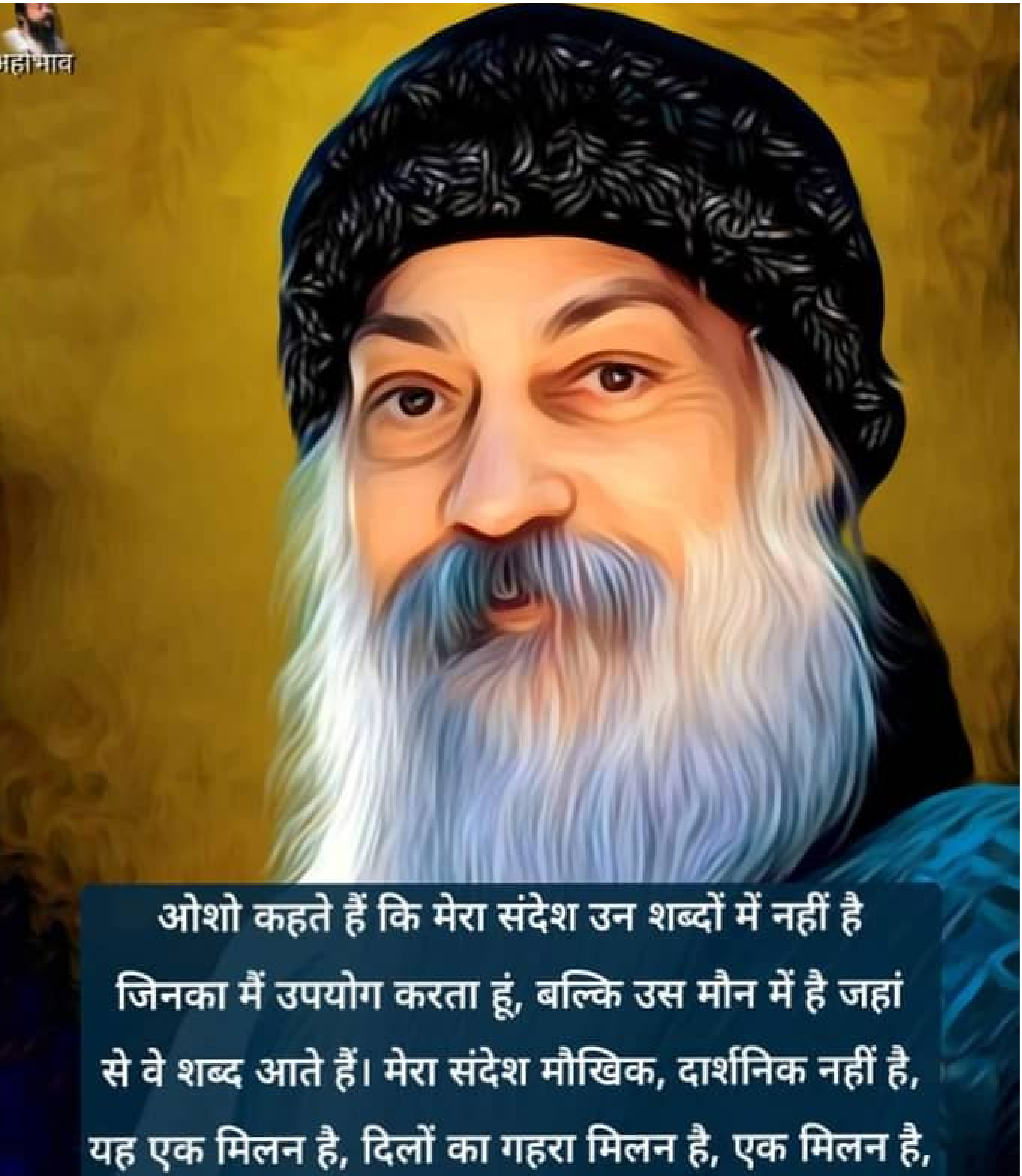
अहोभाव
ओशो कहते हैं कि मेरा संदेश उन शब्दों में नहीं है जिनका मैं उपयोग करता हूं, बल्कि उस मौन में है जहां से वे शब्द आते हैं। मेरा संदेश मौखिक, दार्शनिक नहीं है, यह एक मिलन है, दिलों का गहरा मिलन है, एक मिलन है, एक मर्ज है और एक चरमसुख अनुभव है। अहोभाव

CamScanner

O'sho Lovers&Friends (ओ'शो प्रेमी मित्र)

अहोभाव · 2 दिन ·

सेक्स ने कभी किसी को संतुष्ट नहीं किया है। इससे और भी अधिक असंतोष पैदा होता है। सेक्स ने कभी किसी को तृप्ति नहीं दी यह कोई तृप्ति नहीं जानता। यौन संबंध तभी बनाएं जब आपके बीच प्यार भरा रिश्ता हो। और प्रेम एक बड़ा केंद्र है, एक उच्चतर केंद्र है। एक बार जब सेक्स प्रेम से जुड़ जाता है, तो यह ऊपर की ओर बढ़ने लगता है। ओशो अहोभाव

CS CamScanner

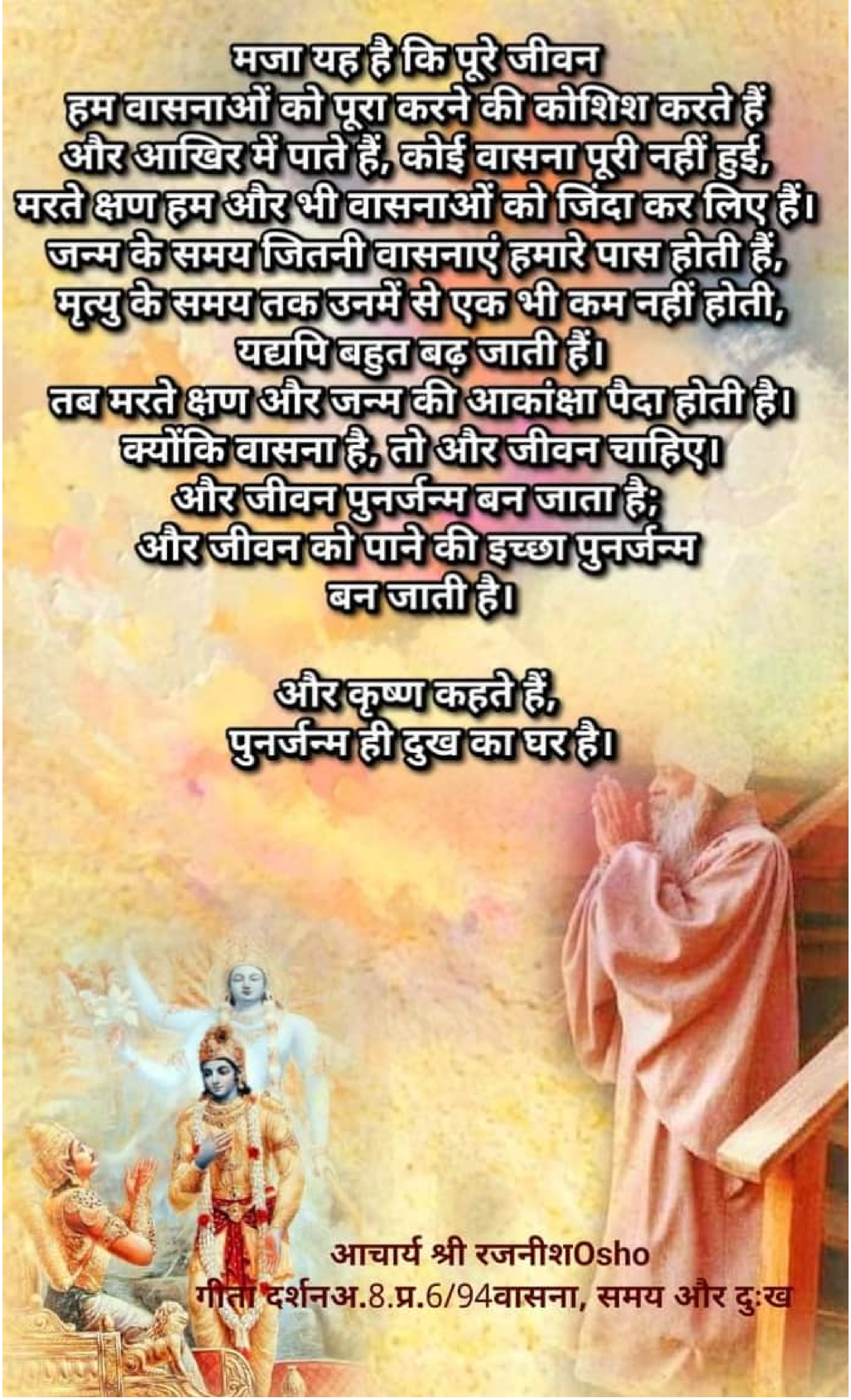
मजा यह है कि पूरे जीवन
हम वासनाओं को पूरा करने की कोशिश करते हैं
और आखिर में पाते हैं, कोई वासना पूरी नहीं हुई,
मरते क्षण हम और भी वासनाओं को जिंदा कर लिए हैं।
जन्म के समय जितनी वासनाएं हमारे पास होती हैं,
मृत्यु के समय तक उनमें से एक भी कम नहीं होती,
यद्यपि बहुत बढ़ जाती हैं।
तब मरते क्षण और जन्म की आकांक्षा पैदा होती है।
क्योंकि वासना है, तो और जीवन चाहिए।
और जीवन पुनर्जन्म बन जाता है;
और जीवन को पाने की इच्छा पुनर्जन्म
बन जाती है।
और कृष्ण कहते हैं,
पुनर्जन्म ही दुख का घर है।
आचार्य श्री रजनीशOsho
गीता दर्शनअ.8.प्र.6/94वासना, समय और दुःख

CamScanner

" अपने एकांत का
आनंद लेना ही ध्यान है।
ध्यानी वह है जो अपने
अकेले होने में गहरा
उतरता है, यह जानते हुए
कि हम अकेले पैदा होते
हैं, हम अकेले मरेंगे,
और गहरे में हम अकेले
जी रहे हैं। तो क्यों नहीं
इसे अनुभव करें कि यह
एकांत है क्या? यह
हमारा आत्यंतिक स्वभाव
है, हमारा अपना होना। "

~आचार्य रजनीश "ओशो"

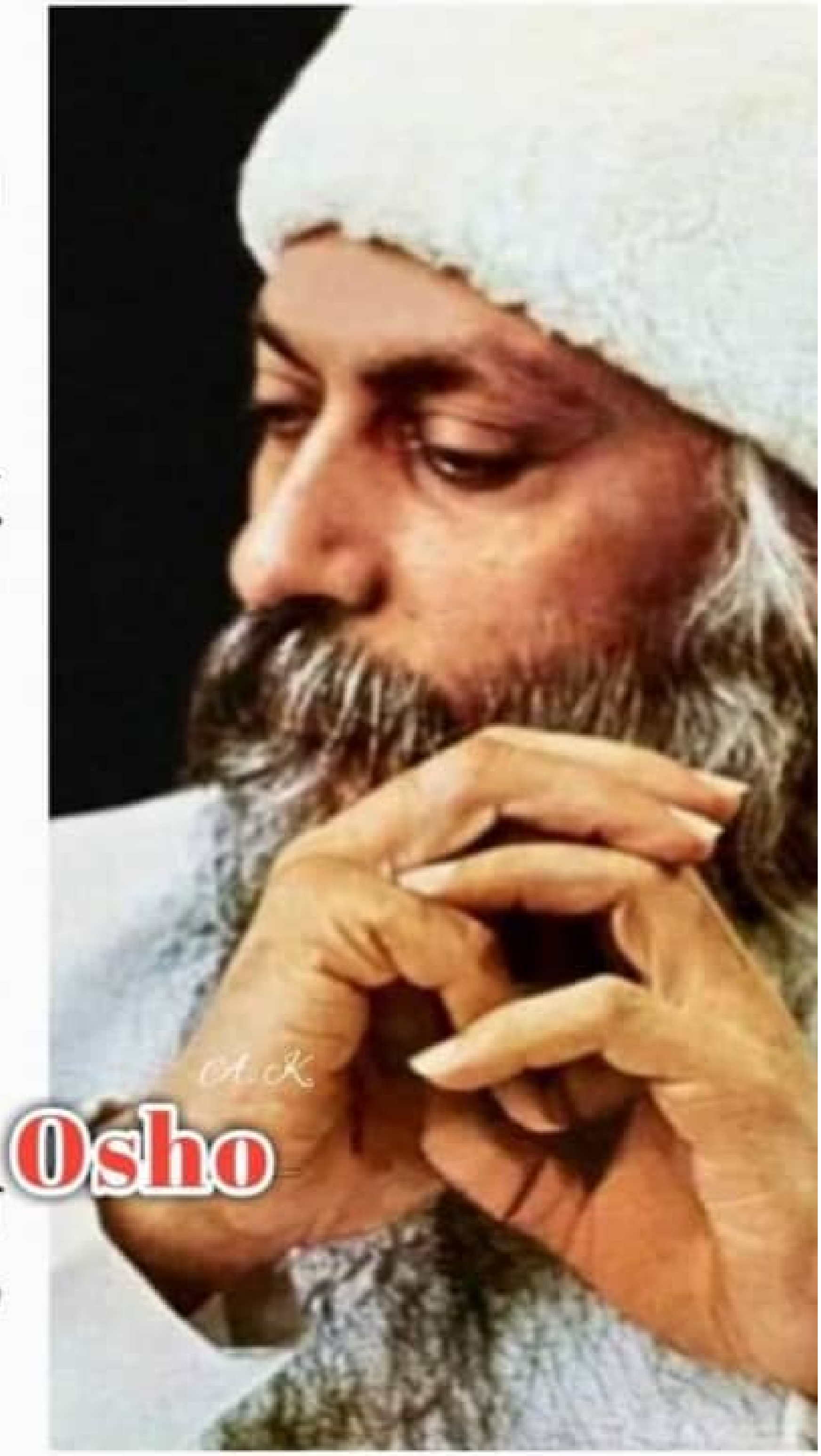

CS CamScanner

8:59 pm 0 KB/s VoLTE 4G 59%
3 12

Naye bharat ke khoj
13h ·

लाओत्से कहता है, मैं रुकने के लिए नहीं कहता।
▶️मैं तो दौड़ने की व्यर्थता को देखने के लिए कहता हूं। उसके परिणाम में रुकना हो जाता है; रुकने के लिए चेष्टा नहीं करनी पड़ती।
बुद्ध से कोई पूछता है, क्या हम इच्छाओं को छोड़ दें, तो शांति मिलेगी? तो बुद्ध कहते हैं, यह एक नई इच्छा है। यह एक नई इच्छा है। तो बुद्ध कहते हैं, मैं तुम्हें इच्छाएं छोड़ने को नहीं कहता, इच्छाओं को समझने को कहता हूं। क्योंकि अगर तुम समझ लोगे, तो तुम इच्छा नहीं कर पाओगे। तब तुम ऐसा नहीं पूछोगे कि क्या मैं इच्छाएं छोड़ दूं, तो मुझे शांति मिलेगी? यह शांति भी इच्छा का एक विषय बन जाती है। इच्छा जब नहीं होती, तब जो होता है, उसका नाम शांति है। और जब सुख-दुख की कोई खोज नहीं होती, तब जो होता है, उसका नाम आनंद है।
लाओत्से का सूत्र बहुमूल्य है। और इस सूत्र को प्रयोग करने के लिए न तो किसी विशेष साधना में लगने की जरूरत है, न किसी क्रियाकांड में पड़ने की जरूरत है। इस सूत्र को तो आप चलते, उठते, बैठते, काम करते, सोते, खाना खाते, बाजार में निकलते, दुकान पर बैठते पूरा कर सकते हैं। सिर्फ इतना ही खयाल रखें: पहला कदम आप न उठाएं, तो दूसरा कदम कभी नहीं उठेगा। पहले कदम पर सजग हो जाएं, दूसरे कदम से छुटकारा हो जाएगा। पहले कदम उठाने से अपने को देख लें कि कहां आप जा रहे हैं..
इस सूत्र को जीवन के सारे पहलुओं पर हम देखते रहें। और धीरे-धीरे आप पाएंगे कि बहुत कुछ बिना छोड़े छूट गया, बहुत कुछ बिना प्रयास के ही गिर गया। और एक दिन अचानक आदमी पाता है कि वह खड़ा है, दौड़ बंद हो गई। और एक दिन अचानक पाता है, वह अहंकार, जो दूसरों के सहारे निर्मित था, बिखर गया। और उसके बिखरते ही उसकी प्रतीति शुरू होती है, जो हमारा वास्तविक अस्तित्व, हमारी आत्मा है।
🌺ओशो🍀
🌸जय भगवान🙏

CS CamScanner

जो स्वयं में उसे जान लेता है, वह सबके भीतर उसे जानने में समर्थ हो जाता है। क्योंकि जो एक में है वह सब में है, और जो अणु में है वह विराट में है। और जो यहां है, वह वहां है। एक ज्योति का मुझे अपने भीतर अनुभव हो जाए तो सारा जीवन ज्योति का सागर हो जाता है। एक बिंदु को मैं जान लूं तो मैं पूरे सागर को पहचान लेता हूं। तो उस एक बिंदु को जो हमारे भीतर है, जानने का रास्ता है –– निरंतर - निरंतर माइंडफुल होते जाना है, होश से भरते जाना है, जागरूक होते जाना है। इसकी शुरुआत करनी होगी बाहर के जगत से और फिर धीरे - धीरे, धीरे - धीरे भीतर डूबना पड़ेगा और भीतर आना पड़ेगा। ओशो संकलन:Dr Sohan Lal Narang

CamScanner

8:51 pm 0 KB/s 60%

यह मनुष्य की बहुत दीन दशा है, हीन दशा है। मनुष्य की समझ जीवन-रूपांतरण के संबंध में बहुत कम हो गई है। हमारी अवस्था वैसी ही हो गई है जैसे कि चिकित्सक, शल्य चिकित्सक, तुम्हारे शरीर में इकट्ठी मवाद को निकालने के लिए दबाए और तुम्हें पीड़ा हो, और तुम समझो कि वह दुश्मन है; कि शल्य चिकित्सक तुम्हारे हाथ-पैर काटे, कि उनमें भरे जहर को बाहर निकाले, और तुम समझो कि वह दुश्मन है। सदगुरुओं की ये गालियां शल्य-चिकित्सा हैं।

ओशो

जो स्वयं में उसे जान लेता है, वह सबके भीतर उसे जानने में समर्थ हो जाता है। क्योंकि जो एक में है वह सब में है, और जो अणु में है वह विराट में है। और जो यहां है, वह वहां है। एक ज्योति का मुझे अपने भीतर अनुभव हो जाए तो सारा जीवन ज्योति का सागर हो जाता है। एक बिंदु को मैं जान लूं तो मैं पूरे सागर को पहचान लेता हूं। तो उस एक बिंदु को जो हमारे भीतर है जानने का रास्ता है— निरंतर-निरंतर माइंडफुल होते जाना है, होश से भरते जाना है, जागरूक होते जाना है। इसकी शुरुआत करनी होगी बाहर के जगत से और फिर

8:50 pm 14 KB/s VoLTE 4G 60%

3 12

इसलिए जो जानते थे, जो पहचानते थे, वे तो कहेंगे कि सदगुरु की कृपा हो तो ही वह गाली देता है। नहीं तो गाली देने की तकलीफ उठाएगा? उसकी महाकृपा हो तो ही वह डंडा लेकर तुम्हारे पीछे दौड़ेगा। उसका डंडा लेकर तुम्हारे पीछे दौड़ना या तुम्हें गाली देना, इस बात का सबूत है कि तुम काम के आदमी हो; कि तुम में कुछ होने की संभावना है; कि बीज अंकुरित हो सकता है; कि दीया जल सकता है; कि तुम इस योग्य हो कि सदगुरु जो भी चेष्टा कर सकता हो करे; शायद तुम बिलकुल करीब हो। जैसे निन्यानबे डिग्री पर पानी गर्म हो और सौ डिग्री पर भाप बन जाए, शायद तुम निन्यानबे डिग्री पर हो। जरा सा धक्का! कौन जाने एक गाली ही धक्का दे दे, एक चोट धक्का दे दे!

झेन फकीर गालियां ही नहीं देते थे, झेन फकीर तो मारते-पीटते। एक झेन फकीर ने तो अपने शिष्य को खिड़की से उठा कर बाहर फेंक दिया। तीन मंजिल मकान! वह जब नीचे गिरा शिष्य, तब सदगुरु ऊपर खिड़की से झांका और पूछा, कहो, कैसी रही! उस क्षण में सदगुरु का खिड़की से झांकना और देखना और पूछना, कहो कैसी रही! और वे प्रज्वलित आंखें और वह आनंदमग्न भाव–शिष्य तो भूल ही गया कि फेंका गया है तीन मंजिल से, कि हड्डियां टूट गई हैं! उस एक क्षण में उसे याद ही न रही देह की। उस एक क्षण में सब विस्मृत हो गया। उस एक क्षण में क्रांति घट गई। जो वर्षों अध्ययन-मनन और ध्यान से नहीं हो सका था, वह उस एक क्षण में हो गया। हड्डियां तो टूट गईं, मगर आत्मा मिल गई। और हड्डियां तो ऐसे ही टूट जाएंगी; उन्हें तो मिट्टी में मिल ही जाना है; मिट्टी से बनी हैं और मिट्टी में गिर जाना है।

अपात्र को गाली नहीं देता सदगुरु। अपात्र की तो इतनी योग्यता नहीं कि सदगुरु इतना श्रम ले। लेकिन बड़ा कठिन है, आज की दुनिया में और कठिन हो गया है। जैसे-जैसे मनुष्य सभ्य हुआ है, शिष्टाचारी हुआ है, सुसंस्कृत हुआ है, वैसे-वैसे उसकी समझ से कुछ बड़ी बहुमूल्य बातें खो गई हैं। अगर आज रामकृष्ण तुम्हें गाली दें तो तुम दुबारा उस द्वार पर ही न जाओगे। अगर रामकृष्ण गाली दें तो सिर्फ यही सिद्ध होगा तुम्हारी आंखों में कि इस आदमी को अभी कुछ भी नहीं हुआ–गाली बकता है! संत और गाली बके! अगर कोई सदगुरु तुम्हारे पीछे डंडा लेकर पड़ जाए तो तुम उसे विक्षिप्त ही समझोगे। संत तो दूर, सज्जन भी न समझोगे।

CamScanner

8:50 pm 0 KB/s VoLTE 4G 60%
3 12

रजनीशपुरम

Munabai Makvana · 37m ·

भगवान, अनेक संतों और सिद्धों के संबंध में कथाएं प्रचलित हैं कि वे जिन पर प्रसन्न होते थे उन पर गालियों की वर्षा करते थे। परमहंस रामकृष्ण के मुंह से ऐसे ही बहुत गालियां निकलती थीं, बात-बात में गालियां। यही बात प्रख्यात संगीत गुरु अलाउद्दीन खां के जीवन में भी उल्लेखनीय है। क्या इस पर कुछ प्रकाश डालने की अनुकंपा करेंगे?

आनंद मैत्रेय, सदगुरु गीत गाए या गाली दे, लक्ष्य उसका सदा एक है, कि किस भांति तुम्हारा अहंकार मिटे। गीत गाने से मिटे तो गीत गाएगा; गाली देने से मिटे तो गाली देगा। न तो गाली का कोई मूल्य है; न गीत का कोई मूल्य है; दोनों साधन हैं, उपाय हैं। सदगुरु की समग्र चेष्टा एक है कि किस भांति तुम्हारे अहंकार की चट्टान चूर-चूर हो जाए।

इस कारण रामकृष्ण कभी पीठ भी ठोंकते थे, कभी गालियां भी देते थे। और ऐसा रामकृष्ण के संबंध में ही नहीं, अनेक सिद्धों के संबंध में है। शिरडी के साईंबाबा गालियां देते, पत्थर मारते, डंडा लेकर पीछे दौड़ते। लोग सोचते थे, विक्षिप्त हो गए हैं। विक्षिप्त नहीं थे। जैसे-जैसे उनकी मृत्यु करीब आने लगी उतनी ज्यादा गालियां देते थे, ज्यादा पत्थर फेंकते थे, ज्यादा मारने दौड़ते थे। लोग सोचते थे कि अब पागलपन पराकाष्ठा पर पहुंच गया। ऐसी बात नहीं थी। मौत करीब आ रही थी, इसलिए जल्दी में थे। मौत द्वार पर खड़ी होने के निकट हो गई थी, इसलिए जिनके भी जीवन में थोड़ी संभावना थी, जिनके जीवन में भी चोट से कोई क्रांति हो सकती थी, उनको चोट करने के लिए कोई भी अवसर छोड़ना नहीं चाहते थे। दुनिया कहे पागल तो चलेगा।

सिद्धों को इससे अंतर नहीं पड़ता कि दुनिया क्या कहती है। सिद्धों को तो सिर्फ एक ही लक्ष्य है, जो उन्हें मिला है उसे बांट दें। लेकिन उसे केवल वे ही लोग ले सकते हैं जिनके भीतर से अहंकार विदा हो गया हो। जिनके पात्र अहंकार से भरे हैं उनके पात्रों में परमात्मा नहीं ढाला जा सकता। जिनके पात्र अहंकार से खाली हैं उनके पात्र ही केवल परमात्मा को स्वीकार कर सकेंगे। तुम अपने से खाली हो जाओ तो परमात्मा दौड़े और तुम्हें भर दे।

CamScanner

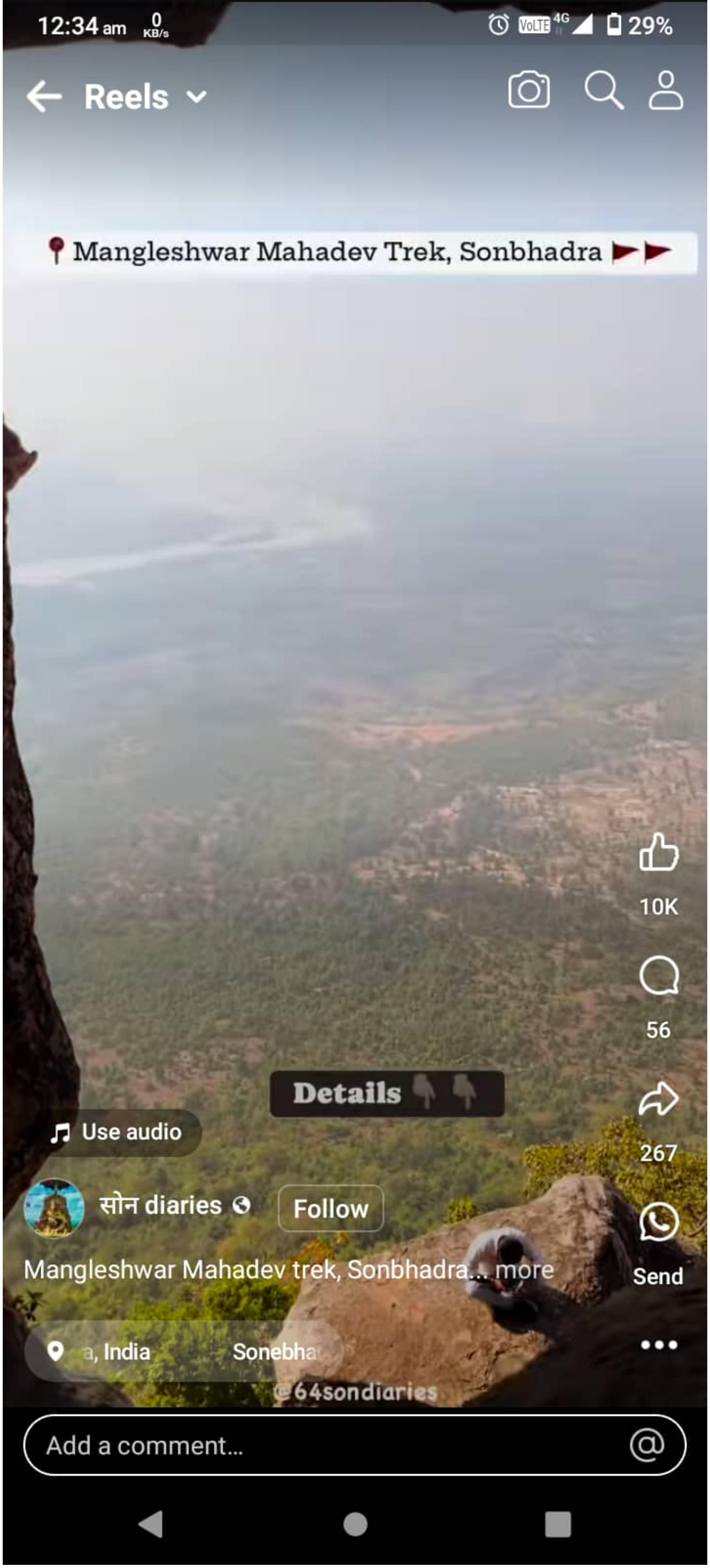
12:34 am
29%
Reels
Mangleshwar Mahadev Trek, Sonbhadra
10K
56
Details
Use audio
267
सोन diaries
Follow
Send
Mangleshwar Mahadev trek, Sonbhadra... more
a, India
Sonebha
@64sondiaries
Add a comment...

CamScanner

संसार में हर इंसान का परिवर्तन निश्चित है किसी का हृदय परिवर्तित होगा और "किसी का समय" @positive_889

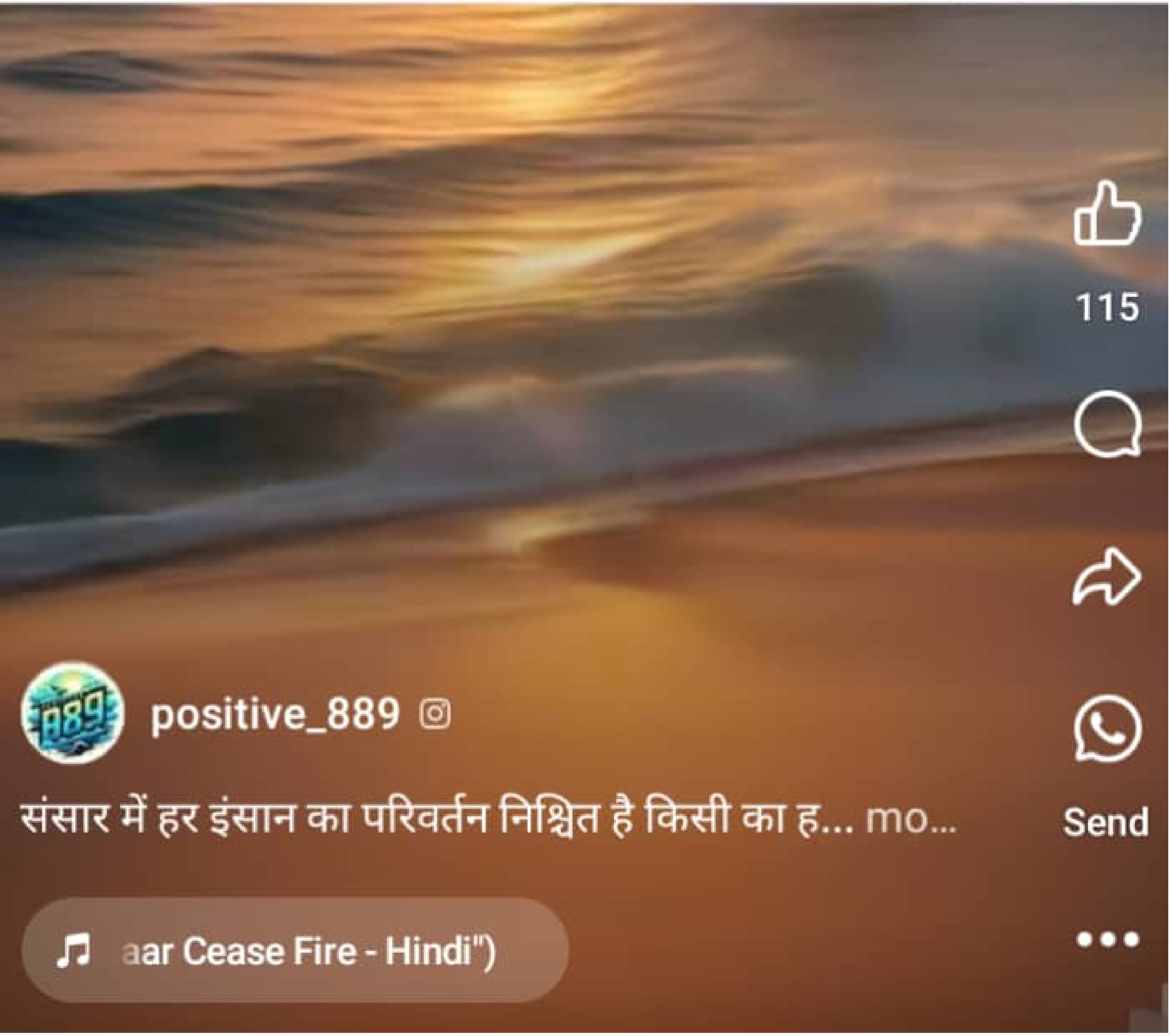

CamScanner

12:27 am 262 KB/s
31%
Reels
1M
4.8K
कहा जाता है कि बाबा विश्वनाथ का मंदिर
3.3K
Use template
Send
hindu_sanatani31
काशी विश्वनाथ मंदिर भगवान शिव को समर्पित एक प्... mo...
Add a comment...

CamScanner

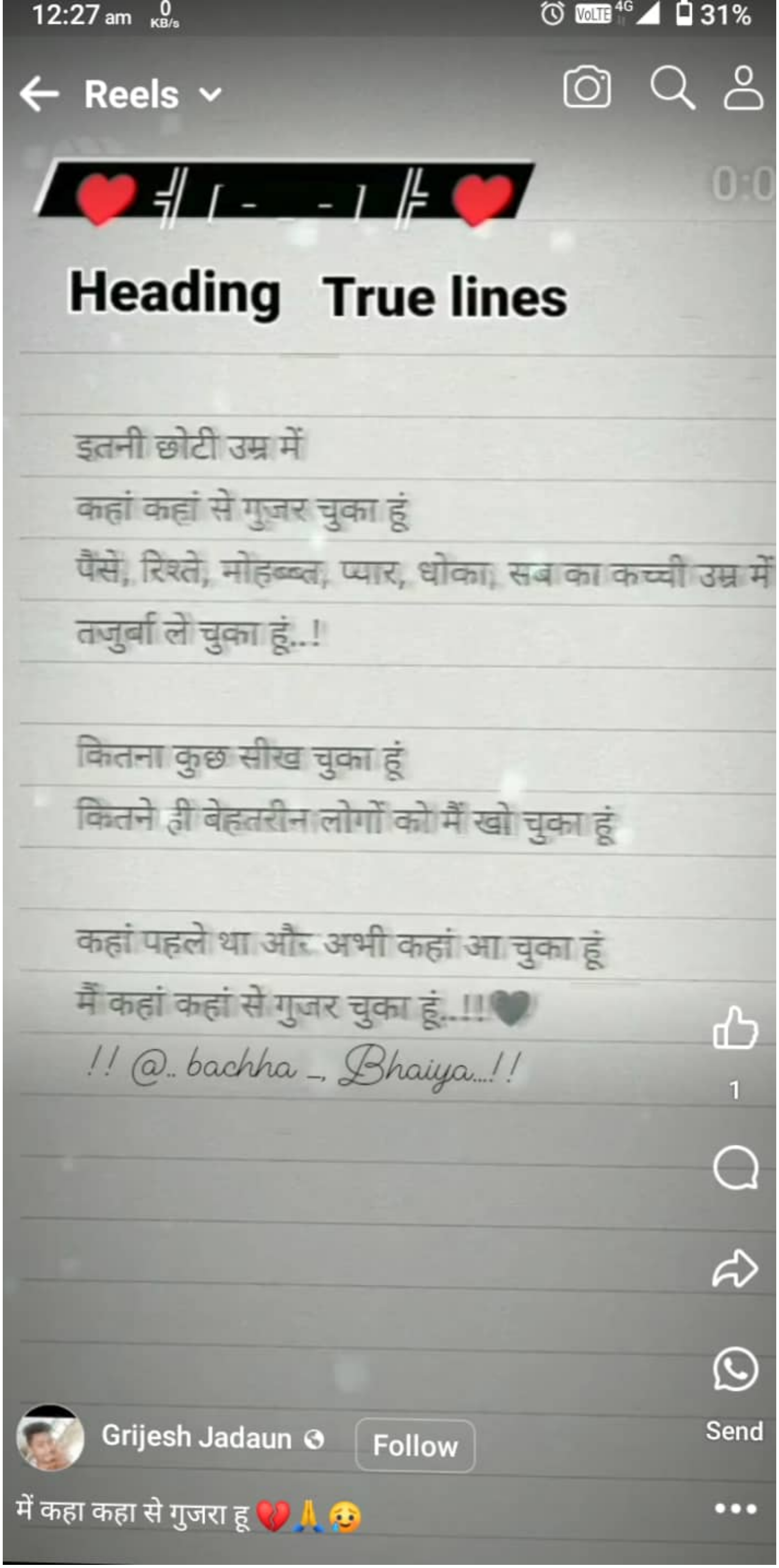
12:27 am
31%
Reels
Heading True lines
इतनी छोटी उम्र में
कहां कहां से गुजर चुका हूं
पैसें, रिश्ते, मोहब्बत, प्यार, धोका, सब का कच्ची उम्र में
तजुर्बा ले चुका हूं..!
कितना कुछ सीख चुका हूं
कितने ही बेहतरीन लोगों को मैं खो चुका हूं
कहां पहले था और अभी कहां आ चुका हूं
मैं कहां कहां से गुजर चुका हूं..!!
!! @.. bachha _ Bhaiya...!!
1
Send
Grijesh Jadaun
Follow
में कहा कहा से गुजरा हू

CamScanner

12:20 am
34%
Reels
OSHO_DIARY
Give
जिंदगी तुम्हें मिली है और तुमने
5.8K
परमात्मा को धन्यवाद नहीं दिया
19
Subscribe
710
osho_diary
"Right" if you're Agree! 🔥... more
Add a comment...

CamScanner

12:20 am
148 KB/s
34%
Reels
OSHO_DIARY
जो तुम्हें मिला है उसकी
तुम्हें दो कौड़ी कीमत नहीं है
Give
5.8K
19
710
Subscribe
osho_diary
"Right" if you're Agree! 🔥... more

CamScanner

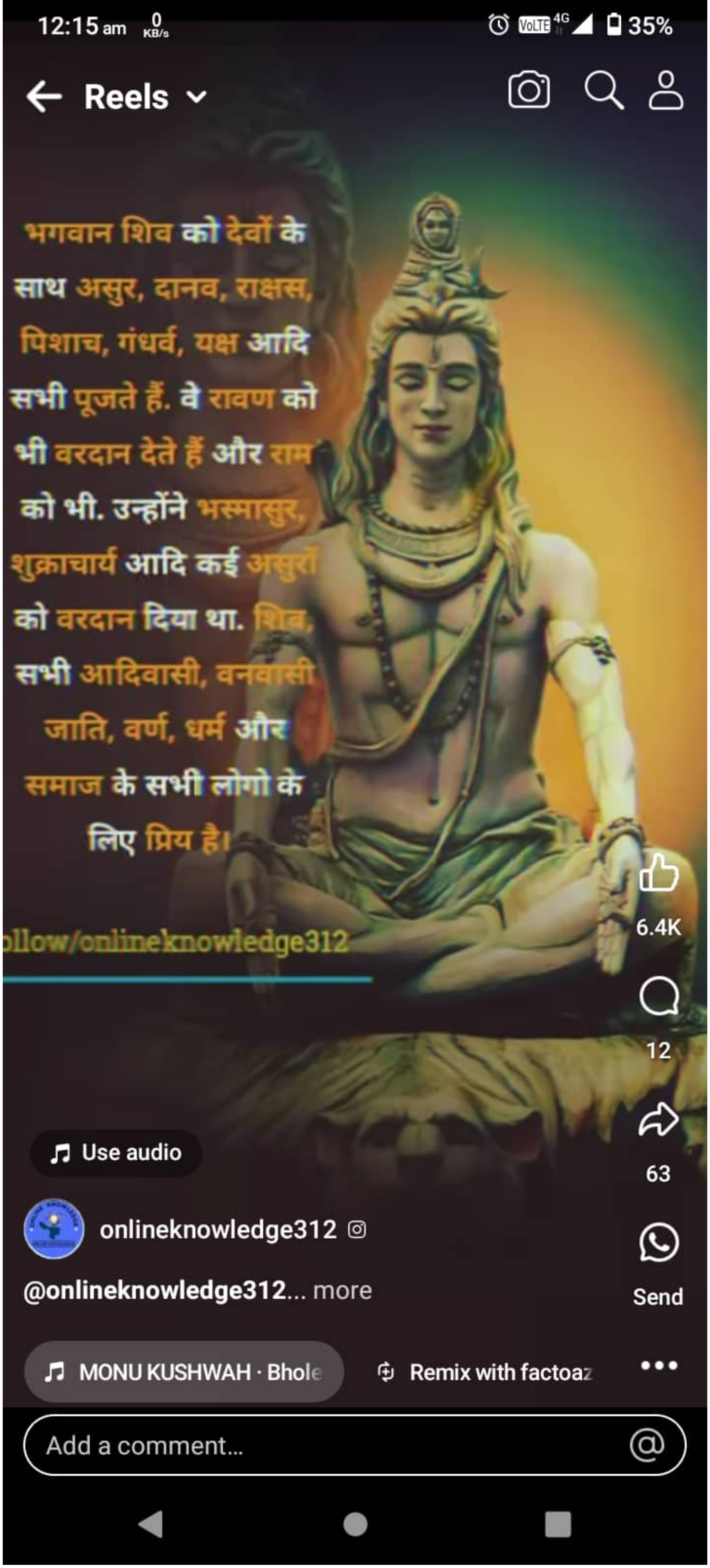
12:15 am
35%
Reels
भगवान शिव को देवों के
साथ असुर, दानव, राक्षस,
पिशाच, गंधर्व, यक्ष आदि
सभी पूजते हैं. वे रावण को
भी वरदान देते हैं और राम
को भी. उन्होंने भस्मासुर,
शुक्राचार्य आदि कई असुरों
को वरदान दिया था. शिव,
सभी आदिवासी, वनवासी
जाति, वर्ण, धर्म और
समाज के सभी लोगो के
लिए प्रिय है।
ollow/onlineknowledge312
6.4K
12
63
Use audio
onlineknowledge312
@onlineknowledge312... more
Send
MONU KUSHWAH · Bhole
Remix with factoaz
Add a comment...

CamScanner

12:12 am
Reels
@gyanshaastr
37K
3 करोड़ वर्षों से कैलाश पर्वत पवित्र है
931
1K
Send
gyanshaastr
कैलाश पर्वत इस धरती का सबसे पवित्र... more
Add a comment...

CamScanner

12:12 am
5 KB/s
VoLTE 4G
36%
Reels
@gyanshaastr
37K
931
कैलाश पर्वत की केवल परिक्रमा की जा सकती
1K
Send
gyanshaastr
कैलाश पर्वत इस धरती का सबसे पवित्र... more
Add a comment...

CamScanner

CS CamScanner

12:10 am
Reels
"खुशियों के लिए साधन की नहीं,
संतोष की जरूरत होती है।"
- ओशो
183
Use audio
quotelyrics_com
QuoteLyrics
Send
OLD FILM^ by _g

CamScanner

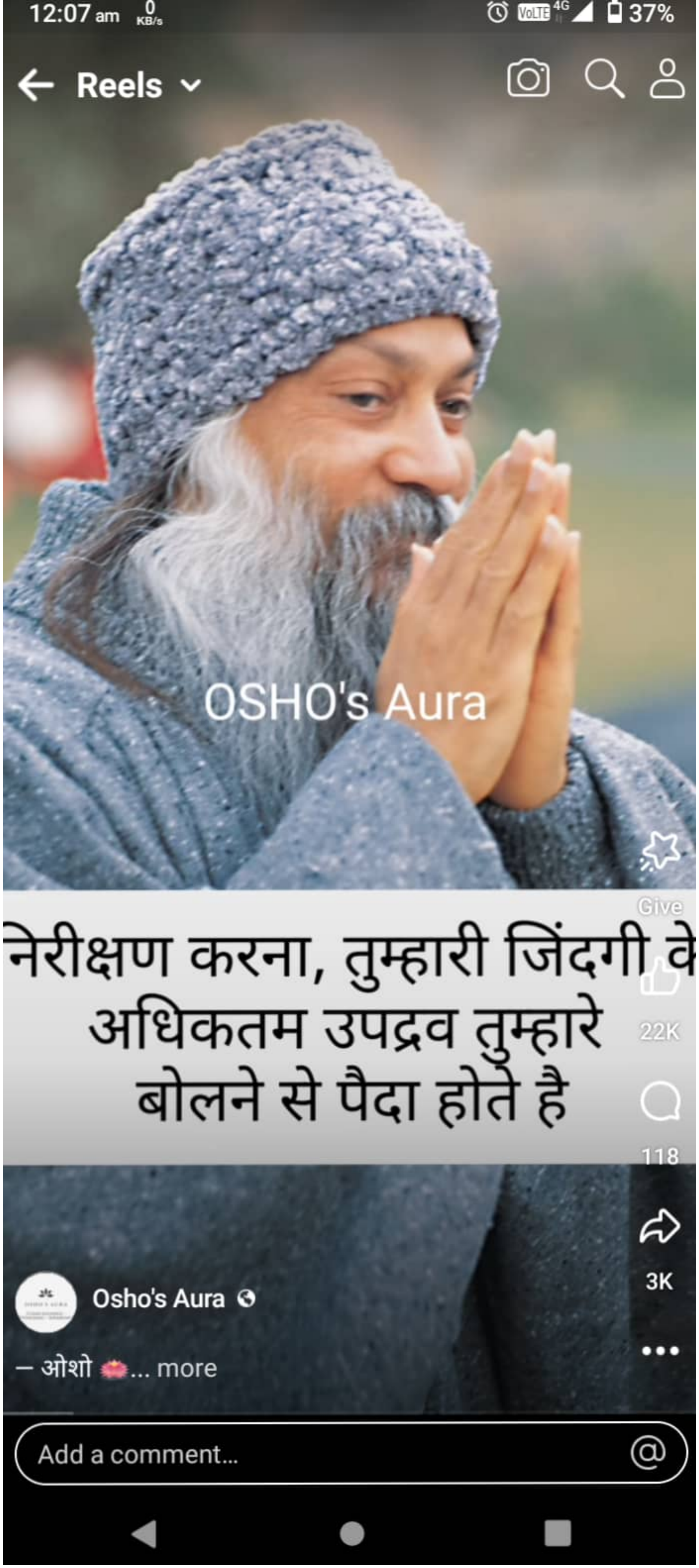
12:07 am
Reels
OSHO's Aura
नेरीक्षण करना, तुम्हारी जिंदगी के
अधिकतम उपद्रव तुम्हारे
बोलने से पैदा होते है
Give
22K
118
3K
Osho's Aura
— ओशो ... more
Add a comment...

CamScanner

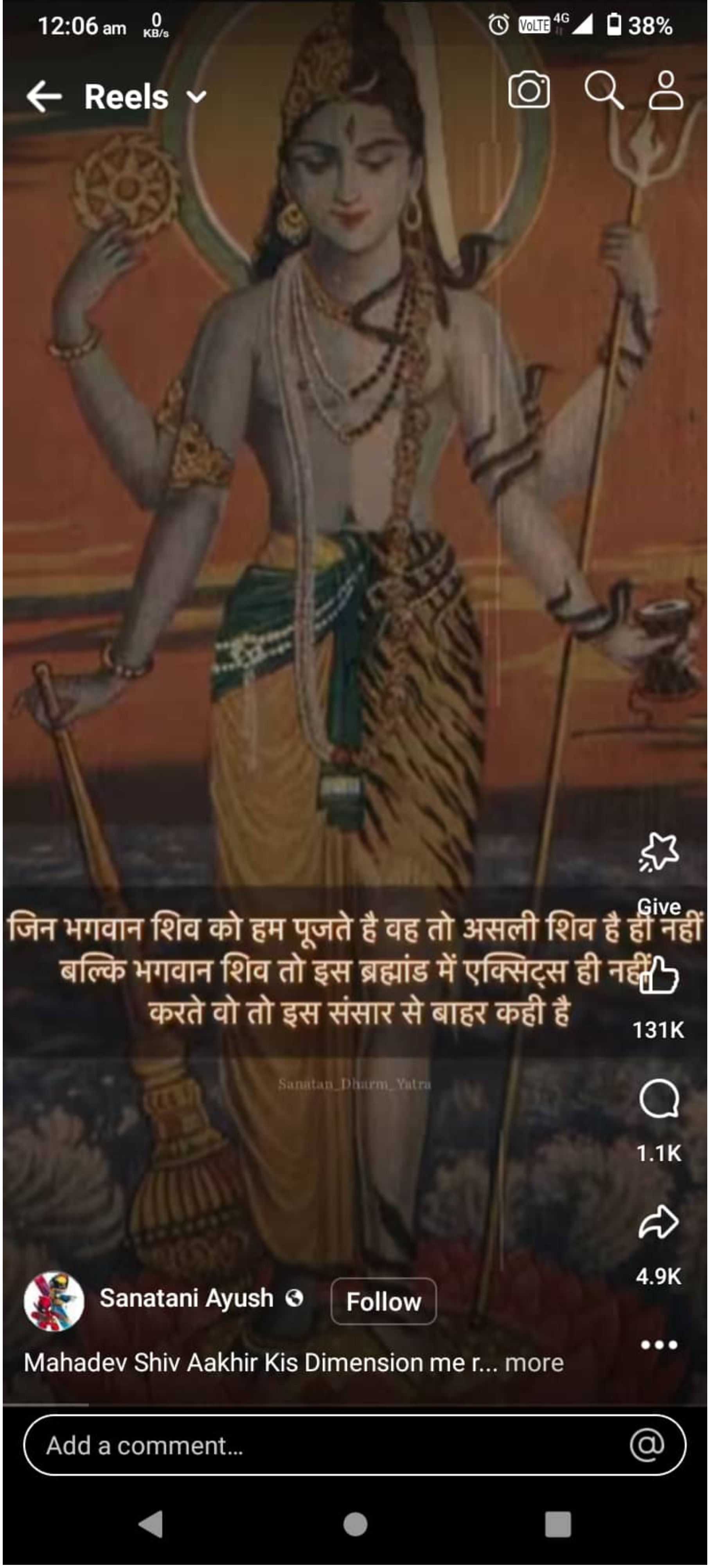
12:06 am
0 KB/s
VoLTE 4G
38%
Reels
जिन भगवान शिव को हम पूजते है वह तो असली शिव है ही नहीं
बल्कि भगवान शिव तो इस ब्रह्मांड में एक्सिट्स ही नहीं
करते वो तो इस संसार से बाहर कही है
Sanatan_Dharm_Yatra
Give
131K
1.1K
4.9K
Sanatani Ayush
Follow
Mahadev Shiv Aakhir Kis Dimension me r... more
Add a comment...

CamScanner

12:06 am
38%
Reels
कभी किसी से बहस ना करें अगर
कोई कहता है कि हाथी उड़ता है
तो उसको बताए कि हां आज सुबह ही
हमारे घर की तार पर बैठा था !
62
4
Send
Use audio
inspiresindian
कभी किसी से बहस ना करे... more
4K by igaroto
Try it

CamScanner

CS CamScanner

11:57 pm
Reels
परमहंस योगानंद कहते हैं
6.6K
3
423
Send
son_ukumar0064
The power of determine thought ... more
Add a comment...

CamScanner

11:57 pm 0 KB/s VoLTE 4G 40%

← Reels ⌄

एक महिला ने गौतम बुद्ध से कहा- मैं आपसे शादी करना चाहती हूँ।

गौतम बुद्ध ने पूछा- "क्यों देवी ?

महिला ने जवाब दिया "क्योंकि मुझे आपके जैसा ही एक पुत्र चाहिए, जो पूरी दुनिया में मेरा नाम रौशन करे और वो केवल आपसे शादी करके ही मिल सकता है मुझे"।

गौतम बुद्ध कहते हैं- "इसका और एक उपाय है"

महिला पूछती है -"क्या"?

गौतम बुद्ध ने मुस्कुराते हुए कहा -"आप मुझे ही अपना पुत्र मान लीजिये और आप मेरी माँ जाइए ऐसे में आपको मेरे जैसा पुत्र मिल जायेगा.

महिला हतप्रभ होकर गौतम बुद्ध को ताकने लगी और रोने लग गयी, ये होती है महान लोगो की विचार धारा ।

"पूरे समुंद्र का पानी भी एक जहाज को नहीं डुबा सकता, जब तक पानी को जहाज अन्दर ना आने दे। इसी तरह दुनिया का कोई भी नकारात्मक विचार आपको नीचे नहीं गिरा सकता, जब तक आप उसे अपने अंदर आने की अनुमति न दें।

17K

331

1.4K

Send

Komal yadav

Follow

एक महिला ने गौतम बुद्ध से कहा मैं आपसे शादी क... more

CamScanner

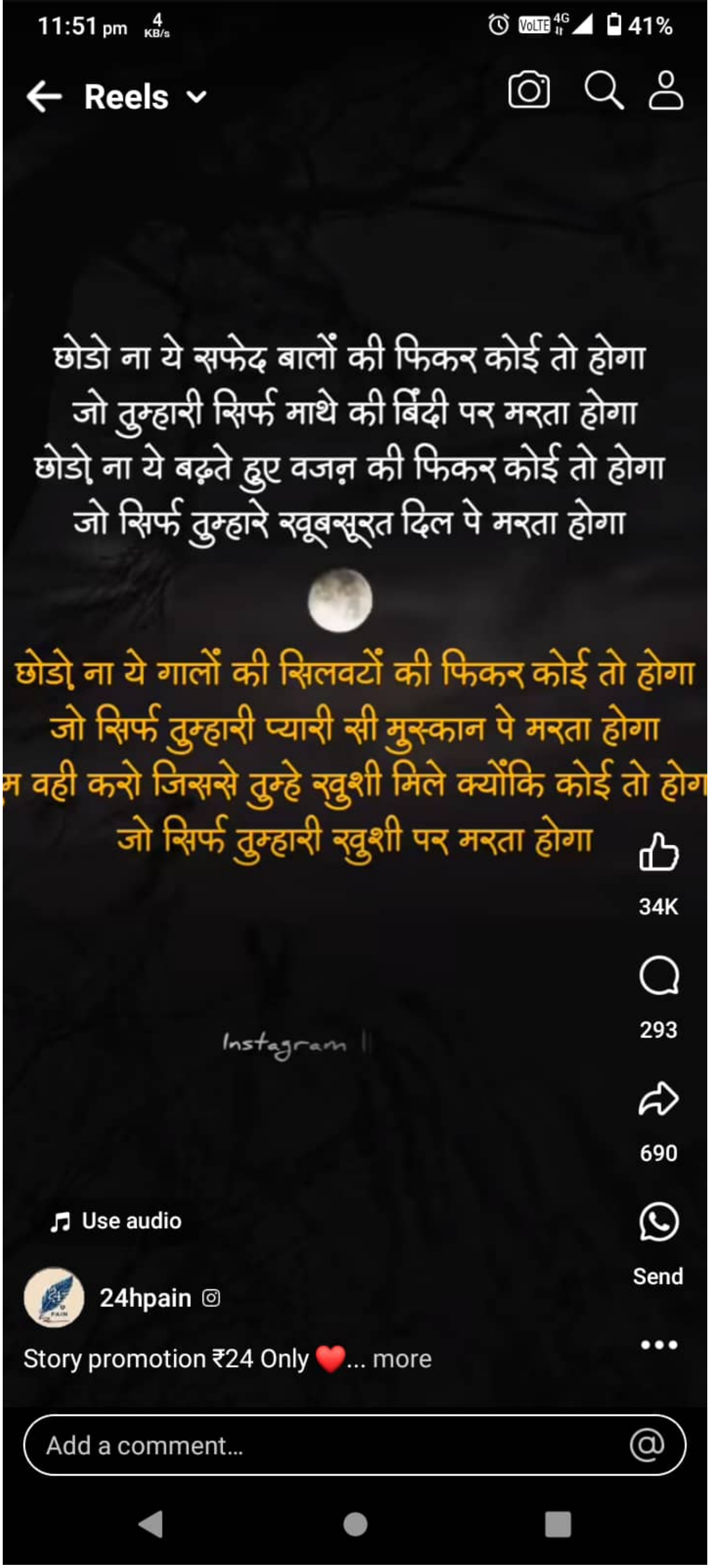
11:51 pm
41%
Reels
छोडो ना ये सफेद बालों की फिकर कोई तो होगा
जो तुम्हारी सिर्फ माथे की बिंदी पर मरता होगा
छोड़ो ना ये बढ़ते हुए वजन की फिकर कोई तो होगा
जो सिर्फ तुम्हारे खूबसूरत दिल पे मरता होगा
छोड़ो ना ये गालों की सिलवटों की फिकर कोई तो होगा
जो सिर्फ तुम्हारी प्यारी सी मुस्कान पे मरता होगा
म वही करो जिससे तुम्हे खुशी मिले क्योंकि कोई तो होग
जो सिर्फ तुम्हारी खुशी पर मरता होगा
34K
293
690
Send
Use audio
24hpain
Story promotion ₹24 Only ❤️... more
Add a comment...

CamScanner

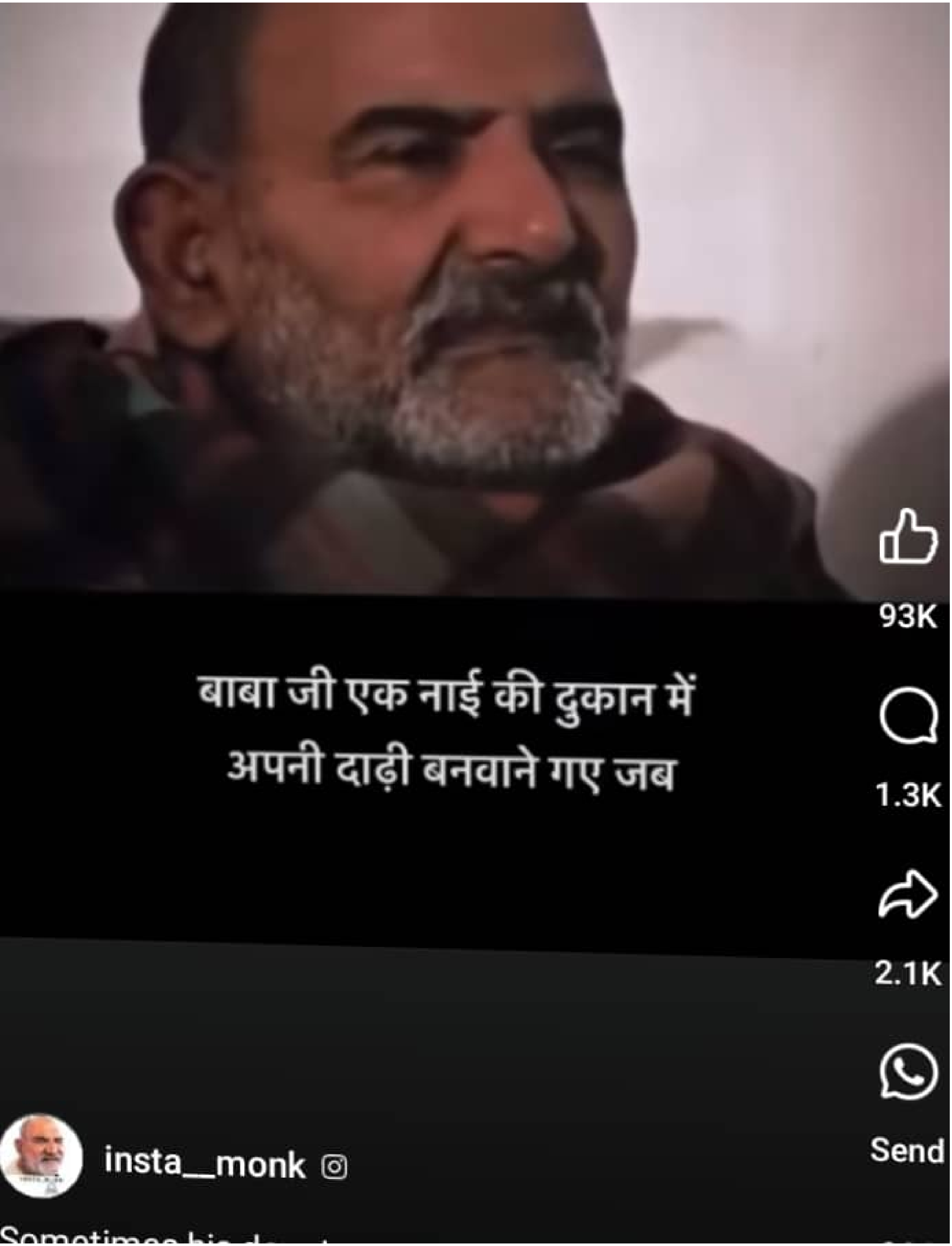

CamScanner

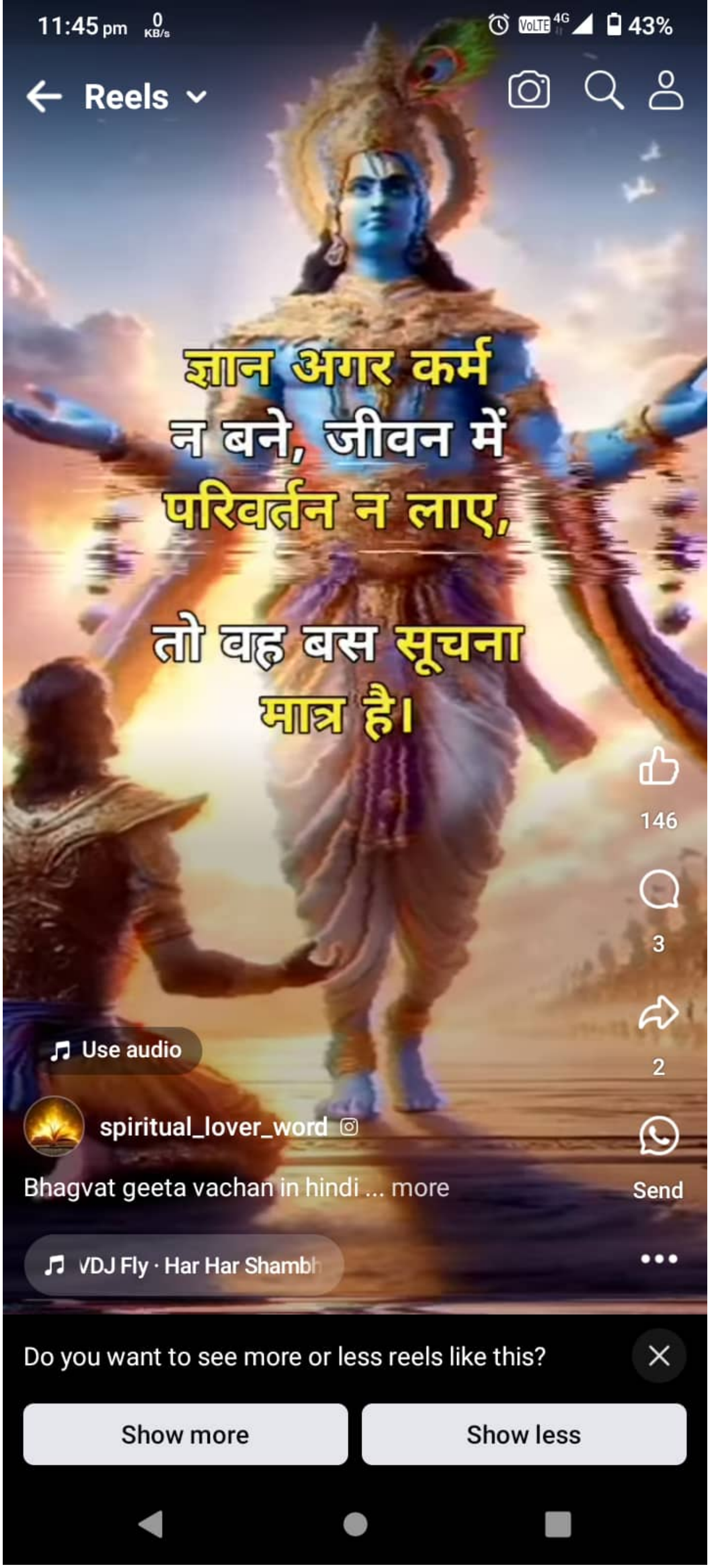
11:45 pm
Reels
ज्ञान अगर कर्म
न बने, जीवन में
परिवर्तन न लाए,
तो वह बस सूचना
मात्र है।
146
3
2
Send
Use audio
spiritual_lover_word
Bhagvat geeta vachan in hindi ... more
VDJ Fly · Har Har Shambh
Do you want to see more or less reels like this?
Show more
Show less

CamScanner

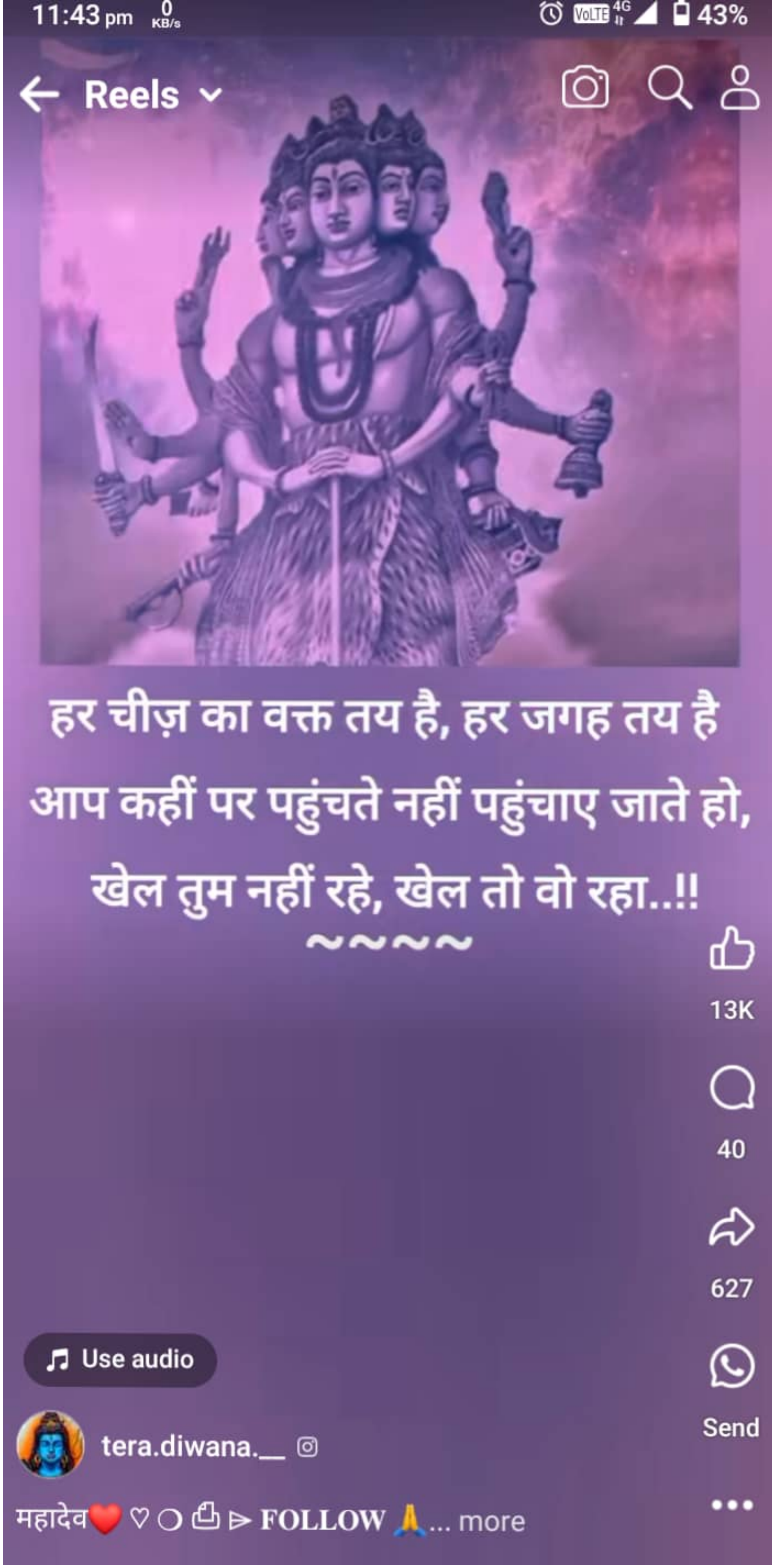
11:43 pm
43%
Reels
हर चीज़ का वक्त तय है, हर जगह तय है
आप कहीं पर पहुंचते नहीं पहुंचाए जाते हो,
खेल तुम नहीं रहे, खेल तो वो रहा..!!
~~~~
13K
40
627
Send
Use audio
tera.diwana.__
महादेव❤️ ♡ ◯ ⊳ FOLLOW 🙏... more

CamScanner
~~~~

CS CamScanner

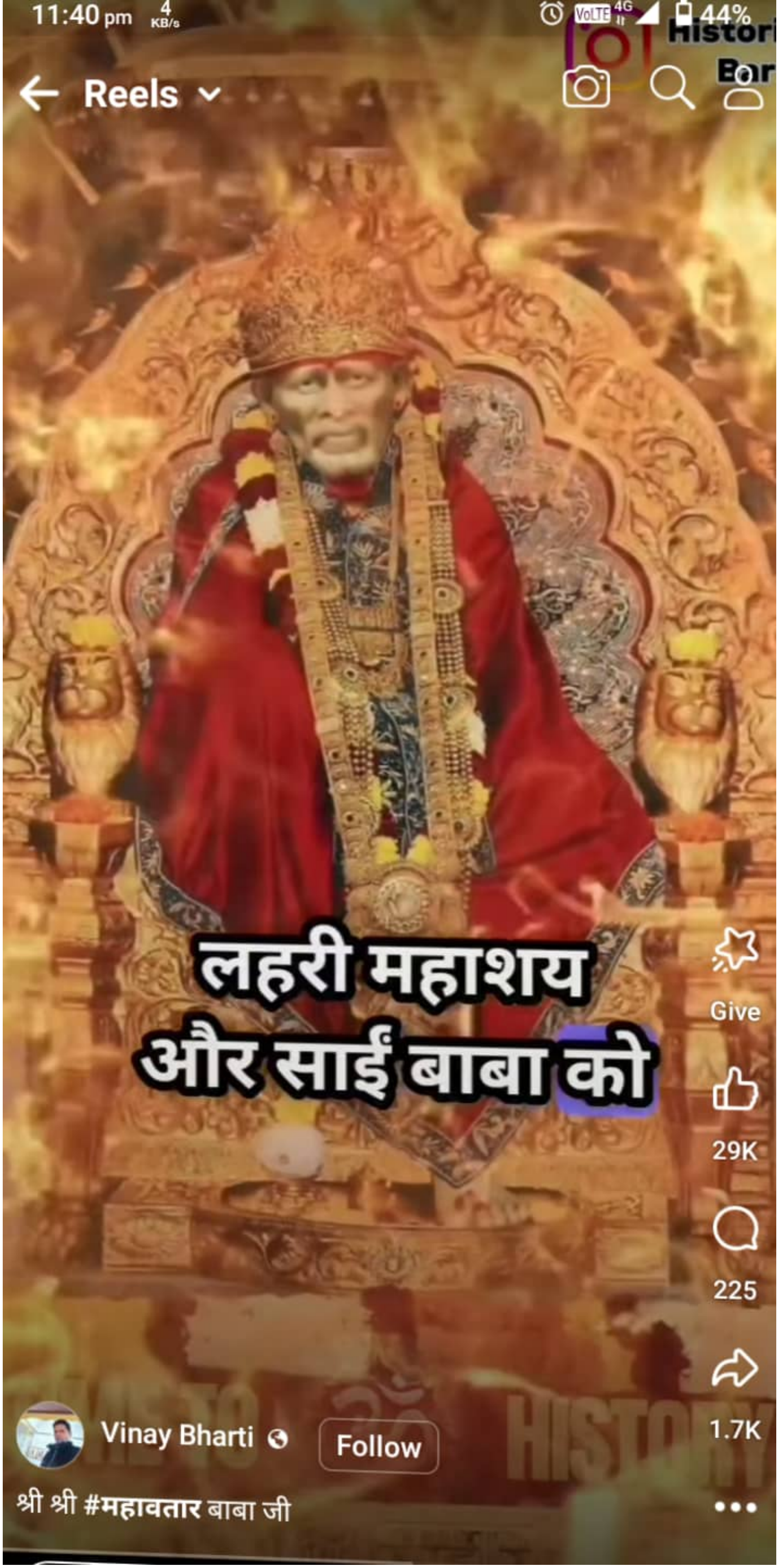
11:40 pm
Reels
लहरी महाशय
और साईं बाबा को
Give
29K
225
1.7K
Vinay Bharti
Follow
श्री श्री #महावतार बाबा जी

CamScanner

11:40 pm
Reels
बाबा संत
कबीरदास, संत
Give
29K
225
1.7K
Vinay Bharti
Follow
श्री श्री #महावतार बाबा जी

CamScanner

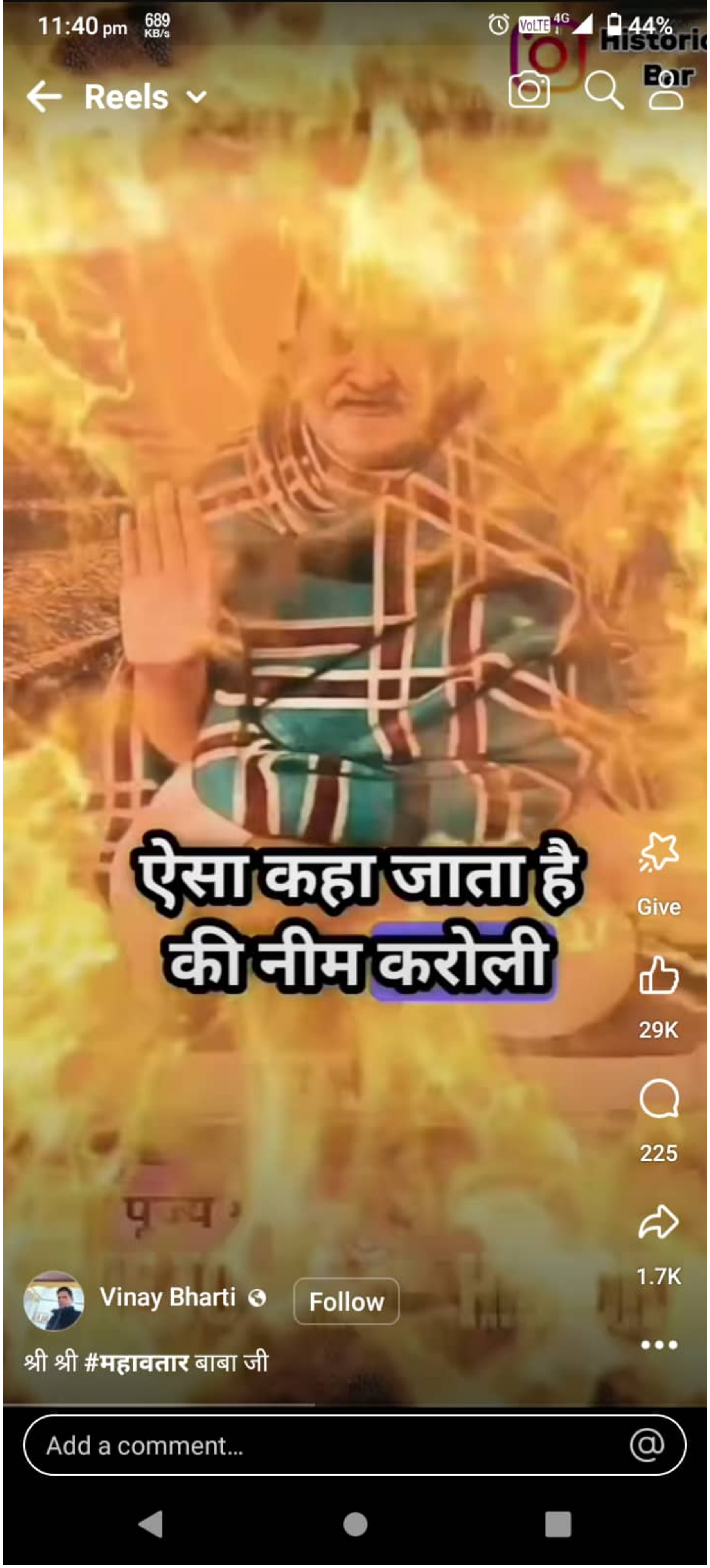
11:40 pm
Reels
ऐसा कहा जाता है
की नीम करोली
Give
29K
225
1.7K
Vinay Bharti
Follow
श्री श्री #महावतार बाबा जी
Add a comment...

CamScanner

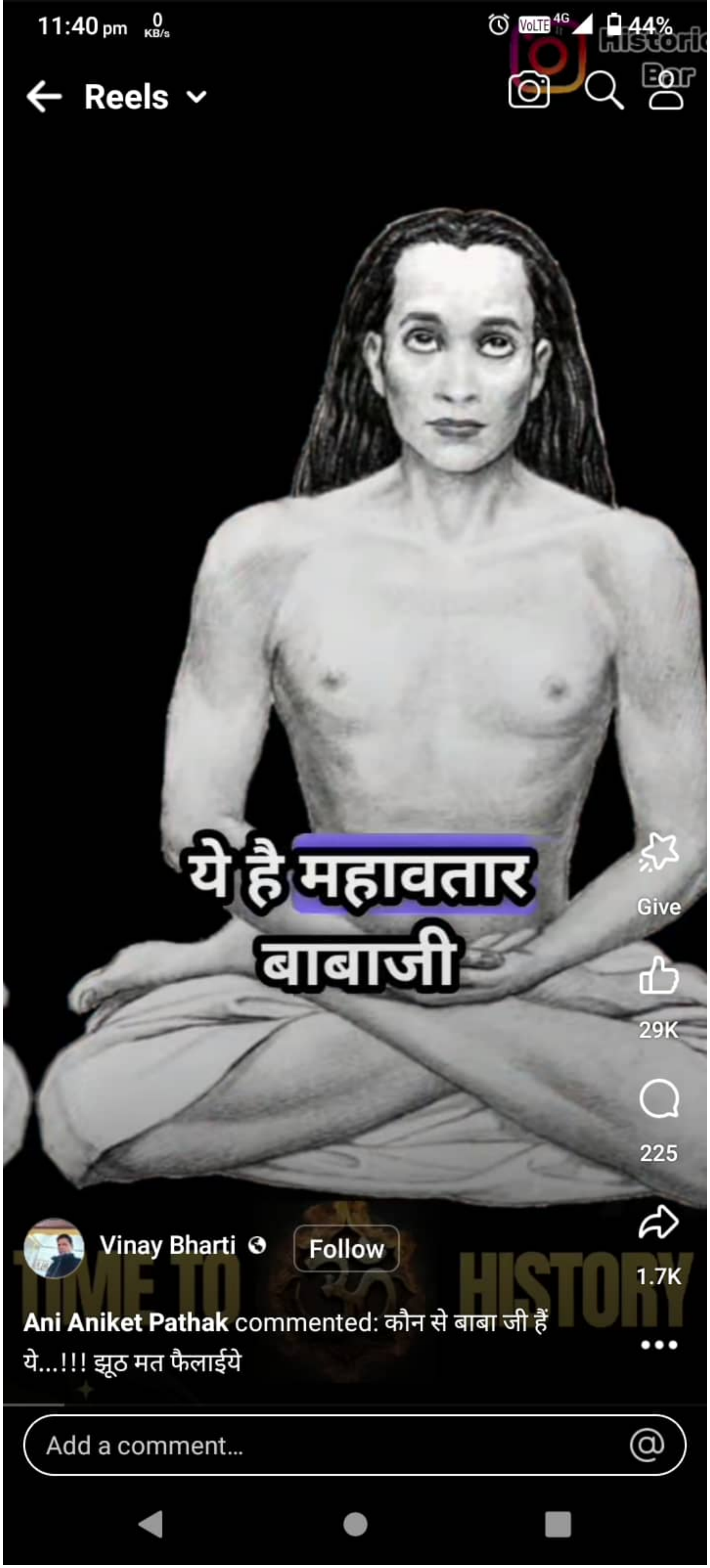
11:40 pm
44%
Reels
ये है महावतार बाबाजी
Give
29K
225
1.7K
Vinay Bharti
Follow
TIME TO
HISTORY
Ani Aniket Pathak commented: कौन से बाबा जी हैं ये...!!! झूठ मत फैलाईये
Add a comment...

CamScanner

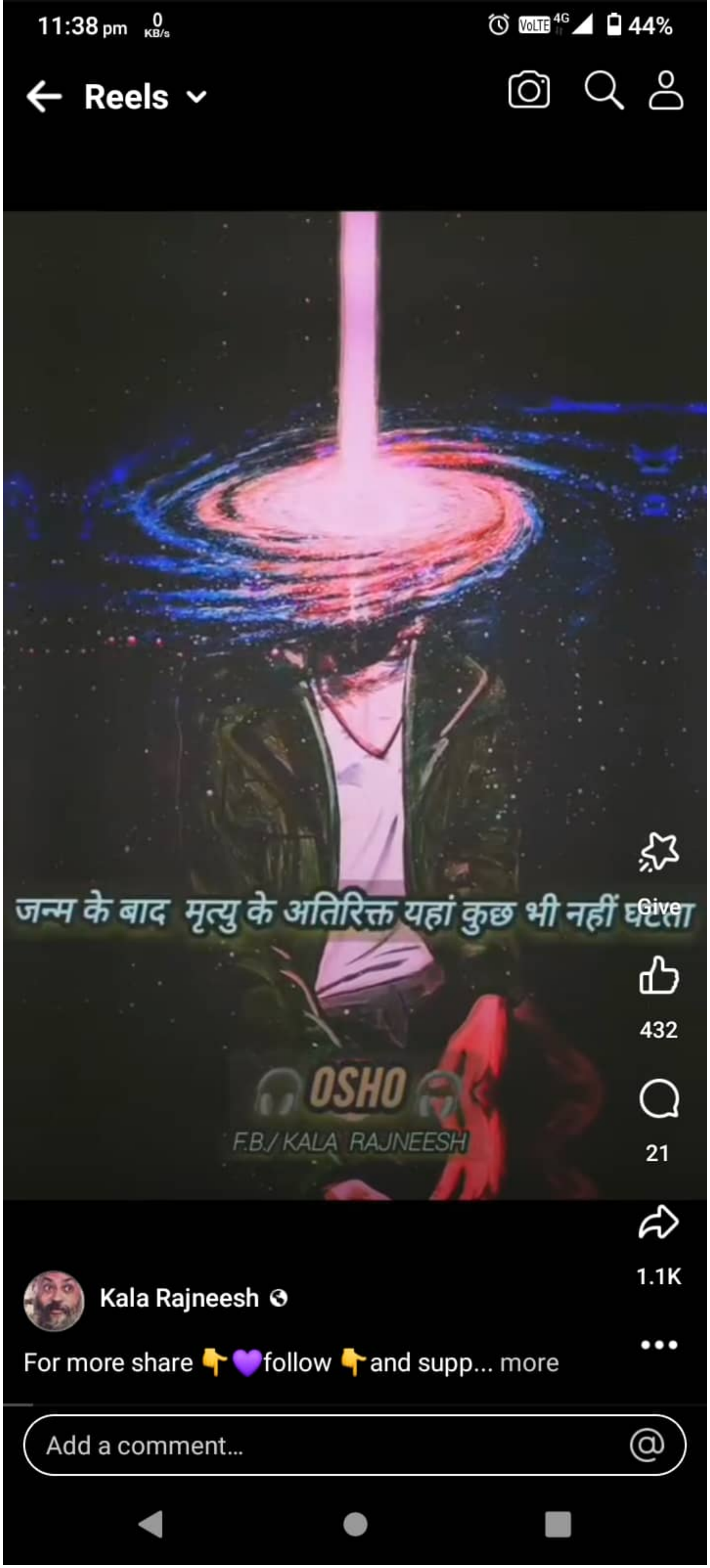
11:38 pm
Reels
जन्म के बाद मृत्यु के अतिरिक्त यहां कुछ भी नहीं घटता
Give
432
OSHO
F.B./ KALA RAJNEESH
21
1.1K
Kala Rajneesh
For more share 👇💜follow 👇and supp... more
Add a comment...

CamScanner

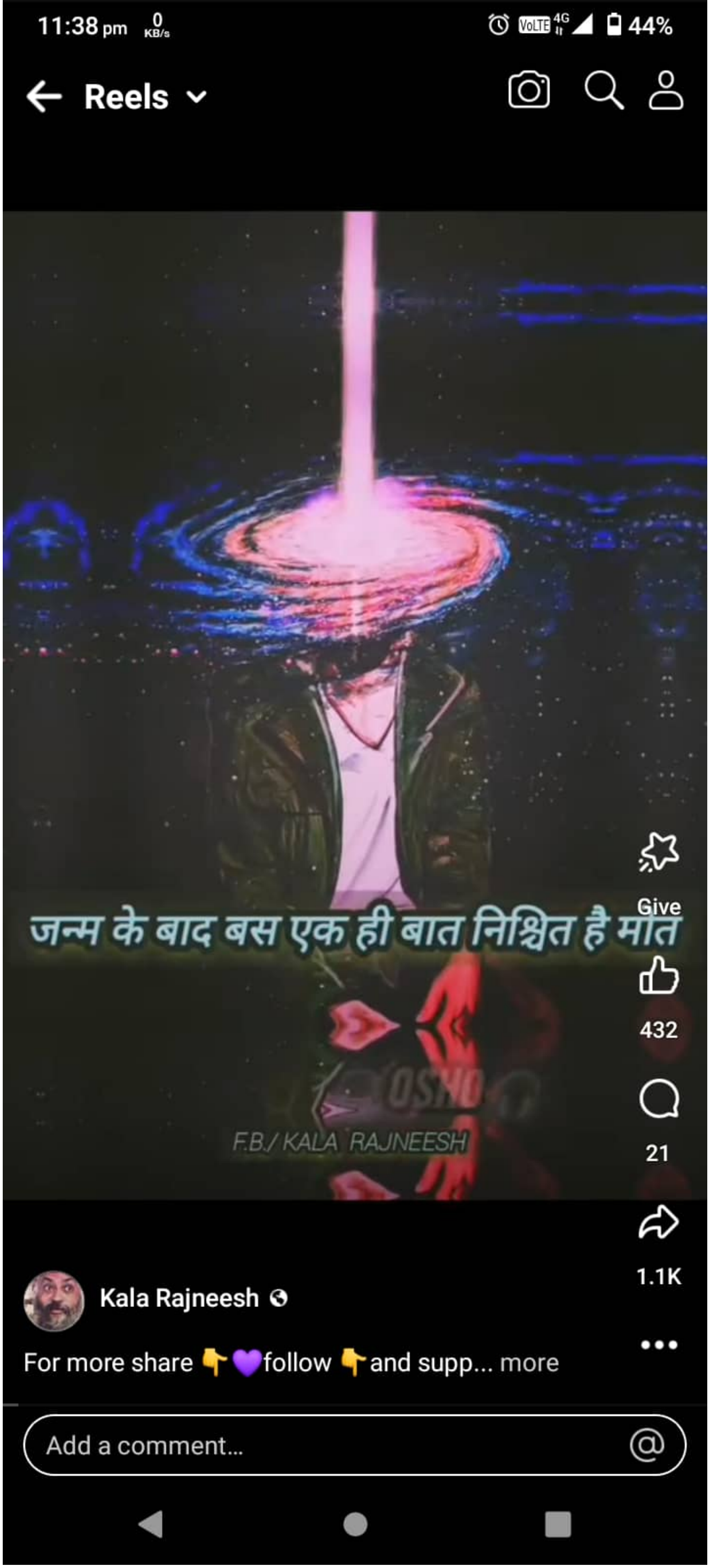
11:38 pm
44%
Reels
जन्म के बाद बस एक ही बात निश्चित है मौत
Give
432
21
1.1K
OSHO
F.B./ KALA RAJNEESH
Kala Rajneesh
For more share 👇💜follow 👇and supp... more
Add a comment...

CamScanner

11:38 pm
912 KB/s
44%
Reels
OSHO
F.B./ KALA RAJNEESH
Give
432
21
1.1K
Kala Rajneesh
For more share 👇💜follow 👇and supp... more
Add a comment...

CamScanner

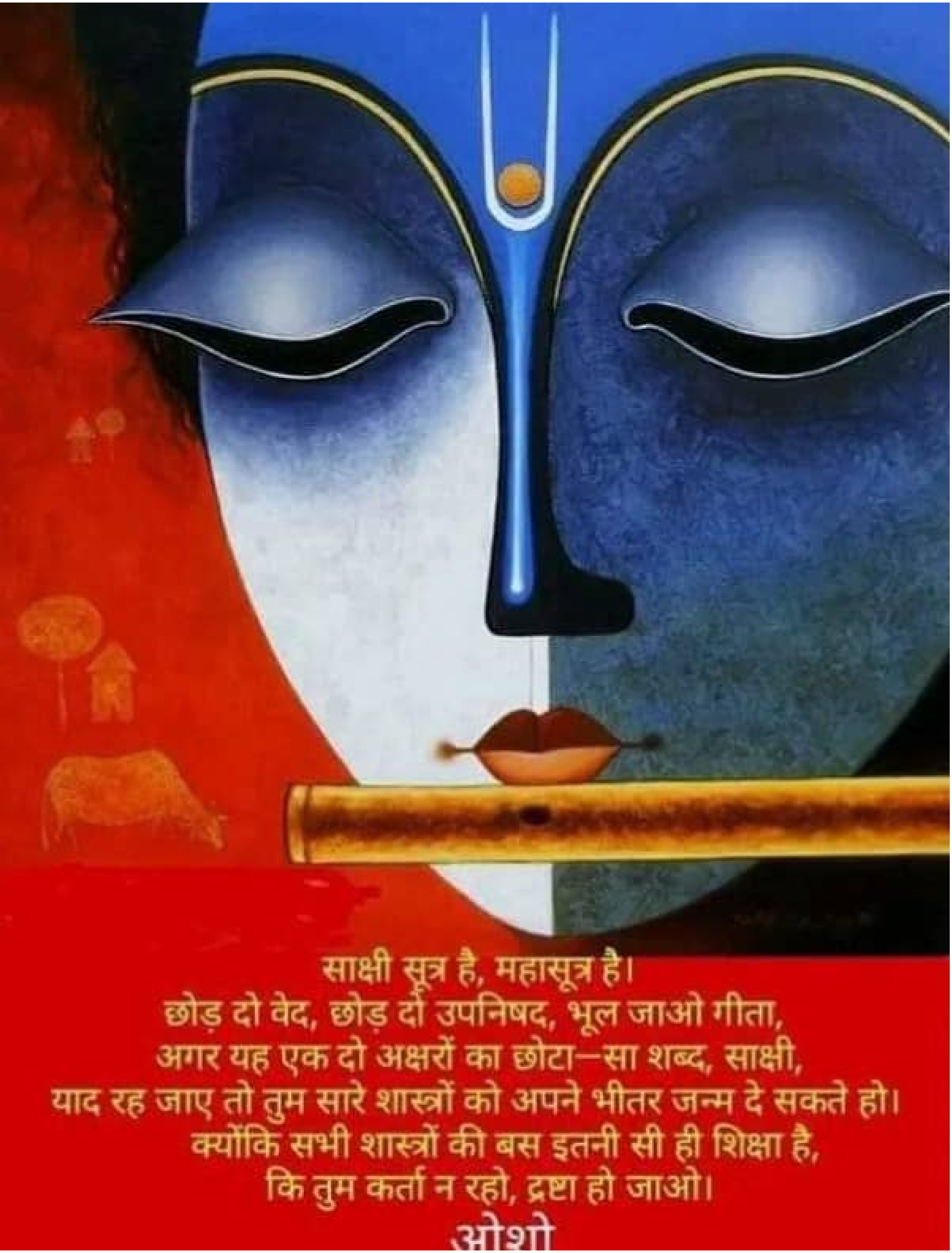
साक्षी सूत्र है, महासूत्र है।
छोड़ दो वेद, छोड़ दो उपनिषद, भूल जाओ गीता,
अगर यह एक दो अक्षरों का छोटा–सा शब्द, साक्षी,
याद रह जाए तो तुम सारे शास्त्रों को अपने भीतर जन्म दे सकते हो।
क्योंकि सभी शास्त्रों की बस इतनी सी ही शिक्षा है,
कि तुम कर्ता न रहो, द्रष्टा हो जाओ।
ओशो

CamScanner

CamScanner

समर्पण बिल्कुल प्रेम के समान है। इसीलिए मैं
कहता हूं कि केवल प्रेमी ही संन्यासी हो सकते हैं
क्योंकि वे थोड़ा-बहुत जानते हैं कि समर्पण
कैसे करना है। ओशो अहोभाव

CamScanner

अहोभाव
OSHO
अपने भीतर परमानंद खोजें।
यह वहां से बाहर नहीं है।
यह आपके अंतरतम के पुष्पन में है।
ओशो अहोभाव

CamScanner

ओशो
अहोभाव
नाम सुमिर
मन बाँवरे

मैं आपके पदचिह्नों पर चलना चाहता हूं।
आपका आशीर्वाद चाहिए।
नहीं, ऐसा आशीर्वाद मुझसे मत मांगो।
ऐसा आशीर्वाद मैं तुम्हें दे भी नहीं सकता क्योंकि
ऐसा आशीर्वाद आशीर्वाद होगा ही नहीं,
अभिशाप भी हो जाएगा।

मेरे पदचिह्नों पर तुम्हें नहीं चलना है।
किसी के पदचिह्नों पर तुम्हें नही चलना है।
तुम्हें अपना मार्ग खोजना है।
तुम्हें अपने ही पदचिह्नों से परमात्मा के मंदिर तक
पगडंडी बनानी है। और तभी खोज में आनंद होता
हैं, उल्लास होता है, अभियान होता है।
मैं तुम्हें तुम्हारी निजता देना चाहता हूं।

CamScanner

कृष्ण का जो अर्थ हो सकता है, जो अर्थ है,
जो सदा ही जानने वालों का अर्थ रहा है,
वह यह है कि जो वृत्ति भीतर से धक्का देती है,
उस वृत्ति का विसर्जन हो।
कैसे हो?
छोड़ने से नहीं होता, भोगने से नहीं होता।
भोगने से बढ़ता है, पुनरुक्ति से आदत मजबूत होती है।
न भोगने से मिटता, न छोड़ने से मिटता।
वह कैसे मिटे वृत्ति का रस?
कैसे इंद्रिय...वह संयम कैसे उपलब्ध हो?
उस संयम का एक ही उपाय रहा है सदा से,
और वह है, जब भी कोई विषय आकर्षित करे,
तो ध्यान विषय पर न रखकर
वृत्ति पर रखना।
ध्यान को,
जब कोई सुंदर व्यक्ति दिखाई पड़े,
तो ध्यान को सुंदर व्यक्ति
पर मत केंद्रित करें, तत्काल अपने पर केंद्रित करें;
और जैसे ही आप अपने ध्यान को
स्वयं पर और अपनी बहती हुई
चेतना पर ले जाएंगे,
आप अचानक पाएंगे
कि इंद्रिय का द्वार बंद हो गया है।
आचार्य श्री रजनीशOsho
गीता दर्शन अ.8.प्र.5/93योगयुक्त मरण के सूत्र

CamScanner

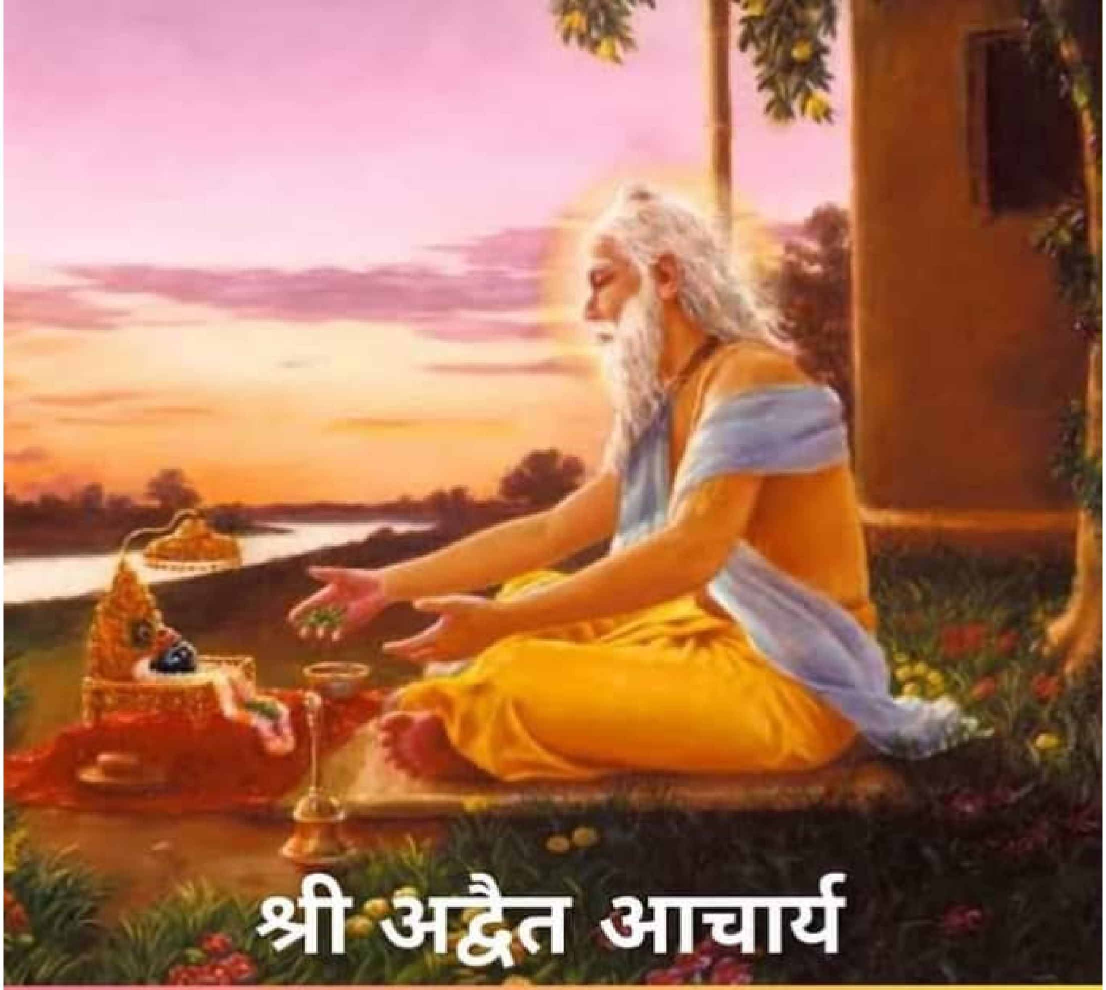

Badi Surmakunj, Vrindavan

याँहार तुलसी-जले, याँहार हुङ्कारे ।
स्व-गण सहिते चैतन्येर अवतारे ॥

उन्होंने कृष्ण की पूजा तुलसीदल तथा गंगाजल से की और उच्च स्वर से उन्हें पुकारा। इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु अपने निजी पार्षदों सहित पृथ्वी पर अवतरित हुए।

~ श्रीचैतन्य चरितामृत, आदि लीला, अध्याय 6, पयार 34 ~

CamScanner

9:08 am 104 KB/s 69%

Pushpa Vashani · 13h ·

Osho Naman ❤️🌹👏

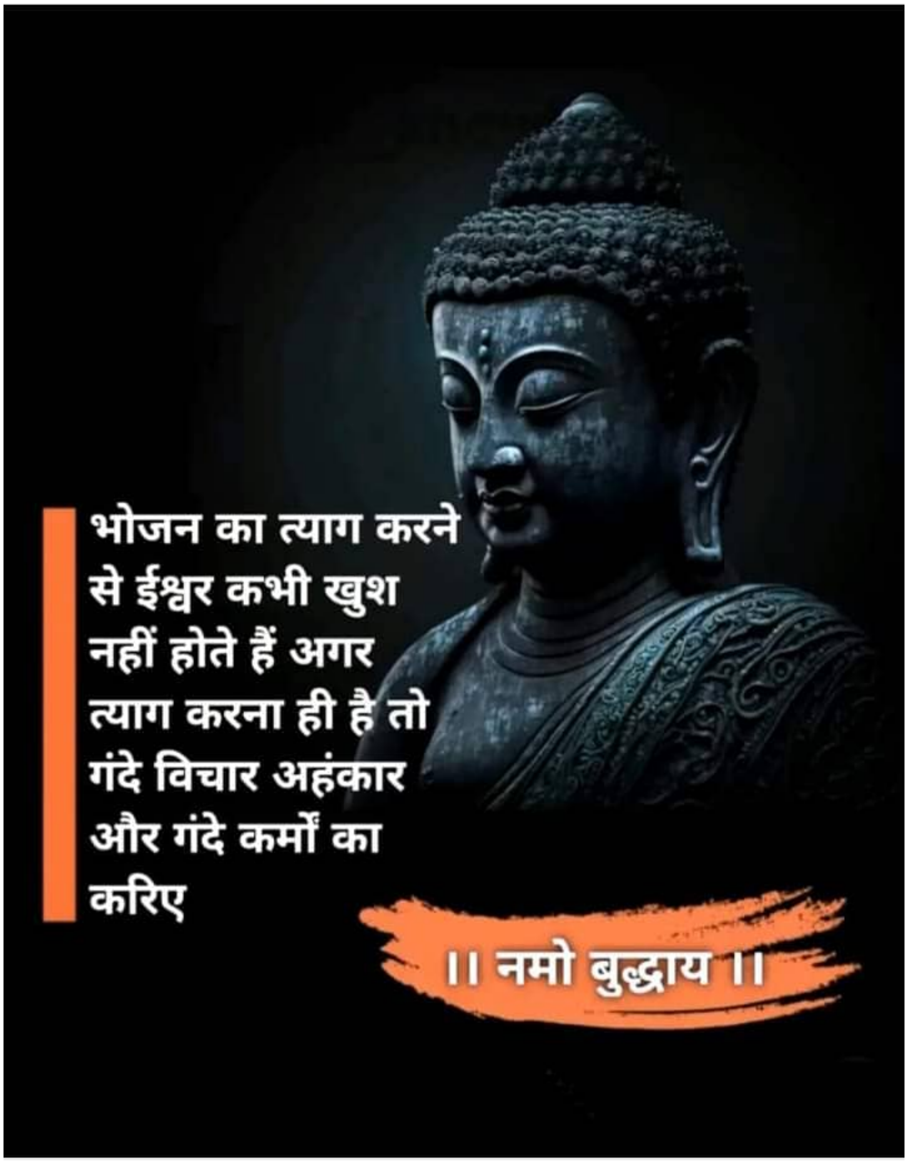

89 · 6 comments • 19 shares

Like Comment Send Share

Krishnamurti Foundation Trust
12h ·

Life is so rich, has so many treasures. We go to it with empty hearts; we do not know how to fill our hearts with the abundance of life. We are poor inw... See more

CamScanner

9:06 am 104 KB/s 69%

3 13

173 40 comments

Like Comment Send

J. Krishnamurti Quotes

Prabhakarvarma Cherukuwada · 12h ·

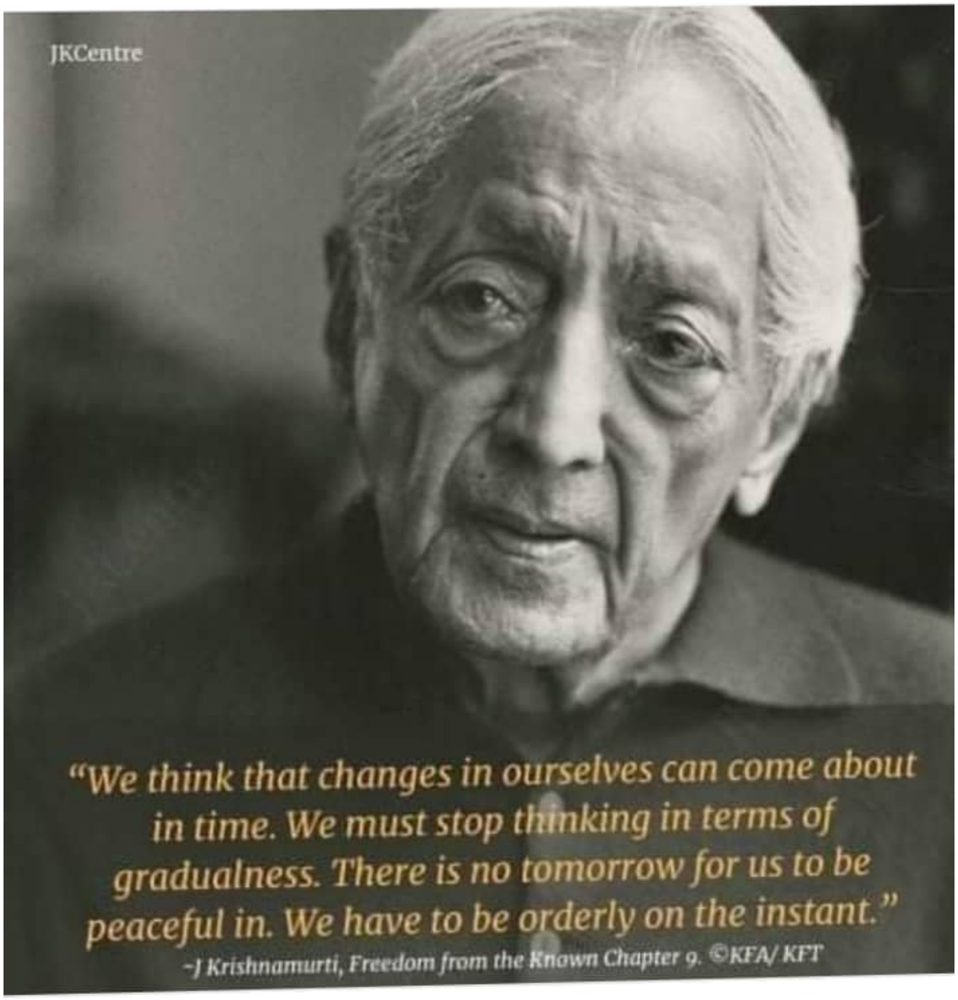

6

Like Comment Send Share

Sadhus of india

12h ·

श्रीमद्वाल्मीकीय–रामायण

पोस्ट–154... See more

CamScanner

3

Like Comment Send Share

Divine Mitra ~ दिव्य मित्र (O'sho)

Sevak Das · 19h ·

तुम किसी सुन्दर स्त्री के प्रेम में पड़ जाते हो ,शरीर स्वर्ण जैसा। लेकिन जैसे - जैसे, स्त्री को जानना शुरू करते हो , वैसे - वैसे पता चलता मुंह से दुर्गंध निकलती। तुम किसी सुन्दर पुरुष के प्रेम में हो। दूर - दूर सब ठीक , दूर के ढोल सुहावने। जैसे - जैसे पास आते हो , वैसे - वैसे जीवन में, झंझट बढ़नी शुरू होती। जैसे - जैसे पास से जानते हो, वैसे - वैसे पता चलता है कि गुलाब तो दूर से दिखते थे , झाड़ी कांटो से भरी है। यहां सुंदरतम देहें मिल जाती हैं , लेकिन सुंदर आत्मायें कहां ...? और जब तक सुंदर आत्मा ना मिले तब तक कहां तृप्ति...? कैसी तृप्ति...? लेकिन दूसरों के लिए ये मत सोचने लगना कि दूसरों के पास स्वर्ण देह है और सुंदर आत्मा नही। अपनी तरफ भी देखना , वही गति तुम्हारी है। ऊपर - ऊपर अच्छे लगते हो , ऊपर - ऊपर साज श्रृंगार है। ऊपर - ऊपर शिष्टाचार है , लीपापोती है । भीतर... सब रोग खड़े हैं। ऊपर मुस्कुराहटें हैं , भीतर घाव। ऊपर बड़े सज्जन मालूम पड़ते हैं , भीतर जंगली जानवर छिपा है। मुख में राम। बगल में छुरी...!!!

🌹🌹 *ओशो* 🌹🌹

CS CamScanner

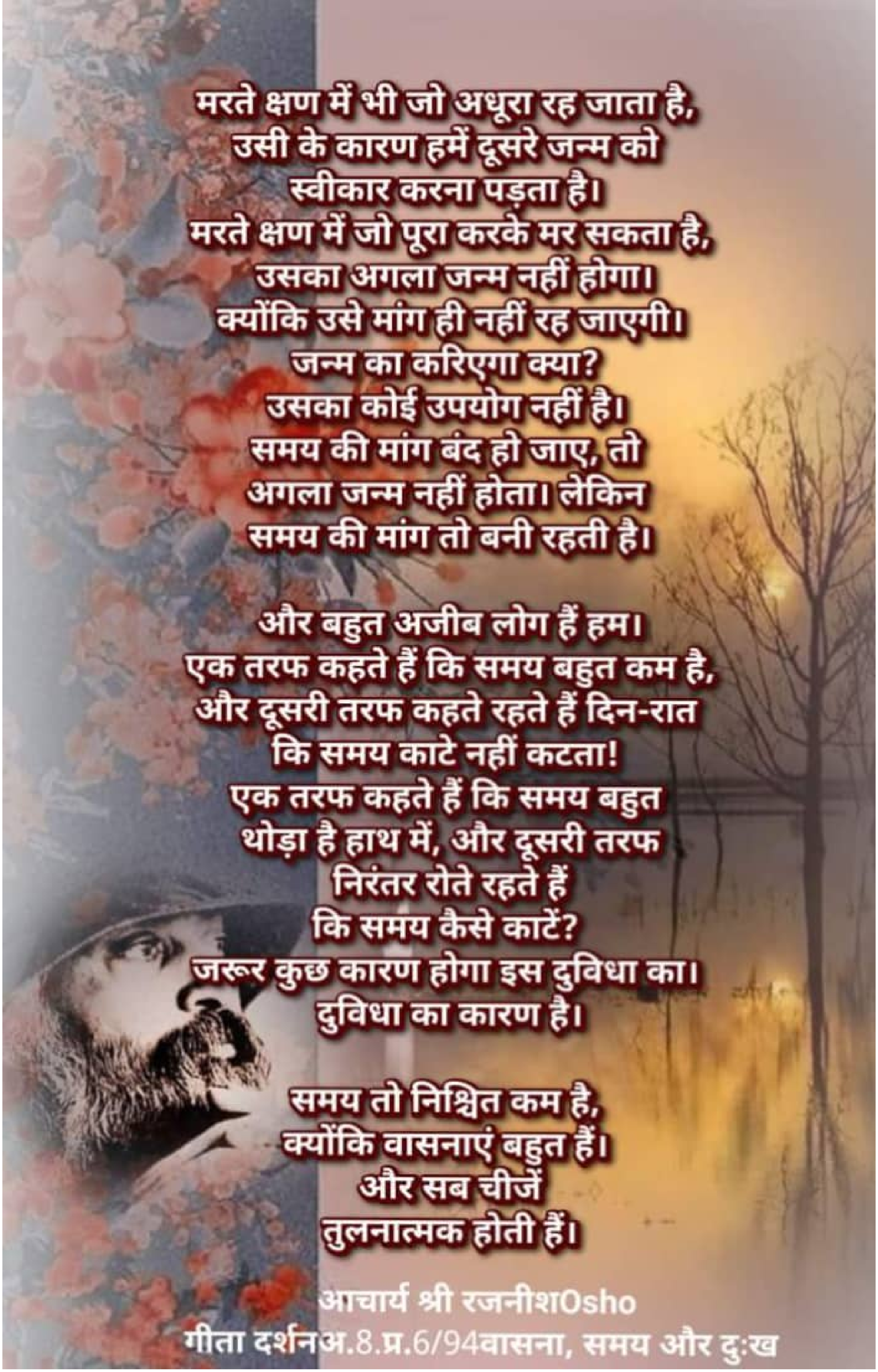
मरते क्षण में भी जो अधूरा रह जाता है,
उसी के कारण हमें दूसरे जन्म को
स्वीकार करना पड़ता है।
मरते क्षण में जो पूरा करके मर सकता है,
उसका अगला जन्म नहीं होगा।
क्योंकि उसे मांग ही नहीं रह जाएगी।
जन्म का करिएगा क्या?
उसका कोई उपयोग नहीं है।
समय की मांग बंद हो जाए, तो
अगला जन्म नहीं होता। लेकिन
समय की मांग तो बनी रहती है।
और बहुत अजीब लोग हैं हम।
एक तरफ कहते हैं कि समय बहुत कम है,
और दूसरी तरफ कहते रहते हैं दिन-रात
कि समय काटे नहीं कटता!
एक तरफ कहते हैं कि समय बहुत
थोड़ा है हाथ में, और दूसरी तरफ
निरंतर रोते रहते हैं
कि समय कैसे काटें?
जरूर कुछ कारण होगा इस दुविधा का।
दुविधा का कारण है।
समय तो निश्चित कम है,
क्योंकि वासनाएं बहुत हैं।
और सब चीजें
तुलनात्मक होती हैं।
आचार्य श्री रजनीशOsho
गीता दर्शनअ.8.प्र.6/94वासना, समय और दुःख

CamScanner

9:04 am 104 KB/s 70%

3 13

Like Comment Send

J. Krishnamurti Quotes

Matthew Scott Donnelly · 9h ·

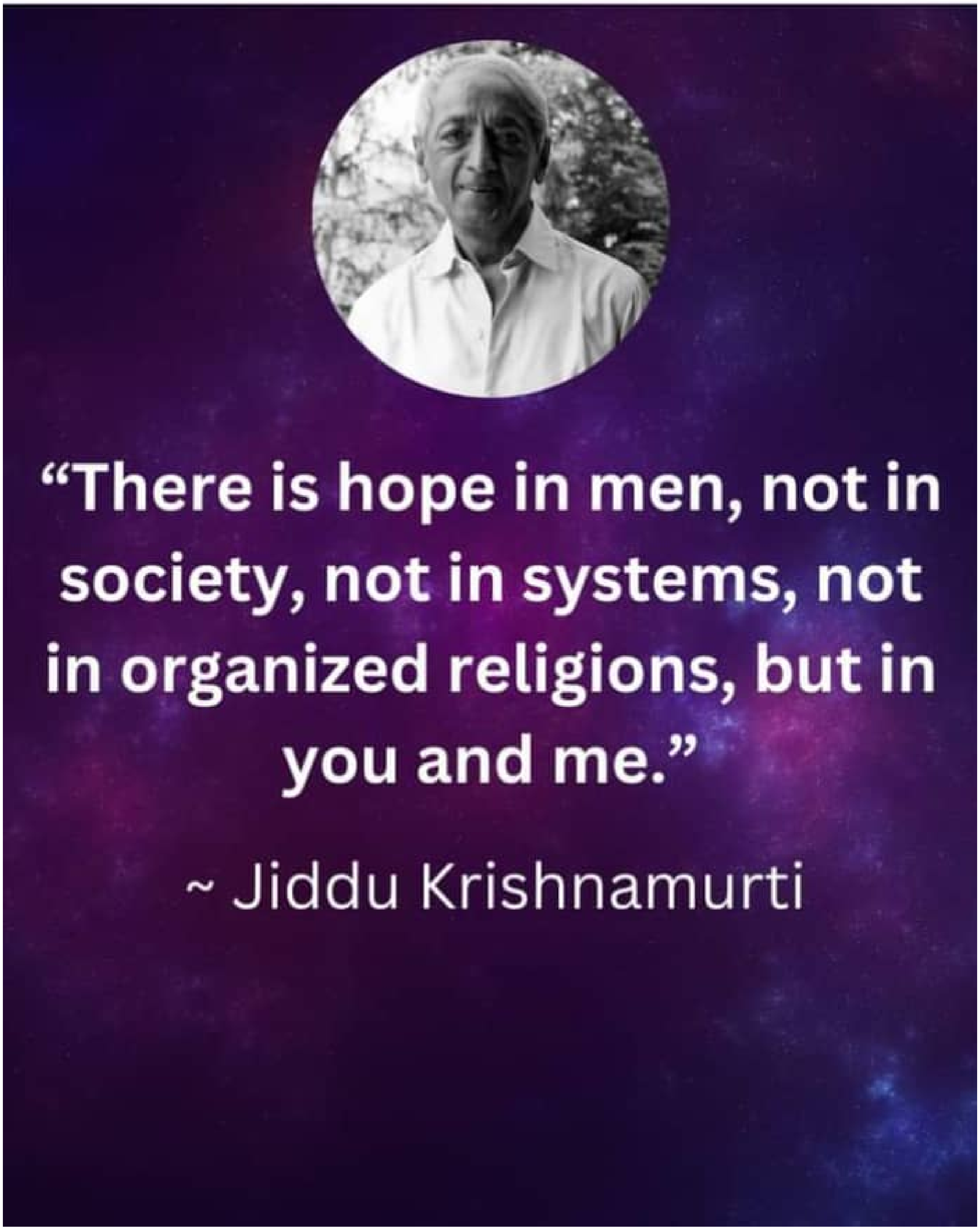

CS CamScanner

9:03 am 104 KB/s 70%

3 13

Like Comment Send Share

आध्यात्मिक कहानियां और सुविचार

साध्वी निरूपा · 14h

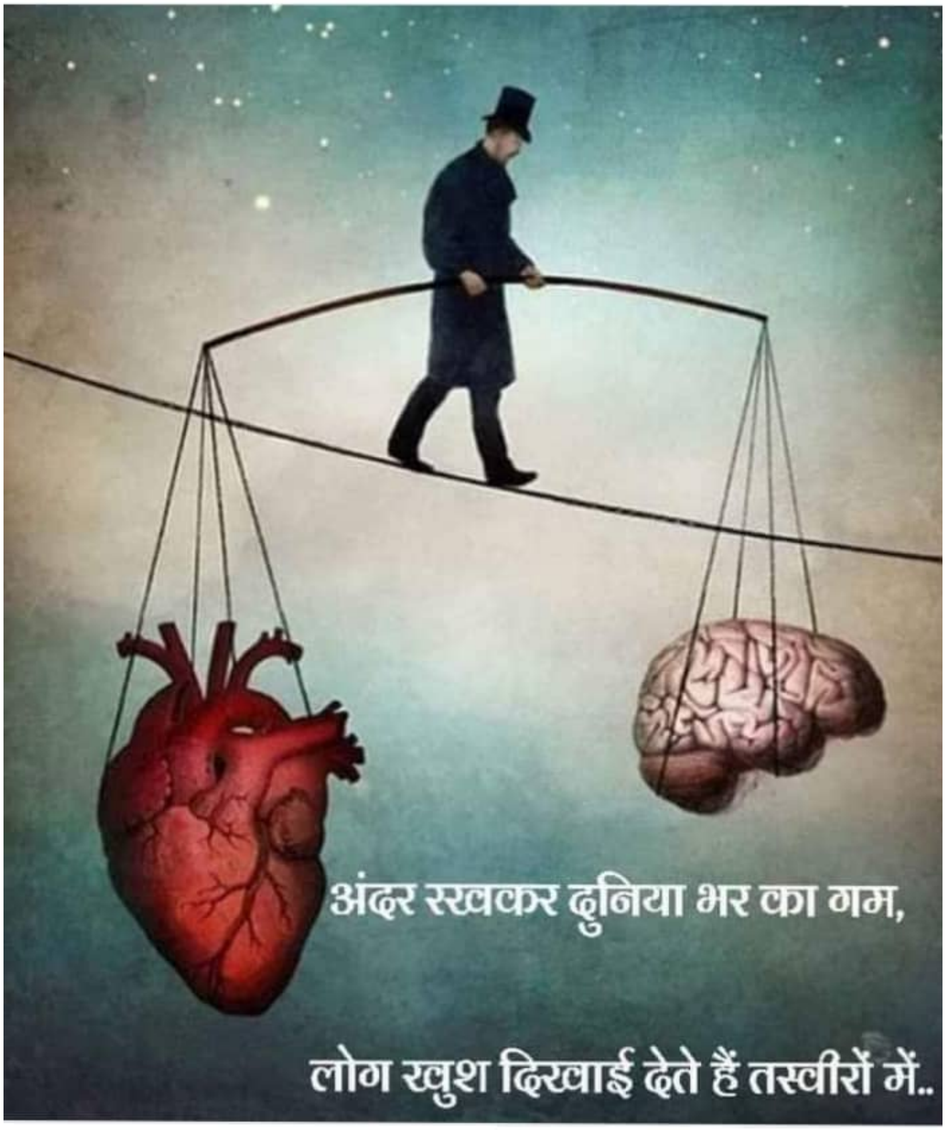

6 1 comment

Like Comment Send

ओशो अमृत सागर

Niharika Yadav · 12h

CamScanner

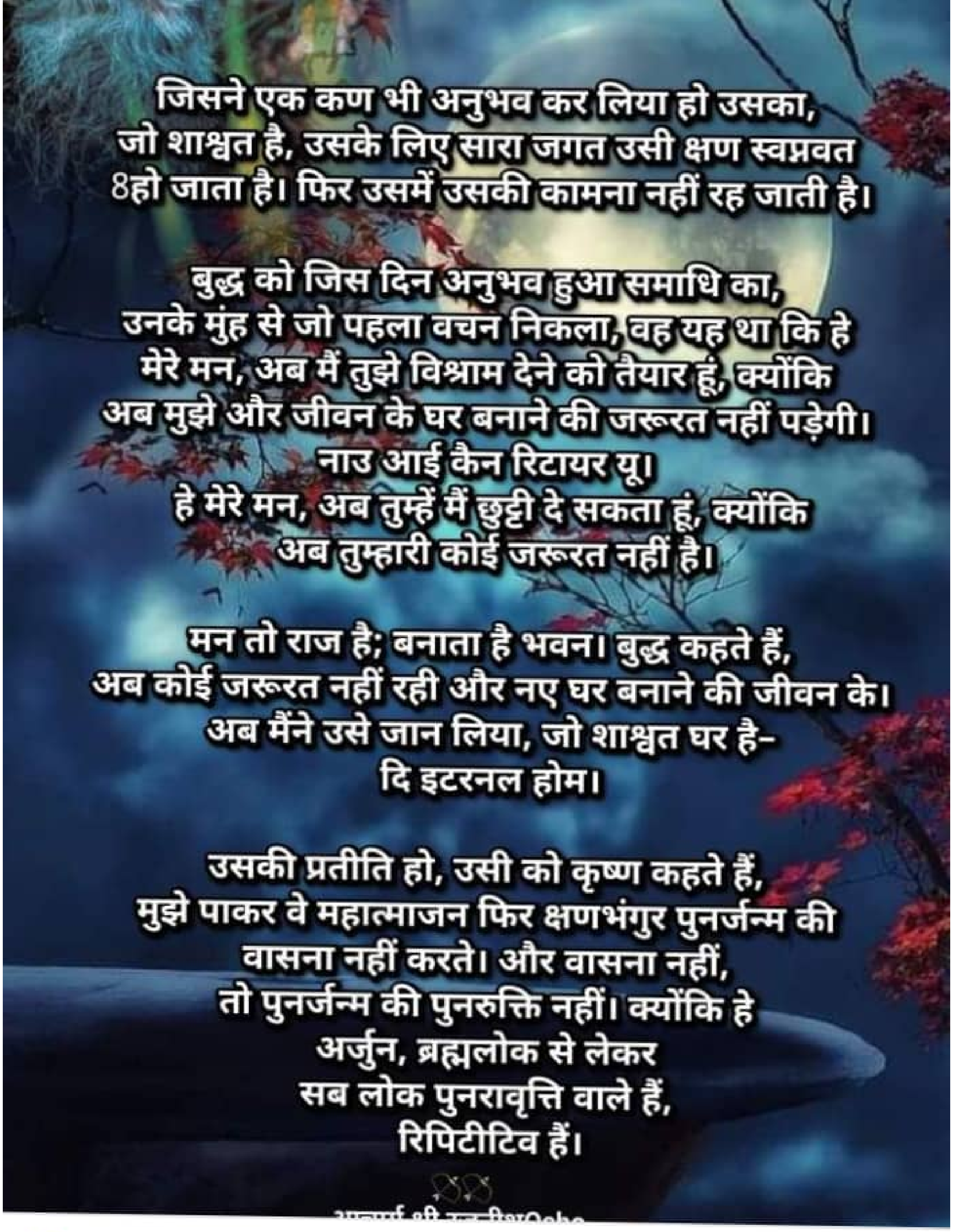

2

Like Comment Send Share

आध्यात्मिक कहानियां और सुविचार

साध्वी निरूपा · 14h ·

CamScanner

"यदि हम जीवन की प्रक्रिया को बिना उसकी निंदा किए, बिना उसे सही या गलत कहे समझ सकें, तो मुझे लगता है कि एक ऐसे सृजनात्मक आनंद का आगमन होता है जो 'आपका' या 'मेरा' नहीं होता। यदि आप धूप को अपने तक ही समेट कर रखना चाहेंगे तो यह स्वच्छ, उष्ण और जीवनदायिनी सूर्य की रोशनी नहीं रह पाएगी। इसी तरह, यदि आप आनंद इसलिए चाहते हैं क्योंकि आप कष्ट में हैं या किसी प्रिय व्यक्ति से आपका बिछोह हो गया है, या आप जीवन में सफल नहीं हो सके हैं, तो यह एक प्रतिक्रिया मात्र होगा। परंतु यदि हम इससे ऊपर उठ सकें तो एक ऐसा आनंद आपको मिलेगा जो मन की रचना नहीं होगा।"

CamScanner

9:02 am 104 KB/s 70%

timeless quality of Being, that is Success.

See translation

The Courage To Awaken (Eckhart, Maharsh...
Aby Vohra · 4d ·

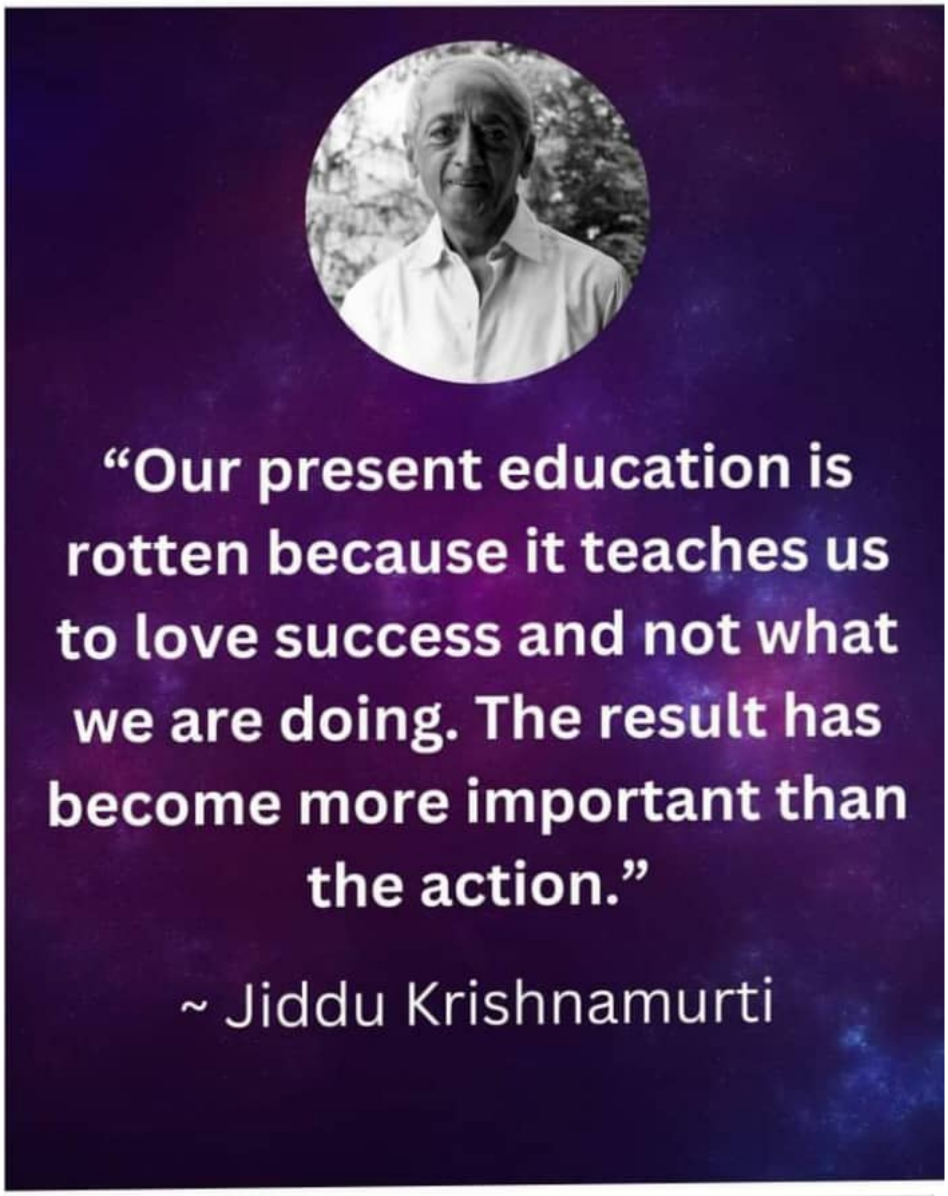

21

Like Comment Send

जे.कृष्णमूर्ति मैत्री संवाद
Chandra Shekhar Nayak · 2d ·

CamScanner

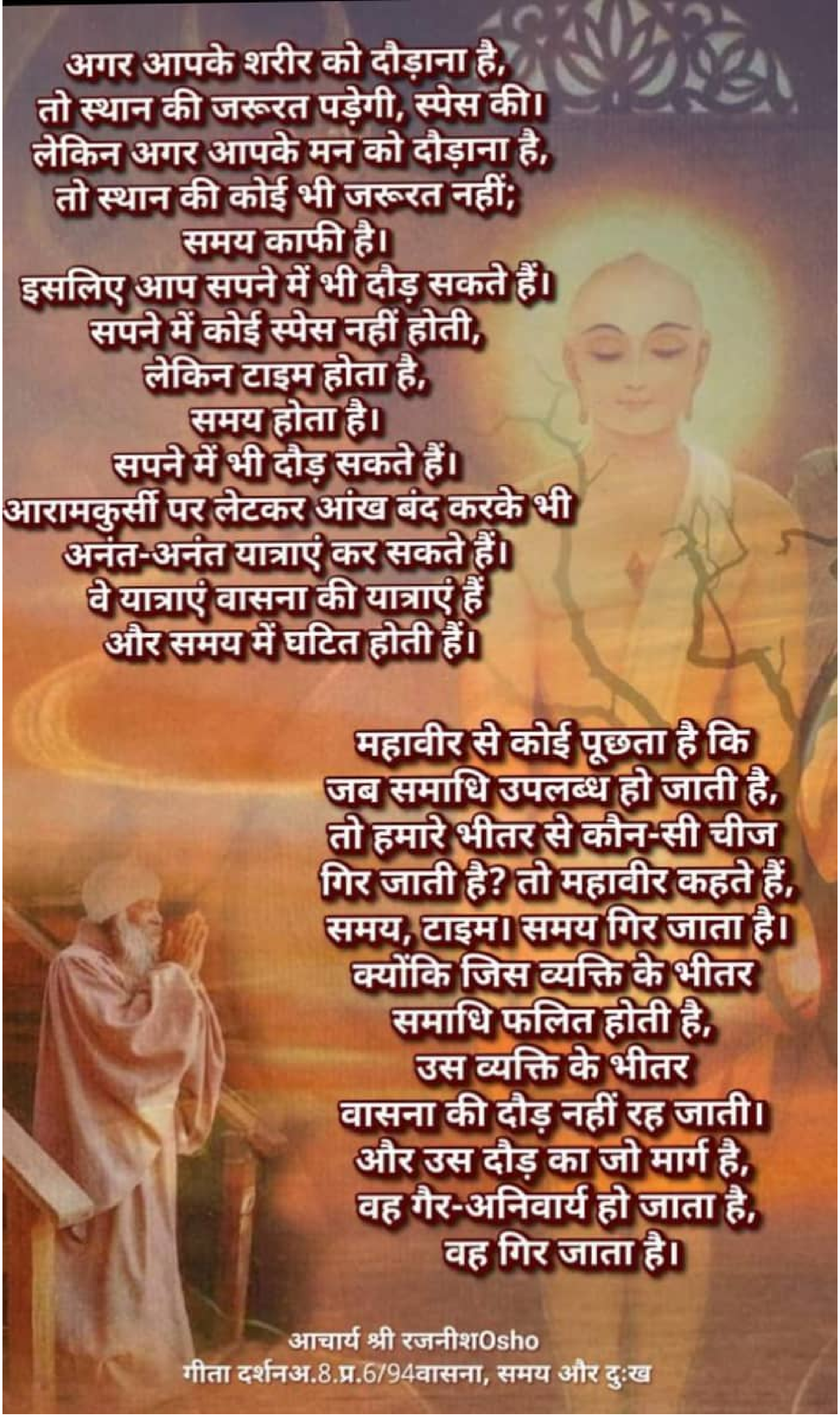
अगर आपके शरीर को दौड़ाना है,
तो स्थान की जरूरत पड़ेगी, स्पेस की।
लेकिन अगर आपके मन को दौड़ाना है,
तो स्थान की कोई भी जरूरत नहीं;
समय काफी है।
इसलिए आप सपने में भी दौड़ सकते हैं।
सपने में कोई स्पेस नहीं होती,
लेकिन टाइम होता है,
समय होता है।
सपने में भी दौड़ सकते हैं।
आरामकुर्सी पर लेटकर आंख बंद करके भी
अनंत-अनंत यात्राएं कर सकते हैं।
वे यात्राएं वासना की यात्राएं हैं
और समय में घटित होती हैं।
महावीर से कोई पूछता है कि
जब समाधि उपलब्ध हो जाती है,
तो हमारे भीतर से कौन-सी चीज
गिर जाती है? तो महावीर कहते हैं,
समय, टाइम। समय गिर जाता है।
क्योंकि जिस व्यक्ति के भीतर
समाधि फलित होती है,
उस व्यक्ति के भीतर
वासना की दौड़ नहीं रह जाती।
और उस दौड़ का जो मार्ग है,
वह गैर-अनिवार्य हो जाता है,
वह गिर जाता है।
आचार्य श्री रजनीशOsho
गीता दर्शनअ.8.प्र.6/94वासना, समय और दुःख

CamScanner

9:01 am 104 KB/s 70%

Ab Teri Surat gour karne pe yaad...💔🌹😔

sufikekisse #urdupoetry #urduquotes... See more

28 6 shares • 948 views

Like Comment Send Share

Anamcara Rames

CamScanner

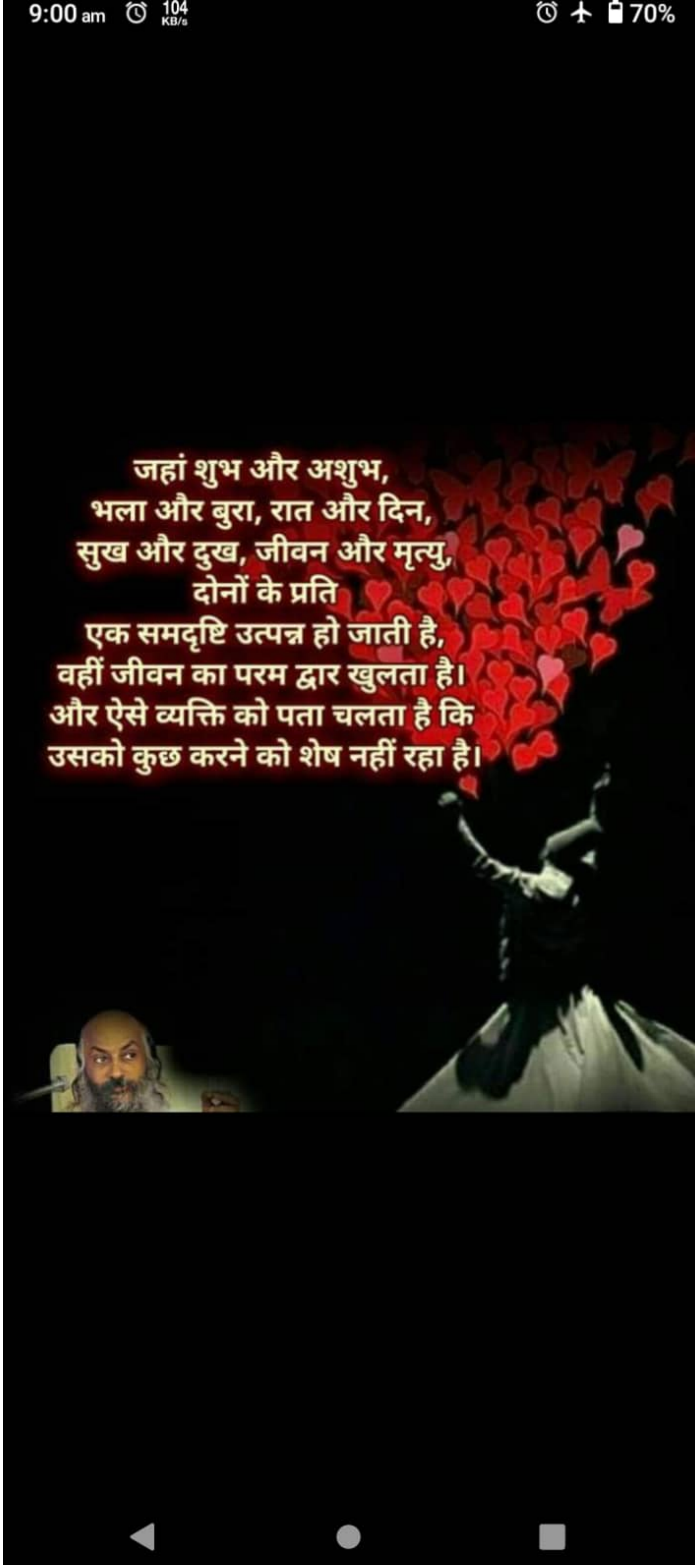
9:00 am
104 KB/s
70%
जहां शुभ और अशुभ,
भला और बुरा, रात और दिन,
सुख और दुख, जीवन और मृत्यु,
दोनों के प्रति
एक समदृष्टि उत्पन्न हो जाती है,
वहीं जीवन का परम द्वार खुलता है।
और ऐसे व्यक्ति को पता चलता है कि
उसको कुछ करने को शेष नहीं रहा है।

CamScanner

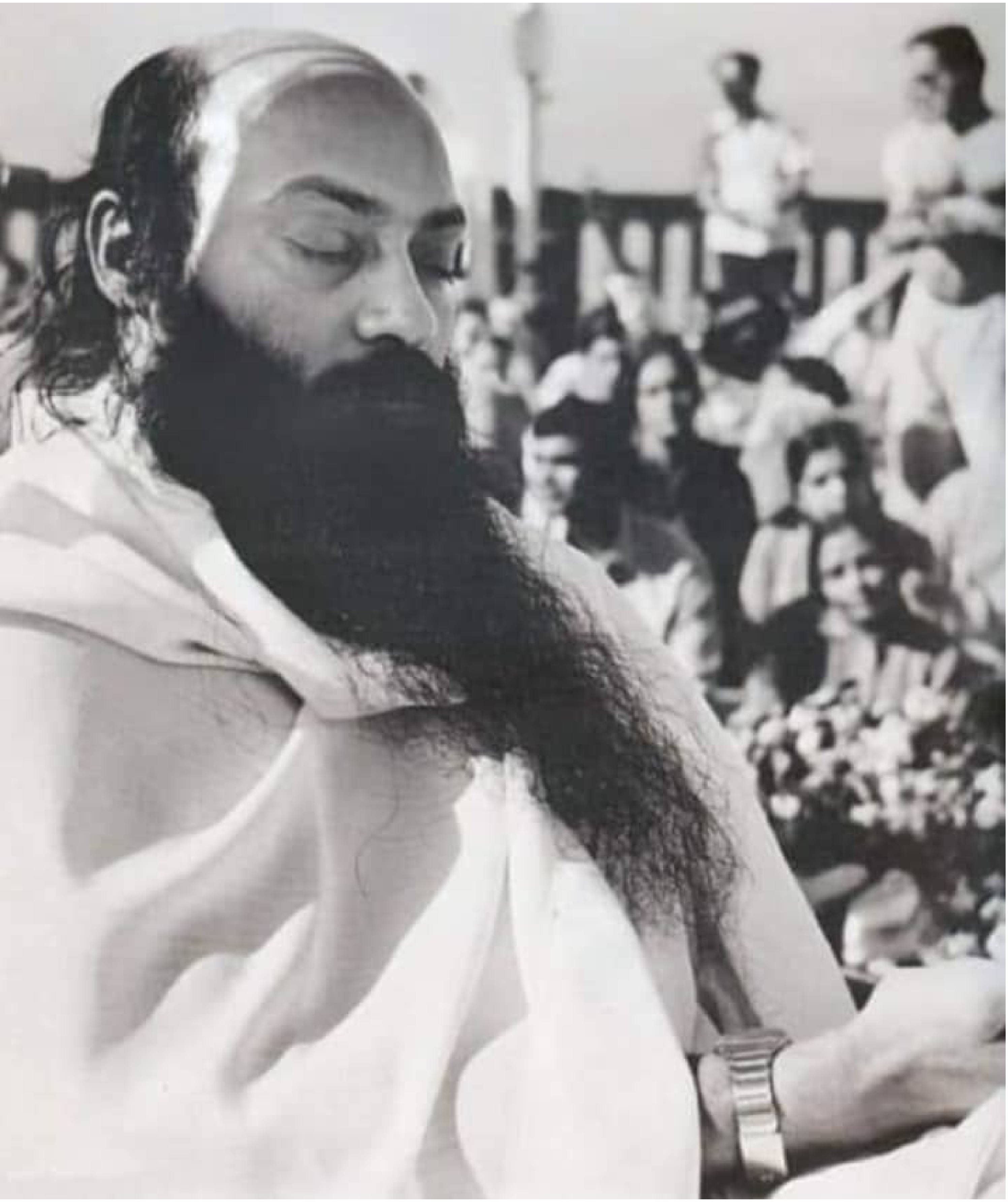

CamScanner

8:59 am 104 KB/s 70%

यही बुद्ध कहते हैं कि जरा गहरे देखो, चमड़ी के धोखे में मत आ जाओ। जरा और गहरे उतरो, जरा भीतर का दर्शन करो।

'जब सब निरंतर जल रहा है तब हंसी कैसी?'

कोनु हासो किमानन्दो निच्चं पज्जलिते सति ।

अंधकारेन ओनद्धा पदीपं न गवेस्सथ ।।

अब खोजो, गवेषणा करो दीए की! अंधेरा बढ़ता चला जाता है। अंधेरा रोज बढ़ता चला जाता है। किस भरोसे बैठे हो? तुम्हारे अतिरिक्त कोई भी दीए को न जला सकेगा। फिर अंधेरी रात घेर लेगी और फिर बहुत तड़फोगे और पछताओगे कि क्यों दिन का उपयोग न कर लिया? क्योंकि दिन के उजाले में चाहते तो दीया जल जाता। बुद्ध कहते हैं, जीवन का बस इतना ही उपयोग हो सकता है कि जीते जी तुम दीया जला लो। ध्यान का दीया जला लो, बस इतना ही जीवन का उपयोग है।

एस धम्मो सनंतनो - प्रवचन-52

CamScanner

8:59 am 104 KB/s 70%

तभी उसके कंधे पर कोई हाथ पड़ा, उसने कहा, तुम्हीं धन्यवाद मत दो, धन्यवाद मुझे देना चाहिए। पीछे लौटा तो देखा मौत खड़ी थी। घबड़ा गया। उसने कहा, घबड़ाओ मत, घोड़ा निश्चित ही तेज है। मैं खुद ही परेशान थी कि इंतजाम यही है, खबर मेरे पास यही आयी है कि दमिश्क में सांझ तुम्हें सूरज ढलने तक लेना है। मैं खुद ड़री थी कि अगर तुम भागे न उस गांव से, तो तुम दमिश्क पहुंचोगे क़ैसे? मगर घोड़ा ठीक समय पर ठीक जगह ले आया। यहीं तुम्हें मरना है।

तुम कहीं से भी जाओ, कैसे भी जाओ; गरीब की तरह जाओ, अमीर की तरह जाओ; फकीर की तरह जाओ, बादशाह की तरह जाओ, सब मरघट पर पहुंच जाते हैं। सभी रास्ते वहा ले जाते हैं। लोग कहते हैं, सभी रास्ते रोम ले जाते हैं, पता नहीं। सभी रास्ते मरघट जरूर ले जाते हैं। रोम भी एक तरह का मरघट है, बड़ा पुराना, प्राचीन खंड़हरों के सिवाय कुछ भी नहीं, वहीं ले जाते हैं।

बुद्ध कहते हैं, ' अंधकार में डूबे हो और दीपक की खोज नहीं करते!'

किसकी प्रतीक्षा कर रहे हो, मौत के अतिरिक्त कोई भी नहीं आएगा। किन सपनों में खोए हो!

इसे हम समझें। जीवन को हमने देखा नहीं, हमने बड़े सपनों की बारात सजायी है। हम किसी दुल्हन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। विवाह रचाने की बड़ी योजना बना रखी है। हम खूब—खूब कल्पना किए बैठे हैं—ऐसा हो, ऐसा हो, ऐसा हो। इसकी वजह से हम देख नहीं पाते कि कैसा है! तुम्हारा रोमांस, तुम्हारी कल्पनाओं का जाल सत्य को प्रगट नहीं होने देता।

आंख खाली करो, जरा सतेज होकर देखो, जरा सपनों को किनारे हटाकर देखो। वही देखो, जो है। तो तुम्हें पैदा होते बच्चे में मरता हुआ आदमी दिखायी पड़ेगा। तो तुम्हें सुंदरतम देह के भीतर अत्यंत कुरूप छिपा हुआ दिखायी पड़ेगा। तो तुम्हें जवान और युवा के भीतर बुढ़ापा कदम बढाता हुआ मालूम होगा। जो गहरे देखेगा, वह जीवन में मौत को देख लेगा।

CamScanner

8:58 am 104 KB/s 70%

एक बड़ी प्रसिद्ध सूफी कथा है। सम्राट सोलोमन सुबह—सुबह सोकर उठा ही था कि उसके एक वजीर ने घबड़ाए हुए भीतर प्रवेश किया। वह इतना घबड़ाया था, सुबह—सुबह की ठंडी हवा थी, शीतल मौसम था चारों तरफ, लेकिन वजीर पसीने से लथपथ था। सोलोमन ने पूछा, क्या हुआ? बिना पूछे एकदम भीतर चले आए और इतने घबड़ाए हो, बात क्या है? उसने कहा, बस, ज्यादा समय खोने को मेरे पास नहीं है। आपका तेज से तेज घोड़ा दे दें। रात सपने में मौत मुझे दिखायी पड़ी है। और मौत ने कहा, तैयार रहना, कल शाम मैं आती हूं। सोलोमन ने पूछा, तेज घोड़े का क्या करोगे? उसने कहा कि मैं भाग, यहां से तो भाग। इस जगह रुकना अब खतरे से खाली नहीं है। तो मैं दमिश्क चला जाना चाहता हूं। सैकड़ों मील दूर। तेज से तेज घोड़ा दे दें, बातों में समय खराब न करें, मेरे पास समय नहीं है। बच गया, लौट आऊंगा।

सोलोमन के पास जो तेज से तेज घोड़ा था, दे दिया गया। सोलोमन बड़ा हैरान हुआ। सोलोमन बड़े बुद्धिमान लोगों में एक था। उसने आंख बंद की, उसने मृत्यु का स्मरण किया। मौत प्रगट हुई। उसने पूछा, ये भी क्या तरीके हैं? उस गरीब वजीर को क्यों घबड़ा दिया? मारना हो मारो, बाकी पहले से आने का यह कौन सा नया हिसाब निकाला? मरते सभी हैं। मौत किसी को खबर तो नहीं देती। इसीलिए तो लोग मजे से जीते हैं और मजे से मर जाते हैं। मौत खबर दे, तो जीना मुश्किल हो जाए। यह कौन सी बात निकाली! यह कौन सा ढंग निकाला!

मौत ने कहा, मैं खुद मुसीबत में थी। इस आदमी को दमिश्क में होना चाहिए शाम तक, और यह यहीं है। सैकड़ों मील का फासला है। मैं खुद बेचैनी में थी कि यह होगा कैसे? दमिश्क में इसे मुझे लेना है आज शाम। इसीलिए चौंकाया उसे। कहां है वह आदमी? सोलोमन ने कहा कि वह गया दमिश्क की तरफ।

कहते हैं, सांझ जब वजीर पहुंचा दमिश्क, बड़ा निश्चित था। सूरज ढलता था, उसने एक बगीचे में घोड़ा बाधा, घोड़े की पीठ थपथपायी कि शाबाश, सच में ही तू सोलोमन का घोड़ा है, ले आया सैकड़ों मील दूर।

CamScanner

8:58 am 104 KB/s 70%

3 13

एक बड़ी प्रसिद्ध सूफी कथा है। सम्राट सोलोमन सुबह–सुबह सोकर उठा ही था कि उसके एक वजीर ने घबड़ाए हुए भीतर प्रवेश किया। वह इतना घबड़ाया था, सुबह–सुबह की ठंडी हवा थी, शीतल मौसम था चारों तरफ, लेकिन वजीर पसीने से लथपथ था। सोलोमन ने पूछा, क्या हुआ? बिना पूछे एकदम भीतर चले आए और इतने घबड़ाए हो, बात क्या है? उसने कहा, बस, ज्यादा समय खोने को मेरे पास नहीं है। आपका तेज से तेज घोड़ा दे दें। रात सपने में मौत मुझे दिखायी पड़ी है। और मौत ने कहा, तैयार रहना, कल शाम मैं आती हूं। सोलोमन ने पूछा, तेज घोड़े का क्या करोगे? उसने कहा कि मैं भाग, यहां से तो भाग। इस जगह रुकना अब खतरे से खाली नहीं है। तो मैं दमिश्क चला जाना चाहता हूं। सैकड़ों मील दूर। तेज से तेज घोड़ा दे दें, बातों में समय खराब न करें, मेरे पास समय नहीं है। बच गया, लौट आऊंगा।

सोलोमन के पास जो तेज से तेज घोड़ा था, दे दिया गया। सोलोमन बड़ा हैरान हुआ। सोलोमन बड़े बुद्धिमान लोगों में एक था। उसने आंख बंद की, उसने मृत्यु का स्मरण किया। मौत प्रगट हुई। उसने पूछा, ये भी क्या तरीके हैं? उस गरीब वजीर को क्यों घबड़ा दिया? मारना हो मारो, बाकी पहले से आने का यह कौन सा नया हिसाब निकाला? मरते सभी हैं। मौत किसी को खबर तो नहीं देती। इसीलिए तो लोग मजे से जीते हैं और मजे से मर जाते हैं। मौत खबर दे, तो जीना मुश्किल हो जाए। यह कौन सी बात निकाली! यह कौन सा ढंग निकाला!

मौत ने कहा, मैं खुद मुसीबत में थी। इस आदमी को दमिश्क में होना चाहिए शाम तक, और यह यहीं है। सैकड़ों मील का फासला है। मैं खुद बेचैनी में थी कि यह होगा कैसे? दमिश्क में इसे मुझे लेना है आज शाम। इसीलिए चौंकाया उसे। कहां है वह आदमी? सोलोमन ने कहा कि वह गया दमिश्क की तरफ।

कहते हैं, सांझ जब वजीर पहुंचा दमिश्क, बड़ा निश्चिंत था। सूरज ढलता था, उसने एक बगीचे में घोड़ा बाधा, घोड़े की पीठ थपथपायी कि शाबाश, सच में ही तू सोलोमन का घोड़ा है, ले आया सैकड़ों मील दूर।

CamScanner

8:57 am 104 KB/s 70%

3 13

ओशो का हिन्दी साहित्य

Kunal Pandey · 1d ·

बुद्ध अपने भिक्षुओं को मरघट भेजते थे। वहां जाओ। वहीं से ध्यान का स्मरण आएगा। बैठे रहो वहा, देखो जलती चिताओं को। तब तक देखते रहो जब तक कि तुम्हें यह न दिखायी पड़ने लगे कि तुम जल रहे हो चिता पर। तब तक मत आना मरघट से। महीनों मरघट पर भेज देते थे, बैठे रहो। लोग आते रोते–धोते, रखते लाश, आग लगा जाते, शरीर जल जाता धू– धू करके घास–फूस जैसा, राख पड़ी रह जाती, हड्डियां पड़ी रह जातीं, जंगली जानवर घसीट ले जाते, कुत्ते– भेडिए आते–देखते रहना, देखते रहना।

पहले तो दिखेगा, कोई और मरा, फिर कोई और मरा, पर कब तक तुम यह झुठलाओगे कि यह मौत तुम्हारी भी मौत है? यही तुम्हारे साथ भी हो जाने वाला है। और जो होने ही वाला है, जो सुनिश्चित ही होने वाला है, वह हुआ ही है। दिन, दो दिन की देर है। पंक्ति में खडे हो। आज किसी का नंबर आ गया, कल तुम्हारा आ जाएगा। कितनी देर लगेगी मौत के आने में!

अब चाहूं भी तो मैं रुक सकता नहीं दोस्त!

कारण, खुद मंजिल ही ढिंग बढती उगती है

मैं जितना पैर टिकाने की कोशिश करता

उतनी ही मिट्टी और धसकती जाती है

कौन बचने की चेष्टा नहीं करता? पर कौन बच पाता है? कौन नहीं लड़ता? आखिरी दम तक लोग लड़ते ही रहते हैं। मौत से लड़ते रहते हैं। मगर कभी कोई जीता? और जब मौत हर हालत में जीत जाती है, तो जीवन धोखा होगा। यह बुद्ध का तर्क है।

एक बड़ी प्रसिद्ध सूफी कथा है। सम्राट सोलोमन सुबह–सुबह सोकर उठा ही था कि उसके एक वजीर ने घबड़ाए हुए भीतर प्रवेश किया। वह इतना घबड़ाया था, सुबह–सुबह की ठंडी हवा थी,

CamScanner

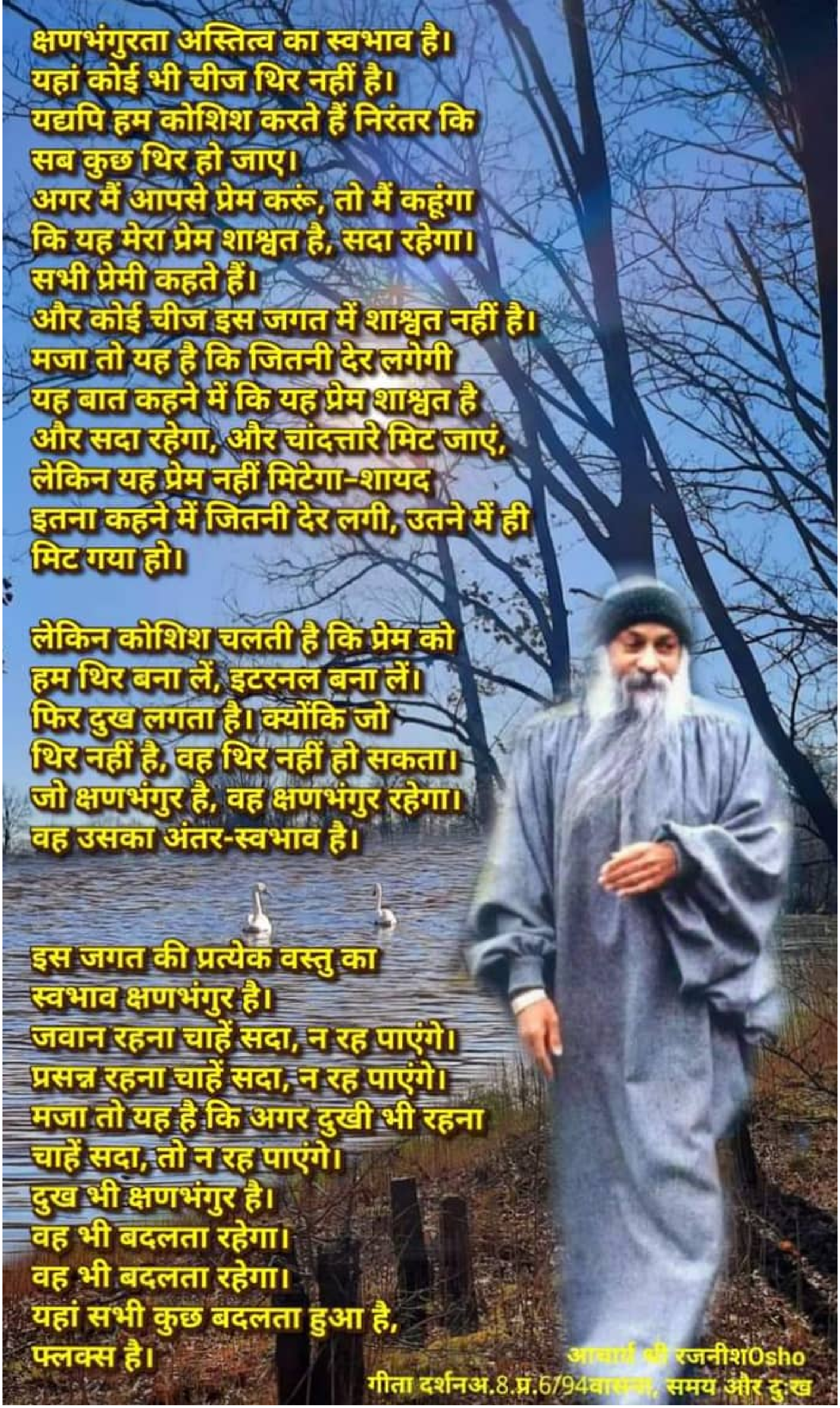
क्षणभंगुरता अस्तित्व का स्वभाव है।
यहां कोई भी चीज थिर नहीं है।
यद्यपि हम कोशिश करते हैं निरंतर कि
सब कुछ थिर हो जाए।
अगर मैं आपसे प्रेम करूं, तो मैं कहूंगा
कि यह मेरा प्रेम शाश्वत है, सदा रहेगा।
सभी प्रेमी कहते हैं।
और कोई चीज इस जगत में शाश्वत नहीं है।
मजा तो यह है कि जितनी देर लगेगी
यह बात कहने में कि यह प्रेम शाश्वत है
और सदा रहेगा, और चांदत्तारे मिट जाएं,
लेकिन यह प्रेम नहीं मिटेगा-शायद
इतना कहने में जितनी देर लगी, उतने में ही
मिट गया हो।
लेकिन कोशिश चलती है कि प्रेम को
हम थिर बना लें, इटरनल बना लें।
फिर दुख लगता है। क्योंकि जो
थिर नहीं है, वह थिर नहीं हो सकता।
जो क्षणभंगुर है, वह क्षणभंगुर रहेगा।
वह उसका अंतर-स्वभाव है।
इस जगत की प्रत्येक वस्तु का
स्वभाव क्षणभंगुर है।
जवान रहना चाहें सदा, न रह पाएंगे।
प्रसन्न रहना चाहें सदा, न रह पाएंगे।
मजा तो यह है कि अगर दुखी भी रहना
चाहें सदा, तो न रह पाएंगे।
दुख भी क्षणभंगुर है।
वह भी बदलता रहेगा।
वह भी बदलता रहेगा।
यहां सभी कुछ बदलता हुआ है,
फ्लक्स है।
आचार्य श्री रजनीशOsho
गीता दर्शनअ.8.प्र.6/94वा, समय और दुःख

CamScanner